Tulsikrat Ramayana

Part II

PRATAP SINGH MUSEUM
Cl. No.
2986
~~3220~~
SRINAGAR

तुलसीकृत

रामायण सटीक

बालकाण्ड व अयोध्याकाण्ड

जिसको
मैनपुरी निवासि श्री सुखदेवलालजी ने संवत् १९२५
विक्रम में जगत कल्याण के अर्थ भाषा
टीका रचकर प्रमाणिक श्लोकों से
भूषित किया

इस टीका में सर्वोत्तम गुण यह हैं कि श्री गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज
की श्री रामायण के अर्थ को अति स्पष्ट रीति से सलिल देश भाषा में बनाना
है न्यूनाधिक्य नहीं किया पद पदार्थ की शुद्धि माधुर्य्यता अति रमणीय
भक्ति भाव को सुलक्षित किया है

वही
परम प्रेमी सीता राम पद पंकज पराग लुब्धक श्री पण्डित
द्वारकाप्रसाद जी व लाला रघुबरदयाल जी की अनुमति से श्री
पंडित प्यारेलाल जी के उत्तम प्रबंध से शुद्ध होकर पहली बार

लखनऊ
मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपी ॥
अप्रेल सन १८८१ई०

1081

AP SINGH
SRINAGA

इस महान	विज्ञप्ति	

इस महीने अर्थात् अप्रैल सन् १८८१ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उन का मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्योपारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्यापार की इच्छा हो वह छापे ख़ाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेज कर क़ीमत का निर्णय करलें ॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
भाषा (इतिहास)	महाभारत पर्व्व अ-	रामायण तुलसीकृत	नाटक
महा भारत	लेहदा भी हैं	रामायण सटीक मय	प्रबोध चन्द्रोदय
१ पहिले हिस्सा में	१ आदि पर्व्व	मानस दीपिका कोष	रामाभिषेक
आदि पर्व्व सभा पर्व्व	२ सभा पर्व्व	आदि	आनंद रघुनंदन
बन पर्व्व	३ बन पर्व्व	तथा जिल्द बंधी	वेदान्त
२ दूसरे हिस्सा में	४ विराट पर्व्व	तथा मोटे अक्षरों की	योग बाशिष्ठ
विराट पर्व्व उद्योग	५ उद्योग पर्व्व	मय तसवीर व क्षेपक	आनन्दाऽमृतवर्षिणी
पर्व्व भीष्म पर्व्व	६ भीष्म पर्व्व	रामायण तुलसीकृत	सांख्य तत्व कौमुदी
द्रोण पर्व्व	७ द्रोण पर्व्व	सातों काण्ड	काव्य
३ तीसरे हिस्सा में	८ कर्ण पर्व्व	१ बाल काण्ड	सूरसागर
कर्ण पर्व्व शल्य प-	९ शल्य पर्व्व वगदा	२ अयोध्या काण्ड	कृष्ण सागर
र्व्व गदा पर्व्व सौप्ति-	पर्व्व सौप्तिक पर्व्व	३ आरण्य काण्ड	विश्राम सागर
क पर्व्व योषिक प-	मय योषिक व वि-	४ किष्किन्धा काण्ड	प्रेम सागर
र्व्व विशोक पर्व्व	शोक व स्त्री पर्व्व	५ सुन्दर काण्ड	व्रजविलास बड़ा वहे
स्त्री पर्व्व शान्ति प-	१० शान्ति पर्व्व राज	६ लङ्का काण्ड	कृष्णप्रिया
र्व्व में राज धर्म्म आ-	धर्म्म व आपद धर्म्म	७ उत्तरकाण्ड	विजय मुक्तावली
पद धर्म्म मोक्ष धर्म्म	व मोक्ष धर्म्म व दान ध-	रामायण शब्दार्थ को-	अनेकार्थ
४ चौथे हिस्सा में	र्म्म	रामायण का इतिहास	छन्दोर्णव पिंगल
शान्ति पर्व्व दान ध-	११ अश्वमेध आश्र-	रामायण मानस दीपिका	कविकुल कल्पत
र्म्म अश्वमेध आश्रम	म वासिक मुशल प-	रामायण कवितावली	रस राज
वासिक पर्व्व व मौस	र्व्व महा प्रस्थान स्व-	रामायण गीतावली	सतसई मूल तथा
ल पर्व्व व घारा प्र-	र्गारोहन	सटीक	सभा विलास
स्थान स्वर्गारोहन	१२ हरिवंश पर्व्व	विनय पत्रिका बा· मो·	तुलसी शब्दार्थ
पर्व्व हरिवंश पर्व्व	रामायण रामबिलास	विनय पत्रिका बा· शि·	भजनावली

6509.
Price Rs. 2-0-0-
1881
Acc no 6509
1881 c
S 294.5922
D 26 R
6509

श्रीमते रामानुजायनमः ॥

अथमंगलाचरणलिख्यते

जयतिरघुवंशतिलकः कौशल्याहृदय नन्दनोरामः दशवदन।
निधनकारीदाशरथिः पुण्डरीकाक्षः

दूर्वादलद्युतितनुंतरुणाब्जनेत्रं हेमांबरंवरविभूषणभूषितांगं
कंदर्पकोटि कमनीयकिशोरमूर्त्तिंपूर्त्तिंमनोरथभवांभजजानकीशं
१ ॥ कर्पूरगौरवपुषंशरदेंदुवक्त्रंपीतांबरंसरसिजाक्षमनंतमाद्यं
बामोर्मिलाललितभूषणभावितांगं रामानुजंभजमनोभयदं नि-
जानां ॥ २ ॥ विश्वंभरंभरतमंबुजपत्रनेत्रं नीलांबुदाभवपुषंकण
काभवस्त्रं भक्ताभयप्रदमनेकविभूषणाढ्यं जाड्यंहरंसुभजतां
भजमांडवीशं ॥ ३ ॥ कैशोरमूर्तिमनुरूप मनूपभूपंपुष्पेंदुसुन्दरं
तरं श्रुतिकीर्तिकांतं गौरंसुवर्णमणिभूषणभावितांगं । पीतांबरं
भजमनोखिलसिध्युपेतं ॥ ४ ॥ उद्यद्दिनेशकररंजित कंजवक्त्रं
क्रंपिंगारुणाब्जनयनंनयनाभिरामं सौवर्णवर्ण वसनंरसनादि
भूषंभक्तेषुकामद तरुंभजबायुसुनूं ॥ ५ ॥ तुभ्यंनमोभगवतेरघु-
नंदनाय श्रीजानकीप्रियतमाय खरांतकाय योगींद्र पूजित
पदांभुरुहद्वयायसंसारदुःख शमनायनमोनमस्ते ॥ ६ ॥ रामो
मातामत्पितारामचंद्रः स्वामीरामोमत्सखारामचंद्रः सर्बस्वं
मेरामचंद्रोदयालुर्नान्यं जानेनैवजानेनजाने ॥ ७ ॥ रामंरामा
नुजंसीतांभरतंभरतानुजं सुग्रीवंबायुसुनुंचप्रणमामिपुनःपुनः ८

श्री रामायनमोनमः ॥

अथश्रीगुसांईतुलसीदासकृतश्रीमद्रामचरित्रमानसेअमुककांडसंबंधिनीमानसहंस
भूषणान्वितकथाप्रस्तूयतेश्रोतास्सावधानतयाशृण्वन्तु॥

अथश्रीगोसाईंतुलसीदासकृत

श्रीमद्रामचरितमानसकेबालकांडके।मानसहंसभूषणसमेत लिख्यते हैं ॥

आदौगुरुंहरिंचांतेमध्येमध्यमदेशिकान् ॥नमस्कृत्यप्रवक्षामिमानसेहंसभूषणम्॥ १ ॥यथासप्तसुकांडेषुग्रन्थकारस्यसंमतं तथामयैवसंप्रोक्तंभूषणेऽर्थेयथामतिः ॥ २ ॥ नकामान्नचलोभाच्चनैवराज्ञानुशासनात्॥प्रोक्तंपरोपकारायसज्जनानंदहेतवे ३ यत्रयत्रपदंभ्रष्टमर्थंशाठ्यंचदृश्यते तत्रतत्रकृपांकृत्वाशुद्धयतां ममसाधवः ॥ ४ ॥

यह भूषण निर्दूषण रसाल । श्री रामचरित मानस मराल १
प्रभुप्रेमसुमुखमतिबिमलजीह ।हरियशरुचिसोइसुंदरसमीह २
श्रोता वक्ता युगचरण सोइ । लौकिक वैदिक मत पक्ष दोइ ३
वैराग ज्ञान लोचन बिशाल । श्री रामराम कूंजनि रसाल ४
पुगब्रह्म जीवसम रामनाम । बरबरण ललित लोकाभिराम ५
हरिगुणमुक्तामणिचुनतचारु । तजिअन्यविषयसंबुकसिवारु ६
तुलसीकृतपयपीवतसुधीर । तजिअन्य भणितसुबिकारनीर ७
राजत सुसंत हंसनमझारि। गुण दूषकबक बायसबिडारि ८
दो० क्षीरनीर बिबरण गुण लखि निज हृदय मझारि ।
धरेउं नाम यहि तिलककर मानस हंसबिचारि ॥ १ ॥
काई करकट कमल सम काढ़ि अन्य कृत कीच ।
मानस मंजुल में कियो मयनपुरी के बीच ॥ २ ॥
४६७० सप्त वर्ग शत सप्त दश कलि संवत्सर भेव ।
सांकि शेय कायस्थ कुल तिलक सार शुक देव ॥ ३ ॥
पय तजि जलनिज भूलवश गृहण कीन्ह जहं होइ ।
संतहंसबर बिमल मति समुझिसंवारेहुसोइ ॥ ४ ॥

ज्ञानानन्दमयंदेवंनिर्मलस्फटिकाकृतिं आधारंसर्वविद्यानां [illegible]वमुपास्महे ॥ १ ॥
योदेवःसवितास्माकंधियोधर्मादिगोचरः प्रेरयेत्तस्ययद्भर्गस्तं वरे[illegible]पास्महे ॥ २ ॥

यद्यपि श्रीमद्राम चरित्रमानस श्रीगुसाईं तुलसी दासकृत कीटीका बड़े ब[illegible]द्रजनों ने अपनी अपनी उदार बुद्धिके अनुसार कहेहैं कुछ मेरेको उसके टीका क[illegible]को आवश्यकता नहींहै क्योंकि मैं अल्पबुद्धि उनसे बढ़कर क्या अर्थकरूंगा जैसे ब.बा रामचरण दासजी श्रीअयोध्यावासी और संतसिंह लाहौर निवासी और महाराज गोपालसिंहदेव बक्सर के राजा और चारटीका श्री काशीजी में हुयेहैं एक रामलीला दूसरा सचिव तिलक तीसरा राम परिचर्य्या चौथा मानसदीपिका इत्यादि प्रसिद्ध हैं उनमें गुसाईं जीका पाण्डित्य एकसेएक में अधिक दरशाया है परंतु जिसक्रम और जिस प्रमाणकी संख्याले गुसाईं जीने इस प्रबंधको रचाहै सो प्रमाण अन्य कृत क्षेपक मिलनेसे लोप होगयाहै उसक्रम पर किसीने दृष्टि नहींकी जिस पुस्तकमें जैसा जहां लिखापाया तहांतैसाही क्रमरहनेदिया और यहभी किसीने नहींगिना कि गुसाईं जीने चौपाइयों का प्रमाण दोहेसे दोहेतक कैके चौपदियों का रक्खाहै और कौन कौन काण्डोंमें कैके चौपाईके पीछेछन्द कहेहैं और समस्त ग्रंथका क्या प्रमाणहै यद्यपि यह दोहा प्रसिद्धहै दोहा ॥ नौसहस्र नौसे नवे ९९९० तुलसी कृत विस्तार । अष्टादशपट चारिको सब ग्रन्थन को सार ॥ सोयह प्रमाण तो कहीं भी पाया नहीं जाता है मैंने अनेक प्रति इसकी देखी तो और ही और प्रमाण पाये नतो कहीं दोहे से दोहे तक चौपाइयों का कोई एक प्रमाण मिलता है न छन्दों का प्रमाण मिलता है कि कौन काण्डमें कै चौपाइयों पीछे कहेहैं यह समस्त क्रम भंग दोष केवल अन्य कृत क्षेपक मिलने सेही हुआहै नहीं तो गुसाईं जीने चौपाइयों का प्रमाण दोहे से दोहे तक आठ आठही चौपदियोंका ही रक्खाहै कहीं घटि बढ़ि नहींहै और छन्दों का प्रमाण भी समय छन्दों को छोड़ि ठिकानेहो परहै इस लिये मैंने बड़ेश्रम से इस समस्त ग्रन्थ के छन्दोंको गणिकर देखा तो बालकांड में पहिला छन्द १० चौपाई पीछे मिला परंतु क्रतृमही जानिपरा दूसरा छन्द उससे ४५ चौपाई पीछेपाया तीसरा उससे ५२ चौपाई पीछेदेखा फिरि ७८ चौपाई पीछेपाया गया तिस पीछे रामजन्म कथा होकर अहल्या छन्द २५ चौपाई पीछेहै उसपीछे ॥ चलेराम लक्ष्मण मुनिसंगायेजहां जगपावनि गंगा ॥ यहांसे सीतास्वयम्बर का प्रारंभ है इसमें बालकांड के अंतपर्य्यंत पचीस पचीस पचास पचीस पचीस चौपाइयों पीछे छन्द कहेहैं और इसमें चौपाइयों का मानभी आठ आठ चौपदियों का ठीकहै अयोध्या कांड मेंतो १३ छन्दहैं सब पचीस पचीस चौपाइयों पीछेही हैं और चौपाइयों का मान भी दोहेसे दोहेतक आठ आठ चौपदियोंही काहै इस डेढ़ काण्डमें कहीं क्षेपक नहींहैं इसीसे इसका क्रम यथाकृत ठीकबना है और इसीके देखने से मेरेको निश्चय हुआ कि जहांजहां क्रमभंग है तहांक्षेपकहै जहांक्षेपक नहींहै तहां ठीक प्रमाण है सीता स्वयम्बर और अयोध्या कांडके देखनेसे यहभी लक्षित होताहै कि प्रथमगुसाईं जीका उद्यम समस्त रामायण

के प्रबंध करने का [illegible] रहे किंतु जैसे श्रीकृष्ण उपासक कविजनोंने दामोदरलीला दानलीला, चो[illegible]लीला नागनाथनलीला रासलीला कहीहैं इसी प्रकार किसी सुकबिक[illegible]हा हुआ रुक्मिणी मंगल देखि कर गुसाईं जीकी अभिलाषा सीता स्वयम्बर र[illegible]की हुई तब उसको अपनी परम उदार बुद्धि के अनुसार अति ललित मनोहर पद और समस्त काव्य धर्म समेत बड़ी सावधानी से बिस्तार सहित इसक्रमसे रचा कि आठ चौपदी की एक चौपाई रचीहै चौपदी के चारि चरण होतेहैं छःछः मात्राके पहिले और तीसरे चरण होते हैं और दश दशमात्रा के दूसरे और चौथे चरण होते हैं जैसे यह चौपदी है ॥

भव भंजन १ गंजन संदेहा ॥ २ ॥
जन रंजन ३ सज्जन प्रिययेहा ॥ ४ ॥

और पचीस चौपाई पीछे एक हरिगीत छन्द उसमें अपना नाम और छन्दके पीछे एक सोरठा कहा है और चौपाई चौपाई पीछे एक एक दोहा है इसी क्रमसे चौपाइयों की छ पचीसी वा १५० चौपाइयों में उसको पूर्ण किया सो जैसा का तैसाही बनाहै ॥

और चोद्वादश छन्द केशवादि भगवन्नामों की संख्या पर इस स्वयम्बर में कहेहैं सो राम बिवाह के मंगल महोत्सव में समय छन्द हैं और जोकि यह सीता स्वयम्बर रुक्मिणी मंगल की छायापर बनाया गया है इसीकारण जैसे रुक्मिणी कृष्णका मिलाप देवी के पूजन समय में हुआहै तैसेही यहां सीताराम का मिलाप प्रथम देवीपूजन हीमें कहा है और जैसे कृष्णचन्द्र ने शिशुपाल जरासिधु इत्यादि दुष्ट राजाओं कारुक्म समेत मान भङ्ग किया है तैसेही इस सीता स्वयम्बर में रावण, बाण इत्यादि दुष्टराजाओं का परशुराम समेत मानभङ्ग कहा है सीता स्वयम्बर पूर्ण होजाने के पीछे जब अधिक अवकाश पाया तब परम भागवतोत्तम श्रीभरत द्वारा भगवत्प्रेम लक्षणा भक्ति कहने के आशय से रामराज्याभिषेक का भङ्ग और बनयात्रा का प्रारंभ किया और उसको भी बड़े बिस्तार से अति मनोहर और उसीक्रम से कि आठ चौपदीकी एक चौपाई और हरचौपाई पीछे एक दोहा और पचीस चौपाइयों पीछे एक हरिगीत छन्द उसमें अपना नाम और छन्दपीछे एक सोरठा कहा है इसप्रकार उसको तेरह पचीसी वा ३२५ चौपाइयों में पूर्ण किया सीता स्वयम्बर से ले के भरतप्रेम पर्य्यंत कथन में कहीं भी याज्ञवल्क्य भरद्वाज वा शिव पार्वती अथवा काग भुसुण्डि गरुड़ का सम्बाद नहीं पाया जाता है जैसा कि पूर्वार्द्ध बालकाण्ड और आरण्यकाण्ड से लेकर उत्तरकाण्ड पर्य्यंत सर्वत्र कहा है जो यह सीता स्वयम्बर और भरत प्रेम प्रबन्ध के साथ कहा होता तो इसमें येतीनों संबाद अवश्य होते इससे परम प्रतीति होती है कि यह इतना कथन प्रबन्ध के प्रारंभ से पूर्व कहागया है क्योंकि इसमें जैसा बिस्तार और रूपक अलंकारादि और बिशेष लालित्य पाये जाते हैं तैसे और काण्डों में अल्प पाये जाते हैं और चरित्रों के बर्णन में भी संकोच है और

चौपाई पीछे दोहों का क्रम नहीं है कहीं एक है कहीं दोतीन चारिहैं और कहीं दो तीनि चारि चौपाई पीछे दोहे हैं छन्द भी कांड कांड प्रति औरही संख्या परहैं सब कांडों में एकसा नहीं है

जब सीता स्वयम्बर और भरत चरित्र परिपूर्ण करि चुके तबतो गुसांई जी इस उद्यम पर उद्यत हुये कि अबतो समस्त रामायण को पुराणादि की रीति पर किसी महर्षि कृत रामचरित्र का उल्था करना चाहिये और उसको उस महर्षि से लेकर अपने आचार्य्यतक की प्राप्तिहोने का क्रम परंपराके द्वारा कहना चाहिये और श्रोता वक्ताओं के संबादभी युक्त करना चाहिये ऐसा बिचारि कर परमोत्तम रामचरित्रमानस नाम्य श्रीशिवचरित का उल्था किया और लिखि दिया ॥ रामचरित मानस मुनिभावन । बिरचेउ शंभु सुहावन पावन ॥ रचिमहेशनिजमानसराखा । पाइसुसमयशिवासनभाखा ॥ तातेरामचरितमानसबर । धरेउ नाम हियहेरिहरषिहर ॥ फिरि उसकी परंपराद्वारा प्राप्ति शिव जीसे लेकर अपने आचार्य्यतक के बिषय में यह लिखा है शंभु कीन्हयहचरितसुहावा । बहुरिकृपाकरिउमहिंसुनावा ॥ सोइशिवकागभुसुंडिहिदीन्हा ॥ राम भक्तिअधिकारीचीन्हा ॥ तेहि सनयाज्ञवल्क्य मुनि पावा ॥ तिनपुनिभरद्वाजप्रति गावा ओरहुजेहरिभक्तसुजाना ॥ कहहिंसुनहिंसमुझहिंबिधिनाना ॥ दोहा ॥ मैंपुनिनिजगुरुसन सुनीकथासुसूकरखेत ॥ समुझिपरीनहिंबालपन तबअतिरहेउंअचेत ॥ भाषाबद्धकरबमैं सोई मोरेमनप्रबोधजिमिहोई ॥ इत्यन्ते ॥ जो शिव जीने पार्बती से वर्णन किया सो उमा महेश्वर संबाद कहावता है और जो काग भुसुंडिने गरुड़से कहासो कागभुसुंडि गरुड संबाद है फिरि जो याज्ञवल्क्य ने भरद्वाज को सुनाया सो याज्ञवल्क्य भरद्वाज संबाद बिख्यात है चौथा संबाद सज्जनों प्रति गुसांई तुलसीदासजीनेकहाहै इसप्रकार सुन्दर युक्ति से इस प्रबन्ध को उस राम चरित्र मानस का उल्था किया और मंगलाचरणके पीछे॥ बन्दौंगुरुपदपदुम परागा॥से प्रारंभ करिके उसकी चौपाइयों की आठपचीसी वा २०० चौपाइयों में अहल्या शापमोचन तकबना कर सीता स्वयम्बर में मिलादिया तो समस्त बालकांड की संख्या ३५० चौपाई या चौपाइयों की १४ पचीसी की हुई परंतु जोकि सीता स्वयम्बर और भरत चरित्र ४८५ चौपाइयों में बनि चुकारहै इसलिये ॥ बाढ़ेखल बहुचोरजुआरा॥से एकपचीसी रामजन्मकी उस में मिलाकर उसको बालकांड का उत्तरार्द्ध कल्पना करिके उनको पूरा पांचसौ ५०० करिदिया और उनका नाम शतपञ्चचौपाई मनोरम रक्खा और लिखा ॥ शतपञ्चचौपाईमनोरमजानिजोनरउरधरै । दारुणअबिद्यापञ्चजनितबिकारश्रीरघुपतिहरै॥ ऐसाजानि परता है कि यह छन्द राम जन्म सीता स्वयंबर भरत प्रेमकी ५०० चौपाइयों के पीछेकहा रहे परंतु जबरामजन्म और सीत स्वयंबर को बालकांडके प्रबंध में रक्खा और भरतप्रेम अयोध्याकांड में लिखातब इस छन्द को उत्तरकांड के अंतमें जा रक्खा और यह ५०० चौपाइयों का रामचरित्र बिस्तारसे कहाहै इसीसे इसको ब्यास कहा है और शेष कांडोंमें राम चरित्र संक्षेपसे है उसको समास लिखा है ॥ कहेउं

नाथ हरि चरित अनूपा ब्यास समास स्वमति अनुरूपा इसका यही अर्थ है॥

अथ सातों काण्डोंकी संख्या लिखते हैं

बाल कांड के प्रारंभ में सात श्लोक पांच सोरठा मंगलाचरण के हैं फिरि तीनि चतुर्दशी चौपाइयों की कही हैं पहिली चतुर्दशी में समस्त बिश्वको सीता,रामात्मक जानिकर विश्वरूप राम को बंदन किया है दूसरी चतुर्दशी में केवल राम परिकर औरराम और रामनामको बंदन और उनकी महिमा कहीहै तीसरी चतुर्दशीमें कथाकी भूमिका और उसको मानसरूप बर्णन किया है फिरि तीनि चौपाइयों में याज्ञवल्क्य भरद्वाज का समागम और कथा प्रश्न कहा है तिस पीछे पचास ५० चौपाई पर पहिला छन्द है और इस पचासे की छियालीसवीं ४६ चौपाईसे लेकर दूसरे पचासेके अस्सीतक चौपाइयों की पांच रुद्रयों में पंचमुख रुद्र श्री शिवजी का बिबाह कहा है और दूसरे पचासे में जो कामदेव ने चारि चतुष्ठयों का बिजय किया है तहां चारि समय छन्द कहेहैं और उन पांच रुद्रियों की पिछिली रुद्री में ५१ छन्द शिवजी के बिबाहमहोत्सव में कहेहैं यहांतक एकसौ १०० चौपाई हैं तो पीछे पार्वती के पूछने से ७५ चौपाइयों में रामजन्म के कारण कहे हैं यह बालकांड का पूर्बार्ध १७५ चौपाइयों का है इतनाही रामजन्म कथा और सीता स्वयंबर है सब ३५० चौपाई हैं अयोध्या कांड जैसा कहि आये तैसाही है न्यूनाधिक नहींहै आरण्यकांड जयन्तकी कथा से लेकर शबरीका मोक्ष पर्य्यन्त ५० चौपाइयों में कहा है पचीस पचीस चौपाइयों पीछे हरिगीत छन्द है समय छन्द अत्रिकी स्तुति खरदूषण के युद्ध मारीच के प्रेम के हैं दोहे सोरठों का क्रम नहीं है कहीं चौपाई पीछे है कहीं दो तीनि चौपाईपीछे हैं॥ चलेरामत्यागाबनसोऊ। अतुलितबलनरकेहरिदोऊ॥ यहांसेलेकर संपातिगृद्ध मिलाप पर्य्यन्त किष्किन्धाकांड है यह कांड बीचका सबकांडोंसे छोटाहै इसलिये इसमें दशदश चौपाई पीछे छन्द कहेहैं इसकांड को सबसे छोटा इसकारण कहा है कियह रामचरितमानस बर्णन किया है और सातोंकांड उसके सोपान कहे हैं सरोवर के सोपान ऊपरसे नीचेतक एकसे एक छोटे होतेजातेहैं फिरि नीचेसे ऊपरतक एकसे एक बड़ेहोते हैं इसीकारण बालकांड सबसे बड़ा है उससे अयोध्याकांड छोटा है आरण्य उससेभी छोटा सबसे नीचे किष्किन्धा जो जलाशय स्थानीयहै सबसेछोटा फिरि सुन्दरकांड किष्किन्धा से बड़ा है लंका उससे बड़ाहै उत्तरकांड सबसे बड़ाहै इसरचनासे सप्तप्रबन्ध सरोवर की आकृति होगया जैसा नीचे लिखा है॥

मानसरोवर

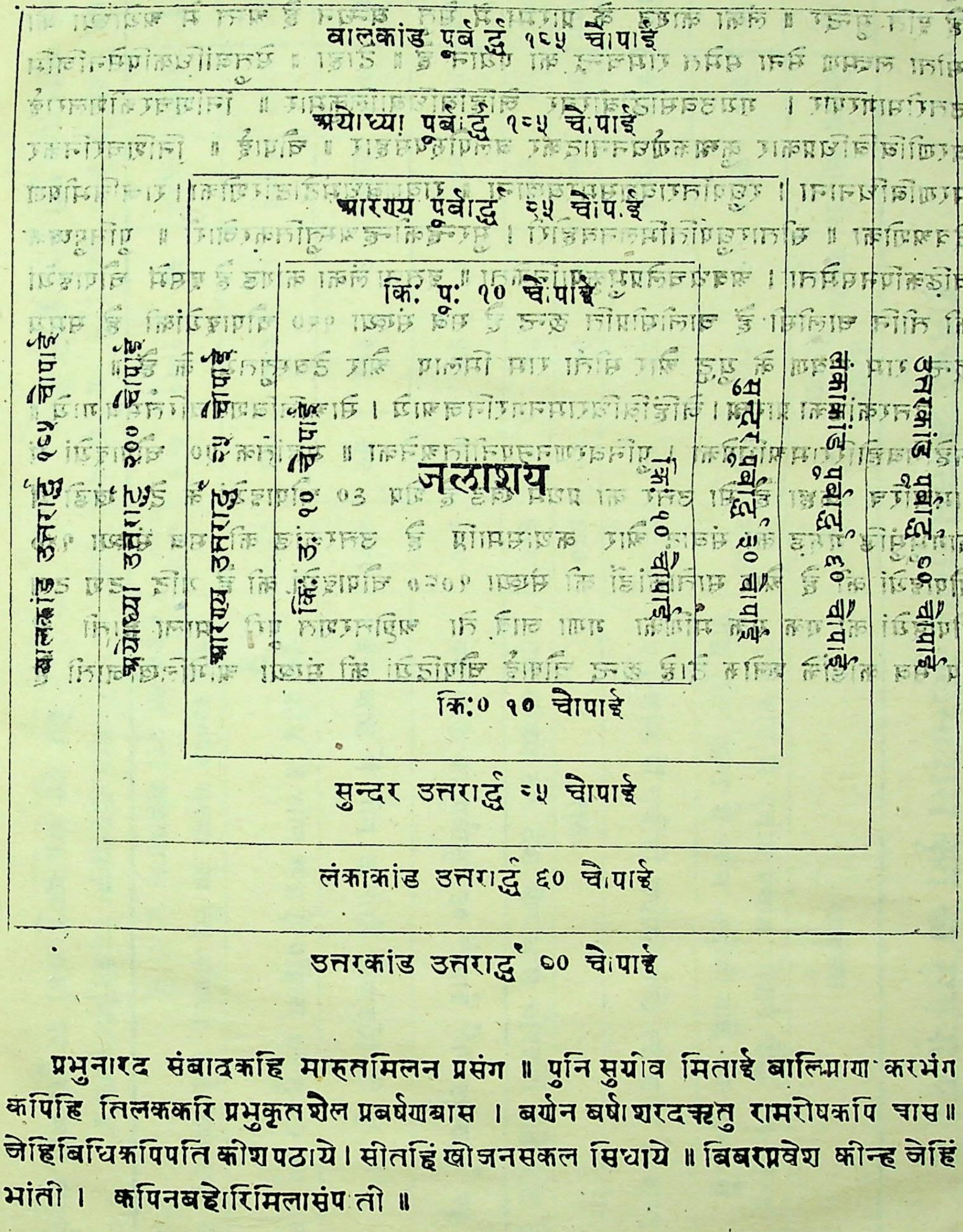

बालकांड पूर्वार्द्ध १८५ चौपाई
अयोध्या पूर्वार्द्ध १२५ चौपाई
आरण्य पूर्वार्द्ध २५ चौपाई
कि: पू: १० चौपाई
बालकांड उत्तरार्द्ध १८५ चौपाई
अयोध्या उत्तरार्द्ध २०० चौपाई
आरण्य उत्तरार्द्ध २५ चौपाई
कि: उ: १० चौपाई
जलाशय
कि: पू: १० चौपाई
सुन्दर पूर्वार्द्ध ३० चौपाई
लंकाकांड पूर्वार्द्ध ६० चौपाई
उत्तरकांड पूर्वार्द्ध ७० चौपाई
कि:० १० चौपाई
सुन्दर उत्तरार्द्ध २५ चौपाई
लंकाकांड उत्तरार्द्ध ६० चौपाई
उत्तरकांड उत्तरार्द्ध ७० चौपाई

प्रभुनारद संबादकहि मारुतमिलन प्रसंग ॥ पुनि सुग्रीव मिताई बालिप्राण करभंग कपिहि तिलककरि प्रभुकृतशेल प्रबर्षणबास । बर्णन बर्षा शरदऋतु रामरोषकपि त्रास॥ जेहिबिधिकपिपति कीशपठाये। सीतहिं खोजनसकल सिधाये ॥ बिबरप्रवेश कीन्ह जेहिं भांती । कपिनबहोरिमिलासंपाती ॥

सुन्दर काण्ड हनूमान के समुद्रतरण से सागर निग्रह तक ५५ चौपाइयों में कहा है ॥ सुनिसबकथासमीरकुमारा । लांघतभयउपयोधिअपारा ॥ लंकाकपिप्रबेशजिमि कीन्हा । पुनिसीतहिंधीरजजिमिदीन्हा ॥ बनउजारिरावणहिंप्रबोधी । पुरदहिलांघेउ बहुरिपयोधी ॥ आयेकपिसबजहंरघुराई । बेदेहीकीकुशलसुनाई ॥ सेनसमेतयथारघु-

बीरा । उतरेजाइबारिनिधितीरा ॥ मिलाबिभीषणजेहिबिधिआई । सागरनिग्रहकथा सुनाई ॥ इति॥ छन्द पूर्बार्द्ध का ३० चौपाई पीछे और उत्तरार्द्ध का २५ चौपाई पीछे है इति सुन्दर ॥ लंका काण्ड के प्रारम्भ में सेतु बन्धन है अन्त में अयोध्या को सीता लक्ष्मण सेना समेत रामचन्द्र का पयान है ॥ दोहा ॥ सेतुबांधिकपिसेनजिमि उतरीसागरपार । गयउबसीठीबीरबर जेहिबिधिबालिकुमार ॥ निशिचरकीशलराई बरणीबिबिधिप्रकार कुम्भकर्णघननादकर बलपौरुषसंहार ॥ चौपाई ॥ निशिचरनिकर मरणबिधिनाना । रघुपतिरावणसमरबखाना ॥ रावणबधमंदोदरिशोका । राजबिभीषणदेवअशोका ॥ सीतारघुपतिमिलनबहोरी । सुरन्हकीन्हअस्तुतिकरजोरी ॥ पुनिपुष्पक चढ़िकपिनसमेता । अवधचलेप्रभुकृपानिकेता ॥ इतना लंका काण्ड है इसमें चौपाइयों की तीनि चालीसी हैं चालीसीप्रति छन्द है सब संख्या १२० चौपाइयोंकी है समय छन्द राम रावण के युद्ध और सीता राम मिलाप और देवस्तुतियों के हैं ॥

उत्तरकांडका प्रारम्भ । जेहिंबिधिरामनगरनिजआये । सोअतिबिशदचरितसब गाये ॥ कहेसिबहोरिरामअभिषेका । पुनिबरणननृपनीतिअनेका ॥ यहांतक ५० चौपाइयों में रामचरित्र कहा है सो उत्तर का प्रथम खंड है शेष ९० चौपाइयों के दो खंडो में कागभुसुंडि गरुड़ का संबाद और कथासमाप्ति है उत्तरकांड की सब संख्या १४० चौपाइयों की है और सातोकांडों की संख्या १०८० चौपाइयों की है यदि दश दश चौपाइयों का एक एक मणिका गणा जावे तो अष्टोत्तरशत पूरी माला होती है शेष सब कांडोंके श्लोक दोहे छन्द चौपाई चौपदियों की संख्या आगेलिखीजाती है

रामचरित्रमानस गुसाईं तुलसीदास कृत का संख्या यंत्र ॥

कांड	चौपाई	चौपदी	श्लोक	दोहा सोरठा	छन्द	योग	व्यवस्था
बाल	३५०	२८००	७	३७३	६०	३२४०	इस कांड में पचीस पचीस चौपाई पीछे पांच छन्द हैं दो दो पचीसी पीछे तीन छन्द हैं तीन पचीसी पीछे एक छन्द है
अयो०	३२५	२६००	३	३२६	१३	२९४२	इस कांड में पचीसी पचीसी पीछे १३ छन्द हैं छन्द पीछे सोरठा है
आरण्य	५०	४००	२	५०	२८	४८०	तथा
किष्किं०	४०	३२०	२	४४	४	३७०	इस कांडमें दश दश और बीस चौपइयों पीछे छंद हैं
सुन्दर	५५	४४०	२	५५	३	५००	इस कांड का पूर्वार्द्ध ३० चौपाई और उत्तरार्द्ध २५ चौपाइयों का है
लंका	१२०	९६०	२	१४६	५२	११६०	इस कांड में तीन चालीसो चौपाइयों की हैं
उत्तर	१४०	११२०	७	२१७	४४	१३८८	इस कांड के तीन खंड हैं पहिला ५० दूसरा ४० तीसरा ५० चौपाइयों का है
योग	१०८०	८६४०	२५	१२११	२०४	१००८०	इस १००८० संख्या के जो मणिका पीछे दश दश रक्खै तो अष्टोत्तर सहस्र की पूरी महामाला होती है

इस संख्या के जो मणिका प्रति दश दश गिनी जावें
तो अष्टोत्तरशत पूरी माला होती है

रामायणमहामाला रत्नवंदेनिलात्मजं ॥
और यह अंक दशहू अंकों पर पूरा भाग पाताहै ॥

दूसरा संख्यायंत्र इसमें चौपाई पीछे के दो चारि छन्दों को भी एकही माना है ॥

कांड	चौपाई	चौपदी	श्लोक	दोहा व सोरठा	छन्द	योगचौपदियों से लेछन्दोंतक	व्यवस्था
बाल	३५०	२८००	७	३७३	३८	३२१८	प्रथम यंत्र के अनुसार है
अयोध्या	३२५	२६००	३	३२६	१३	२९४२	तथा
आरण्य	५०	४००	२	५०	७	४५९	तथा
किष्किंधा	४०	३२०	२	४४	३	३६९	तथा
सुन्दर	५५	४४०	२	५५	२	४९९	तथा
लंका	१२०	०९६०	२	१४६	३४	११४२	तथा
उत्तर	१४०	११२०	७	२१७	१७	१३६१	तथा
योग चौपाई	१०८०	८६४०	२५	१२११	११४	९९९०	नौ सहस्र नौसै नवे तुलसीकृत बिस्तार अष्टदश षट चारि को सबग्रन्थन कोसार

बिचारने की बात है कि जिन परमउदार बुद्धि श्री गुसाईं तुलसीदास जीने सर्बत्र तो चौपाइयों का प्रमाण आठ चौपदियों का रक्खा और छन्दों को भी कांड कांड प्रति यथाक्रमही चौपाइयों पर रक्खा है और समस्त ग्रन्थ की चौपाइयों का प्रमाण अष्टोत्तरशत चौपाइयों की दहाइयों का किया है और चौपदी, दोहा, श्लोक छन्दों के योग का प्रमाण १००८ दहाइयों का रक्खा है जिससे अष्टोत्तरशत और अष्टोत्तर सहस्र की पूरी मालाओं का प्रमाण होता है तो गुसांईं तुलसीदास कहीं कहीं चौपाइयों का प्रमाण आठ आठ चौपदियों से न्यूनाधिक चौपदी कैसे रचते और चौपाइयों का क्रम भंग कर देते और छन्दों को कांड कांड के क्रम से अधिक चौपाइयों पर रखते यह समस्त क्रमभङ्ग केवल क्षेपक चौपदी और चौपाइयों के मिल जानेसेही होगया क्योंकि चौपाइयों को अष्टपदी भी तो लोग कहते हैं यदि इन का प्रमाण आठ आठ चौपदियोंही का न होता तो अष्टपदी कैसे कहातीं गण देखो गीतगोबिन्द की अष्टपदियों को कि उनका क्या क्रम है ॥

और यदि गुसाईं जीने आठ आठ चौपदियों की एक एक चौपाई न कही होती और छन्द भी कांड कांडो में यथा क्रम न कहे होते तो मैंइस आठ आठ चौपदियों की चौपाइयों के प्रमाण को सातों कांडों में कैसे निबह ले जाता और कहीं भी सूत्र भङ्ग न होता और यह सुन्दर १०८० चौपाई और १००८० प्रमाण चौपदी और दोहे, सोरठा, श्लोक, छन्दों का योग मिलि जाता और दूसरा प्रमाण ६६६० का भी आजाता इससे परम प्रतीति होतीहै कि गुसांईं जीका कहा प्रबन्ध इतनाही है जो इससे अधिक है सो क्षेपक है जो सज्जन इसको न्यायदृष्टिसे बिचारि कर देखेंगे सो तो इस को प्रमाणही करैंगे और मेरे श्रम को अन्यथा न मानेंगे क्योंकि मैंने इसमें पक्षपात नहीं कियाहै जो चौपदी और चौपाई,दोहे, सोरठे, छन्द, मेरी समझ में बिचारने से अन्य कृत जानि परीं ते बैष्णव, शैव, भेदबादी, अभेदबादी सब की बनाई हुई प्रबन्ध में नहीं लिखीं इस से प्रबन्ध भी क्रम समेत हो गया और अर्थ भी सुन्दर हो गया और जो अनेक कुतर्कथीं सो भी सब जाती रहीं मानस बिशुद्ध हो गया ॥

अबश्री गुसाईं तुलसीदास का प्रयोजन इस परम पावन श्रीमद्राम चरित्रमानस रचनेका लिखते हैं

श्रीगुसाईं तुलसीदास के समस्त ग्रंथोंकी रचनाके देखनेसे जाना जाता है कि श्री गुसाईं जी सर्बविद्यानिधान सर्बशास्त्रप्रबीण सर्बकाव्यकोबिद समस्त सद्गुणसागर परमदयालु सर्बहितपरायण संतशिरोमणि रहे तातें इसग्रंथकी रचनामें उनका मुख्य प्रयोजन यही जानिपरता है कि मनुष्योंको इसके श्रवण कीर्त्तनसे परमहित रूपी प्रेमलक्षणा अनन्य भगवद्भक्ति का लाभ होवे क्योंकि यदिउनका हार्द अपने पांडित्य प्रसिद्ध करनेका होता अथवा उसमें जीवोंका परमहित जानते तोकोई काव्य ग्रंथ

कवि कालिदासकी नाईं रचते १ और जो गणित ज्योतिष बिद्याको परमोपकारक समझते तो भास्कराचार्य्यके समान कोई ग्रंथ संस्कृत अथवा भाषामेंउस बिद्याका निर्माण करते २ चिकित्सा को उपकार मानते तो लोलिम्बराज इत्यादिके समान चमत्कार पूर्बक चिकित्सा में बनाते ३ गान बिद्या अभिमत होती तोकोई पुस्तक रागमालाकी रचीजाती ४ छन्दभेद पर रुचिहोती तोकोई पिंगलबिद्याका ग्रंथ बर्णन करते ५ ऐसे औरभी जानो येतो सबकेवल लौकिक उपकारीहैं कोई पारलौकिक नहींहैं तातें कोई भोगुसाईंजी के अभिमत नहुये ॥

लौकिक पदार्थों को तो गुसाईंजीने ऐसा लिखा है

कामसेरूपप्रतापदिनेशसे सोमसेशीलगणेशसेमाने हरिचंद्रसे सांचेबडेबिधिसेमघवासे महीपबिषयसुखसाने शुकसेमुनिशारदसे बक्ताचिरजीवनलोमसतेंअधिकाने ऐसेभयेतो कहातुलसीजोपैराजिवलोचनरामनजाने ॥ रहा जीवों का उपकार पार लौकिक साधन सो वेदबिहित त्रिकांड है कर्मकांड उपासना, और ज्ञानकांड, सो भी इस कलिकाल में स्वल्प युष असामर्थ्य असाध्यता के कारण गुसाईंजी के अभिमत नहीं जानि परता है जैसा कहाहै ॥ जपयोगबिरागमहामखसाधनदानदयादमकोटिकरै मुनिसिद्धसुरेशगणेश महेशसेसेवतजन्मअनेकमरै निगमागमज्ञानिपुराणपढै तपसानलमेंयुगपुंजभरै । मनसोपणरोपिकहैतुलसीरघुनाथबिनादुखकौनहरै ॥ बिनयपत्रिकामें ॥ भरोसोजाहिदूसरोहोइ सोकरौ । मेरेतोरामकोनामकल्पतरुकलिकल्याणफरौ॥ कर्मोपासनज्ञानसंतमतसबसबभांति खरौ । मोहितोश्रावणकेअंधेज्योंसूझतरंगहरौ ॥ शंकरसाखिजोराखिकहौंकछुतोगरि जीह गिरौ । अपनोभलोरामनामहिंसोतुलसिहिसमुझिपरौ ॥ सोत्रिकांड में सोयदिकर्म कांडको गुसाईंजी जीवोंका परम उपकार जानते तोनित्य नैमित्य और काम्य तीनि प्रकार के कर्मोंमें,कोई ग्रंथ निर्णय सिंधुके समान यज्ञ, दान, तप, होम, ब्रत, स्वाध्याय, संयम, संध्योपासन, जप, स्नान, पुण्य,तीर्थाटन,चांद्रायण, उपवास, चातुर्मास्य, फलमूलाशन, देवर्षिपितृतर्पण, श्राद्धादि के बिषय में कहते ॥ यदि उपासना कांड अभिमत होता तोदेवताओं के आराधन, अर्चन औरमंत्र जाप, स्तोत्रपाठ के बिधानमें पंचाग पूजनमें कोई ग्रंथ रचते सोभी उनके कथनसे उनके अभिमत नही जानि परता है ॥ कबित्त ॥ भूमिपालब्यालपालनाकपाललोकपालकारणकृपालमेसबैकेजीकीयाहली । कादरकोआदर काहूकेनाहिदेखियतसबहिसुहातहैंसुजानसेवाटाहली ॥ तुलसीप्रतीतिकहैनाहिकछूपच्छपातकौनेईशकियेकीशभालुखासमाहली । रामहींकेद्वारपैबुलाइसनमानियतमोसेहीनदूबर कुपूतकूरकाहली ॥ बिनयपत्रिकामें ॥ यहीकहेउसुनिवेदचहूं ॥ श्रीरघुबीरचरणचिन्तन बिनुनाहिनठौरकहूं । जाकेचरणबिरंचिसेइसिद्धपाईशंकरहूं ॥ शुकसनकादिमुक्तबिचरत तेऊभजनकरतअजहूं । करुणासिंधुभक्तचिन्तामणिशोभासेवतहूं ॥ औरसकलसुरअसुरईश सबखायेउरगछहूं । सुरुचिकहेउसोइसत्यबातसबपरुषबचनजबहूं ॥ तुलसिदासरघुनाथ बिमुखनहिंमिटैबिपतिकबहूं ॥ १ ॥ हरितजि और भजियेकाहि ॥ नाहिंकोऊराम

सोममता।प्रणतपरजाहि कनककशिपुबिरंचिकोजनकर्ममनअरुबात सुतहिदुखवतबिधिनबरज्योकाल के घरजात॥शंभुसेवक जानजग बहुबारदिये दशशीश॥करत राम बिरोध सोसपनेहुंनहटक्योईश ॥ औरदेवनिकोकहियेकास्वारथहिके मीत ॥ काहूकबहुंनराखि लीन्होंशरणगयेसभीत कोनसंपतिदेतसेवतलोकहूंयहरीति दासतुलसीदीनपरएक रामहीकोप्रीति २ जोपैजियजानकीनाथनजाने तोसबकर्मधर्मश्रमदायक ऐसेइकहतसयाने॥ हैंसुरसिद्धमुनीशयोगबिदबेदपुराणबखाने ॥ पूजालेतदेतपलटेसुखहानिलाभअनुमाने ॥काकोनामधोखेहूसुमिरतपातकपुंजसिराने ॥बिप्रबधिक गजगृद्धकोटिखल कौनके पेटसमाने मेरुसेदोषदूरिकरिजनकेरेणुसेगुणउरआने ॥ तुलसिदासतेहिसकलआसतजि भजहिंनअजहुंअयाने ३ गीता वली में नाहिनभजिबेयोगबियोग श्रीरघुबीरसमान आनकोउपूरणकृपाहियो॥ कहोकवनेसुरशिलतारिपुनिकेवटमीतकियो ॥ कौनेगृद्धअधम कोपितुज्योंनिजकरपिंडदियो ॥ कौनेदेवशबरिकेफलकरिभोजनसलिलपियो बालित्रास बारिधिबूड़तकपिकेहिगहिबांहलियो भजनप्रभावबिभीषणभाख्योसुनिकपिकटकजियो तुलसिदासकोप्रभुकोशलपतिसबप्रकारबरियो ॥ ४ ॥

अब रहा कैवल्य मुक्तिप्रदायक केवल ज्ञान यदि गुसाईंजीके अभिमतहोता और उसीमें जीवोंका परमहित जानते तो उत्तरकांडमें जैसा ज्ञानदीपककहाहै उसके अनुसार किसी ज्ञानकांडकेमहान् ग्रंथकाउलथा छोड़िकर इसरामचरित्र मानसका उलथा क्यों करते औरउस ज्ञानदीपककी अपेक्षा भक्तिचिन्तामणिको क्यों विशेष आदर देते जैसा गरुड़नेकागभुसुंडिसे पूछाहैचौपाई कहैंसंतमुनिबेदपुराना । नहिंकछुदुर्लभज्ञानसमाना ॥ सोईमुनितुमसनकहागुसाईं । नहिं आदरेहुभक्तिकीनाईं । और यह तो प्रत्यक्ष प्रमाणहै किजिस वक्तके जो बिद्या वाजो बिषय अथवा जो धर्म अभिमत होताहै सोउस बिद्या और उसी बिषयउसीधर्मका ग्रंथ निर्माणकरता है सो गुसाईं जीने तो इस ग्रंथअथवाअपने और ग्रंथोमेंस्पष्टऐसा सर्बत्रलिखाहै सोहनरामप्रेमबिनुज्ञाना। कर्णधारबिनुजिमिजलयाना॥ संयमनेमफूलफलज्ञाना। हरिपदरतिरसवेदबखाना ॥ जपतपमखसंयमब्रतदाना। बिरतिबिबेकयोगबिज्ञाना॥ सबकरफलरघुपतिपदप्रेमा । तेहिबिनुकोउनलहैसुखक्षेमा ॥फिरिलिखाहै॥चौपाईतीर्थाटनसाधनसमुदाई।योगबिराग ज्ञाननिपुणाई ॥ नानाधर्मकर्मब्रतदाना । संयमदमजपतपमखनाना ॥ भूतदयागुरुद्विजसेवकाई । बिद्याबिनयबिबेकबड़ाई ॥ जहंलगिसाधनवेदबखाने । सबकरफलहरिभक्ति भवाने ॥ जपतपयोगनियमनिजधर्मा । श्रुतिसंभवनानाशुभकर्मा ॥ ज्ञानदयादमतीरथमज्जन । जहंलगिधर्मकहतश्रुतिसज्जन ॥ आगमनिगमपुराणअनेका । पढ़ेसुनेकरफलप्रभुएका ॥ तवपदपंकजप्रीतिनिरंतर । सबसाधनकरफलयहसुन्दर ॥ सोइसर्वज्ञतज्ञसोइपंडित । सोइगुणज्ञबिज्ञानअखंडित ॥ दक्षसकललक्षणयुतसोई । जाकेपदसरोजरतिहोई ॥ सोइसर्बज्ञगुणीसोइज्ञाता ॥ सोइमहिमंडनपंडितदाता । धर्मपरायणसोइकुलत्राता ॥ रामचरणजाकरमनराता ॥ नीतिनिपुणसोईपरमसयाना । श्रुतिसिद्धांतनीकतेहिजाना ॥ सोइकबिकेबिदसोईमतिधीरा । जोछलछांड़िभजै रघुबीरा॥ बिनय पत्रिकामें ॥ नाहिन

आवतआनभरोसो यहकलिकालसकलसाधनतरुहै श्रमफरनिफरोसो ॥ तपतीरथउपबासदानमखजेहिजोरुचैसोकरोसो ॥ पाईहैपै जानिबोकर्मफलभरिबेदपरोसो आगमबिधिजप योगकरत नरसरतनकाजखरोसो ॥ सुखसपनेहुंनयोग सिधिसाधन रोगबियोग धरोसो कामक्रोधमदलोभमोहमिलिज्ञान बिरागहरोसो ॥ बिगरत मनसन्यास लेतजल नावत आमघरोसो ॥ बहुमतसुनिबहुपंथपुराणनिजहांतहांझगरोसो ॥ गुरुकहेउरामनाम नीको मोहिंरामराजदगरोसो ॥ तुलसीबिनहिं प्रतीतिप्रीति फिरिफिरि पचिमरैमरोसो ॥ राम नाम बोहित भवसागर चाहैतरनतरोसो ॥ ऐसाही इस ग्रंथ में भी लिखा है चौपाई साधकसिद्ध बिरक्तउदासी । कबिकोबिदकृतज्ञसंन्यासी ॥ योगीशूरसुतापसज्ञानी । धर्मनिरतपंडितबिज्ञानी ॥ तरहिंन बिनुसेयेममस्वामी । रामनमामिनमामिनमामी ॥ शरणगयेमोसेहुअघराशी । होहिंशुद्धनमामिअबिनाशी ॥

इत्यादि बचनों से केवल ज्ञान कांडभी गुसाईं जीके अभिमत नहीं जानि परता है किन्तु जो सिद्धान्त चिदणडी वेदान्ती स्वामी के अभिमत हैं और जिसको उलूकभट्टकाश्यस्याने मनुस्मृतिके टीकामेंमनु के भी अभिमत लिखा है अर्थात् जो सारतम सिद्धांत योगेश्वरेश्वर सुतंच स्वामी ने गीता के अन्त में अर्जुन को उपदेश किया है सर्वगुह्यतमंभूय:शृणुमेपरमंवच इष्टोसिमेदृढमतिस्ततोवक्ष्यामि तेहितं मन्मनामभवद्भक्तोमद्याजीमांनमस्कुरु ॥ सर्वधर्मान्परित्यज्यमामेकंशरणंब्रज सोईभगवत्प्रपत्ति इस कलिकाल में अति सुगम सिद्धोपाय जीवों का परम हित जानिकर उसी को नाना पुराण निगमागम संमत सनातन शिष्टाचार गुसाईं जी ने प्रण करिकेलिखा है चौपाई शिवअजशुकसनकादिकनारद । जेमुनिब्रह्मविचारबिशारद ॥ सबकरमतखगनायकएहा करियरामपदपंकजनेहा ॥ श्रुतिपुराणसबग्रन्थकहाहीं । रघुपतिभक्तिबिनासुखनाहीं ॥ कमठपीठिजामहिंबरुबारा । बंध्यासुतबरुकाहुहिमारा ॥ फूलहिंनभतरुबहुबिधि फूला जीवनलहसुखहरिप्रतिकूला ॥ तृषाजाइबरुमृगजलपाना । बरुजामहिशशशीश बिषाणा अंधकारबरुरबिहिनशावै । रामबिमुखनजीवसुखपावै ॥ हिमतेंअनलप्रगटबरुहोई राम बिमुखसुखपावनकोई ॥ हठबशशठसाधनबहुकरहीं । भक्तिहीनभवसिंधु न तरहीं दो० बारिमथेघृतहोइबरु शिकतातेंबरुतेल । बिनुहरिभजननभवतरिययहसिद्धांतअपेल और यहभी लिखा है चौपाई यहकलिकालनसाधनदूजा । योगयज्ञजपतपब्रतपूजा ॥ रामहिंसुमिरियगाइयेरामहिं । संततसुनियरामगुणग्रामहिं ॥ इन बचनों के अनुसार जीवों का परम हित परोपकार और अपनी वाणी की साफल्यता के निमित्त इस ग्रन्थ का निर्माण करना गुसाईंजीका परम प्रयोजन जानिपरता है क्योंकि गुसाईं जी ने संत जनों को परोपकार परायण लिखा है ॥ चौपाई ॥ परउपकारबचनमनकाया । संतसुभावसहजखगराया ॥ संतबिटपसरितागिरिधरणी । परहितहेतुसबनकीकरणी ॥ भूरजतरुसमसन्तकृपाला । परहितनितसहेंबिपतिबिशाला ॥ परहितलागितजहिंजो देही । सन्ततसन्तप्रशंसततेही ॥

इस कारण सन्त शिरोमणि श्री गुसाईं तुलसीदास जी का यह बिचार हुआ कि यह ग्रन्थ ऐसा सर्व हित कारक सर्व शास्त्र संमत सुगम रचा जावे कि जिस से अपने समय के और जो पीछे होवेंगे उन सबको लौकिक और पारलौकिक स्वार्थ और परमार्थका लाभ होवे जैसा लिखा है चौपाई कीरति भणिति भूति भलि सोई । सुरसरि सम सबकर हित होई ॥ परंतु जीव तो इस संसार में तीनि प्रकार के हैं जीवनमुक्त १ मुमुक्षु २ विषयी ३ जीवन मुक्तों का तो भगवच्चरित्र काव्यश्रवण व्यसनही है और मुमुक्षु जीव अपने भव बंधन रोग की औषधि जानि कर श्रवण करते हैं और बिषई जीवों को अभिमुख करने के निमित्त इस ग्रन्थको ऐसी मधुर मनोहर कबिताई से रचा है कितनेलोग इसको श्रवणकरतेही इसकेसीखने पढ़ने श्रवणकरने परउपस्थित हो जाते हैं परंतु बिषयी जीवतो इस संसार में नाना प्रकार के हैं किसी की रुचि व्याकर्ण पर बिशेष होती है किसी की काव्यको स्वरूपक अलंकारोंपर होती है किसी की पिङ्गल और किसी की साहित्त पर होती है किसी की गान बिद्या पर बिशेष रुचि होती है इस निमित्त गुसाईं जी ने उन सबों की श्रद्धा बढ़ाने को यह ग्रन्थ उन समस्त अंगों समेत रचा है और अपना हार्दसिद्धांत जो सर्व शास्त्र संमत है षट्कांड संबंधिनी राम कथा में कहींकहीं यथा प्रसंग दरशाया है पीछेसे उत्तरकांडमें स्पष्टकहा है जिससे सब लोग उसको अपनी अपनी रुचिके अनुकूल पढ़ैं वा श्रवणकरैं और बुद्धि भेद न होजावे नबुद्धिभेदं जनयेदज्ञानांकर्मसंगिनां योजयेत्सर्वकर्माणि विद्वान्युक्तः समाचरन् क्योंकि प्रारंभही में बुद्धि भेदहोने से श्रोता की कुरुचि होजाती है और जब अपनी रुचि के अनुकूल उस का बिशेष रसजानिपरता है तब अपने प्रथम बिषय को न्यून जानि कर उस के बिशेष रस को गृहण करता है जैसा कहा है ॥ श्लोक श्रुत्वाधर्मं बिजानाति श्रुत्वात्यजतिदुर्मतिं श्रुत्वाज्ञानमवाप्नोति श्रुत्वामोक्षंतुगच्छति ॥ इस कारण जैसे कोई प्रवीण बैद्यबालक रोगी को मोदकों के साथ जीवनमूरि औषधि देता है तैसेही इस ग्रंथ में मधुर मनोहर काब्य तो मोदकों के समान जीवनमूरि औषधि केवल भक्तिही कही है चौपाई संसृतिरोगसजीवनमूरी रामकथागावहिंश्रुतिशूरी ॥ और जो कि बिषयीजीवों के अंतःकरण रूपीक्षेत्र जो अनेक जन्मों से बिषयाशक्त होकर ऊषरभूमि हो रहे हैं जब तक उन को बिश्वासरूपी बारि बांधिकर अनेक प्रकार के उपदेश रूपी खादिन डारीजावैंजोवैं और अनेक प्रकारं के रोचक कथन रूपी हलों से न जोते जावैं सायरनकिये जावैं तबतक उन में भगवत्प्रेम रूपी बीज बखेरना सफल नहीं होता है और जैसे पुराणों के दशलक्षणों में नौ ९ लक्षण केवल दशवें १० लक्षण आश्रय के प्रति पादक होते हैं श्लोक अत्रसर्गबिसर्गश्चस्थानपोषणभूतयः मन्वंतरेशानुकथानिरोधोमुक्तिमाश्रयः तैसेही इसग्रंथ का समस्त लेख पढ़ने और श्रवण करने और बिचारकरने का परमोत्तम फल भगवच्चरणारबंद की भक्ति है और जो गुसाईं तुलसीदास जी का भी बिशेष प्रयोजन इसमनोहर प्रबंध रचने का यही है कि जो इस को श्रद्धा समेत पढ़े वा श्रवण करे उनके अंतःकरण क्षेत्र में परम

श्रेयरूप भगवत्प्रेम बीज अंकुरे और इस जन्म वा जन्मांतर में भगवत्प्राप्ति का कारण होवै जैसा मेरी मंदबुद्धि में आया तैसा लिखा यथार्थ ईश्वर जाने

आरतिश्रीरामायणजीकी । कीरतिकलितललितसियपीकी ॥ गावहिंब्रह्मादिकमुनिनारद । बाल्मीकिबिज्ञानबिशारद ॥ शुकसनकादिशेषअरुशारद । बरनपवनसुतकीरतिनीकी ॥ १ ॥ संततगावहिंशंभुभवानी । अरुघटसंभवमुनिबरज्ञानी ॥ व्यासआदिकबिपुंगवबखानी । कागभसुंडिगरुड़केहीकी ॥ २ ॥ चारहुवेदपुराणअष्टदस । छहूंशास्त्रसबग्रंथनकोरस ॥ मुनिजनधनसंतनिकोसर्बस । सारअंशसंमतसबहीकी ॥ ३ ॥ कलिमलहरनिबिषयरसफीकी । सुभगशृंगारभक्तियुवतीकी ॥ हरनिरोगभवभूरिअमीकी । तातमातुसबबिधितुलसीकी ॥ ४ ॥

अथ अक्षोहिणी प्रमाणम्

संज्ञा	गज	रथ	तुरंग	पदचर	संयोग
पत्ती	१	१	३	५	१०
सेनामुख	३	३	९	१५	३०
गुल्म	९	९	२७	४५	९०
गुण	२७	२७	८१	१३५	२७०
बाहनी	८१	८१	२४३	४०५	८१०
प्रतिना	२४३	२४३	७२९	१२१५	२४३०
चमू	७२९	७२९	२१८७	३६४५	७२९०
अनी	२१८७	२१८७	६५६१	१०९३५	२१८७०
अक्षौहिनी	२१८७०	२१८७०	६५६१०	१०९३५०	२१८७००

अर्थात् एकरथ एकगज तीनितुरंग पांचपदचर इन सब के योग १० दशसंख्या को एकपत्ती कहाती है ३ तीनिपत्तियों का एक सेनामुख होता है ३ तीनि सेनामुखों का एक गुल्म होता है ३ गुल्मों का एक गुणहोता है ३ तीनि गुणों की एकबाहनी कहाती है ३ बाहनी की एक प्रतिना होती है ३ तीनि प्रतिना की एक चमू कहाती

है ३ तीनि चमूकी एक अनीहोती है १० दशअनी की अक्षौहिणी होती है उसका प्रमाण लिखते हैं श्लोक अक्षौहिणीसमाख्यातारथानांबर्मधारिणां संख्यागणिततत्वज्ञैः सहस्राण्येकबिंशति ॥ १ ॥ उपर्य्यष्टशतंप्राहुर्भूयश्चसप्ततिर्बुधैः अर्थात्२१८७०रथ ॥ गजानां परिमाणंचएतदेवबिनिर्दिशेत् ॥ २ ॥ अर्थात् इतनेहीं हाथी ॥ पंचषष्टिसहस्राणितथाश्वानां बिनिर्दिशेत् दशोत्तराणिषट्शतंसंख्यातत्वबिदोजनाः ॥ ३ ॥ अर्थात् ६५६१० तुरंगाणि ॥ एकलक्षंपदातीनां सहस्राणितथानव शतानित्रीणिपंचाशच्छूराणांशस्त्रधारिणां ॥ ४ ॥ अर्थात् १०९३५० पदचर

अथ महा अक्षौहिणी का प्रमाण ॥

खद्वयंनिधिबेदाक्षिचन्द्राक्षाग्निहिमांशुभि र्महाक्षौहिणिकाप्रोक्तासंख्यागणितकोबिदैः १

कोटित्रयोदशप्रोक्तालक्षाण्येकबिंशति चतुर्बिंशत्सहस्राणितथानवशतानिच महाऽऽक्षौहिणिकाप्राहुरिमेतत्वबिदोजनाः महाक्षौहिणिकायांतुरथाःकोटिश्चतेमता ३ द्वात्रिंशल्लक्षाणिगीयतेतत्वकोबिदैः द्वादशैवसहस्राणिचत्वार्य्येवशतानिच ४ प्रोक्तानिनवतिस्तद्वदेवमेतेगजामता १३२१२४९० इतनेही हाथी जानो अश्वाश्चतुःकोटिमतालक्षाण्येकादशैवतु ५ सप्तत्रिंशत्सहस्राणितथाशतचतुष्टयं सप्ततिश्चैवसंख्याताप्रोच्यतेपत्तयस्तथा ६ ४११३७४७० तुरंगाणि ॥ षट्कोटिश्चैवलक्षाणिचत्वारिंशच्चपंचच द्विषष्टिश्चसहस्राणि तथाशतचतुष्टयंपंचाशदितिसंख्यातापदातीनांतथाबुधैः ६अर्थात् ६४५६२४५० पदचराणि

अक्षौहिणी		महा अक्षौहिणी	
संज्ञा	संख्या	संज्ञा	संख्या
रथ	२१८७०	रथ	१३२१२४९०
गज	२१८७०	गज	१३२१२४९०
तुरंग	६५६१०	तुरंग	४११३७४९०
पदचर	१०९३५०	पदचर	६४५६२४५०
संयोग	२१८७००	संयोग	१३२१२४९००

अवस्था ४ जाग्रत १ स्वप्न २ सुषुप्ति ३ तुरीय ४ उनको बिभु ॥ विश्व १ तैजस २ प्राज्ञ ३ ब्रह्म ४

आश्रम ४ ब्रह्मचर्य्य १ गृहस्थ २ वाणप्रस्थ ३ संन्यास ४ ॥

आकर ४ पिंडज १ अंडज २ स्वेदज ३ उद्भिज ४ ॥

जो देह से देह के साथ जन्मते हैं ते पिंडज कहाते हैं मनुष्य, पशु इत्यादि १ जो अंडों से उत्पन्न होते हैं ते अंडज कहाते हैं जैसे पक्षी, सर्प इत्यादि २ जो पसीने से हो जाते हैं ते स्वेदज हैं जैसे चीलर, लीख इत्यादि ३ जो पृथ्वी को फोड़ि कर उपजते हैं ते उद्भिज बोले जाते हैं जैसे बृक्ष लचक इत्यादि ४.

१२ आभरण १ नूपुर २ किंकिणी ३ हार ४ चूरी ५ मुद्रिका ६ कंकण ७ अंगद ८ कंठश्री ९ बेसरि १० बेंदी ११ तिलक १२ शीशफूल ॥

ऋतु ६ सायण मीन मेष बसंत ऋतुराज है १ सायण बृष मिथुन ग्रीष्म ऋतु है २ सायण कर्कसिंह बर्षा पावस है ३ सायण कन्या तुला शरद कहाती है ४ सायण बृश्चिक धनुष हेमंत ऋतु होती है ५ सायण मकर कुंभ शिशिर है ६

गुण ३ सत १ रज २ तम ३ राजगु: साम दाम दंड बिभेद

चतुरंगिनी सेना रथ १ गज २ तुरंग ३ पदचर ४

तत्व २६ पंचमहाभूत पृथ्वी १ जल २ तेज ३ बायु ४ आकाश ५ पंचतन्मात्रा गंध ६ रस ७ रूप ८ स्पर्श ९ शब्द १० पंचज्ञानेंद्री घ्राण ११ रसना १२ चक्षु १३ त्वचा १४ श्रोत्र १५ पंचकर्मेन्द्री गुदा १६ शिष्णु १७ कर १८ चरण १९ बाक् २० मन २१ बुद्धि २२ अहंकार २३ महत्तत्व २४ ये माया के हैं जीव २५ ईश्वर २६ ॥

ताप ३	अध्यात्मिक १ अधिदैविक ३ अधिभौतिक ३
जगत्कारण	उत्पत्ति के ब्रह्मा १ पालन के बिष्णु २ प्रलय के रुद्र ३ ॥
त्रिदेव ॥	
त्रिविधि कर्म	संचित १ प्रारब्ध २ क्रियमान ३ सोत्रिबिधि: ॥ नित्य, नैमित्य, काम्य ॥
दिग्पाल १०	पूर्व के इन्द्र १ दक्षिण के यम २ पश्चिमके बरुण ३ उत्तर के कुबेर ४ आग्नेय के अग्नि ५ नैऋत्य के निऋत ६ बायब्य के बायु ७ ईशान के ईशान शिव ८ ऊर्द्ध के ब्रह्मा ९ अध के शेष १० ॥
पुराण १८	सात्विकी ६ विष्णु, नारदी, भागवत, गरुड़, पद्म, बाराह ॥ राजसी ६ ब्रह्मांड ब्रह्मबैवर्त, मार्कंडेय भविष्य बामन, ब्रह्म, तामसी ६ ॥ मत्स्य, कूर्म, लिंग शिव स्कंद अग्नि ॥
नवधाभक्ति	श्रवणं कीर्त्तनं बिष्णो: स्मरणं पादसेवनं अर्चनं बंदनं दास्यं सख्यमात्मनिबेदनं ॥
नवनिधि	महापद्मश्च १ पद्मश्च २ शंखो ३ मकर ४ कच्छपो ५ मकुन्द ६ कुन्द ७ नीलाश्च ८ खर्व्वश्च ९ निधयो नव: ॥
नवरस	शृंगार १ हास्य २ करुणा ३ रौद्र ४ बीर ५ भयानक ६ बीभत्स ७ अद्भुत ८ शांत ९ ॥
उनके पाच	शृंगार का स्थाई रति १ हास्य का हर्ष २ करुणाका शोक ३ रौद्र का क्रोध ४ बीरकास्थाई उत्साह ५ भयानक का भय ६ बीभत्स कास्थाई निन्दा ७ अद्भुत का बिस्मय ८ शांतका शांत ९ ॥
वेदोपवेद	सामवेद का उपवेद गांधर्बबेद १ ऋग्वेदका उपवेद आयुर्वेद २ यजुर्वेद का उपवेद धनुर्वेद ३ अथर्ववेद का उपवेद बास्तु शिल्प ॥
बेदांग ६	जिस से अक्षर मात्रा वृत्त का ज्ञान हो उसको छन्द कहते हैं सो वेदों के चरण जिसमें सब कर्मों के करने की रीति है उसको कल्प कहते हैं

	सो वेदों के हाथ है जिससे कालचक्रों का ज्ञान हो उसको ज्योतिष कहते हैं सो वेदो के नेत्र हैं जिसमें वेदों के कठिन शब्दों का अर्थ हो उसको निरुक्ति कहते हैं सो वेदो के कर्ण हैं जिससे शब्दों की शुद्धता का ज्ञान हो उसको व्याकरण कहते हैं सो वेदोंका मुख है वेदों के पढ़ने की बिधिको शिक्षा कहते हैं सो वेदोंका हृदय है ६ ॥
बिप्रगुण ९	रजोतपस्वीसंतुष्टीक्षमाऽतृष्णा जितेंद्रिय:दाताज्ञानीदयालुश्चब्राह्मणोनवभिर्गुणै: ॥
बिप्रकर्म ९	शमोदमस्तप:शौच:शांतिरार्जवमेवच ज्ञानबिज्ञानमास्तिक्यंब्रह्मकर्मस्वभावजं ॥
द्विषड्गुण १२	शमोदमस्तप:शौचशांत्यार्जवबिरक्तता ज्ञानबिज्ञानसंतोष:सत्यास्तिक्यो द्विषड्गुण: ॥
युग ४	कृतयुग १७२८००० बर्ष त्रेतायुग १२९६००० बर्ष द्वापर ८६४००० कलियुग ४३२००० इन सबके सहस्र का कल्प कहावता है अर्थात् इन चारों का योग हुआ ४३२०००० उनका सहस्र ४३२००००००० ॥
योनि ८४ लक्ष	मनुष्य ४००००० पशु २३००००० पक्षी १०००००० योनि ॥ जलचर ९००००० कृमि ११००००० स्थावर २०००००० योनि
शास्त्र ६	मीमांशा १ न्याय २ बैशेषिक ३ योग ४ सांख्य ५ बेदांत ६ ॥
ऋषि ७	कश्यप १ अत्रि २ बशिष्ठ ३ बिश्वामित्र ४ भरद्वाज ५ गौतम ६ यमदग्नि ७
सिद्धि ८	अणिमा १ महिमा २ गरिमा ३ लघिमा ४ प्राप्ति ५ प्राकाम्य ६ ईशित्व ७ वशित्व ८ ॥
नव ९ सप्त ७ १६ शृंगार	शौच १ उबटन २ स्नान ३ केशबंधन ४ अंगराग ५ अंजन ६ जावक ७ दंतरंजन ८ तांबूल ९ बसन १ भूषण २ सुगन्ध ३ पुष्पहारादि ४ कुंकुम ५ भाल तिलक ६ चिबुक बिन्दु ७ ॥
ईति ६	अति बर्षा १ सूखा २ टाडी ३ मूषक ४ शुक ५ स्वचक्र परचक्र ६ ॥
ब्यसन	स्त्रीद्यूतंमृगयामद्यंनृत्यंगीतंवृथाटनं बादंनिन्दांदिवास्वप्नंनराणांब्यसनन्दश: ॥
अष्टधामूर्ती	शैलीदारुमयीलौही लेप्या लेख्या चसैकती मनोमयी मणिमयी प्रतिमाष्टविधास्मृता ॥

बहुधा लोग शंका करते हैं और कहते हैं कि गुसाईं तुलसीदासजी तो अनन्य रामभक्त रहें और श्री गणेश जीको ग्रन्थों के प्रारम्भ में प्रणाम करना प्राचीनपरिपाटी नहीं है यदियह प्राचीन परिपाटी होती तो अठारहूं पुराण, छहूंशास्त्र बीशो धर्मशास्त्र की स्मृति, रामायण, महाभारतादि प्राचीन ग्रन्थों में अवश्य होती सो तो किसी में देख नही परती है

यह प्रणाली श्रीमच्छङ्कराचार्य्य के अवतार के पीछे से प्रचलित हुई है उसक

यह प्रमाण देते हैं कि पुराणादिक ग्रन्थों में दो पीठ अर्थात् दो परि कर प्रसिद्ध हैं एक बिष्णु पीठ दूसरा रुद्रपीठ सो जब इस कलियुग में बौध, जैन, चार्बाक, पाषंड अधर्म के बढ़ने से ये दोनो पीठ संकुचित हो गयेतबबैदिक धर्म की रक्षा केनिमित्त आप शिव जी ने श्रीमच्छङ्कराचार्य्य का अवतार लेकर समस्त पाषंड को दूरि कर दिया और बैदिक धर्म स्थापन किया दिग्बिजय के द्वारा समस्त भारतखंड के पंडित उनके शिष्य हो गये और उन्हीकी संपदा प्रचलित होगई इसी कारण उनके पीछे उनके शिष्य प्रशिष्यो की रुचि बिष्णु पीठ के अपेक्षा रुद्रपीठ परबिशेष हुई और समस्त देशों के लोग उन्ही के अनुयायी हुये तबसे समस्त मंगल कार्य्यों में जातकर्म से लेकर बिबाहादिक कर्मों में सर्बत्ररुद्रपीठही का पूजन होता है तहां रुद्रपीठ में श्रीगणेशही अग्रपूज्य हैं इस कारण अब के कोई २ ग्रन्थकार अपने ग्रन्थोके प्रारंभ में उनको नमस्कार करते हैं कुछ बिशेष आवश्यकता नहीं है तो गुसाईंजी ने अनन्य रामभक्त होकर अपने इस रामचरित्रमानस में प्रथम अपने इष्ट देव रामको छोड़िकर बाणी बिनायक को बंदन क्योंकिया है ॥

शंका निवारण

श्री गुसाईं तुलसी दास जी निःसंदेह अनन्य राम भक्त रहें अनन्य भक्तों कीदो प्रकार की भावनागीत में कही हैं योमांपश्यतिसर्बत्रसर्बंचमयिपश्यतितस्याहंनप्रणश्यामिसचमेनप्रणश्यति ॥ अर्थात् एक अनन्य तो सर्बत्र मेरेही को देखते हैं ते मेरे को कभी नहीं बिसारते हैं जैसे भागवत में कहा है खंवायुमग्निंसलिलंमहींचज्योतींश्चसत्वानिदिशोद्रुमादीन् सरित्समुद्रांश्चहरेश्शरीरं यत्किञ्चिभूतंप्रणमेदनन्यः ऐसे अनन्य तो सबके पूजनमें भगवत् पूजन ही जानते हैं और सबके बंदन में भगवद्बंदनही मानते हैं ॥ १ ॥

दूसरे अनन्य सबको मेरेही अंतर्गत देखतेहैं उनको मैं कभी नही बिसारता हूं ते सब का पूजन मेरे पूजनही में जानते हैं और सब का बंदन मेरेही बंदन में मानते हैंजैसेभागवत् में कहे हैं ॥ यथातरोर्मूलनिषेचनेनतृप्यन्तितत्स्कंधभुजोपशाखाः प्राणोपहाराच्चयथेन्द्रियाणांतथैवसर्बार्हणमच्युतेज्याः इनमें प्रथमकहे ते ज्ञानी हैं दूसरे प्रेमी अनन्यहैं श्री गुसाईं तुलसीदास तो राम को बिश्वब्यापक और बिश्वको रामात्मक जानते रहे जैसा रामस्तवराज में लिखा हैं ब्रह्माबिष्णुश्चरुद्रश्च देवेंद्रोदेवतास्तथा आदित्यादिग्रहाश्चैवत्वमेवरघुनन्दन १ तापसाऋषयःसिद्धासाध्याश्चमरुतस्तथा बिप्राबेदास्तथायज्ञापुराणंधर्मसंहिता ॥ २ ॥ बर्णाश्रमास्तथाधर्मावर्णधर्मास्तथैवच यक्षराक्षसगन्धर्बादिग्पाला दिग्गजादयः ॥ ३ सनकादिमुनिःश्रेष्ठास्त्वमेवरघुपुङ्गव ॥ ३ ॥ बसवाष्टौत्रियःकालारुद्राएकादशास्मृता तारकादशदिक्चैवत्वमेवरघुनन्दन ॥ ४ ॥ सप्तद्वीपासमुद्राश्चनगानद्यास्तथाद्रुमाः स्थावराजंगमाश्चैवत्वमेवरघुनायक ॥ ५ ॥ देवतिर्य्यक्मनुष्याणांदानवानांतथैवच मातापितातथाभ्रातात्वमेवरघुबल्लभ ॥ ६ ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

अथ तुलसीदास कृत रामायण सटीक ॥

RANBIR LIBRA
No
JAMMOO

बालकाण्ड ॥

श्लो० वर्णनामर्थसंघानांरसानांछंदसामपि ।
मंगलानांचकर्त्तारौवंदेवाणीविनायकौ १ ॥

श्री मद्राम चरित्र मानस के प्रारंभ में श्री गुसाईं तुलसी दास जी इस परम पावन ग्रंथ में सुन्दर मनोहर मयत्री अक्षर और अति गंभीर अर्थ और सरस काव्य और ललित छन्द पढ़ने के आशय से सरस्वती को और और ग्रन्थ को मंगल पूर्वक निर्विघ्न समाप्त होने के निमित्त समस्त विघ्न हरण श्री गणेश को प्रथम बंदन करते हैं ॥

जिस सरस्वती ने वेद मूल प्रणव ओंकार से ४९ वर्ण पांच स्थानों से इस क्रम से उत्पन्न किये अ आ क ख ग घ ङ ह और बिसर्ग ये ९ अक्षर तो कंठ से इ ई च छ ज झ ञ य श ये ९ अक्षर तालू से ऋ ॠ ट ठ ड ढ ण र ष ये ९ अक्षर मूर्द्धा से लृ ॡ त थ द ध न ल स ये ९ अक्षर दांतों से उ ऊ प फ ब भ म ये ७ अक्षर ओठों से ए ऐ दो अक्षर कंठ तालू से ओ औ दो अक्षर कंठ ओठों से व दांत ओठों से अनुस्वार ओठ नासिका से फिर इन्ही वर्णों के पद और प्रत्यय से अर्थों के समूह किये और शृङ्गारादि नव रस और गायत्री उष्णिक अनुष्टुप्त्रिष्टुप बृहती पंक्ति जगती इत्यादि छन्द प्रगट किये सरस्वती को और विघ्न हरण मंगल करण विनायक श्री गणाधिपति दोनों को बंदन करता हूं ॥ १ ॥ सीतांशसंभवांवाणीं रामांशेनविनायकं । सीतारामांशसंभूतौ बंदेवाणीविनायकौ ॥

यह अर्थ नवीन परिपाटी के अनुसार है यदि अनन्यता अर्थ चाहो तो इस श्लोक के अनुसार जानो ऐसाही सर्वत्र जानो ॥

श्लो० भवानीशंकरौवंदे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ।
याभ्यांविनानपश्यंतिसिद्धाःस्वांतस्थमीश्वरं २ ॥

अब इस ग्रन्थ के मुख्य कारण भूत श्री पार्वती और श्री शिवशंकर को श्रद्धा और विश्वास रूप और उनकी कृपा बिना ईश्वर की अप्राप्ति दर्शाते हुये बंदन करते हैं भव नाम श्री शिवजी का है उनकी पत्नी तातें भवानी नाम श्री पार्वती का है और जगत् के कल्याणकारी शिव तातें शंकर नाम उनका है तिन्ह दोनों को मैं

बंदन करता हूं जो श्रद्धा और विश्वास रूपी हैं जैसे इस जीव को श्रद्धा विश्वास बिना सर्वात्मा ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती है तैसेही इन दोनों की कृपा बिना अपने ही हृदय में विराजमान जो ईश्वर उसको सिद्ध पुरुष भी नहीं देख सकते हैं इस बंदना में श्री पार्वती को श्रद्धा और श्री शिव जी को विश्वास रूप इस कारण कहा है कि श्री पार्वतीजी ने इस संसार सागर में पड़े हुये जो अज्ञ जीव उनके उद्धार के निमित्त उनकी श्रद्धा ईश्वर में दृढ़ करने को अनेक ग्रन्थों में श्री शिवजी से प्रश्न करके उनके उत्तर के द्वारा अनेक प्रकार ईश्वर की महिमा और वात्सल्यादिक गुण प्रगट कराये और ईश्वर के जन्म कर्म लीला आप श्रद्धा रूप होकर कहाये जिनके श्रवण कीर्तनही से जीवों की श्रद्धा ईश्वर में अचल हो जावै ऐसेही श्री शिवजी ने अपनी परम दयालुता से जीवों का दृढ़ विश्वास ईश्वर में हो जाने के निमित्त श्री पार्वती को अवसर करिके अपने उपदेश में आप विश्वास रूप होकर प्रवेश किया कि जो कोई उन दोनों के सम्वाद को श्रवण कीर्तन करै उसका ईश्वर में अचल विश्वास और श्रद्धा अवश्य हो जावै याही ते ये दोनों श्रद्धा विश्वास रूप हैं इनकी कृपा बिना ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती है ॥

श्लो॰ वंदेबोधमयंनित्यंगुरुंशंकररूपिणं ।
यमाश्रितोहिवक्रोपिचंद्रःसर्वत्रवंद्यते ३ ॥

शिष्यों के समस्त संदेह निवारक प्रबोध मय अपने गुरुदेव को मैं निरन्तर बंदन करता हूं जो साक्षात् शंकर रूप हैं जैसे शिवजी के आश्रित होने से वक्र चन्द्रमा भी सर्वमान्य है तैसेही जो अपने अपने आचार्यों के समाश्रित होते हैं उन खरे खोटों का भी सर्वत्र प्रमाण होता है और जो गुरु के आश्रित नहीं होता है उसका प्रमाण कहीं भी नहीं देखि परता है गुरु बिनु भवनिधि तरै न कोई । जो बिरंचि शंकर सम होई ॥ ३ ॥

श्लो॰ सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ ।
वंदेविशुद्धविज्ञानौकवीश्वरकपीश्वरौ ४ ॥

श्री सीताराम के गुण ग्राम अर्थात् अनन्त कोटि राम चरित्रों का परम पावन बन उसके दोनों संचारी और दोनों विशुद्ध विज्ञान के निधान ऐसे जो आदि कवि श्री मद्राम चरित्र के मुख्य वक्ता महर्षि प्राचेतस श्री वाल्मीकिजी और समस्त श्री राम सेना में अग्रगण्य कपीश्वर पवन पुत्र श्री हनुमान जी इन दोनों को बंदन करता हूं ४ ॥

श्लो॰ उद्भवस्थितिसंहारकारिणींक्लेशहारिणीं ।
सर्वश्रेयस्करींसीतांनतोऽस्मिरामवल्लभां ५ ॥

इस पंचम श्लोक में जगज्जननी जानकी का त्रिशक्ति धारकत्व क्लेश रूप संसार बंधन मोचकत्व भुक्ति मुक्ति प्रदत्व राम वल्लभत्व दरशाते हुये उनको बंदना करते

6509.

हैं उत्तमत्र कहैं उत्पत्ति, स्थिति, पालन, संहार, प्रलय इन तीनों शक्ति की धारण श्री जानकी हैं कि जगत् स्रष्टा ब्रह्मा की रजोगुणी शक्ति में व्यापक होकर सृष्टि को सृजती हैं और जगदंतक रुद्र की तामसी शक्ति में व्यापक होकर प्रलय करती हैं और स्वयं आप विष्णु की शुद्ध सात्विकी शक्ति रूप विश्व का पालन करती हैं फिर क्लेश हारिणी और सर्व श्रेयस्करी भी हैं कि अपने समाश्रितों के अनेक जन्मों के पाप राम स्वामी से क्षमा कराकर उनको संसार बंधन क्लेश से छुटाकर सर्व श्रेय रूप सालोक्य, सारूप्य, सामीप्य, सायोज्य मुक्ति का अधिकारी करती हैं और जिन्होंने अपनी पूर्व प्रतिज्ञा के अनुसार जो अपने वैकुंठ द्वारपाल जय और विजय के एक जन्म के शाप मोचन के विषय में किया रहै सो अपनी परम दयालुता के अनुसार मिथिलापुरी में जन्म लेकर अपने पिता के राज घर का सुख छोड़ा और अमरावती से भी अधिक अपनी राजधानी अयोध्या का भी सुख छोड़ि कर वनमें निवास किया तहां विराध और खर दूषण को अपने विषय में दुष्ट बुद्धि धरिकर उनको संसार बंधन क्लेश से छुटाया फिर कंचन मृग के चर्म की प्रार्थना के व्याज से श्री रामचन्द्र का परम दुसह वियोग अंगीकार किया और श्री लक्ष्मण जी से क्रूर बचन कहिकर भागवतापचार दोष ग्रहण किया और जगद्विडंबन रूप अपना हरण स्वीकार करके अपना निवास लंका में किया इतना क्लेश और दोष और विडंबन सहिकर गृध्रराज जटायु को अधम योनि छुटाकर वैकुंठ निवासी किया और कबंध को शाप से छुटाया शबरी को मोक्ष किया सुग्रीव को बालि से बचाकर राज्य दिया जटायु के बड़े भाई संपाती को नवीन पक्ष दिये फिर हनूमान द्वारा छाया ग्राही राक्षस और अक्षकुमार इत्यादिकों को राक्षसी योनि से उद्धार किया फिर सेतुबंधन समय समुद्र की पीड़ा निवारण के लिये उसके उत्तर तट वासी राक्षसों का संसार बंधन मोचन किया पीछे रावण कुंभकरण को पुत्र पौत्र परिवार सेना समेत उनके दूसरे जन्म का शाप छुटाकर परमधाम दिया और समस्त देवताओं को रावण के बंधन से छुटाकर अपने शरणागत विभीषण को राज्य दिया फिर लक्ष्मणद्वारा ही अग्नि में प्रवेश करिके भागवतापचार दोष और मिथ्या लोकापवाद को भस्म करके अपने स्वामी श्रीरामचन्द्र को प्राप्त होकर समस्त वियोग संताप दूर किया इस प्रथम वियोग में तो सीता ने अपनी परम दयालुता दिखाई दूसरे वियोग में जब रामचन्द्र ने रजक द्वारा लोकापवाद सुनिकर त्याग किया तब श्री जानकी जी अपने को पराधीन जानिकर अपने स्वामी की प्रसन्नता में प्रसन्न होकर बाल्मीकि मुनि के आश्रम में निवास किया इसमें अपना पारतंत्र्य धर्म दिखाया तीसरे वियोग में जब अश्वमेध यज्ञ के समय बाल्मीकि मुनि की आज्ञा से लोकापवाद दूर करने के लिये रामचन्द्र ने सीता से प्रत्यक्ष प्रमाण चाही तब श्री जानकी ने इसे प्रत्यक्ष प्रमाण से अपना सत्य पातिव्रत धर्म और अनन्यार्हत्व समस्त सभा को दिखा दिया । यथाहं राघवादन्यं मनसापि न चिन्तये । तथा मे माधवी देवी विवरं दातुमर्हसि । इसका यह अर्थ है जैसे मैं राघव रामचंद्र से अन्य को मन

से भी नहीं चिंतवन करती हूं तैसेही मेरे को हे माधवी देवी पृथ्वी तू बिवर देने के योग्य है इतना कहतेही दिव्य सिंहासन समेत आप भू देवी बिवर द्वारा प्रगट हुई और सीता को सिंहासन पर बैठा कर लिये चली गई इस तीसरे वियोग में अपना अनन्यार्हत्व दिखाया जो सेवक सदा स्वामीही के आधीन रहता है और स्वामी को छोड़कर और को नहीं जानता है अर्थात् अनन्य गति अनन्य शरण अनन्य भोग्य होता है और सबका हित चिंतक होता है परम दयालु होता है सोई सेवक स्वामी का परम प्रीतम होता है और स्वामी के अपराधियों के समस्त दोषों को क्षमा करकर फिर स्वामी से मिला सक्ता है उसी को पुरुषकार कहते हैं सो इन तीनों वियोगों में सीता ने अपना दयालत्व पारतंत्रत्व अनन्यार्हत्व दिखाकर अपना पुरुषकारत्व दरशाया और समस्त रामायण भी सीताही का चरित्र है जैसा रामायण में है॥ सम्यक् रामायणं काव्यं सीतायाश्चरितं महत्। फिर श्रीसीताजी पर रामचन्द्र का सनातन वल्लभत्व भी विख्यात है कि जिनके निवास के लिये अपने वक्षस्थल में स्थान दिया और श्री निवास कहाये और अपना निवास उनकी जन्म भूमि क्षीर सागर में किया और समस्त संसार का श्रेय जिनके कृपा कटाक्ष के आधीन कर दिया और जिनकी प्राप्ति के लिये सुरासुरों से समुद्र को मथवाया और इस रामावतार में उस पर सेतु बंधाया और उनसे वियोग करता रावण को पुत्र पौत्र परिवार सेना समेत नाश करिके अपना वल्लभत्व दरशाया और विश्वामित्र की यज्ञ के ओखे से जनकपुर जाकर समस्त राजों का मान भंग कर उनको बिवाहा फिर कृष्णावतार में द्वारका से कुंदनपुर जाकर शिशुपाल जरासन्ध को जीतिकर रुक्मिणी को विवाहा ऐसी जो राम वल्लभा श्री सीता तिनको प्रणाम करता हूं ५ ॥

श्लो० यन्मायावशवर्त्तिविश्वमखिलंब्रह्मादिदेवासुरा ।
यत्सत्वादमृतैवभातिसकलंरज्जौयथाहेर्भ्रमः ॥
यत्पादप्लवमेकमेवहिभवांभोधेस्तितीर्षावतां ।
वंदेहंतमशेषकारणपरंरामाख्यमीशंहरिं ६ ॥

इस छठे श्लोक में तुलसी दास अपने इष्ट देव श्री रामचन्द्र को उनका परात्परत्व, सर्वेश्वरत्व, जगत्कारणत्व, बंध मोक्ष प्रदत्व, और सत्वत्व दरशातेहुये अभिवंदन करते हैं जिस ईश्वर की प्रबल माया के बशवर्ती हैं ब्रह्मा, रुद्र, इन्द्रादि, समस्त देव और दानव और अखिल विश्व जैसा कहा है॥ ब्रह्मेन्द्र रुद्र मुनि मोहन शील लीलां मायां परांसमधि गम्यपरस्यविष्णोः ॥ और जिसके सत्व से चेतनसी भासती है सबको अचेतन माया जैसे अचेतन रज्जु में चेतन सर्प का भ्रमहोता है॥ जो चेतन कहं जड़ करै जड़हि करै चैतन्य ॥ और संसार सागर के पार जाने को जिस ईश्वर के चरण कमलही एक नौका हैं दूसरा कोई उपाय मुमुक्षु को नहीं

है ॥ साधक सिद्ध विरक्त उदासी । कवि कोविद कृतज्ञ संन्यासी ॥ योगी शूर सुतापस ज्ञानी । धर्म निरत पण्डित बिज्ञानी ॥ तरहिं न बिनु सेये मम स्वामी । राम नमामि नमामि नमामी ॥ शरण गये मोसिहु अघराशी । होहिं शुद्ध नमामि अविनाशी ॥ ऐसे समस्त जगत्कारणों के परम कारण श्री रामचन्द्र परमेश्वर स्वयं विष्णु भगवान को मैं अभिबंदन करता हूं ॥ ध्येयंसदा परिभवघ्न मभीष्ट दोहं तीर्थास्पदं शिव बिरंचि नुतंशरण्यं । भृत्यार्त्तिहं प्रणतपाल भवाब्धिपोतं बंदेमहापुरुषते चरणारबिंदं ॥ त्यक्त्वा सुदुस्त्यजसुरेप्सितराजलक्ष्मीं धर्मिष्ठ आर्य्य बचसायदगादरण्यं। मायामृगंदयितयेप्सित मन्वधावद्वंदे महापुरुषतेचरणारबिंदं ६ ॥

श्लो० नानापुराणनिगमागमसम्मतम्य ।
द्रामायणेनिगदितंक्वचिदन्यतोऽपि ॥
स्वांतःसुखायतुलसीरघुनाथगाथां ।
भाषानिबंधमतिमंजुलमातनोति ७ ॥

जो रघुनाथ गाथा वर्णन करना अठारहों पुराण चारों वेद छहों शास्त्र और ब्रह्म
यामल इत्यादि तंत्र और सब ग्रन्थों का सम्मत है सोई रघुनाथ गाथा अपने अंतः-
कर्ण के सुख के निमित्त मैं तुलसीदास अति उज्वल भाषा प्रबन्ध बिस्तार करता
हूं नाना पुराण अर्थात् सात्विक राजस तामस पुराण जो पद्म पुराण में शिवजी ने
पार्वती से कहे हैं ॥ वैष्णवंनारदीयंच तथा भागवतंशुभं। गारुडंचतथापाद्मं वाराहं
शुभ दर्शने ॥ सात्विकानिपुराणानि विख्यातानिमणीषिभि ॥ ब्रह्मांडंब्रह्मवैवर्त्तमार्कंडेयं
तथेवच । भविष्यंवामनंब्राह्म्यं राजसानिनिबोधमे ॥ मात्स्यं कौर्म्यं तथालैंग्यंशैव्यंस्का-
दंतथेवच । आग्नेयंच षडेतानि तामसानिनिबोधमे ॥ तैसेही वेदभी त्रैगुण्य कहे हैं ॥
गीतायां त्रैगुण्य विषयावेदाःनिस्त्रैगुण्योभवार्जुन इति ॥ छहों शास्त्र ॥ मीमांसा, न्याय,
८। वैशेषिक, योग, सांख्य, वेदान्त ॥ तंत्र ॥ नारद, पंचरात्रि, ब्रह्मयामल, विष्णुयामल,
रुद्रयामल, इत्यादि ॥ इतिहास ॥ श्रीमद्रामायण, भारत ॥ और अन्यच उप पुराण
इत्यादि और प्राचीन महर्षि इन सबके सम्मत रघुनाथ गाथा है जैसा कहा है ॥ शेष
शारदा वेद पुराणा। सकल करहिं रघुपति गुण गाना ९ ॥

सो० जेहि सुमिरत सिधि होइ गणनायक करिवर बदन ।
करहु अनुग्रह सोइ बुद्धि राशि शुभ गुण सदन १ ॥
मूक होहिं बाचाल पंगु चढ़हिं गिरिवर गहन ।
जासु कृपा सुदयाल द्रवहु सकल कलिमल दहन २ ॥
नील सरोरुह श्याम तरुण अरुण वारिज नयन ।
करहु सो मम उर धाम सदा क्षीर सागर शयन ३ ॥

कुंद इन्दु सम देह उमा रमण करुणा अयन ।
जाहि दीन पर नेह करहु कृपा मर्दन मयन ४ ॥
बंदौं गुरु पद कंज कृपा सिंधु नर रूप हर ।
महा मोह तम पुंज जासु बचन रविकर निकर ५ ॥

जिनके स्मरण करतेही कार्य्य की सिद्धि होती है ते रुद्र गणों के नायक गजानन बुद्धि के राशि शुभगुणों के मन्दिर मेरे पर अनुग्रह करो १ जिस ईश्वर की कृपा से गूंगा तो वक्ता होता है और लंगड़ा अति दुर्गम पर्वत पर चढ़ता है जैसे शेष सर्प शरीर में समस्त व्याकरण के वक्ता हुये और अरुण पंगु देह से सूर्य्य के रथ पर जा बैठे सोई अघटित घटना शक्ति परम दयाल कलिमल हरण स्वामी मेरे पर द्रवो ॥ २ ॥ नील कमल के समान तो सुन्दर श्याम शरीर और अरुण कमल के समान विशाल जिन स्वामी के नेत्र हैं ऐसे सदा चीर सागर शायी स्वयं हरि मेरे हृदय में सदा निवास करौ ॥ ३ ॥ कुन्द पुष्प और चन्द्रमा के समान तो गौर वर्ण और उमा अंबिका के पति करुणा के निवास सदा दीन जनों पर जिनको प्रेम तो काम मोचन सो शिव मेरे पर कृपा करो ॥ ४ ॥ अपने गुरु देव के चरण कमल को बंदन करता हूं जो कृपा सिंधु और नर रूप शिव हैं महा मोह अज्ञान अंधकार को जिनके बचन सूर्य्य की किरणों के समूह हैं ॥ सुनु गिरिराज कुमारि भ्रमतम रविकर बचन मम ॥ गुरु शंकर रूपिणं ॥ ५ ॥

बंदौं गुरु पद पद्म परागा । सुरुचि सुबास सरस अनुरागा १
अमिय मूरिमय चरण चारू । शमन सकल भव रुज परिवारू २
सुकृत शंभु तन विमल विभूती । मंजुल मंगल मोद प्रसूती ३
जनमन मंजुमुकुरमल हरणी । कियेतिलक गुणगण वशकरणी ४
श्रीगुरुपदनखमणिगणज्योती । सुमिरतदिव्यदृष्टिहियहोती ५
दलन मोह तम सो सुप्रकाशू । बड़े भाग उर आवहिं जासू ६
उघरहिं विमलविलोचनहीके । मिटहिं दोषदुखभव रजनीके ७
सूझहिंरामचरितमणिमाणिक । गुप्तप्रगटजहंजोजेहिखानिक ८
दो० यथा सुअंजन आंजि दृग साधक सिद्ध सुजान ।
कौतुक देखहिं शैल बन भूतल भूरि निधान १ ॥

अब मैं अपने गुरु देव के चरण कमलों की पराग रज को बंदन करता हूं जो रुचिमंत है सुगंधित है सरस है और चरण कमलों की अरुणाई की झलक से कुछ अरुण भी है १ फिर सो रज कैसी अमृत मूरिकी सुन्दर चूर्ण है जो जन्म मरण

के समस्त रोगों के परिवार का नाश करता है २ शिष्य वर्गों के सुकृत रूपी शिव के शरीर को निर्मल विभूति है और आनन्द मंगलों की जन्म भूमिही है ३ फिर शिष्यों के मनरूपी दर्पण के अज्ञानामल को हरणी है और तिलक करने से सब गुणों को वश करणी है ४ उनके चरणों के नखों की मणि गणों के समान ज्योति के स्मरण करतेही हृदय में दिव्य दृष्टि होती है ५ उनका सुन्दर प्रकाश मोह तम का नाश करता है बड़े भाग जिसके हृदय में आवै ६ उसके आतेही हृदय के नेत्र खुलि जाते हैं और अज्ञान रात्री अंधेरा दूर होता है ७ तब तो समस्त राम चरित्र मणि माणिक सूझने लगते हैं गुप्त और प्रगट जहां जिस खानि के हैं ८ । दोहा । जैसे सुअंजन अर्थात् मंत्र सिद्ध लोकांजन को नेत्रों में आंजिकर सुजान साधक और सिद्ध दोनों अनायास पर्वत, वन, समुद्र, पृथ्वी सबको घर बैठेही देखते हैं ९ ।

बंदौं प्रथम महीसुर चरणा । मोह जनित संशय सबहरणा १
मुदमंगल मय संत समाजू । जो जग जंगम तीरथ राजू २
रामभक्ति जेहि सुरसरिधारा । सरस्वतिब्रह्मविचार प्रचारा ३
विधिनिषेधमय कलिमल हरणी । कर्मकथा रविनंदनि वरणी ४
हरिहर कथा विराजति वेनी । सुनत सकल मुद मंगल देनी ५
बट विश्वास अचल निज धर्मा । तीरथ राज समाज सुकर्मा ६
सबहिसुलभ सबदिन सबदेशा । सेवतसादर शमन कलेशा ७
अकथ अलौकिक तीरथ राऊ । देइ सद्यफल प्रगट प्रभाऊ ८
दो० सुनि समुझहिं जन मुदित मन मज्जहिं अति अनुराग ।
लहैं चारिफल अछत तन साधु समाज प्रयाग २ ॥

अब अनन्य रामभक्त गुसांई तुलसीदास भागवत के इस श्लोक के अनुसार समस्त विश्व को रामात्मक जानकर बंदन करते हैं ॥ खंवायु मग्निं सलिलं महींच ज्योतींषि सत्वानिदिशोद्रुमादीन् । सरित्समुद्रांश्च हरेः शरीरं यत्किंचिभूतं प्रणमेदनन्यः ॥ तहां प्रथम आचार्य्य वर्य्य द्विजदेव को बंदन करते हैं जो महीसुर इस पृथ्वी पर देव गुरु बृहस्पति के समान विद्यावान हैं और वर्णाश्रम वैदिक धर्म पर आरूढ़ हैं कर्मोपासन ज्ञान भक्ति वैराग संपन्न हैं और अपने समाश्रित मुमुक्षु जीवों की मोह जनित समस्त संशय को हरकर उनको सन्मार्ग दरशाते हैं जैसे हारीतस्मृति में कहा है आचार्य्यं संश्रयेत्पूर्वमनघं श्रेष्ठंवैद्विजं । शुद्धसत्वगुणोपेतंमवेज्यं कर्मकारकं ॥ सत्संप्रदाय संयुक्तं मंत्ररत्नार्थकोविदं । ज्ञानवैराग्यसंयुक्तं वेदवेदांगपारगम् ॥ शांतिशीलं सदाचारं सर्वधर्म

चिदांबरं । महाभागवतंविप्रंसदाचाररनिसेविनं ॥ आलोड्यसर्वशास्त्राणिपुराणानिचसर्वशः । तदर्थमाचरेद्यस्तुसआचार्य्यइतीरितः ॥ ऐसे जो महीसुर तिनको में सदा अभिबंदन करता हूं १ जिन संतजन महीसुरों का समाज आनन्द मंगल रूपही है और इस संसार में जंगम कहें चलता फिरता तीरथराज प्रयागराजही के समान सोहता है २॥ अथ नवेज्य: कर्मा: ॥ अर्चनंमंत्रपठनंध्यानंहोमं च बंदनं । स्तुतियोगंसमाधिंचतथा मंत्रार्थचिंतनं ॥ एतेनैव विधाप्रोक्तानवेज्याविष्णवोत्तम: । नित्यमभ्यर्चयेद्विष्णुंयावज्जीवमतंद्रितः ॥ सर्वोत्तम राम भक्ति तो जिस संत समाज तीरथराज में परमोत्तमश्रीगंगा है जो ब्रह्म विचार ज्ञान की प्रचारक हैं प्रवाह को सदा सरसाती हैं अर्थात् बढ़ाती हैं और जैसे प्रयागराज में सरस्वती, गंगा यमुना के संपुट में गुप्त हैं तैसेही सन्तजन विरति सरस्वती को भक्ति ज्ञानके संपुट में गुप्त राखते हैं लोक संग्रह के निमित्त शुभ कार्य्यों में वर्त्तमान रहते हैं यह ज्ञान कांड है ३ विधि कहें शुभ कार्य्यों को करना निषेध कहें अशुभ कर्म्मों का त्याग ऐसी विधि निषेध मय कर्म कथा जो पापों को हरती है सोई संत समाज में रविनन्दिनी श्री यमुना है ४ यह कर्मकांड है वेद पुराण इतिहासों में कहीं जो हरि हरादिकों की कथा जिनमें कर्मकांड और ज्ञान कांड दोनों की संधि है सोई संत समाज प्रयाग में गंगा यमुना दोनों की वेणी कहें संगम है यह उपासना कांड है ५ अपने धर्म में जो अचल विश्वास सोई संत समाज में अक्षयवट है जैसा श्रीभागवत में है ॥ त्रिभुवन विभव हेतवे प्यकुंठ स्मृति जित आत्मसुरादिभिर्विमृग्यात् । न चलति भगवत्पदारबिन्दाल्लवनिमिषार्द्धं मपिसवैष्णाग्रयः । न नाकपृष्ठं नचसार्वभौमं न पारमेष्ठ्यं न रसाधिपत्यं । न योग सिद्धिं न पुनर्भवंवा वांछंतियत्पादरज प्रपन्नाः ॥ ऐसा संतों का तीरथराज सुकर्मा समाज है ६ ॥ अपनी परम दयालुता से स्थावर जंगम जीवों को सर्व देश सर्व काल में सुलभ होते हैं इसी से जंगम तीरथराज कहे हैं और सेवन करते ही सबके क्लेशों को नाश करते हैं ॥ नारद पंचरात्रे ॥ यंयंस्पृशति पाणिभ्यां यंयंपश्यतिचक्षुषा । स्थावराण्यपि मुच्यंते किंपुनर्बांधवाजनाः ॥ तत्पादांबुवरंतीर्थंतदुच्छिष्टंसुपावनं । तदुक्तंमात्रमंत्राग्र्यंतत्स्पृष्टमखिलं शुचि ॥ अर्थात् जिस जिसको भगवज्जन हाथों से छूते हैं और जिस जिसको नेत्रों से देखते हैं ते स्थावर भी पापों से छूट जाते हैं तो फिर उनके संबंधियों का क्या कहना है उनके चरण प्रच्छालन का जल उत्तम तीर्थ है और उनका उच्छिष्ट अति पावन है उनके बचन मात्र महा मंत्र हैं उनका छुआ समस्त पवित्र है ७ इस तीरथराज की महिमा अकथ है और यह तीरथराज अप्राकृत है ॥ भागवते ॥ सुधर्मनिष्ठ:शत जन्मभिः पुमान्विरंचितामेतितत:परंतुमां ॥ अप्राकृतंभागवतोथवैष्णवंपदंयथाहंविबुधा कलात्यये ॥ और अपने सेवन का फल शीघ्रही देता है यह प्रभाव इसका लोक वेद विख्यात है ८ ॥ दोहा ॥ जो कोई इस समाज के उपदेश को सुनकर समझते हैं और प्रसन्न होते हैं तेई मानो बड़े प्रेम समेत उस उपदेश रूपी जल में स्नान करते हैं और उसी जन्म में चारों फल पाते हैं ऐसा यह संत समाज तीर्थराज है २ ॥

जनिआश्चर्यकरै सुनिकोई । संतसगति महिमानाहिंगोई १
बाल्मीकिनारद घटयोनी । निजनिज मुखनिकही निजहोनी २
जलचर थलचर नभचर नाना । जे जड़ चेतन जीव जहाना ३
मतिकीरतिगति भूतिभलाई । जबजेहि यतनजहांजेहि पाई ४
सो जानहिं सतसंग प्रभाऊ । लोकहु वेद न आन उपाऊ ५
बिनु सतसंग विवेक न होई । रामकृपा बिनु सुलभ न सोई ६
शठ सुधरहिं सतसंगति पाई । पारस परसि कुधातु सुहाई ७
विधिवशसुजनकुसंगतपरहींफणिमणिसमनिजगुणअनुसरहीं ८

दो० संत सरल चित जगत हित जानि स्वभावसनेहु ।
बाल बिनय सुनिकरि कृपा राम चरण रति देहु ३

संत समाज प्रयागराज की ऐसी महिमा सुनिकर कोई आश्चर्य्य न करै क्योंकि सतसंग की महिमा छिपी नहींहै १ देखो बाल्मीकि ने अपना व्याध योनिसे प्राचेतस होना और नारद ने अपना दासी पुत्र से देवर्षि होना और अगस्ति ने अपना घट योनि से महर्षि होना अपने अपने मुखोंही से कहा है २ और भी जो जलचर थलचर आकाशगामी जड़ चेतन जीव हैं ३ उन सबोंमें से जिस जिस किसी ने सतसंग के प्रभाव से मति अथवा कीर्त्ति गति भूति भलाई जिस यत्न से जहां पाई है सो उसके प्रभाव को जानता है कि लोक वेद में और कोई उपाय नहीं है ४।५ बिना सतसंग के विवेक नहीं होता है और भगवत् कृपा बिना सतसंग नहीं मिलता है ६ सतसंग को पाकर शठ भी सुधर जाते हैं जैसे पारस को छूकर लोहा कंचन हो जाता है ७ और जो दैवाधीन सज्जन कुसंगति में परि जाते हैं तो सर्प की मणि के समान अपनाही गुण करते हैं ८ ॥ दोहा । आप संतजन तो सरल चित और जगत हित हैं मेरे स्वाभाविक सनेह को जानिकर और बाल विनय सुनिकर राम चरण में प्रीति वरदान दीजिये ३ ॥

दो० बंदौं संत समान चित हित अनहित नहिं कोइ ।
अंजलिगत शुभसुमन जिमि सम सुगंधकर दोइ ॥

जो संतजन समस्त जीवों को भगवद्विभूति जानिकर सबको कृपा दृष्टि ही से देखते हैं शत्रु मित्र में भेद नहीं करते हैं यथा शक्ति सबके साथ भलाईही करते हैं जैसे अंजुलि में आये सुगन्धित पुष्प दोनों हाथों के समान ही सुगंध देते हैं दाहिने बायें का कुछ विचार नहीं करते हैं उनको अभिवंदन करता हूं ॥

पुनि बंदौंखलगण सतिभाये । जे बिनकाजदाहिनेहु बांये १
परहित हानिलाभ जिनकेरे । उजरैं हर्ष विषाद बसेरे २
कहतसुनतपर अघन अघाहीं । जेपृथुशेषसरिस जगमाहीं ३
हरिहर यश राकेश राहुसे । पर अकाज भटसहस बाहु से ४
जेपरदोष लखहिं सहसाखी । परहितघृत जिनकेमनमाखी ५
तेजकृशानु रोष महिषेशा । अघअवगुण धनधनिकधनेशा ६
उदय केतुसमहित सबहीके । कुंभकर्ण सम सोवत नीके ७
परअकाजलगितनपरहरहीं ।जिमिहिमउपलकृषीदलिगरहीं ८

दो० उदासीनअरिमित्रहित सुनतजरहिंखलरीति ।
जानुपाणियुगजोरिकै बिनतीकरौंसप्रीति ४ ॥

या प्रकार प्रथम संतजनों को नमस्कार करिके पुनि बंदौं खलगण सति भाये अर्थात् संतजनों के प्रतिशील जो दुष्ट गण हैं उनको भी मैं सतिभाव से बंदन करता हूं जो बिन काज कहैं निष्प्रयोजन अपने दाहिने कहैं मित्रों के भी वायें हैं १ और पराये हित की हानि कोही लाभ जानते हैं और जिनको पराये नाश में आनन्द औरवृद्धि में विषाद होताहै २ और जे पराये पापों के कहतेसुनते अघाते नहीं हैं मानो दूसरे सहस्र कर्ण पृथु और सहस्र मुख शेषही अवतरे हैं ३ हरि विष्णु हर परम भागवताग्रसर श्री शिवजी तिनके परमपावन यशरूपी चन्द्रमा को राहु के समान बाधक और पराये अकाज करने को बलवान सहस्रबाहु बाणासुर से हैं । ४ ॥ जे पर दोष के दृष्टा सहस्र नेत्रवान इन्द्रके समान और पराये हित रूपी घृतको जिनके मन माखी के समान हैं ५ दुःसह तेज जिनका अग्नि के समान और क्रोध महिषासुर के समान और समस्त पाप और समस्त अवगुण रूपी धनके स्वामी धनेश कुवेरके समान हैं ६ जिनका उदय कहैं उनकेधन ऐश्वर्य बलकी वृद्धि केतुकेतारोंके उदयकेसमानसब का अनहित है और जिनके भली भांति सेवने में सबही का हित है ७ और पराये अकाज के अर्थ अपने प्राण त्यागने परभी उद्यत हो जाते हैं जैसे हिम उपल कहैं खेती को रूंधिकर आपभी गल जाते हैं ८ ॥ दोहा ॥ अपने शत्रु वा मित्र वा उदासीनों में से किसी का भला सुनतेही बिना अग्नि अपनी खल रीति के अनुसार जर मरते हैं तिनको जानुपाणि दोनों जोरिकरि प्रीति समेत विनती करता हूं ४ ॥

मैंअपनी दिशिकीन्ह निहोरैं । तेनिज ओर न लाउबभोरैं १
बायसपालिये अतिअनुरागा । होहिंनिरामिषकबहुंकिकागा २

बंदौंसंत असज्जन चरणा । दुखप्रदउभय बीचकछु बरणा ३
बिछुरत एकप्राण हरिलेहीं । मिलतएक दारुण दुखदेहीं ४
उपजहिं एकसंगजगमाहीं । जलजजोंकजिमिगुणबिलगाहीं ५
सुधासुरासमसाधुअसाधू । जनकएक जगजलधिअगाधू ६
भलअनभलानिजनिजकरतूती।लहहिंसुयशआपिलोकबिभूती ७
गुणअवगुणजानत सबकोई । जोजिंहिभावनीक तिहिसोई ८
दो० भलेभलाईपैलहहिं लहहिंनिचाईनीच ।
सुधासराहियअमरता गरलसराहियमीच ॥ ५ ॥

मैंने यह बिनती अपनी ओरसे उनको बड़ेनिहोरे समेतभी कीहै परंतु ते महात्मा उसको अपनी ओर भूलकर भी न लावैंगे अर्थात् अंगीकार न करैंगे १ जैसे जो अति सौरभ स्वादिष्ट पायस कहैं खीरि करिके बड़े प्रेम समेत पाले जावैं तो क्या कव्वे कभी निरामिष होते हैं अर्थात् महा दुर्गन्धित मृतक पशुवों का मांस खाना छोड़ देते हैं अब मैं संत और असंत दोनों के गुणों का फल एकही जान कर दोनों के चरणों को बंदन करताहूं क्योंकि दोनों दुखदाताही हैं बुद्धिमानों ने कुछ थोराही अंतर कहा है ३ एक संतजन तो अपने सत गुणों से बिछुरते समय प्राण हर ले जाते हैं और एक कहैं असंत अपनी आसुरी प्रकृति के अनुसार मिलतेही महादारुण दुख देते हैं ४ उपजते तो एकही साथ इस जगमेहैं संत असंत दोनों परंतु कमल और जोंक के सदृश उनके गुण भिन्न भिन्न होजाते हैं ५ सुधा और सुरा के समान संत और असंतों को क्रम से जानो क्योंकि पिता उन दोनों का एकही जलधि जग है जैसे सुधा और सुराका पिता एकही समुद्र है ६ भले औ बुरे अपनी अपनी करणीही करके लोक में सुयश भी पाते हैं और संपति भी ७ गुण और अवगुणों को जानते सब हैं परंतु जो जिसको अच्छा लगे उसको सोई अच्छा है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ भले जो हैं सो भलाई ही करिके शोभा पाते हैं और नीचों को निचाईही सोहती है जैसे अमृत अमरत्व मेंही सराहा जाता है और बिष तत्काल मृत्युमें ॥

खलअघअगुणसाधुगुणगाहा । उभयअपारउदधिअवगाहा १
तातें कछुगुणदोषबखाने । संग्रह त्यागन बिनपहिचाने २
भलेउपोचसब बिधिउपजाये । गनिगुणदोष वेदबिलगाये ३
कहहिं वेदइतिहास पुराणा । बिधि प्रपंचगुणअवगुणसाना ४
दुखसुखपाप पुण्यदिनराती । साधुअसाधुसुजाति कुजाती ५

दानवदेव ऊंचअरु नीचू । अमिय अमरपद माहुर मीचू ६
काशिमगसुरसरि क्रमनासा । मरुमालवमहि देवगवासा ७
स्वर्गनर्क अनुराग विरागा । निगमागम गुण दोषविभागा ८
दो० जड़चेतन गुणदोषमय विश्व कीन्ह करतार ।
संतहंसगुण गहहिंपै परिहरि बारिविकार ॥ ६ ॥

खल असंत तो पाप और अवगुणों के गाहक हैं कथा के और साधुजन शुभ गुणों की कथा के दोनों अपार समुद्र अथाह हैं १ ताते मैंने थोरे से संतों के गुण और असंतों के दोष कहे हैं कि संग्रह और त्याग का विवेक बिना पहचाने नहीं होता है २ भले और बुरे सब विधिही ने उत्पन्न किये हैं परंतु वे दोनों भलों के गुण और बुरों के दोष संग्रह त्याग के लिये उनको भिन्न भिन्न कर दिखा दिये हैं ३ वेद इतिहास और समस्त पुराण कहते हैं कि विधि का प्रपंच गुण और दोष मिश्रित है ४ देखो इस संसार में गुण और दोष रूप सुख दुख पुण्य पाप दिन रात्रि संत असंत उत्तम वर्ण अधम जाति ५ दानव कहैं दैत्य देवता ऊंच सत्य लोकादि निवासी नीच रौरवादि भोगी अमृत अमरत्व माहर कहैं विष और मृत्यु ६ काशी मगध गंगा और कर्मनाशा मरु निर्जल देश औ मालवा महिदेव ब्रह्मर्षि और गवास म्लेच्छ ७ स्वर्ग नर्क प्रेम और वैराग ये सबके सब दूध पानी के समान मिले हुये हैं निगम वेद आगम शास्त्र वा तंत्रों में इनके गुण और दोषों का विभाग कहैं विवर्ण है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जड़ कहैं माया चेतन कहैं जीव और गुण दोष मय करतारने विश्वरची है तिस में संतजन हंसों के समान गुण रूपी दूध को ग्रहण करते हैं अवगुण रूपी जल को त्याग करि देतेहैं जैसा इस श्लोकमेंकहाहै॥ अनन्तपारंबहुवेदितव्यंअल्पश्चकालोबहवश्चविघ्नाः । यत्सारभूतस्तदुपासितव्यम्हंसोयथाक्षीरमिवांबुमिश्रं ॥

असविवेक जबदेहि विधाता । तबतजिदोषगुणहिमनराता १
कालस्वभाव कर्मबरियाईं । भलेउप्रकृतिबसचुकहिंभलाईं २
खलहूकरहिंभलपाइ सुसंगू । मिटहिंनमलिनस्वभावअभंगू ३
लखिसुबेषजग बंचकजेऊ । बेषप्रताप पूजियत तेऊ ४
उघरहिं अंतनहोइ निबाहू । कालनेमिजिमि रावण राहू ५
किये कुबेष साधुसनमानू । जिमिजगजामवन्त हनुमानू ६
हानिकुसंग सुसंगति लाहू । लोकहुं वेदविदित सबकाहू ७
गगनचढ़हिंरजपवनप्रसंगा । कीचहिंमिलहिनीचजलसंगा ८

दो० ग्रहभेषजजलपवनपट पाइकुयोगसुयोग ।
होहिंकुबस्तुसुबस्तुजग लखहिंसुलक्षणलोग ७

ऐसा विवेक जब जिसको विधाता देता है तब उसका मन दोषों को छोड़कर गुणों पर प्रीति करता है १ जैसे काल स्वभाव कर्म इनकी प्राबल्यता करिके भले लोग भी प्राकृत शरीर के बसीभूत होकर कभी भलाई में चूक जाते हैं २ तैसेही खलभी सुसंग पाकर भला कर्म करलेते हैं तौभी उनका जो निरन्तर मैला स्वभाव है सो नहीं मिटता ३ सुवेष देखिकर जो जगवंचक भी हैं सोभी वेष के प्रताप से कुछ काल पूजे जाते हैं ४ परंतु जैसे ते अंत को कालनेमि रावण और राहु के समान उघर जाते हैं निबाह नहीं होता तैसेही कुवेश किये पर भी कुछ काल पीछे सनमानहीं होता है जैसे जग में जामवन्त और हनूमान का ६ कुसंग में हानि और सुसंग में लाभ का होना लोक और वेद में सब कोई जानता है ७ देखो पवन के प्रसंग से तो रज आकाश को चढ़ जाती है और अपावन जल के योग से कीच में मिलजाती है ८ दोहा ॥ जैसे सूर्य्यादि ग्रह शत्रु मित्र के योग से क्रूर और शुभ होते हैं और भेषज कहें औषधि अनूपान के योग से और जन शुभासुकर्म वा पात्रादि के योग से और बस्त्र ऊंच नीच अंग के स्पर्श से कुवस्तु और सुवस्तु होते हैं इसके सुन्दर लक्षण लिखते हैं ॥

दो० समप्रकाश तमपाखदुहुं नामभेदविधिकीन्ह ।
शशिपोषक शोषकसमुझिजगयशअपयशदीन्ह
जडचेतन जगजीव ये सकल राममयजानि ।
बंदौंसबकेपदकमलसदाजोरि युगपाणि
देवदनुजनरनाग खगप्रेत पितरगंधर्व ।
बंदौंकिन्नर रजनिचर कृपाकरहुअबसर्व ॥

विचार से देखो कि महीनोंके दोनों पाखोंमें प्रकाशभी समान होता है और अंधेरा भी समानही होता है केवल उनकेही नाम भेद करदिया है कि प्रथमपक्ष तो चन्द्रमा के प्रकाश की दिन प्रति बृद्धि करता है तातें संसार उसको शुक्ल और भला कहता है और पछिला पक्ष चन्द्रमा के प्रकाश की दिन प्रति हानि करता है तातें उसको अंधेरा और बुरा कहते हैं जड़ कहें स्थावर चेतन देव मनुष्यतिर्य्यक् चारों जाति के जो जग में जीव हैं उन सबको राम मय जानिकर सबके चरण कमलों को सदा अंजुलि जोरिकर बंदन करता हूं संसारमें जोदेव जाति हैं औरजो दैत्य हैं जो मनुष्य

हैं नाग हैं आकाशगामी हैं किम्पुरुष हैं राक्षस हैं उन सबको भगवद्विभूति जानि कर प्रत्येक को बंदन करता हूं सब मेरे पर कृपा करौ ॥

आकरचारि लाखचौरासी । जातजीव नभजल थल वासी १
सीयराममय सबजग जानी । करौंप्रणाम जोरियुगपानी २
निजबुधिबलभरोस मोहिंनाहीं । तातैंविनयकरहुं सबपाहीं ३
करनचहौं रघुपतिगुणगाहा । लघुमतिमोरिचरितअवगाहा ४
सूझ न एकौ अंग उपाऊ । मन मति रंक मनोरथ राऊ ५
मतिअतिनीचऊंचरुचिआछी । चहियेअमियजग जुरैन छाछी ६
क्षमिहहिं सज्जन मोरिढिठाई । सुनहहिं बाल बचन मनलाई ७
हंसिहहिं कूर कुटिल कुविचारी । जे परदूषण भूषण धारी ८
दो० भाग छोट अभिलाष बड़ करहुं एक विश्वास ।
सज्जन सुनि सुखपाइहैं खल करिहैं उपहास ८॥

चारि खानि अर्थात् स्वेदज जो पसीनेसे जन्मे और जरायुज जो जाली में बंधे जन्मे और अंडज जो अंडों से उत्पन्न हों और उद्भुज जो बीजों से जमें अथवा देव मनुष्य तिर्य्यक्स्थावर ये जो चारि खानि की चौरासी लक्ष योनि जो जीव आकाश और जल थल वासी हैं १ तिन सबको सीतारामात्मक जानकर अनन्य भाव से दोनों हाथ जोरिकर प्रणाम करता हूं जैसा भागवत में है ॥ खंवायु मग्निं सलिलं महींच ज्योतींच सत्वानिदिशोद्रु माटीन् । सरित्समुद्रांश्चहरेः शरीरंयत्किंचिभूतंप्रणमेदनन्यः ॥ अर्थात् खं आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, तारागण, सत्वानि कहें समस्त जीव और नदी समुद्र इन सबको भगवच्छरीर अर्थात् भगवत्का शरीर जानकर अनन्य भक्त प्रणाम करै २ अपनी बुद्धि के बल का भरोसा मेरे को नहीं है ३ और रामचन्द्र के गुणों की कथा किया चाहता हूं छोटी मेरी बुद्धि चरित्र अथाह ४ एकहू अंग उपाउ नहीं सूझता है मनकी मति दरिद्रियों की मनोरथ राजों का ५ मति तौ अति नीची रुचि अति ऊंची चाहिये अमृत जुरतीछाछि भी नहीं ६ ऐसी मेरी ढीठ ताको सज्जन तो क्षमा ही करैंगे और मेरी बाल बिनती मन लगाकर सुनैंगे ७ और कुटिल कुविचारी जो पराये दूषण ही का भूषण धारण करते हैं सो मेरी इस ढिठाई को सुनकर हसैं हींगे ८ ॥ दोहा ॥ भाग तो छोटा और अभिलाष बड़ी जानकरि एक बात पर विश्वस करता हूं कि इस मेरी भणित को सुनिकर सज्जन तो सुखही पावेंगे और खल हंसी करेंगे॥

खलपरिहास होयहित मोरा । काककहैं कलकंठकठोरा १

हंसहिंबक दादुर चातकही।हंसहिं मलिन खल बिमलबतकही२
कबितरसिक न राम पद नेहू। तिनकहं सुखद हासरस एहू ३
भाषा भणित मोरि मति भोरी। हंसिबेयोग हंसे नहिं खोरी ४
प्रभुपदप्रीतिनसामुझिनीकी। तिनहिंकथासुनिलागहिफीकी ५
हरिहरपदरतिमातिन कुतरकी। तिनकहंमधुर कथारघुबरकी ६
रामभक्ति भूषित जियजानी।सुनिहाहिं सुजनसराहिंसुबानी ७
कबिनहोहुं नहिं चतुर प्रबीना। सकलकलासब बिद्याहीना ८
दो० भणित मोरि सब गुण रहित बिश्व बिदित गुण एक।
सो बिचारि सुनिहैं सुमति जिनके बिमल बिवेक ९

सो खलों के परिहास से तो मेरा हितही होगा क्योंकि कव्वे तो कोकिला के कंठ को कठोर कहतेही हैं ॥ १ ॥ जैसे हंसों को बगुले और पपीहों को मेंडक हंसते हैं तैसेही जे मलीन खल हैं सो निर्मल बाणी को हंसते हैं २ जे कविताई का स्वाद नहीं जानते हैं और न भगवच्चरणारबिंदों में प्रेम रखते हैं तिनको यह मेरा कथन केवल हासरसही होकरसुखदेवेंगे ॥ ३ ॥ भाषा बाणी और मेरी मंद मति करके रचित हंसिवे योग तो है ही हसेंगे तो उनको कुछ दोष भी नहीं है ४ जिनके प्रभु के पदों में प्रीति और समुझ भी अच्छीनहीं है तिनको तो कथा सुनकर फीकी लगैहोगी ५ जिनके हरि हरके चरणों में यथोचित प्रीति है और जिनकी मति किंचित्कुतर्की नहीं तिनको यह श्रीरामचन्द्र की कथा अति मधुर है ६ राम भक्ति करके भूषित हृदय में जानकर सन्तजन तो इसको सुंदर बाणी सराहि कर सुनैंगे ७ नतो मैं कवि हूं न कुछ चतुर प्रबीण हूं मैंतो समस्त कला और सब बिद्या करिके हीन हूं ८ ॥ दोहा ॥ यद्यपि मेरी बाणी सब गुण रहित है परंतु विश्व विख्यात जो एक कहैं अद्वितीय गुण करिके संपन्न है सो विचारि के जो सुमतिसज्जन हैं और जिनके निर्मल ज्ञान हैं ते सप्रेम सुनैंगे॥

यहिमहं रघुपति नाम उदारा। अतिपावन पुराण श्रुतिसारा १
मंगल भवन अमंगल हारी। उमासहित जिहि जपत पुरारी २
भणितबिचित्र सुकबिकृतजोऊ। रामनामबिनशोह न सोऊ ३
बिधुबदनी सब भांतिसंवारी। शोह न बसन बिनाबरनारी ४
सबगुण रहित कुकबिकृतबानी। रामनाम यशअंकितजानी ५
सादरकहहिं सुनहिंबुधताही। मधुकरसरिस संतगुणग्राही ६

सोइ भरोस मोरे मन आवा। किहिनसुसंग बड़ापन पावा ७
धूमहुं तजहिं सहज करुवाई। अगर प्रसंग सुगंध बसाई ८

दो० प्रियलागिहै अतिसबहिमम भणतराम यशसंग।
दारुविचार कि करै कोउ बंदिये मलयप्रसंग ॥१०

सो अद्वितीय एक गुण इसमें रघुपतिका परम उदार कहैं सर्वस्व दाता रामनाम है कैसा राम नाम है अति पावन कहैं। तीरथ अमित कोटि सम पावन। नाम अखिल अघपुंज नशावन। प्रपन्न गीतायां ॥ गोकोटि दानं ग्रहणेषु काशी प्रयाग गंगा युत कल्प बासी। यज्ञायु तमेरु सुवर्ण दानं गोबिंद नामात्स्मरणेनतल्प ॥ और समस्तपुराण और वेदों का सार जैसा सूरसागर प्रल्हाद बचन में है ॥ सारवेद चारों की जोइ। छहो शास्त्र सार पुनि सोइ ॥ सब पुराण माहीं जो सार। राम नाम में पढ्यो विचार ॥ बाल्मीकि बचन। प्रातर्वदामि बचसा रघुनाथ नामवग्दोष हारि सकलं समलं निहंति। पत्यार्वती सपत्न्या सहभुक्त कामा प्रीत्या सहस्रहरि नाम समं जजाप: ॥ श्रीशिवउवाच। रामरामेति रामेति रमे रामे मनोरमे। सहस्र नाम तातुल्यं राम नाम बरानने। फिरि कैसा है राम नाम समस्त मंगलों का घर और अमंगलों का हर्त्ता है। सहस्र नामे ॥ पवित्राणां पवित्रंयो मंगलानांच मंगलं। मंगलं भगवान् विष्णु र्मंगलं गरुडध्वज: ॥ मंगलं पुंडरी काक्ष मंगलाय तनो हरि ॥ रामस्तवराजे। श्री रामेति परंजाप्यं तारकं ब्रह्म संज्ञकं। ब्रह्म हत्यादि पापघ्न मिति बेद बिदो बिदु: ॥ राम रामेति रामेति येजपन्ति च सर्वदा। तेषां भुक्तिश्च मुक्तिश्च भविष्यति न संशय: ॥ अर्थात् श्री राम यही जपना परम जाप है और यही तारक मंत्र है जिसके उपदेश से श्री शिवजी काशीजी में वैष्णव द्वेषी बिना सबको मुक्ति देते हैं जैसा काशीखंड में लिखा है। मुक्ति: कीट पतंगानां सर्वेषा मपिदेहिनां। मुक्ति क्षेत्र मिदं प्राप्य वैष्णव द्वेषिणां बिना ॥ और ब्रह्मसंज्ञकक हैं ब्रह्म रूप और ब्रह्म हत्या को आदिजो महापातक सबका नाश कर्त्ता है ऐसे वेदके बेत्ता कहते हैं राम राम वा राम ऐसे जो सर्वदा जपते हैं तिनको भुक्ति मुक्ति दोनों प्राप्त होती हैं और इसी में लिखा है। जिन कर नाम लेत जग मांहीं। सकल अमंगल मूलनशाहीं ॥ करतलहोहिं पदारथ चारी। तैसीय राम कहेउ का मारी ॥ और पार्वती समेत जिसको सुरा सुर बंदित श्री शिवजी जपते हैं ॥ २ ॥ जोवाणी अतिविचित्र कहैं मधुर कोमल ललित पदों करके संयुक्त और बड़े सुकवि की कही भी है रामनाम बिना कदापि शोभा नहीं देती है। श्रीभागवते ॥ नयद्वचश्चित्र चपदं हरेर्यशो जगत्पवित्रंप्रगृन्हीतकर्हिचित्। तद्वायसंतीर्थमुशंतिमानसानयत्रहंसाविरमंति स्वेच्छया ॥ अर्थात् जिस वाणीमें त्रैलोक्य पावनभगवद्यश कहीं भी ग्रहण नहीं किया सो वाणी कैसीही बिचित्र पदों से भरी हो तौभी विद्वज्जन उसको बक बायसोंका तीर्थ मानते हैं अर्थात् असज्जनोंके कहने

सुनने के योग्य जानते हैं जहां मानसरोवर के समान कमनीय निवास निवासी हंस भगवज्जन नहीं रमते ३ जैसे चंद्रमुखी स्त्री कैसेही भूषणादिक से संवारी जावे परंतु वस्त्रों बिना शोभा नहीं पाती है ४ और जो बाणी सब गुण रहित और कुकवि कृत भीहै तौभी उसको राम नाम राम यश करिके अंकित जानकर बड़े आदर समेतसंतजन कहते हैं और सुनते हैं क्योंकि मधुकरके समान साधुजन तौ गुण के ग्राहक होते हैं। श्री भागवते। तद्वाग्विसर्गोजनताघविप्लवोयस्मिन्प्रतिश्लोकमबद्धवत्यपिनामान्यिनन्तस्ययशोंकितानियच्छृण्वन्तिगायंतिगृन्हंतिसाधव: ॥ ५ ॥ ६ ॥ सोई भरोसा मेरे मन में आया है कि सुसंग करिके किसने बड़प्पन नहीं पाया ७ देखो धुआं भी अपनी स्वाभाविक करुवाई छोड़ कर अगर के प्रसंग से सुगन्धित होताहै ८ दोहा ॥ ऐसेही श्री राम यश के साथ सबही को मेरी बाणी अति प्यारी लगैगी क्योंकि वृक्ष की जाति का विचार कौन करता है मलयाचल की सुगन्ध के प्रसंग करिके सबही श्रीखंड चन्दन को मस्तक पर धरते हैं ॥

मणिमाणिकमुक्ताछबिजैसी। अहिगिरिगजशिर सोहनतैसी १
नृपकिरीट तरुणी तनपाई। लहहिं सकल शोभा अधिकाई २
तैसेहिंसुकविकवितबुधकहहीं। उपजहिंअनतअनतछबिलहहीं ३
भक्तिहेतु विधिभवन बिहाई। सुमिरत शारद आवति धाई ४
रामचरित सरबिन अन्हवाये। सोश्रम जाइनकोटि उपाये ५
कीन्हेप्राकृत जनगुण गाना। शिरधुनि गिरा लागु पछिताना ६
हृदयासिंधु मतिसीपि समाना। स्वातिशारदा कहहिं सुजाना ७
जोवरषै बरबारि बिचारू। होहिं कवित मुक्तामणि चारू ८
दो० युक्तिबेधिपुनि पोहिये रामचरित बरताग।
पहिराहिंसज्जनविमलउर शोभाअतिअनुराग ११॥

मणि सर्पकी मणि १ माणिक पाषाण मणि २ मुक्ता गज मुक्ता मणि ३ इन तीनों की जैसी छबि है तैसी कृमि से सर्प और पर्बत और हाथियों के शिर में यथार्थ शोभा नहीं देती अर्थात् उत्पत्ति के स्थान पर कोई शोभा नहीं पाते १ और जब राजों के मुकुट वा नवयौवना स्त्रियों के भूषणों में पहिरने से बढ़ कर शोभा देतेहैं २ तैसेही सुकवि जनों की कविताई को विद्वज्जन कहते हैं कि बनाई और देश में जाती है और सराही देशांतर में जाती ३ है बिचारो कि कविजनों की प्रीति के लिये सरस्वती स्मरण करतेही ब्रह्मलोक से दौड़ी आती है ४ जो उसको राम चरित्र मानसर में स्नान न कराया जावे तो उसका श्रमकिसी और उपाय से नहीं जाता है तातें उचित है कि जो भगवान् सरस्वती देवै तौ उसीके गुणानुवाद कहै ५ और जो प्राकृत

मनुष्यों के गुण गावै तो सरस्वती शिर धुनि कर आपने आवनेको धिक्कार देती है ६ कविजनों को हृदय रूपी समुद्र में बुद्धि सीपीके समान है परंतु जब भगवत् कृपा से सरस्वती रूपी स्वाति उसमें विचार रूपी उत्तम जल वर्षती है तब कवित्व रूपी सुन्दर मुक्तामणि होते हैं ७।८ ॥दोहा॥ ऐसे महा दुर्लभ मुक्तामणि पाकर उचित है कि बड़ी सावधानी से उनको बेंध कर राम चरित्र रूपी सुन्दर धागेही में पुरोहे जावें तो सज्जन पुरुष अपने निर्मल हृदय में पहिरते हैं और प्रेम रूपीशोभा करिके शोभायमान होतेहैं ॥

जे जन्मे कलिकाल कराला । करतब बायस वेष मराला १
चलत कुपंथ वेद मग छांड़े । कपट कलेवर कलिमल भांड़े २
बंचक भक्त कहाइ रामके । किंकर कंचन कोह काम के ३
तिनमहं प्रथम रेख जगमोरी । धिग धर्मध्वज धंधक धोरी ४
जो अपने अवगुण सब कहहूं । बाढ़ै कथा पार नहिं लहहूं ५
तातें मैं अति अल्प बखाने । थोरेहि महं जानिहैं सयाने ६
कहं रघुपतिके चरितअपारा । कहं मतिमोरि निरत संसारा ७
जिहिं मारुत गिरि मेरु उड़ाहीं । कहहु तूल किहि लेखे माहीं ८
दो० शारद शेष महेश विधि आगम निगम पुराण ।
नेति नेति कहि जासु गुण करहिं निरन्तर गान ॥

देखो श्री रामचंद्रके चरित्रोंको और मोसे कविको कैसा मैं हूं कि जो जीव महा कराल इस कलिकाल में जन्मे हैं महा कपटी करतब कव्वो का वेष हंसों कासा १ वेदोक्त भक्ति ज्ञान वैराग्य मय सन्मार्ग को छोड़कर वेद बाह्य जो कुपंथ जैसा लिखा है। कलि मल ग्रसे धर्म सब लुप्त भये सद ग्रंथ। दंभिन निज मति कल्पिकरि प्रकट किये बहु पंथ॥ तिन पर चलते हैं और जो मूर्तिमान् कपट और पापोंके खोखले हैं २ महा बंचक जो काम क्रोध लोभके तो किंकर हैं और राम भक्त कहाते हैं ३ तिनमें प्रथम मेरी गणना है ऐसा जो मैं अधर्म की ध्वजा विषयात्मक धंधों का धोरी तो मोको धिक्कार है ४ जो मैं अपने सब अवगुण कहूं तो कथा बढ़ जाने परभी पार न पाऊं ५ तातें मैंने अति थोरेही कहे हैं बुद्धिमान इतनेही में सब जानि लेवेंगे ६ सो भला कहां तो श्री रामचन्द्रके चरित्र अपार और कहां मेरी महा मंद बुद्धि संसार के कर्मों में आसक्त ७ जिस प्रचण्ड पवनके वेगसे सुमेरुसे पर्वत उड़ते हैं उसके सामुहें भला रुईके फाहेका कौन लेखा है ८ दोहा ॥ परंतु शारद स्वय सरस्वती और सहस्र मुख शेष और महेश कहैं महादेव ब्रह्मा और शिव और निगमागमादि समस्त ग्रन्थ जिसके गुणों को नेति नेति

कहिकर भी निरन्तर ध्यान कियेही चले जाते हैं तो फिरि जैसे ये सब पार नहीं पाते और कहतेही हैं तैसे मुझकोभी कहना उचितही है और फल तो इस अपार समुद्र के पैरने का सबको बूड़ि जानाही मिलता है सो मुझको अल्पगति के कारण निकटही मिलि जावेगा ॥

सबजानत प्रभुप्रभुता सोई । तदपि कहे बिन रहा न कोई १
तहांवेदअस कारण राखा । भजनप्रभाव भांतिबहु भाखा २
एकअनीह अरूप अनामा । अज सच्चिदानंद परधामा ३
व्यापक विश्वरूप भगवाना । तिहिंधरिदेह चरित कृतनाना ४
सो केवल भक्तनहित लागी । परमकृपालु प्रणत अनुरागी ५
बुधवरणहिं हरियश असजानी । करहिंपुनीतसफलनिजबानी ६
तिहिबल मैं रघुपति गुणगाथा । कहिहौंनाइ रामपदमाथा ७
मुनिन्हप्रथमहरिकीरतिगाई । तिहिमगुचलतसुगममोहिंभाई ८

दो० अतिअपार जे सरितवर जौंनृपसेतु कराहिं ।
चढ़िपपीलिका परम लघु बिन श्रम पारहि जाहिं १३॥

सब जानते हैं कि प्रभु की ऐसी प्रभुता है जिसका पार शारदादिक भी नहीं पाते तौभी बिना कहे कोई नहीं रहा १ तहां वेदों ने ऐसा कारण रक्खा है कि समस्त शास्त्र द्वारा भगवद्भजन का प्रभाव अनेक भांति से वर्णन किया है ॥ श्री भागवते यत्कीर्त्तनंयत्स्मरणंयदीक्षणं यद्वन्दनंयच्छ्रवणंयदर्हणम् ॥ लोकस्यसद्यो बिधुनोति कल्मषंतस्मैसुभद्रश्रवसेनमोनमः ॥ अर्थात् जिसके गुणों का कीर्त्तन करना और जिस प्रभु का स्मरण करना और जिसके अर्चा विग्रहों का दर्शन करना और उनको दण्डवत् प्रणाम करना और जिसके चरित्रों का श्रवण करना और जिसकी नृसिंह,राम, कृष्णादि मूर्त्तियों का पूजन करना लोक के समस्त पापों को तत्काल नाश करता है ऐसा जो कल्याण संदोह हरि तिसको नमस्कार है २ देखो जो अजन्मा सच्चिदानन्द विश्व व्यापक परमेश्वर अद्वितीय है तिसने जो नाना रूप धरिकर चरित्र किये हैं ३। ४ सो केवल अपने भक्तोंही के हित के निमित्त करिके अपना सौंदर्य,सौशील्य, औदार्य,गांभीर्य,सौलभ्य,वात्सल्य गुण उनपर प्रकट किया अपनी कृपालुता से ५ बुध वर्णहिं सुगम ६ उसी बलसे मैंभी राम गुण गाथा कहूंगा ७ मुनि जनो ने जो पूर्व हरि चरित्र गाये हैं उसी मार्ग चलते मेरे को भी सुगम होगा ॥ ८॥ दोहा ॥ जैसे जो अति विस्तार बड़े नदी नद हैं उन पर जो राजा सेतु करा देते हैं तो उस पर चढ़कर अति छोटी जो चींटी है सो भी पार हो जाती है ॥

यहिप्रकार बल मनहिं दृढ़ाई । करिहौं रघुपति कथा सुहाई १
व्यासआदि कविपुंगव नाना । जिन्ह सादरहरिचरित बखाना २
चरणकमल बंदौं सब केरे । पुरवहु सकल मनोरथ मेरे ३
होइ प्रसन्न देहु वरदानू । साधु समाज भणित सनमानू ४
जोप्रबंध बुध नहिं आदरहीं । सोश्रम बादि बालकवि करहीं ५
कीरतिभणित भूतिभलि सोई । सुरसरिसमसब करहितहोई ६
राम सुकीरतिभणित भदेसा । असमंजस असमोहिं अंदेसा ७
करहुअनुग्रहअसजियजानी । विमलयशहिअनुहरहिसुवानी ८

दो० सरल कवितकीरति विमल सोइ आदरहिं सुजान ।
सहजबैर विसराइ रिपु जोसुनि करहिं बखान ॥

इस प्रकार अपने मन को दृढ़ बल बंधाकर महा सुन्दर श्रीराम कथा का उद्यम करूंगा १ तहां महा मुनिवर्य शुक्र, व्यास, पराशरादि समस्त वेद, पुराण, इतिहासों के वक्ता कवीश्वरों में अग्रगण्य जिन्होंने बड़े आदर समेत भगवच्चरित्र वर्णन कियेहैं तिन सबके चरणारबिन्दों को बंदन करताहूं कि सब मिलकर मेरे मनोर्थको पूराकरौ ३ और प्रसन्न होकर वरदान देवो कि संतों के समाज में मेरी बाणी का सनमान होवै ४ क्योंकि जिसके प्रबन्ध को सन्तजन आदर नहीं देते हैं सो मूर्ख कवि वृथा श्रम करता है ५ कीर्त्ति कहें लोक बड़ाई और भणित कविताई और भूति संपत्ति सोई भली होती है जिससे सुरसरी श्री गंगा के समान सब का हित कहें उपकार होवै ६ सो इहां राम कीर्त्ति तो अति सुन्दर और मेरी बाणी कुशोभित ऐसा असमंजस कहें परस्पर विरोध समझ कर मेरे को बड़ा चिन्तवन है ७ यह मेरा संकल्प विकल्पजी में जानि कर ऐसा अनुग्रह करौ कि आप की कृपा से निर्मल श्रीराम यश को मेरी बाणी अनुहरै अर्थात् कुछभी तो उसके योग्य होजावै॥८॥ दोहा॥ उस सरल कविताई और निर्मल कीर्त्ति को सुजान पंडित जन आदरदेतेहैं अर्थात् प्रशंसा करते हैं जिसका स्वाभाविक बैर को छोड़िकर उसके बैरी बखानते हैं ॥

सोनहोइ बिनु बिमलमति मोहिमति बल अतिथोर ।
करहु कृपा हरि यशकहौं पुनिपुनि करौं निहोर
कविकोविद रघुवर चरित मानस मंजु मराल ।
बालबिनय सुनि सुरुचि लखि मोपर होहु कृपाल

सोतौ निर्मल बिशाल बुद्धि बिना नहीं होसकता है और मेरे को कुछ भी बुद्धि

के बल का भरोसा नहीं है तातें आप सब मेरे पर कृपा कीजिये मैं भगवद्यश कहा चाहता हूं बारंबार अपको निहोरता हूं हे महा प्रवीण कवीश्वरो आप श्री राम चरित्र मानसर के उज्ज्वल हंस हो ते सब मेरी बाल बिनतीको सुन और मेरी राम चरित्र कहने पर सुन्दर रुचि देखिकर मेरे पर सब अपनी २ कृपा करो ॥

सो० बंदौं मुनि पद कंज रामायण जिन्ह निर्मयो ।
सखर सुकोमल मंजु दोष रहित दूषण सहित ॥
बंदौं चारिहु वेद भव बारिधि बोहित सरिस ।
जिनहिं न सपनेहुं खेद बर्णत रघुबर बिशद यश ॥
बंदौं बिधि पद रेणु भवसागर जिन्ह कीन्ह यह ।
संत सुधा शशि धेनु प्रगटे खल बिष वारुणी ।
बिबुध बिप्र बुधगुरु चरण बंदि कहौं कर जोरि ।
होइ प्रसन्न पुरवहु सकल मंजु मनोरथ मोरि ॥

अब श्री मद्रामायण के मुख्य आचार्य्य वर्य्य श्री बाल्मीकि जी को बंदन करतेहैं जिन बाल्मीकिजीके मुखसेरामायण रूप होकर चारों वेद अवतरे जैसा यह श्लोक है॥ वेदवेद्येपरेपुंसिजातेदशरथात्मजे। वेदःप्राचेतसादासीत्साचाद्रामायणात्मकं ॥ फिरिकैसी रामायण कथा निर्माण की जो सखर भी अति कोमल है और सदूषण भी निर्दोष है अर्थात् रावण के भाई खर के चरित्र समेत कोमल और उज्वल ही है तैसेही दूषण के युद्ध समेत भी निर्दोष है जैसायहश्लोकहै। नमस्तस्मैकृतायेनरामायणकथा शुभासदूषणापिनिर्दोषासखराचातिकोमला ॥ तिन मुनि को बंदन करताहूं अबमैं चारों वेदों को बंदन करताहूं जो संसार सागर के तरने के उपाय रूपजलयान हैं जिनको अपने स्वामी श्री रामचंद्र के यश वर्णन करने में सपने में भी श्रम नहीं होता है अर्थात् आदि मध्य्य अंत पर्य्यंत सर्वत्र रामही को बखानते हैं॥ वेदैश्चसर्वैरहमेववेद्यः। फिरि जगत्पितामह ब्रह्मा के चरण कमल की रज को बंदन करताहूं जिनने यह संसार सागर रचा है जिस संसार सागर में संतजन तो अमृत चन्द्रमा कामधेनु के समान उत्पन्न हुये हैं और खल दुष्टजन बिष वारुणी के समान प्रकटे हैं अब फिरि कर देवता ब्राह्मण विद्वज्जन और गुरु देव के चरणों को बंदन करिकै हाथ जोरि कर कहताहूं कि सब मेरे पर प्रसन्न होकर मेरे इस उज्ज्वल मनोरथ को पूरा करो १४ इस प्रकार इस प्रथम चौपाइयों की चतुर्दशी ने समस्त चतुर्दश भुवन निवासी जीवों को सीता राम मय सबको बंदहै किया हैं ॥

बंदौंअवधपुरी अतिपावनि। सरयूसरि कलि कलुषनशावनि १

प्रणवौं पुरनर नारि बहोरी । ममता जिनपर प्रभुहि न थोरी २
सिय निंदक अघ ओघ नशाये । लोक बिशोक बनाइ बसाये ३
बंदौं कौशल्या दिशि प्राची । कीरति जासु सकलजग माची ४
प्रगटेउ जहँ रघुपति शशि चारू । विश्वसुखद खलकमल तुषारू ५
दशरथ राउ सहित सबरानी । सुकृत सुमंगल मूरति मानी ६
प्रणवौं सबहि कर्म मन बानी । करहु कृपा सुत सेवक जानी ७
जिनहिं बिरचि बड़ भयेउ विधाता । महिमा अवधि रामपितु माता ८
सो० बंदौं अवध भुवालु । सत्य प्रेम जिहि राम पद ॥
बिछुरत दीनदयालु । प्रियतन तृण इव परिहरेउ १५ ॥

श्री अयोध्यापुरी को बंदन करता हूं कैसी है अयोध्यापुरी अति पावनि कहैं समस्त पुण्य क्षेत्रों में अग्रगण्य सर्वोत्कृष्ट जैसा प्रसिद्ध है । सप्तपुरीचयोग्राम: नवारण्यनवोपर: । नवइतेनगरख्याताअष्टौतेषठनास्मृता॥ सप्तपंथापंचक्षेत्राद्दुर्गमेकोनविंशति।चतुर्दशानिगुह्यानिमुक्ति द्वाराणि भूतले ॥ अर्थात् पृथ्वी पर ये बानवे क्षेत्र मुक्ति के द्वारा हैं तिन सबमें सांतपुरी अग्रगण्य हैं और सातों पुरी में अयोध्या अग्रगण्य है ॥ अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवंतिका । पुरी द्वारावती ज्ञेया सप्तैता मोक्षदायका ॥ ये सातोंपुरी विष्णु भगवानं के अंग में हैं। जैसा ॥ विष्णो:पादमवंतिका गुणवतीमध्ये च कांचीपुरी । नाभौ द्वारवतीवदंतिहृदये मायापुरीयोगिन: । ग्रीवामूल मुदगोहरंति मथुरांनाशाग्र बाराणसीं । एतद्ब्रह्मपदंवदंतिमुनयोयोध्यापुरीमस्तकोकल्पकोटिसहस्राणांकाशीबासस्ययत्फलं । तत्फलंफलमात्रेणकलौदाशरथीपुरी॥ अवध प्रभाव जान तब प्राणी । जब उर बसहिं राम धनुपाणी ॥ और जिसमें मानस नन्दिनी श्री सरयूनामा नदी समस्त पाप नाशिनी बहती है जिसकी महिमा श्री रामचन्द्र श्री मुखसे बखानते हैं। जा मज्जन तें बिनहिं प्रयासा । मम समीप नर पावहिं बासा ॥ ऐसी जो श्री सरयू ताको भी बंदन करता हूं या प्रकार सरयू समेत श्री अयोध्यापुरी को बंदन करिके अब मैं श्री अयोध्यावासियों को प्रणाम करता हूं जिन्हपर प्रभु श्री रामचन्द्र की बड़ी ममता है जैसा लिखा है। जिनहिं राम जानकारि मोरे। अति प्रिय मोहि यहां के बासी २ देखो परम सती जगज्जननी श्री सीता माता के दोषारोपक रजकादिकों के भी समस्त पापों के समूह दूरि करिके उनके लिये नवीन विशोकलोक बनाकर उनको बसाया ३ अब मैं अपनी माता मही पूर्व दिशा रूप श्री कौशिल्या देवी को बंदना करता हूं जिस पूर्व दिशा की कीर्त्ति समस्त संसार में प्रकाशित है ४ जहां से चारु कहैं परिपूर्ण निष्कलंक रावण राहु के ग्रासक अद्भुत श्री रामचन्द्र प्रकट होते हुये विश्व के आनन्द दाता और विश्व विरोधी कमलों के तुषार ५ अब चक्रवर्त्ती महाराजाधिराज श्री दशरथराउ को उनकी

समस्त रानियों समेत सबको सुकृत और मंगल की मूर्त्ति मानकर ६ कर्म मन बानी करिके प्रणाम करता हूं सो अपने पुत्र का सेवक जानकर मेरे ऊपर कृपा करो ७ जिन को रचिकर जगद्धाता ब्रह्मा भी आप को बड़ा मानते हैं ऐसी महिमा के अवधि श्री राम के पिता माता हैं ॥ ८ ॥ सोरठा ॥ अब फिरि कर अवध भुवाल महाराज दशरथ को बंदन करता हूं जिनका सच्चा प्रेम श्री रामचन्द्र के चरणारबिन्दोंमें,देखा जिन्हने श्री रामचन्द्र के बिछुरतेही अति प्यारा अपना शरीर तिनकेके सदृश त्यागि दिया धन्यायोध्यादशरथनृपस्स चमाताचधन्या। धन्योबंशोरघुकुलभवोयत्ररामावतारः। धन्या वाणीकविबरमुखेरामनामप्रपन्नाधन्योलोकेप्रतिदिनमसौ राम नाम शृणोति ॥

प्रणवौं परिजन सहित विदेहू। जाहि राम पद गूढ़ सनेहू १
योग भोग महं राखेउ गोई। राम विलोकत प्रगटेउ सोई २
प्रणवौं प्रथम भरत के चरणा। जासु नेम ब्रत जाइ न वरणा ३
राम चरण पंकज मन जासू। लुब्ध मधुप इव तजै न पासू ४
बंदौं लक्ष्मण पद जल दाता। शीतल सुखद भक्त सुखदाता ५
रघुपति कीरति विमल पताका। दंड समान भयेउ यश जाका ६
सदा सो सानुकूल रहु मोपर। कृपा सिंधु सौमित्रि गुणाकर ७
रिपुसूदन पद कमल नमामी। शूर सुशील भरत अनुगामी ८
सो० बंदौं पवन कुमार खल बन पावक ज्ञान घन।
जासु हृदय आगार बसहिं राम शर चाप धरि १६ ॥

अब श्री मन्महाराज मिथिलाधिपति विदेह सीरध्वज जनक राज को उनके समस्त परिकर समेत प्रणाम करता हूं जिनको भगवच्चरणारविन्दों में गूढ़ कहें अति गुप्त प्रेम रहा १ क्योंकि उन्होंने उस प्रेम महारत्न को अपने योग और भोग के संपुट में छिपा रक्खा था सो श्री रामचन्द्र को देखतेही प्रत्यक्ष होगया जैसे सूर्य्यक्रांतिमणि की अग्नि उसी में छिपी रहती है और सूर्य्य के सन्मुख होतेही प्रत्यक्ष होजाती है २ अब तीनों भाइयों में अग्रज विश्वंभर मांडवीश श्रीभरत को प्रथम प्रणाम करता हूं जिनके नेम और प्रेम को ॥ वर्णत सकल सुकवि सकुचाहीं। शेष गणेश गिरा गम नाहीं ॥ सुनि ब्रत नेम साधु सकुचाहीं। देखि दशा मुनि राज लजाहीं ॥ ३ ॥ श्री रामचन्द्र के चरण कमल पर जिनका मन भ्रमर के समान लोभित उसके समीप को नहीं त्यागता है बिश्वम्भरंभरतमंबुजपत्रनेत्रंनीलांबुदाभवपुषंकणकाम्भवस्त्रं। भक्ताभय प्रदमनेकविभूषणाढ्यम् जाड्यं हरं सुभजतांभजमांडवीशम् ४ ता पीछे श्री उर्मिला पति लक्ष्मणजी के चरण कमल अति शीतल और सुन्दर भक्तजनों के आनन्ददाता तिनको मैं प्रणाम करता

हूं ॥ कर्पूरगौर वपुषंशरदिंदुवक्त्रं पीतांबरंसरसिजाक्षमनन्तमादिं ॥ योमोर्मिलाललितभूषण भावितांगंरामानुजंभजमनोभयदंनिजानां ५ श्रीरामचन्द्र की कीर्त्तिरूपी उज्ज्वल पताका को जिनका यश दंडरूप है अर्थात् लक्ष्मणजी का संपूर्ण साहस केवल रामप्रताप के उदय का हेतु है देखो यज्ञ रक्षा और रंगभूमि और परशुराम आगमन ऐसेही सब कांडों में जानो और चारों युगों में ऐसाही है देखो सतयुग में अनन्तावतार होकर अपने सहस्र मुखों से केवल भगवद्गुणानुवाद ही गाये और द्वापर रामावतार में मुष्टिकादि दैत्यों का वध और यमुना और हस्तिनापुर का कर्षण इत्यादि केवल भगवत् प्रीति के निमित्त है और कलियुग में जब पाषंड, बौध, चार्वाक और कुदृष्टियों करिके भगवत्कीर्त्ति रूपी पताका निरालंब होगई तब श्री लक्ष्मणजी यती होकर अपने सूक्तिदंड करिके उसको उठाकर खड़ा कर दिया जैसा पद्म पुराण में भविष्य लिखा है। पाषंडेबहुलेलोकेकुदृष्टीजनसंकुले। कलौवैष्णवसिद्धान्तपुनरुद्धार्यतेयती॥ अर्थात् जब जैन, बौध, चार्वाक, पाषंड कलियुग में फैलजाइगा और कुदृष्टीन करिके संसार भरि जाइगा तब वैष्णव सिद्धान्त को फेरि यती उद्धार करेंगे। अनंतंप्रथमेयुगे द्वितीयेलक्ष्मणंतथा। त्रितीयेबलरामंचकलौरामानुजोयती॥ अर्थात् जो सतयुगमें अनन्त भये और त्रेता में लक्ष्मण द्वापर में बलदेव सोई कलियुग में श्री लक्ष्मण जी यती होंइगे ६ सो श्री लक्ष्मण जी मेरे ऊपर सदा सानुकूल रहो कृपा के समुद्र, सुमित्रा सुवन गुणों की खानि ७ अब रिपुसूदन श्री शत्रुघ्न जी के चरण कमलों को मैं प्रणाम करता हूं बड़े शूर लवणांतक और बड़े शीलवान् श्री भरत किंकर अर्थात् महाभागवत् सेवी ॥ कैशोरमूर्त्तिमनुरूपमनूपभूपंपुष्पेंदुसुन्दरतरंश्रुतिकीर्त्तिकांतं। गौरं सुवर्ण मणि भूषणभावितांगपीतांबरं भजमनोखिलसिद्ध्येतं ॥८॥ दोहा ॥ अब महाबीर पवन पुत्र श्री हनूमानजी को मैं प्रणाम करता हूं जो दुष्टों के बनको अग्नि और ज्ञान के राशि हैं जिनके हृदयरूपी मन्दिर में सदा धनुर्धारी रामविराजतेहैं ॥ उद्यद्दिनेशकर रंजित कंजवक्त्र पिंगारुणाक्षनयनंनयनाभिरामं। सौवर्णवर्णवसनं रसनादिभूषंभक्तेषुकाम वतंभज वायुसूनुं ॥

कपि पति ऋक्ष निशाचर राजा । अंगदादि जो कीश समाजा १
वंदौं सबके चरण सुहाये । अधम शरीर राम जिन्ह पाये २
रघुपति चरण उपासक जेते । खगमृग सुरनर असुर समेते ३
वंदौं पद सरोज सब केरे । जे बिन काम राम के चेरे ४
जनकसुताजगजननिजानकी । अतिशयप्रियकरुणानिधानकी ५
ताके युग पद कमल मनाऊं । जासु कृपा निर्मल मति पाऊं ६
पुनिमनवचन कर्मरघुनायक । चरणकमल वंदौंसबलायक ७
राजिवनयन धरैं धनुशायक । भक्तविपति भंजन सुखदायक ८

दो० गिरा अर्थ जल बीचि सम कहियत भिन्न न भिन्न ।
वंदौं सीता राम पद जिनहिं परम प्रिय खिन्न १७ ॥

कपिपति सुग्रीव ऋक्षराज यामवंत निशाचरराज लंकेश विभीषण और अंगदादिक जो समस्त बानरों का समाज १ सबके सुन्दर चरण कमलों को मैं बंदना करता हूं जिन्होंने अधम शरीरही में रामपाये २ अब जितने श्रीरामचरण उपासक इस संसारमेंहुये हैं खग जटायु इत्यादि मृग गजेन्द्रादि सुर ब्रह्मादि असुर प्रल्हादादि नर अंबरीप इत्यादि जो निष्काम भगवद्दास हैं तिन सबके चरण कमलों को मैं अभिवंदन करता हूं ३ । ४ या प्रकार समस्त श्रीराम परिकर को नमस्कारादि करि के जगज्जननी जनकात्मजा, श्री जानकी जी के चरण कमलों को मनाता हूं जो अत्यन्त प्यारी करुणानिधान श्री रामचन्द्र की हैं और जाकी कृपा से निर्मल बुद्धि पाऊंगा ५ । ६ ता पीछे मन बचन कर्म करिके रघुनायक श्रीरामचन्द्र के चरण कमलों को अभिबंदन करता हूं जो समस्त कल्याण गुणों के अमृतोदधि हैं ७ जो राजीव नयन अपने भक्तजनों की विपत्त नाश करने और उनको समस्त सुख देनेके लिये सदा धनुषबाण धारण कियेरहते हैं ८ दूर्बादलद्युतितनुं तरुणाब्जनेत्रंहेमांबरंबरविभूषणभूषितांगंकंदर्पकोटिकमनीयकिशोरमूर्त्तिंपूर्तिमनोरथभवांभजजानकीशं ॥ दोहा ॥ जैसे गिरा कहैं शब्द और शब्द का अर्थ और जल और जल की बीची कहैं तरंग ये कहने मात्रही भिन्न हैं वस्तुत: में एकही हैं ऐसेही श्री सीताराम को एक मानि कर उनके चरणों को अभिबंदन करता हूं जिनको खिन्न कहैं अत्यन्त आरत जीव परम प्यारे हैं अर्थात् जब यह जीव कर्मोपासन ज्ञान रूप समस्त उपाय करिके खेद खिन्न होकर उपाय शून्य हो जाता है और तदाधीन होकर भगवत्प्रपत्ति अंगीकार करता है तब भगवत् का परम प्रिय होता है।

वंदौं राम नाम रघुबर को । हेतु कृशानु भानु हिमकर को १
विधिहरिहरमय वेदप्राणसो । अगुणअनूपम गुणनिधानसो २
महा मंत्र जो जपत महेशू । काशी मुक्ति हेतु उपदेशू ३
महिमा जासु जान गण राऊ । प्रथम पूजियत नाम प्रभाऊ ४
जान आदि कवि नाम प्रतापू । भयेउ शुद्धकरि उलटा जापू ५
सहसनामसम सुनिशिवबानी । जपिजेबीज पियसंग भवानी ६
हर्ष हेतु हेरि हर हिय को । कियभूषण तियभूषण तियको ७
नाम प्रभाव जान शिव नीको । कालकूट फल दीन्ह अमीको ८

दो० बरषाऋतु रघुपति भगति तुलसी शालि सुदास ।
राम नाम बरवर्ण युग श्रावण भादौं मास १८ ॥

अब मैं जगज्जन्मादि कारण रघुबंश बिभूषण के राम नाम को बंदन करता हूं जो राम नाम भी अपने तीनो बर्णों के अर्थ से अग्नि सूर्य्य चन्द्रमा का कारण होकर जगज्जन्मादि कारण है क्योंकि अग्नि सूर्य्य चन्द्रमा तीनो जगज्जन्मादि कारण हैं अर्थात् अग्नि प्रलय का कारण है सूर्य्य उत्पत्ति का कारण है चन्द्रमा पोषण का कारण है और राम नाम के तीनों बर्ण इन तीनों के बीजाक्षर हैं अर्थात् राम नाम का रकार तो कृशानु का बीज है अकार भानु का बीज है मकार हिमकर का बीज है जिसका जो बीजाक्षर होता है सो उसके नाम के अंतर्गत होता है यहां रकार कृशानु के अंतर्गत है अकार भानु के अंतर्गत है मकार हिमकर के अंतर्गत है ताते राम नाम के तीनो बर्ण जगज्जन्मादि कारणों के भी कारण हैं तो मुख्य परम कारण राम नाम के तीनो बर्णही हैं जैसे स्वयं राम जगत् के परम कारण हैं और जो मुख्य कारण होता है सोई सब का कारण होता है जैसा भगवान ने भारत में कहा है रुद्रंसमाश्रितादेवाः रुद्रोब्रह्माणमाश्रितः । ब्रह्माममाश्रितोनित्यंनाहंकश्चिदुपाश्रितः ॥ ममाश्रयोहिनहिकश्चित्सर्वेषामाश्रयोह्यहं । अन्याश्रयोश्रयोनास्तिमुख्यमाश्रयमाश्रयं ॥ ताते यह राम नाम केवल दाशरथी रामही का यथार्थ है और राम तो केवल नाम धारकही हैं क्योंकि यथा नाम का अर्थ है तथा नामी भी होना चाहिये सो जगज्जन्मादि कारण तो केवल दाशरथी रामही हैं जैसा राम ने परशुराम से कहा है कि ॥ राममात्रलघुनाम हमारा। परशु सहित बड़नाम तुम्हारा अर्थात् राम मात्र केवल तीनिही वर्ण का तो मेराही नाम है दूसरे किसी का तो न भूतो न भविष्यति क्योंकि जो इस नाम का अर्थ है सो मेरेही में घटित होता है दूसरे में नहीं ताते आप तो परशुराम हैं केवल राम नहीं हैं केवल राम तो मैं ही हूं इस अर्थ से तो राम नाम केवल दाशरथी रामही का होता है राम पद का और अर्थ करने से परशुराम वा बलराम का नाम होता है ॥ बंदेदाशरथींरामंजगज्जन्मादिकारणं । यस्येदंरामनामोऽपिजगज्जन्मादिकारणं ॥ फिरि जैसे ब्रह्मा उत्पत्ति के और विष्णु पालन के और रुद्र संहार के कारण हैं ऐसेही राम नाम के भी तीनो बर्ण त्रिशक्ति धारक हैं या ते विधि हरि हर मय भी राम नाम है और वेद प्राण प्रणव के समान भी राम नाम है क्योंकि जैसे प्रणव के अकार उकार मकार तत्वत्रय वाचक हैं अर्थात् अकार ईश्वर वाचक उकार मायावाचक मकार जीव वाचक है जैसा अयोध्याकांड में लिखा है आगे रामलषन पुनि पाछे॥ मुनिवर वेष विराजत काछे॥ उभय बीच सिय सोहति कैसे। ब्रह्म जीव बिच माया जैसे ॥ ऐसेही राम नाम के तीनों वर्ण भी तत्वत्रय वाचक है अर्थात् रकार माया वाचक है क्योंकि अग्नि अचेतन तत्व का बीज है अकार ईश्वर वाचक है मकार जीव वाचक है और अगुण कहैं निस्त्रैगुण्य हैं और अनूपम कहैं अद्वितीय है और गुणनिधान कहैं समस्त कल्याण गुणों का समुद्र है २ फिरि राम नाम मंत्रों में महा मंत्र है जिसको महेश कहैं महानो के महान् त्रिभुवनेश्वर जगद्गुरु श्रीशिवजी सदा जपते हैं और जो काशीपुरी में जीवों की मुक्ति के निमित्त

श्री रामचन्द्रने आपही श्री शिव जी को उपदेश किया है जैसा रामतापिनी उपनिषद में लिखा है ॥ श्रीरामस्यमनुःकाश्यांजजापवृषभध्वजः । मन्वन्तरसहस्रैश्चजपहोमार्चनादिभिः १ ततःप्रसन्नोभगवान्श्रीरामःप्राहशंकरंवृणीष्वयदभीष्टंतत्दास्यामिपरमेश्वर २ श्रीशिवउवाच ॥ मणिकर्णिकामत्क्षेत्रेगंगायांवातटेपुनः । म्रियतेयःप्रभोदेहीमुक्तिंनातोवरांतरं ३ श्रीरामउवाच क्षेत्रेस्मिन्तवदेवेशयत्रकुत्रापियेमृतः । कृमकीटादियोप्याशुमुक्तिस्सतुहिनान्यथा ४ त्वत्तोवाब्रह्मणोवापियेलभंतेषडक्षरं । जीवंतोमंत्रसिद्धास्युःमृत्वामामाप्नुवन्ति ते ५ मुमुक्षोर्दक्षिणेकर्णेयस्यकस्यापिवास्वयं ॥ उपदेक्ष्यसिमन्मंत्रंसमुक्तश्च भवेच्छिव ६ अर्थात् जब जीवों की मुक्ति के अर्थ श्रीशिवजीने सहस्र मन्वन्तर पर्यंत श्री राम मंत्र काशी सिद्धि पीठ में जप किया तब श्रीरामने प्रसन्न होकर यह बरदान दिया कि इस क्षेत्र में तुम जिसके दक्षिण कर्ण में यह षड़क्षर मंत्र अंतसमय उपदेश करोगे सो कृम कीटादिक भी निःसंदेह मुक्त होंगे ऐसाही अगस्त्य संहिता में लिखाहै ॥ अस्तिवाराणशीनामापुरीशिवमनोहरा सर्वदापिशिवस्तत्रपार्वत्यासहतिष्ठति १ तस्याप्युपासकास्सर्वे भक्त्यातंप्रतिपेदिरे । मुमुक्षवःपरित्यज्यसर्वंतत्रैवसंस्थिताः२ सदाशिवशिवेत्येवंवदंतिशिवतत्पराः । शिवार्पितमनःकायावाचाशिवपरायणाः ३ शिवोपितान्सर्वान्पश्यन्भूत्वाचिन्तापरायणः । कथमेवप्रदास्यामिमुक्तिमत्यंतिदुःखितः ४ अर्थात् शिवकी मन भावनी जो बाराणशी नामा काशीपुरी है त में पार्वती समेत श्रीशिवजी नित्य निवास करते हैं १ तहां उनके उपाशक प्रीति समेत उनकी उपासना करते हैं मुमुक्षून् को छोड़कर और जो सब तहां रहते हैं २ ते सदैव शिव शिव परायण जपते हैं और शिवही में अर्पण किया है मन और काया जिनने और बाणीभी उनकी शिव परायणही है ३ तिनको शिवजी देखकर यह चिन्ता करने लगे कि मैं इनको कैसे मुक्ति दे पाऊंगा या करिके जब अत्यन्त दुखी हुये ४ एवंचसतिभूर्लोकेआजगामचतुर्मुखः । उसी काल में शिवजी के पास ब्रह्मा जी आते हुये ॥ समाराध्येहमांमुक्तिंप्रार्थयंतिमुमुक्षवः । केनोपायेनतेषांवैफलंदास्यामितद्वद ५ तब उनका आराधन करिके शिवजी बोले महाराज ये मुमुक्षू लोग मेरा ही आराधन करके मुक्ति चाहते हैं सो जिस उपाय करिके मैं इनको मुक्ति दे पाऊं सो उपाय आप कहिये ५ तब ब्रह्मा जी बोले ॥ अस्त्युपायोगोपनीयंमंत्रराजंषडक्षरं ॥ नियतःसोपितत्रैवजजापवृषभध्वजः । मन्वन्तरशतंभक्त्याध्यानहोमार्चनादिभिः ६ ततःप्रसन्नोभगवान् रामःप्राहत्रिलोचनं । वृणीष्वयदभीष्टंतेदेवानामपिदुर्लभं ७ तदेवाहंप्रदास्यामिमाचिरंवृषभध्वज । ततस्तमब्रवीद्विष्णुमीश्वरःकृपयामुदः ८ एतेमदीयास्सर्वेपिनापरंपर्य्युपासते । मुक्त्यर्थंतत्कुरुष्वैषांतदेवाभिमतंमम ९ श्रीरामउवाच । मुमुक्षोर्दक्षिणेकर्णेयस्यकस्यापिवाशिव उपदेक्ष्यसिमन्मंत्रंसमुक्तश्चभवेच्छिव १० अर्थात् तब ब्रह्मा जी ने कहा कि एक उपाय गोपनीय है जिसको मंत्र राज कहते हैं और सोई तारक मंत्र छः अक्षर का है यह सुनकर शिव जी ने सोई राम मंत्र नियत होकर काशी क्षेत्र में शत मन्वन्तर पर्य्यन्त प्रीति समेत ध्यान होम पूजन करिके जप किया ६ तब

श्री रामने प्रसन्न होकर कहा कि हे त्रिलोचन जो तुम्हारा बांछित है देवताओं को भी दुर्लभ सोतुममांगलो ७ सो मैं तुमको देऊंगा तुम ढील मत करो यह सुनकर विष्णु से शिवने कहा ८ कि ये जो समस्त मेरे भक्त हैं और मोको छोड़ और को नहीं भजते हैं इनकी मुक्ति का उपाय आप करौ यही मेरा अभिमत है ९ यह सुन कर श्री राम ने राम मंत्रही उपदेश किया १० फिरि श्री राम नाम की महिमा को रुद्र गणाधिपति श्रीगणेश जी जानते हैं जो रुद्र पीठ में राम नाम ही के प्रभाव से रुद्रगणों में प्रथम पूजे जाते हैं ४ और आदि कवि श्रीवाल्मीकि भी राम नाम के प्रताप को जानते हैं जो रामनाम को उलटाही अर्थात् मरा मरा जपकरि शुद्ध वा सिद्ध होगये ५ फिरि भगवत् सहस्रनाम के समान एक राम नामही की महिमा श्री पार्वती जी शिव जी के मुख से सुनि उसीको जपिकर अपने पति के साथ जेवती भईं ६ ऐसा पार्वती के हृदय का श्रीराम नाम पर स्नेह देखिकर श्रीशिवजी उन पर ऐसे प्रसन्न हुये कि उनको अपने अंग का आभूषण कर लिया अर्थात् अर्द्धांगी कर लिया तब से उनका नाम तिय भूषण परा ७ और राम नाम के प्रभाव को तो भले प्रकार करिके श्रीशिवजी ही जानते हैं जो उसके दृढ़ विश्वास पर महा दुर्धर्ष कालकूट विष को पान करते हुये और उस नाम के प्रभाव से उस कालकूट ने उनको अमृत का फल दिया कि उसै पीकर अमर होगये ८ दोहा ॥ राम भक्ति तो बरषा ऋतु के समान है और भगवद्दास सुन्दर शाली है और राम नाम के जो दोनों उत्तम वर्ण अर्थात् रकार मकार यही उसमें श्रावण भादों महीनों के समान जानो अर्थात् राम भक्ति रूपी बरषा ऋतु में रकार मकारही श्रावण भादों के समान शालि रूप भगवद्दासों के जीवन प्राण हैं ॥

आखरमधुरमनोहरदोऊ । बरणविलोचनजनजियजोऊ १
सुमिरतसुलभसुखदसबकाहू । लोकलाहुपरलोकनिबाहू २
कहतसुनतसमुझतसुठिनीके । रामलखनसमप्रियतुलसीके ३
बरनतबरणप्रीतिबिलगाती । ब्रह्मजीवसमसहजसंघाती ४
नरनारायणसारिससुभ्राता । जगपालकविशेषजनत्राता ५
भक्तिसुतियकलकर्णविभूषण । जगहितहेतुविमलविधुपूषण ६
स्वादतोषसमसुगतिसुधाके । कमठशेषसमधरवसुधाके ७
जनमनमंजुकंजमधुकरसे । जीहयशोमतिहरिहलधरसे ८
दो० एकछत्रइकमुकुटमणिसबवरणनिपरजोउ ।
तुलशीरघुबरनामके बरणविराजतदोउ ॥ १९ ॥

श्री राम नाम के जो रकार मकार दोनों अक्षर हैं सो दोनों उच्चारण में अति-

मधुर और देखने में परम मनोहर हैं और सब अक्षरों में नेत्र रूप हैं क्योंकि समस्त वर्ण सरस्वती केही अंग हैं तहां रकार मकार ही नेत्र स्थानीय हैं फिरि कैसे नेत्र हैं जन जिय जोऊ हैं अर्थात् अहर्निशि अपने जन जापक के जीको अभिलाष के पूर्ण करने को देखाही करते हैं १ फिरि स्मर्ण करनेमें सुलभ और सुखदायकहैं सब काहू को अर्थात् कोई इस नाम का अनधिकारी नहीं लोक में यशादि और परलोक में मोक्ष पर्य्यन्त के दाता हैं २ और कहने में जिह्वा को और सुनने में कर्णों को समझने में मनको अति नीके लगते हैं मेरे प्यारे तो राम लक्ष्मण के समानही हैं ३ दोनों वर्णों के भिन्नभिन्न वर्णन करने में उनकी प्रीति में अंतर होता है क्योंकि उनके आकार स्थान अर्थादिक सब भिन्न भिन्न हैं जब एक के वर्णन करें तब दूसरे के छूटि जावेंगे तो उनकी प्रीति में भी अंतर होजायगा यातें उनके ऐसे विशेषण कहने चाहिये जो दोनों में एकही विशेषण घटित होते होंय क्योंकि ये दोनों तो ब्रह्म और जीव के समान सहज कहें साथही जन्मे हैं और घाटी कहें परस्पर सखा है ४ फिरि ये दोनों वर्ण नर नारायण के समान सुभ्राता हैं और जैसे नर नारायण अपने ईश्वरत्व गुण करिके जगपालक हैं और वात्सल्यगुण करिके अपने अनन्य भक्तोंके विशेष रक्षक हैं ऐसेही रकार मकार को सब जीव समस्त वर्णों के साथ अनेक पदों में उच्चारण किया करते हैं यातें जगपालक हैं और जो कोई सब वर्णों को छोड़कर केवल इन्हीं दो वर्णों का आश्रित होता है उसके विशेष रक्षक होते ५ अव्यभिचारिणी भक्ति रूपी जो पतिब्रता स्त्री ताके कर्ण भूषण रूप ये दोनों वर्ण हैं अर्थात् सौभाग्यता के मुख्य चिन्ह हैं और समस्त जग के हित के कारण दोनों वर्ण निर्मल चन्द्रमा के समान हैं ६ फिरि राम नाम के दोनों अक्षर सुगत कहें परम पद मोक्ष रूपी सुधा के स्वाद और तोषके समान हैं जैसे सुधा में स्वाद और तोष येही दोनो मुख्य गुण सार हैं स्वाद तें उस पर रुचि और मनको प्रसन्नता होती है और तोष तें पिपासा और मृत्यु की भय की निवृत्ति होती हैं जो उसमें ये दोनों गुण न होवें तो कोई उसको जल के समान भी ग्रहण नहीं करै ऐसेही राम नाम रूपी स्वाद और तोष समेत तो मोक्षरूपी सुधा सदा ग्राह्य है और राम नाम रहित परम पद मोक्ष का लाभ कदापि संत संमत नहीं जैसा लिखा है॥ राउरबादि भलभव दुख दाहू। प्रभु बिनबादिपरम पद लाहू॥ और कमठ शेष के समान वसुधा को धारण करते हैं जैसा सुन्दर काण्डमें लिखा है॥ जिहि बल शेष धरत सहसानन। अंडकोश समेत गिरि कानन ७ जन जापक को जो मन सोई सुन्दर उज्ज्वल कमलता के प्रेम पराग रसके लोभी दोनो अक्षर भ्रमर के समान हैं अर्थात् जैसे सुरस पराग मकरन्द परिपूर्ण प्रफुल्लित कमल को भ्रमर त्यागि नहीं सकते तैसे ये दोनों वर्ण अपने जापक जनके मनको वियोग नहीं सह सकते हैं और जापक जन की जिह्वा के द्वारा श्री कृष्ण बलदेव के समान जन्म लेलेकर उसको बारंबार यशोदा बनाते हैं अर्थात् माता की पदवी देते हैं ८ दोहा॥ अब श्रीराम नामही के दोनों

अक्षरों को सर्व वर्णोत्तम कहते हैं देखो इस नाम का प्रथम अक्षर जो रकार है सो रेफ रूप छत्राकार सर्व वर्णोंपर शोभायमान होता है और मकार अनुस्वार मुकुट मणि के समान समस्त अक्षरों पर बिराजता है अर्थात् राम नामही के दोनों अक्षर समस्त वर्णावली के अक्षरों को छत्र मुकुट धारी करिके उनके मान प्रदायक होते यातें येही दोनों अक्षर वर्ण शिरोमणि हैं या प्रकार बंदों मुनि पद कंज तें लेकरि यहां तक पांच चौपाइयों में राम परिकर को बंदन और राम नामही तें सबको संसिद्धि प्राप्ति कही जैसा नृसिंह पुराण में लिखा है ब्रह्मादयोसुराःसर्वेविष्णुमाराधितेपुरा । स्वंस्वंपदमनुप्राप्ताः केशवस्यप्रसादतः ॥

समुझत सरिसनाम अरुनामी । प्रीतिपरस्पर प्रभुअनुगामी १
नाम रूप दोउ ईश उपाधी।अकथ अनादि सुसामुझसाधी २
को बड़ छोट कहत अपराधू । सुनि गुण भेद समुझिहैं साधू ३
देखिय रूप नाम आधीना । रूप ज्ञान नहिं नाम विहीना ४
रूप विशेष नाम बिन जाने । करतल गत न परत पहिचाने ५
सुमिरिय नाम रूप विनु देखे । आवत हृदय सनेह विशेखे ६
नामरूपगति अकथकहानी । समुझतसुखद न परतिबखानी ७
अगुणसगुणबिचनामसुसाखी । उभयप्रबोधकचतुरद्विभाखी ८
दो० राम नाम मणि दीपधरु जीह देहरी द्वार ।
तुलसी भीतर बाहिरहु जो चाहसि उजियार २० ॥

अब यहां तें सात चौपाइयों में या श्लोकके अनुसार नामी तें नाम की अधिक महिमा कहते हैं ॥ नामैवतवगोविन्दनामत्वत्तःशताधिकं ददात्युच्चारणान्मुक्तिंभवानष्टांगयोगतः अर्थात् नाम तुम्हारा हे प्रभु तुमतें सौगुना अधिक है क्योंकि नाम तुम्हारा तो अपने जापक जनको उच्चारण मात्रही करिकें मुक्ति दे देता है और आप तो अति कष्ट साध्ययम १ नियम २ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ धारणा ६ ध्यान ७ समाधि ८ अष्टांग सिद्धियोग ते देते हो समुझने में तो नाम और नामी दोनों समानही जान पड़ते हैं क्योंकि दोनोंमें समानही गुणहै और इनकी परस्पर प्रीति स्वामी सेवक कीसी है अर्थात् जैसी प्रीति सेवक की स्वामी पर होती है तैसीही स्वामी की सेवक पर जानो गीतायां ॥ योयथामांप्रपद्यंतेतान्तथैवभजाम्यहं जैसे रूप बिना मनहीं होता है तैसे ही नाम बिना रूपभी नहीं होता है तातें ये दोनों परस्पर समान प्रीति के कारण एक दूसरे को नहीं छोड़ते हैं जहां रूप तहां नाम और जहां नाम तहां रूप जानो १ जहां नाम और स्वरूप दोनों ईश्वर की सूचक उपाधि हैं अर्थात् मुख्य लक्षण हैं और दोनों की महिमा अनन्तता के कारण अकथ हैं और दोनों अनादिकाल तें है अर्थात् तीनि काल

में कोई काल ऐसा नहीं जब ईश्वर में स्वरूप और नाम न होवै या बात को सुसामुझ कहें यथार्थज्ञस्वयंभूनारदःशंभुकुमारःकपिलोमनुरित्यादि साखी हैं अर्थात् निरूपक हैं २ इन गुणों की साम्यता से तो कौन बड़ा कौन छोटा यह कहने में अपराध होता है परंतु आगे जो इन दोनों के गुणों में भेद कहे जांयगे उनको सुनिकर संत जन रूप तें नाम को विशेष मान लेवैंगे ३ देखो प्रत्यक्षता में नाम के आधीन रूप दीख पड़ता है क्योंकि रूप का ज्ञान नाम बिना जाने होताही नहीं ४ जिसका रूप प्रत्यक्ष है और नाम नहीं जानतेहैं सो हाथ पर रक्खा होवै तौभी उसको पहचानिनही सक्ते हैं ५ और जो नाम का स्मरण रूप के अनहोते भी किया जावै तो उस नाम के नामी का स्वरूप हृदय में बड़े स्नेह समेत आजाता है ६ नाम और रूप दोनो के गुणों की कथा समुझने में तो सुख दायक है परंतु कही नहीं जाती है ७ तौभी नाम में रूप तें विशेष गुण हैं अगुण कहें समस्त गुण व्यापार शून्य विश्व व्यापक ब्रह्म और सगुण कहें षडैश्वर्य्यादि गुण प्रवर्तक नृसिंह राम कृष्णादि विभुविग्रहात्मक ब्रह्म इन दोनें प्रकारान्तर भगवत् स्वरूप का नामही सुन्दर शाखी उभय प्रबोधक अति प्रवीण द्विभाषी है ८ द्विभाषी उसको कहते हैं जो देशों की भाषा को जाने राम नाम सुन्दर सर्व उपाधि रहित दिव्य प्रकाशात्मकमणि दीप को देव दुर्लभ मनुष्य शरीर कोपरम पावन सुन्दर मन्दिर के मुख रूपी द्वार की जीह देहरी पर सदैव धारण करना चाहिये हे जीव जो तू भीतर बाहिर दोनों स्थान में प्रकाश चाहता है भीतर कहें अंतःकरण मन बुद्धि इत्यादि भीतर की इन्द्री बाहिर की नेत्र कर्णादि ज्ञान इन्द्रीन में प्रकाश चाहता है अर्थ त् जो इन सब को सफल किया चाहै अथवा बाहिर कहें इस लोक में सुख सुयश और भीतर कहें परलोक में सुगति चाहै २० ॥

नामजीह जपि जागहिं योगी । बिरतिबिचार प्रपंचबियोगी १
ब्रह्मसुखहि अनुभवहिं अनूपा । अकथअनामय नामन रूपा २
जाना चहहिं गूढ़ गति येऊ । नाम जीह जपि जानहिं तेऊ ३
साधक नाम जपहिं लौ लाये । होहिंसिद्धअणिमादिक पाये ४
जपहिं नाम जन आरत भारी । मिटहिं कुसंकठ होहिं सुखारी ५
राम भक्त जग चारि प्रकारा । सुकृती चारिउ अनघ उदारा ६
चहुंचतुरनि कहं नाम अधारा । ज्ञानीप्रभुहिं विशेषपियारा ७
चहुंयुग चहुंश्रुति नाम प्रभाऊ । कलिविशेषनहिं आनउपाऊ ८
दो० सकल कामना हीनजे राम भक्ति रसलीन ।
नाम सुप्रेम पियूष हृद तिनहुं किये मनमीन २१ ॥

अब जो चारि प्रकार के भगवद्भक्त हैं अर्थात् ज्ञानी १ जिज्ञासू २ अर्थार्थी ३ और आरत ४ जैसे भगवद्गीता में कहे हैं॥ चतुर्बिधाभजंतेमांजनाःसुकृतिनोऽर्जुन। आर्त्तो जिज्ञासुरर्थार्थीज्ञानीचभरतर्षभ ॥ सो चारों को नामहीं संसिद्धि दायक कहते हैं तहां प्रथम ज्ञानी जो अपने वैराग और ज्ञान के वल से विधि प्रपंच संसार ते वियोगी होकर योगी जन अर्थात् समाधि अवस्था में भगवन्मिलापी ज्ञानी जिह्वा से नामही जपिकर महा घोर भव रात्रि में जागते हैं प्रमाण गीता में॥ यानिशासर्बभूतानांतस्यांजागर्त्तिसंयमी १ और अनूप कहें अद्वितीय जिसके कोई समान भी नहीं अकथ जो कथन तें अधिक अनामय अविद्यालेस वर्जिता जो ब्रह्म ताके सुख को भोगते हैं जिस ब्रह्म का नाम और रूप नहीं जैसे शिव शुक सनकादिक २ और जो जिज्ञासू गूढ़ कहें कूटस्थ अर्थात् प्रकृति पुरुष के शरीरी ब्रह्म की गति कहें प्राप्ति को जाना चाहते हैं सो भी जिह्वा से नामही को जपिकर जानते हैं जैसे देवभूती पार्वती विदुर उद्धव राजा परीक्षित ३ और जो अर्थ साधक कामना पर लौ लगाइकर नाम जपते हैं सो अणिमा महिमादिक सिद्धियों को भी पाइकर सिद्ध होते हैं जैसे ध्रुव सुग्रीव विभीषण युधिष्ठिरादि ४ चौथे जो जन महा आरति विपत्ति में प्रभु का नाम उच्चारण करते हैं उनके महा कुसंकट तत्काल मिट जाते हैं और सुखी हो जाते हैं जैसे प्रह्लाद गजेन्द्र द्रौपदी विष्णु यश ब्राह्मण कलियुग के अंत में ५ प्रपन्नगीता में ॥ आर्त्ताविष । शिथिलाश्चभीता घोरेषुव्याघ्रादिषुवर्त्तमानाः संकीर्त्यनारायणशब्दमात्रं विमुक्तदुःखात् सुखिनोभवन्ति ॥ ये जो चारि प्रकार के राम भक्त जग कहें इस प्रकृति मंडल एक पाद भगवद्विभूति में अर्थात् अनन्त कोटि ब्रह्मांडों में हैं सो चारौं सुकृती कहें पुण्य शील हैं और अनघ कहें धौत कल्मष हैं जैसा सुन्दर कांड में कहा है ॥ सन्मुख होत जीव मोहि जबहीं। जन्म कोटि अघनाशहिं तबहीं॥ प्रपन्नगीतायां॥ नारायणोनामनरोनराणां प्रसिद्धचौरःकथितःपृथिव्यां। अनेकजन्मार्जित पापसंचयंहरत्यशेषं स्मृतमात्रएव और चारों उदार हैं अर्थात् उदार बुद्धि है ६ सो उन चारौ चतुर शिरोमणियों को नामही का अवलंबन है परंतु उन चारों में ज्ञानी भक्त ईश्वर को अत्यन्त प्यारे हैं क्योंकि सर्व प्रयोजन शून्य भगवत् उपाय और भगवत्ही उपाय उनको होता है जिनके सर्बस्व बासुदेवही हैं और सर्व सम्बन्ध बासुदेवही में मानते हैं ऐसे ज्ञानी भक्त ईश्वरको भी अति दुर्लभ हैं ताते अधिक प्यारे हैं ॥ वासुदेवःसर्वमितिसमहात्मा सुदुर्लभः अर्थात् जिसके बासुदेवही सर्व रूप हैं ऐसा महात्मा अति दुर्लभ है प्रपन्नगीतायां॥ त्वमेवमाताचपितात्वमेवत्वमेवबंधुश्चसखात्वमेवत्वमेवविद्याद्रविणंत्वमेवत्वमेवसर्वंममदेवदेव ॥ रामोमातामत्पितारामचंद्रःस्वामीरामोमत्सखारामचंद्रः । सर्वस्वंमे रामचंद्रोदयालुर्नान्यंजानेनैवजानेनजाने ७ चारों युगों के लिये चारों वेदों में नाम का अधिकार कहा है परंतु कलियुग में विशेष है॥ क्योंकि दूसरा उपाय नहीं है उत्तरांते यह कलिकाल न साधन दूजा। योग यज्ञ जप तप ब्रत पूजा॥ रामहि सुमिरिय गाइय रामहिं। संतत सुनिय राम गुण ग्रामहिं॥ प्रपन्नगीतायां। हरिर्नामैवनामैवनामैव

ममजीवनं। कलौनास्त्येवनास्त्येवनास्त्येवगतिरन्यथा ८॥ दोहा ॥ और जो प्रकृति मंडलातीत भगवत्त्रिपाद विभूति निवासी नित्य शूरी पंचम भक्त हैं सकल कामना हीन कहैं जिनको त्रिगुणात्पर दिव्य बैकुंठलोक निवास होने से मोक्ष पर्य्यन्त की कामना नहीं जैसा जितंतेस्तोत्र में लिखा है ॥ लोकंवैकुंठनामानन्दिव्यंषाड्गुण्यसंयुतं। अवैष्णवानामप्राप्यंगुणत्रयविवर्जितं ॥ ऐसे जो समस्त काम परिपूर्ण अनन्तगरुड़ विष्वक्सेन इत्यादि केवल भगवद्भक्ति रस में लवलीन उन्होंने भी भगवन्नाम के प्रेम रूपी सुन्दर अगाध जलाशय में अपने अपने मनों को मीन कर दिया है अर्थात् सोभी नामही को अपना प्राण आधार जानते हैं ॥ २१ ॥

अगुणसगुण दोउब्रह्मस्वरूपा। अकथअगाध अनादिअनूपा १
मोरे मत बड़ नाम दुहू ते। कीन्हेजिहिं युगबसनिजबूते २
प्रौढ़सुजनजन जानहिंजनकी।कहहुंप्रतीति प्रीतिरुचिमनकी ३
एक दारु गत देखिय एकू। पावक सम युग ब्रह्म विवेकू ४
उभयअगमयुग सुगमनामते। कहहुं नाम बड़ब्रह्म राम ते ५
व्यापक एक ब्रह्म अविनाशी। सतचेतन घन आनंद राशी ६
असप्रभुहृदयअछितअविकारी। सकलजीवजगदीनदुखारी ७
नामनिरूपण नामयतनते। सोउप्रगटत जिमिमोलरतनते ८
दो० निर्गुण तें यहि भांति बड़ नाम प्रभाव अपार।
कहहुं नाम बड़ राम तें निज विचार अनुसार २२ ॥

अगुण कहैं सर्व गुण व्यवहार शून्य अर्चा विग्रह और सर्बान्तरयामी और सगुण कहैं समस्त सद्गुण प्रवर्त्तक पर व्यूह विभु ये दोनों ब्रह्म के स्वरूप अकथ अप्रतर्क्य अनादि कालतेंहैं और अनूप हैं १ मेरे मत करिके तो नाम दोहुन तें बड़ाहे क्योंकि इन दोनों स्वरूपों का प्रापक नामही है जिसने अपने बल करिके दोनों अपने बस बर्त्ती करि राखे हैं २ प्रौढ़ कहैं बड़े जो सुजन जन हैं सो मैं जो अपने मनकी प्रीति और प्रतीति और रुचि कहता हूं उसको जानि लेवेंगे ३ जैसे दो प्रकार की अग्नि होती है एक तो अपने प्रकाश और दाहकादि गुणों के व्यापार रहित समस्त काष्ठ में व्याप्त रहती है और एक सर्व गुण प्रवर्त्तक प्रत्यक्ष दीख पड़ती है ऐसेही दोनों अग्नियों के समान ब्रह्म के दोनों स्वरूपों का निर्णय जानो ४ सो ये दोनों स्वरूप अगम हैं नाम के अवलम्ब से सुगम होजाते हैं इत्यादि गुण विचारतें नाम को दोनों स्वरूपों से अर्थात् विश्व व्यापक और रामादि स्वरूपों से बड़ा कहता हूं ५ देखो एक जो विश्वव्यापक ब्रह्म सच्चिदानन्द घन अविनाशी है ६ सो ऐसे निर्विकार प्रभु के हृदय में विराजमान होते पर भी समस्त जीव संसार में नाम निरूपण बिना महादीन दुखीही रहते

हैं ७ और नाम निरूपण कहैं नाम मंत्र का अर्थ समझने से और नामयतन कहैं उसको विधिवत् जपने से सोई ब्रह्मानन्द प्रगट हो जाता है जैसे रत्न का मोल रत्नही में गुप्त रहता है जब उसके नाम का अर्थ जाना जाय और उसके नाम के यत्न किये जावें और पारिखी द्वारा उसके गुण कहे जावें तब उससे मोल प्रगट होजाता है ८ ॥ दोहा ॥ निर्गुण ब्रह्म तेंताइस भांति नाम का प्रभाव बड़ा है अब अपने विचार के अनुसार राम से भी नाम को बड़ा कहता हूं ॥२२ ॥

राम भक्त हित नर तन धारी । सहिसंकट किये साधुसुखारी १
नाम सप्रेम जपत अनयासा । भक्त होहिं मुदमंगल बासा २
ऋषिहित रामसुकेतुसुताकी । सहितसेन सुतकीन्हि बिबाकी ३
सहितदोषदुखदासदुराशा । दलहिनामजिमिरविनिशिनाशा ४
रामएक तापस तियतारी । नाम कोटिखल कुमतिसुधारी ५
भंजेउ राम आप भवचापू । भव भय भंजन नाम प्रतापू ६
दंडकबनप्रभु कीन्हसुहावन । जनमनअमित नामकियेपावन ७
निशिचरनिकर दलेरघुनंदन । नामसकल कलिकलुषनिकंदन ८
दो० शवरी गृद्ध सुसेवकन्हि सुगति दीन्ह रघुनाथ ।
नामउधारे अमित खल बेदविदित गुण गाथ २३ ॥

राम ने अपने भक्तों के हित के लिये मनुष्य रूप धारण करिके श्रीअयोध्या का राज्य सुख छोड़कर परम कोमल ब्रह्मादि बंदित चरणारविन्दों से महा कठोर विंध्यादि पर्वत दण्डकादि बनों में चलिकर अति दुःसह आतप वर्षा शीत बात सहे अजिन बल्कल धारण किये कंद,मूल, फल भोजन किये प्राण प्रिया श्री जानकी का वियोग सहा तब दुष्टों को नाश करि भक्तों को सुखी करि पाया १ नाम को तो प्रेम समेत जपतेही बिना प्रयास भक्तजन आनन्द मंगल के निवास हो जाते हैं २ या प्रकार संक्षेप तें सब राम चरित्र कहा अब उसका विवर्ण करते हैं राम ने तो अपने पिता की आज्ञा के अनुसार अपने गुरु समस्त बीर विद्या प्रदायक विश्वामित्र की यज्ञ की रक्षा के लिये सुकेतु यक्ष की पुत्री ताड़का की सेना और पुत्र सुबाहु मारीच समेत बेबाकी कर दी अर्थात् कुछ मारे कुछ भगादिये ३ और राम का नाम दास कहैं जीवों की काम क्रोधादि जनित अनेक दुष्ट आशाओं को उनके पुत्र अनेक दोष कहैं पाप और सेना दुःख समेत अनायास नाश करता है जैसे सूर्य्य रात्रि को ४ राम ने तो केवल एक गौतम की स्त्री अहिल्या को शाप तें उद्धार किया और नाम ने अनेक खलों की कुमति को सुधार दिया ५ राम ने आप जाकर प्राचीन भव चाप पिनाकही भंजन किया और नाम का तो प्रतापही परम दुर्जेय भवकहैं नित्य नवीन जन्म

मरण रूप संसार का भय भंजन है ६ राम ने एक उकठा दंडक वन शोभायमान किया और नाम ने अपने अनेक जापकों के मन रूपीबन पावन कर दिये ७ राम ने तो केवल खरदूषणादि चौदह सहस्रही निशाचर मारे और नाम अपने जापकों के अनेक जन्मार्जित पापों का नाशक है ८ दोहा ॥ रामने जटायु, गृद्ध,शवरी दोनों सुसेवकों को सुगति दी जब एक गृद्ध ने सीता निमित्त प्राण दिये औरशवरी ने उस भूख प्यास अवस्था में शीतल जल और मधुर फल दिये और नाम ने तो निष्प्रयोन वेद प्रसिद्ध अनेक खलों को सुगति दीहै ॥ २३ ॥

राम सुकंठ विभीषण दोऊ । राखे शरण जान सब कोऊ १
नाम अनेक गरीब निवाजे । लोक वेद वर विरद बिराजे २
राम भालु कपि कटक बटोरा । सेतु हेतु श्रम कीन्ह न थोरा ३
नाम लेत भवसिंधु सुखाहीं । करहु विचार सुजन मनमाहीं ४
राम सकुल रण रावण मारा । सीय सहित निज पुर पगधारा ५
राजा राम अवध रजधानी । गावत गुण सुर मुनिवर वाणी ६
सेवक सुमिरत नाम सप्रीती । विनु श्रम प्रबल मोहदल जीती ७
फिरत सनेह मग्न सुख अपने । नाम प्रसाद शोचनहिं सपने ८
दो० ब्रह्म नाम तें नाम बड़ वरदायक वरदानि ।
राम चरित शत कोटि महं लिय महेश जिय जानि २४ ॥

रामने तो सुग्रीव और विभीषण दोनों राजों के भाइयों को स्वारथ निमित्त अपने शरण रक्खा यह सबही जानते हैं १ और नाम ने अनेक गरीब कहैं समस्त पुण्य कर्म रहितों को निष्प्रयोजन निवाजिदिया अर्थात् तरण तारण करदिया जिसके लोक और वेदों में उत्तम विरद प्रसिद्ध हैं विनय पत्रिकायां ॥ कीश केवट अपर भालु निश्चर शवर गृद्ध सम दम दया दान हीने । नाम लिये तेपि किये परम पावन सकल तरत नर तिन्हके गुणगान कीने २ राम ने तो सातों समुद्रों में अति छोटा खार समुद्र तिसकी भरतखण्ड और त्रिकूटाचल के बीच की अल्प खाड़ी तापर सेतु के लिये अठारह पद्म भालु वानराधिप एकठौरे किये तब बड़े श्रम से उसे बांधि पाया ३ और नाम केतो लेतेही महादुस्तर अपार संसार सिंधु अनन्त जीवों के सूख जाते हैं सो हे बुद्धिमानो राम और नाम की इस न्यूनाधिक्यता का विचार करो ४ राम ने तो जिस रावण को श्वेतद्वीप में एक वृद्ध स्त्री ने पकड़ कर समुद्र में डालदिया और पातालमें बालकों ने हयशाला में बांध रक्खा ऐसे दुर्बल रावणको कुलसमेत मार कर सीता सहित अपनी पुरी अयोध्या में आकर राज्य किया यह यश उनका देवता और मुनिजन सब गावते हैं परवाणी कहैं वेदादि सद्ग्रन्थों में ५ । ६ और

जापक जन तौ प्रेम समेत नाम के जपतेही अनायास परम दुर्जेय मोह रूपी रावण को उसके महाप्रबल प्रचंड कामादि परिकर समेत कि। शिव चतुरानन जाहि डराहीं। तिसको जीतिकर स्नेह मग्न स्वच्छन्द विचरते हैं जिनको नाम के अनुग्रह से किसी बातका शोच और किसीका डर स्वप्न में भी नहीं ७ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जब ब्रह्म और राम दोनों तें बड़ा और ब्रह्मादिक बरदायकों का भी वरदायक नाम को जाना तब तौ शतकोटि श्री रामचरित्र मेंसे महादेव ने हृदय में विचारि कर राम नाम ही को गृहण किया है ॥ २४ ॥

नामप्रसाद शंभु अविनाशी । साजअमंगल मंगल राशी १
शुकसनकादि सिद्धमुनियोगी । नामप्रसाद ब्रह्म सुखभोगी २
नारद जानेउ नाम प्रतापू । जगप्रिय परिहरिहरिप्रियआपू ३
नामजपत प्रभुकीन्ह प्रसादू । भक्त शिरोमणि भे प्रह्लादू ४
ध्रुवसग्लानि जपेउहरिनाऊं । पायेउ अचल अनूपम ठाऊं ५
सुमिरि पवनसुत पावननामू । अपने बसकरिराखेउ रामू ६
अपरअजामिल गजगणिकाऊ । भयेमुक्ति हरिनाम प्रभाऊ ७
कहहुं कहांलगि नाम बड़ाई । रामनसकहिं नामगुणगाई ८
दो० रामनाम को कल्पतरु कलि कल्याण निवास ।
जो सुमिरत भयो भांग तें तुलसी तुलसीदास २५ ॥

अब महाभागवतों से लेकर पतितौं पर्य्यन्त सबको नामही से परम लाभ दिखातेहैं देखो नामही के जप के प्रसाद तें जगद्वंद्य जगदीश्वर श्री महादेवजी अमर हुये और महा अमंगल साज अर्थात् चिता भस्म लेपन मुंडमाल धारन व्याघ्र गजचर्म परिधान भुजंग भूषण धतूरादि विष भोजन करने परभी महा मंगल राशि होते हुये १ और महा भागवत प्रधान श्री शुकदेव और सनकसनन्दन सनातन सनत्कुमार लोमष कपिल इत्यादि सिद्ध मुनि योगी भी नामहीके प्रसाद तें ब्रह्म सुख के भोक्ता हैं २ नारद ने जब दास योनि में नाम प्रताप जाना तब अति प्रिय कहैं परम दुस्त्यज संसार को छोड़ कर हरिके लाड़िले होते हुये ३ नामही जपते प्रभु ने प्रह्लाद को भक्त शिरोमणि अर्थात् अग्र गण्य करदिया क्योंकि प्रह्लाद ने प्रभु के विश्व व्यापकत्व को प्रत्यच्च दिखा दिया याते भक्ति शिरोमणि हैं ४ ध्रुवने पिता के निरादर की ग्लानि मानि करि भगवन्नाम को जपा तो भी अचल अति उच्च स्थान पाया जिसकी समस्त ग्रह नच्चत्र प्रदच्चिणा करते हैं ५ फिरि हनूमान परम पावन जो राम नाम ताके प्रताप के विश्वास से उसको स्मरण करि करि समुद्र उल्लंघन अच्चादि निधन लंका दहनादि किया ऐसे दृढ़ विश्वास गुण से रामचन्द्र को बस कर लिया ६ अपर कहैं

इतर अजामील गज गणिकादि भी राम नाम के प्रभाव से मुक्त होगये ७ नाम की बड़ाई कहांतक करूं अनन्त गुणों के कारण राम भी उसके गुणों को गाय कर पूरा नहीं कर सकते हैं ८ ॥ दोहा ॥ कलियुग में तो समस्त कल्याण गुणों का निवास राम नामही कल्पवृक्ष है जिसको स्मरण करतेही में महा अपावन भांग ते जो नीलि सनके समान अशुद्ध और सहज मदिरा है ताके समान मलीन सो परमोत्तम तुलसी के समान होगया ॥ २५ ॥

चहुं युग तीनि काल तिहुं लोका । भये नाम जपि जीव विशोका १
वेद पुराण संत मत येहू । सकल सुकृत फल राम सनेहू २
ध्यान प्रथम युग मख युग दूजें । द्वापर परितोषत प्रभु पूजें ३
कलि केवल मल मूल मलीना । पाप पयोनिध जन मन मीना ४
नाम काम तरु काल कराला । सुमिरत शमन सकल जग जाला ५
रामनाम कलि अभिमित दाता । हित परलोक लोक पितु माता ६
नहिं कलि कर्म न भक्ति विवेकू । राम नाम अवलंबन एकू ७
कालनेमि कलि कपट निधानू । नाम सुमति समर्थ हनुमानू ८
दो० राम नाम नरकेशरी कणक कशिपु कलिकाल ।
जापक जन प्रह्लाद जिमि पालहि दलि सुरशाल २६

चहुं युग कहें सतयुग में ध्रुव प्रह्लाद इत्यादि त्रेता में सुग्रीव विभीषणादि द्वापर में उग्रसेन पांडवादि कलियुग में महाघोर ब्रह्म शाप ते परीक्षत इत्यादि और तीनि काल कहें भूत भविष्य वर्त्तमान तहां भविष्य काल में विष्णु यश इत्यादि और तीनों लोक कहें स्वर्ग पृथ्वी पाताल तहां स्वर्ग में नारदादिक पाताल में राजा बलि इत्यादि जीव नामही जपिकर समस्त शोक रहित हुये १ वेद पुराणादि ग्रन्थ और सब प्राचीन आचार्यों का मत यही है कि समस्त सुकर्मों का परम फल भगवत्प्रेम है २ सो जो भगवत्प्रेम अगिले युगों में कष्ट साध्य रहा अर्थात् सतयुग में ध्यान त्रेता में यज्ञ द्वापर में यथा विधि पूजन ते मिलता रहा ३ सोई भगवत्प्रेम महामलीन केवल पापही की मूल इस कलियुग में जिसमें पाप रूपी जलको जीवों का मन मीन के समान छोड़ताही नहीं ४ तिस कराल कलियुग में उस भगवत्प्रेम को भगवन्नाम कल्पवृक्ष के समान सुमिरतेही जीवों के संपूर्ण जगकेजाल कहें बंधन काट कर अनायास देदेता है ५ राम नामही कलियुग में संपूर्ण मनोर्थों का दाता है पर लोक का साथी परम मित्र और लोक में पालक माता पिता है ६ न तो कलियुग में कर्म है न उपासना है न ज्ञान है केवल राम नामही समस्त जीवों को आधार है ७ कालनेमि के समान कलियुग कपटों का निधान है जो पुत्र कलत्र

द्वारा भगवत्कैं कर्य से जीवें को विरमाता है तहां नाम परम प्रवीण महाबनी हनूमान है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ फिर राम नाम श्रीनृसिंह औ कलिकाल हिरण्य कश्यप और यापक जन प्रह्लाद है सो नाम नृसिंह कलियुग को नाशकरि यापक प्रह्लाद को पालता है ॥ २६ ॥

भाय कुभाय अनख आलसहूं। नाम जपत मंगल दिशि दशहूं १
सुमिरि सोनाम राम गुण गाथा। करहुं नाइ रघुनाथहि माथा २
मोरि सुधरि है सोइ सब भांती। जासु कृपा नहिं कृपा अघाती ३
लोकहु वेद सुसाहिब रीती। विनय सुनत पहिचानत प्रीती ४
सुकवि कुकवि निज मति अनुहारी। नृपहि सराहहिं सब नर नारी ५
साधु सुजान सुशील नृपाला। ईश अंश भव परम कृपाला ६
सुनि सनमानहिं सबहि सुबानी भणित भक्ति गति मति पहिचानी ७
यह प्राकृत महिपाल सुभाऊ। जान शिरोमणि कोशल राऊ ८
दो० शठ सेवक की प्रीति रुचि रखिहैं राम कृपालु।
उपल किये जलयान जिहिं सचिव सुमति कपि भालु २७

जिसनामके भावतें प्रह्लाद विभीषणादि कुभायते कंश शिशुपालादि क्रोध ते हिरण्य कश्यप कामते रावण अनख आलसते अजामील इत्यादिको नाईं भगवन्नाम के उच्चारण ते सर्व देश काल में मंगलही होता है १ अबतो मैं उसी नाम को स्मरण करिके उस नाम के नामी श्रीरामचंद्रही के गुणों की गाथा अनन्य भाव से श्री रामचन्द्रही को प्रणाम करिके कहूंगा २ क्योंकि मेरी बनी बिगरी बाणी को सोई स्वामी सुधारि लेवेंगे जिनकी कृपा की अभिलाषी कृपा भी सदैव रहती है कभी अघातीही नहीं ३ दूसरा अर्थ मोरि सुधारि हैं अर्थात् मेरी इस यथोक्त वाणी को अपनी परम कृपालता से भले प्रकार धारलेवेंगे कहें अंगीकार लेवैंगे क्योंकि लोक और वेद में भी सुस्वामियों की ऐसीही रीति देखी गई है कि अपने प्रशंसक की विनती सुनतेही उसकी प्रीति और परि श्रमको जान लेते हैं ४ सुकवि औरकुकबि अपनी अपनीबुद्धिके अनुहार अपने अपने राजाओं को सबही सराहते हैं ५ तहां साधु कहें सज्जन सुजान कहें हृदयज्ञ और शीलमान ईश्वर का अंशरूप याते परम कृपाल ६ सो अपनी प्रसंशा को सुनि कर सबही को मधुर कोमलवाणी से सन्मानते हैं उनकी वाणी की प्रीति और उनकी बुद्धि की पहुंच जानकर ७ जब कि प्राकृत कहें सांसारिक मनुष्य राजाओं हीका ऐसा स्वभाव होता है तो फिरि सौशील्यवात्सल्य औदार्य्य सौंदर्यसौलभ्य गांभीर्य षड्गुण संपन्न सर्वेश्वर सर्वज्ञ शिरोमणि राजाधिराज कोशलेन्द्र श्रीरामचंद्र का क्या कहना है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ मोसे शठ सेवक की प्रीति की रुचि राम कृपाल ही राखेंगे जिन्ह

ने पाषाणों कोही जल यान और बानर रीछों कोही मंची बना लिया है ॥ २७ ॥

अतिबड़िमोरि ढिठाईखोरी । सुनिअघनर्कहुं नाकसकोरी १
समुझिसहममोहिअपडरअपने।सोसुधिरामकीन्हिनहिंसपने२
सुनिअवलोकिसुचितचखचाही।भक्तिमोरिमतिस्वामिसराही३
कहतनसाइ होइसुठिनीकी । रीझतराम जानि जनजीकी ४
रहतिनप्रभुचित चूककियेकी । करतसुरति शतवारहियेकी ५
जिहिअघबधेउब्याधजिमिबाली।पुनिसुकंठसोइकीनकुचाली६
सोइ करतूति विभीषणकेरी । सपनेहुं सोनराम हियहेरी ७
ते भरतहि भेटत सनमाने । राज सभा रघुबीर बखाने ८

दो० प्रभुतरुतरकपिडारपर । तेकियआपसमान ॥
तुलसीकतहुंनरामसे । साहिबशीलनिधान ॥
इहिबिधिनिजगुणदोषकहि । बहुरिसबहिशिरनाइ ॥
बरणौंरघुबरबिशदयश।सुनिकलिकलुषनशाइ २८ ॥

अब अपने दोष और स्वामी सौशील्य वात्सल्यादि गुण कहते हैं अति बड़ी जो मेरी ढीठता और खोरि कहैं लाग वा दोष जिसको सुनि कर समस्त पाप और रौरवादि नर्क भी घिनाते हैं सो समझकर मोकों अपनेही अप डर से बड़ी सहम कहैं भय रहैं सो तौ स्वामी ने अपने सौशील्यादि गुणों के कारण तें स्वप्न में भी उनको स्मर्ण नहीं किया १ । २ किंतु मेरे समस्त दोष औरों के मुख से सुनि और आपदेख कर भी सुचित चख चाही कहैं उदार दृष्टि स्वामी ने अनसुने अनदेखे करिके मेरी भक्ति और मेरी मतिही सराही ३ यातें निश्चित होता है कि जीवों की बाह्य वृत्ति संसार के कहने में अति न साई कहैं अति बुरी होइ वा भली ईश्वर तौ केवल जनके हृदय की प्रीति को जान करही प्रसन्न होता है ४ जो अपने भक्तों पर चूक होतीहै सो स्वामी के चित्त पर नहीं रहती है किंतु बारंबार उन के हृदय की प्रीति ही को स्मरण करते हैं ५ देखो जिसपाप से अर्थात् भाई की स्त्री ग्रहण करने से व्याध की नाईं वालिको मारा सोई पाप सुग्रीव और विभीषण का रामचन्द्र ने स्वप्न में भी न देखा ६ । ७ किंतु भरत मिलाप के समय और राज सभा में सनमान किये गये ८ ॥ दोहा ॥ देखो स्वामी तौ वृक्ष के नीचे और सेवक चपलबानर डारौं पर अर्थात् शिर पर कूदते फिरैं सो भी स्वामी ने संमाने कहैं आदरे ऐसे शील निधान स्वामी राम के समान कोई कहीं भी तौ नहीं या प्रकार अपने दोष औरस्वामी के गुण कहि के और फिरि के सब को शिर नाइ के श्री रामचन्द्र का निर्मल यशकहूंगा

जिसको सुनकर समस्त कलिके पाप नाश होजावैं २८ यह दूसरी चतुर्दशी हुई इस दूसरी चतुर्दशी में राम परि को अभिवन्दन और राम नाम की प्रसंशा और अपनी दीनता कही ॥

याज्ञबल्क्य जो कथासुहाई । भरद्वाजमुनि बरहि सुनाई १
कहिहौं सोइ संवादबखानी । सुनहुसकलसज्जनसुखमानी २
शंभुकीन्हयह चरितसुहावा । बहुरिकृपाकरिउमाहिंसुनावा ३
सोइशिवकागभुसुंडिहिदीन्हा । रामभक्तिअधिकारीचीन्हा ४
तिहिसनयाज्ञबल्क्यमुनिपावा । तिन्हपुनिभरद्वाजप्रतिगावा ५
ते श्रोता बक्तासम शीला । समदरशीजानहिंहरिलीला ६
जानहिंतीनिकालनिजज्ञाना । करतलगतआमलकसमाना ७
औरहुंजे हरिभक्तसुजाना । कहहिंसुनहिंसमुझहिंबिधिनाना ८
दो० मैंपुनिनिजगुरुसनसुनी । कथासुशूकरखेत ॥
समुझीनहिंतसबालपन । तबअतिरहेउंअचेत॥२९ ॥

अब चौपाइयों की तीसरी चतुर्दशी में जिस ग्रंथ का यह प्रबंध उलथा किया है उसकी उत्पत्ति और प्रचार फिरि संप्रदाय द्वारा परंपरातें अपने गुरु मुखते अपनेको सद्ग्रंथों की रीति पर प्राप्ति होना और उसका महात्म और निर्माण कालस्थान और मानसर होना कहैंगे ॥ सर्व शास्त्र बिख्यात श्री याज्ञ बल्क्य ऋषिने जो कथापरम भागवत श्रीभरद्वाज मुनि वर्य को सुनाई १ सोई उनका मुख्य संबाद बिस्तारतें कहैंगे उसको सब भगवज्जन सुख मानकर सुनौ २ कि प्रथम यह मानस रामचरित्र परम सुन्दर श्री शिव जी ने निर्माण किया फिरि कृपा करिके श्री पारवती जी को सुनाया ३ और सोई लोमस ऋषि द्वारा कागभुशुंडि को राम भक्ति का अधिकारी जानकर दिया ४ कागभुसुंडि से याज्ञ बल्क्य मुनिने पाया और उन्होंने भारद्वाज मुनि से कहा ५ ते संपूर्ण श्रोता और बक्ता अर्थात् श्रीशिव पारवती जी और लोमस मुनि, कागभुसुंडी और याज्ञबल्क्य, भारद्वाज मुनि समशील कहैं परस्पर समानहीं हैं सम दर्शी और यथार्थ भगवत् लीलाको जानते हैं ६ और तीनौ काल के चरित्र को हाथ पर रक्खे हुये आंउले के समान अपने ज्ञान से जानते हैं ७ इसी प्रकार और भी जो सुजान जन हरिभक्त हैं ते एक से एक मेरे गुरु पर्यंत कहते सुनते समझते चले आये॥८॥ दोहा॥ तैसेहीमैंने भी अपने गुरुसे यह कथा तीर्थोत्तम श्रीबाराह चेत्र में श्रवण की परंतु जैसी उन्होंने बर्णन की तैसी मेरी समुझ में न आई क्योंकि तब मैं वालपन के कारण अतिही अचेत कहैं अज्ञान रहा ॥ २९ ॥

दो० श्रोता बक्ता ज्ञान निधि कथा राम की गूढ़ ।
किमि समुझौं मैं जीव जड़ कलिमल गृसित विमूढ़ ॥

दोहा ॥ ते समस्त श्रोता और वक्ता अर्थात् शिव पारवती कागभुसुंडि गरुड़ याज्ञवल्क्य भरद्वाज ज्ञाननिधान और अतिगूढ़ राम की कथा उसको मैं जड़ जीव कैसे समझूं कलि के पापोंसे गृसित और विशेष मूढ़ ॥

तदपि कही गुरु वारहिं वारा । समुझि परी कुछ मति अनुसारा १
भाषा वंध करब मैं सोई । मोरे मन प्रबोध जिहि होई २
जसकछु बुद्धि विवेक बलमेरे । तस कहिहौं हिय हरिके प्रेरे ३
निज संदेह मोह भ्रम हरणी । करहुं कथा भवसरिता तरणी ४
सोइ वसुधातलसुधातरंगिनि । भवभंजनि भ्रमभेकभुअंगिनि ५
संतसमाज पयोधरमासी । विश्वभारधर अचल क्षमासी ६
यमगणमुहंमसिजगयमुनासी । जीवनमुक्ति हेतु जनु काशी ७
शिवप्रिय मेकल शैलसुतासी । सकल सिद्धि सुखसंपतिरासी ८
दो० राम कथा मंदाकिनी चित्रकूट चितचारु ।
तुलसी सुभग सनेह वन सियरघुवीर विहारु ॥ ३० ॥

तथापि जब गुरुदेव दयाल ने बारंबार समुझाइ के कही तब जैसी कछु बुद्धि के अनुसार मेरी समझ में आई तैसाही उस राम कथा का लोक भाषा में प्रबन्ध करता हूं जिससे मेरे मनको भली भांति बोध हो जावे १।२ सो जैसा कुछ बुद्धिके विवेक कावल मेरे ईश्वर ने दिया है तैसा उसी हरि ईश्वर की प्रेरणा के अनुकूल कहूंगा ३ अपने संदेह और मोह और भ्रम को निवारक और भवसरिता की तरणी नाव के समान इस कथा को करता हूं ४ क्योंकि राम कथाही पृथ्वी तल में अमृत की नदी है और राम कथाही भवभंजनी और भ्रम रूप मेंड़कों को भुजंगिनी है ५ फिरि संत समाज क्षीर सागर में श्री लक्ष्मी के समान सदा निवास करती है और विश्वभार धारक अर्थात् सबका आधार अवलम्बन अचल पृथ्वी के समान है ६ और यमराज के गणों के मुखकी कारिखि श्री यमुना के समान हैं अर्थात् जे जीव राम कथा कहते हैं वा सुनते हैं उनको यमके गण मुहं नहीं दिखाते हैं और जीवों को मुक्ति दाता काशी के समान है ७ शिव की प्यारी मेकल परवत की पुत्री अर्थात् नर्मदा के समान है और समस्त सिद्धि और सुख संपति की राशि है ८ ॥ दोहा ॥ राम कथा मंदाकिनी और भक्तों का चित्त सुन्दर चित्रकूट और उनका प्रेम सुहावन बन जहां ये तीनो हैं तहीं श्री सीता राम का विहार स्थान जानो ॥ ३० ॥

जग मंगल गुणग्राम रामके। दानि मुक्ति धन धर्म धामके १
सदगुरु ज्ञान विराग योगके। विबुध वैद्य भवभीम रोगके २
जननि जनक सियराम प्रेमके। बीज सकल वृत धर्म नेमके ३
समन सकल संताप शोकके। प्रियपालक परलोक लोकके ४
सचिव सुभट भूपति विचारके। कुंभज लोभ उदधि अपारके ५
कामक्रोहकलिमल करिगणके। केहरिसावक जनमनबनके ६
अतिथि पूज्यप्रिय तमपुरारिके। कामदघन दारिदृदवारिके ७
मंत्र महामणि विषय व्यालके। मेटत कठिन कुअंक भालके ८
दो० कुपथ कुतर्क कुचालि कलि कपट दंभ पापंड।
दहन राम गुण ग्राम जिमि इंधन अनल प्रचंड ३१ ॥

इस चौपाई में एकही अनुप्रास है और एक राम के गुण ग्रामें ही का महात्म है श्री रामचंद्र के गुण ग्राम कीर्त्तन श्रवण स्मरण जगमंगल हेतु हैं क्योंकि। राम जन्म जग मङ्गल हेतू। और चारो पदार्थ अर्थ धर्म धाम कहैं समस्त काम और मुक्ति पर्य्यन्त के दाता हैं १ ज्ञान वैराग और अष्टांग योग के सद्गुरु कहैं सर्व सिद्धु प्रापक गुरु हैं और महा भीम संसार रोगको तो दिव्य वैद्य अश्विनी कुमारके समान हैं २ श्री सीता राम के प्रेम के माता पिता हैं और संपूर्ण वृत धर्म नेम के बीज हैं ३ समस्त संताप शोक के नाशक हैं लोक परलोक में हितकारी पालक हैं ४ विचार राजाके मंत्री और सुभट के समान यश विजय दायक हैं और लोभ अपार समुद्र को कुंभज मुनि हैं ५ काम क्रोधादि कलिमल हाथियों को सिंहके पाठों के समन हैं अपने जनो के मनवनमें गाजते हैं ६ श्री शिवजीके तो अतिथि और पूज्य और अति प्यारे हैं और दरिद्र रूपी दावाग्नि के शांतकर्त्ता काम दायक मेघ हैं ७ विषय व्याल ग्रसित जीवों को गारुड़ महामंत्र महामणि हैं और महाकठिन दैव लिखित जो कुअंक तिन्हको भी मेटते हैं ८ ॥ दोहा ॥ कुपथ कहैं वेद वाह्य शास्त्र कुतर्क वितंडावाद कुचालि अमंगला चरण और कलि के कपट दंभ पाखंड सबके दाहक श्री राम के गुण ग्राम हैं जैसे इन्धन कहैं काष्ट की दाहक प्रचंड अग्नि है ऐसे समस्त मंगल दायक अमंल नाशक श्री राम के गुण ग्राम हैं ताते जग मंगल कहे हैं॥ ३१ ॥

कीन्हप्रश्नजिहि भांतिभवानी। जिहिविधि शंकर कहाबखानी १
सो सबहेतु कहब मैं गाई। कथा प्रबंध विचित्र बनाई २
जिन यह कथासुनी नहिं होई। जनि आश्चर्य करै सुनि सोई ३

कथाअलौकिकसुनहिंजोज्ञानी।नहिंआश्चर्यकरहिंअसजानी ४
रामकथाकी मिति जगनाहीं। असि प्रतीति जिनके मनमाहीं ५
नानाभांति राम अवतारा। रामायण शतकोटि अपारा ६
कल्पभेद हरि चरित सुहाये। भांति अनेक मुनीशनिगाये ७
करिय न संशय असउर आनी।सुनिय कथा सादर रतिमानी ८
दो० राम अनंत अनंत गुण अमित कथा विस्तार।
सुनि आश्चर्य न मानिहैं जिनके विमल विचार॥ ३२ ॥

फिर याज्ञवल्क्य भारद्वाज संवाद के पीछे जैसे शिवजी से पारवती ने पूछा और शिवजी ने विस्तार पूर्वक कहा १ सो सब कारण कहूंगा इस कथा का एक विचित्र कहें अद्भुत प्रबंध बनाकर अर्थात् कांडकांड में अपने अपने क्रमसे चौपाई और दोहे छन्दादि यथा स्थान रचना पूर्वक कहूंगा जिससे कोई इस ग्रंथ में क्षेपक कथा और चौपाई दोहे छन्द सोरठे इत्यादि बढ़ा न सके २ जिसने यह कथा सुनी नहो सो इसे सुनिकर आश्चर्य न करै ३ क्योंकि जो ज्ञानी पुरुष अलौकिक कोई भगवत्चरित्र सुनते हैं तो यह जानिकर आश्चर्य नहीं करते हैं ४ कि राम कथा कीमिति जग कहें अनन्त कोटि ब्रह्मांडों में नहीं है अथवा जिनके मन में ऐसी निश्चय है ५ कि नाना कहें अनेक भांति करके रामावतार हैं और रामायण भी अपार शतकोटि हैं ६ और कल्पभेद करिके सुन्दर भगवत्चरित्र अनेक भांति से मुनीश्वरों ने अपने अपने प्रबन्धों में कहे हैं क्योंकि ईश्वर पांच प्रकारका है पर १ ब्यूह २ विभु ३ ब्यापक ४ अरचा ५ पर वैकुंठ निवासी १ ब्यूह वासुदेव शंकर्षण प्रद्युम्न अनिरुद्ध क्षीराब्धिवासी २ विभु नृसिंह रामकृष्णादि ३ ब्यापक अन्तरयामी ४ अर्चा श्रीरंग शालग्रामादि सो विभु अवतार जब जहां से उनके अति आरत भक्तजन प्रार्थना करते हैं तब तहां से प्रगट होता है जैसे पर ईश्वर से स्वायंभवमनु ने ब्यूह से ब्रह्मादिक हैं व्यापक से प्रह्लाद द्रौपदी ने प्रकट किये अर्चा से विष्णु यशु प्रकट करेगा ७ यह विचार कथा प्रीति समेत सुना चाहिये कुतर्क न करना चाहिये ८ ॥ दोहा ॥ ऐसे राम और राम गुणों को अनन्द जानकर ज्ञानी कथा सुनकर आश्चर्य न माने गे ॥ ३२ ॥

यहिविधि सबसंशयकरिदूरी। शिरधरि गुरुपद पंकजधूरी १
पुनि सबही विनवौं करजोरी। करतकथा जिहि लागुन खोरी २
सादरशिवहि नाय अबमाथा। वरणहुं विशद रामगुण गाथा ३
संवत सोरहसै इकतीसा। करहुं कथा हरिपद धरिशीसा ४

नवमी भौमवार मधुमासा । अवधपुरी यह चरित प्रकासा ५
जिहिदिनरामजन्मश्रुतिगावहिंतीरथसकलतहांचलिआवहिं ६
असुर नाग खग नर मुनिदेवा । आइकरहिं रघुनायकसेवा ७
जन्ममहोत्सव रचहिं सुजाना । करहिं राम कल कीरतिगाना ८
दो० मज्जहिं सज्जन वृन्दबहु पावन सरयूनीर ।
जपहिं राम धरिध्यान उर सुंदरश्याम शरीर ॥ ३३ ॥

इस प्रकार सब संज्ञा निवारण करि और गुरु के चरण कमल की रजको शिरपर धरिके फिरि भी सबको हाथ जोरि विनती करता हूं जिससे कथा करने में कोई दोष न लगावै १। २ अवसादर कहें तन मन बचन करिके इस चरित्र के मुख्य आचार्य श्री शिवजी को मस्तक नाइ कर श्री रामचंद्र के गुणों की गाथा को वर्णन करता हूं ३ श्रीमन्नृपति विक्रमादित्य राज्यगत १६३१ संवत में भगवच्चरणारविन्दों को मस्तक पर धारण करिके कथा का प्रारंभ करता हूं ४ नवमी तिथि मंगल वार चैत्र मास को श्री अयोध्यापुरी में इस चरित्र को प्रकाशित किया ५ जिस दिन रामचंद्रका जन्म वेद निरूपण करते हैं उसदिनसमस्त तीर्थ तहां आते हैं ६ प्रह्लादादि असुर तक्षकादिनाग गरुड़ादि पक्षी नारदादि मुनि इन्द्रादि देवता और मनुष्यसब आइकर भगवदाराधन करते हैं ७ और अपने अपने समाज में जन्म महोत्सव की रचना करते हैं और भगवत की सुन्दर कीर्ति का गान करते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सज्जनों के वृन्दों के वृन्द परम पावन सरयू के जल में स्नान करते हैं और सुन्दर मनोहर भगवत के श्याम सुन्दर शरीर को ध्यान धरिकर राम महा मंत्र को जपते हैं ॥ ३३ ॥

दरशपरश मज्जन अरुपाना । हरहिंपाप कहवेद पुराना १
सबविधि पुरीमनोहरजानी । सकलसिद्धि प्रदमंगलखानी २
विमलकथा करकीन्हअरंभा । सुनत नशाहिं काममद दंभा ३
रामचरित मानसयह नामा । सुनत श्रवण पाइय बिश्रामा ४
मनकरि विषयअनल बनजरई । होयसुखीजोयहिसरपरई ५
रामचरित मानस मन भावन । बिरचेउ शंभुसुहावन पावन ६
रचिमहेश निजमानस राखा । पायसुसमय शिवासन भाखा ७
तातें रामचरित मानसवर । धरेउनाम हिय हेरिहर्षि हर ८
दो० जस मानस जिहिविधि भयउ जगप्रचार जिहिहेतु ।
सो अबकहहुं प्रसंग सब सुमिरि उमा वृषकेतु ॥३४॥

फिरि सरयू गंगा कैसी पावन है जो अपने दरशन परसन स्नान पान तेंहीं समस्त पापों को हरती है यह माहात्म्य वेद पुराण कहते हैं १ सब भांति पुरी को मनोहर और सिद्धि पीठ मंगल मूल जानकर तहां इस निर्मल कथा का प्रारंभ किया जिसके सुनतेही काम मद दंभादि समस्त दोष नाश होते हैं २।३ राम चरित्रमानस यह इस ग्रंथ का नामहै जिसको कर्ण द्वारा सुनतेही मनको बिश्राम होताहै अर्थात् फिरि कहीं नहीं भटकता है ४ और मन रूपी मातंग जो पंच विषय रूपी अग्नि के बनमें जरा जात है जो इस सरमें आ परै तो सुखी हो जावे अर्थात् जो इसमें रमै तो बिषय बिरक्त हो जावे ५ राम चरित्र मानस मनोहर सुन्दर और पवित्र प्रथम इसको श्री शिवजीने रचि कर अपने मानस कहैं मनहीं में रक्खा कोई सुन्दर समय पाय कर पारवती जी से कहा ६।७ ता हेतु तें राम चरित्र मानस ऐसाउत्तम नाम इस चरित्र का हृदय में बिचारि कर श्री महादेव जीने प्रसन्न होकर रक्खा ॥ ८ ॥ दोहा ॥ अब यह राम यश रूपी मानसर जैसें हुआ और जो कारण इसका प्रचार संसार में हुआ सो सब प्रसंग कहता हूं उमा श्री पारवती और वृषकेतु श्री शिव जी जो इस चरित्र के मुख्य श्रोता बक्ता हैं तिनको स्मरण करिकै ॥ ३४ ॥

शंभुप्रसाद सुमति जियहुलसी। रामचरितमानसकबितुलसी १
करहुमनोहरमति अनुहारी । सुजनसुचितसुनिलेहुसुधारी २
सुमतिभूमि थलहृदयअगाधू । वेदपुराणउदधिघन साधू ३
बरषहिंरामसुयश बरवारी । मधुर मनोहर मंगलकारी ४
प्रेम भक्तिजो बरणि न जाई । सोई मधुरता शीतलताई ५
सो जलसुकृत शालिहितहोई । रामभक्त जनजीवन सोई ६
मेधामहिगतसोजलपावन । सिमिटिश्रवणमगुचल्योसुहावन ७
भरेउसुमानससुथलथिराना । सुखदशीतरुचि चारु चिराना ८
दो० सुठि सुंदर संवादवर बिरचेउ बुद्धि बिचारि ।
तेइ यहि पावन सुभगसर घाटमनोहर चारि ॥ ३५ ॥

अब यहां से इस राम चरित्र मानसरोवर को चौकोर चतुष्कोण अष्टांग कल्पना करिकै आठ चौपाइयों में वरणन करते हैं यह केवल श्री शिवजी ही की कृपा से ऐसी सुन्दर बुद्धि मेरे उत्पन्न हुई है नहीं तो कहां अति अगाध राम चरित्र मानसरोवर और कहां परम लघु पपीलिका के समान तुलसी कबि १ मैं तो अपनी बुद्धि के अनुहारि इस मनोहर चरित्र को सरोवर रूप करिके करता हूं जहां मेरी भूल चूक देखो तहां आपु सुजन जन सावधान चित्तसे सुनि करउसको सुधारि लेवें २ जो

भगवद्गुण गान परायण मति सोसुमति मुकुन्दमालायां॥ सा बुद्धिर्बिमलेंदु शंख धवला या माधवध्यायनी ऐसी जो कविकी सुन्दर बुद्धि सोतो इस सरोवर का पृथ्वीतल है और हृदय गहिराव है वेद और वेदों के उत्तर भाग का विवर्ण पुराण जल रासि समुद्र है परंतु उसजलके सर्वत्र प्रापक संत जनही मेघ हैं ३ सो संत जन उस राम यश रूपी सुन्दर जलको सुमति भूमिपर सर्वत्र वर्षते हैं कैसा जल है श्रवण रूपी पीने में तो मधुर है मनोहर समुझ रूपी दृष्टि में है मंगल कारी लोग परलोक में है ४ प्रेम और भक्ति ये दोनों उस जल में माधुर्य और शीतलता मुख्य गुण हैं ५ सोजल पुण्य रूपी शालियों को हितकारी तो होताही है परंतु राम भक्त जनों का तो जीवन प्राण केवल सोई है ६ सो पावन जल बुद्धि पृथ्वी पर बर्षि कर कर्ण मार्ग हृदय गहिराव को चला ७ तो करिके सुन्दर मानसरोवर परि पूर्ण भर गया और जब थिराना और चिराना कहें चिरकाल का हुआ तब शीतल और रोचक और सुख दायक हुआ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ अति सुन्दर जो चारि संबाद बुद्धि ने बड़े विचार करिके रचे हैं सोई इस पवित्र सुन्दर सर में मनोहर चारि घाट हैं ॥ ३५ ॥

सप्त प्रबन्ध सुभग सो पाना । ज्ञान नयन निरखत मनमाना १
पुरयनि सघन चारु चौपाई । युक्ति मंजुमणि सीपि सुहाई २
छन्द सोरठा सुन्दर दोहा । सोइ बहुरंग कमल कुलसोहा ३
सुकृति पुंजमंजुल अलिमाला । ज्ञान बिराग विचार मराला ४
धुनि अवरेव कवित गुणजाती । मीन मनोहर ते बहुभांती ५
संतसभा चहुंदिशि अमराई । श्रद्धाऋतु बसंत समगाई ६
भक्ति निरूपण विविधि विधाना । क्षमा दया द्रुम लता विताना ७
संयम नियम फूल फल ज्ञाना । हरिपद रति रस वेद बखाना ८
दो० पुहुप बाटिका बाग बन सुख सुविहंग विहारु ।
माली सुमन सनेह जल सींचत लोचन चारु ॥ ३६ ॥

सप्त प्रबंध कहें जो इस ग्रंथ में सात कांड किये हैं सोई इस तड़ाग में सात सोपान हैं सो साते सोपान राम यश जलसे परिपूर्ण हैं याते बाह्य दृष्टिसे उनकी चित्र विचित्र रचना जो श्रुति स्मृति पुराणादि सिद्धांत पूर्वक रचीगई हैं दीखि नहीं पड़तीं जब उनको ज्ञान विचार नेत्रों से देखै तब यथार्थ बूझि परैं औ मन अत्यन्त उनमें रमैं १ तड़ाग के जल की शोभा पुरयनि कहे कमल बेलिसे होती है सो इस तड़ाग में अति सघन जो सुन्दर चौपाई सोई सघन पुरयनि है और अनेक अनूपम जो इस काव्य में युक्ति हैं सोई सुन्दर मुक्तामणि की सुहाई सीपी हैं २ और जो छन्द सोरठा दोहा

सुन्दर कहे हैं सोई अनेक बरण के अर्थात् स्वेत पीत अरुण नील कमलोंकी जाति अर्थात् पदम उत्पन्न कमल कल्हार इत्यादि शोहती हैं ३ और कमलों की शोभा भ्रमर और हंसों से होती है सो यहां सुकृतीजनों के समूह उन कमलों के मकरंद रस के रसिक उज्जल भ्रमर वृन्द हैं और उनके ज्ञान वैराग विचार हंस रूप हैं ४ पुन्यार्थ और व्यंगार्थ और काव्य के गुण जाति सोई अनेक भांति के मनोहर मीन हैं ५ और संत जनों की सभा सोया तड़ाग के चारों दिशा में अंबराई हैं तिनमें श्रद्धा वसंत ऋतु के समान है ६ भक्ति का निरूपण जो अनेक भांति से किया है अर्थात् कहीं नवधा कहीं प्रेमाकहीं परा भक्ति का निरूपण किया है सो और क्षमा दया और दम ये सवलत वितान हैं ७ संयम नियमादि तो अमराइयों के पुष्प सदृश हैं फल सबों का ज्ञान है और भगवच्चरणारविंदों में जो अहेतु की प्रीति है उसीको इस ज्ञान फलका साररस वेद कहते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसी जे इस तडाग के चारोंपास पुष्प वाटिका और बाग बन हैं उनमें आनन्द रूप सुबिहंग कहैं शुक कोकिल चातक चकोर मयूरादिका बिहार स्थान है और सुन्दर मन रूपी जो माली है सो स्नेह का जल नेत्र जलाशय से उन्ह सबों को सींचता है ॥ ३६ ॥

मानसदीपिका तें दूसरा अर्थ कहत ॥

सातकांड तेई यासर के सुन्दर दिव्य सात सीढ़ी हैं शास्त्र जन्य ज्ञान नेत्रो से जब सीढ़ीन को देखै तब यथार्थ ज्ञान होइ और मन सुखी होइ भाव सातो सीढ़ी रामयश जल तें पूरण हैं शास्त्र ज्ञान बिना उनको यथार्थ कैसे समुझै किंवा ज्ञान नेत्रसे सातो सीढ़ी न को देखै तौ मनमाने कैसा देखै बाल कांड में सीताराम संयोग वनो सोई सांख्य शास्त्र १ अयोध्या बिराग वैसेषिक २ आरण्य मीमांसा ३ किष्किन्धा योग ४ सुन्दर न्याय ५ लंका वेदांत ६ उत्तर साम्राज ७ ऐसा देखै तब मन मानै १ चारु सुन्दर चौपाईयां सरके सघन पुरयनि छाइ रही है भाव जैसे पुरयनि सघन तैसे चौपाई सघन याहीहेतु चौपाई रामायण कहाती है प्रमाण । पुरयनि सघन ओट जल वेगि न पाइय मर्म । यातें पुरयनि ने राम सुयश जल को छाय राखा है शीघ्रग्राह कोऊ नहीं पावत २ छन्द सोरठा सुगम है ३ सुकृती लोगनि के सुकृत वृन्द सुन्दर भंवर पांति हैं और उनहीं लोगों के ज्ञान विराग बिवेक हंसहैं सुकृत और अलिको रस पान भार लेनो रंग नहीं ज्ञान आदि और मराल कारव तरंग और सत असत को विवेक सादृश्य लेनो तीनि जाति के हंस शास्त्रों में लिखे हैं तातें ज्ञानादि तीन कहे ४ जिसका अर्थ काव्य में अलक्ष होइ सो धुनि कहाती है जिसका अर्थ उलटा लिया जावे सो अवरेब कवित गुण तीनि प्रकाशआदि तें जाति चारि कौशिकी १ भारती २ आरभटी ३ सातिकी ४ इनको वृत्ति भी कहते हैं ५ साधु सभा सोई चारो दिशा में या मानसर के अम्रका बाग है दोऊ परोपकारी और अमृत फल दाता तहां श्रद्धा बसंत है ६ नवधा प्रेमा परा भक्ति ७

जे गावहिं यह चरित संवारे । ते यहिताल चतुर रखवारे १
अतिखलजे विषयी बककागा । यहिसरनिकटनजाहिंअभागा २
संबुक भेक सिवार समाना । यहांनविषय कथारसनाना ३
तिहि कारण आवत हियहारे । कामी काक वलाक विचारे ४
आवत यहि सर अतिकठिनाई । रामकृपा विनुआइ न जाई ५
कठिन कुसंग कुपंथ कराला । तिन्हकेबचनव्याघ्रहरिव्याला ६
गृह कारज नाना जंजाला । तेइ अतिदुर्गमशैलविशाला ७
बन बहु विषय मोहमदमाना । नदी कुतर्क भयंकर नाना ८
दो० जेश्रद्धासंबलरहितनहि संतनकर साथ ।
तिनकहंमानसअगमअति जिनहिंनप्रियरघुनाथ ३८॥

जे विद्वज्जन इस चरित्र को बड़ी सावधानी और चौकसी से कहते हैं अर्थात् नाना पुराण निगमागम संमतम् या श्लोकके अनुसार सबका सिद्धान्त जहां इसग्रन्थ में है और वेदमत लोकमत और पूर्वा पर संबन्ध बिरोध और काव्यदोष बिचारिके कहना यह सावधानी और यह सर्वत्र देखे रहना कहीं किसी ने इसमें अपनीचातुर्य से चौपाई वा छन्द सोरठादि डाल कर इस की सुन्दर गचदार रचनाकी सम्पता को ऊंचा नीचा तो नहीं कर दिया है यह चौकसाई रखवारी है ॥ १ ॥ अति दुष्टजे पंच विषयाशक्त वकवायस तो इस परम पावन सर के पास भी नहीं आते अभाग उनका ॥ २ ॥ संबुक घोंघे भेक मेंडुक और सिवार इनके समान जो विषय कथा सो तो इसमें है ही नहीं तिस कारण यहां आते हृदय में हों हारे हैं कामी वक वायस विचरे ॥ ३ । ४ ॥ इस सर को आवना कुछ सुगम नहींहै किंतु अति कठिनहैहै एक रामकृपा विना आयाही नहीं जाता है ॥ ५ ॥ महा कठिन कुसंग सोई हिमालय पर्वतका महाकराल उतार चढ़ावका कठिन करालमार्ग है और उनके भयदायक वचन अरे भाई कथा सुनोगे तो तुमको अवश्य नर्कही होगा क्योंकि अभीतो तुम बिना जाने पाप करतेहो अनजाने का दंड नहीं होता और जब तुम कथा सुनकर पाप करोगे तो नर्कही में परोगे इत्यादि वचन सोई महा भयंकर बाघ सिंह सर्पोंके समान हैं ॥ ६ ॥ और गृहके काम जो अनेक जंजाल हैं जो छोड़ेही नहीं जाते सोई महा दुर्गम जो चढ़ने को अशक्य ऐसे अति उतंग हिमालय के शिखर हैं ॥ ७ ॥ पुत्र मित्र कलित्रों का जो मोह बंधन और बिद्याधन ऐश्वर्य कामद वर्णा श्रम जाति कुलका अभिमान सोई बड़े उरझाव का महागह्वर बिषम बन है परलोक क्या है किसने देखा है किसको परलोक का पत्र आया है सब दंत कथा है हमने किसीको

कथा सुनकर स्वर्ग से बिमान आते नहीं देखा ऐसी कुतर्क भयंकर नदी है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जे मन्द भाग श्रद्धा संबल और सत संगहीन हैं तिन को यह मानस महा अगम है जिनको रघुनाथ श्री रामचन्द्र में प्रीति नहीं क्योंकि सरस्नान को संबल संग और तीर्थ भक्ति तैसेहीं राम कथा को श्रद्धा सतसंग और भगवद भक्ति ये तीनों मुख्य हैं ॥ ३७ ॥

सकलबिघ्ननाहिं ब्यापहिंतेही । रामसुकृपा बिलोकहिंजेही १
सोइसादर सरमज्जन करहीं । महा घोर त्रैताप न जरहीं २
तेनर यह सरतजहिं न काऊ । जिनकै रामचरण भलभाऊ ३
असमानस मानस चखचाही । भइकबिबुद्धि बिमलअवगाही ४
भयउहृदय आनंद उछाहू । उमगेउ प्रेम प्रमोद प्रवाहू ५
चलीसुभगकबितासरितासो । राम बिमल यशजलभरितासो ६
सरयू नाम सुमंगल मूला । लोक वेदमत मंजुल कूला ७
नदी पुनीत सुमानस नंदनि । कलिमलतटतरुमूलनिकंदनि ८
दो० श्रोतात्रिविध समाज पुरग्राम नगरदुहुंकूल ।
संत सभाअनुपम अवधसकलसुमंगल मूल ॥ ३८ ॥

समस्त बिघ्नों में से उसका इक भी बाधक नहीं होता है जिसको श्री रामचन्द्र सु कृपाकरहैं अहेतुकी कृपा कटाक्षकरिके देखते हैं यथा पंगुलंघयतेगिरिं १ सो तौ समस्त बिघ्न और बिघ्न कारकों के शिरपर पाउं देकर निःसंक चले जाते हैं और आनन्द श्रद्धा समेत सदास्नान करके महा घोर दैहिकी, दैविकी, भौतिकी जोतीनि ताप हैं तिन करिके नहीं जरते हैं २ और ते सुकृत शील नर तौ इस सरको कभी तजतेही नहीं हैं जिनका भगवच्चरणारबिंदों में परि पूर्ण प्रेम है ३ ऐसा सुन्दर सुहावनपावन इस मान सरको हृदय के नेत्रों अर्थात् ज्ञान बिचार के नेत्रों से देखकर जो अवगाहन किया तो कबिकी बुद्धि निर्मल होगई ४ तिससे हुआ जो हृदय में आनन्दका उछाह ता करिके उसके प्रेमानन्द का प्रवाह उमगा अर्थात् हृदय में न समा सका ५ ता करिके उसी हृदय अगाध से जो राम सुयश जलसे परिपूर्ण है कबिताईरूपी सुन्दर नदी वहिचली जो रामही के निर्मल सुयश जलसे परिपूर्ण है ६ सरयू ऐसा जिसका नाम है और मंगल मूला है और लोकमत औरवेदमत ये दोनों अतिउज्वल जिसके दोनों तट हैं ७ यह कीर्त्ति रूपीनदी परम पुनीतहै क्योंकि रामसुयशसुन्दर मान सरोवर की पुत्री है समस्त कलिमल जो तट के तरुके समान हैं उनके मूलकी नाशक है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तीनि प्रकार के जो श्रोता हैं अर्थात् जीवन मुक्तकै वल्याधिकारी १ मुमुक्षु २ बिषयी बद्ध ३ सो यथा योग्य इस नदी के दोनो तटों पर नग-

ग्राम बसते हैं और भगवज्जनों की जो सुन्दर सभा है सो अनूपम श्री अयोध्या समस्त सुमंगलों की मूल है ॥ ३८ ॥

रामभक्ति सुरसरितहिजाई । मिलीसुकीरति सरयु सुहाई १
सानुज राम समरयशपावन । मिलेउ महानदसोनसुहावन २
युगबिचभक्तिदेवध्वनिधारा ।सोहतिसहितसुबिरतिबिचारा ३
त्रिबिधितापत्राशकत्रिमुहानी ।रामस्वरूपसिंधुसमुहानी ४
मानसमूल मिली सुरसरिही। सुनतसुजनमन पावनकरही ५
बिचबिच कथाबिचित्र बिभागा ।जनसरितीरतीर बनबागा ६
उमामहेश बिवाह बराती । तेजलचर अगिणितबहुभांती ७
रघुबर जन्मानंदवधाई । भ्रमर तरंग मनोहर ताई ८
दो० बाल चरित चहुं बंधु के बनज बिपुल बहुरंग ।
नृप रानी परिजन सुकृत मधुकर वारि बिहंग ॥ ३९ ॥

फिरि कीर्त्ति रूपी सरयू संत सभा अयोध्या से राम भक्ति श्री गंगा में जा मिली अर्थात् सुकीर्त्ति कहें बाल अयोध्या कांड की शांति कीर्ति सरयू गंगा के उत्तर दिशा की ओर तें आमिली और श्री राम लक्ष्मण का जो आरण्य से लंका प्रयंत महा उग्र युद्ध यश दक्षिण दिशा से सोनभद्र सुहावनं और राम यश पावन भक्ति गंगा में जा मिला ये दोनों कीर्त्ति भगवत्भक्ति प्रापकहैं जो इनमें परैगा सो रामभक्ति गंगा को प्राप्त होकर राम समुद्र को पावैगा २ इन दोनों के बीच गंगा की धार कैसी शोहती है जैसे ज्ञान बैराग के बीच भक्ति ३ या प्रकार राम भक्ति गंगा त्रिविधि ताप नाशक त्रिमुहानी कहें त्रिमुखी होकर राम स्वरूप समुद्र को चली ४ अब यहां से फिरिराम सुकीर्त्ति सरयू का बर्णन करते हैं यातें कीर्त्ति सरयू को मानस मूल कहा अर्थात् मान सरसे लेकर राम भक्ति गंगा पर्यंत सुनतेही सुजनों के मन को पावन करती है ५ बीच बीच में जो अनेक इतिहास जैसे ॥ पूछा मुनिहि शिला प्रभु देखी ॥ इत्यादि सोई इस नदीके तीरतीरके बन बाग हैं ६ शिव पारवती के बिवाहके देव यक्ष भूत प्रेत पिशाचादि अनेक जाति के जो बराती सोई नाना प्रकारके जलचर हैं ० रामचन्द्र के जन्म की जो आनन्द बधाई है सोई नदी के जल भ्रमर और उसकी तरंगों की मनोहरता है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ चारों भाइयों के जो सुन्दर बाल कैलि चरित्र हैं सोई उसके हृद स्थानों के रंग रंग के कमल हैं और राजा रानी के परिवार समेत सुकृत उनके मधुकर और जल पदादि हैं ॥ ३९ ॥

सीयस्वयंबर कथासुहाई ।सरितसुहावन सो छबिछाई १

नदीनाव बटुप्रश्न अनेका । केवट कुशल उतर स बिवेका २
सुनिअनु कथनपरस्परहोई । पथिकसमाज सोहसरिसोई ३
घोरधार भृगु नाथ रिसानी । घाट सबंधु राम बरबानी ४
सानुज राम बिवाह उछाहू । सोशुभ उमगसुखदसबकाहू ५
कहतसुनत हरषहिंपुलकाहीं । तेसुकृती मनमुदित नहाहीं ६
रामतिलक हितमंगल साजा । पर्बयोग जनु जुरासमाजा ७
काई कुमति केकई केरी । परी जासु फल बिपति घनेरी ८
दो० समन अमितउत पात सब भरतचरित जपयाग ।
कलि अघखल अवगुन कथन तेजलचर बककाग ४०॥

चले राम लक्ष्मण मुनि संगा ॥ यहां से लेकर ॥ रघुबर उर जयमाल । देखि देवबर्षहिं सुमन ॥ यहां पर्यंत जो अति मनोहर सीताके स्वयम्वर की कथाहै सो इसनदी पर सुहावनी छबिछाई है १ इसमें जो प्रश्न कर्ता के प्रश्नहैं सो नदीकी नाव हैं जैसे ॥ कहहुनाथ सुन्दर दोउ बालक ॥ मुनि कुल तिलक कि नृप कुल पालक ॥ सखि सब कौतुक देखन हारे ॥ जेउ कहावत हितू हमारे ॥ इत्यादि और उनका बिवेक समेत ॥ जो उत्तर है सोई परम प्रवीन केवट जानौ जैसे ॥ ये प्रिय सबहि जहां लगि प्राणी ॥ और तेज वन्त लघु गनिय न रानी ॥ इत्यादि २ और जो राम लक्ष्मण की सुन्दरता को जनक पुर बासी देखि सुनि कर घर घर अनुकथन करते हैं जैसे ॥ बरणत छबि जहं तहं सब लोगू । इत्यादि सोई इस नदी पर पथिक समाज है ३ महा उग्रजो परशुराम की रिसानि है जिसके भय से ॥ अपडर उतर देत नृप नाहीं ॥ सो इस नदी की घोर दुस्तर धार है तहां राम लक्ष्मण की निर्भयबाणी जैसे ॥ मिले न कतहुं सुभट रण गाढ़े ॥ और ॥ कालहु डरहिं न रण रघुबंशी ॥ इत्यादि सो इस नदी का सुन्दर घाट है ४ तीनों भाइयों समेत रामके बिवाह का उत्सव सो सुख दायक सबको नदी की उमग है ५ जो उस बिवाह के कहते सुनते हर षाते सो मानौं सुकृती जीव प्रसन्न मन नहाते हैं ६ रामके राज्या भिषेक के निमित्त जो मंगल साज है सोई मानो पर्व योगका समाज है ७ तहां केकई की कुमति काई जिसका फल सबको बिपत्ति के मूलका कारण है ॥ ८ ॥ दोहा तिस के निवारण का हेतु भरत का चरित्र जपयाग के समान है और कलियुग के पाप और खलों के अवगुणों का कथन ते अपावन जलचर दुष्ट पक्षी बक बायस के समान हैं ॥ ४० ॥

कीरति सरितछहू ऋतुरूरी । समयसुहावनि पावनिभूरी १
हिमहिमशैलसुताशिवब्याहू । शिशिरसुखदप्रभुजन्मउछाहू २

बरणव रामबिवाह समाजू । सोमुदमंगल मयऋतु राजू ३
ग्रीषमदुसह रामबन गवनू । पंथकथा खरआतप पवनू ४
बर्षा घोर निशाचर रारी । सुरकुलसालि सुमंगलकारी ५
राम राजसुख बिनयबड़ाई । बिसदसुखद सोशरदसुहाई ६
सतीशिरोमणिसियगुणगाथा । सोइगुणअमलअनूपमपाथा ७
भरतसुभाव सुशीतल ताई । सदाएक रस बरणिन जाई ८
दो० अवलोकनि बोलनि मिलनि प्रीति परस्पर हास ।
भायपभलि चहुं बंधुकी जल माधुरी सुवास ॥ ४१ ॥

यह कीर्ति सरिता छहू ऋतु में सुन्दर सुहावनि औ पवित्रही है कभी कुशोभित गदरी लीर जोवती और नदियों की नाईं नहीं होती है १ तहां प्रथम हिम ऋतु कहते हैं क्योंकि हिम ऋतुका प्रारंभ मार्ग शिर प्रथम माससे है इस क्रम से कि नारायण अपने केशवादि द्वादश नामते द्वादश महीनों के स्वामी और पञ्च द्वादश मास के महात्मों में प्रसिद्ध है यथा केशव मार्ग शिर १ नारायण पौष २ माधवमाघ ३ गोविन्द फाल्गुण ४ विष्णु चैत्र ५ मधुसूदन वैशाख ६ त्रिबिक्रमज्येष्ठ ७ बामनआषाढ़ ८ श्रीधर श्रावण ९ हृषीकेश भाद्रपद १० पद्मनाभ आश्विनि ११ दामोदरकार्तिक १२ ये हिमतें शरद पर्यंत के महीने हैं शिव पारवती के बिवाह में हिमाचल की कथा भी है तातें प्रथम हिमऋतु कही अर्थात् शिव पारवती के बिबाह की कथा हिम ऋतु है आगे प्रभुकी जन्मकी कथा सो सुखदायक शिशिर है २ फिरि राम बिवाह का समाज सो आनन्द मंगल रूप ऋतुराज वसंत है ३ महा दुःसह श्री रामकी बन यात्रा सो ग्रीष्म के समान है तहां मार्ग की कथा तीक्ष्ण आतप और पवन है ४ महा घोर राक्षसों की लराई ॥ मानहु मघा मेघ झरलाई ॥ सो बर्षा ऋतु देव कुल शालि की मंगलकारी है ५ राम राज के सुख और राजनीति की बड़ाई अति उज्वल सुहावनी शरद है ६ सती शिरोमणि सीता के सुन्दर औ चरणों की जो कथा है सो इस राम राज शरद की अनुपम जल में गुण औ निर्मलता है ७ भरत का शीतल सुभाव सो शरद के जलका मुख्य रस है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ चारौं भाइयों की परस्पर अवलोकनि बोलनि मिलनि और प्रीति हास भायप भक्ति सो शरद के जलका माधुर्य और सुगन्ध है ॥ ४१ ॥

आरतिबिनय दीनता मोरी । लघुता ललित सुबारिन थोरी १
अदभुत सलिलसुनतगुणकारी । आसपियास मनोमलहारी २
रामसुप्रेमहिं पोषत पानी । हरतसकलकलिकलुषगलानी ३

भवश्रम शोषकतोषकतोषा । समनदुरित दुखदारिददोषा ४
कामक्रोहमद मोह नशावन । बिमलबिबेक बिरागबढ़ावन ५
सादर मज्जन पान कियेतें । मिटहिंपाप परिताप हियेतें ६
जिनयहि बारिनमानसधोये । तेकायरकलिकाल बिगोये ७
तृषितनिरखिरबिकरभववारी । भ्रमहिंमृगाजिमिजिवदुखारी ८
दो० मति अनुहारि सुबारिबरगुणगण मनअन्हवाइ ।
सुमिरि भवानी शंकरहि कहकवि कथासुहाइ ॥४२॥

और मेरी अत्यन्त अरति और बिनती और दीनता से इस राम राज सुन्दर शरद के जलमें अति ललित लघुता कहें हलुकई गुण अधिक है अर्थात् जो जल हलुका होता है सो गुणकारी होता है १ फिर यह अदभुत जल है कि सुनतेही गुण करता है और संसार की दुरासा रूपी प्यास औरमनके बिकार को हरता है २ और सुन्दर राम प्रेमको पुष्ट करता है और कलियुग के समस्त पापों की ग्लानि को हरता है ३ फिरि यह राम सुयश रूपी जल भव श्रम कहें पुनरावृत्ति का शोषक और सन्तोष का भी तोषक है और दुरित कहें पाप और दुख रूपी दारिद्र के दोषों का नाशक है ४ काम क्रोध मद मोहादि कों को नाश करता है और निर्मल ज्ञान बैराग को बढ़ता है ५ प्रीति पूर्बक इसको स्नान पान करने से हृदय के पाप रूपी दारुण दाहमिट जाते हैं ६ जिन अभागोंने इस पावन राम सुयश जल करिके अपने मननही पबित्र किये ते महा क्रूर कलिकाल के मारे जानो ७ क्योंकि जो कोई या अमृत सरको छोड़ कर अन्यत्र अपनी आस पियास की सान्ति चाहता है सो दुर्बुद्धि जैसे अति प्यासा मृग जलको देखकर मृगों की सदृश महा दुखी भ्रमाही करता है ८ सर्व संमत यही है ॥ यो बासुदेवादन्यत्रमोक्षम्प्रार्थयतेऽल्पधी अनिभ्रांतिखद्योतमशीतत्राणायकल्पते १ वासुदेवंपरित्यज्ययोऽन्यदेवमुपासति तृषितोजान्हवीतीरेकूपंखनतिदुर्मतिः २ अविस्मितंतंपरिपूर्णकामंस्वेनैवलाभेन समंप्रशांतम् विनोपसर्पत्यपरंहिबालिशाः स्वलांगुलेनैप्रतितर्त्तिसिंधुं ३ अर्थात् रघुपति ॥ बिसुख यतन करि कोरी । कौन शके भव बंधन छोरी ॥ दोहा ॥ मतिके अनुहार इस सुन्दर उत्तम जलके गुण गणों में अपने मनको स्नान कराइ अर्थात् बुद्धिके अनुसार यासरके कछुक गुण कहकर और इस चरित्रके मुख्य श्रोता बक्ता भवानी शंकर को इसके आदि अंत मे स्मरण करिके में ग्रन्थकार अब सुन्दर कथा कहता हूं ॥ ४२ ॥ यह तीसरी चतुर्दशी हुई ॥

दो० अबरघुपति पदपंकरुह हियधरि पायप्रशाद ।
कहहुं युगल मुनि बर्यकरमिलन सुभग संबाद ॥

पूर्व श्री गुसांई तुलसी दास जीने चौपाइयों की तीनि चतुर्दशी में इस ग्रन्थ के

मंगलाचरण और भूमिका की पूर्वक्रिया यहां से कहते हैं कि अबतौ मैं श्री राम चन्द्रही के चरणकमलों को हृदयमें धारण करि उन्हीं की कृपा को पाकर दोनो मुनि बर्यकहें याज्ञवल्क्य भारद्वाज का यथा बिधि मिलाप और संबाद कहता हूं

भरद्वाज मुनिबसहिं प्रयागा।तिनहिरामपदअतिअनुरागा १
तापससम दमदयानिधाना । परमारथ पथ परमसुजाना २
माघमकर गतरबिजबहोई । तीरथ पतिहि आवसबकोई ३
देवदनुज किन्नरनर श्रेणी । सादर मज्जहिंसकल त्रिवेणी ४
पूजहिं माधवपद जलजाता । परषिअषय बटहरषहिंगाता ५
भरद्वाजआश्रम अतिपावन । परम रम्यमुनिबरमन भावन ६
तहांहोइमुनि ऋषय समाजा। जाहिंजे मज्जनतीरथ राजा ७
मज्जहिंप्रात समेतउछाहा । कहहिंपरस्पर हरिगुण गाहा ८

दो० ब्रह्म निरूपण धर्मविधि बरणहि तत्व बिभाग ।
कहहिं भक्ति भगवंतकी संयुतज्ञान बिराग ॥ ४३ ॥

भरद्वाज मुनि प्रयाग राज निवासी रहे और तिनको श्री रामचन्द्र के चरणों में अति प्रेम रहा १ बड़े तपस्वी समदम दयाके समुद्र और परमार्थ कहें ब्रह्मज्ञान अयोध्या कांडे॥ राम ब्रह्म परमारथ रूपा ॥ ता मार्गमें परमप्रबीनकहें परायण रहे २ सो जब माघमें मकरके सूर्य होतेहैं तब तहां देवता दैत्यादि और मनुष्य सभी आइके त्रिबेणी स्नान करते हैं ३।४ और माघ के स्वामी माधव के चरण कमल का पूजन करते हैं अक्षय बट का दर्शन करिके प्रसन्न होते हैं ५ तहां भरद्वाज मुनि के आश्रम में मुनीश्वरों का समाज होता है ७॥ तहां सूर्योदय काल में उत्साह समेत स्नान करिके भगवद्गुणानुबाद करते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ब्रह्म निरूपण वेदांत धर्म विधि स्मृति पुराण तत्व बिभाग सांख्यादि शास्त्र और ज्ञान बैराग समेत भगवद्भक्ति कहते हैं॥ ४३ ॥

यहि प्रकारभरिमकरनहाहीं।पुनिसबनिजनिजआश्रमजाहीं १
प्रतिसंबतअसहोइअनन्दा । मकरमज्जिगवनहिं मुनिवृन्दा २
एकवारभरि मकरनहाये । सबमुनीश आश्रमनिसि धाये ३
याज्ञबल्क्य मुनिपरमबिवेकी । भरद्वाजराखे पद टेकी ४
सादर चरणसरोज पखारे । अतिपुनीत आसन बैठारे ५
करिपूजामुनि सुयश बखानी । बोलेअति पुनीत मृदुबानी ६

नाथ एक संशय बड़ि मोरे । करतल वेदतत्व सबतोरे ७
कहतमोहि लागतिभयलाजा । जौनकहौंतो होइ अकाजा ८
दो० सन्त कहहिंआसि नीति प्रभुश्रुति पुराणपुनिगाव ।
होइ न बिमल बिवेकउर गुरुसन कियेदुराव ॥ ४४ ॥

इस प्रकार मकर के महीने भर कल्प बास करते हैं फिरि सब अपने अपने आश्रमको जातेहैं १ ऐसा आनन्द तहां संबत संबत प्रति होताहै २ एक बार मकर भरि के नहाये फिरि सब मुनीश्वर तो अपने अपने आश्रम को चले गये ३ इनमें महा भागवत प्रधान जो श्री याज्ञवल्क्य मुनि बर्य रहे तिनको भरद्वाज ने पद टेक के रक्खा अर्थात् प्रेम हठ करिके नही जाने दिया ४ बड़े आदर समेत उनके चरण कमल प्रच्छालन करिकेपरमपावन व्यासासन पर बिराजमानकिये ५ फिरि बिधिवत पूजन करिके और सुयश बड़ाई बखानि के अति पवित्र कोमल वाणी बोले ६ कि हे नाथ एकमेरे मनमें बड़ी संशय है और आपके समस्तवेदोंका तत्वकरतल गत हैक्योंकि गुह्य जो परमधर्महै उसकोजो भगवत्परायण महात्मा आपसारिखे जैसे जानते हैं तैसा और नहीं जानसक्ते हैं श्रीभागवते । नारायणपराविप्राः धर्मं गुह्यं परंविदुःकुरुणा साधवः शांतास्त्वद्विधान तथापरे ७ सो संशय कहते तो मेरेको बड़ी भय लगती है और लज्जा भी आती है औरजोनहीं कहता हूं तो अकाज होताहै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ क्योंकि संत जन एसी नीति कहते हैं और वेद पुराणादि में भी लिखा है कि गुरुसे छिपाव करनेसे निर्मल ज्ञान हृदय में नहीं होताहै ॥ ४४ ॥

असबिचारिप्रगटहुं निजमोहू । हरहुनाथ करिजनपरछोहू १
रामनाम करअमित प्रभावा । संत पुराण उपनिषदगावा २
संतत जपतशंभुअबिनाशी । शिवभगवान ज्ञान गुणराशी ३
आकर चारिजीवजगअहहीं । काशीमरत परम पद लहहीं ४
सोपि राममहिमा मुनिराया । शिव उपदेशकरतकरि दाया ५
रामकवन प्रभुपूछहुंतोही । कहहुबुझाय कृपा निधिमोही ६
एकराम अवधेशकुमारा । तिनकरसुयश बिदित संसारा ७
नारिबिरह दुखसहेउअपारा । भयउरोषरण रावण मारा ८
दो० प्रभुसोइराम किअपर कोउजाहि जपतत्रिपुरारि ।
सत्य धाम सर्बज्ञ तुमकहहु विवेकबिचारि ॥ ४५ ॥

ऐसा बिचारि कर अपने मोह अज्ञान को आपके सामने प्रगट करता हूं तिसको

हे नाथ दास पर वात्सल्य करिके निवारण कीजिये १ यहां तक दोनों मुनीश्वरों का मिलन प्रसंग हुआ अब यहां से प्रथम संवाद का प्रारंभ करते हैं तहां कथा की प्रथम प्रश्न राम पदसे प्रारंभ करके अंत्य में रामपदही पर इस ग्रन्थ रूपी महा रत्नको राम संपुट में रक्खा है अर्थात् । राम नाम कर अमित प्रभावा । सो । प्रिय लागहु मोहि राम । यह राम संपुट है या प्रकार श्री याज्ञ बल्क्य से प्रार्थना करिके भरद्वाज मुनि बोले कि महाराज मेरे यह बड़ी संशय है कि यह जो राम नामका अनन्त प्रभाव है जिसको नारदादि मुनि और पद्मादि पुराण और रामतापिन्यादि उपनिषद गाते हैं २ फिरि निरंतर जिसको समस्तज्ञान गुणों की राशि भगवान अबिनाशी शिव भी जपते हैं ३ और जो चारि खानि के जीव काशी में मरतेही भगवद्धाम पाते हैं ४ सो भी तो राम नामही की महिमा है कुछ काशी की नहीं क्योंकि परम कृपालु शिवजी राम तारक मंत्र दया करिके सबको उपदेश करते हैं ५ सो जिस राम नाम का एसा प्रभाव है उसका नामी राम कौन है यह मैं आपसे पूछता हूं सो आप मेरे से समुझाय करि कहिये ६ एक रामतो महराज दशरथ के पुत्र हैं उनका यशतो बिश्व बिख्यात है जिन्होंने सीताके बिरहके संतापसे रावण को मारा ॥ ७।८॥ दोहा ॥ हे महाराज सोई राम इस नाम के नामी हैं कि और कोऊ दूसरा है जिस के नाम को त्रिपुर मर्दन श्री शिवजी सदैव जपते हैं आपसत्य धाम सर्वज्ञ हैं सो बिचारिके कहैं ॥ ४५ ॥

जैसेमिटहि मोहभ्रमभारी । कहहुसो कथा नाथ बिस्तारी १
याज्ञबल्क्यबोले मुसुकाई । तुम्हहिं बिदित रघुपति प्रभुताई २
रामभक्त तुममन क्रमबाणी । चतुराई तुम्हारिमैंजानी ३
चाहहु सुने रामगुण गूढ़ा । कीन्हेंउ प्रश्न मनहुं अतिमूढ़ा ४
तात सुनहु सादरमनलाई । कहहुं राम की कथा सुहाई ५
महामोह महिशेष बिशाला । रामकथा कालिका कराला ६
रामकथा शशिकिरिणिसमाना।संतचकोर करहिंतिहि पाना ७
एसिहि संशय कीन्हिभवानी । महादेव तब कहा बखानी ८
दो० कहहुं सोमति अनुहारि अबउमा शंभु संवाद ।
भयउ समयजिहि हेतु जिहिसुनिमुनिमिटहिबिषाद ४६

सो जैसे उन्हीं राम की कथा को सुनकर मेरा यह महा भारी भ्रममिटै सो कथा आप बड़े बिस्तार से कहिये क्योंकि मेरी ऐसी तीब्र बुद्धि नहीं है जो मैं संछेप तें सुनकर समुझि जाऊं इस प्रकार इस समस्त कथा में भरद्वाज की एकही प्रश्न है जैसे भगवद्गीता में धृतराष्ट्र की संजय से एक प्रश्न है १ यह सुनकर याज्ञबल्क्य मंद

हास समेत बोले कि तुम रामचन्द्र की प्रभुता सब जानते हो २ क्योंकि तुम बाल्मीकि के मुख्य शिष्य हो और परम भागवत हो तुम पर क्या छिपा है यह केवल तुम्हारी चतुरई है मैंने जानली ३ अंतर अभिप्राय तो तुम्हारा राम के गूढ़ गुणों के सुनने का है सो प्रगट नहीं कहा भोरे बनकर अति अज्ञान की नाईं प्रश्न कीहै ४ जो तुम्हारा ऐसाही मनोरथ है तो हे तात अब तुम मन लगा कर सुनो मैं सुन्दर राम कथा उसके कारणों समेत कहताहूं ५ कि महा मोह अज्ञान जिसके मारे अज्ञ जीव भगवद्विमुख होकर सर्वथा भटके फिरते हैं तो प्रबल महिषासुर को यह राम कथा अति कराल कालिका है ६ और सन्त चकोरों के लिये तो चन्द्र किरण के समान अति मनोहर शीतल है ७ तुम्हारीही सी संशय जब श्री पार्वती ने करी तब महादेव जी ने जैसे उनसे कही ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सो उनका संबाद अपनी बुद्धि के अनुसार मैं तुमसे कहता हूं कि जिस समय हुआ और जिस कारण हुआ तिसको सुन कर हे मुनि सब बिषाद मिट जाते हैं ॥ ४६ ॥

एकबार त्रेतायुग माहीं । शंभु गये कुंभज ऋषि पाहीं १
संगसती जगजननि भवानी । पूजे ऋषि अखिलेश्वर जानी २
रामकथा मुनिबर्यबखानी । सुनी महेश परम सुख मानी ३
ऋषि पूछी हरिभक्तिसुहाई । कहीशंभु अधिकारी पाई ४
कहतसुनतरघुपतिगुणगाथा । कछुदिन तहां रहेगिरिनाथा ५
मुनि सनबिदामांगित्रिपुरारी । चलेभवनसंग दक्ष कुमारी ६
तिहिअवसर भंजनमहिभारा । हरिरघुबंश लीन्हअवतारा ७
पिताबचन तजिराज उदासी । दंडक वन बिचरतअबिनासी ८
दो० हृदय बिचारत जातहर किहिबिधि दरशन होइ ।
गुप्तरूप अबतरेउ प्रभु गये जानसबकोइ ॥ ४७ ॥

एकबार अर्थात् किसी कल्पके किसी त्रेतायुग में जग जननी कहें भगवत्पराशक्ति संभूता जगदंबिका दक्षात्मजा सती समेत श्रीशिवजी अगस्त्यमुनि के आश्रम को गये तहां ऋषि ने उनको बिस्वेस्वर जान कर यथा बिधि पूजन किया १ । २ और उनकी प्रसन्नता के लिये रामायण कथा बिस्तार पूर्वक बर्णन की सो शिवजी ने सती समेत श्रवण की ३ तो पीछे ऋषिने भगवद्भक्ति श्रीशिवजी से पूछी तब शिवजी ने उनको भक्ति का अधिकारी जानकर कही ४ इस प्रकार भगवद्गुणानुवाद कहते सुनते कुछ काल तहां निवास किया ५ फिर मुनि से बिदा मांगकर त्रिपुरांतक श्री शिवजी ने सती समेत कैलाश यात्रा की ६ उसी समय भूमि भार भंजन भगवान बिष्णु ने रघुकुल में अवतार लिया रहे ७ सो पिता के वचन ते राज्याभिषेक का त्याग करि हर्ष शोकर-

हित दंडकारण्य में बिचरते रहैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ यह जानकर शिवजी हृदय में
विचारते जाते हैं कि स्वामी तो अति समीप हैं परंतु दरशन कैसे होवे क्यों कि स्वा-
मी ने गुप्तरूप अवतार लिया है मेरे जाने से तो सब जान जाइंगे किये तो साक्षात्
बिष्णु हैं मनुष्य नहीं हैं ॥ ४० ॥

रावणमरणमनुज करयांचा । प्रभुबिधि बचनकीन्हचहैं सांचा १
जौनहिं जाउं रहै पछितावा । करतबिचार न बनत बनावा २
इहि बिधि भयउशोचबशईशा । तेहीसमय जाइ दशसीशा ३
लीन्ह नीचमारीचहि संगा । भयउतुरत सोइ कपटकुरंगा ४
करि छलमूढ़ हरीबैदेही । प्रभुप्रताप उरबिदित न तेही ॥ ५
मृगबधि बंधुसहितप्रभुआये । आश्रम देखिनयनजलछाये ६
बिरहबिकलनरइव रघुराई । खोजत बिपिन फिरतदोउभाई ७
सपनेहु योगबियोगन जाके । देखियत प्रगट दुसहदुखताके ८
दो० अति बिचित्र रघुपति चरित जानहिं परमसुजान ।
जे मतिमंद बिमोहबस हृदयधरहिं कछुआन ॥ ४८ ॥

रावण ने ब्रह्माजी से बरमांगा कि । हम काहूके मरहिं न मारे । बानर मनुज जा-
ति दुइबारे । सो ब्रह्मा जीका बरदान स्वामी सत्य किया चाहते हे इसलिये आपको
छिपाये हैं १ और जो नहीं जाता हूं तो पछिताव रहेगा इस प्रकार अनेक बिचार
शिवजी करते हैं कुछ बनाव नहीं बन पड़ता है २ इस प्रकार शिवजी तो शोच बस
पीछे हुये स्वामी ने बनाव पहिलेही से बना रक्खा कि उसी समय दश ग्रीव रावण
ने मारीच को मृग बनाकर छलसे सीता हरणकिया स्वामीका प्रताप हृदयमें उसको
बिदित नहीं रहा ३ । ४ । ५ मृग मारीच को मार कर लक्ष्मण समेत रामचन्द्र जब
आये तो आश्रम को जानकी हीन देखकर जलसे नेत्र भर लिये ६ और मनुष्यों की
नाई बिरह में व्याकुल से होकर सीता के खोज में बन के जड़ चेतन जीवों से
पूछते हुये फिरने लगे ७ देखो जिस बिश्व ब्यापक स्वामी को स्वप्न में भी किसी से
योग बियोग नहीं है तिसको यह दुःसह दुःख केवल प्राकृत नेत्र बिषय देखनेही को
है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ देखो हेमुनि अति बिचित्र श्री राम चरित्र हैं उनको यथार्थ परम
प्रवीन भगवज्जनही जानते हैं और जो अल्प बुद्धि अज्ञानी हैं सो हृदयमें और की
औरही धरते हैं जैसाइस ग्रन्थमें लिखा है । गिरिजा सुनहु रामकी लीला । सुरहित
दनुज बिमोहनि शीला । असि रघुपति लीला उरगारी । दनुज बिमोहनि जन सुखकारी ।
लोक दृष्टांत जैसे एकही पवन के वेग के स्पर्श से जलको शीतलता और अग्नि को

उपजाता होती ऐसेही राम चरित्र भगवज्जनों को भक्ति बिस्वास और भगवद्विमुखों को मोह और अनिश्चय के कारण होते हैं ॥ ४८ ॥

शंभुसमय तिहिं रामहिं देखा । उपजाहिय अति हर्षबिशेखा १
भरिलोचनछबि सिंधुनिहारी । कुसमय जानिनकीन्ह चिन्हारी २
जयसच्चिदानंद जगपावन । असकहिचले मनोजनशावन ३
चलेजातशिव सतीसमेता । पुनिपुनि पुलकित कृपा निकेता ४
सती सोदशा शंभुकी देखी । उरउपजा संदेह बिशेखी ५
शंकरजगत बंद्य जगदीशा । सुरनर मुनि सबनावत सीशा ६
तिन्हकोन्हेउ नृपसुतहि प्रणामा । कहिसच्चिदानंद परधामा ७
भयेमग्न छबितासु बिलोकी । अजहुं प्रीति उररहतिनरोकी ८
दो० ब्रह्मजो व्यापक बिरजअज अकलअनीह अभेद ।
सोकिदेह धरिहोइनर जाहिन जानतवेद ॥ ४९ ॥

शिवजी परम सुजान ने जो उसी नर नाट्य बिकलता में अपने इष्टदेव श्री रामचन्द्र को अपने मार्ग के निकट सीता के खोज में देखा तो अति बिशेष आनन्द हृदय में उत्पन्न हुआ । स्वामी की इच्छा के अनुकूल कुसमय जानकर कुछ चिन्हारि तो न की परम सौंदर्य सागर अति मनोहर दिव्य मंगल बिग्रह स्वामी का प्रेम पूर्वक नेत्रों भर कर देखा २ और जय सच्चिदानन्द जय जग पावन इस प्रकार बाणी मय प्रणाम करके चल दिये यहां मनोज नशावन नाम भविष्य चरित्र का कारण है ३ अब जो कृपानिकेत श्री शिवजी उस दर्शनानन्द में मग्न सती समेत चले जाते हैं तो बारंबार क्षण क्षणप्रति पुलकाय मान होते जाते हैं ४ सती ने जो यह दशा शिवकी देखी तो उनके हृदय में अत्यन्त संदेह हुआ ५ कि शिवजी तो जगत बंदनीय जगत के स्वामी हैं समस्त देवता मुनीश्वर मनुष्य इन्हींको प्रणाम करते हैं इन सबों में तो ऐसा कोई बिधि प्रपंच में नहीं है जिसको ये प्रणाम करैं ६ सो इनने एक राजकुमार को सच्चिदानन्द पर धाम कह कर प्रणाम किया ७ और तिसकी लावण्य मूर्तिको देखकर ऐसे मग्न होगये हैं कि अबतक उसकी प्रीति इनके हृदय में रोकने से भी नहीं रुकती है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इनका तो बंदनीय एक सच्चिदानन्द जगज्जन्मादि कारण ईश्वरही है दो स्वरूप तें एक गुण व्यापार रहित बिश्व व्यापक ब्रह्म दूसरा समस्त गुण निधान बिष्णु तहां जो ब्रह्म बिश्व व्यापक बिरज अनादि कलातीत गुण व्यापार और भेद रहित है सो भला देह धारण करिके काहे को मनुष्य होता है जिसकी महिमा के अंत्य वेदभी नही जानते ॥ ४९ ॥

बिष्णुजोसुरहितनरतनुधारी । सोउसर्वज्ञयथा त्रिपुरारी १
खोजहिसोकि अज्ञइवनारी । ज्ञानधाम श्रीपति असुरारी २
शंभुगिरा पुनि मृषा न होई । शिवसर्बज्ञ जानसब कोई ३
असिसंशय मनभयउअपारा । होइन हृदय प्रबोध प्रचारा ४
यद्यपि प्रगटनकहेउ भवानी । हरअन्तरयामी सबजानी ५
सुनहुसतीतवनारि सुभाऊ । संशयअसिनधरिय उरकाऊ ६
जासुकथा कुंभजऋषि गाई । भक्तिजासु मैं मुनहिं सुनाई ७
सोइ ममइष्टदेव रघुबीरा । सेवहिं जाहि सदा मुनिधीरा ८

और बात्सल्यादि गुण परि पूर्ण जगज्जन्मादि कारण बिष्णु जो देव कार्य परायण मनुष्यादि रूप धारक है सो भी सर्वज्ञ शिरोमणि है सामान्य सर्वज्ञ नहीं क्योंकि औरोंको सर्वज्ञता ध्यान अवस्थामें होती है ईश्वर स्वभावहीते सर्वज्ञ है १ भला सो क्या अज्ञानियों की नाईं बनके पशु पक्षियों से अपनी स्त्री को पूछता फिरै साक्षात् बिशुद्ध बिज्ञानको धाम श्रीपति देव बिरोधियोंका शत्रु २ और महादेवकी बाणी भी अन्यथा नही होसकती कि शिवजी आप सर्वज्ञ हैं संसार जानता है ३ इस प्रकार की संशय सती के मनमें अपार हुई बहुतेरा मनमें बिचार किया परंतु किसी भांति हृदय में बोधका प्रचार न हुआ ४ यद्यपि सतीने शिवजीसे कहा भी नही तथापि अहंकार रूप सर्वांतरयामी शिवसती का समस्त चेष्टित जानकर कृपा पूर्वक बोले ५ सुनो हे सती तुम्हारा स्त्रीका स्वभाव है ऐसो संशय हृदयमें कभी धरना न चाहिये ६ देखो जिस स्वामी की कथा अभी तुमने अगस्त्य मुनिसे सुनी और जिसकी भक्ति मैंने तुम्हारे सामुहें मुनिको सुनाई ७ सो रघुबीर मेरे इष्टदेव रहे हैं जिनकोमहा धीर मुनि सदा सेवत हैं ॥ ८ ॥

हरिगीतिछन्दः

मुनिधीरयोगी सिद्धसन्तत बिमलमन जिहि ध्यावहीं ।
कहिनेति निगम पुराण आगम जासु कीरति गावहीं ॥
सोइराम व्यापक ब्रह्म भुवन निकाय पति माया धनी ।
अवतरेउ अपनेभक्तहित निजतंत्र श्रीरघुकुल मणी ॥ १ ॥
सो० लागनउर उपदेश यद्यपि कहेउ शिव बारबहु ।
बोले बहुरिमहेश हरिमायाबलजानि जिय ॥ ५० ॥

मुनि धीर व्यास पराशरादि योगी कपिल लोमसादि सिद्ध शुक सनकादि बिशुद्ध मन जिस प्रभुको निरंतर ध्यावते हैं औरनिगम चारों वेद अठारहू पुराण छहूं शास वा समस्त तंत्र जिस स्वामी की अनन्त कीर्त्ति को नेति कहकर गावते हैं हे सती

सोई ये राम हैं और येई व्यापक ब्रह्म हैं येई अनन्त कोटि ब्रह्मांडों के समूहों के एकही पति स्वामी हैं और जिस माया के बसी भूत में ब्रह्मा इन्द्रादि देवता और समस्त विश्व मोहित है ता माया के येई पति अर्थात् माधव विष्णु हैं सो अपने भक्तों को सुलभता के कारण स्वेच्छा पूर्वक अवतरे हैं ये स्वामी सर्वेश्वर सुतंत्र रघु के मणि हैं किसी के परतंत्र नहीं हैं जैसा महा भारत में लिखा है । रुद्रंसमाश्रितादेवा रुद्रोब्रह्माणमाश्रितः ब्रह्माममाश्रितो नित्यं नाहंकश्चिदुपाश्रितः ॥ अर्थात् समस्त देवता तो रुद्र के आश्रित हैं और रुद्र ब्रह्मा के आश्रित हैं ब्रह्मा मेरे आश्रय है मैं स्वतंत्र हूं किसी के आश्रय नहीं तातें हे सती तुम इसमें कुछ संदेह मत करो मेरे सत्य बचन पर बिस्वास करो ॥ सोरठा ॥ यद्यपि शिवने कईबार सती को समझाया परंतु उनके हृदय में ज्ञान न लगा तब शिवजी हरिकी माया का बल बिचार फिरि ऐसे बोले ॥ यहां पचास चौपाइयों पर यह प्रथम हरि गीत छन्द हुआ ॥

जौ तुम्हरे मनअति संदेहू । तौकिनि जाइ परिक्षा लेहू १
तबलगि बैठअहौं बटछाहीं । जबलगि तुम आवहुमोहिपाहीं २
जैसैं जाइमोह भ्रम भारी । करहु सो यतन बिबेक बिचारी ३
चलीसती शिवआयसुपाई । करति बिचारकरहुं कासाई ४
उहांशंभु असमन अनुमाना । दक्षसुता करनाहिं कल्याना ५
मोरेहु कहेनसंशय जाहीं । बिधि बिपरीत भलाई नाहीं ६
होइहिसोइ जोरामरचिराखा । कोकरितर्क बढ़ावहि शाखा ७
असकहिलगे जपनहरिनामा । गईसती जहं प्रभुसुख धामा ८
दो० पुनिपुनि हृदयबिचार करि धरिसीता कररूप ।
आगेहुइचलि पंथतिहि जिहि आवत सुरभूप ॥ ५१ ॥

जो तुम्हारे मनमें अतिही संदेह है कि समुझाने से नहीं जाता है तो जाइके परीक्षा क्यों न लेआओ १ तब तक मैं यहां बटकी छांह में बैठाहूं जब तक तुमपरीक्षा लेकर मेरे पास लौटि आओगी २ जिस भांति तुम्हारा यह महा भारी मोह जातरहे सो यतन बिचारि कर करो ३ तबतौ सती शिवजीसे आज्ञा लेकर चलीं और बिचारती हैं कि अब कैसे परीक्षा करना चाहिये ४ उहां श्रीमहादेव ने यह बिचार किया कि इसमें सतीका कल्याण नहीं है ५ क्योंकि जो मेरे समुझाने पर भी इसका संशय नहीं जाता है तो कुछ दैवही बिपरीत है इसमें भलाई नहीं है ६ होइगा तो सोई जो कुछ राम किया चाहते हैं हमारे कौन तर्क करिके शाखा विस्तारकरै ७ ऐसा निश्चय करिके अपना राम भजन करने लगे इतने में सती जहां स्वामी आनन्द मंगल निवास चलेजाते हैं तहां पहुचीं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ फिर फिरि हृदयमें

बिचारि के सीता का रूप धारण करि उस मार्ग के सन्मुख चलीं जिस मार्ग से सर्बेश्वर स्वामी चले आते हैं ॥ ५१ ॥

लक्ष्मण देखिउमा कृतवेषा । चकितहृदय भ्रमभयेउबिशेषा १
कहिन सकतकछुअति गंभीरा । प्रभुप्रभावजानत मतिधीरा २
सतीकपट जानासुरस्वामी । समदरशी सबअंतरयामी ३
सुमिरत जाहिमिटै अज्ञाना । सोइसर्बज्ञ राम भगवाना ४
सतीकिन्हिचह तहां दुराऊ । देखहु नारि स्वभाव प्रभाऊ ५
निज माया बलहृदय बखानी । बोले बिहसि राममृदु बानी ६
जोरि पाणिप्रभु कीन्हप्रणामू । पितासमेत लीन्हनिजनामू ७
कहेउ बहोरिकहां वृषकेतू । बिपिन अकेलि फिरहुकिहिहेतू ८
दो० रामबचन मृदुगूढसुनि उपजा अति संकोच ।
सतीसभीत महेशपहं चलीहृदय बड़ शोच ॥ ५२ ॥

लक्ष्मण तो इस उमाकृत वेषको देखकर चकित हृदय होगये इसविशेष भ्रम से कि सीता प्राप्ति तो कल्पकल्प में रावण वधके पीछे होती है इस कल्प में अभी होने का स्वामी जाने कौन कारण है सतीकी बनावट कुछनहीं जानी क्योंकि जीव तो ध्यान अवस्था मेंही सर्बज्ञ होताहै स्वतः सर्बज्ञ तो ईश्वरही है १ तातें लक्ष्मणकुछ कह भी नहीं सकते क्योंकि अति गंभीर हैं और प्रभुके प्रभाव को जानते हैं बड़े मति धीरहैं २ सतीका कपट स्वतः सर्बज्ञ देव देवेश्वर श्री रामचन्द्र ने जाना क्योंकि समदरशी निरावर्ण खुले ढके के समान दृष्टा हैं और सबके अंतरयामी हैं ३ जिसका स्मरण करने से जीवों का अज्ञान नाश होता है ऐसे सर्बज्ञ राम भगवान हैं ४ सती तहां छिपाव किया चाहती देखौ स्त्रीके स्वभाव के प्रभाव को ५ तबतौराम चन्द्र अपनी माया के प्राबल्य गुणको हृदय में सराहि के और हंसिके सती से परम कोमल बाणी से बोले ६ प्रथम तौ हाथ जोरकर पिता समेत अपना नामोच्चारण करिके प्रणाम किया ७ और फिरि पूछा कि शिवजी कहां हैं आप इस बनमें अकेली किस कारण फिरती हो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसे रामचन्द्र के कोमल गूढाशय युक्त बचन सुनकर सतीको परम संकोच हुआ और अति भय युक्त बड़ा शोच करती हुई शिवजी के पास फिरि चलीं ॥ ५२ ॥

मैं शंकरकर कहा न माना । निज अज्ञान राम पर आना १
जाइ उतर अबदेहौं काहा । उर उपजा अति दारुण दाहा २
जाना राम सती दुखपावा । निजप्रभाव कछुप्रगट दिखावा ३

सतीदीख कौतुक मगजाता। आगेराम सहित सिय भ्राता ४
फिरि चितवा पाछे सोइ देखा। सहित बंधु सिय सुंदर वेषा ५
जहंचितवा तहंप्रभु आसीना। सेवहिं सिद्ध मुनीश प्रबीना ६
देखेशिव बिधि बिष्णु अनेका। अमित प्रभाव एक तें एका ७
बंदत चरण करत प्रभु सेवा। बिबिधि वेष देखे सब देवा ८
दो० सती बिधात्री इंदिरा देखीं अमित अनूप।
जिहिजिहि वेष अजादि सुर तिहितिहितनुअनुरूप॥५३

देखो मेरी जड़ता कि मैंने त्रिकालज्ञ सर्वदर्शी जगद्गुरु बिश्वनाथ अपने पति का उपदेश न माना अपना अज्ञान बिशुद्ध बिज्ञान घन श्री रामचन्द्र पर कल्पना किया १ सो अबमैं जाइ के स्वामी को क्या उत्तर देऊंगी यह हृदय में महा दारुण दाह उत्पन्न हुआ २ रामचद्र ने जाना कि सती ने दुख पाया तो अपना प्रभाव कुछ प्रत्यक्ष भी दिखाया ३ सतीने मार्ग चले जाते बड़ा कौतुक देखा कि रामचन्द्र सीता लक्ष्मण समेत आगें चले जाते हैं ४ यह देखकर फिर जो पीछे को लौट कर देखा तो सोई राम देखे लक्ष्मण सीता समेत सुन्दर वेष बनाये विराजते हैं ५ फिरि तौसती जहां जहां देखती हैं तहां तहां रामलक्ष्मण सीता समेत बिराजे हैं और बड़े बड़े सिद्ध मुनीश्वर सेवा कररहेहैं ६ और राम विग्रह प्रति शिव ब्रह्मा विष्णु अनेक देखे कि एकतें एकका प्रभाव अधिकहै ७ तौभी रामचन्द्रके चरणों को सबके सब अभिवंदन करते हैं और सेवा कररहे हैं और ते सब देवता औरही और रूपके देखे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ फिरि जैसे अनेक रूप के शिव ब्रह्मा बिष्णु इन्द्रादि देवता देखे तैसेही अनेक सतीं ब्रह्माणी लक्ष्मी इत्यादि भी देखीं जिस जिस वेष के भगवत्तनु ब्रह्मादि देव देखे तिसी तिसी तनु के योग्य उनकी शक्तैं भी देखीं ॥ ५३ ॥

देखेजहं तहं रघुपति जेते। शक्तिन सहित सकल सुर तेते १
जीव चराचर जे संसारा। देखे सकल अनेक प्रकारा २
पूजहिं प्रभुहि देवबहु वेषा। राम रूप दूसर नहिं देखा ३
अवलोके रघुपति बहु तेरे। सीता सहित सुवेस घनेरे ४
सोइरघुवर सोइलक्ष्मणसीता। देखिसती अतिभई सभीता ५
हृदयकंपतनसुधिकछुनाहीं। नयन मूंदि बैठीमगु माहीं ६
बहुरिबिलोकेउ नयन उघारी। कछुन दीख तहं दक्षकुमारी ७
पुनिपुनि नाइ रामपदसीशा। चली सती जहंरहे गिरीशा ८

दो० गईं समीप महेश तबहंसि पूछी कुशलात ।
लीन्हि परीक्षाकवन बिधि सत्य कहहुसबबात ॥ ५४॥

सो जहां जहां जितने रामरूप देखे उतनेहीं अपनी अपनी शक्तिन्ह समेत समस्त देवता भी देखे १ और संसार में जो चराचर जीव हैं सो भी अनेक प्रकार के देखे २ जो देवता कि प्रभुको पूजते हैं उनके तो अनेक वेष देखे परंतु रामका रूप और वेषको न देखा ३ सीता लक्ष्मण समेत सुन्दर जिनके वेष ऐसे राम रूप भी यद्यपि अनेक देखे ४ परंतु इनके रूप और भांति के न देखे तैसेई राम तैसेई लक्ष्मण सीता यह देखकर तो सती सभीत होगईं ५ हृदय में कम्पहो गया शरीर की कुछ संभार न रही नेत्र मूंदिकर मार्गही में भयभीत बैठ गईं ६ फिरि जो आंख खोलदेखा तो तहां सतीको कुछन दीखपड़ा ७ बारम्बार रामचन्द्रके चरणों को प्रणाम कर के जहां श्री शिवजी हैं तहां को सती चली गईं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जब निकट गईं तबतो शिवजीने हंसकर कुशल प्रश्न करिके पूछा कि तुमने कौन बिधि से परीक्षा लीन्ही सब वार्त्ता सत्य सत्य कहो ॥ ५४ ॥

सतीसमुझि रघुबीर प्रभाऊ । भयबसशिव सनकीन्ह दुराऊ १
कछुनपरीक्षा लीन्हि गुसांईं । कीन्हिं प्रणाम तुम्हारिहिंनाईं २
जो तुमकहा सो मृषान होई । मोरे मन प्रतीत अति सोई ३
तबशंकर देखेउ धरि ध्याना । सतीजो चरित कीन्हसबजाना ४
बहुरि राममायहि शिरनावा । प्रेरिसतिहि जिहिं झूठकहावा ५
हरि इच्छा भावी बलवाना । हृदय बिचारत शंभु सुजाना ६
सतीकीन्ह सीता करवेषा । शिवउर भयउबिषाद बिशेषा ७
जौअब करौंसतीसन प्रीती । मिटै भक्ति पथहोइ अनीती ८
दो० परमप्रियानहिं जाइ तजि किये प्रेम बड़पाप ।
प्रगटनकहत महेश कछुहृदयअधिक संताप ॥ ५५ ॥

सती को जो राम का प्रभाव देखकर भय रहा तो भयके वस शिवजी से छिपाव किया १ कि हे स्वामी मैंने कुछ परीक्षा नहीं ली आपहीं की नाईं प्रणाम करके चली आई २ क्योंकि जो कुछ आपने कहा सो झूंठ न होगा मेरे तो मनमें अत्यन्त उसी पर बिस्वास है ३ तबतो शिवजीने जो ध्यान धरिके देखा तो जो चरित्र सती ने परीक्षा लेने में किया रहै सो सब जान लिया ४ फिरि महा प्रबल भगवन्माया को प्रणाम किया कि जिसने अपनी प्राबल्यता से सती से भी झूंठ कहवाया ५ भगवत् इच्छा जो भावी हैं सो बलवान है यह शिवजी परम सुजान अपने हृदय में बिचारते हैं ६

सतीने जो सीताका वेष धारण किया सो समुझकर शिवजी के हृदय में बड़ा विषाद हुआ ७ कि जो अबमें सतीसे प्रीति करूं तौ मेरा भक्ति पंथनष्ट होजावे और बड़ी अनीति होवे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ परम प्रिया त्यागी तौ जाती नहीं और प्रेम करने से बड़ा पाप होता है प्रगट तौ शिव जी कुछ कहते नहीं हैं परंतु हृदय में बड़ा दाह है ॥ ५५ ॥

तबहिंशंभु हरिपद शिरनावा । सुमिरतराम हृदयअसआवा१
यहितनु सतिहिभेटमोहिंनाहीं ।शिव संकल्पकीन्हमनमाहीं२
असबिचारि शंकरमति धीरा । चलेभवन सुमिरत रघुबीरा ३
चलतगगन भइगिरा सुहाई । जयमहेश भलिभक्ति दृढ़ाई ४
असप्रण तुमबिनुकरैको आना ।राम भक्त समरथ भगवाना ५
सुनि नभगिरा सतिउरशोचा ।पूंछा शिवहि समेत सकोचा ६
कीन्हकवन प्रणकहहु कृपाला । सत्यधाम प्रभुदीनदयाला ७
यदपिसती पूंछा बहुभांती । तदपि न कहेउ त्रिपुर आराती ८
दो० सती हृदय अनुमान किय सब जाना सर्वज्ञ ।
कीन्हकपट मैं शंभुसन नारि सहज जड़अज्ञ ॥ ५६ ॥

तब तौ शिवजी ने इस शोच संताप में व्याकुल होकर जो प्रभुके चरणों को शिर नवाया तो रामके स्पर्श करतेही यह ज्ञान हृदय में आगया १ कि इस शरीर से सतीने सीता का रूप रक्खा है सो अब इस शरीर सती कैसे मेरे को भेंट होना उचित नहीं है यह संकल्प शिवजीने अपने मनहीं में कर दिया २ और प्रभुका धन्यवाद करते हुये अपने स्थान को चले ३ तो चलतेही मार्ग में देवबाणी हुई कि जय शिव जय शिव तुमने भक्ति मारग को अच्छा दृढ़ कर दिखाया ४ ऐसा दुस्तर प्रण तुम्हारे बिना और कौन दूसरा कर सक्ता है यह तुम्हारीही सामर्थ्य है क्योंकि तुम राम भक्तों में अति समर्थ शिरोमणि भगवान हो अर्थात् भगवदात्माहो ५ ऐसी देव बाणीके सुनतेही सतीके मनमें बड़ा शोच हुआ और शिवजीसे संकोच समेत पूंछा ६ किहे स्वामी आपने कौनसा संकल्प किया है सो दासी से तौ कहिये आप तौ सत्यधाम और दीनदयालु हैं ७ यदपि सतीने अनेक भांति से पूंछा तथापि त्रिपुर मर्दन शिवजीने कुछभी न कहा ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तबतौ सतीने भी ध्यान करिके जो देखा तौ सब जान लिया क्योंकि सर्वज्ञ है पछिताने लगी कि देखो मैंने शिव जीसे कपट किया याही तें स्त्री सहज जड अज्ञ कही गई है ॥ ५६ ॥

हृदयशोच समुझतनिजकरणी । चिंता अमितजाइनहिंबरणी१

कृपासिंधु शिवपरम अगाधा। प्रगटनकहेउ मोर अपराधा २
शंकर रुखअवलोकिभवानी। प्रभुमोहिंतजेउहृदयअकुलानी ३
निजअघसमुझि न कछुकहिजाई। तपै अवाइवउरअधिकाई ४
सतिहि ससोच जानि वृषकेतू। कहेउ कथा सुंदर सुख हेतू ५
बरनतपंथ विविधि इतिहासा। विश्वनाथ पहुंचे कैलासा ६
तहंपुनि शंभु समुझि प्रणआपन। बैठेबटतर करि कमलासन ७
शंकर सहज स्वरूप संवारा। लागि समाधि अखंड अपारा ८
दो० सती बसहिं कैलासतबअधिक शोच मन माहिं।
मर्म न कोउ जानकछु युग सम दिवस सिराहिं॥ ५७॥

अबतौ सतीके हृदय में अपनी करनी समुझते बड़ा शोच उत्पन्न हुआ और अपार चिन्ता हुई १ देखौ कृपा सिंधु शिवजी बड़े गम्भीर ने मेरे अपराध को प्रगट नहीं कहा २ शिवजीका मुख देखकर सती ने जाना कि स्वामी ने मेरा त्याग कियाअति व्याकुल हो गई ३ अपना अपराध समुझकर कुछ कहा तौ जाता नहीं है कुम्हारके आवेकी नांई हृदय भीतरही भीतर तपता है ४ तबतौ परम कृपालु शिव जी सती को शोच संकुल देखकर उनको प्रसन्नता के लिये सुन्दर कथा कहने लगे ५ इस प्रकार मार्ग में अनेक भांति के इतिहास कहते कहते विश्वनाथ कैलाश पर पहुंचे ६ तहां शिवजी अपना प्रण समुझिकर बट छाया में कमलासन करिके बैठे ७ और अपने स्वस्वरूप में अवस्थित हुये ताकरिके अपार अखंड समाधि युक्त हुये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ अब सती कैलाश पर बास करती है परंतु दिन दिन शोच मनमें बढ़ताही जाता है यह भेद तौ कोई नहीं जानता है सती को एक एक दिन युग के समान बीतता है ॥ ५८ ॥

नितनव शोचसती उरभारा। कबपैहौं दुख सागर पारा १
मैंजोकीन्ह रघुपति अपमाना। पुनिपति बचन मृषाकरिजाना २
सोफल मोहिं विधाता दीन्हा। जोकछु उचितरहा सोकीन्हा ३
अबविधि असबूझियेन तोही। शंकर विमुख जिवावहुमोही ४
कहिनजाइ कछु हृदयगलानी। मनमहं रामहिं सुमरि सयानी ५
जौंप्रभु दीनदयालु कहावा। आरति हरण वेदयश गावा ६
तौमैं विनय करौं कर जोरी। छूटहु वेगि देह यह मोरी ७
जौंमोरे शिवचरण सनेहू। मन क्रम वचन सत्यब्रत एहु ८

दो० तौसम दरसी सुनहुंप्रभु करहु सो बेगि उपाइ ।
होइ मरण जिहि बिनाहि श्रम दुःसह विपति विहाइ ५८ ॥

नित्य नवीन यह शोच सती के हृदय पर बोझसा पड़ा है कि हे दैव इस दुःख के समुद्र का पार कब मैं पाऊंगी १ मैंने जो श्री रामचन्द्रका अपमान किया और सत्य सिंधु अपने पतिका वचन झूंठ जाना २ उसका फल हे दैव यह जो तूने मेरे को दिया सो तो जो उचित रहै सोई किया ३ परंतु हे विधि अब यह तेरेको उचित नहीं है कि शिवतें बिमुख मेरे को जिवावता है ४ इस प्रकार जैसी कुछ सती के मनमें ग्लानि है सो कही नहीं जाती है जब कोई उपाय इस दुःख के छूटनेका न देखा तब तो अकिंचिन अर्थात् उपाय रहित होकर मनमें रामही का स्मर्ण किया याहीते सयानी पद दिया ॥ रामं भजहिंते चतुर नर ५ कि हे प्रभु जो आप दीनदयालु कहावते हो और आरति हरण आपका यश वेद गावते हैं ६ तोमैं हाथ जोरिकर आपसे विनती करती हूं कि शीघ्रही मेरी यह देह छूटजावै ७ जो मेरे मनमें शिवके चरणों का स्नेह हो और तन मन वचन करिके यही मेरा सत्य ब्रत होवै ८ ॥ दोहा ॥ तो सुनो हे समदरशी प्रभु कि आप बेगिही सो उपाय करें कि जिससे बिनाहीं श्रम मेरा मरण होजावै जिससे यह दुःसह विपति मेरी नाश हो जावै ॥ ५८ ॥

यहिविधिदुखितप्रजेशकुमारी । अकथनीयदारुणदुखभारी १
बीते संवत सहस सताशी । तजी समाधि शंभु अविनाशी २
रामनाम शिव सुमिरनलागे । जाने सती जगतपति जागे ३
जाइ शंभुपद वंदन कीन्हा । सन्मुख शंकर आसन दीन्हा ४
लगेकहनहरिकथा रसाला । दक्षप्रजेशभयउतिहि काला ५
देखाविधिविचारिसबलायक ।दक्षहि कीन्हप्रजापतिनायक ६
बडअधिकार दक्ष जबपावा । अतिअभिमानहृदयतबआवा ७
नहिंकोउअसजन्मेउजगमाहीं । प्रभुतापाइ जाहिमदनाहीं ८
दो० दक्ष लिये मुनि बोलि सब करै लाग बड़ याग ।
निवते सादर सकल सुर जे पावत मख भाग ॥ ५९ ॥

इस प्रकार महा दुखित है प्रजेश प्रजापति दक्ष कुमारी कि जिसका महाभारी दारुण दुख कहने योग्यही नहीं है १ ऐसे महा दुःख सहते जब सतासी सहस्र संवत बीते भगवत शरणागति करी तब अविनाशी श्री शिवजीने समाधि का त्याग किया २ जब श्री शिवने राम नाम का स्मर्ण किया तब सतीने शिव जी जगत के

स्वामी जगे जाने ३ समीप जाकर शिव जी के चरणारबिंदों का अभिबंदन किया शिव जीने अपने सामुहें बैठने को आसन दिया ४ और सुंदर सुंदर भगवत कथा कहने लगे उसीकाल में सती का पिता ब्रह्मा का पुत्र दक्ष सब प्रजापतियों का अधिपति हुआ ५ क्योंकि जब ब्रह्माने उसको विचारि के समस्त कार्य योग्य देखि लिया तब उसको समस्त प्रजापतियों का नायक करदिया ६ जब ऐसा बड़ा अधिकार दक्ष ने पाया तबतो अत्यन्त अभिमान उसके हृदय में आया ७ क्योंकि प्रभुता का स्वभावही अभिमान है कोई ऐसा संसार में नहीं जन्मा कि जिसको प्रभुता पाकर मद न हुआ हो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तब तो दक्ष ने मायापुरी हरिद्वार कणखल बीच में श्री भागीरथी गंगा के तट एक बड़ा यज्ञ करने के लिये समस्त मुनीश्वर बुलाये और जो देवता यज्ञ में भागाधिकारी हैं उन सबका आदर समेत निमंत्रण किया ॥ ५९ ॥

किन्नर नाग सिद्ध गंधर्बा । बधुन समेत चले सुरसर्बा १
बिष्णु विरंचि महेशबिहाई । चले सकल सुरयान बनाई २
सती बिलोके व्योम विमाना । जातचले सुंदर बिधि नाना ३
सुरसुंदरी करहिं कलगाना । सुनतश्रवण छूटहिंमुनिध्याना ४
पूछेउ शिवतब कहेउबखानी।पिता यज्ञसुनि कछुहरषानी ५
जोमहेश मोहिं आयसु देहीं।कछुदिनजाइरहौं मिसु येहीं ६
पतिपरित्याग हृदयदुख भारी। कहैन निज अपराध बिचारी ७
बोली सती मनोहरवाणी। भयसंकोच प्रेम रस सानी ८
दो० पिता भवनउत्सव परम जौं प्रभुआयसु होइ ।
तौमैंजाउं कृपायतन सादर देखन सोइ ॥ ६० ॥

दक्ष प्रजापति के निमंत्रित संपूर्ण किन्नर गन्धर्व नाग सिद्धचारण यक्ष रक्ष देवजाति अपनी२स्त्रियों समेत यज्ञशाला को चलते हुये १ भगवान बिष्णु ब्रह्मा शिव इनको छोड़कर और तौ सभी देवता अपने अपने बिमान बनाकर चले यद्यपि निमंत्रण तौ ब्रह्माबिष्णु का भी एक शिवही को छोड़कर किया रहै परंतु शिवका निरादर समुझ कर ये भी नहींगये २ सतीने जो अकाश में सुन्दर नाना प्रकार के देव बिमान चले जाते देखे ३ जिनपर देव बधू सुन्दर गानकरती जाती हैं जिसके सुनते मुनीश्वरों के ध्यान छूटते हैं ४ तौ शिवजी से पूछा तब उन्होंने दक्ष यज्ञका प्रारंभ. कहा तबतौ सती पिता का यज्ञ सुनिकर कुछ हरषित हुई ५ कि जो स्वामी मेरे को आज्ञा देवें तौ भला इसी ओखे से कुछ दिन पिता के घर रह आऊं ६ क्योंकि पतिके परित्याग का हृदय में महा भारी दुःखहै सोतौ अपना अपराध समुझ कर

कछु नहीं सक्ती है ७ यह आज्ञा पाकर अति मनोहर बाणी भय और संकोच और प्रेम रसकी भरी हुई शिवजीसे बोलीं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ किहे स्वामी देखो कि मेरेपिता के घर ऐसा बड़ा उत्सव होरहा है सो हे कृपा यतन स्वामी जो आप कृपा करिके आज्ञाकरें तोमें भी बड़ी अभिलाषा से उसके देखने को जाऊं ॥ ६० ॥

कहेउ नकिमोरेहुमनभावा । यह अनुचित नहिंनिवत पठावा १
दक्षसकल निजसुताबुलाईं । हमरे वयर तुमहिंबिसराईं २
ब्रह्मसभा हमसन दुखमाना। तातें अजहुं करहिं अपमाना ३
जौबिनु बोलें जाहुभवानी । रहै न शील सनेह न कानी ४
यदपिमित्र प्रभुपितुगुरुगेहा । जाइय बिनुबोलेहुंन संदेहा ५
तदपि विरोध मानजहंकोई । तहां गयेकल्याण न होई ६
भांतिअनेक शंभुसमुझावा । भावी बस न ज्ञानउर आवा ७
कहप्रभुजाहु जौबिनहिं बुलायें । नहिंभलि बात हमारेभायें ८
दो० करिदेखा हरयतन बहु रहय न दक्षकुमारि ।
दियेमुख्य गणसंग तब बिदा कीन्ह त्रिपुरारि ॥६१॥

उसके उत्तर में शिवजी बोले कि तुमने अच्छा कहा मेरेभी मनमें भागया परंतु यह बड़ा अनुचित है कि तुम्हारे पिता ने तुमको निमंत्रणनहीं भेजा १ दक्षने और जो अपनी तेरह बेटी हैं सो सब बुलाई हैं हमारे वयरभाव से एकतुमहीं बिसराई हो २ आगे तुम्हारे पिता ब्रह्माकी सभा में हमसे दुख मानि गये हें तातें अब तक हमारा अपमानहीं किये जाते हैं ३ सो जो तुम बिना बुलाई जाओगी हे सती तो तुम्हारा शील स्नेह कानि कुछ न रहैगा अपमानही होगा ४ यद्यपि अपने मित्र और स्वामी और पिता और गुरू के घर बिना बुलाये भी निःसंदेह जाना चाहिये अर्थात् उचित है तथापि जहां इनमेंसे भी जो कोई विरोधमानता होवै तहां जाने में भला नहीं होताहै ६ इस प्रकार शिवजीने सतीको अनेक भांति से बहुतेरा समुझाया परंतु भावी के बस कुछ भी ज्ञान उनके हृदय में न आया ७ फिरभी शिव जीनेकहा कि जो तुम बिनाहीं बुलाये जाती हो तो यह बात हमारे जान में कुछ भली नहीं है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इस प्रकार बहुतेरा शिवजी कहि हारे जब सती किसी प्रकार रहेहीं नहीं चलने पर उपस्थित ही होगई तबतो शिवजी ने कुछ अपने मुख्य २ गण संग देकर उनको बिदा किया ॥ ६१ ॥

पिता भवन जब गईभवानी । दक्ष त्रास काहुन सनमानी १
सादर भलेहि मिलीएकमाता।भगनी मिलीं सहित मुसुकातार

दक्ष न कछुपूछी कुशलाता। सतिहि बिलोकि जरे सब गाता ३
सती जाइदेखेउसब जागा। कतहुं न दीख शंभु कर भागा ४
तब चितचढ़ेउजोशंकरकहेऊ।प्रभुअपमान समुझि उर दहेउ ५
पाछिलदुखनहृदयअसव्यापा। जस यहभयउमहापरितापा ६
यद्यपि जगदारुण दुखनाना। सबतें कठिन जातिअपमाना ७
समुझिसोसतीभयेउअतिक्रोधा।बहुबिधिजननीकीन्हप्रबोधा ८
दो० शिव अपमाननजाइ सहि हृदयन होत प्रबोध।
सकलसभहि हठिहटकितब बोली बचन सक्रोध॥ ६२॥

जब पिता के घर सती पहुंची तौ दक्षके डरके मारे किसी ने सनमान आउ आदर न किया १ आदर समेत भले भाव करिके एक माताही तौ मिली और भगनी जो मिलीं सो भी मुसुकानि समेत ही मिलीं २ और दक्षने तौ कुशल भी न पूछी किंतु सती को देखिकर संपूर्ण अंग उसके जरने लगे ३ जब सतीने जाकर संपूर्ण यज्ञशाला को देखा और कहीं भी श्री शिवजी का भाग न दीख पड़ा ४ तबजो कुछकि शिवजी ने कहा रहे सो चित्तमें समागया और अपने स्वामी का अपमान समुझ कर हृदय जरने लगा ५ पति के परित्याग का पछिला दुख ऐसा हृदय में न व्यापा रहे जैसा कुछ यह महा दारुण दाह हुआ ६ यद्यपि संसार में एक तें एक अनेक प्रकार के दारुण दुख भी हैं परंतु सबतें महा कठिन असह्य जैसा कुछ जाति के अपमानका होता है तैसा दूसरा असह्य नहीं होता है ७ सो समुझिकर सतीके हृदय में अत्यन्त क्रोध उत्पन्न हुआ तहां उनकी माता ने अनेक प्रकार करिकै उनको समुझाया भी॥ ८॥ दोहा॥ परंतु शिवजीका अपमान अति असह्य न सहा गया और माताके समुझाने परभी कुछ प्रबोध न हुआ तबतौ संपूर्ण सभाको हठ पूर्बक यज्ञकर्म से रोकिकर क्रोध समेत महा दारुण शाप रूप बचन बोलीं॥ ६२॥

सुनहुंसभासद सकलमुनिंदा। कहीसुनी जिन्ह शंकरनिंदा १
सोफलतुरतलहब सबकाहू। भलीभांति पछिताबपिताहू २
संत शंभु श्रीपति अपवादा। सुनिये जहंतहं असि मर्य्यादा ३
काटै जीह जो तासु बसाई। श्रवण मूंदि नतौ चलै पराई ४
जगदातमा महेश पुरारी। जगत जनक सबके हितकारी ५
पिता मंद मति निंदत तेही। दक्ष शुक्र संभव यह देही ६
तजिहौं तुरत देह तिहि हेतू। उर धरि चंद्र मौलि वृषकेतू ७

असकहियोग अग्नि तनुजारा। भयेउ सकल मखहाहाकारा ८
दो० सती मरण सुनि शंभुगण लगे करन मखखीश।
यज्ञ विध्वंस विलोकि भृगु रक्षा कीन्हि मुनीश ६३ ॥

कि हे सभाधिकारी और हे मुनीश्वरों तुम सब मेरे वचन सुनो कि जिन्हों ने पूर्व ब्रह्म सभा में श्री शंकर स्वामी की निन्दाकरी और सुनी है सो उसका यथा योग फल सबको अभी प्राप्त होजावेगा और मेरा पिता भी भलीभांति से पछितावेगा १। २ क्योंकि महत्पुरुषों की बांधी हुई यह मर्य्याद है कि जहां संत भगवत्जन और जगद्गुरु श्री शंभु महादेव और श्रीपति सर्वेश्वर भगवान विष्णु अर्थात् भगवत् भागवत आचार्य इनकी निन्दा जहां जिस दुष्ट के मुख से सुनी जावै जो श्रोता समर्थ होतो उस निन्दक दुष्ट की जिह्वा छेदन करै असमर्थहो तो न सुनै कानो में उंगली देकर उठि जावै जो कि दक्ष मेरा पिता है मैं इसको मार नहीं सक्ती और मैं असमर्थ भी नहीं कि इसको दंड बिना दिये रहूं इस कारण मैंने इसको यह दुरत्यय वाक् दंड दिया ३। ४ और सब सुनो कि जगत के आत्मा बड़ों के बड़े त्रिपुरान्तक जगत के पिता सब जीवों के कल्याण परायण को यह मति मंद मेरा पिता निन्दन करता है और इसके वीर्य से इस मेरे शरीर की उत्पत्ति है इस कारण इस शरीर का भी मैं अभी त्याग करूंगी अपने हृदय में चंद्र शेखर वृषभध्वज श्री शिवजी को धारण करिके ५। ६। ७ ऐसे कहकर योगाग्नि से उस शरीर को भस्म कर दिया समस्त यज्ञमें हाहाकार शब्द हुआ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सती का मरना सुनतेही शिवजी के गण उस यज्ञको खीस करनेलगे तब तो यज्ञ विध्वन्स देखि कर महामुनीश्वर भृगु ने उन रुद्र गणों को हटाकर रक्षा करली ॥ ६३ ॥

समाचार जब शंकर पाये। बीरभद्र करि कोप पठाये १
यज्ञबिध्वंसजाइतिन्हकीन्हा। सकलसुरन्हबिधिवतफलदीन्हा २
भइ जगविदित दक्षगतिसोई। जसिकछु शंभु बिमुखकीहोई ३
यह इतिहास सकलजगजाना। तातें मैं संक्षेप वखाना ४
सती मरतहरि सनवर मांगा। जन्म जन्म शिवपद अनुरागा ५
तिहिकारण हिमगिरिगृहजाई। जन्मी पारबती तनु पाई ६
जबतें उमा शैल गृह जाई। सकल सिद्धि संपति तहं छाई ७
जहंतहंमुनिन सुआश्रमकीन्हे। उचित वासहिमभूधरदीन्हे ८
दो० सदासुमन फल सहित सब द्रुमनव नाना जाति।
प्रगटींसुन्दरशैल पर मणिआकर बहु भांति ॥ ६४ ॥

जब भृगु मुनि के मारेहुये अपने गणों के मुखसे ये संपूर्ण समाचार श्री शिवजीने पाये तबतौ बड़ा कोप करिके महा भैरव बीरभद्रको कैलाश से हरिद्वार को भेजा १ तहां उन्होंने जाकर समस्त यज्ञका बिध्वन्स करदिया और संपूर्ण सभा सदोंको यथा योग्य फल प्राप्त किया २ और दक्षकी तौ सोई गति हुई जो जग बिख्यात शिव द्रोहियों की होती आई है अर्थात् उनका शिर मरोर कर तोरलिया और बलि पशु के स्थान यज्ञके अग्नि कुण्डमें होमि दिया ३ यह इतिहास संसार में सबका जाना हुआ है इस कारण मैंने संक्षेपही कहा ४ सतीने देह त्याग समय भगवान से जन्म जन्म शिवही के चरण में प्रेमबर मांगा रहै ५ ता कारण हिमाचल के यहां पारबती शरीर पाकर जन्मती हुई ६ जिसदिनसे उमा उस परबतके घरमें जाई कहे जन्मी उसी दिनसे संपूर्ण सिद्धैं और संपतें उस परबत पर छागईं७ जहां तहां अर्थात् सर्वत्र उस परबत को सिद्धि पीठ जानकर बड़े बड़े मुनीश्वरों ने अपने अपने आश्रम बन लिये और हिमाचल ने भी उनके रहने के उचित उनको निवास दिये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ पारवती के जन्मके प्रभाव से नाना प्रकार के जो उस परवत के वृक्ष हैं सो सदैव सुन्दर नवीन पत्र पुष्पफलों से संपन्न रहते हैं और अनेक भांतिकी सुन्दर मणि गणों की आकरैं उसपरवत पर सर्वत्र प्रगट होगईं ॥ ६४ ॥

सरितासब पुनीतजलबहहीं । खगमृग मधुपसुखीसब रहहीं १
सहजवैर सबजीवनत्यागा । गिरिपर सकलकरहिंअनुरागा २
सोह शैल गिरिजागृहआयें । जिमि नर राम भक्तिके पायें ३
नित नूतन मंगल गृह तासू । ब्रह्मादिक गावहिं यशजासू ४
नारद समाचार सब पाये । कौतुकहीं गिरि गेह सिधाये ५
शैलराज बड़ आदरकीन्हा । पद पखारि बर आसन दीन्हा ६
नारिसहितमुनिपदशिरनावा । चरणसलिलसबभवनसिंचावा ७
निजसौभाग्यबहुतगिरिवरणा । सुता बोलिमेली मुनि चरणा ८
दो० त्रिकालज्ञ सर्वज्ञ तुम गति सर्वत्र तुम्हारि ।
कहहुसुताके दोष गुण मुनि बर हृदय बिचारि ॥ ६५ ॥

और समस्त हिमालय की नदी अर्थात् भागीरथी मंदाकिनी अलकनन्दा यमुना शेषगंगा स्वर्णगंगा बिष्णुगंगा रामगंगा व्यास गङ्गा कर्णगंगा नन्दगंगा गरुड़गंगा बीरगंगा पातालगंगा कौशल्या तुंगभद्रा इत्यादि सब निर्मल मधुर शीतल पथ्य पुण्यक हैं पापापापहारी जलसेबहती हैं और उहांके पक्षी मृग भ्रमरादिक सब सदा सुखी रहते हैं १ और समस्त जीव अपना अपना स्वाभाविक वैरभी छोड़ परस्पर प्रेम करते हैं २ पारवतीके जन्म होने से हिमाचल कैसा सोहता है जैसे मनुष्यको शोभा भगवद्भक्ति

के पाने से होतीहै अर्थात् मनुष्य शरीर की शोभा तौ भगवत्भक्तिही है नहीं तौ इस सर्वोत्तम शरीरको लजावनाही है॥ स्वपचोपि महीपाल विष्णु भक्तोद्विजाधिकः विष्णु भक्तिविहीनस्तु द्विजोपिस्वपचाधमः॥ जिस जगदम्बिका का यश ब्रह्मादिक गावते हैं उसके मंदिर में तौ नित्त नवीन मंगल होना उचितही है ४ देवर्षि वर्य श्रीनारद ने जोये समाचार पाये तो साधारणही हिमाचल के घर चले गये ५ शैल राज हिमाचल ने बड़ा आदर किया और उनके चरण प्रच्छालन करिके सुन्दर आसन दिया ६ और अपनी राणी मयना समेत दण्डवत किया और उनके चरणोंदक से अपना सब घर पवित्र किया ७ फिरि अपने भाग्य की प्रशंसा करिके पारबती को उनके चरणों पर रक्खा और कहा॥ ८॥ दोहा॥ कि महाराज आप त्रिकालज्ञ सर्वज्ञ हैं और आपकी समस्त विश्व और वियवों में गति है सो इस मेरी कन्या के गुणदोष बिचारि के कहिये॥ ६५॥

कहमुनिबिहसिगूढ़मृदुबानी। सुतातुम्हारि सकलगुणखानी १
सुन्दरिसहज सुशील सयानी। नाम उमा अंबिकाभवानी २
सबलक्षण सम्पन्न कुमारी। होइहि संतत पतिहि पियारी ३
सदाअचल यहिकरअहिवाता। यहितेंयशपैहहिं पितुमाता ४
होइहि पूज्यसकल जगमाहीं। यहि सेवत कछु दुर्लभ नाहीं ५
यहिकरनामसुमिरिसंसारा। तियचढ़िहहिंपतिव्रतअसिधारा ६
शैलसुलक्षणि सुतातुम्हारी। सुनहुंजोअवगुण अबद्वयचारी ७
अगुणअमान मातुपितु हीना। उदासीन सब संशय क्षीना ८
दो० योगी जटिल अकाम मननग्न अमंगल वेष।
असस्वामी यहिकहंमिलिहि परीहस्तअसिरेष॥६६॥

तबतौ नारद जी पारबती के वृत्तांत को छिपाकर गूढ़ कोमल बाणी से हंसिकर कहा कि हे गिरिराज यह तुम्हारी बेटी तौ समस्त गुणों की खानि है १ परमसुन्दरी और स्वभावही तें सुशीला और अति सयानी चतुर होगी और उमा अंबिका भवानी ए इसके नाम होंगे २ समस्त सुलक्षणों से संपन्न और सदैव अपने पति को अत्यन्तप्यारी होगी ३ और इसका अहिवात कहे मंगल सूत्र सदा अचल होगा और माता पिता का अर्थात् तुम्हारा संसार में बड़ा यश होगा ४ और यह समस्त संसार में पूज्य होगी और इसकी सेवा करते कोई पदार्थ दुर्लभ न होगा ५ और इसके नामको स्मर्णकरिके स्त्री जन महा कठिन खड्ग धारा के समान पातिब्रत धर्मको धारण करैंगी ६ हे हिमाचल तुम्हारी यह कन्या सुलक्षणी तौ सबही प्रकार से है परंतु निर्दोष तौ कोई ईश्वर बिना होताही नहीं है इस कारण जो इसके दो चार

अवगुण हैं सो भी सुनो ७ किंतुतो जिसमें कोई गुण न मानन जिसके माता न पिता और उदासीन कहे न राग न द्वेष न किसी बात की संशय ॥ ८ ॥ दोहा ॥ योगी जटा धारी निष्काम नग्न कहे दिगम्बर और महा अमंगल जिसका वेष ऐसा पति इसको मिलैगा यह इसके हाथ में ऐसी रेखा परी है ॥ ६६ ॥

सुनिमुनिगिरासत्यजियजानी । दुखदंपतिहिउमा हरषानी १
नारद हूं यह भेद न जाना । दशाएक समुझत बिलगाना २
सकलसखींगिरिजागिरिमयना। पुलकि शरीरभरेजलनयना३
होइन मृषादेवऋषि भाषा । उमासो बचन हृदयधरिराखा ४
उपजेउ शिव पदकमलसनेहू । मिलन कठिन यहमनसंदेहू ५
जानि कुअवसरप्रीतिदुराई । सखी उछंग बैठि पुनि जाई ६
मृषानहोइ देव ऋषिबानी । शोचहिंदंपति सखी सयानी ७
उरधरिधीर कहेउ गिरिराऊ । कहहु नाथ का करिय उपाऊ ८
दो० कहमुनीश हिमवंत सुनु जो बिधि लिखा लिलार ।
देवदनुज नरनाग मुनि कोउ न मेटन हार ॥ ६७ ॥

ऐसी मुनिकी बाणी सुनकर और उसको जीमें सच्ची जानकर माता पिता दोनों को तो दुःख होगया और पारबती ये समस्त लक्षण शिवही में जानकर हरषायमान हुई १ यह मर्म नारद ने भी न जानि पाया किसी एक दशाके समुझने में दुचित्त रहे २ अबतो सब सखी और पारबती और हिमाचल और मयना उनकी रानी सबकी यह दशा हर्ष शोकके वश होगई कि सबके शरीर पुलकायमान होकर नेत्रों में जल भरि आया ३ तहां प्रथम पारबती की हर्षदशा कहते हैं कि नारद देवर्षि हैं इनकीबाणी असत्य न होगी यह तो जब पारबती ने अपने जीमें निश्चय कर लिया तभी से शिवजीके चरणों में स्नेह उत्पन्न हुआ परंतु मिलना महा कठिन है यह मनमें संदेह रहा ४।५ सो कुसमय समुझि प्रीति छिपा कर किसी सखीकी गोदमें जा बैठी ६ अब राजा रानी और संपूर्ण चतुरसखी यहशोच कररहे हैं कि ये देवर्षि हैं इनकी बाणी कदापि मृषा न होगी यह तो बड़ा अनर्थ होगा ७ तबतो हृदय में बड़ी धीर धरि के राजा बोले किहे नाथ कहिये इसका क्या उपाय किया जावै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ यह सुनि के नारद ने कहा कि सुनो हे राजा जो कुछ दैवने जिसके प्रारब्ध में जैसा लिखा है उसको कोई देव व दैत्य मनुष्य नाग और अस्मदादिक मुनि मेटि नहीं सक्ता है ॥ ६७ ॥

तदपि एक मैं कहहुं उपाई। होइ करै जो दैव सहाई १
जसबरमैं बरणेउंतुम पाहीं । मिलिहि उमहितस संशयनाहीं२

जेजे वर के दोष बखाने । तेसब शिव पहं मैं अनुमाने ३
जौ विवाहु शंकर सनहोई । दोषहु गुण समकह सबकोई ४
समरथकहं नहिं दोषगुसांई । रविपावक सुरसरि कीनांई ५
शंभुसहज समर्थभगवाना । यहिविवाहु सबविधि कल्याना ६
जौतपकरै कुमारि तुम्हारी । भाविहुमेटि सकहिं त्रिपुरारी ७
यद्यपि वरअनेक जगमाहीं। यहिकहं शिवतजि दूसरनाहीं ८
दो० असकहि नारदसुमिरि हरि गिरिजहिदीन्हि अशीश ।
होइहि यहिकल्याण अब संशय तजहु गिरीश ॥ ६८ ॥

तौभी मैं तुमसे एक उपाय कहता हूं जो दैव सहाय करेगा तो सिद्ध हो जाय-
गा १ जैसा वर मैंने तुमसे वर्णन किया है मिलेगा तो पार्वती को तैसा ही इसमें
कुछ भी संदेहही नहीं २ परंतु जेजे वरके दोष मैंने तुमसे कहे हैं सो संपूर्ण महादे-
व में मैंने विचारि लिये हैं ३ सो जो इसका विवाह उनके साथ हो जावे तो उनके
संपूर्ण दोषों को संसार परम गुणों के समान कहता है ४ क्योंकि समर्थों को दोषों से
भी कुछ दूषण नहीं होता है सूर्य्य अग्नि और श्रीगंगा के समान ५ सो शिवजी तो
स्वभावही तें समर्थ हैं क्योंकि भगवान ईश्वर हैं तातें इस विवाह में तो सबही सब
प्रकार से कल्याण ही होगा ६ परंतु जो तुम्हारी बेटी उनके निमित्त तप करै तो
भावी को भी त्रिपुर मरदन श्रीशिवजी मेटि सकते हैं ७ याके उपरांत यद्यपि संसारमें
अनेक बरहैं भी परंतु इसको तो शिवजी को छोड़कर दूसरा मिलेगा भी नहीं ॥ ८ ॥
दोहा ॥ ऐसा नारद ने कहकर और हरि स्मरण करिके पार्व्वती को आशीर्वाद दिया
और कहा कि हे गिरिराज इसका कल्याण होगा अब तुम संपूर्ण संशय त्याग करो ॥ ६८॥

असकहिब्रह्मभवनमुनिगयऊ।आगिलचरितसुनहुंजसभयऊ १
पतिहि एकांतपायकहमयना । नाथनमैं समुझे मुनि बयना २
जौ घरबरकुलहोइ अनूपा । करिय बिवाहुसुता अनुरूपा ३
नतौकन्या बरुरहहु कुमारी । कंतउमामम प्राण पियारी ४
जौनमिलहिबरगिरिजहियोगू।गिरिजड़सहजकहहिंसबलोगू ५
सो विचारि पतिकरहुविवाहू। जिहि न बहोरि होइउर दाहू ६
असकहि परीचरणधरि शीशा । बोलेसहित सनेह गिरीशा ७
बरुपावक प्रगटै शशि माहीं। नारद बचन अन्यथा नाहीं ८

दो० प्रियाशोच परि हरहु सब सुमिरहु श्री भगवान ।
पारबतिहिजिहि निर्मयउ सोइ करिहै कल्यान ॥ ६९॥

ऐसे कहकर नारदब्रह्म धामको सिधारे अब यहां जो आगे चरित्रहुआ सो हे भरद्वाज मुनि आप सुनिये १ कि अपने पति हिमाचल को एकांत में पाकर पारवती की मातामयना बोली किहे नाथ आपतौ बुद्धि मान हैं परंतु नारद के वचनकुछ मेरी मंद बुद्धिकी समुझ में न आये कि ऐसे दोष युक्तवर को कैसे निर्दोष कह गये २ तातें जो वरका घर और कुल और वरभी उत्तम होवै तौ तौ बिवाह कन्या के अनुरूप कीजिये ३ नहीं तौ कन्या भलेही कुमारी रहो ऐसा बिवाह तो मैंनहीं करने की क्योंकि हे नाथ पारवती प्राण के समान मेरी प्यारी है ४ जो कदाचित् पारवती के योग्य बर न मिलैगा तौ सब लोग यही दूषण देवैंगे कि परवत तो स्वभावही तें जड़ होते हैं ५ तातें विचारि कर सो बिवाह हे नाथ करौ जिसमें जगत उपहास का हृदय में दारुण दाह न होवै ६ ऐसे कहकर जब मयना हिमाचल के चरणों पर गिर परी तबतौ बड़े स्नेह समेत हिमाचल बोले ७ कि हे रानी यह कथन तुम्हारा कुछ अर्थ साधक नहीं है क्योंकि चन्द्रमा में अग्नि भलेही प्रगट होजावै परंतु नारद के वचन तौ अन्यथा होनेहो के नहीं हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तातें हे प्रिया इस संपूर्ण शोचको छोड़ कर ईश्वर का स्मरण करौ जिसने पारवती को उत्पन्न किया है सोई ईश्वर उसका कल्याण भी करैगा ॥ ६९ ॥

अबजो तुम्हहि सुतापरनेहू । तौ असजाइ सिखावन देहू १
करहिसोतपजिहिमिलहिंमहेशू।आनउपाय न मिटिहिकलेशू२
नारद बचन सगर्भ सहेतू । सुन्दर सब गुण निधि वृष केतू ३
असबिचारि त्यागहुसबशंका । सबहिभांति शंकरअकलंका ४
मुनिपति बचन हर्षि मनमाहीं । गईतुरत उठि गिरिजापाहीं ५
उमाहिंबिलोकि नयनभरिबारी । सहितसनेह गोद बैठारी ६
बाराहिंबार लेति उरलाई । गद्गदकंठ न कछु कहि जाई ७
जगतमातु सर्बज्ञ भवानी । मातु सुखद बोली मृदु बानी ८
दो० सुनहु मातुमैं दीखअस स्वप्न सुनावहुं तोहि ।
सुन्दरगौर सु बिप्रबरअस उपदेशहि मोहि ॥ ७० ॥

तातें हे रानी अबजो तुमको अपनी पुत्री पर बड़ा स्नेह है तो जाकर उसे ऐसा उपदेश करौ १ कि सो तप करने को जावै जिससे उसको शिवकी प्राप्ति होवैक्योंकि और किसी उपायसे यह संकट मिटने का नहीं है २ और नारद के वचनों का अर्थ

अति गूढगंभीर होता है कुछ कारण समझ कर कहते हैं शिवजी में ये दूषित चिन्ह देखनेही मात्र हैं कोई उनको स्पर्श भी तो नहीं करते हैं क्योंकि समस्त सुन्दर सद्गुणों के समुद्र वृषभ ध्वज हैं ३ यह हमारा कहना बिचारि के तुम संपूर्ण शंका दूरि करो क्योंकि शंकर स्वामी सबही प्रकार से निष्कलंक हैं ४ ऐसे सुन्दर अपनेपति के वचन सुनकर प्रसन्न मन होके पारबती के पास जाती हुई ५ पारवती को देखतेहीं नेत्रों में जल भरि लिया और बड़े प्रेम समेत अपनी गोद में बैठारि लिया ६ प्रेम की प्राबल्यता से बारंबार उसको हृदय में लगा लगा लेती है गद गद कण्ठ के कारण कुछ कहा नहीं जाता है ७ तबतो जगत माता सर्वज्ञ पारबती अपनी माताका अभिप्राय जानकर माता को सुखदायक वचन बोली ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सुनो हे माता आज मैंने ऐसा स्वप्न देखा है सोमैं तेरे को सुनावती हूं कि एक महा सुन्दर गौरवर्ण उत्तम ब्राह्मण मेरेको ऐसा उपदेश करता है ॥ १० ॥

करहु जाइतप शैलकुमारी । नारद कहा सो सत्य बिचारी १
मातुपितहि पुनियहमत भावा । तपसुख प्रददुखदोषनशावा २
तपबल रचैप्रपंच विधाता । तप बल विष्णु सकल जगत्राता ३
तपबल शंभु करहिंसंहारा । तप बलशेष धरहिं महिभारा ४
तपअधार सब सृष्टि भवानी । करहुजाइ तपअस जियजानी ५
सुनतवचन विस्मित महतारी । स्वप्नसुनायउ गिरिहिंहकारी ६
मातुपितहि बहुबिधि समुझाई । चली उमातप हितहरषाई ७
प्रियपरिवार पिता अरु माता । भये बिकल मुखआवनबाता ८
दो० वेद गिरामुनि आइतब सबहि कहा समुझाइ ।
पारबती महिमा सुनत रहे प्रबोधहि पाइ ॥ ७१ ॥

कि हे पारबती तुम जाकर तपही करो जो नारदने कहा है उसी को सत्यजानो १ और तुम्हारे माता पिताकोभी यही मत भाया है क्योंकि तप सर्व सुख दायक और दुख दोषों का नाश कर्ता होता है २ देखो तपही के बल से ब्रह्मा सृष्टि को रचता है बिष्णु पालते हैं रुद्र संहार करते हैं शेष ब्रह्मांड के बोझ को धारणकिये हैं ३ । ४ तपही के आधार हे पारवती समस्त विश्व है यह जानिकर तुम तपही करो ५ ऐसा पारबतीका स्वप्न सुनिकर मैना चकित होगई और अपने पति हिमाचल को बुलाकर यह स्वप्न सुनादिया ६ फिरि तो पारबती अपने माता पिताको अनेकभांति से समुझाकर प्रसन्न मन तप करने को चलने लगी ७ तबतो समस्त परिवार समेत उनके माता पिता व्याकुल होगये शोक बियोग से कंठ सबके रुकि गये ॥ ८ ॥

दोहा । ता समय वेद गिरा नाम मुनीश्वर ने पारवती की महिमा सबको सुनाई सो सुनिकर सब सावधान और प्रबोध पागये ॥ ७१ ॥

उरधरि उमाप्राणपति चरणा । जाइबिपिन लागीतपकरणा १
अतिसुकुमारि न तनतपयोगू । पतिपद सुमिर तजे सबभोगू २
नितनव चरणउपज अनुरागा । बिसरीदेह तपहि मनलागा ३
संवत सहसमूल फल खाये । शाक खाइ शतबर्ष गंवाये ४
वेलपत्र महि परैं सुखाई । तीनि सहस संवत सो खाई ५
पुनि परिहरे सुखानेहुंपरणा । उमहिं नाम तबभयउअपरणा६
कछुदिनभोजन वारिवतासा । कियेकठिन कछुदिनउपवासा७
देखि उमहिंतप खिन्न शरीरा । ब्रह्मगिराभइ गगन गंभीरा८
दो० भयउ मनोरथ सफल तव सुनु गिरिराज कुमारि ।
परिहरु दुसहकलेशसब अबमिलिहैं त्रिपुरारि ॥७२॥

अबतो पारवती अपने प्राणपति श्री शिवजीके चरण कमलों को हृदय में धारण करिके बनमें जाकर [illegible] करने लगीं १ अतिही सुकुमारी राज कुमारि है तातें तन तो तपके योग्य नहीं है परंतु परम तपस्वी अपने पति के चरणों का स्मरण करिके समस्त भोग त्याग दिये २ नित्त नवीन शिवजीके चरणों में प्रेम बढ़ताही जाता है यहां तक कि देह की भी सुधि संभार नहीं रही ऐसा तपमें मन लगाया ३ सहस्र वर्ष भरतोकन्द मूल फल खाये और सो वर्ष शाकही खाकर बिताये ४ तिस पीछेजो वेलपत्र सूखि करि गिरि परैं तीनि सहस्र संवत भर तेई खाये ताके उपरांत वेलपत्रों का भी त्याग किया तबसे पारबती का नाम अपर्णा हुआ ५ । ६ अपर्णा होकर जल ही पान किया फिरि जल त्याग करिके वतास कहे पवनहीं पान किया फिरि पवन त्याग करिके निरसन तप किया ७ इस प्रकार पारवती को तप खिन्न शरीर देखिकर आकाश में गंभीर ब्रह्म वाणी हुई ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सुन हे पारवती अब तेरा मनोरथ सफल हुआ इस दुःसह कलेश का त्यागकर अब तेरेको त्रिपुरारि शिव बर मिलेंगे ॥ ६२ ॥

असतपकाहुनकीन्हभवानी । भये अनेक धीर मुनि ज्ञानी १
अबउरधरहु ब्रह्मवर बाणी । सत्यसदा संतत शुचि जानी २
आवाहिंपिता बुलावनजबहीं । हठपरिहारिघरजायहु तबहीं ३
मिलहिंतुमहिंजबसप्तऋषीशा । जानेहुतब प्रमाणबागीशा ४
सुनतगिराबिधिगगनबखानी । पुलकिगातगिरिजाहरषानी ५

उमाचरित सुंदर मैं गावा । सुनहु शंभुकर चरित सुहावा ६
जबतें सती जाइ तनुत्यागा । तबतें शिव मन भयउ बिरागा ७
जपहिं सदा रघुनायकनामा । जहं तहं सुनहिं राम गुणग्रामा ८
दो० चितानन्द सुखधाम शिव बिगत मोह मद काम ।
बिचरहिंमहिधरिहृदयहरि सकललोक अभिराम ७३ ॥

ऐसा तप आज तक हे भवानी किसीने नहीं किया बड़े बड़े अनेक धीर मुनि
ज्ञानी भी हुये १ अब तुम हृदय में इस ब्रह्मवाणी को सदा सत्य और शुद्ध जानि
कर धारण करो २ और जब तुम्हरे पिता तुमको बुलाने आवें तभी तुम हठछोड़
कर अपने घर जाइयो ३ और तुम इस वाणी को तब प्रमाण मानियो जब तुमको इसी
स्थान पर सप्तऋषि मिलैं ४ इस प्रकार की जो गिरा विधि आकाश में हुई उसके
सुनतेही पारबती पुलकायमान होकर महा हर्ष को प्राप्त हुईं ५ इस प्रकार हे भरद्वाज
यह परम सुन्दर उमा चरित तो मैंने तुमसे कहा अब परम सुहावन श्री शिवजीका
चरित सुनो ६ कि जबसे सतीने जाकर दच्छ की यज्ञ में शरीर त्याग किया तब से
निर्द्वन्द हो शिवजी के मन में वैराग्य उत्पन्न हुआ ७ सो कैलाश त्याग करिके जहां
तहां कहे मुनीश्वरों के आश्रमों में जा जाकर भगवद्गुण ग्राम सुनैं और श्री रामराम
जपा करैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ चिदानन्द मूर्त्ति आनन्द निवास मद मोह काम रहित
श्री शिवजी समस्त लोकाभिराम भववत् दिव्य मंगल मूर्त्ति को हृदय में धारण करि॰
के सप्तद्वीपावती पृथ्वी पर बिचरने लगे ॥ ७३ ॥

कतहुंमुनिन्हउपदेशहिं ज्ञाना । कतहुं रामगुण करहिंबखाना १
यहिबिधिगयउकालबहुबीती । नितिनवहोइ रामपद प्रीती २
नेम प्रेम शंकर कर देखा । अबिचल हृदय भक्तिकी रेखा ३
प्रगटे राम कृतज्ञ कृपाला । रूपशील निधि तेज बिशाला ४
बहुबिधिरामशिवहिसमुझावा । पारबती करजन्म सुनावा ५
कहप्रभुहरतुम्हारप्रणरहेऊ । अबउरराखेहु हम जोकहेऊ ६
अंतरध्यान भये असभाषी । शंकर सोइ मूरति उरराखी ७
तबहिं सप्तऋषि शिवपहं आये । बोले प्रभु अस वचन सुहाये ८
दो० पारबती पहं जाइ तुम प्रेम परीक्षा लेहु ।
गिरिहि प्रेरि पठवहु भवन दूरि करहु संदेहु ॥ ७४ ॥

कहीं तो लोमसादिक महामुनीश्वरों को ज्ञान का उपदेश करते हैं और कहीं

उत्तम भागवत श्रोता पाकर भगवद्गुणानुवाद वर्णन करते हैं १ इस प्रकार दीर्घकाल वितीत हुआ और श्री राम चरणों की प्रीति नित्त नवीन बढ़तीही जावै २ जबऐसा नेम और प्रेम और अविचल अपनी भक्ति की रेखा शिवजी के हृदय में देखी ३ तब तो अति कृतज्ञ परम कृपालु श्री रामचन्द्र उन सामुहे प्रगट हुये रूप शील के समुद्र विशाल जिनका तेज ४ और अनेक भांति रामचन्द्र ने शिवजी को उमाके फिरि ग्रहण करने के निमित्त समुझाया और हिमाचल के घर उनका पारबती जन्म भी सुनादिया ५ और कहा कि हे शिव तुम्हारा प्रण पूर्ण होचुका अब जो हमने कहा है सो स्मर्ण रखना ६ यह कह कर अंतरध्यान होगये शिवजी सोई आज्ञा और मूर्त्ति हृदय में रख कर कैलाश को चले आये ७ तहां कश्यप १ अत्रि २ वशिष्ठ ३ विश्वामित्र ४ भरद्वाज ५ गौतम ६ यमदग्नि ७ ये सप्तऋषि शिवके पास आये तिनसे शिवजी ने कहा ॥ ८ ॥ दोहा ॥ कि तुम प्रथम पारबती के पास जाकर उनके प्रेम की परीक्षा करो फिरि हिमाचल को भेजिकर पारबती को घर पठवाइ आवो संदेह दूरि करो ॥ ७४ ॥

ऋषिन्हगौरि देखीतहं कैसी । मूरतिवंत तपस्या जैसी १
बोले मुनि सुनुशैल कुमारी । करहु कवन कारण तप भारी२
किहि अवराधहुकातुमचहहू । हम सन मर्मसत्य सबकहहू ३
सुनतऋषिन के वचन भवानी । बोलीं गूढ़ मनोहर बानी ४
कहत मर्ममन अतिसकुचाई । हंसिहहु सुनिहमारिजड़ताई ५
मनहठ परा न सुनाहिंसिखावा।चहतबारि पर भीति उठावा६
नारद कहासत्यसो जाना । बिनु पंखन हमचहत उड़ाना ७
देखहुमुनि अविवेक हमारा । चाहति कीन्ह शिवहिभरतारा८
दो०. सुनत वचनविहसे ऋषय गिरिसंभव तवदेह ।
नारद करउपदेश सुनि कहहु बसे को गेह ॥ ७५ ॥

तहां ऋषियोंने पारवतीको जाकर कैसी देखी मानो मूर्त्तिमान तपस्याही विराजती है १ ऐसा देखकर सप्त ऋषि बोले कि हे पारबती तुम यह महा दुष्कर तप किसलिये करती हो २ किस देवता का अवराधन करती हो और उससे क्या फल चाहती हो सो हमसे सत्य भेद संपूर्ण कहो ३ ऐसे ऋषियों के बचन सुनतेही पारवती भी उनका आशय समुझकर गूढ़ मनोहर बाणी से बोलीं ४ कि हे मुनीश्वरो मर्म कहते तो हमारा मन अतिही संकोच करता है कि तुम हमारी जड़ता को सुनकर हंसोगे ५ हमारा मन ऐसा हठ परा है कि किसीका सिखावना सुनताही नहीं है पानीही पर भीति उठाया चाहता है ६ अर्थात् जो नारद ने उपदेश किया है उसी को

आनकौर हम बिनाहीं पंखों के उड़ा चाहती हैं ७ सत्य सत्य मर्म यह हैं कि हम इस महा जड़ पारबतीहीशरीर करिके सच्चिदानन्द शिवको अपना भर्त्तार पति किया चाहती हैं इस हमारे अज्ञान को देखो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सुनतेही पारवती के बचन संपूर्ण ऋषि हंसे और बोले कि आश्चर्य क्या है शरीर तौ तुम्हारा परबत ही से उत्पन्न है ऐसा बिपरीति उद्यम क्यों न करो भला यह तो कहो कि नारद के उपदेश से कौन कौन अपने घरोंमें बसे हैं ॥ ७५ ॥

दक्षसुतन्ह उपदेशेउजाई । तिन्हफिरिभवन न देखेउ आई १
चित्रकेतुकरघरउनघाला । कणककशिपुकर पुनिअसहाला २
नारदसिख जोसुनहिंनरनारी।अवशिभवनतजिहोंहिभिषारी ३
मनकपटीतनसज्जन चीन्हा । आप सरिससबही चहैं कीन्हा४
तिहिके बचनमानिविश्वासा । तुमचाहति पति सहजउदासा ५
निर्गुण निलज कुबेषकपाली । अकुलअगेह दिगंबर ब्याली६
कहहु कवन सुख असवरपाये । भलिभूली ठगके बौराये ७
पंचकहें शिवसती बिवाही । पुनि अवडेरि मराइल ताही ८
दो० अवसुखसोवतशोचनाहिं भीखमांगि भवखाहिं ।
सहजएकाकी के भवनकबहुं कि नारि खटाहिं ॥ ७६॥

देखो कि इन्हीं नारद ने दक्षके ग्यारह सहस्र पुत्र जिनको पिता ने प्रजा उत्पत्ति के निमित्त तप करने को भेजा रहै उनको ऐसा उपदेश दिया कि उन्होंने फिरि अपना घर आकर देखा भी नहीं १ और राजा चित्रकेतु को उसके इकलौते पुत्र के मरने के पीछे उसको ऐसा उपदेश किया कि अपना चक्रवर्ती राज्य छोड़कर बनको चला गया और हिरण्य कश्यपु की ऐसी दशाकरी कि पिता पुत्र में बिरोध बढ़ा कर उसको मरा डारा २ ऐसंही नारद की शिक्षा जो स्त्री वा पुरुष सुनते हैं सो अवश्य घरको छोड़कर भिक्षुकही होते हैं ३ अंतष्करण में तौ नारद बड़ा कपटी है ठगने के निमित्त भागवतों के बाह्य चिन्ह अपने पिता ब्रह्मा से पंचरात्रि सुनकर शरीरही पर संसार के दिखानेको धारण किये फिरता है और आपही सा सबको किया चाहताहै ४ ऐसे कपटी के बचन का विश्वास मान तुम सहज उदासीन कहे राग द्वेष शून्य शिवको पति किया चाहतीहो ५ कैसा है शिव जिसमें कोई भी तो गुणनहीं निरा निर्लज्ज उत्पथ वेषधारी कपालभूषण अकुल कहे वर्णाश्रम बाहर अगेह कहे स्मशान बासी सर्प लपेटे निरा नंगा रहता है ६ कहो ऐसा बरपाये से कौनसा सुख मिलेगा भलीभूली अर्थात् कैसे भूली उस ठग के बहकाने से ७ एक तो शिवको पति पाकर फल पाचुकी है अर्थात् पंचौंके कहने से शिव ने सती पहले तो बिवाह ली परंतु

उत्तम भागवत श्रोता पाकर भगवद्गुणानुवाद वर्णन करते हैं १ इस प्रकार दीर्घकाल वितीत हुआ और श्री राम चरणों की प्रीति नित्त नवीन बढ़तीही जावै २ जबऐसा नेम और प्रेम और अविचल अपनी भक्ति की रेखा शिवजी के हृदय में देखी ३ तब तो अति कृतज्ञ परम कृपालु श्री रामचन्द्र उन सामुहे प्रगट हुये रूप शील के समुद्र विशाल जिनका तेज ४ और अनेक भांति रामचन्द्र ने शिवजी को उमाके फिरि ग्रहण करने के निमित्त समुझाया और हिमाचल के घर उनका पारबती जन्म भी सुनादिया ५ और कहा कि हे शिव तुम्हारा प्रण पूर्ण होचुका अब जो हमने कहा है सो स्मर्ण रखना ६ यह कह कर अंतरध्यान होगये शिवजी सोई आज्ञा और मूर्त्ति हृदय में रख कर कैलाश को चले आये ७ तहां कश्यप १ अत्रि २ वशिष्ठ ३ विश्वामित्र ४ भरद्वाज ५ गौतम ६ यमदग्नि ७ ये सप्तऋषि शिवके पास आये तिनसे शिवजी ने कहा ॥ ८ ॥ दोहा ॥ कि तुम प्रथम पारबती के पास जाकर उनके प्रेम की परीक्षा करो फिरि हिमाचल को भेजिकर पारबती को घर पठवाइ आवो संदेह दूरि करो ॥ ७४ ॥

ऋषिन्हगौरि देखीतहं कैसी । मूरतिवंत तपस्या जैसी १
बोले मुनि सुनुशैल कुमारी । करहु कवन कारण तप भारी २
किहि अवराधहुकातुमचहहू । हम सन मर्मसत्य सबकहहू ३
सुनतऋषिन के वचन भवानी । बोली गूढ़ मनोहर बानी ४
कहत मर्ममन अतिसकुचाई । हंसिहहु सुनिहमारिजड़ताई ५
मनहठ परा न सुनाहिंसिखावा।चहतबारि पर भीति उठावा ६
नारद कहासत्यसो जाना । बिनु पंखन हमचहत उड़ाना ७
देखहुमुनि अविवेक हमारा । चाहति कीन्ह शिवहिभरतारा ८
दो० सुनत वचनविहसे ऋषय गिरिसंभव तवदेह ।
नारद करउपदेश सुनि कहहु बसे को गेह ॥ ७५ ॥

तहां ऋषियोंने पारवतीको जाकर कैसी देखी मानो मूर्त्तिमान तपस्याही विराजती है १ ऐसा देखकर सप्त ऋषि बोले कि हे पारवती तुम यह महा दुष्कर तप किसलिये करती हो २ किस देवता का अवराधन करती हो और उससे क्या फल चाहती हो सो हमसे सत्य भेद संपूर्ण कहो ३ ऐसे ऋषियों के बचन सुनतेही पारवती भी उनका आशय समुझकर गूढ़ मनोहर वाणी से बोलीं ४ कि हे मुनीश्वरो मर्म कहते तो हमारा मन अतिही संकोच करता है कि तुम हमारी जड़ता को सुनकर हंसोगे ५ हमारा मन ऐसा हठ परा है कि किसीका सिखावना सुनताही नहीं है पानीही पर भीति उठाया चाहता है ६ अर्थात् जो नारद ने उपदेश किया है उसी को सच्च

जानकर हम बिनाहीं पंखों के उड़ा चाहती हैं ७ सत्य सत्य मर्म यह हैं कि हम इस महा जड़ पारबतीहीशरीर करिके सच्चिदानन्द शिवको अपना भर्त्तार पति किया चाहती हैं इस हमारे अज्ञान को देखो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सुनतेही पारबती के बचन संपूर्ण ऋषि हंसे और बोले कि आश्चर्य क्या है शरीर तो तुम्हारा परबत ही से उत्पन्न है ऐसा बिपरीति उद्यम क्यों न करो भला यह तो कहो कि नारद के उपदेश से कौन कौन अपने घरोंमें बसे हैं ॥ ७५ ॥

दक्षसुतन्ह उपदेशेउजाई । तिन्हफिरिभवन न देखेउ आई १
चित्रकेतुकरघरउनघाला । कणककशिपुकर पुनिअसहाला २
नारदसिख जोसुनहिंनरनारी।अवशिभवनतजिहोंहिभिषारी ३
मनकपटीतनसज्जन चीन्हा । आप सरिससबही चहैं कीन्हा४
तिहिके बचनमानिविश्वासा । तुमचाहति पति सहजउदासा ५
निर्गुण निलज कुबेषकपाली । अकुलअगेह दिगंबर ब्याली६
कहहु कवन सुख असवरपाये । भलिभूली ठगके बौराये ७
पंचकहें शिवसती बिवाही । पुनि अवडेरि मराइल ताही ८
दो० अबसुखसोवतशोचनाहिं भीखमांगि भवखाहिं ।
सहजएकाकी के भवनकबहुं कि नारि खटाहिं ॥ ७६ ॥

देखो कि इन्हीं नारद ने दक्षके ग्यारह सहस्र पुत्र जिनको पिता ने प्रजा उत्पत्ति के निमित्त तप करने को भेजा रहै उनको ऐसा उपदेश दिया कि उन्होंने फिरि अपना घर आकर देखा भी नहीं १ और राजा चित्रकेतु को उसके इकलौते पुत्र के मरने के पीछे उसको ऐसा उपदेश किया कि अपना चक्रवर्ती राज्य छोड़कर बनको चला गया और हिरण्य कश्यपु की ऐसी दशाकरी कि पिता पुत्र में बिरोध बढ़ा कर उसको मरा डारा २ ऐसेही नारद की शिक्षा जो स्त्री वा पुरुष सुनते हैं सो अवश्य घरको छोड़कर भिक्षुकही होते हैं ३ अंतःकरण में तो नारद बड़ा कपटी है ठगने के निमित्त भागवतों के बाह्य चिन्ह अपने पिता ब्रह्मा से पंचरात्रि सुनकर शरीरही पर संसार के दिखानेको धारण किये फिरता है और आपही सा सबको किया चाहता है ४ ऐसे कपटी के बचन का विश्वास मान तुम सहज उदासीन कहे राग द्वेष शून्य शिवको पति किया चाहतीहो ५ कैसा है शिव जिसमें कोई भी तो गुणनहीं निरा निर्लज्ज उत्पथ वेषधारी कपालभूषण अकुल कहे वर्णाश्रम बाहर अगेह कहे स्मशान वासी सर्प लपेटे निरा नंगा रहता है ६ कहो ऐसा बरपाये से कौनसा सुख मिलेगा भलीभूली अर्थात् कैसे भूली उस ठग के बहकाने से ७ एक तो शिवको पति पाकर फल पाचुकी है अर्थात् पंचोंके कहने से शिव ने सती पहले तो बिवाह ली परंतु

फिरि उसको एकअखठेरा लगाकर मरवा दिया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ अबनिर्द्वन्द्व सुखसे सेते हैं कुछ शोच नहीं घर घर भीख मांग खाते हैं ऐसे स्वाभाविक एकाकियों के घर मेंकहो भला कैसे स्त्री निबह सक्ती हैं ॥ ७६ ॥

अजहूंमानहुकहा हमारा । हम तुम कहंबर नीक बिचारा १
अतिसुंदर श्रुतिसुखदसुशील । गावहिंवेद जासुयशलीला२
दूषण रहितसकलगुण राशी । श्रीपति पुर बैकुंठ निवासी ३
असबरतुमहिंमिलाउबआनी ।सुनतबिहसिकहबचनभवानी ४
सत्यकहेहु गिरिभवतनु येहा । हठनछूट छूटहु बरु देहा ५
कणकहु पुनि पषाणतें होई । जारेहुं सहजन परिहर सोई ६
नारद बचननमैं परिहरऊं ।बसहुभवन उजरहु नहिं डरऊं ७
गुरुकेबचनप्रतीतिनजेही । सपनेहुं सुलभनसुख सिधितेही ८
दो० महादेव अवगुणभवन बिष्णु सकल गुण धाम ।
जिहिकरमनरमजाहि सनताहिताहिसनकाम ॥ ७७ ॥

परंतु बड़ी बातहै अभी कुछ बिगरानहीं है अबभी तुम हमारा कहा मानों हम ने तुम को बहुत अच्छा वर बिचार किया है १ कि अतिही तौ सुन्दर है और परम पवित्र है बड़ा सुखदायक और सुशील है जिसके यशको समस्त वेद गाते हैं २ समस्त दूषण रहित समस्त सद्गुणों की राशि बड़ा धनवान बैकुंठ जिसका घर है ३ ऐसा उत्तम वर हम तुमको मिला देवैंगे ऐसे ऋषियों के बचन सुनकर पार्वती बोलीं ४ सच्चतो कहा आपने कि यह हमारा शरीर गिरि संभवहै क्योंकि इस जड़ का हठ नहीं छूटता है देह भलेही छूटजावै ५ ऐसेही सुवर्ण भी पाषाण से होता है सो जराने से भी अपने सहज वर्ण को नहीं छोड़ता है ६ तैसेही नारद के बचन तौ मैं कदापि नहीं छोड़ने की घर बसै चाहे ऊजर होइ ७ क्योंकि जिसको गुरुके बचनों पर विश्वास नहीं है उस को सुखकी सिद्धि स्वप्नमें भी सुलभ नहीं होती ॥ ८ ॥ दोहा ॥ महादेव अवगुणों के घरही सही और बिष्णु संपूर्ण सद्गुणों के निवास भले ही हुआ करैं जिसका मन जिसमें रम रहा है उसको तौ उसी से काम है दूसरे से क्या प्रयोजन है ॥ ७७ ॥

जोतुममिलतेहुप्रथममुनीशा।सुनतिउंशिखतुम्हारिधरिशीशा १
अबमैंजन्म शंभुहित हारा । कोगुण दूषण करै बिचारा २
जोतुम्हरे हठहृदय बिशेषी । रहिनजाइ बिनु किये बरेषी ३
तौकौतुकियन्हिआलसनाहीं । बरकन्या अनेक जगमाहीं ४

जन्मकोटिलगि रगरहमारी । बरौं शंभु नतौ रहौं कुमारी ५
तजहुं न नारद कर उपदेशू । आपकहैं शत बार महेशू ६
मैं पापरौं कहै जगदंबा । तुमगृह गवनहु भयेउविलंबा ७
देखिप्रीति बोले मुनिज्ञानी । जयजय जगदंबिके भवानी ८
दो० तुममायाभगवान शिवसकल जगत पितुमात ।
नाइचरण शिरमुनिचले पुनिपुनि पुलकितगात ॥ ७८ ॥

हां जो नारद से पहले आपही हमको मिलते तो तुम्हारीही शीक्षा माथे मान कर सुनतीं १ अबतो मैं यह जन्म शिवजी के निमित्त हार चुकी ये धर्म कुलवंतियों के नहीं होतेकि दूसरेकी प्रशंसा सुनकर गुण दूषणका निर्णयकरें २ और जो बिशेष करिके तुम्हारे ऐसाही हठ है कि तुमसे बरेखी कहे यथा योग्य बर मिलावनि किये बिना रहाही नहीं जाता है ३ तो कौतुकियों को आलस नहीं होता है बर कन्या संसार में अनेक हैं तहां देखौ ४ हमारी तो इस जन्म की क्या चली कोटि जन्म पर्यंत यह अड़ है कि बरैं तो शिवही को बरैंनहीं तो कुमारीही रहैं ५ और नारद का उपदेश तो मैं नहीं त्यागने की जो सौ बारभी महेश स्वामी आप आकर कहैं ६ तातें मैं अब आपके पैरों परती हूं कि आप अपने घरको पधारैं बहुत काल यहांआये हुआ ७ ऐसी प्रीति पारबती की देखकर बड़े ज्ञानीमुनीश्वर जय जय वाणीसे बोले ॥८॥ दोहा ॥ हे जगदंबिके हे भवानी आपतो साक्षात् माया हैं और शिव ईश्वर हैं तुम दोनों संसार के माता पिता हो हमतो आपकी प्रीति अपनी अज्ञता से देखते रहे अपराध क्षमाकरो ऐसे कहि प्रणाम करिके बिदा हुये ॥ ७८ ॥

जाइमुनिन्ह हिमवंत पठाये । करिबिनतीगिरिजहि गृहलाये १
बहुरिसप्त ऋषिशिवपहंजाई । कथाउमाकी सकल सुनाई २
भयेमग्न शिवसुनत सनेहा । हर्षि सप्तऋषि गवने गेहा ३
मन थिर करितबशंभु सुजाना । लगे करन रघुनायक ध्याना ४
तारकअसुरभयेउतिहिकाला । भुजप्रतापबल तेज बिशाला ५
तिहिंसब लोकलोक पतिजीते । भयेदेव सुख संपतिरीते ६
अजरअमरसो जीतिन जाई । हारे सुरकरि बिबिधिलराई ७
तब बिरंचि सन जाइ पुकारे । देखे बिधि सब देव दुखारे ८
दो० सबसन कहाबुझाइ बिधि दनुज निधन तब होइ ।
शंभु शुक्र संभूतसुत यहि जीतै रण सोइ ॥ ७९ ॥

और हिमाचल के पास जाकर पारवती के तप और बरदान का बृतांत कहकर उन्हें पारवती के लाने को भेजा सो हिमाचल पारवती को बड़ी बिनती से घरले आये १ फिरि सप्त ऋषियों ने शिवके पास जाकर पारवती की प्रीतिकी संपूर्ण कथा कही २ सो सुनकर पारवती के स्नेह में मग्न होगये सप्तऋषि अपने आश्रम को गये३ फिरितौ शिवजी अपने मनको स्थिरकरिके अपने इष्टदेव श्रीरामचन्द्र काध्यान करनेलगे ४ उसी समय एक तारक नाम दैत्य उत्पन्न हुआ जिसकी भुजान का बल और तेज महा बिशाल रहा ५ उसने समस्त लोक और लोकपाल जीति लिये सो संपूर्ण देवता सुख सम्पति से रहित होगये ६ अजर अमर दैत्य किसी से जीता न गया बहुतेरी लराई करकर सब देवता हारि गये ७ तबतौ सब एकट्ठे होकर ब्रह्मा के पास पुकारू हुए ब्रह्मा ने सब महादुखी देवता देखे ॥ ८ ॥ और सबसे समुझा कर ब्रह्माने कहा कि इस दैत्यका नाश तब होगा जब शिव के वीर्यसे पुत्र उत्पन्न होगा सो इसको संग्राम में जीतैगा ॥ ७९ ॥

मोरकहा सुनिकरहु उपाई। होइहि ईश्वर करिहि सहाई १
सतीजो तजी दक्षमखदेहा । जन्मी जाइ हिमाचल गेहा २
तिहिंतपकीन्ह शंभुपतिलागी। शिवसमाधि बैठेसब त्यागी ३
यदपि अहै असमंजस भारी। तदपिबात एकसुनहुहमारी ४
पठवहु कामजाइ शिवपाहीं। करहि छोभ शंकर मनमाहीं ५
तबहम जाइशिवहिसमुझाई। करबाउव बिवाह बरियाई ६
यहिबिधि भलेहिं देवहितहोई। मतअतिनीककहै सबकोई ७
अस्तुतिसुरन्हि कीन्हि तिहिंहेतू। प्रगटेउबिषम बाणझषकेतू ८
दो० सुरनिकही निजबिपतिसब सुनि मन कीन्ह बिचार ।
शंभुबिरोधन कुशलमोहि बिहसि कहाअसमार ॥८०॥

सो मेरा कहा सुनकर तुम उपाय करौ ईश्वर कृपा करैगा सिद्ध होजाइगा १ कि सतीने जो अपने पिता दक्षके यज्ञमें देह त्याग किया है सो हिमाचल के घर जन्मो है २ और उसने शिवके निमित्त तपभी किया है परंतु शिवतौ या समय सब त्याग करके समाधि लगाये बैठे हैं उनकी समाधि का क्या ठिकाना है जाने कब बिसर्जन होगी ३ सो यद्यपि है तौ बड़ा असमंजस तौ भी एक मेरी बातसुनो ४ कि कामको शिवके पासभेजो वह जाकर शिवके मनमें छोभकरै ५ फिरि तौ हमजाकरउनको समुझायलेवेंगे और वरियाई विवाह कराइलेवेंगे ६ इसप्रकार तुम्हारा भली भांतिसे हित होगा यह सुनकर सबनेकहाकि यह मत बहुतअच्छा है ७ तबतौ देवताओं ने उसके आवाहनके निमित्त जब उसकी प्रशंसाकी उसीसमय बिषम बाणकहैं पंच बाण अ-

र्थात् शब्द १ स्पर्श २ रूप ३ रस ४ गंध ५ ये पंचबाण जिसके ऐसा मीनध्वज काम प्रगट हुआ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तबतो देवताओं ने अपनी विपत्ति सब कही सो सुनकर उसने अपने मनमें बिचार किया कि शिवके बिरोध में हमको कुशल नही है यह बिचारि हंसकर बोला ॥ ८० ॥

तदपि करब मैंकाजतुम्हारा। श्रुतिकहपरमधर्म उपकारा १
परहित लागि तजहिं जोदेही। संतत संत प्रशंसत तेही २
असकहिचलेउसबहिशिरनाई। सुमनधनुषकरसहितसहाई ३
चलतमारअसहृदयविचारा। शिवविरोध ध्रुवमरणहमारा ४
तब आपन प्रभाव विस्तारा। निजबस कीन्ह सकलसंसारा ५
कोपेउ जबहिं बारिचर केतू। क्षणमहं मिटे सकल श्रुतिसेतू ६
ब्रह्म चर्य ब्रत संयम नाना। धीरज धर्म ज्ञान विज्ञाना ७
सदाचार जप योग विरागा। सभय विवेक कटकसब भागा ८
छं० भागेउ विवेक सहाइ सहित सो सुभट संयुग महिमुरे।
सदग्रंथ परबत कंदरनि महं जाइ तिहि अवसर दुरे॥
होनहार का करतार को रखवार जग खर भर परा।
द्वयमाथकिहिरतिनाथजिहिपरकोपिकरशरधनुधरा॥१॥
दो० जे सजीव जगचर अचर नारि पुरुष अस नाम।
ते निज निज मर्य्याद तजि भये सकल बस काम॥८१॥

यद्यपि मेरे मरने में तो कुछ संदेहही नहीं है तथापि मैं तुम्हारा यह कामकरूंगा क्योंकि वेद पर उपकार को परम धर्म कहते हैं १ पराये हितके निमित्त जो अपनी देह त्याग करता है उसकी संतजन सदैव प्रशंसा करते हैं २ यह कहि सबको प्रणाम करि कामदेव चला पुष्प धनुष और अपनी संपूर्ण सेना अर्थात् ऋतुराज बसंत संपूर्ण राग रागिनी रंभ दिक अप्सरा मयूर हंस शुक पिकादि सुन्दर पक्षी चम्पकादि वृक्ष शीतल मंद सुगन्ध पवन सब को संग लेकर ३ चलते समय काम ने विचार किया कि शिव के विरोध में मरना तो हमारा अवश्य है ४ तब तो अपना प्रभाव उसने दिखाया कि समस्त संसारको अपने वसमें करलिया ५ मीनध्वज कामदेवके कोप करतेही वेदों के मर्य्याद सेतु संपूर्ण क्षणमात्रही में टूट गये ६ काम का मुख्य शत्रु ब्रह्मचर्य तो पहलेही छुआकर गया उसके भागतेही नाना प्रकार के ब्रत, संयम, धैर्य्य, धर्म, ज्ञान, विज्ञान, सदा चार, जप, योग, वैराग, विवेकका कटक महा भयभीतहोकर भगा ७।८॥ दोहा ॥ यहां कामने चार चतुष्टयका विजय कियाहे अर्थात् तप, योग, ज्ञान, वैराग,

यह प्रथम चतुष्टय प्रभुतिसेतु हुआ १ देव, मनुष्य, तिर्य्यक्, स्थावर, दूसरा ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र, तीसरा ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वाणप्रस्थ, सन्यास, यह चौथा चतुष्टय हुआ इसनिमित्त काम के आतंक में चार हरिगीत छन्द चार चौपाइयों के पीछे पीछे कहे हैं। आगेउ विवेक छन्द का अर्थ। तबतो विवेक भी सेना समेत भाग गये क्योंकि उसके सुभट धैर्य धर्म्म ज्ञान, विज्ञान, आदि संग्राम भूमि को पीठि देकर सद्ग्रंथ वेद पुराणादि पर्वतों की कंदराओं में जाछिपे अर्थात् ग्रंथोंही में लिखे रहगये हे कर्तार कैसा होगा कौन बचावेगा यह खरभराहट संसार में परगया अरे ऐसा दो मूड़का कौन जिसपर रतिपति कामदेवने यह कोप करिके धनुष बाण लिया है ॥ १ ॥ दोहा ॥ जिन जीवधारियों का संसार में स्त्री पुरुष ऐसा नाम का भान होता है सोभी अपनी मर्य्यादा को छोड़कर काम के बस होगये ॥ ८१ ॥

सबके हृदयमदन अभिलाषा । लताबिलोकि नवहिंतरुशाखा १
नदी उमंगि अंबुधि कहं धाई । संगम करहिं तलाव तलाई २
जहंअसि दशाजड़निकी बरणी । कोकहि सकै सचेतन करणी ३
पशु पक्षी नभ जल थल चारी । भये कामबस समय बिसारी ४
मदनअंधव्याकुलसबलोका।निशिदिननहिंअवलोकहिंकोका ५
देव दनुज नर किन्नर व्याला । प्रेत पिशाच भूत बैताला ६
इनकी दशा न कहहुं बखानी । सदा काम के चेरे जानी ७
सिद्ध विरक्त महामुनि योगी । तेपि काम बस भये वियोगी ८
छं० भये कामबस योगीश तापस पामरनि की कोकहै ।
देखैं चराचर नारि मय जो ब्रह्म मय देखत रहैं ॥
अबला बिलोकहिं पुरुष मय जग पुरुष सब अबलामयं ।
द्वय दंड भरि ब्रह्मांड भीतर कामकृत कौतुक अयं ॥ २ ॥
सो० धरी न काहूधीर सबके मन मनसिज हरे ।
जेराखे रघुबीर ते उबरे तिहिकाल महं ॥ ८२ ॥

संपूर्ण जीवों के हृदय में बड़ी जो काम की अभिलाषा ताकरिके लताओंको देखकर वृक्षों की भी शाखा नवने लगीं १ नदियां उमगि उमगि कर समुद्र को दौरीं और तलाव तलाई परस्पर संगम करने लगे २ जहां कि ऐसी दशा जड़जीवों की होगई तहां फिरि सचेतन जीवों की करणी कौन कहसक्ता है ३ पशु पक्षी आकाशगामी और जल थल बासी जीव अपना अपना समय भूल कर सब के सब काम के बस होगये ४ समस्त लोक ऐसा कामांध व्याकुल होगया कि चकवाकों को भी रात्रि दिनको

संसार न रही ५ देवता, दैत्य, मनुष्य, किंपुरुष, नाग, भूत, प्रेत, पिशाच, इनकी दशा में कछु नहीं सक्ता येतो सदैव कामके किंकरही रहते हैं यह जानकर ६ । ७ सिद्ध कहैं मुक्तमानी अर्थात् भगवत् प्रपन्नविरक्त, महामुनीश्वर, योगारूढ़, स्वस्वरूपदर्शी भी काम के बस वियोगी होगये कि वृक्षोंसे स्त्रियों का पूछते फिरते हैं ॥ ८ ॥छन्दः ॥ जब कि योगीश्वर तपस्वीही काम बस हुये फिरि औरों की कौन गिनती है जो ब्रह्म ज्ञानी संसार को । सर्वं खु इदंब्रह्म । कहते रहे वेभी चराचर को नारि मयही देखने लगे स्त्रीतो संसार को पुरुष रूप और पुरुष स्त्री रूप देखने लगे दोघरी भरकर ऐसा काम कौतुक रहा ॥ २ ॥ सोरठा ॥ चार चतुष्टयमें से भगवत् प्रपन्न वितिरिक्त कोई भीतो न बचा ॥ किसीने धीरज न धरा सबके मनकाम ने हरिलिये जिनको रामहीने स्वाधीन जानिकर बचा लिया तेई उसकाल में बचे । सींवको चापि सकै घगतासू । बड़ रखवार रमापति जासू ॥ तिन कीन कास शकै चांप छाहं । तुलसीजो बसै रघुबीर बाहं ॥ ८२ ॥

उभयघरी असकौतुकभयऊ । जबलगि कामशंभु पहं गयऊ १
शिवहिबिलोकि सशंकेउमारू । भयउ यथास्थितसबसंसारू २
भये तुरत सब जीव सुखारे । जिमि मद उतरि गये मतवारे ३
रुद्रहि देखि मदन भय माना । दुराधर्ष दुर्गम भगवाना ४
फिरत लाज मन अति सकुचाई । मरणठानि मनरचेसि उपाई ५
प्रगटेसितुरतरुचिर ऋतुराजा । कुसुमितनवतरुराजबिराजा ६
बनउपबन बाटिका तड़ागा । परमसुभग सब दिशाबिभागा ७
जहंतहंजनउमगतअनुरागा । देखिमुयहुमनमनसिजजागा ८
छं० जागेउ मनोभव मुयेहु मनबन सुभगता न परै कही ।
शीतल सुगंध सुमंद मारुत मदन अनल सखा सही ॥
बिकसे सरनि बहुकंज गुंजत पुंज मंजुल मधु करा ।
कल हंसपिक शुक सरसरवकरिगाननाचहिं अप्सरा ३॥
दो० सकलकला करि कोटि बिधि हारेउ सेन समेत ।
चलीनअचल समाधिशिव कोपेउ हृदय निकेत ॥ ८३ ॥

दोही घरी ऐसा चमित्कार हुआ जब तक काम महादेव के पास न पहुंचा १ फिरितो शिवको देखतेही ज्यों काम शंकायमान हुआ त्योंही समस्त संसार यथा पूर्व थिर थामरहो गया २ और तत्कालही सबजीव कैसे सुखी होगये जैसे मदके उतर जाने से मतवारे सुखी हो जाते हैं ३ रुद्रके तौ देखतेही काम भय भीत होगया क्योंकि भगवान शिव दुराघर्ष कहैं दुःसह तेज और दुर्गम हैं ४ फिरि ते तो लाज आती है

तब तो अत्यन्त सकुचाइ और मनमें मरना निश्चय करिके उपाय किया ५ उसी काल में अति रुचिर बसंत प्रगटहोगया ता करिके नवीन वृक्ष फूलि गये ६ वन वाटिका तड़ाग और सब दिशा सुहावने होगये ७ जहां तहां प्रेमही उमंगने लगा जिसको देखकर मरे हुयेके मनमें भी काम जग उठा ॥ ८ ॥ छन्द ॥ जहां शीतल सुगन्धित अति मन्द पवन कामाग्नि का सखा चलता है तलाओं में सुन्दर कमल फूले हैं तिन पर भ्रमरों के समूह गुंजते हैं और सुन्दर हंस कोकिलादि पक्षी रस भरे स्वर से गान करने लगे और अपसरा नाचने लगी ॥ ३ ॥ दोहा ॥ या प्रकार काम देव अपनी समस्त कला करिके हारि गया परंतु शिवजी तो अचल समाधि हैं उनकी समाधिन छूटी तब तो हृदय निकेत काम बड़ा कोपित हुआ ॥ ८३ ॥

देखिरशाल्ल बिटपबरशाखा। तिहि परचढेउमदनमन माखा१
सुमन चापनिजशरसंधाने। अति रिसताकिश्रवणलगिताने२
छांडेबिषम बिशिख उरलागे। छूटि समाधि शंभु तब जागे ३
भयउईशमनक्षोभ बिशेखी। नयन उघारिसकल दिशिदेखी४
सौरभ पल्लव मदन बिलोका। भयउ कोप कंपेउ त्रैलोका ५
तब शिवतीसर नयन उघारा। चितवत कामभयउ जरिछारा६
हाहाकार भयेउ जग भारी। डरपे सुर भये असुर सुखारी७
समुझि कामसुखशोचहि भोगी। भये अकंटक साधकयोगी८
छं० योगी अकंटक भयउ पति गति सुनत रतिमूर्छित भई।
रोदतिबदति बहुभांति करुणाकरति शंकर पहं गई॥
अतिप्रेम करिबिनती बिबिधि बिधिजोरिकर संमुखरही।
प्रभुआशुतोषकृपालु शिवअबलानिरखिबोलेसही॥ ४ ॥
दो० अबतेंरति तवनाथ कर होइहि नाम अनंग।
बिनुबपुव्यापिहिसकलअंगसुनिनिजमिलनप्रसंग८४॥

और सुन्दर आम्रके वृक्ष की एक बड़ी शाखा देखकर उसपर चढ़गया मनमे क्रोध भरा १ पुष्प धनुष में शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध ये पांचहू अपने बाण संधान किये और बड़ी रिसतें ताकिकर कान पर्य्यंत खींचे २ जो महा विषमवाण उसने छोड़े सो ईश्वर की सहायता से। मसकहि करहिं बिरंचि प्रभु अजहि मसक ते हीन। महादेव के हृदय में जालगे और भगवत की इच्छा से समाधि छूटि गई शिवजी जागि उठे ३ और वड़ा इस विघ्नसे उनके मनमें क्षोभ हुआ आंख खोलिकर सब ओर देखा ४ तो आम्रके पल्लव में ज्यों काम को देखा त्योंहीं महा कोपहुआ जिसके मारे तीनो लोक

कम्पायमान होगये ५ तबतो सूर्य्य शशांक बन्हि नेत्र शिवजीने अपना तीसरा अग्नि नेत्र को खोला सो देखतेही काम जरिकर भस्म होगया ६ संसार में बड़ा हाहाकार हुआ देवता सब डरिगये दैत्यसुखी हुये ७ काम सुख समुझकर बिषयी लोग सोचने लगे और साधक सिद्धों का तो कांटा निकसि गया ॥ ८ ॥ छन्द ॥ रति अपने पतिकी यह गति सुनतेही मूर्छित होगई रोती चिल्लाती करुणा करती हुई महादेव के पास गई बड़े प्रेमसे बिनती करिके हाथ जोरिकर खड़ी होरही तबतो अति कृपालु शिव उसको अबला दुखी देखकर प्रामाण्य बचन बोले ॥ ४ ॥ दोहा ॥ हेरत शोच मति करै आजसे तेरे पतिका नाम अनंग होगा और बिना शरीर ही सबके अंग में व्याप्त होगा और तू अपने मिलने का भी प्रसंग सुनले ॥ ८४ ॥

जबयदुबंश कृष्ण अवतारा । होइहि हरण महा महिभारा १
कृष्णतनय होइहि पतितोरा । बचन अन्यथा होइ न मोरा २
रतिगवनी सुनि शंकर बानी । कथा अपर अबकहहुं बखानी ३
देवनि समाचार सब पाये । ब्रह्मादिक बैकुंठ सिधाये ४
सबसुर बिष्णु बिरंचि समेता । गये जहां शिव कृपा निकेता ५
पृथकपृथक तिन्ह कीन्ह प्रशंसा । भयेप्रसन्न चन्द्रअवतंसा ६
बोले कृपा सिंधु बृष केतू । कहहु अमर आये किहि हेतू ७
कहबिधिप्रभु तुम अंतरयामी । तदपि भक्तिबसबिनवौंस्वामी ८
दो० सकलसुरनि के हृदय अस शंकर परम उछाहु ।
निज नयननि देखा चहहिं नाथतुम्हारबिबाहु ॥८५॥

कि पूर्बमेरे निमित्त ईश्वरने जो बरदान दियेहैं । बाराहपुराणे ॥ देव कार्य्यावतारेषु मानुषत्वमुपागते । त्वामेवाराधयिष्यामि त्वं चमेवरदोभव ॥१॥ बिष्णु भगवान शिवको बरदान देतेहैंकि हेशिव जब देवताओंके कार्यांके निमित्तअवतार लेकर मनुष्यत्व को धारण करूंगा तबमैंतुम्हारा आराधनकरूंगा तुममुझको बरदान दीजियेइसअपने बरदानपूर्णकरनेको जब यदुकुलमें जन्म लेकर पुत्रोत्पत्तिके अभिलाषसे कैलाश यात्रा और मेरा पूजन करके पुत्रबर मांगेंगे तबमैं तेरे पतिको उनकी पुत्रता निमित्त उनको बरदान दूंगा तब तेरा पति उनका पुत्र होकर तुम्हें मिलेगा १ । २ ऐसे शिवजीके बचन सुन कर रतितो जाती हुई अब आगेकी कथा सुनो ३ कि देवताओं ने जोये समाचार पाये ब्रह्मा को आगे करिके भगवान बिष्णु के पास गये फिर सब देवता ब्रह्मा बिष्णु समेत शिवजीके पास कैलाशको गये ४ । ५ तहां सबने जब शिवकी अति प्रशंसा करी तबतो चन्द्रशेखर शिवजी प्रसन्न होकर बोले कि हे देवताओ किस निमित्त आयेहो सोकहो ६ । ७ तब ब्रह्मा ने कहा कि हे प्रभु आप तो अंतरयामी हैं सब जानते हो तथापि

हे भक्ति बस स्वामी मेरी यह बिनती है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इन समस्त देवताओं के मन में हे शंकर यह बड़ा उत्साह है कि अपने नेत्रोंसे हे नाथ आप का बिबाह देखा चाहते हैं ॥ ८५ ॥

यहउत्सवदेखहिं भरिलोचन। सोइकछुकरहु मदनमदमोचन१
कामजारि रतिकहंबरदीन्हा। कृपासिंधु यहअति भलकीन्हा२
सासतिकरिपुनिकरहिं पसाऊ। नाथप्रभुन करसहजसुभाऊ ३
पारवती तप कीन्ह अपारा। करहु तासु अब अंगीकारा ४
सुनिबिधिबचन समुझिप्रभु बानी। ऐसेहिंहोव कहासुखमानी५
तब देवनि दुंदुभी बजाई। बर्षि सुमन जय जय सुरसांई ६
अवसरजानिसप्तऋषिआये। तुरतहिंबिधिगिरिभवनपठाये७
प्रथम गये जहं रही भवानी। बोले बचन मधुर छल सानी ८
दो० कहाहमार न सुनेहु तब नारद कर उपदेश।
अबभा झूठ तुम्हार प्रण जारेउ काम महेश ॥ ८६ ॥

सोयह महोत्सव जैसे सब देवता नेत्रों भरकर देखैं तैसाही आपको कर्त्तव्य है १ और कामको जराकर जो आपने रतिको वरदान दिया सोहे कृपा सिंधु यहतो आपने अतिही भला काम किया २ क्योंकि अयोग्यता का दंड देकर फिरि कृपाही करतेहैं हेनाथ यहतो स्वामियों का सहज सुभाव होताहीहै ३ पारबती ने आप के निमित्त बड़ा तप कियाहै तातें अब उसकोभी गृहण करना आपको योग्य है ४ ऐसे ब्रह्माके बचन सुनकर उसको बड़ोंकी आज्ञा समुझकर सुख पूर्व्वक कहा कि ऐसाही होगा ५ तबतो देवताओंने दुन्दभी बजाई पुष्प बर्षाये और जय जय शब्द उच्चारण किया ६ यहसुन्दर समय जानि कर सप्तर्षि भी आगये सो ब्रह्माने उसी समय उन को हिमाचल के घर भेजा ७ प्रथम तो सप्तऋषि जहां पारवती रहै तहां जाकर छल भरे मीठे बचन बोले ॥ ८ ॥ दोहा ॥ किलेहु तब तो तुमने नारद के उपदेश से हमारा कहा नहीं सुना अब तुम्हारा संपूर्ण प्रणहीं झूठा होगया क्योंकि बिवाह के मूल कामकोही महादेव ने जरादिया ॥ ८६ ॥

सुनिबोली मुसुकाइभवानी। उचितकहेहुमुनि बरविज्ञानी १
तुम्हरे जानकाम अबजारा। अबलगि शंभुरहेसविकारा २
हमरे जानसदा शिवयोगी। अजअनवद्यअकामअभोगी ३
जोमैं शिवसेये असजानी। प्रीति समेत कर्म मन बानी ४

तौहमार प्रणसुनहुमुनीशा । करिहहिं सत्यकृपानिधिईशा ५
तुमजो कहाहर जारेउमारा । सोउमुनिबडअविवेकतुम्हारा ६
तातअनलकरसहजसुभाऊ । हिमतिहिनिकटजाइनहिंकाऊ ७
गयेसमीपसोअवशिनशाई । तिमिमनमथ महेशपहं जाई ८
दो० हियहर्षेमुनिबचनसुनिदेखिप्रीतिविश्वास ।
चलेभवानिहिं नाइशिरगये हिमाचल पास ॥ ८७ ॥

ऐसे मुनीश्वरों का बचन सुन कर पारवती ने हंस कर कहा कि हे बिज्ञानी मुनि आपने ठीक कहा १ आपके जानमें महादेव ने काम को अब जराया है अभी तक शिव कामाशक्त रहे २ हमारे जानमें शिव सदैव योगी और अजन्मा अनिंद्य काम भोग रहित हैं ३ जो मैंने शिव को ऐसाही जान कर सेवन कियाहै बड़ी प्रीति समेत कर्म मन बाणी करके ४ तो हमारे प्रण को हे मुनीश्वरो कृपा निधान शिव जी स्वामी सत्यही करेंगे झूठ कदापि न होगा ५ और तुमने कहाकि काम शिव जीने जराया सो भी तुम्हारा बड़ा अज्ञान है ६ सुनो हे तात अग्नि का तो सोभाविक स्वभावही है कि तुषार उसके पास कभी नहीं जाताहै ७ और पास गयेसे जैसे अग्नि से तुषार अवश्य नाश होताही है तैसेही काम शिवके पास जाकर आपही नाश होजाता है शिवको जराने से उसके क्या प्रयोजन है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसी पारवती की प्रीति और बिश्वास देख कर और बचन सुन कर सप्तऋषि बड़े प्रसन्न हुये और पारवती को प्रणाम करके उनके पिता हिमाचल के पास गये ॥ ८७ ॥

सबप्रसंगगिरिपतिहिसुनावा । मदनदहनसुनिअतिदुखपावा १
बहुरिकहेउ रतिकरबरदाना । सुनिहिमवंत परमसुखमाना २
हृदय विचारि शंभुप्रभुताई । सादर मुनिवर लिये बुलाई ३
सुदिनसुनखत सुघरी सुहाई । वेगि वेद विधि लग्नधराई ४
पत्रीसप्तऋषिन्हसोदीन्ही । गहिपदविनयहिमाचलकीन्ही ५
जाइविधिहितिन्हदीन्हिसोपाती । बांचतप्रीतिनहृदयसमाती ६
लग्नबांचिविधि सबहिसुनाई । हर्षे मुनि सबसुर समुदाई ७
सुमनवृष्टि नभबाजन बाजे । मंगलकलशदशहुंदिशिसाजे ८
दो० लगे संवारन सकल सुर बाहन बिबिधि विधान ।
होंहिंसगुण मंगल सुभग करहिं अप्सरागान ॥ ८८ ॥

तहां जाकर संपूर्ण शिव चेष्टित प्रसंग हिमाचल को सुनाया सो काम दाह सुनकर

बड़ा दुख पाया १ तिस पीछे जब रतिको बरदान देना कहा उसको सुनकर हिमाचल ने बड़ा सुख माना २ हृदयमें महादेवकी प्रभुता बिचार कर बड़ी प्रीति समेत अपने निकट बासी मुनीश्वरों को बुलाया ३ उन्होंने सुन्दर दिन नक्षत्र योग बार करी मुहूर्त्त पंचांग बेद बिधि पूर्वक लग्न लिखाई ४ सो पत्री सप्तऋषियों कोदेदी और पैरों परिके हिमाचल ने बड़ी बिनती ब्रह्मा जीकोकहा भेजी ५ सप्तऋषियोंने सोलग्न पत्रिका जाकर ब्रह्माको देदी उसके बांचतेही ब्रह्माके हृदयमें प्रसन्नता नहीं समाती है कि मैंने अपने दुलहा पुत्रका बिवाह आज ठहराइ पायाहै ६ जब लग्न बांच कर ब्रह्मा ने सब देवताओं को सुनादी तबतो संपूर्ण मुनीश्वर और देवताओंके समुदाय सब प्रसन्न होगये ७ आकाशसे पुष्प बर्षा हुई बाजे बजने लगे मंगल कलशा दशहूं दिशाओं में साजे गये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ और संपूर्ण देवता अपने अपने अनेक भांतिके बाहनों को संवारने लगे और सुन्दर मंगल सगुण होने लगे अप्सरा गान करने लगीं ॥ ८८ ॥

शिवहिंशंभुगणकरहिंशृंगारा । जटामुकुट अहिमौरसंवारा १
कुंडल कंकण पहिरे ब्याला । तन बिभूति कटि केहरि छाला २
शशिललाट सुंदर शिरगंगा । नयन तीनि उपवीत भुजंगा ३
गरलकंठउर नरशिरमाला । अशिवबेष शिवधामकृपाला ४
करत्रिशूल अरु डमरुबिराजा । चलेबसहचढ़ि बाजहिंबाजा ५
देखिशिवहिंसुरतियमुसुकाहीं । बरलायकदुलहिनिजगनाहीं ६
बिष्णुबिरंचि आदि सुरब्राता । चढ़िचढ़ि बाहन चलेबराता ७
सुरसमाज सब भांतिअनूपा । नहिं बरात दूलह अनुरूपा ८
दो० बिष्णुकहा अस बिहंसि तब बोलि सकल दिशिराज ।
बिलगबिलग कै चलहुसब निजनिज सहितसमाज८९॥

अब शिवजीको उनके गण शृंगार करने लगे जटाका तो सुन्दर मुकुट और सर्पों का मौर संवार कर शिरपर रखदिया १ कुंडल कंकणोंके स्थानभी सर्पही पहर लिये संपूर्ण शरीरको बिभूति भूषित करके कटिको सिंहकी खालसे बांधा २ बाल चन्द्रमाको ललाट पर और सुंदर गंगाको शिरपर धारण किया तीनि नेत्र महा भुजंगका उपवीत धारण किया ३ कंठ में बिष हृदय में कपाल माला सोहे है वेषतो महा अमंगल और आप समस्त कल्याण गुणोंके धाम और परम कृपालु हैं ४ दक्षिण हस्तमें त्रिशूल बाम हस्तमें डमरू बिराजै है ऐसा शृंगार करके नंदिकेश्वर पर चढ़कर चल दिये आगे आगे बाजे बाजते जातेहैं ५ ऐसी शोभा शिवकी देखकर देव बधू परस्पर मुसुकाती हैंकि ऐसे बर योग्य दुलहिनितो तीनि लोकमें नहींहै ६ अबतो शिवके चल-

तेही विष्णु ब्रह्मादि देवताओंके समूह अपने अपने वाहनों पर चढ़ि चढ़ि कर बरात चलते हुये ७ यद्यपि देवताओं का समाज सब भांति सुन्दर है तथापि बरात दूलहके योग्य नहीं बनी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ यह देखकर विष्णु ने सब दिशिपालों को बुला कर कहा कितुम सब अपने अपने समाज समेत अलग अलग होकर चलो ॥ ८६ ॥

बर अनुहार बरात न भाई । हंसी करैहहु परपुर जाई १
विष्णुबचनसुनि सुरमुसुकाने ।निजनिजसेनसहितबिलगाने २
मनहीं मन महेश मुसुकाहीं । हरिके व्यंग बचन नहिंजाहीं ३
अतिप्रिय बचन सुनत हरिकेरे । भृंगी प्रेरि सकल गणटेरे ४
शिवअनुशासनसुनिसबआये ।प्रभुपदजलजशीशतिन्हनाये ५
नाना बाहन नाना बेषा । बिहंसे शिवसमाज निजदेखा ६
कोउमुखहीन बिपुलमुखकाहू। बिनुपदकर कोउबहुपदबाहू ७
बिपुलनयनकोउनयनबिहीना। हष्टपुष्ट कोउअतितनुक्षीना ८
छं० तनुक्षीनकोउअति पीन पावनकोउ अपावनगति धरैं ।
भूषणकराल कपाल कर शव सद्य शोणित तनु भरैं ॥
खर स्वान सुअर शृगाल मुखगणवेष अगणित कोगनै ।
बहुजिनिसिप्रेतपिशाच योगिनि जातिबरणतनहिंबनै १
सो० नाचहिं गावहिंगीत परम तरंगी भूत सब ।
देखत अति विपरीत बोलहिं बचन विचित्र विधि १०॥

क्योंकि बरके अनुरूप तो बरात हैही नहीं क्या पराये पुरमें जाकर अपनी हंसी करावोगे १ ऐसे विष्णुके वचन सुनतेही सेना समेत सब देवता अलग अलग होगये २ महादेव मनहीमें मुसुकाते हैं कि विष्णुके व्यंग बचन नहीं जातेहैं ३ अतिही प्यारे विष्णुके बचन सुनकर भृंगी गणसे कहकर अपने संपूर्ण गण बुलाये ४ शिवका अनुशासन सुनकर सबोंने आकर प्रणाम किया ५ नाना प्रकारकेतो जिनके वाहनहैं और नानाप्रकारके बेषहैंसो शिवजीभी अपना समाज देखकर हंसेहैं किसीकेतो मुखही नहीं किसीके अनेक मुख हैं कोई बिनाहाथ पाउं केहै किसीके अनेक हाथ पाउंहैं ७ कोई अनेक नेत्रोंवाले किसीके नेत्रही नहीं कोई बड़ा चौड़ा अति मोट है कोई अतिही दूबर है ॥ ८ ॥ छन्द ॥ कोई पावनहै कोई अपावनहै महाकराल जिनके भूषणहैं और नवीन रुधिरसे शरीर हैं शूकर स्वान खर शृगालोंके उनके मुखहैं अनेक जातिकेभूत प्रेत पिशाच योगिनी कहे नहीं जातेहैं १ ॥ सोरठा ॥ परम तरंगी भूतोंके गण नाचते गातेचले जातेहैं देखनेहीमें भयंकरहैं परंतुवचन सुन्दरमधुर मनोहर बोलतेहैं ॥ ६० ॥

जसदूलह तसिबनी बराता। कौतुक बिबिध होंहिं मगुजाता १
उहां हिमाचलरचेउ बिताना। अति बिचित्रनहिं जाइबखाना २
शैलसकलजहंलगिजगमाहीं। लघुबिशालनहिंबरणिसिराहीं ३
बन सागरनदनदीतलावा। हिम गिरि सबकहं निवतपठावा ४
काम रूप सुंदर तनु धारी। सहित समाज सहित सुतनारी ५
गये सकल तुहिनाचलगेहा। गावहिं मंगल सहित सनेहा ६
प्रथमहिं गिरिबहुगृहसंवराये। यथायोग जहंतहं सबछाये ७
पुरशोभा अवलोकि सुहाई। लागहिलघु बिरंचि निपुणाई ८
छं० लघु लागु बिधिकी निपुणता अवलोकि पुरशोभासही।
बनबाग कूप तडाग सरिता सुभगता न परै कही॥
मंगल बिपुल तोरण पताका केतु गृहगृह शोहहीं।
बनितापुरुष सुंदरचतुर छबिदेखि मुनिमन मोहहीं॥२॥

दो० जगदंबा जहं अवतरी सो पुर बरणि कि जाइ।
ऋद्धिसिद्धि संपतिसकल नित नूतन अधिकाइ॥९१॥

अबतौ जैसा दूलहरहै तैसीही बरात भी बनगई सो देख देख करके अनेक प्रकारके कौतुक कहें हास्य रस मार्गमें होते चले जातेहैं १ यहां हिमाचल ने अतिही सुन्दर बितान बिवाह मंडप बनाया २ और बिंध्यादि आदि संसारके छोटे बड़े सब पर्बत ३ नैमषादि संपूर्ण वन क्षारादि सुमुद्र शोण भद्रादि नद गंगादि नदी पुष्करादि सरों को हिमाचल ने निमंत्रण करि भेजा ४ सो काम रूपकहें इच्छा रूपसुन्दर शरीर धारण करि अपने समाज स्त्रीपुत्रों समेत ५ मंगल गाते हुये हिमाचल के घरगये माने इनकु बावाही का बिवाह है ६ हिमाचल ने पहलेही से अनेक घर बनवा रक्खेहैं उनमें यथा योग ठहरा दिये ७ अब निवत हरियों के आने से नगरकी सुन्दर शोभाको देखकर ब्रह्माकी भी करतूति छोटी लगतीहै॥८॥ छन्द॥ कि नगरके बाहिर के बनबाग बाउरी कूप नदियों की सुन्दरता कुछ कहीनहीं परती है भीतर नगरमें घर घर अनेक मंगल अर्थात् सुन्दर चौके कलश कदली बंदन वारी इत्यादि तोरण पताका केतु शोभाय मान होरहेहैं और पुरके सुन्दर चतुर स्त्रीपुरुषों की छबि को देखकर मुनीश्वरों के मन मोहते हैं॥२॥ दोहा॥ जहां जगदम्बा आपअवतरी है तिस पुरकी शोभा कैसे कहां जातीहै जहां ऋद्धि सिद्धि सुख संपति नित्य नवीन बढ़तीही जाती है॥९१॥

नगर निकट बरात सुनिआई । पुर खर भर शोभा अधिकाई १
करि बनाव सजि बाहननाना । चलेलेन सादर अगवाना २
हिय हर्षे सुर सेन निहारी । हरिहि देखि अति भयेसुखारी ३
शिव समाज जब देखनलागे । बिडरि चले बाहन सबभागे ४
धरि धीरज तहं रहे सयाने । बालक सब लै जीव पराने ५
गयेभवन पूछहिं पितुमाता । कहहिं बचन भयकंपित गाता ६
कहैंकहा कहि जाइ न बाता । यमकीधारि किधौं बरियाता ७
बर बौराह बरद असवारा । ब्याल कपाल बिभूषण छारा ८
छं० तनछार ब्याल कपाल भूषण नग्न जटिल भयंकरा ।
संग भूत प्रेत पिशाच योगिनिबिकट मुख रजनीचरा ॥
जो जितय रहहिबरात देखतपुण्यबड़ तिहि करसही ।
देखिहिसो उमाबिवाह घरघरबातअसि लरिकनिकही ३
दो० समुझिमहेश प्रभावसब जननि जनक मुसुकाहिं ।
बालबुझाये बिबिधिबिधि निडर होहु डर नाहिं ॥ ९२॥

नगरके समीप बरात आई सुनिकर पुरमें घर भर कहें धूम धामकी शोभा और भी अधिक हुई १ अपने अपने बाहन और बनाव सजि सजि कर अगवानी लेनेको चले २ प्रथमहि देवता ओंकी सेना को देखकर हृदयमें पसन्न हुये कि बरात बहुत अच्छी आई फिरि विष्णुको देखकर तो अतिही सुखीहुये कि दूलह भी अति सुन्दर है ३ परंतु शिवका समाज जब देखने लगे तबतो सबके वाहन तितिर बितिर होकर भागने लगे ४ धीरज धरिके बड़े बूढ़ेहो तो तहां ठहरे बालक तो अपने अपने प्राण लेकर भागे ५ घरगये पर माता पिता पूछते हैं कहो बरात कैसी आई शीघ्रकैसे चले आये सो उत्तर देते कांपतेहैं ६ किहम कहेंक्या हमसे बाततो कहीही नहींजातीहै हमनहीं जानतेहैं यमकी धारि आईहै कि बरातहै ७ बौरा उन्मत्त तो बरहै बैलपर चढ़ाहै सर्प और कपालही भूषणहैं भस्म धूलित अंगहैं ॥ ८ ॥ छन्द ॥ नंगा और जटाधारी भयंकर बेषहै साथमें भूत प्रेत पिशाच योगिनी और निशाचर हैं ऐसी बरात को देखकर जोजीता रहेगा सोविवाह देखेगा ॥ ३ ॥ दोहा ॥ महादेव का प्रभाव समुझ कर उनके माता पिता हंसने लगे और उनको समुझाया कि निर्भय होजावो कुछ डर नहींहै ॥ ९२ ॥

लै अगवान बरातहि आये । दिये सबहि जन बास सुहाये १

मयना शुभ आरती संवारी । संग सुमंगल गावहिं नारी २
कंचन थार शोह बर पाणी । परछन चलीं हरहि हरषानी ३
बिकट बेष रुद्रहि जब देखा । अबलनि उर भय भई बिशेषा ४
भागिभवन पैठीं अति त्राशा । गये महेश जहां जनवासा ५
मयनाहृदयभयउदुखभारी । लीन्हि बोलिगिरिराजकुमारी ६
अधिकसनेह गोद बैठारी । श्याम सरोज नयन भरिबारी ७
जिहिबिधितुमहिंरूपअसदीन्हा । तिहिजड़बरबाउरकसकीन्हा
छं० असकीन्ह बरबौराह बिधि जिहिं तुमहिंसुन्दरता दई ।
। जोफल चहिय सुर तरुहि सोबरबस बबूरहि लागई ॥
॥ तोहि सहित गिरितेंगिरौं पावकजरौंजलनिधि महंपरौं ।
। घरजाउअपयश होउ जगजीवतबिबाहनहीं करौं ॥ ४ ॥
दो० भईबिकल अबला सकल दुखित देखि गिरि नारि ।
। करिबिलाप रोदति बदति सुतासनेह संवारि ॥ ९३ ॥

इतने में अगवानी बरात को लेआये और सुन्दर जनवास देदिये १ मयना ने मंगल आरती बनाई और सखियों को साथ लेकर मंगल गान करतीं २ सौवर्णथार लेकर प्रसन्न मनोहर के परछने को चलीं ३ जब विकट बेष रुद्र को देखा तो सबकी सबभय भीत होगईं ४ और डरके मारे भाग कर घरमें पैठरहीं महादेव जनवासे को चलेगये ५ मयना के हृदय में महा दुःख हुआ पारवती को बुलाया ६ गोद में बैठार कर आंसू भर लिये औ बोली ७ कि जिस विधाता ने तुम को ऐसी सुन्दरता दीहै उस जड़ने ऐसा बौरहा बर क्यों बनाया ८ छन्द ॥ जो फल कल्प वृक्षमें लगना चाहिये सोबरिआई से बबूर में लगाजाता है तातें तो समेत पर्वत परसे गिरकर तो मरजाऊं अग्नि में जर जाऊं समुद्र में बूड़मरूं घर उजर जाओ संसार में अपयश भलेही हो जावे परंतु यह बिवाह तो जीते जी मैंनहीं करनेकी ४ दोहा ॥ इस प्रकार मयना को दुखी देखकर संपूर्ण सखी व्याकुल होगईं कि अपनी बेटीके स्नेह में बिलापकरती हैं९३ ॥

नारद कर मैं काहबिगारा । भवन मोर जिन्हबसत उजारा १
असउपदेशउमहिंजिन्हदीन्हा । बौरेबरहि लागि तपकीन्हा २
सांचेहु उनके मोह न माया । उदासीन धन धाम न जाया ३
परघर घालक लाज न भीरा । बांझ कि जान प्रसवकी पीरा ४

जननिहिंबिकलबिलोकिभवानी । बोलीयुत बिबेक मृदुबानी ५
असबिचारिजनिसोचहुमाता।सोनमिटिहिजोलिखाविधाता ६
कर्म लिखा जो बावर नाहू । तौ कत दोष लगावहु काहू ७
तुमसनमिटिहिंकिबिधिकेअंका । मातुब्यर्थजनिलेहु कलंका ८
छं० जनिलेहु मातु कलंक करुणा परिहरहु अवसर नहीं ।
दुख सुखजो लिखा लिलार हमरेजाबजहं पाउबतहीं ॥
सुनि उमावचन बिनीत कोमल सकल अबलासोचहीं ।
बहुभांति बिधिहिलगाइ दूषण नयनबारि बिमोचहीं ९॥
दो० तिहि अवसर नारद सहित अरु ऋषि सप्त समेत ।
समाचारसुनि तुहिन गिरि गवने तुरत निकेत ॥ ९४ ॥

हाइ नारद का चाने से मैं क्या बिगारा है जो उन्हों ने मेरा बसता हुआ घर उजार दिया १ ऐसा उपदेश जिसने पारबती को दिया कि बावरे बरके निमित्त ऐसा उग्र तप किया २ सच मुच उनको किसी का माया मोहनहीं है सबसे उदासीन हैं धन धाम स्त्री का मर्म नहीं जानते हैं ३ पराये घरों को बिगारते फिरते हैं न किसी की लाज न किसी का डर सच है बाँझ प्रसूति की पीर को क्याजाने ४ या प्रकार पारबती अपनी माता को महा व्याकुल देख कर ज्ञान संयुक्त कोमल बाणी बोली कि हे माता जो कुछ बिधाता ने लिख रक्खा है सो नहीं मिटैगा यह बिचारि के सोच मतिकरो ६ ॥ जो हमारे कर्म में बावराही बर लिखा है तो किसी को क्यों दोष लगावती हो ७ ॥ भला तुम्हारे मिटाने से दैवाक्षर मिटि सकते हैं क्यों झूठही कलंक लेतीहो ॥ ८ ॥ छन्द ॥ यह समय करुणा करने का नहीं है इसका त्याग करो दुख सुख जो हमारे कर्म में लिखा है सो हमारे साथ है जहां जावैंगी तहां भोगैंगी ऐसे पारबती के बचन सुन कर सब सखी सोचतीहैं और दैव को दूषण दे आंसू डारतीहैं ॥ ९ दोहा ॥ ये समाचार सुन कर हिमाचल नारद और सप्त ऋषियों को साथ लेकर उसी समय तुरंतही भीतर रनिवास को गये ॥ ९४ ॥

तबनारद सब कहं समुझावा । पूरब कथाप्रसंग सुनावा १
मयना सुनहु सत्य ममबानी । जगदम्बा तब सुताभवानी २
अजाअनादिशक्तिअविनाशिनि।सदाशंभुअर्द्धंगनिवाशिनि ३
जगसंभव पालन लयकारिणि । निजइच्छालीलाबपुधारिणि ४
जन्मी प्रथम दक्ष गृह जाई । नाम सती सुंदर तनु पाई ५

तहूं सती शंकरहिं बिबाहीं । कथा प्रसिद्ध लोकतिहुं माहीं ६
एक बार आवत शिवसंगा । देखे रघु कुल कमल पतंगा ७
भयउमोहाशिव कहानकीन्हा । भ्रमबस बेषसीय करलीन्हा ८
छं० सियबेष सती जोकीन्ह तिहिअपराध शंकर परिहरी ।
हर बिरह जाइ बहोरि पितुके यज्ञ योगा नल जरी ॥
अबजन्मितुम्हरे भवननिजपति लागिदारुणतपकिया ।
असजानिसंशय तजहुगिरिजा सर्बदाशंकरप्रिया ॥ ९ ॥
दो० सुनि नारद के बचन बर सब कर मिटा बिषाद ।
क्षणमहं ब्यापेउ सकलपुर घर घर यह संबाद ॥ ९५ ॥

तबतो नारदने सबको समुझाकर पारबती के पूर्व जन्मका प्रसंग सुनादिया १ कि हे मयना मेरी बात सुनो मैं कभी झूठ नहीं कहता हूं मैंतो तभी तुमसे कहगया था कि तुम्हारी पुत्री उमा है जगदम्बा है भव महादेवकी भार्य्या भवानी है तुम्हारी समुझ में नहीं आया मेरा क्या दोष है अब तुम इसके स्वरूप को सुनो २ यह अजन्मा है अनादि शक्ति है अविनाशिनि है सदैव महादेव के आधे अंग में निवास करती है ३ यही संसार को उत्पन्न करती है पालती है संहार करती है और अपनी इच्छा से लीला शरीर धरती है ४ प्रथम यह दक्षप्रजापति के घर सती नाम करके जन्मी रहे ५ तहां भी महादेवही को बिवाही गई संसार जानता है ६ सो एक समय शिव के साथ चलेजाते इसको श्री रामचन्द्र की नर लीला देख कर मोह हो गया महादेव का कहा न माना मोहके बस सीता का रूप धरलिया ७।८ ॥ छन्द ॥ इस अपराध से महादेव ने इसका त्यागन किया इस सती ने शिवके बियोग से अपने पिता के यज्ञ में देह त्याग किया अब तुम्हारे घरमें जन्म लेकर अपने पति के निमित्त तप किया है तुम संशय क्यों करती हो यहतो सनातन शिवं प्रियाही है ॥ ९ ॥ दोहा ॥ ऐसे नारद के बचन सुनते ही सबका दुःख दूरि होगया और क्षण मात्रही में यह संबाद घर घर फैलिगया ॥ ९५ ॥

तब मयना हिमवंत अनंदे । पुनि पुनि पारबती पद बंदे १
नारिपुरुष शिशु युवासयाने । नगरलोग सब अतिहरषाने २
लगे होन पुर मंगल गाना । सजेसबहिं हाटक घटनाना ३
भांति अनेक भई जिवनारा । सूपशास्त्रजसकछु ब्यवहारा ४
सोजिवनारकि जाइबखानी । बसहिंभवनजिहिमातुभवानी ५

सादर बोले सकल बराती । बिष्णु बिरंचि देव सबजाती ६
बिबिधिपांति बैठीजिवनारा । लगेपरोसन निपुण सुआरा ७
नारि बृंद सुर जेंवत जानी । लागी देन गारि मृदुबानी ८
छं० गारी मधुर स्वर देहिं सुंदरि ब्यंग बचन सुनावहीं ।
भोजनकरहिंसुर अतिबिलंब बिनोदसुनि सुखपावहीं ॥
जेंवत जोबढ्यो अनंद सो मुखकोटिहूं न परै कह्यो ।
अचवाइदीन्हे पानगवने बासजहं जाकोरह्यो ॥ ७ ॥
दो० बहुरि मुनिन्ह हिमवंत कहं लग्न सुनाई जाइ ।
समय बिलोकि बिवाहकर पठये देव बुलाइ ॥ ९६ ॥

तबतो मयना और हिमाचल ने आनंदित होकर बारं बार पारबती के चरणों का बंदन किया १ और नगर बासी छोटे बड़े स्त्री पुरुष भी सब प्रसन्न होगये २ घर घर नगर में मंगल गान होने लगे मंगल कलश घर घर धरे गये ३ फिरि अनेक भांति जिवनार बनाई गई सूपशास्त्र में जैसा बिधान है छ रस चारि प्रकार की ४ जिस घरमें माता भवानी आप बिराजती हैं सो जिवनार कैसे बरणी जाती है ५ फिरि आदर समेत समस्त बराती बोले गये प्रथम बिष्णु ब्रह्मा फिरि सब जातिके देवता अर्थात् इन्द्र यम बरुण कुबेर अग्नि नैऋत वायु ईशान आठो दिग्पाल ८ बसु ११ रुद्र १२ आदित्य ४९ मरुत और संपूर्ण देव मुनि सिद्ध चारण गन्धर्व यक्ष रक्ष भूत प्रेत पिशाच इत्यादि ६ अपनी अपनी पांतिसे बैठे और परोसा हुआ ७ स्त्रियों ने जो देवताओं को जेंवते देखा तो मधुर स्वरसे गारी गाने लगीं ८ ॥ छंद ॥ और व्यंग बचन अर्थात् अपने पुरुष और देवताओं की स्त्रियों का संबंध सुनाने लगीं सो सुनकर देवता बड़े आनन्दित होते हैं और बिलम्ब से भोजन करते हैं उस समय का आनन्द कहा नहीं परता है भोजनके पीछे आचमन और पान लेलेकर अपने अपनेबास स्थान कोगये ७ ॥ दोहा ॥ तिस पीछे मुनीश्वरों ने हिमाचल को बिबाह लग्नजा सुनाई सो बिवाह का समय जानकर हिमाचल ने सब देवताओं को बुला भेजा ॥ ९६ ॥

बोलिसकल सुरसादरलीन्हे । सबहियथोचितआसनदीन्हे १
बेदी बेद बिधान संवारी । सुभग सुमंगल गावहिं नारी २
सिंहासन अतिदिब्यसुहावा । जाइ न बरणि बिरंचिबनावा ३
बैठे शिव बिप्रन्हि शिरनाई । हृदयसुमिरिनिजप्रभुरघुराई ४
बहुरि मुनीशन्हि उमा बुलाई । करि शृंगारसखी लैआई ५

देखत रूप सकल सुर मोहैं । बरणहिं छबिअसजगकबिकोहैं ६
जगदम्बिकाजानिभवभामा । सुरनिमनहिंमनकीन्ह प्रणामा ७
सुंदरता मरयाद भवानी । जाइ न कोटिहुं बदन बखानी ८
छं० कोटिहुबदननहिंबनहि बरणतजगजननिशोभा महा ।
सकुचाहिं कहत श्रुतिशेष शारद मंद मतितुलसीकहा ॥
छबि खानि मातुभवानिगवनी मध्यमण्डप शिवजहां ।
अवलोकि सकतिनसकुचिपतिपदकमलमनमधुकरतहां
दो० मुनि अनुशासन गणपतिहि पूजेउ शंभु भवानि ।
कोउ सुनि संशय करहि जनि सुरअनादिजियजानि ९७

संपूर्ण देवताओंको आदर समेत बुलाकर यथा योग्य आसन दिये १ और वेद विधि पूर्वक बेदी रचीगई और बिवाह समय के सुन्दर सुमंगल सखीं गाने लगीं २ और ब्रह्मा करिके रचित जो सुन्दर दिव्य सिंहासन तापर शिवजी समस्त मुनीश्वरों को नमस्कार कर अपने इष्टदेव रामरूप बिष्णु भगवान का हृदय में स्मरण करिके बिराजमान हुये ॥ ३ । ४ ॥ तिसपीछे मुनीश्वरों ने उमापारवती को बुलाया सोसुन्दर शृंगार करिके सखीं ले आईं ॥ ५ ॥ जिसकी छबिको देखकर संपूर्ण देवता मोहतेहैं उसकी छबिकोबरणन करैं ऐसेजगमें कौनसे कवीश्वर हैं ॥ ६ ॥ देवताओंने जगदंबा जानकर मनहीमनमें प्रणाम किया ॥ ७ ॥ सुन्दरता की सीवां पारवतीकी छबि कोटि मुखसेभी कहतेनहींबनती ॥ ८ छंदः ॥ जगजननी की शोभाकहते वेद शेष सरस्वती सकुचतेहैं तहां मतिमंद मेरी कौन गिनतीहै ऐसे माता पारबती मंडपमें शिवके समीपगईं तो परंतु संकोच बस दरशन नहीं करसक्ती हैं जहां शिवके चरणकमल हैं मन तहीं भ्रमर होरहा है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ मुनीश्वरों की आज्ञासे प्रथमगणनायकका पूजन शिव पारबतीने किया यह सुनकर कोई संशय मति करो इनको अनादिदेव गजानन बिष्णुपारषद जानो जैसें बिष्णुपीठमें बिष्वक्सेन प्रथम पूज्यहैं ऐसेही गजानन पार्बती के अवतार लेकर रुद्रपीठ में प्रथम पूज्य हुये ॥ ६७ ॥

जसिबिवाहकी बिधिश्रुतिगाई । महामुनिन्ह सोसबकरवाई १
गहिगिरीश कुश कन्यापाणी । भवहिसमर्पी जानिभवानी २
पाणिग्रहण जबकीन्ह महेशा । हियहर्षे तबसकल सुरेशा ३
वेद मंत्र मुनिबर उच्चरहीं । जयजयजय शंकरसुरकरहीं ४
बाजहिंबाजनबिबिधिबिधाना ।सुमनवृष्टिनभभइबिधिनाना ५

हरगिरिजाकर भयउ विवाहू। सकलभुवन भरिरहाउछाहू ६
दासी दास तुरंगरथ नागा। धेनुबसन मणिबस्तु विभागा ७
अन्नकनक भाजन भरियाना। दायजदीन्ह नजाइबखाना ८
छं० दायज दयउ बहुभांति पुनि करजोरि हिम भूधरकह्यो।
कादेहुं पूरण काम शंकर चरण पंकज गहि रह्यो ॥
शिवकृपासागर स्वसरकर परितोष सबभांतिहि कियो।
पुनिगहे पदपाथोज मयना प्रेमपरिपूरण हियो ॥ ९ ॥
दो० नाथउमा मम प्राणप्रिय गृहकिंकरी करेहु।
क्षमेहु सकल अपराध अबहोइ प्रसन्न बरदेहु ॥ ९८ ॥

जैसी बिबाहकी बिधि बेदों में कहीहै महामुनीश्वरों ने शिव पारबती से सो सब करवाई ॥ १ ॥ तिस पीछे हिमाचल ने कुश और कन्या पारबती का हाथ गहि कर सनातन भव भार्य्या भवानी जानकर भव महादेवही को समर्पण करदी ॥ २ ॥ जब शिवजी ने पारबती का पाणिग्रहण करलिया तब तो सब देवता प्रसन्न होगये ३ ॥ मुनीश्वरों ने वेद मंत्र उच्चारण किये देवता जय शंकर शब्द करने लगे ॥ ४ ॥ सब भांति के बाजे बजनेलगे आकाश से फूलों की बर्षा हुई ॥ ५ ॥ महादेव पारबती का बिबाह हुआ यह आनन्द चौदहो लोकमें पूरित हो रहा ॥ ६ ॥ तिस पीछे दास दासी घोड़े रथ हाथी गऊ बस्त्र मणि इत्यादि बस्तुन के समूह ॥ ७ ॥ अन्न सुवर्ण पात्रयान भरभरकर अपार दायज दिया ॥ ८ ॥ छन्द ॥ और हाथ जोरकर हिमाचल नेकहा किआपके देनेको योग्य मेरेपास क्याहै आप परिपूर्ण कामहैं ऐसे कहकर चरणों परगिरपरा तबतौ कृपासागर शिवजीने स्वसरको सबभांतिसे परितोष किया तिसपीछे पारवतीकी माता मयनाने बड़ेप्रेमसे शिवजीके चरणकमलछूकर कहा ॥ ९ ॥ दोहा ॥ कि हेनाथ यह उमा पारवती मेरे प्राणोंके समान प्यारीहै इसको अपने घरकी किंकरी करौ और जो मैंने आप की महिमा बिनाजाने आपके ऊपरके चिन्ह देखकर दुर्बचन कहेहैं सोमेरे संपूर्ण अपराधों को क्षमा करौ ॥ ९८ ॥

बहुबिधि शंभु सासु समुझाई। गवनी भवनचरण शिरनाई १
जननी उमा बोलि तबलीन्ही। लै उछंग सुंदर शिखदीन्ही २
करेहुसदा शंकर पद पूजा। नारि धर्म पति देव न दूजा ३
बहुरिलाइ उर लीन्हिकुमारी। बचनकहति भरि लोचनवारी ४
कतबिधि सृजी नारि जगमाहीं। पराधीन सपनेहुं सुखनाहीं ५

भइ अतिप्रेमबिकलमहतारी । धीरज धरेउ कुसमयबिचारी ६
पुनिपुनिमिलतिपरतिगहिचरणा ।परमप्रेमकछुजाइनबरणा ७
सबनारिनमिलिभेटि भवानी । जाइजननि उरपुनिलपटानी ८
छं० जननिहि बहुरि मिलिचली उचितअशीष सबकाहूंदई ।
पुनिपुनि बिलोकति मातु तन तबसखींलै शिवपहं गई ॥
याचकसकल संतोषि शंकर उमा सहित भवन चले ।
सबअमर हरषे सुमन बर्षि निशान नभबाजे भले १०
दो० चले संग हिमवंत तब पहुंचावन अति हेतु ।
बिबिधिभांति परितोष करि बिदा कीन्ह वृषकेतु ॥९९॥

यह सुन कर शिव जीने सासु को समुझा कर कहा कि मेरा यह स्वरूप नही है यह तो मैंने नमुची इत्यादि दैत्यों के मोहन के निमित्त अपने स्वामी बिष्णु भगवान की आज्ञा से धारण करलिया है अंत: करण से तो मेरा महा मांगल्य महा भागवत स्वरूप है पद्म पुराणे ॥ बिष्णुरुवाच ॥ त्वंचरुद्रमहाभाग मोहनार्थसुरद्विषां पापंडाचरणंधर्मं कुरुष्वसुरसत्तम १ एवंदेवहितार्थाय वृत्तिंवेदविगर्हितां बिष्णोराज्ञांपुरस्कृत्यकृतंभस्मादिधारणं ॥२॥ ब्रह्मचिन्हमिदंदेवी मोहनार्थसुरद्विषांअंतरेहृदये नित्यं ध्यात्वादेवंजनार्दनं ३ ऐसे जब सासु को समुझाया तबतो चरणों को छूकर घर को गई १ फिरि तो माता ने पारबती को बुलालिया और सुन्दर सिखावन दिया २ कि सदैव शिव की सेवा करना स्त्रियों के पतिही देवता होताहै ३ फिरि पारबती को हृदय से लगालिया और आंसू भर कर बोली ४ कि हे दैव स्त्रियो को क्यों संसार में बनाया है पराधीन को कभी सुख नही होताहै ५ ऐसे कहकर फिर धीरज धरा ६ और बड़े प्रेम से बारंबार मिलने लगी ७ पारबती सब स्त्रियों को मिलकर अशीष पाकर चलीं ॥ ८ ॥ फिरि फिरि के माता को देखती हैं ऐसे सखी शिवके पास ले गईं देवताओं ने पुष्प बर्षाकी दुंदुभी बजाई ॥ १० ॥ दोहा ॥ फिरि हिमाचल संग पहुंचाने को चले महादेव ने अनेक भांति परितोष करके बिदाकिया ॥ ९९ ॥

तुरत भवन आये गिरिराई । सकल शैल सर लिये बुलाई १
आदर दानबिनय बहुमाना । सब करिबिदा कीन्हहिमवाना २
जबहिंशंभुकैलासहि आये ।सुर सबनिजनिजसदनसिधाये ३
जगत मातु पितु शंभुभवानी । तिहि शृंगार न कहहुंबखानी ४
करहिंबिबिधबिधिभोगबिलाशा।गणन्हिंसमेतबसहिंकैलाशा ५

हरगिरजाबिहारनितनयऊ। यहिबिधिबिपुलकालचलिगयऊ ६
तबजन्मेउ षटबदन कुमारा। तारक असुरसमरजिन्ह मारा ७
आगमनिगम प्रसिद्धपुराणा। षटमुख जन्म कर्म जगजाना ८
छं० जगजान षटमुख जन्म कर्म प्रताप पुरुषारथ महा।
तिहिहेतु मैं वृषकेतु सुतकरि चरित संक्षेपहि कहा ॥
यह उमा शंभु बिबाह जेनर नारि सुनहिं जेगावहीं।
कल्याणकाज बिबाह मंगल सर्वदा सुखपावहीं ॥ ११ ॥
दो० चरित सिंधु गिरजा रमण वेद न पावहिं पार।
बरणहितुलसीदासकिमि अतिमतिमन्दगमार ॥ १०० ॥

शिवजीसे बिदा होकर हिमाचल अपने घर आये और संपूर्ण परबत और पुष्करादिक सरों को बुलाकर बड़े आदर समेत कुछ कुछ काल ठहराकर अति नम्रता और मान पूर्वक उनको बिदा किया १। २ जभी शिवजी बिबाहि कर कैलाश पहुंचे तभी स्वार्थ साधक देवता अपने अपने घरगये ३ जगत के माता पिता श्री शिव पारवती हैं तिस कारण उनका शृंगार चरित्र अपना धर्म न समुझ कर मैं बरणन नही करता हूं ४ अनेक प्रकार के भोग बिलास भोगते हैं अपने गणों समेत कैलास पर निबास करते हैं ५ इस भांति जब नित्य नबीन बिहार करते२ बहुत काल बीता तब रुद्र के सेनापति कार्त्तिकेय षडानन पुत्र उत्पन्न हुआ जिसने उस तारकासुर को समर भूमि में विजय किया ६। ७ वेद पुराणादि में प्रसिद्ध कार्त्तिकेय के जन्म कर्म पुरुषार्थ को संसार जानता है ॥ ८ ॥ छन्द ॥ तिस कारण मैंने संक्षेप कहा इसशिव पारवती के बिबाह चरित्र को जो स्त्री पुरुष कहते सुनते हैं उनके कार्यों में कल्याण और बिबाह में मंगल और सदैव सुख पाते हैं ॥ ११ ॥ यह छन्दें को एक रुद्री शिव जीके विवाह महोत्सव में कही गई॥ दोहा॥ शिवजीतो चरित सिंधु हैं उनके चरित्र का पार तो वेदभी नही पासकते मैं मतिमन्द तुलसी इनको यथार्थकैसे कहूं ॥ १०० ॥

शंभुचरित सुनि सहजसुहावा। भरद्वाजमुनिअतिसुखपावा १
बहुलालसा कथा पर बाढी। नयन नीर रोमावलि ठाढी २
प्रेम बिवस मुखआवन बानी। दशादेखि हरषे मुनिज्ञानी ३
अहोधन्यतव जन्ममुनीशा। तुमहिं प्राणसम प्रियगौरीशा ४
शिवपदकमल जिनहिंरतिनाहीं। रामहिंते सपनेहुंनसुहाहीं ५
बिनुछल बिश्वनाथ पदनेहू। रामभक्त कर लक्षण येहू ६

शिवसम कोरघुपतिव्रतधारी। बिनुअघ तजीसती असिनारी ७
प्रणकरि रघुपति भक्ति दृढाई। कोशिवसम रामहिं प्रियभाई ८
दो० प्रथमहिं कहि मैं शिव चरित बूझा मर्म तुम्हार।
शुचि सेवक तुम राम के रहित समस्त विकार ॥ १ ॥

ऐसा सोभाविक सुहावन श्री शिव जीका चरित्र सुनकर भरद्वाज मुनि को बड़ा आनन्द हुआ १ और कथा सुनने की अति लालसा मनमें बढ़ी ता करिके नेत्रों में जल और शरीर में रोमांच हो आये २ अति प्रेम केबस बोला नहीं जाता ऐसी दशा देखकर ज्ञानी मुनि याज्ञवल्क्य बोले ३ अहो भरद्वाज मुनीश्वर तुम्हारा जन्म धन्य है कि तुम को गौरीपति प्राण समान प्यारे हैं ४ शिवके चरणकमलों में जिनकी प्रीति नहीं ते राम को कदापि नहीं सुहाते हैं ५ निष्कपट विश्वेश्वर शिवजीके चरणोंका स्नेह राम भक्तों का लक्षण है ६ क्योंकि भागवतोंपर प्रेम करना यही भागवतों का मुख्यलक्षणहै ॥ वाराहे ॥ आराधनानांसर्वेषांविष्णोराराधनंपरं तस्मात्परतरंदेवितदीयाराधनंस्मृतंअर्थात् सबकेआराधन से विष्णु का आराधन उत्तम है ताहूतें उत्तमतर तदीय कहैं भगवतों काआराधन कहाहै सो भला शिवके समान राम भक्त कौनहै जिन्होंने परीक्षा निमित्त सीताका रूप धरनेहीसे बिना अपराध सतीसी स्त्री का त्याग करदिया ७ और प्रण करिके राम भक्ति को दृढ़ किया ऐसे भक्त शिरोमणि शिवके समान राम का प्यारा कौनहै भागवते ॥ निम्नगानांयथागंगादेवानामच्युतो यथा वैष्णवानांयथाशंभुःपुराणानामिदन्तथा ८ ॥ दोहा ॥ तातें पहिलेही शिव चरित्र कहकर मैं ने तुम्हारा मर्मले देखा कि तुम्हारे भगवत भागवत दोनों की भक्तिहै वा केवल भगवद्भक्तिही है सो अब मैने जानलिया तुम निष्कपट परम पावन निःसंदेह राम भक्त हो १

मैंजानातुम्हार गुणशीला। कहहुंसुनहु अबरघुपतिलीला १
सुनुमुनि आज समागम तोरे। कहिनजाइ जश सुखमनमोरे २
रामचरितअतिअमितमुनीशा।कहिनसकहिंशतकोटिअहीशा ३
तदपियथाश्रुतकहहुंबखानी।सुमिरि गिरापति प्रभुधनुपानी ४
शारददारु नारि समस्वामी। राम सूत्र धर अन्तर यामी ५
जिहिपरकृपाकरहिंजनजानी। कविउर अजिरनचावहिंबानी६
प्रणवहुंसोइ कृपालुरघुनाथा। बरणहुं विशदतासुगुण गाथा ७
परमरम्य गिरिवर कैलाशू। जहां सदा शिवउमा निवाशू ८
दो० सिद्ध तपोधन योगिजन सुर किन्नर मुनि वृन्द।
बसहिं तहां सुकृती सकल सेवहिं शिव सुखकन्द ॥ २ ॥

मैंने तुम्हारा गुणशील संपूर्ण जानलिया अब मैं राम चरित्र तुमसे कहता हूं सो सावधान मनसे सुनो १ हे भरद्वाज तुम्हारे समागम से जैसा कुछ हम को आज आनन्द हुआहै सो कहा नहीं जाताहै २ रामके चरित्र तो भाई अत्यन्त अपार हैं उनकोतो सौ करोर शेषभी अपनी दीर्घायु में भी नहीं कह सकते हैं मेरी क्यासामर्थ्य है ३ तथापि जैसे कुछ मैंने सुनेहैं तैसे मैं तुमसे विस्तार समेत कहताहूं गिरापति कहैं बाणी के पति वाचस्पति वागीश शार्ङ्ग पाणि श्री रामचन्द्र को स्मर्ण करिके ४ क्योंकि सरस्वती तो परतंत्र काष्ठकी पूतरीके समान है उसके स्वामी श्री रामचन्द्र अंतर्यामी सूत्रधरहैं ५ सो जिस कविके ऊपर अपना जन जान कर कृपा करते हैं उस कविके हृदय रूपी आंगन वाणी सरस्वती को जैसा चाहते हैं तैसा नचाते हैं उसी स्वतंत्र कृपालु रघुनाथ स्वामी को प्रणाम करताहूं और तिसीके उज्जल चरित्रों को बरणन करताहूं ७ महा रमणीय कैलाश नाम पर्वतोत्तम जहां सदैव पारबती समेत शिवजीका निवास स्थानहै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सिद्ध और तपस्वी औ योगीजन देव किन्नर मुनीश्वरोंके समूह अपने पुण्यके फलोंसे तहां निवास करतेहैं और आनन्द मूल श्री शिवजीका सेवन करतेहैं ॥ २ ॥

हरिहर विमुखधर्म रतनाहीं । तेनर तहं सपनेहुं नहिंजाहीं १
तिहिंगिरिपरबटविटपविशाला । नितनूतन सुंदरसबकाला २
त्रिविधिसमीरसुशीतलछाया । शिवविश्रामविटपश्रुतिगाया ३
एकबारतिहितरप्रभुगयऊ । तरुविलोकिउरअतिसुखभयऊ ४
निजकरडासिनागरिपुछाला । बैठेसहजहिं शंभु कृपाला ५
कुंद इंदु दर गौर शरीरा । जटा मुकुट परिधन मुनिचीरा ६
तरुणअरुणअंबुजसमचरणा । नखदुतिभक्तहृदयतमहरणा ७
भुजग भूति भूषण त्रिपुरारी । आनन शरदचंद्र छबिहारी ८
दो० जटा मुकुट सुर सरित शिर लोचन नलिन विशाल ।
नीलकंठ लावण्य निधि सोह बाल विधुभाल ॥ ३ ॥

जे मंद वुद्धि हरितें बिमुख और हरसे भी बिमुख हैं सो उस पर्बत पर स्वप्न में भी नहीं जाते हैं १ तिस पर्बत पर अति बिशाल एक बट का दिव्य वृक्ष है जो सर्वकाल में सुन्दर और नित्य नवीनही रहता है २ जिसके नीचे शीतल मंदसुगन्ध लिये पवन बहती है और अति शीतल छाया रहती है सो शिवका बिश्राम वृक्ष वेदों में बिख्यात है ३ एकबार श्री शिवजी उस के निकट गये और उसको देख कर मन में अति आनन्द हुए ४ अपने ही हाथ से शार्दूल सिंह का चर्मासन बिछाकर साधारणहीं प्रसन्नता से बैठ गये ५ जैसा कोमल उज्जल कुन्द वृक्ष का सुन्दर

पुष्प और जैसा प्रकाशित शीतल चन्द्रमा और जैसा अति सुन्दर स्वेत शंख तैसा है सुन्दर गौर शरीर जिनका और जटान का मनोहर मुकुट धारण किये हैं और मुनि चीर मृगचर्म वल्कलादिक जिनके बस्त्र हैं ६ अति प्रफुल्लित अरुण कमल के समान कोमल चरण हैं जिनके नख की दुति अपने भक्तों के हृदय के तम अज्ञान को हरती है ७ भुजंग और विभूति जिनका भूषण है और सुन्दर मुख शरद के चन्द्रमा की भी छबिको हरता है ८ ॥ दोहा ॥ जटान के मुकुट में श्री गंगा विराजती हैं और सुन्दर कमल से अति बिशाल नेत्र हैं नील जिनका कंठ लावण्य निधि है और बाल चंद्रमा जिनके ललाट पर बिराजता है ॥ ३ ॥

बैठे सोह काम रिपु कैसे । धरे शरीर शांत रस जैसे १
पारवती भल अवसर जानी । गईं शंभुपहं मातु भवानी २
जानिप्रियाअतिआदरकीन्हा । बामभागआसन हरदीन्हा ३
बैठी शिव समीप हरषाई । पूरब जन्म कथा चितआई ४
पतिहियहेतुअधिक अनुमानी । बिहसिउमा बोलीमृदुबानी ५
कथाजोसकल लोकहितकारी । सोइपूछा चह शैलकुमारी ६
विश्वनाथ ममनाथ पुरारी । त्रिभुवनमहिमाविदिततुम्हारी ७
चरअरु अचरनाग नरदेवा । सकल करहिंपद पंकजसेवा ८
दो० प्रभु समर्थ सर्वज्ञ शिव सकल कलागुण धाम ।
योग ज्ञान वैराग निधि प्रणत कल्पतरु नाम ॥ ४ ॥

इस प्रकार शांत पद्मासनस्थ काम क्रोध लोभ मोह के नाश कर्त्ता शिवजी महाराज बैठे हुये कैसे शोभा देरहे हैं मानो मूर्तिवन्त शांत रसही हैं १ जब ऐसा प्रसन्न चित्त अपने पति शिवजी को एकांतमें बैठे देखा तबतो भला सुन्दर सावकाश का समय जानकर माता पारबती उनके पासगईं २ शिवजी ने अपनी प्रिया अर्द्धांगी को आई जानकर बड़े सनमान से स्वागत किया और अपने बाम भाग में उनके बैठने को आसन दिया ३ पतिकी आज्ञानुसार शिवजी के बाम भाग में प्रसन्न होकर ज्यों विराजमान हुईं त्योंहीं पूर्वजन्म की कथा का स्मरण हो आया ४ पतिके हृदय का प्रेम अपने पर अधिक जान कर मंद हास समेत अति विनीत कोमल बाणी पार्वती बोली ५ जो कथा संपूर्ण लोक की हितकारी है सोई पार्बती बड़ी नम्रता से पूछती हैं ६ कि हे बिश्वनाथ हे मेरे नाथ आपकी महिमा विश्व में बिख्यात है ७ और चराचर जीव नाग मनुष्य देवता अर्थात् त्रैलोक बासी सब आपका सेवन करते हैं ८ ॥ दोहा ॥ आप सब प्रकार समर्थ हैं सर्वज्ञ है संपूर्ण कला विद्याओं के धामहैं योग वैराग ज्ञान निधान हैं और प्रणत कल्पबृक्ष आप का नाम है ॥ ४ ॥

जोमोपर प्रसन्न सुखराशी । जानहु मोहिसत्य निजदाशी १
तौप्रभुहरहु मोरअज्ञाना । कहिरघुनाथ कथाबिधिनाना २
जासुभवन सुरतरुतरहोई । सहकिदरिद्र जनितदुखसोई ३
शशिभूषण असहृदय विचारी । हरहुनाथ मममति भ्रमभारी ४
प्रभुजेमुनि परमारथ बादी । कहहिं रामकहं ब्रह्मअनादी ५
शेषशारदा वेद पुराणा । सकल करहिं रघुपति गुणगाना ६
तुमपुनि रामराम दिनराती । सादर जपहु अनंगअराती ७
रामसोअवधनृपतिसुतसोई । कीअज अगुणअलखगतिकोई ८
दो० जोनृपतनयतो ब्रह्मकिमि नारिविरहमतिभोरि ।
देखिचरितमहिमा सुनत भ्रमतिबुद्धि अतिमोरि ॥ ५ ॥

सो हे आनन्द निधान स्वामी जो आपमेरे पर प्रसन्न हैं और तन मन बचन से अपनी सत्य सत्य दासी जानते हैं १ तो हे प्रभु जो मेरे में अज्ञान है उस को अनेक बिधि की रघुनाथ श्री रामचन्द्र की कथा कहकर नाशकरैं २ क्योंकि जिस का घर कल्पबृक्ष के नीचे हो सो दरिद्र का दुख क्यों सहै ३ हे चन्द्र भूषण स्वामी ऐसा हृदय में बिचारिकर मेरी बुद्धि के महाभारी संदेह को दूरिकरो ४ हे नाथ जो परमार्थ वादी कहैं शुकवाल्मीकि पराशरादि मुनि और शेष सरस्वती वेद पुराण राम को अनादि ब्रह्म कहते हैं और सदा रामही के गुणों को गान करते हैं ५ । ६ और आप भी रात्रि दिन रामरामही आदर समेत सदैव जपते रहते हो ७ सोराम राजादशरथ अयोध्याधिपतिही के पुत्र हैं वा अजन्मा त्रिगुणात्पर अलक्ष्यगति कोई औरही ईश्वर हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जो राजा दशरथ के पुत्रही राम हैं तो ब्रह्म कैसे हो सकते हैं और जो उन्हीं को ब्रह्मभी मानलियाजावे तो विशुद्ध विज्ञान घनस्वरूप ब्रह्म में अज्ञान असंभव है जैसे सूर्य्य में अंधकार स्त्री के वियोग में उन की बुद्धि को भ्रम कैसा उन के चरित्रों को देखकर और उन की महिमा को सुनकर मेरी बुद्धि को बड़ाभ्रम होता है ॥ ५ ॥

जोअनीह ब्यापक बिभुकोऊ । कहहुबुझाइ नाथमोहिसोऊ १
अज्ञजानि जनिरिसउरधरहू । जिहिविधिमोह मिटैसोइकरहू २
मैंबनदीखि रामप्रभुताई । अतिभय विकल न तुमहिंसुनाई ३
तदपि मलिन मनबोधनआवा । सोफल भलीभांति हमपावा ४
अजहूंकछु संशय मनमोरे । करहु कृपा बिनवौं करजोरे ५

प्रभुतबमोहबहुभांतिप्रबोधा।नाथसोसमुझिकरहुजनिक्रोधा६
तबकरअसविमोह अबनाहीं । रामकथापर रुचिमनमाहीं ७
कहहु पुनीत राम गुणगाथा । भुजगराज भूषण सुरनाथा ८
दो० बंदौंपदधरि धरणिशिर बिनयकरहुं करजोरि ।
बरणहुरघुबर विशदयश श्रुतिसिद्धांतनिचोरि ॥ ६ ॥

और जो अनीह विश्व व्यापक ब्रह्म दशरथ पुत्र तें भिन्न विभु कहैं समर्थ राम कोऊ औरही होतो हे नाथ मेरे संदेह के निवारण निमित्त सोभी कहिये १ अज्ञान जानकर रिस न हूजिये जिस भांति से मेरा मोहनाश होवै सो कीजिये २ क्योंकि मैंने अपने पूर्वजन्म में बन के बिषय राम की प्रभुता देखली रहै परंतु अत्यंत भयव्याकुलता से आप को नहीं सुनाई ३ तौभी मेरे मलीन मनमें बोध न हुआ तिसका फल हमने भली भांति से भोगा ४ अबभी कुछ कुछ संशय उस का मेरे मन में हैं सो आप कृपा करि निवारण करैं मैं हाथ जोरिकर आप की बिनती करती हूं ५ और आपने तब मेरे को बहुत समुझाया रहै सो समुझि कर मेरे पर क्रोध करना न चाहिये ६ क्योंकि तब का ऐसा मोह अब मेरे नहीं हैश्री राम कथा श्रवण करने पर मेरी अति लालसा है ७ तातें परम पावन श्री रामचन्द्र के गुणों की गाथा कथा बरणन करौ हे भुजगराज भूषण देवेश्वर स्वामी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ मैं पृथ्वी पर माथा टेक कर आपके चरणों को बंदन करतीहूं और हाथ जोड़ कर बिनती करती हूं कि आप श्री रघुनाथ जीके उज्जल चरित्र वेदों का सिद्धांत निचोरि कर मेरे महा मोह के निवारण के निमित्त बरणन करौ ॥ ६ ॥

यदपियोषिता अनअधिकारी । दासीमन क्रमबचन तुम्हारी १
गूढ़हुतत्व न साधु दुरावहिं । आरत अधिकारी जहंपावहिं २
अतिआरतिपूछहुं सुरराया । रघुपतिचरित कहहु करिदाया३
प्रथमसोकारणकहहुबिचारी । निर्गुण ब्रह्म सगुणबपुधारी ४
पुनि प्रभु कहहुराम अवतारा । बालचरित पुनि कहहु उदारा५
कहहुयथा जानकिहि बिवाहा । राज्यतजा सो दूषण काहा६
वनबसिकीन्हेचरित अपारा । कहहु नाथजिमिरावणमारा ७
राज्यबैठि कीन्ही बहुलीला । सकलकहहु शंकर शुभ शीला८
दो० बहुरिकहहु करुणायतन कीन्ह जो अचरज राम ।
प्रजासहित रघुबंश मणि किमि गवने निजधाम ॥ ७ ॥

यद्यपि हे स्वामी मैं योषिता स्त्री हूं मेरा श्रुति सिद्धान्त में अधिकार नहीं है

परंतु तन मन बचन से आपकी दासी तो हूं १ सो महाराज संत जन गूढ़ तत्वको भी नहीं छिपाते हैं जहां कहीं श्रोता आरत वा अधिकारी पाते हैं २ तहां अधिकारी तो मैं नहीं हूं परंतु अत्यन्त आरत होकर आपसे पूछती हूं कि आप दया करिके श्री रामचन्द्रके चरित्र बरणन कीजिये ३ प्रथम तो आपसो कारण बिचारि कर कहिये जिस कारण निर्गुण ब्रह्म सगुण शरीर धारण करता है ४ फिरि हे स्वामी श्री रामचन्द्र का अवतार और परम उदार उनके बाल चरित्र कहिये ५ ता पीछे जैसे जानकी श्री सीता को बिवाहा सो यथा बिस्तार वर्णन करौ और पिता के अभिमत जो युव राज्य को त्याग किया उसमें कौन दूषण रहा ६ फिरि वनमें बास करिके जो अनेक चरित्र किये सो कहिये ता उपरांत जैसे लंकेश्वर रावणको विजय किया सो सबिस्तार बरणन कीजिये ७ और राज्य पर बैठिकर जो अनेक लीला करीं सो हे शुभ शील शंकर स्वामी संपूर्ण मेरे से कहो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ फिरि यह कहो हे करुणायतन स्वामी जो परम आश्चर्य श्रीरामचंद्र ने किया कि प्रजा समेत अपने परम धाम बैकुंठ को कैसे सिधारे ॥ ७ ॥

पुनिप्रभुकहहुसो तत्व बखानी। जिहि बिज्ञानमग्नमुनिज्ञानी १
भक्तिज्ञानविज्ञानविरागा। पुनि सबवरणहु सहितविभागा २
औरहु राम रहस्य अनेका। कहहु नाथ अति विमलविवेका ३
जोप्रभु मैं पूछा नहिं होई। सोउ दयालु राखहुजनिगोई ४
तुमत्रिभुवन गुरु वेद बखाना। आनजीव पामर का जाना ५
प्रश्न उमा कीसहज सुहाई। छलविहीनसुनि शिवमनभाई ६
हरहिय रामचरित सबआये। प्रेम पुलकि लोचन जलछाये ७
श्री रघुनाथ रूपउर आवा। परमानन्द अमित सुखपावा ८
दो० मग्नध्यान रसदंड युग पुनि मन बाहिर कीन्ह।
रघुपति चरित महेश तब हर्षित बरणय लीन्ह ॥ ८ ॥

फिरि हे प्रभु सोतत्व बरणने करिके कहो जिस विज्ञान में ज्ञानी मुनि लयलीन रहते हैं १ तापीछे भक्ति ज्ञान विज्ञान वैराग संपूर्ण विभाग करिके कहो २ और भी जो अनेक राम रहस्य हैं सो कहो और बिशुद्ध बिज्ञान भी कहो ३ और भी जो मैंने न पूछा हो वह भी हे दयालु स्वामी आप छिपा न रक्खैं ४ आपको त्रैलोक्य गुरु वेद कहते हैं जो आप जानते हैं सो और प्राकृत जीवनहीं जान सक्ते हैं ५ ऐसी सहज सुहाई छलहीन पारबती की प्रश्न सुनकर शिवजीको अति प्यारी लगी ६ और शिव जीके हृदय में संपूर्ण राम चरित्र दर्शायमान होगये तिसके प्रेमसे शरीर में रोमावली और नेत्रों मेंजल छागया ७ और श्री रामचद्र का दिव्य मंगल विग्रह हृदय में आ-

गया तिसके परम आनन्द का अत्यन्त सुख प्राप्त हुआ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ द्वयदण्ड भरतौ उसी ध्यान रस में मग्न होगये फिर मनको उस ध्यान से बाहर करिके श्रीरामचरित्रों के बरणन करने को हर्षित मन श्री शिव जी उद्यत हुये ॥ ८ ॥

झूठेहुं सत्य जाइ बिनु जाने। जिमि भुजंग बिनु रजु पहिचाने १
जिहि जाने जग जाइ हिराई। जागे यथा स्वप्न भ्रम जाई २
बंदौं बालरूप सोइ रामू। सब सिधि सुलभ जपत जिहि नामू ३
मंगल भवन अमंगल हारी। द्रवहु सो दशरथ अजिर बिहारी ४
करि प्रणाम रामहि त्रिपुरारी। हर्षि सुधा सम गिरा उचारी ५
धन्य धन्य गिरिराज कुमारी। तुमसमान नहिंकोउ उपकारी ६
पूछेहु रघुपति कथा प्रसंगा। सकललोकपावनिजसिगंगा ७
तुमरघुबीर चरण अनुरागी। कीन्हेहु प्रश्न जगत हितलागी ८
दो० राम कृपाते पारबती सपनेहुं तव मन माहिं।
शोक मोह संदेह भ्रम ममबिचार कछु नाहिं ॥ ९ ॥

प्रथम भगवच्चरित्र के मंगलाचरणही में पारबतीके समस्त संदेह को निवारणकरते हुये अपने इष्टदेव बालरूप श्रीरामचंद्र को प्रणाम करते हैं जो मंगल मूर्त्ति मेरा स्वामी जिसके जाने बिना झूठे में भी सत्य का आभास होता है जैसे रज्जु में सर्प का भ्रम बिनाजाने होता है अर्थात् जब तक यह जीव मेरे स्वामी को नहीं जानता है तभीतक यह संसार उसकोबंधन है ॥ भागवते ॥ तावद्रागादयस्तेन तावत्कारागृहं गृहं तावन्मोहान्घ्रिनिगडं यावत्कृष्णनतेजन: १ और जब मेरे स्वामी का वैभव जानि लेता है तबतौ यह संसार सागर उसको मृग तृष्णा का जल होजाता है जैसे जागने से स्वप्न का भ्रम जाता रहता है २ तिस अपने स्वामी बालरूप श्री रामचंद्र को मैं अभिवन्दन करताहूं जिसके नाम के जपतेही संपूर्ण सिद्धि सुलभ होजाती हैं ३ और जो संपूर्ण अमंगलों का हर्ता और मंगल भवन विश्व में विख्यात है ॥ मंगलंभगवान्विष्णु: मंगलंगरुड़ध्वज: मंगलं पुंडरीकाक्ष मंगलायतनोहरि: सो स्वामी चक्रवर्ती राजाधिराज दशरथ महाराज के कंचन मणि जटित सुन्दर आंगन के बिहार कर्त्ता मेरे पर अनुग्रह करो ४ इस प्रकार त्रिपुर मर्दन शिवजी श्री रामचंद्र को नमस्कार करिके प्रसन्नमन अमृत के समान अति मधुर मनोहर बाणी बोले ५ धन्य धन्य हे गिरिजे तू धन्य है तेरे समान पर उपकारी कोई नहीं है ६ कि जो तूने राम कथा का प्रश्न किया क्योंकि राम कथा सकल लोक पावनी श्रीगंगा के समान है ७ तुम तो श्री राम चरणोंकी अति अनुरागिनी हो यह प्रश्न तो तुमने संसार के श्रेयके निमित्तकीहै ॥ ८ ॥

दोहा ॥ भगवत् कृपा तें हे पारवती तेरे मनमें स्वप्न में भी शोक संदेह मोह भ्रम मेरे बिचार में तो कुछ भी नहीं है ॥ ६ ॥

तद्यपि शंका कीन्हेहु सोई। कहत सुनत सबकर हितहोई १
जिन्ह हरिकथासुनीनाहिंकाना। श्रवणरंध्रअहिभवनसमाना २
नयननि संत दरश नहिंदेखा। लोचन मोर पक्षकर लेखा ३
ते शिर कटु तूमर सम तूला। जे न नमाहिं हरिगुरु पदमूला ४
जिन्हहरिभक्ति हृदयनहिंआनी। जीवत शवसमान तेप्राणी ५
कुलिशकठोर निठुर सोछाती। सुनिहरि चरितनजोहरपाती ६
जोनहिं करहिं राम गुणगाना। जीहसो दादुर जीहसमाना ७
गिरिजासुनहु राम की लीला। सुरहित दनुजबिमोहनशीला ८
दो० राम कथा सुरधेनु सम सेवत सब सुख दानि।
संतसभा सुरलोक सम को न सुनैआसि जानि ॥१०॥

सो यद्यपि तुम्हारे हृदय में कुछभी संदेह नहीं है तथापि तुमने शंकाके मिससों भगवत् कथा पूछी जिसके कहते सुनते श्रोता बक्ता सबहीका हित होता है १ जिनने हरि कथा अपने कानों से नहीं सुनी उनके कर्णरंध्रों को हे पारबती सर्पों के बिलों के समान जानों २ जिन्होने भगवज्जंगम बिमानरूप संतजनों का आदर समेत दरशन नहीं किया उनके नेत्र मयूर पक्षकी चंद्रि के समान केवल नाम धारकही हैं ॥ ३ ॥ भागवते ॥ ब्यालालयद्रुमावैते ह्यरिक्तास्सर्बसंपद: येगृहास्तीर्थपादीय पादतीर्थ बिवर्जिता: उन शिरोंको करुये तोमरोंके समान जानो जो भगवत् भागवत् आचार्यों के चरण मूल को नहीं नमते हैं ४ जिन्होंने हे पारबती भगवत् भक्ति हृदय में नहीं लाई उनको जीवते ही मरा जानो ५ जो जिह्वा श्रीरामचंद्र के गुणों का गान नहीं करती उस जिह्वा को मेंडक की जिह्वाके समान जानो ६ बज्रहूं तें कठोर उस निठुर छातीको जानों जो भगवच्चरित सुनकर हर्षित न होवै ७ सुनो हे पारबती भगवल्लीला अति बिचित्र है किजो देव सर्ग संभूत जीव हैं उनको तो हित रूपा है और जो आसुरी सर्ब संभूत जीव हैं उनको मोह बर्द्धनी जानो जैसे स्वाति की बर्षा समुद्र मानसरकी सीपियों में मुक्ता और केलों में कर्पूर उत्पन्न करती है और सर्पों में बिष बढ़ातीहै। बिष्णु धर्मोत्तरे। द्विविधोभूतसर्गोयं दैवआसुरएवच। बिष्णुभक्तिपरोदैवो विपरीतस्तदासुर: गीतायांच। द्वौभूतसर्गौ लोकेस्मिन् दैवआसुरएवच ॥ अर्थात् दो प्रकारका जीवों का सर्ग है एक दैवी दूसरा आसुरी जो विष्णुभक्ति परायण हैं सोदैवी सर्ग संभूत हैं और जोउनके विपरीत हैं सो आसुरी सर्ग संभूत हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ राम कथा कामधेनु के समान सेवतेही संपूर्ण सुखकी दाता और संतोंकी सुन्दर सभा देव

लोक अमरावती के समान जानिकर ऐसा कौन है जो न सुने आसुरी सर्ग के बिना क्योंकि सो विष्णु का उत्कर्ष नहीं सह सकते हैं ॥ १० ॥

राम कथा सुंदर करतारी । संशय विहंग उड़ावनहारी १
रामकथा कलिबिटप कुठारी । सादरसुनु गिरिराज कुमारी २
राम नाम गुणचरित सुहाये । जन्मकर्म अगणित श्रुतिगाये ३
यथा अनंत राम भगवाना । तथा कथा कीरति गुणनाना ४
तदपियथाश्रुतजसिमतिमोरी । कहिहौंदेखिप्रीतिअतितोरी ५
उमा प्रश्न तव सहज सुहाई । सुखद संत संमत मोहिभाई ६
एकबात नहिं मोहिं सुहानी । यदपि मोहबस कहेहुभवानी ७
तुमजोकहारामकोउआना । जिहिश्रुतिगावधरहिंमुनिध्याना ८
दो० कहहिं सुनहिं अस अधम नर ग्रसे जो मोह पिशाच ।
पाषण्डी हरिपद विमुख जानहिं झूठ न सांच ॥ ११ ॥

रामकी कथा हे पारबती सुन्दर हाथोंकी तारीके समान है जिसके सुनतेही समस्त संशय रूपी पक्षी उड़आकर जाते हैं १ फिर राम कथा पापों की वृक्षावली को अति तीव्र कुठारी है तिसको हे पारबती अब तुम आदर समेत सुनो २ कि राम के नाम रामके गुण और सुन्दर चरित्र और रामके जन्म कर्म वेदों ने अनन्तकहे हैं ३ जैसे राम भगवान अनन्त हैं तैसेही उनकी कथा कीर्ति गुणभी अनन्त है ४ तथापि जैसे कुछ मैंने बड़ों के मुख से सुने हैं और जैसी मेरी बुद्धि है तैसी तेरीअति प्रीति देखिकर कहूँगा ५ हे पारबती प्रश्न तो तेरी स्वाभाविक सुन्दर सुख दायक और संतसम्मत है हमको मनमें बहुत भागई ६ परंतु एक बात मेरे मनमें न भाई यद्यपि तुमने मोह के बस कही है ७ तुमने जो यह कहा कि राम दशरथ पुत्रही हैं वा कोई उनते परे और हैं जिन दशरथ नन्दन की महिमा को समस्त वेद गावते हैं और शुक सनकादि मुनि वर्य्य सदा ध्यान धरते हैं और कहते हैं ॥ रामःसत्यपरं ब्रह्म रामात्किंचिन्न विद्यते ॥ तिससेपरे भला और पर ईश्वरकहांते आया ८ ॥ दोहा ॥ ऐसे वचन तो महा अधम जीव कहते हैं और तैसेही सुनते हैं जो मोह कहैं अज्ञान के पिशाच से ग्रसि लिये गये हैं और पाषण्डी भगवच्चरणारबिंदों से बिमुख हैं झूठ सच के पाप पुण्य का जिनको कुछभी ज्ञान नहीं है ॥ ११ ॥

अज्ञ अकोविद अंध अभागी । काई विषय मुकुरमन लागी १
लंपट कपटी कुटिल विशेषी । सपनेहुं साधुसभानहिंदेखी २
कहहिंतेवेद असंमत बाणी । जिनहिंन सूझ लाभ नहिंहानी ३

मुकुरमलिन अरुनयनविहीना। रामरूप देखहिं किमिदीना ४
जिनकेअगुनन सगुणविवेका। जल्पहिं कल्पितवचनअनेका ५
हरिमायावसजगतभ्रमाहीं। तिनहिंकहतकछुअघटितनाहीं ६
वातुल भूत बिवस मतवारे। तेनहिंबोलहिं बचन बिचारे ७
जिन्हकृतमहामोह मदपाना। तिनकर कहा करियनहिंकाना ८
सो० अस निज हृदय बिचारि तजि संशय भजु रामपद।
सुनु गिरिराजकुमारि भ्रम तम रवि करबचन मम १२॥

फिरि जो निरे अज्ञानी और मन्द बुद्धि और शास्त्र नेत्र विहीन अंधे हैं। श्रुतिस्मृतिउभेनेत्रो ब्राह्मणानांप्रकीर्तितः। एकेनविकलः काणाद्वाभ्यामंधइतीरितः॥ और संसार के पंच विषयों की काई जिनके मन दर्पण को लगी है १ और विशेष करिके कामी कपटी और कुटिल कुमार्गी हैं जिन्होंने संतों की सभा को स्वप्न में भी नहीं देखा है २ ते अज्ञानी ऐसी वेद असंमत वाणी कहते हैं जिनको लोक परलोक की हानि लाभ का कुछ भी ज्ञान नहीं है ३ जिनके मन मुकुर मैले और शास्त्र नेत्र विहीन ते बापुरे राम रूपको कैसे जान सक्ते हैं ४ गीतायां। अवजानंतिमांमूढा मानुषीतनुमाश्रितं। जिनके अगुण सगुण का कुछ भी ज्ञान तौ है नहीं अपनी बुद्धि की कल्पना से झूठे सांचे अनेक भांति के बचन बकते रहते हैं ५ भगवन माया के बशी भूत संसार में जो भ्रमते हैं तिनको अनुचित उचित कहना कुछभी अघटित नहीं है ६ क्योंकि जो बावरे वा भूतों के बश अथवा मद्यपान किये हैं ते बिचारि के बचन नहींकह सक्ते हैं ७ फिरि जिन्होंने महा मोह मद्यका पान किया है उनका कहना प्रमाण करना नहीं चाहिये ॥ ८ ॥ सोरठा। ऐसा अपने हृदय में बिचारि के सब संशय को छोड़कर भगवत् भजन करना चाहिये अब तुम हे पारवती भ्रमरूपी अंधकार को सूर्य किरण के समान मेरे बचन सुनो ॥ १२ ॥

सगुणहिंअगुणहिंनहिंकछुभेदा। गावहिं मुनिपुराणबुधवेदा १
अगुणअरूप अलख अजजोई। भक्तप्रेमबस सगुण सुहोई २
जोगुणरहित सगुण सोकैसे। जलहिमउपलबिलगनहिंजैसे ३
जासुनामभ्रम तिमिर पतंगा। तिहिकिमिकहियबिमोहप्रसंगा ४
राम सच्चिदानन्द दिनेशा। नहिंतहं मोह निशा लवलेशा ५
सहज प्रकाश रूपभगवाना। नहिं पुनि तहं विज्ञान विहाना ६
हर्ष विषाद ज्ञान अज्ञाना। जीव धर्म अहमित अभिमाना ७

राम ब्रह्म व्यापक जग जाना । परमानन्द परेश पुराणा ८
दो० पुरुष प्रसिद्ध प्रकाश निधि प्रगट परावर नाथ ।
रघुकुलमणिमम स्वामि सोइ कहि शिव नायउ माथ १३॥

सगुण कहैं विभु और अगुण कहैं पर मैं कुछ भेद नहीं है यह बात वेद पुराण मुनि सबही कहते हैं १ कि निर्गुण अरूप अलक्ष्य अजन्मा जो पर ईश्वर है सोई अपने भक्तों के प्रेम के बस सगुण बिभु होता है २ जो गुण रहित है सोई सगुण कैसे होता है जैसे हिम उपनहीं उष्णताके योग से जल होजाता है ३ जिस ईश्वर का नाम भ्रम रूपी अंधकार को सूर्य्य के समान है उसको मोहका प्रसंग कहो कैसे होसक्ता है ४ राम तो साक्षात् सच्चिदानन्द दिनेश हैं तहां मोह राचीका लवलेश भी तो नहीं होसक्ता है ५ सूर्य्य के समान स्वभावही ते प्रकाश स्वरूप भगवान तहां विज्ञान का प्रातकाल भी नहीं बनसक्ता है अज्ञान के अभाव तें ६ क्योंकि हर्षविषाद और ज्ञान अज्ञान यह तो जीवका धर्म है जिसको अहं यह अभिमान है ७ राम तो विश्वव्यापक ब्रह्म हैं संसार जानता है जो परमानन्द रूप है पर जीवों के भी ईश हैं और सब से पुरातन हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जो ईश्वर पुरुषोत्तम है और प्रसिद्ध है अर्थात् वेदान्त वेद्य है और प्रकाश निधि कहैं विशुद्ध विज्ञान घनस्वरूप और प्रकट कहैं विभु है और परावर कहैं पर अवर उभय विभूति अर्थात् त्रिपाद विभूति पर कहावती है पर और पाद विभूति अनन्त कोटि ब्रह्मांड अवर है इन दोनों का नाथ है जो सोई रघुकुल की मणि मेरा स्वामी श्रीरामचन्द्र है ऐसे कह कर शिवने राम को प्रणाम किया ॥ १३ ॥

निजभ्रमनहिंसमुझहिंअज्ञानी । प्रभुपरमोहधरहिंजड़प्रानी १
यथा गगनघनपटल निहारी । झांपेउ भानु कहहिं कुविचारी २
चितव जोलोचनअंगुलिलाये । प्रगट युगुलशशितिहिकेभाये ३
उमाराम विषयक असमोहा । नभतम धूम धूरिजिमि शोहा ४
बिषय करण सुर जीव समेता । सकल एक तें एक सचेता ५
सबकर परमप्रकाशक जोई । राम अनादि अवधपति सोई ६
जगतप्रकाश्य प्रकाशक रामू । मायाधीश ज्ञान गुण धामू ७
जासु सत्य तातें जड़ माया । भास सत्य इव मोह सहाया ८
दो० रजत सीपि महं भास जिमि यथाभानुकर वारि ।
यदपिमृषातिहुं कालसोइ भ्रम न सकैकोउ टारि ॥१४॥

अपना भ्रमतो अज्ञानी नहीं समुझते हैं अपने मोहको स्वामी रामचन्द्र में अन्यथा

कल्पना करलेते हैं १ जैसे आकाश में घटा पटल को देख कर सूर्य्य झपगये ऐसे अज्ञानी कहते हैं २ जैसे जो कोई अपनी अंगुली आंख पर लगा कर देखता है उसके ज्ञानमें दो चन्द्रमा होतेहैं ३ हे पारवती भगवत् विषयक मोह ऐसा जानो जैसे आकाश में अंधेरा धुआं और रज देखनेहीं को होता है आकाश उससे सदा अलिप्तही रहता है ४ शब्दादिक पंचविषय और नेत्रादि दश बाह्यकरण मन बुद्धि चित अहंकार चारिअंतः करण सूर्य्यादि इनके देवता और चौथा जीव इनमें से स्वयं सचेत कोईभी नहींहैं ये सबके सब प्रत्येक अपने पर एक से एक सचेत होतेहैं जैसे पंचविषय अपनी अपनी इन्द्रियोंसे और इन्द्री अपने अपने सुरोंसे और सुर जीव से चेतन होते हैं और जो जीवको भी उन सब समेत परम प्रकाशकहै सो अनादि अवध का पति है पारवती श्री राम चन्द्र मेरा स्वामीही है ६ इस जगत प्रकाश्य का प्रकाशक माया का पति ज्ञान गुणों का धामश्री रामही है ७ जिसकी सत्यता से अचेतनमाया भी सत्यवत भासैहै मोह की सहायतासे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जैसे सीपी में चांदीका आभास और सूर्य्य की किरणियों में जलकी भ्रांति यद्यपि ये त्रिकाल असत्यहैं परंतु इस भ्रमको कोई भी दूरि नहीं कर सक्ता है ॥ १४ ॥

यहि बिधिजगहरि आश्रितरहई।यदपि असत्यदेतदुखअहई१
जिमि सपने शिर काटहिकोई।जागे बिनु न दूरिदुख होई २
जासुकृपा असभ्रम मिटिजाई।गिरिजासोइ कृपालु रघुराई३
आदिअंतकोउजासुनपावा।मतिअनुमाननिगम असगावा ४
बिनुपद चलैसुनै बिनु काना।कर बिनु कर्म करै बिधिनाना ५
आनन रहित सकलरस भोगी।बिनुबाणी बक्ताबड़ योगी ६
तनबिनु परसनयन बिनु देखा।ग्रहैघ्राण बिनुबास अशेषा ७
असिसबभांतिअलौकिककरणी।महिमाजासुजाइनहिंबरणी८
दो० जिहि इमि गावहिं वेदबुध जाहि धरहिं मुनि ध्यान।
सोइदशरथ सुतभक्त हित कोशल पति भगवान॥१५॥

इस प्रकार यह जगत भगवदाश्रित रहता है यद्यपि अनित्यता के कारण असत्य भीहै तथापि दुख सुख दायक है जैसे अनित्य स्वप्नमें कोई शिरछेदन करताहै वा राज्यादि प्राप्ति होता है तो जब तक नहीं जागता है तबतक उसका दुख सुख दूरि नहीं होता है १।२ और जिस स्वामी की कृपा कटाक्षही से ऐसा भ्रम नाश होजाता है अर्थात्संसार बंधन छूटिजाता है हे पारवती सो मेरा स्वामी रघुवंश विभूषण रामही है ३ जिसकी आदि अंत को तो कोई पाइही नहीं सकता है बुद्धिके अनुमान से वेद ऐसा कहतेहैं ४ कि भगवत्कर्म इन्द्रियाधीन नहीं हैं पैरों बिना स्वच्छन्द चलता है

श्रवणों बिना स्वच्छन्दही सुनताहै हाथों बिना समस्तकार्य्य करताहै ५ बिनाहीं मुख संपूर्ण रसों का भोक्ता है बाणी बिना अनन्त वेद को बक्ताहै ६ अशरीर ही सब को स्पर्श करता है नेत्रों बिना गुप्तप्रगट को देखता है घ्राण बिना संपूर्ण गन्धको गृहण करता है ऐसी संपूर्ण प्रकार कीं अलौकिक जिसकी करणी हैं महिमा जिसकी वरणी नहीं जासकती है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जिस स्वामीको वेद और बुध जन ऐसा कहते हैं और जिसको संपूर्ण मुनीश्वर ध्यान धरतेहैं सोई ईश्वर है पारबती दशरथ का पुत्र अपने भक्तों के प्रेम के बस कोशल देशका राजा राम भगवान है ॥ १५ ॥

काशीमरत जंतु अवलोकी । जासु नाम बल करहुं बिशोकी १
सोइ प्रभुमोर चराचर स्वामी । रघुबर सब उर अंतरयामी २
बिवसहुजासु नामनर कहहीं । जन्म अनेकसंचितअघ दहहीं ३
सादर सुमिरण जे नर करहीं । भववारिधि गोपद इवतरहीं ४
राम सोपरमातमाभवानी । तहं भ्रम अतिअविहितलवबानी ५
असिसंशय आनतउर माहीं । ज्ञान बिरागसकल गुणजाहीं ६
सुनि शिवके भ्रमभंजन बचना । मिटिगइं सब कुतर्ककीरचना ७
भइ रघुपति पद प्रीति प्रतीती । दारुण असंभावना बीती ८
दो० पुनिपुनि प्रभु पद कमल गहि जोरिपंकरुह पानि ।
बोली गिरिजा बचन बरमनहु प्रेम रस सानि ॥ १६ ॥

काशी अपनी पुरीमें मरण शील जीवों को कर्म जाल संसार सागर में निमग्न दुखी देखकर जिस स्वामी के नाम मंत्रोपदेश से विशोक लोक बासी करताहूं १ सोईसर्वेश्वर मेरा स्वामी रघूत्तम रामहै जो सबके हृदयमें अंतर्यामी रूपसे रमरहा है २ बिवस कहें गिरते परते जमुहातेभी जिसके नामको जो मनुष्य स्मरण करतेहैं उन के अनेक जन्म संचित पाप भस्म हो जाते हैं प्रपन्न गीतायां । नारायणोनामनरो नराणां प्रसिद्धिचौरः कथितपृथिव्यांअनेक जन्मार्जित पापसंचयंहरत्य शेषंस्मृतमात्रएव ३ और जो प्रीति समेत उसके नामका स्मरण करते हैं सोतो गोवत्स पदके समान इस अपार संसार सागर को तर जाते हैं रामरक्षायां रामेतिरामभद्रेति रामचन्द्रेति वास्मरन् नरोनलिप्यतेपापैर्भुक्तिमुक्तिंचविंदति ४ सो परमात्मा राम हैं हेपारवती तहां भ्रम कैसा यहतो अत्यन्त अविहित कहें जैसी कहीं किसी ने नहींकही ऐसी तेरी बाणीहै ५ ऐसी संशय तो हृदय में लातेही ज्ञान वैराग्यादि संपूर्ण गुण जाते रहते हैं ६ ऐसे शिवजी के भ्रमभंजन बचनों के सुनतेही पारवती की समस्त कुतर्कोंकी रचना नाश होगई ७ रघुपति राम चन्द्र के चरणों में अतिप्रीति और प्रतीति होतीहुई और महा दारुण जो असंभावना कहें अश्रद्धा वा अनिश्चय रामके विषयमें

रही सो सब नाश होगई ॥ ८ ॥ दोहा ॥ बारम्बार अपने प्रभु के चरण छूकर और हाथ जोरि कर पारवती मधुर कोमल बचन प्रेम रस सने फेरि बोली ॥ १६ ॥

शशिकर समसुनिगिरा तुम्हारी । मिटामोहशरदातप भारी१
तुम कृपालुसब संशय हरेऊ । राम स्वरूपजानि मोहिपरेऊ२
नाथकृपा अबगयउ विषादा । सुखी भइउं प्रभुचरणप्रसादा३
अबमोहिंआपनिकिंकरिजानी। यदपिसहजजड़नारिअयानी४
प्रथम जो मैं पूछा सोइकहहू । जौ मोपर प्रसन्न प्रभुअहहू ५
रामब्रह्म चिन्मय अबिनाशी । सर्ब रहित सब उरपुर बाशी६
नाथ धरेउ नरतनु किहिहेतू । मोहि समुझाइ कहहु वृषकेतू७
उमा बचन सुनि परमविनीता । रामकथा पर प्रीति पुनीता ८
दो० हिय हरषे कामारि तब शंकर सहज सुजान ।
बहुबिधि उमहिं प्रशंसि तब बोले कृपा निधान ॥१७॥

चन्द्र किरण के समान शीतल आपकी बाणी सुनकर मेरा मोह शरद ऋतु का आतप समस्त मिट गया १ हे स्वामी आपने कृपा करके मेरी संपूर्ण संशय हरली अब रामका स्वरूप यथार्थ मेरी समुझ में आगया २ आपके चरणों के अनुग्रह से मेरा विषाद दूरि हुआ और मेरा चित्त प्रसन्न होगया ३ अब मेरे को अपनी दाशी जानकर यदापि सोभाविक में जड़ अज्ञान स्त्रीहूं ४ पहले जो मैने आपसे पूछा है सो कहिये जो आप मेरे पर प्रसन्न हैं ५ राम ब्रह्म चिन्मय अविनाशी ने हे नाथ मनुष्य शरीर किसकारण धारण किया सो कारण आप मेरे को समझा कर हे बृषभध्वज स्वामी कहियेगा ६ । ७ ऐसी पारवती के बचन अति नम्र सुनि और राम कथा के श्रवणकरने पर शुद्ध प्रीति देखि कर तबतो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ हृदय में कामारि शंकर स्वामी परम सुजान अत्यन्त हर्षित हुये और अनेक प्रकार से पारवती की प्रसंशा करिके बड़े कृपा निधान शिव जी महाराज बोले ॥ १७ ॥

सुनुगिरिजाहरिचरितसुहाये । बिपुलविसद निगमागमगाये१
हरि अवतार हेतु जिहि होई । इद मित्थंकहि सकै न कोई २
रामअतर्क्य बुद्धि मन बानी । मतहमार अस सुनहुभवानी३
तदपिसंत मुनिवेदपुराणा । जसकछुकहहिंस्वमतिअनुमाना४
तसमैं सुमुखि सुना वहुंतोही । समुझिपरा जसकारण मोही५
जब जब होइ धर्म की हानी । बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी६

करहिंअनीति जाइनहिं बरणी । शीदहिं विप्र धेनुसुर धरणी ७
तबतबप्रभुधरिविविधिशरीरा । हरहिं कृपानिधिसज्जन भीरा ८
दो० असुर मारि थापहिं सुरन्हि राखहिं निज श्रुति सेतु ।
जग विस्तारहिं बिमलयश राम जन्मकर हेतु ॥ १८ ॥

सुनु हे गिरिजे हरिके सुन्दर चरित्र उज्ज्वल अनेक निगमागमोंमें कहेहैं १ परंतु जिस कारण भगवदावतार होता है उसको तो इदंइत्थं अर्थात् यहहै ऐसा कारणहै यह बात तो कोई भी नहीं कह सकता है हरिकी लीला हरिही जानै २ रामबुद्धि की तर्कना में नहीं आते न मन बाणी की तर्कना में किसी भांति आसकतेहैं हमारा तो यह मत है हे पारवती ३ तौभी संत मुनि वेद पुराणादि जैसा कुछ अपनी अपनी बुद्धि के अनुमान पूर्वक भगवत अवतार के कारण कहते हैं ४ तैसे मैं भी तुम को हे सुमुखी पारवती सुनाताहूं जैसा कुछ कारण मेरी समुझ में आया है ५ कि जब जब संसार में धर्म की हानि होती है और महा अधम अभिमानी असुर बढ़ि जाते हैं ६ जिनकी अनीति कही नहीं जाती है कि निरपराध ब्राह्मण गाय और देवताओं को पीड़ा करतेहैं तबतब प्रभु देव मनुष्य तिर्यगादि में अनेक प्रकार के शरीर धारण करिके सज्जनोंकी पीरको हरतेहैं ७ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ असुरों कोमार करदेवताओं को यथास्थान स्थापित करतेहैं और अपने वेद मर्य्याद के सेतुकी रक्षा करतेहैं और संसार में अपने निर्मल यशका विस्तार करते हैं यह राम जन्म का कारण है ॥ १८ ॥ भगवत्गीतायां । यदायदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवतिभारत अभ्युत्थान मधर्मस्यतदात्मानंसृजाम्यहं १ परित्राणाय साधूनां विनाशाय चदुष्कृतां धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगयुगे २जन्मकर्मचमेदिव्य योमांवेत्तितत्वतः त्यक्तादे हंपुनर्जन्म नैतिमामेतिसोर्जुन ३

सोइयश गाइगाइ भवतरहीं । कृपासिंधु जनहिततनुधरहीं १
राम जन्म के हेतु अनेका । परम बिचित्र एकतें एका २
जन्म एकद्वय कहहुं बखानी । सावधान सुनुसुमुखि सयानी ३
द्वारपाल हरिके प्रियदोऊ । जयअरु बिजय जानसब कोऊ ४
बिप्र शाप तें दूनौ भाई । तामस असुर देह तिन पाई ५
कणककशिपुअरुहाटकलोचन।विश्वविदितसुरपतिमदमोचन६
विजयी समर शूर बिख्याता । धरिबराह बपुएक निपाता ७
होइनरहरि पुनिदूसर मारा । जन प्रह्लाद सुयशबिस्तारा ८
दो० भये निशाचर जाइतेइ महाबीर बलवान ।
कुंभकर्ण रावण सुभट सुरबिजई जगजान ॥ १९ ॥

उन्हीं यशको गान कर अर भगवत् प्रपन्न जनमहा दुस्तर संसार सागरको बिना ज्ञान बैराग योग जप तप किये अनायास तर जातेहैं कृपा निधान राम स्वामी केवल अपने भक्तोंके हितहीके निमित्त बिभु रूप धारण करतेहैं यह मुख्य कारण मेरेजान में है १ कल्पांतर भेदसे राम जन्मके कारण एकतें एकअति बिचित्र अनेक हैं २ तहां एक द्वै जन्मके कारण वरणन करताहूं सो सावधान मनसे हे पारवती तुम श्रवण करो ३ बैकुंठमें द्वारपाल विष्णुभगवानके अति प्यारे एक जय दूसरे बिजय थे जिनकोसंसार जानताहै ४ सोसनकादिकोंके शापतें दूनों जने तामसी आसुरी देहके प्राप्तहुये ५ एक हिरण्य कश्यपु दूसरा हिरण्याक्ष दोनों भाई हुये बिश्व बिख्यात इन्द्रके मद हरता ६ त्रैलोक्य बिजयी समर शूर कहिं बड़े रणधीर लोक बिख्यात हुये एकको तो यज्ञ बाराह रूप धारण करिके निपातन किया दूसरे को नृसिंह होकर मारा और अपने भक्त प्रह्लादके यशका विस्तार किया ७ ॥ ८ दोहा ॥ सोई त्रेता युगमें आकर राक्षस हुये बड़े बीर बड़े बलवान एक दशग्रीव रावण दूसरा उसका अनुज भाई कुम्भकर्ण महा सुभट देव बिजयी संसार जिनको जानता है ॥ १९ ॥

मुक्त नभये हते भगवाना । तीनि जन्मद्विज बचन प्रमाना १
एकबार तिनके हितलागी । धरेउ शरीर प्रणत अनुरागी २
कश्यप अदितितहांपितुमाता । दशरथकौशिल्याविख्याता ३
प्रति अवतार कथा प्रभुकेरी । सुनिबरणीमुनिकबिनघनेरी ४
नारद शाप दीन्ह एकबारा । कलपएकतिहिलगिअवतारा ५
गिरिजाचकितभई सुनिबानी । नारदविष्णुभक्त मुनिज्ञानी ६
कारणकवन शापमुनिदीन्हा । काअपराध रमापतिकीन्हा ७
यहप्रसंग मोहि कहहुपुरारी । मुनिमनमोहसोअचरजभारी ८
दो० बोले बिहसि महेश तब ज्ञानी मूढ़ न कोइ ।
जिहिजसरघुपति करहिंजब सोतिहिक्षणतसहोइ ॥ २०

विष्णु भगवान के मारने सेभी मुक्त नहीं हुये क्योंकि सनकादिकोंका शाप तीनि जन्मको रहा १ एकबार उनके हितके निमित्त शरणागत वत्सल स्वामीने राम शरीर धारण किया २ तहां कश्यप अदिति दशरथ कौशल्या रूप मातापिता हुये ३ ऐसेही अवतार अवतार प्रति स्वामीकी कथा कबीश्वर मुनि जनोंने अनेक बिधिसे बर्णन कीहै ४ एकबार नारद ने बिष्णुको शापदिया उस कारण उस कल्पमें रामावतार हुआ ५ यह शिवजीकी वाणी सुनतेही पारवती चकित होगईं कि नारद तो बिष्णुभक्त परमशांत ज्ञानी मुनिहैं ६ ऐसा कारण कौनसा हुआ जो नारदने अपने स्वामी विष्णु भगवान को शाप दिया और सदा भक्तानुकूल विष्णु भगवान ने कौनसा अपराध अपने परम

भक्त नारदको किया ७ यह प्रसंग तो मेरे से विस्तार समेत हे पुरारि स्वामी कहिये नारदसे ज्ञानी मुनि को मोह होनातो बड़ा आश्चर्य्य है ८ दोहा ॥ यह सुनकर हंसि के शिवजी बोले कि हे पारवती इस संसारमें स्वभावतें ज्ञानी वा मूढ़ कोईभी नहीं है जिस समय जिसको मेरा स्वामी रघूत्तम राम जैसा करताहै सो उसी समय तैसाही हो जाता है प्रेरक सबका रमही है ॥ २०॥

हिम गिरिगुहाएकअतिपावनि । बहसमीपसुरसरीसुहावनि १
आश्रम परमपुनीत सुहावा । देखि देवऋषि मनअतिभावा २
निरखिशैलसरिबिपिनबिभागा । भयउरमापतिपदअनुरागा ३
सुमिरतहरिहिआपगतिबाधी । सहजबिमलमनलगीसमाधी ४
मुनि गति देखि सुरेसडराना । कामहिंबोलिकीन्ह सनमाना ५
सहितसमाज जाहुममहेतू । चलेउ हर्षिहिय जलचर केतू ६
सुनासीर मनमहं अतित्रासा । चहतदेवऋषिममपुरबासा ७
जे कामी लोलुपजग माहीं । कुटिल काकइव सबहिंडराहीं ८
दो० सूख हाड़ लैभागशठ स्वान निरखि मृगराज ।
छीनि लेइ जनिजानि जड़तिमि सुरपतिहिनलाज॥२१॥

इस प्रकार पारवती को समुझा कर उनका पूछा हुआ नारद के मोह का वृत्तांत कहते हैं हिमाचल परवत एक अति पवित्र गुहा जिसके निकटही सुर सरिता श्री गंगा का प्रवाह है १ ऐसा परम पुनीत आश्रम देवर्षि नारद को अच्छा लगा २ परवत की सुन्दर नदी और उसके बनको देखिकर अपने स्वामी रमा नाथ भगवान विष्णु के चरणों का प्रेम उमगि आया ३ हरिका स्मरण करतेही आपकी गति तो बाधित होगई अर्थात् बिसरि गई सोस्वाभाविक ही विशुद्ध मन करिके भगवत ध्यानमें समाधि लगिगई ४ मुनि की इस गति को देखिकर देवराज इन्द्र भयमान हुआ और काम को बुलाकर उसका बड़ा आदर किया और कहा ५ कि मेरे कार्य्य के निमित्त अपनी सेना समेत नारद के पास जाकर उनकी समाधि को छुटा दो यह सुनकर काम हर्षित हृदय अभिमान समेत इन्द्र से बिदा हुआ ६ इन्द्र के मनमें हे पारबती यह त्रास हुई कि देवर्षि नारद मेरी पदवी लिया चाहते हैं ७ जे कोई कामी लोभी संसार में हैं ते महा कुटिल काकों की नाईं सभी से शंकित रहते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जैसे कोई सूखा हाड़ चबाता हुआ महा मूर्ख कूकुर सिंह को आता हुआ देखिकर उस सूखे हाड़ही को बड़ा पदार्थ मानि कर लेभागे कि कहीं यह छीनि न लेवे तैसेही इन्द्र अपने एक मन्वन्तर भरेही का राज्य नारद की पदबी के आगे बड़ापदार्थ मानता है ॥ २१ ॥

तिहिआश्रमहिं मदनजबगयऊ । निजमायाबसंतनिर्मयऊ १
कुसुमितबिबिधिबिटप बहुरंगा । कूजहिंकोकिलगुंजहिंभृंगा २
चलीसुहावनि त्रिबिध बयारी । काम कृशानु बढ़ावन हारी ३
रंभादिक सुर नारि नवीना । सकल असमशर कलाप्रवीना ४
करहिं गान बहु तान तरंगा । बहुबिधि क्रीड़हिं पाणिपतंगा ५
देखिसहाय मदनहरषाना । कीन्हेसि पुनिप्रपंच बिधिनाना ६
कामकलाकछुमुनिहिंनब्यापी । निजभयडरेउमनोभवपापी ७
सीमको चापिसकै जगलासू । बड़ रखवार रमापति जासू ८
दो० सहित सहाय सभीत अतिहारि मानि मन मयन ।
गहेसिजाइ मुनि चरणतबकहि सुठि आरतबयन॥२२॥

उस नारद के आश्रम में जब काम पहुंचा तो प्रथमही अपनी माया से बसंत प्रकट कर दिया १ तिस करिकें अनेक जाति के सुन्दर वृक्ष रंग रंग के फूलि गये तिन पर मधुर मनोहर शब्दसे कोकिला कूजने लगीं और भ्रमर गुंजनेलगे शीतल मन्द सुगन्ध लिये कामाग्नि बढ़ावनी सुन्दर पवन चलने लगी ३ रंभादिक नव यौवना देवांगना अप्सरा जो काम कलामें अत्यन्त प्रवीण हैं ४ सो अनेक तानों की तरंगों से गान करने लगीं औरअनेक भांतिकी हाथो में गेंद उछारती हुई नृत्यादि क्रीड़ा करने लगीं ५ ऐसा अपनी सेना का प्रभाव देखिकर काम बड़ा हर्षित हुआ फिरि अनेक भांति के प्रपंच रचि रचि कर अपने पांचहू बाण पुष्पधनुष में संधानि कर बारम्बार नारद पर चलाये ६ जब काम की कोई भी कला मुनि के मनमें न व्यापी तबतो अपनेही भयसे अपराधी काम भयमान हुआ ७ भला उसकी सीमा को संसार में कौन दाबि सकता है जिसका बड़ा रक्षक रमापति स्वयं हरिहै जिसकी भयसे पवन निरंतर बहती है सूर्य्य समय अनुहार तपताहै इन्द्र अपने नियत काल पर वर्षता है अग्नि आज्ञानुसार जराती है मृतु दौरी फिरती है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सेना समेत अति सभीत मनमें कामदेव हारि मानि के नारद मुनि के पैरों जा पड़ा और अतिही आरत बचन कहने लगा ॥ २२ ॥

भयउन नारदमनकछु रोषा । कहिप्रिय बचनकामपरितोषा १
नाइचरण शिर आयसुपाई । गयउ मदनतबसहित सहाई २
मुनिसुशीलताआपनिकरणी ।सुरपतिसभाजाइ सब बरणी ३
सुनिसबकेमनअचरजआवा । मुनिहिंप्रशंसिहरिहिशिरनावा ४
तबनारद गवने शिव पाहीं । जीतिकाम अहमिति मनमाहीं ५

मारचरित शंकरहि सुनावा । अतिप्रियजानि महेशसिखावा ६
बारबार बिनवौं मुनितोहीं । जिमियह कथासुनायहु मोहीं ७
तिमिजनिहरिहि सुनायहु कबहूं । चलैप्रसंगदुरायहु तबहूं ८
दो० शंभुदीन्ह उपदेश हित नहिं नारदहि सुहान ।
भरद्वाज कौतुक सुनहु हरिइच्छा बलवान ॥ २३ ॥

नारद के मनमें कुछ भी क्रोध न हुआ और शांत बचन कहकर उसको निर्भय किया १ तब तो कामदेव नारद को दण्डवत प्रणाम करिके अपनी सेना समेतइन्द्र के पास लौटि गया २ तहां नारद की सुशीलता और अपनी करतूति संपूर्ण कही ३ सो सुनकर सबको आश्चर्य हुआ नारद की प्रशंसा करिके हरिको दंडवत प्रणाम किया ४ तब फिरि नारद शिवजीके पास गये काम जो जीता है ता करिके अहं यह जिनको गर्ब उत्पन्न हुआ है ५ तहां जाकर काम के संपूर्ण चरित्र शिव जी को सुनाये शिव जीने अपने अति प्यारे जानिकर कहा ६ कि सुनो हे नारद जैसे तुम ने यह कथा मेरे आगे कही है तैसे कहीं विष्णु भगवान के सामुहें मति कहबैठना मैं तुम्हारी बारबार बिनती करिके कहता हूं जो कदाचित प्रसंग भी चले तो भी घुमाइ जाना ७ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ यद्यपि शिव जीने अति हितका उपदेश भी किया परंतु नारद को अच्छा न लगा जाना कि पराया उत्कर्ष किसी को नहीं सुहाता है तिसका परिणाम हे भरद्वाज तुम सुनो भगवत इच्छा अति बलवान है ॥ २३ ॥

राम कीन्ह चाहहिं सोइहोई । करै अन्यथा असनहिं कोई १
शंभुबचन मुनिमनहिंन भाये । तब विरंचि के लोक सिधाये २
एकबार करतल बरवीणा । गावत हरि गुणगान प्रवीणा ३
क्षीरसिंधु गवने मुनिनाथा । जहंबस श्रीनिवास श्रुतिमाथा ४
हर्षि मिले उठि रमानिकेता । बैठे आसन ऋषिहि समेता ५
बोले बिहसि चराचर राया । बहुतहिदिवस कीन्हमुनिदाया ६
कामचरित नारदसबभाषे । यद्यपि प्रथम बरजि शिवराखे ७
अतिप्रचंड रघुपतिकीमाया । जिहिनमोह असकोजगजाया ८
दो० रूख बदनकरि बचन मृदु बोले श्री भगवान ।
तुम्हरेसुमिरणते मिटहिं मोहमार मदमान ॥ २४ ॥

राम जो किया चाहतेहैं सोई होताहै उसको अन्यथा करि देवै ऐसा कोई नहीं है १ शिवजीके बचन नारद के मनमें न रुचे तबतो ब्रह्म लोक को चले गये एक

समय हाथों में सुन्दर वीणा लिये गान विद्या में बड़े प्रवीण भगवत् गुण गातेहुये ३ क्षीर सागर को गये जहां साक्षात् श्री निवास श्रुति माथ अर्थात् समस्त श्रुतियों का मस्तक पुरुष सूक्त प्रसिद्ध बिष्णु भगवान बसतेहैं तथैव वेदानांप्रवरामंचास्तस्मादध्यात्म वादिनः । तस्माद्धपौरुषं सूक्तंनतस्माद्विद्यते परं । ४ नारद को आया जानकर बड़े प्रसन्नर मानिकेत स्वामी उठकर मिले और नारद समेत आसन पर बैठे ५ तब तो हंसकर भगवान बोले कि हे मुनि अबकी बारतो आपने बहुत दिनों में दया करी कहो कहां रहे ६ तबतो नारद ने काम के सब चरित्र कहे यद्यपि पहले से शिव जीने बरजि भी रक्खा रहै ७ भगवन्माया बड़ी प्रबल है जिसको नमो है ऐसा कौन संसार में जन्मा है ॥ ८ दोहा ॥ तबतो रूखा सा मुख बनाकर कोमल बचन भगवानबोले तुम्हारे सामुहें काम की कौन गणना में है तुम्हारे तो स्मरणही से काम क्रोध मद मान सब मिटि जाते हैं ॥ २४

सुनु मुनि मोहहोइ मनताके । ज्ञान विराग हृदय नहिंजाके १
ब्रह्मचर्य्य ब्रतरत मतिधीरा । तुमहिं किकरहि मनोभव पीरा २
नारद कहेउसहितअभिमाना । कृपातुम्हारि सकलभगवाना ३
करुणानिधि मनदीखबिचारी । उरअंकुरेउ गर्ब तरु भारी ४
बेगि सो मैं डारिहौं उखारी । प्रण हमार सेवक हितकारी ५
मुनिकर हितमम कौतुकहोई । अवशिउपाय करब मैं सोई ६
तबनारद हरिपद शिर नाई । चलेहृदय अहमिति अधिकाई ७
श्रीपति निज मायातब प्रेरी । सुनहु कठिन करणीतिहिकेरी ८
दो० बिरचेउ मग महं नगर एक शत योजन बिस्तार ।
श्रीनिवास पुरतेंअधिक रचना बिविधप्रकार ॥ २५ ॥

सुनो हे मुनि मोह तो उसको होता है जिसके हृदय में ज्ञान बैराग नहींहोता है १ आप तो ब्रह्मचर्य्य ब्रत परायण हैं तुमको भला काम बिचारा क्या बाधा कर सकता है २ नारद अभिमान समेत बोले हां स्वामी सब आपकी कृपा है ३ तबतो करुणा निधान भगवान ने बिचार कर देखा कि इनके हृदय में तो बड़ा भारीगर्व का वृक्ष जमा है ४ इसे तो मैं शीघ्रही उखाड़ूंगा क्योंकि सेवक हितकारी हमाराप्रण है और नारद मेरे परम भक्त हैं इनके हित करने में ढील न चाहिये ५ जिसमें इनका हित और हमारा कौतुक कालक्षेप होवै सो उपाय अवश्य मैं अभी करूंगा ६ तबतो नारद भगवान को प्रणाम करिके बड़े अभिमान समेत घरको चले ७ औरश्री पति भगवान ने अपनी जगन्मोहनी माया को उनके ऊपर प्रेरा सो जो उसने चरित्र

क्रिया सो सुनो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ कि मार्ग में उसने सौ योजन एक नगर लम्बा चौड़ा बनाया जिसमें बैकुंठ से भी अधिक रचना अनेक प्रकारकी दीखि परती है ॥ २५ ॥

बसहिंनगर सुंदर नरनारी । जनुबहु मनसिज रतितनु धारी १
तिहिपुरबसैशीलनिधिराजा । अगणितहयगजसेनसमाजा २
शतसुरेशसमाविभव बिलासा । रूपतेज बल नीति निवासा ३
विश्वमोहनी तासु कुमारी । श्री बिमोह जिहि रूप निहारी ४
सोइहरि मायाबस गुणखानी । शोभातासु किजाइ बखानी ५
करैस्वयंबर सो नृपबाला । आये तहँ अगणित महिपाला ६
मुनिकौतुकी नगरतिहिगयऊ । पुरबासिन्हसबपूछत भयऊ ७
सुनिसब चरित भूप गृहआये । करिपूजा नृपमुनि बैठाये ८
दो० आनि दिखाई नारदहि भूपति राज कुमारि ।
कहहु सुताके दोष गुण मुनिवर हृदय बिचारि ॥ २६ ॥

कैसे सुन्दर उस नगर में स्त्री पुरुष बसते हैं मानो काम और रतिही ने अनेक रूप धारण किये हैं १ और उस नगर में शील निधिनाम राजाबसता है जिसके हाथी घोड़े और सेना के समाज का पारनहीं मिलता २ इन्द्र से सौगुना जिसके बैभव का बिलास है और रूप बल तेज और नीतिका तौ मानो निवासही है ३ विश्वमोहनी नामा उसकी बेटी है जिसके रूपको देखकर श्रीलक्ष्मी भी मोहित होवै ४ सोई गुणमई भगवन्मायाहै उसकी शोभा कैसे कही जाती है ५ सो राजकुमारी स्वयंबरकिया चाहती है तिस निमित्त अनेक राजा तहां आय हैं ६ सहज कौतुकी नारद उस नगर में चले गये और पुरबासियों से भीर भार के समाचार पूछे ७ उनसे सबवृत्तांत सुनकर राज घरको गये तबतौ राजा ने बिधिवत् पूजन करिके सुन्दर आसन पर बैठाया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ और अपनी राजकुमारी को लाकर नारद को दिखाया और कहा कि हे मुनिवर्य्य महाराजइसमेरी बेटीके गुणदोष आप बिचारिकर कहिये ॥ २६॥

देखि रूपमुनि बिरति बिसारी । बड़ी बार लगि रहे निहारी १
लक्षण तासु बिलोकि भुलाने । हृदय हर्ष नहिं प्रगट बखाने २
जो यहि बरै अमर सो होई । समरभूमि तिहि जीतनकोई ३
सेवहिं सकल चराचर ताही । बरै शीलनिधि कन्या जाही ४
लक्षण सब बिचारि उर राखे । कछुक बनाइ भूपसन भाखे ५
सुतासुलक्षणि कहि नृप पाहीं । नारद चले शोच मन माहीं ६

करहुंजाइ सोइयतन बिचारी । जिहिप्रकार मोहिं बरैकुमारी ७
जपतप कछुनहोइ यहिकाला । हेबिधिमिलै कवनिबिधिबाला ८
दो० यहि अवसर चाहिय परम शोभा रूपबिशाल ।
जो बिलोकिरीझै कुवरि तब मेलै जयमाल ॥ २७ ॥

देखि उसका रूप मुनि विरति तो पहलेही खोइ बैठे बड़ी बार तक तो उसे देखतेही रह गये १ फिरि उसके सुलक्षण देखिकर ज्ञान भी भूलि गये हृदय में आनन्द होगया तातें राजा से तो प्रत्यक्ष नहीं किया मनहीं में विपरीति अर्थ समुझ लिया २ लक्षण तो ऐसे रहैं कि इसको अजर अमर अपराजित चराचर सेव्यवर मिलेगा तिसका यह समझे कि जो इसको वरैगा सो अमर होजाइगा और संग्राम में उसको कोई न जीति सकैगा ३ और चराचर जीव सब उसकी सेवा करैंगे जिसको यह शीलनिधि की कन्या वरैगी ४ सो लक्षण बिचार कर तो पेटके पेटहीमें राखे राजा से कुछ औरही के और बनाकरकहिदिये ५ कि तुम्हारी पुत्री संपूर्ण सुलक्षण संपन्न है यह कहकर चलि दिये और बड़े शोच में मग्न होगये ६ कि ऐसा कुछ यत्न बिचारि कर करै जिससे यह राजकुमारी हमको बरै ७ परंतु जप तप तो इस कल्पकाल में हो नहीं सकता है हे देव कैसे यह बाला प्राप्त होवे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इस समय तो परम शोभा और बड़ा रूप चाहिये जिसको देखिकर राजकुमारी जब रीझै तब तो जयमाला डारै ॥ २७ ॥

हरिसन मागहुं सुंदरताई । होइहि जातगहरु मोहि भाई १
मोरेंहित हरिसमनहिं कोऊ । यहि अवसर सहाय सोइहोऊ २
बहुबिधिबिनयकीन्हिंतिहिकाला । प्रगटेप्रभुकौतुकीकृपाला ३
प्रभु बिलोकिमुनिनयनजुड़ाने । होइहि काज हृदय हरषाने ४
अतिआरत कहिकथा सुनाई । करहु कृपा प्रभु होहु सहाई ५
आपन रूप देहु प्रभु मोही । आन भांति नहिंपावहुं ओही ६
जिहिबिधिनाथहोइहितमोरा । करहु सो बेगि दास मैं तोरा ७
निजमायाबलदेखिबिशाला । हियहंसि बोले दीनदयाला ८
दो० जिहि बिधि होइहि परम हित नारद सुनहु तुम्हार ।
सोइ हमकरब न आनकछु बचन न मृषा हमार ॥२८॥

एक काम करै हरिसे सुन्दरता मागैं परंतु जाने आनेमें भी तो बड़ा विलंब होगा कब गये कब आये १ और हरि के समान हितकारी हमारा और कोई नहीं है इस समय सोई हमारा सहायक होवै २ इस प्रकार जब अनेक भांति बिनती करी

तबतौ कौतुकी स्वामी प्रगट हो गये ३ अपने स्वामी को देखतेही मुनिके नेत्र शीतल होगये अब कार्य्य होने में संदेह नहीं यह समझकर बड़े हर्षित हुये ४ तबतौ अतिही आरत्त होकर संपूर्ण कथा कह सुनाई और कहा कि हे स्वामी अब इसमें आप कृपा करिके सहायता करो ५ कि अपना रूप आप हमको कृपा करें क्योंकि और प्रकार सें उसको न पाऊंगा ६ जिहि बिधि हे नाथ मेरा हित होवे सोई आप शीघ्रही करैं मैं आपका दासहूं ७ तबतौ भगवान अपनी माया का बल हृदय में अति बिशाल देखकर हंसकर बोले ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सुनो हे नारद जिस भांति तुम्हारा परम हित होगासोई हम करेंगे अन्यथानहीं करनेके हमारा बचन झूठनहीं होता है ॥ २८॥

कुपथमांगु रुज ब्याकुल रोगी। बैद्यनदेइ सुनहुमुनियोगी १
यहिबिधिमैंतुम्हारहितठयऊ। कहिअसअंतरहितप्रभुभयऊ२
माया बिबस भये मुनिमूढ़ा। समुझी नहिं हरिगिरानिगूढ़ा ३
गवने तुरत तहां ऋषिराई। जहां स्वयंबर भूमि बनाई ४
निजनिज आसनबैठे राजा। बहु बनाव करिसहित समाजा ५
मुनिमन हर्षरूप अतिमोरे। मोहितजिआनहिंबरिहिनभोरे ६
मुनिहितकारणकृपानिधाना। दीन्ह कुरूप न जाइबखाना ७
सोचरित्र लखिकाहुंन पावा। नारद जानिसबहि शिरनावा ८
दो० रहे तहां द्वय रुद्रगण ते जानहिं सब भेउ।
विप्ररूप देखत फिरहिं परम कौतुकी तेउ ॥ २९ ॥

रोग बिकल रोगी जो कुपथ्य मांगता है तौ जैसे उसका हितकारी बैद्य उसको नहीं देता है तैसेही मैंने तुम्हारा हित निरूपण किया है ऐसे कहकर भगवान तौ अंतर ध्यान होगये १ । २ और माया के बस नारद ऐसे मूढ़ होगये कि भगवानकी अति गूढ़वाणी उनको समुझ न पड़ी ३ तुरंतही वहां स्वयम्वर रंगभूमिबनी रहैतहां को चले गये ४ अपने अपने आसनों पर बड़े बनाव से समाज समेत राजा लोगबैठे हैं ५ तहां मुनि के मनमें बड़ा हर्ष है कि रूप तौ मेरेही में अधिक है मेरे को छोड़कर दूसरे को तौ भूलिकर भी न बरैगी ६ और मुनिके हित के निमित्त कृपा निधान स्वामी ने महा कुरूप दिया जो कहा नहीं जाता ७ परंतु सो चरित्र और किसी को लखि नहीं परा नारदजी जानकर सब ने दंडवत किया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तहांद्वयरुद्र गण रहैं ते यहसब मर्म जानतेरहे सो विप्ररूप धारणकिये बड़ेकौतुकी देखतेरहे २९ ॥

जिहिसमाज बैठे मुनि जाई। हृदयरूप अहमिति अधिकाई १
बैठे तहं महेश गण दोऊ। विप्र वेषगति लखैं न कोऊ २

करहिंकूटि नारदहि सुनाई । नीकि दीन्हि हरिसुंदरताई ३
रीझिहिराजकुवरिछबिदेखी । इनहिंबरिहिहरिजानिबिशेषी ४
मुनिहिमोह मनहाथपराये । हंसहिं शंभुगणअति सचुपाये ५
यदपिसुनहिं मुनिअटपटिबानी । समुझिनपरैबुद्धि भ्रमसानी ६
काहुंन लखासो चरितबिशेखा । सो स्वरूप नृप कन्यादेखा ७
मर्कट बदन भयंकर देहीं । देखत हृदय क्रोध भा तेहीं ८
दो० सखी संग लै कुवरि तब चलि जनु राज मराल ।
देखति फिरति महीपगण करसरोज जयमाल ॥ ३० ॥

जिस समाज में नारद अपने रूपके अभिमान में बैठे रहे तहां दोनो रुद्र गण भी जा बैठे विप्र वेष धारण किये किसी को पहिचानि न परे १ । २ नारदको सुना सुना कर उनही की हंसी करते हैं कि सुन्दरता तो हरि ने बहुत भली दीन्ही है ३ ऐसी छबि को तो देखिकर राजकुमारी रीझिही तो जाइगी और इन्ही को हरि जानिकर बरिही तो लेवैगी ४ मुनिका मन पराये बस ताके मोह तें न कछू सुनै न समुझैं रुद्र गण बड़े प्रसन्न बैठे बैठे हंसी करते हैं ५ यद्यपि मुनि अट पटी उनकी बाणीसुनते भीहैं तो भी कुछ समुझनहीं परती है क्योंकि बुद्धि भ्रम में सनी है ६ विशेष करिके सो चरित्र और किसी ने तो नहीं जाना परंतु सो स्वरूप राजकुमारी ने देखा ७ कि बानरका तो मुखऔर महाभयंकर शरीर है सो देखतेही उसको बड़ा क्रोधहुआ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तबतो सखियों को साथ लेकर राजहंस की चाल करिके हाथों में जयमाला लिये सब राजों को देखती हुई रंगभूमि में फिरने लगी ॥ ३० ॥

जिहिदिशिबैठेनारदफूली । तिहिदिशिसोनबिलोकतिभूली १
पुनिपुनिमुनिउकसहिंअकुलाहीं । देखिदशाहरगणमुसुकाहीं २
धरिनृपतनु तहंगये कृपाला । कुवरि हर्षिमेलीजयमाला ३
दुलहिनिलैगयेलक्ष्मिनिवासा । नृपसमाजसबभयउनिरासा ४
मुनिअतिविकलमोहमतिनाठी । मणिगिरिगईछूटिजनुगांठी ५
तब हरगण बोलेमुसुकाई । निजमुखमुकुर बिलोकहुजाई ६
असकहि दोउभागेभयभारी । बदनदीखमुनि बारिनिहारी ७
बेषबिलोकि क्रोधअति बाढ़ा । तिनहिंशापदीन्हेउअतिगाढ़ा ८
दो० जाइ निशाचर होहुतुम कपटी पापी दोउ ।

हंसे हमहिं सोलेहु फल बहुरि हंसेहु मुनिकोउ ॥३१॥

जिस दिशा में नारद जी फूले हुये बैठे हैं उस दिशा को तौ सो राजकुमारी भूलिकर भी नहीं देखती है १ अबतौ नारद बारबार उकसते हैं और अकुलाते हैं यह दशा उनकी देखकररुद्रगण बारम्बारमुसुकातेहैं २ इतनेमें राजरूपधारण करिके जो विष्णु भगवान उस रंगभूमि में गये सोई उस राजकुमारी भगवन्माया ने प्रसन्न होकर अपने पति माधव के कंठ में जयमाला पहरादी ३ दुलहिनि को श्री श्रीनिवास गरुड़ध्वज भगवान ले गये राजा लोग निराश होकर उठगये ४ नारदकी बुद्धि जो मोह ने नष्ट करदी तां करिके कैसे व्याकुल होगये मानो गांठि छूटकर अमोल मणिही गिरिगई है ५ तबतौ रुद्रगण मुसुकायके बोले कि अपना मुखतौ दर्पण में देखौ तब बिवांह कीजियो ६ ऐसे कहकर दोनों भय भीतहोकर भगे और नारदने अपना मुख पानी में देखा ७ सो देखतेही महा क्रोध बढ़ा औरउन दोनों को महा दारुण शाप दिया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ कि अरे कपटी पापियोतुम दोनों राक्षस होजावो हमको जो तुम हंसे उसका फल तौ लिये जाओ और मुनिकी हंसी फेरि कीजियो ॥ ३१ ॥

पुनिजल दीखरूपनिज पावा । तदपि हृदय संतोषनआवा १
फरकत अधर कोपमनमाहीं । सपदिचलेकमलापतिपाहीं २
देहौं शाप कि मरि हौं जाई । जगतमोर उपहासकराई ३
बीचहिं पंथ मिले दनुजारी । संगरमा सोइ राजकुमारी ४
बोले मधुर बचन सुर साईं । मुनिकहंचलेबिकलकीनाईं ५
सुनतबचन उपजा अतिक्रोधा । मायाबसन रहा मनबोधा ६
परसंपदा सकहु नहिं देखी । तुम्हरेईर्षा कपट बिशेखी ७
मथत सिंधु रुद्रहि बौरावा । सुरन्हिप्रेरि विषपानकरावा ८
दो० असुर सुरा बिष शंकरहि आप रमामणि चारु ।
स्वारथसाधक कुटिलतुम सदाकपट व्यवहारु ॥ ३२ ॥

यह कहकर फिरि जो जलमें देखा तौ अपनाहीं रूपपाया तौ भी मनमें संतोष न आया १ क्रोधसे ओठ कांपते बड़े बेगसे कमलापति विष्णुके पासको दौरे २ कैतव शाप दूंगा कै उनके ऊपर मरजाऊंगा कि उन्हीं ने यह मेरी हंसी संसार में करवाई है ३ सो उहांतक पहुंचने भी नहीं पाये कि बीचही मार्ग में दनुज सूदन भगवान मिलि गये जिनके साथलक्ष्मी और सोई राजकुमारीभी हैं ४ नारद तौ कुछ कहने भी नहीं पाये कि बड़ी मीठी बाणी से चराचर स्वामी आपही बोले कि हे मुनि आप ब्याकुल से कहां जाते हैं ५ ऐसा हास्य वचन सुनतेही नारद को अति कोप उत्पन्न हुआ और माया के बस मनमें कुछभी ज्ञान न रहा ६ बोले कि तुम अपनाही पेट

भला भर जानते हो पराई संपदा नहीं देख सक्ते ईर्षा और कपट येही दोगुणतुम में विशेषहैं ७देखो समुद्र मंथनमें अपने बटैतजानकर भोरे भारे बिचारे रुद्रको बौराइ दिया देवताओं से कहकर उनको महा काल कूट विषप्याइ दिया अपने भाग्य से जीते रहे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ और बिचारे दैत्योंको मोहनी बनकर सुरापान कराया महादेव को विष देदिया आप सुन्दर लक्ष्मी और कौस्तुभ मणि लेली बड़े स्वारथसाधक हो और कुटिल हो सदा तुम्हारे कपटही का व्यवहार है ॥ ३२ ॥

परमस्वतंत्र न शिरपर कोई । भावहि मनहिंकरहु तुम सोई १
भलेहि मंदमंदहि भलकरहू । विस्मय हर्ष न कछुउर धरहू २
डहंकिडहंकिपरकेहु सबकाहू । अतिअशंक मनसदाउछाहू ३
कर्मशुभाशुभ तुमहिं नबाधा । अबलगि तुमहिं न काहूसाधा ४
भलेभवन अब बायन दीन्हा । पावहुगे फल आपन कीन्हा ५
बंचेहु मोहिंजवनिधरि देहा । सोइ तुमधरहु शाप मम एहा ६
कपिआकृतितुमकीन्हिहमारी । करिहहिं कीशसहाय तुम्हारी ७
ममअपकार कीन्ह तुमभारी । नारि विरह तुमहोहु दुखारी ८
दो० शाप शीश धरि हर्षि हिय प्रभुसुर कारज कीन्ह ।
निजमाया की प्रबलता कर्षिकृपानिधि लीन्ह ॥ ३३ ॥

परम स्वतंत्र कहे परम निरंकुश हो कोई दूसरा तुम्हारे शिर पर नहीं है तातें जो तुम्हारे मनमें भावता है सोई करते हो १ भले को मंद और मंद को भला कर देते हो तिसका कुछ हर्ष शोक नहीं करते हो २ डंहकाइ डंहकाइ कर सबकी परीक्षा करते हो किसी की तुमको शंका नहीं है तातें तुम्हारे मनमें सदैव उछावही रहता है ३ शुभाशुभ कर्म तुमको कोई स्पर्श भी नहीं करता और अब तक तुमकोकोई दंडदाता भी नहीं मिला ४ अब तुमने भले घर बायन दिया है देखो इस अपने किये का फल भले प्रकार पाओगे ५ जो शरीर धारण करिके तुमने हमको ठगा है सोई शरीर तुम संसार में धारण करौ यह मेरा तुमको शाप है ६ और जो तुमने हमारी बानरकी आकृति करदी सोई बानर तुम्हारी सहाय करेंगे ७ हमारा यह अपकार तुमने बड़ा भारी किया है तातें स्त्री के वियोग में तुम भी दुखी होवो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ शापको प्रसन्न मन अंगीकार करिके स्वामी ने देवताओं का कार्य्य किया और अपनी माया की प्रबलता कृपा सिंधु स्वामी ने खींचिली ॥ ३३ ॥

जब हरि माया दूरि निवारी । नहिं तहं रमा न राजकुमारी १
तबमुनि अति सभीतप्रभुचरणा । गहे पाहिप्रणतारातिहरणा २

मृषा होहुममशाप कृपाला । मम इच्छा कह दीनदयाला ३
मैं दुर्बचन कहे बहुतेरे । कह मुनि मिटिहिं पाप किमि मेरे ४
जपहु जाइ शंकर शत नामा । होइहि हृदय तुरत बिश्रामा ५
कोउन शिवसमानप्रियमोरे । अस बिश्वासतजेहुजनिभोरे ६
जापर कृपा न करहिं पुरारी । सोनपाव मुनि भक्ति हमारी ७
अस उरधरिमहिबिचरहुजाई । अबन तुमहिं माया नियराई ८
दो० बहुबिधि मुनिहिं प्रबोधि प्रभु तब भये अंतरध्यान ।
सत्यलोक नारद चले करत राम गुण गान ॥ ३४ ॥

जब हरि ने अपनी माया को निवारण कियातबतहां न लक्ष्मी रहीन राजकुमारी रही १ तबतो मुनिने अति सभीत होकर स्वामीके चरण पाहि हे प्रणता रति हरण कह कर पकरि लिये २ और कहा कि हे स्वामी मेरा शाप मृषा होजाय सब तो दीनदयालु स्वामी ने कहा नहीं यह तो सब मेरीही इच्छा है ३ फिरि नारदने कहा कि मैंने आपको बहुत से दुर्बचन कहे सो मेरे पाप कैसे दूरि होंगे ४ भगवान ने कहा कि तुमने मेरे परम प्रिय परम भक्त शिवके उपदेश का निरादर किया तिसका यह सब परिनाम है तातें उन्हीं के शतनाम का जपकरो तुम्हारे चित्त को सबप्रकार से शांति होजाइगी ५ यह जाने रहो किशिवके समान इस संसार बिधिप्रपंच मेंमेरा प्यारा और कोई नहीं है ऐसा विश्वास भूलिकर भी त्याग न करना ६ जिसपर शिव की कृपा नहीं होती है सो मेरी भक्ति नहीं पाता है ७ ऐसा विश्वास हृदय में धारण करिके पृथ्वी पर स्वच्छन्द बिचरो अब मेरी माया तुम्हारे निकट न जाइगी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इसप्रकार अनेकभांति मुनिको प्रबोधकर विष्णु भगवान अंतरध्यान हुये और नारद अपने सत्यलोक को परम प्रसन्न रामके गुणोंका गान करते हुये चले ॥ ३४ ॥

हरगण मुनिहिं जातपथदेखा । बिगतमोह मनहर्ष बिशेषा १
अति सभीतनारद पहंआये । गहिपद आरतबचनसुनाये २
हरगण हमन बिप्र मुनिराया । बड़अपराधकीन्हफलपाया ३
शापअनुग्रह करहु कृपाला । बोले नारद दीन दयाला ४
निशिचर जाइ होहुतुम दोऊ । बैभवबिपुल तेजबल होऊ ५
भुजबलविश्वजितबतुमजबहीं । धरिहहिंविष्णुमनुजतनुतबहीं ६
समररमरण हरिहाथ तुम्हारा । होइहहु मुक्तनपुनिसंसारा ७
चलेयुगुल मुनि पद शिरनाई । भयेनिशाचर कालहि पाई ८

दो० एककलप यहिहेतु प्रभु लीन्ह मनुज अवतार ।
सुररंजन सज्जन सुखद हरिभंजन भव भार॥ ३५ ॥

शिवके गणोंने नारदमुनि को मार्गमें अति प्रसन्न मन माया मोह रहित जाते देखा १ तोभी अतिभयातुर नारद के पास आये और पाउं पकरिके परम आरत बचन सुनाये २ कि हमतो शिवके गण हैं हे मुनि राज विप्र नहीं हैं जैसा अपराध किया तैसा फल पाया ३ अब आप अपनी दयालुता से शाप अनुग्रह कीजिये तबतो दीनदयालु नारद बोले ४ कि तुम दोनों राक्षस होउगे तहां तुम्हारा बड़ावैभव और तेज बल होगा ५ जबतुम अपने भुज बल से विश्व विजय करोगे तब तुम्हारे निमित्त विष्णु भगवान मनुष्य शरीर धरेंगे ६ तहां संग्राम में तुम्हारा बध विष्णु के हाथ से होगा तबतुम मुक्त होजाओगे फिर संसार तुमको न होगा ७ ऐसे शाप अनुग्रह सुनकर नारद को दंडवत करिके शिवलोक को चलेगये कालान्तर में जाकर दोनों राक्षस हुए ॥ ८ ॥ दोहा ॥ एक कल्प इस निमित्त भगवान ने मनुष्य अवतार लिया कैसे स्वामी हैं देवताओं के आनन्द करता और संतजनों के सुख दायक और पृथिवी के भार भंजन हैं ॥ ३५ ॥

अपरहेतु सुनि शैलकुमारी । कहहुं बिचित्र कथा बिस्तारी १
स्वायंभू मनु अरु सतरूपा । जिनतें भइ नर सृष्टि अनूपा २
नृप उत्तानपाद सुत तासू । ध्रुव हरि भक्त भयउ सुतजासू ३
लघुसुत नाम प्रियव्रत ताही । वेद पुराण प्रशंसहि जाही ४
देवहुती पुनि तासु कुमारी । जो मुनि कर्दमकी प्रिय नारी ५
आदिदेव प्रभु दीनदयाला । जठर धरेउजिहि कपिलकृपाला ६
सांख्यशास्त्रजिन्हप्रगटबखाना । तत्वबिचारनिपुणभगवाना ७
तिहिंमनुराज्यकीन्हबहुकाला।प्रभुआयसुबहुबिधिप्रतिपाला ८
सो० होइन विषय विराग भवन बसत भा चौथ पन ।
हृदय बहुत दुखलाग जन्मगयउ हरिभक्तिबिन॥ ३६ ॥

अब और रामजन्म का कारण हे पारबती तुम सुनो यह बिचित्र कथा मैं तुमसे बिस्तार समेत कहता हूं १ स्वायंभू नाम आदि मनु और सतरूपा नाम उनकी रानी जिनते यह मनुष्य सृष्टि उत्पन्न हुई है २ तिनका उत्तानपाद नाम ज्येष्ठ पुत्र हुआ जिसका परम भागवत ध्रुवनाम पुत्र है ३ और मनुका छोटा पुत्रप्रियव्रतहुआ जिसकी बेद पुराण सब प्रशंसा करते हैं ४ फिरि देवहूती मनुकी पुत्री हुई जो कर्दम मुनि को बिवाही गई ५ आदि देव परम पुरुषदीन दयालु कपिलदेव जिस देवहूती के पुत्र

हुये ६ जिनने सांख्य शास्त्र बरणन किया तत्व बिचार में अति निपुण भगवान रहे ७ तिन मनुने बहुत काल राज्यकिया औ भगवत् आज्ञा को अनेक भांति प्रति पालनकिया ॥ ८ ॥ सोरठा ॥ तौभी विषयों से वैराग्य न हुआ तबतो हृदय में बड़ा दुख लगा कि जन्म भगवत भक्ति बिना बृथाही बीत गया ॥ ३६॥

बरबस राज सुतहि तबदीन्हा । नारि समेतगवनबनकीन्हा १
तीरथबर नैमिष विख्याता । अति पुनीतसाधक सिधिदाता २
बसहिंजहां मुनि सिद्धसमाजा । तहंहिय हरषिचलेउमनुराजा ३
पंथजात सोहहिं मति धीरा । ज्ञान भक्तिजनु धरे शरीरा ४
पहुंचेजाइ धेनु मति तीरा । हरषि नहाने निर्मल नीरा ५
आये मिलन सिद्ध मुनि ज्ञानी । धर्मधुरंधरनृप ऋषि जानी ६
जहंजहं तीरथ रहे सुहाये । मुनिन्ह सकल सादरकरवाये ७
कृशशरीर मुनि पट परिधाना । संत सभानित सुनहिंपुराणा ८
दो० द्वादश अक्षर मंत्र पुनि जपहिं सहित अनुराग ।
बासुदेव पदपंकरुह दंपति मन अति लाग ॥ ३७ ॥

तबतो बरियाई राज्य अपने पुत्र उत्तानपाद को दिया और अपनी रानी सतरूपा समेत बनको पयान किया १ तीरथोत्तम बैकुंठ जहां बनरूप स्वयं हरि विराजते हैं नैमिषारण्य बिख्यात अति पबित्र साधकोंका सिद्धिदाता २ जहां बड़ेबड़े दधीच्यादिक सिद्धमुनि निवास करतेहैं तहांको प्रसन्न होकर मनु चले ३ मार्गजाते में दंपति मति धीर कैसे सोहते हैं मानो ज्ञान भक्तिही मूर्त्तिवंत हैं ४ ऐसेही गोमती के तट पहुंचे प्रसन्न होकर निर्मल जलमें स्नान किया ५ तबतो धर्म धुरंधरराजर्षि को आया जान कर सब सिद्धमुनि मिलने को आये ६ और जहां जहां उस बनमें तीर्थ रहें सो मुनि जनोंने राजाको संपूर्ण करा दिये ७ अबकृश तो दोनोंके शरीर हैं और बल्कलादिक वस्त्र पहरें सुन्दर संत समाजमें नित्य पुराणोंका श्रवणकरते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तिस पीछे द्वादशाक्षर मंत्रको बड़े प्रेमसमेत जपने लगे उसके प्रभावसे महा विष्णुजो विष्णु का परस्वरूप नारायण वासुदेव है तिसके चरणों में राजा रानी दोनों का मन लय लीन होकर लगि गया ॥ ३७ ॥

करहिं अहार शाक फलकंदा । सुमिरहिं ब्रह्म सच्चिदानंदा १
पुनि हरि हेतुकरन तपलागे । बारि अहार मूल फल त्यागे २
उरअभिलाष निरंतर होई । देखहिं नयन परम प्रभुसोई ३

अगुणअखंड अनंतअनादी । जिहि चिंतहिं परमारथ बादी ४
नेतिनेतिजिहि निगमनिरूपा । चितानंदनिरुपाधि अनूपा ५
शंभु विरंचिविष्णु भगवाना । उपजहिं जासु अंश तें नाना ६
ऐसेहु प्रभुसेवक बश अहई । भक्तहेत लीला तनु गहई ७
जोयहबचन सत्यश्रुतिभाषा । तौहमारि पूजिहि अभिलाषा ८
दो० यहि बिधिबीते बर्ष षट सहस सुबारि अहार ।
संवतसप्तसहस्त्र पुनि रहे समीर अधार ॥ ३८ ॥

शाकफल कंदों का आहार करते हैं और सच्चिदानन्द भगवान वासुदेव परब्रह्म का स्मरण करतेहैं १ तापीछे हरिके दरशनके निमित्त तपकरने लगे तबतौ केवल जल ही आहार किया मूलफल सब छोड़ दिये २ हृदय में निरंतर यही अभिलाष होती है कि उस हरि भगवान को नेत्र भरकर देखैं जो सबका परम प्रभुहै ३ जिस हरिको परमार्थ वादीमुनि अखंड अनंत अनादि निर्गुण चिन्तवन करतेहैं ४ जिसको वेदनेति नेति कहकर चिदानन्द अनुपाधि अनूप निरूपण करतेहैं ५ फिरि जो हरि वासुदेव भगवान अपनी अनंत कोटि ब्रह्माण्ड विभूतिमे जैसे शिव विरञ्चि में अपने अंशावेश करिके नानारूप होकर विश्व का कर्त्ता हर्त्ता होता है तैसेही अंश कहैं अपने दिव्य मंगल विग्रह करिके अपनी विभूति को विष्णुरूप होकर आपही पालन करताहै यह सिद्धान्त सर्वत्र मिलता है जैसा नारायण उपनिषद में देखो कि नारायण से ब्रह्मा जन्मता है नारायण से रुद्र उत्पन्न होताहै नारायण से प्रजापति होते हैं विष्णु पुराण में लिखा है कि जैसे समस्तजीव और काल संसार के उत्पत्ति पालन प्रलय के निमित्त विष्णु भगवान की विभूति हैं तैसेही स्वयंविष्णु भी अपनी बिभूति आपही होता है प्रमाण ॥ ब्रह्मा दक्षादय: कालस्तथैवाखिल जंतव: । बिभूतयोहरेरेता जगत: सृष्टिहेतव: ।१। रुद्र:कालान्तकाद्याश्चसमस्ताश्चैवजंतव: । चतुर्द्धाप्रलयैह्येताजनार्द्दनविभूतय: ॥ २ विष्णु मन्वादय: काल:सर्वभूतानिचद्विज स्थितेर्निमित्तभूतश्च विष्णोरेताविभूतय: ॥ ३ ॥ अर्थात् जैसे सृष्ट्युत्पत्ति के निमित्त मुख्य तौ ब्रह्मा और दक्ष दिक प्रजापति तीसरा काल चौथे सर्ब जीव यह चतुर्द्धा विष्णु भगवानकी रजोगुणी विभूतिहै १ और जैसे प्रलय के निमित्त मुख्य तौ रुद्र दूसरा काल तीसरे चतुर्द्दशयमचौथे संपूर्ण जीव यह चतुर्द्धा विष्णुभगवान की तामसी विभूतिहै २ तैसेही मुख्य तौ स्वयंविष्णु दूसरे चतुर्द्दश मनु तीसरा काल चौथे सर्बजीवयह विष्णुहीकी चतुर्द्धासात्वकी विभूति है ३ भगवद गीताके दशवें अध्याय में भी अपनी विभूति में आपको भी स्वयं वासुदेव भगवान कृष्णचन्द्रने गणना कियाहै । तथाहि । वृष्णीनांबासुदेवोस्मि पांडवानां धनञ्जय: । भगवद् विभूती में संपूर्ण जीव यथा योग्य विष्णुहीके तेजसे अपने अपने अधिकारी होते हैं और विष्णु अपने स्वयं तेजसे आप अधिकारी हैं जैसा विष्णु धर्म्मोत्तर में लिखा है

ब्रह्माशंभुस्तथैवार्कश्चन्द्रमाश्चशतक्रतुः एवमाद्या स्तथैवान्ये युक्तावैष्णव तेजसा य्योजगत्का वसानेच वियुज्यंतेव तेजसा ॥ वितेजसश्चतेसर्वे पंचत्वमुपयांतिते अर्थात् ब्रह्मा शिव तैसेही सूर्य्य चन्द्रमा और इन्द्र को आदि और भी सबलोकपाल सृष्टि के बर्तमान काल में विष्णु तेजही करके संयुक्त होते हैं और जगत के अंत्यसमय में सब तेज हर लिया जाता है तब सबके सब पंचत्व को प्राप्त होतेहैं महाभारते ॥ ब्रह्मादिषु प्रलीनेषु नष्टे लोके चराचरे आभूतसंप्लवे प्राप्ते प्रलीनेप्रकृतौ महान् एकस्तिष्ठतिविश्वात्मा सतुनारायणः प्रभुः अर्थात् जब चराचर जीव सबनष्ट होजातेहैं और ब्रह्मादिक देवता भी प्रलय होजाते हैं और संसार एकार्णव होकर महा प्रकृतिमें लीन होजाता है तब तौएक विश्वात्माही रहिजाताहै सोतौ नारायण प्रभुहीहै पद्मपुराणे ॥ आसीदेकोहिवैचाव विष्णुर्नारायणो व्ययःन ब्रह्मानचरुद्रश्च न देवानमहर्षयः नइमेद्यावः पृथ्वीनसोमोन विभास्करः ननक्षत्राणिलोकाश्च नचांडं मह तावृतं अर्थात् प्रलय काल में अव्यय कहैं अबिनाशी एक बिष्णु नारायणही यहां रहता है नतो ब्रह्मा रहते हैं न रुद्र शिव रहते हैं न देवता रहते हैं न कोई महर्षि रहते हैं न यह आकाश रहता है न पृथ्वी रहतीहै न सूर्य्य चन्द्रमा रहतेहैं न कोई नक्षत्ररहतेहैं न कोईलोक रहताहै न यह ब्रह्माण्ड जो बड़े सप्तावरण से आवृतहै सो रहता है ऐसे प्रमाणोंसे शम्भु बिरंचि विष्णु भगवान ऐसा लेख देखकर हरि विष्णु राम नारायण बासुदेव को भिन्न भिन्न न्यूनाधिक समझना गुसांई तुलसीदास का अभिमत नहींहै इस ग्रन्थके सातोंकांडों में विष्णु ही का रामावतार लिखा है जहां कहीं ब्रह्मा शिवके साथ में भेद दीखपरता है सो केवल विभूति विभूती काहै जो इस विभूति और बिभूती के भेद को ईश्वर में कल्पना करोगे तौ इस ग्रन्थमें यह विरोध निवारण नहीं होगा क्योंकि गुसांईं जीने ग्रन्थके आदि से विष्णुही को राम लिखा है बालकांडे रामाख्यमीशं हरिं ॥ विष्णु जो सुरहित नर तन धारी। सो विष्णु के दशावतार कौन सेहैं नारद के मोह में शाप किसको हुआ और रामकौन हुआ इसी चरित्रमें ॥ जन्म गयउ हरि भक्ति बिनु ॥ पुनि हरि हेतु कारण तप लागे ॥ छबि समुद्र हरि रूप बिलोकी ॥ पुर बैकुंठ जान कह कोई ॥ कोउ कह पयनिधि बस प्रभु सोई ॥ निज आयुध भुज चारी ॥ भये प्रकट श्रीकन्ता इत्यादि । शतानि संति ॥ अयोध्या कांडे ॥ पयपयोधि तजि अवध बिहाई ॥ जहं सिय लखन रहे आई ॥ आरण्ये ॥ नमामि इन्दिरापतिं । हृदय चतुर्भुज रूप दिखावा । किष्किंधाकांडे हनूमान आगवने ॥ की तुम तीनि देव महं कोऊ सुन्दरकांडे ॥ हरि मन्दिर तहं भिन्न बनावा ॥ रामायुध अंकित गृह । की तुमहरि दासन महं कोऊ हरि जन जानि प्रीति अतिबाढ़ी ॥ युद्धकाण्डे ॥ जानेउ मनुज करि दनुज कानन दहन पावक हरि स्वयं । उत्तरकांडे ॥ रमानाथ जहं राजहिं सो पुर बरणि कि जाइ इत्यादि बहवः संति । और विधि हरिहर ऐसे बचन जहां आतेहैं तौ जिस रूपके बिशेषण में आते हैं उसकी प्रशंसा पर होते हैं इस में भिन्नता न्यूनाधिकता नहीं होती क्योंकि गीता में रामचन्द्र को भी बिभूतिमें लिखा है ॥ रामःशस्त्रभृतामहं ॥ और बासुदेव कौ

भी विष्णु की विभूति लिखा है यहां बासुदेवको परमानकर शम्भु विरंचि के साथ विष्णु भगवान भी बासुदेव की विभूति कहे हैं ६ सो ऐसा बड़ा बासुदेव भगवान जिसकी विभूतशंभु विरंच्यादि हैं सो भी अपने भक्तों के बस है और उन्ही के निमित्त लीलासे शरीरोंको धारण करता है ७ जो यह सत्यबचन वेदोंने कहा है तो निस्संदेह हमारी अभिलाषा पूर्ण होगी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इस प्रकार मनु को जलही के आधार तपकरते षट सहस्र बर्ष व्यतीत हुये तिसपीछे जलाहार भी छोड़कर सात सहस्र बर्ष केवल पवनही के आधार तप किया ॥ ३८ ॥

बर्ष सहस दस त्यागेउ सोऊ। ठाढ़े रहे एक पग दोऊ १
बिधि हरि हरतप देखि अपारा। मनुसमीप आयेबहुबारा २
मागहु बरबहुभांति लुभाये। परमधीरनहिं चलहिं चलाये ३
अस्थिमात्र होइरहे शरीरा। तदपि मनागपि नहिं मनपीरा ४
प्रभुसर्बज्ञ दास निजजानी। गति अनन्य तापस नृपरानी ५
मांगुमांगु बरभइ नभबानी। परमगंभीर कृपामृत सानी ६
मृतकजियावनि गिरासुहाई। श्रवणरंध्रहोइ जबउर आई ७
हृष्ट पुष्ट तन भये सुहाये। मानहुं अबहिंभवन तें आये ८
दो० श्रवणसुधा सम बचन सुनि पुलकिप्रफुल्लित गात।
बोले मनुकरि दंडवत प्रेम न हृदय समात ॥ ३९ ॥

फिरि तो दशसहस्र बर्ष पवन का भी त्यागन करिके एकही पगसे दोनों खड़े रहे १ इसते इस सहस्रवर्ष के कालांतर में ब्रह्मा विष्णु शिव मनुके पास अनेक बार आये २ और बरमागो बरमागो ऐसे अनेकभांति लुभाया भी परये परमधीर पर रूप वासुदेव परायण किसी के चलाने से अपनी अनन्यता से कब चलायमान होते हैं कि दूसरे से बरदान लेवें। दोहा। बनैतौ रघुबर तें बनै की बिगरै भरि पूरि। तुलसी बनै जो अवर तें ताबनिवेमें धूरि॥ सो ब्रह्मा शिवकी तो क्या कहैं इनके साथी होने से विष्णु के देवत्वको भी भगवतविभूति मानकर विष्णु से भी वरग्रहण न किया क्योंकि जैसे सूर्य्यवंश अवर चन्द्रवंशके संबन्धसे रामचन्द्रकाराघवत्व और कृष्णचन्द्र का यादवत्वमें विष्णु विभूति मानागया ऐसेही देवत्रयी में विष्णु का भी देवत्व विष्णु विभूतिमेंमाना जाता है ३ जिनके शरीर केवल अस्थिमात्रही रहगये हैं तोभी मनाक् कहैं किंचिन्मात्र भी खेद नहीं मानते हैं ४ तबतौ सर्वज्ञ प्रभु बासुदेव ने अपना आकार त्रय संपन्न दास अर्थात् अनन्य गति अनन्य शरण अनन्य प्रयोजन दोनों को जानकर ५ बरमांगु बरमांगु ऐसे आकाशबाणी परम गंभीर कृपामृत परिपूर्ण हुई ६ सो मृतक संजीवनी सुन्दर सुहावनी बाणी जभी श्रवणों में होकर हृदय में गई ७ तभी हृष्टपुष्ट

कहे प्रसन्न आरोग्य मोटे नवीन सुन्दर सुहाये होगये मानो अभी घरसे आयेहैं ॥ ८॥
दोहा ॥ श्रवणों को अमृतके समान बचन सुनतेहीं पुलकि के प्रफुल्लित शरीर होगया और निर्भर प्रेम समेत दंडवत करिके बोले ॥ ३९ ॥

सुनुसेवक सुरतरु सुरधेनू । बिधि हरि हर बंदित पद रेणू १
सेवतसुलभ सकलसुखदायक । प्रणतपाल सचराचर नायक २
जौं अनाथ हितहम परनेहू । तौ प्रसन्न होइ यह बर देहू ३
जोस्वरूपबसशिवमनमाहीं । जिहिकारणमुनियतन कराहीं ४
जोभुसुंडिमनमानसहंसा । सगुण अगुणजिहिनिगमप्रशंसा ५
देखहिं हमसोरूपभरिलोचन । कृपाकरहुप्रणतारतिमोचन ६
दंपति बचन परम प्रिय लागे । मृदुल विनीतप्रेमरस पागे ७
भक्तबछल प्रभु कृपा निधाना । बिश्वबास प्रगटे भगवाना ८
दो० नील सरोरुह नील मणि नील नीर धरश्याम ।
लाजहिंतनशोभानिरखि कोटिकोटिशत काम ॥ ४० ॥

सुनो हे सेवकों के कल्पवृक्ष कामधेनु कामदायक स्वामी और हे ॥ विधि हरिहर बंदित पद रेणु हे सेवत सुलभ हे सकल सुखदायक हे प्रणतपाल हे सचराचर नायक हे अनाथ हित स्वामी जो हमारे पर आप का वात्सल्य प्रेम है तो प्रसन्न होकर यह वरदान दीजिये १ । २ । ३ कि आप के अनन्त रूपों में से जो रूप श्री शिव जी के मन में बसत है और जिस के दरशन के निमित्त बड़े बड़े मुनि अनेक यत्न करते हैं ४ और जो काकभुसुंडी के मन मान सरोवर में राज हंसके समान निरंतर बसता है औ जिस आप के दिव्य मंगल विग्रह को माया कहे गुणों से तो निर्गुण और स्वाभाविक ज्ञान बल क्रियादि कल्याण गुणों से सगुण ऐसा वेद प्रशन्सा करते हैं ५ सो सुन्दर रूप आप का हम नेत्रों भर कर देखें हे प्रणतारति मोचन स्वामी सो कृपा कीजिये ६ इस प्रकर्ण में विधि हरि हर पद व्यामोहक है तहां कोई विद्वान् ऐसे स्थान में हरि पद का अर्थ इन्द्र वाचक इन प्रमाणों से करते हैं कि देवचयमें ब्रह्मा शिव के साथ इन्द्र भी आता है कि इन्द्र भी वर्षा करिके विश्व को पालन करता है रामायणे ब्रह्मास्वयंभूश्चतुराननोवा रुद्रस्त्रिनेत्रस्त्रिपुरांतकोवा इन्द्रोमहेंद्रः सुरनायकोवा त्रातुंनशक्तोयुधिरामवध्यं भारतेमोक्षधर्मे स ब्रह्मकाःसरुद्रश्चसेंद्राःदेवाः सहर्षयः अर्चयन्ति सुरश्रेष्ठं देवं नारायणंहरिम् ॥ भागवते ॥ नतास्मितेनाथसदांघ्रि पंकजं विरंचिवैरिंच्यसुरेन्द्रबंदितंपरायणंक्षेम मिहेच्छतांपरंनयचक : प्रभवेत्परःप्रभुः६ ॥हरिवंशे ॥ ब्रह्माणमिंद्ररुद्रंच यमंवरुणमेवच निगृह्यहरतियस्मात्तस्माद्धरिरिहोच्यते

॥ अन्यच्चापि ॥ ब्रह्मेन्द्ररुद्रमुनिमोहनशीललोलांमायांपरांसमधिगम्यपरस्यविष्णोः ब्रह्मा शिवः शतमखःपरमस्वराडिः ॥ शतमख इन्द्रः ॥ यंब्रह्मावरुणेन्द्र रुद्रमरुतः इत्यादि और भी जानो तो जैसे ब्रह्माशिव के साथ इन्द्रशतमख नाम आते हैं तैसेंहींहरि नाम भी इन्द्र का अमरकोश प्रसिद्धयहां भी हरि का अर्थ इन्द्रहीग्राह्यहै ऐसा कहते हैं परंतु ऐसे अर्थ की कौन अवश्यकता है जो हम हरिका अर्थ इन्द्र करैं क्यों कि विष्णु के नमस्कार करने को तो विष्णुही हैं और समस्त विश्व तन्मूल तदात्म कही है ॥ भारते सहस्र नामे ॥ द्यौसचन्द्रार्कनक्षत्राः खन्दिशोभूर्महोदधि बासुदेवस्यवीर्येन बिधृतानिमहात्मनः १ ससुरासुरगन्धर्वा सयक्षोरगराक्षसाः जगद्वसेवर्ततेदं कृष्णस्यस चराचरं २ इन्द्रियानिमनोबुद्धि सत्वन्तेजोबलंधृति बासुदेवात्मकान्याहुक्षेत्रं क्षेत्रज्ञएवच ३ ऋषयःपितरोदेवा महाभूतानिधातवः जंगमाजंगमंचेदं जगन्नारायणोभवं ४ योगोज्ञानंतथासांख्यं विद्याशिल्पादिकर्मच वेदाःशास्त्राणिविज्ञान मेतत्सर्वंजनार्दनात् ५ एकोविष्णुर्महद्भूतं पृथक्भूतान्यनेकशः त्रिलोकान्व्याप्यभूतात्मा भुंक्तेविश्वभुगव्ययः ६ ऐसे प्रबल प्रमाणों में तो विष्णु बासुदेव हरि राम कृष्ण नारायण केवल एकही परमात्मा परमेश्वर परब्रह्मही के पाये जातेहैं किसी जीव विशेष के नहीं हैं तो विष्णु बासुदेव हरि राम कृष्णमें भिन्नता और न्यूनाधिकता कैसी विष्णु तो किसी दूसरे देव को अपने आत्मा बिना नमस्कार नहीं करतेहैं ॥ प्रमाणः ॥ नहिविष्णुःप्रणमति कस्मै चिद्विबुधायच ऋतेआत्मानंवैकचित् ॥ विष्णु जहां नमस्कारवा पूजन करते हैं अपने आपहीको करतेहैं जैसे रामचन्द्र श्रीरंग नारायण का नर नाट्य में पूजन करतेहैं और कृष्णचन्द्र ने अर्जुनके साथ अनिरुद्ध भगवान को प्रणाम किया ऐसेही बिष्णु भी ब्रह्मा शिव के साथ देवनाट्य में अपनी पर मूर्तिको प्रणाम करैं तो कौन आश्चर्य्यहै ऐसा व्यमोक्ष विष्णु पद गुसांईजी ब्रह्मा शिवके साथ विष्णुके देवनाट्य हीमें लिखते हैं अन्यत्र तो समस्त ग्रन्थमें एकत्वही दीखताहै सो जहां ब्रह्मा शिव के साथ आताहै तहां विष्णु का देवत्व ग्राह्यहै नतु स्वयं विष्णु काईशत्व जैसे रामकृष्ण का मानुषत्व नर नाट्य में ग्राह्य होता है ६ ऐसे दम्पति राजा रानी के बचन सुन सर्वेश्वर स्वामी को अति प्यारे लगे क्योंकि अति कोमल और नम्र और प्रेमसे परि पूर्णहैं ७ तबतो भक्त वत्सल कृपा सागर विश्वबास कहैं जगन्निवास प्रभु बासुदेव भगवान उनके बांछित रूप करिके प्रगट होगये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जैसा नीला कमल तैसा कोमल श्याम सुन्दर और जैसी नीली मरकत मणि तैसी सुन्दर श्याम कांति जैसा महा गम्भीर आनन्द दायक सुन्दर नील मेघ तैसा नयनानन्द दायक मनोहर श्यामहै शरीर जिनका जिस सुन्दर दिव्य मंगल विग्रह की शोभा को देख कर करोरों शत कोटि काम लज्जित होते हैं ॥ ४० ॥

शरदमयंक बदनछबिसींवां । चारु कपोलचिबुकदर ग्रीवां १
अधरअरुण सुंदररदनासा । बिधुकर निकरबिनिंदकहासा-

नवअंबुजअंबकछबिनीकी । चितवनिललितभावतीजीकी ३
भृकुटिमनोजचापछबिहारी । तिलकललाटपटलदुतिकारी ४
कुंडलमकरमुकुटशिरभ्राजा । कुटिलकेश मनोमधुपसमाजा ५
उरश्रीबत्सरुचिरबनमाला । पदिकहारभूषणमणि जाला ६
केहरि कंधर चारु जनेऊ । बाहु बिभूषण सुंदर तेऊ ७
करिकर सरिससुभगभुजदंडा । कटि निषंगकरशरकोदंडा ८

दो० तड़ित विनिंदक पीतपट उदर रेखकर तीनि ।
नाभि गंभीर लेति जनौ यमुनभंवर छबिछीनि ॥ ४१ ॥

शरद ऋतु के परिपूर्ण निर्मल चन्द्रमा के समान अति मनोहर छबिकी मर्य्याद सुन्दर मुखारबिन्द और अति सुन्दर कपोल गण्डस्थल और चिबुक ठोढ़ी और शंख के समान तीनि रेखा संयुक्त सुन्दर ग्रीवां कंठ १ बिंब फलसे सुन्दर अरुण ओष्ठ और कुन्दपुष्प मुक्तावलीके समान उज्जल दाड़िमसी सुन्दर दन्त पंक्ति और नाशिका और चन्द्रमा के किरणों के समूह की निन्दक मनोहर हास २ नबीन प्रफुल्लित कमल के समान बिशाल नेत्रों की अति सुन्दर छबि और अति ललित मन भावंती कृपा परिपूर्ण चितवनि ३ काम कमान के समान सुन्दर बंक भृकुटी तिन भृकुटिन के मध्यते केश पर्य्यंत ललाट मंडलभरिदै दीप्यमान सुन्दर श्वेत तिलक ४ सुन्दर श्रवणों में मकराकृति कुंडल और शिरपर मुकुट मनोहर बिराज मान और कुंचित मेचक कुटिल भ्रमरावली के समान केश ५ बक्षस्थल में श्रीबत्स रोमावली का श्वेत गुच्छा और बन माला और हीरोंका हार और मणिजाल संयुक्त आभूषण ६ सिंह के समान उन्नति स्कन्ध और सुन्दर पीत यज्ञो पवीत और अनेक अति सुन्दर बाहु बिभूषण ७ मातङ्ग सुंडा कृति सुंदर सुढार प्रबल भुज दंड कटि में शिली मुखा कर निषङ्ग दक्षिण भुजा में बाण और बाम बाहुमें शारंग धनुष ८ ॥ दोहा ॥ तड़ित की भी निन्दक पीतांबर उदरमें सुन्दर तीनि रेखा नाभि अति गम्भीर मानो यमुना के भ्रमरावर्त्तों की छबि को लिये लेती है ॥ ४१ ॥

पदराजीवबरणिनहिंजाहीं । मुनिमनमधुपबसतजिन्हमाहीं १
बामभागशोभितअनुकूला । आदिशक्तिछबिनिधिजगमूला २
जासुअंशउपजहिंगुणखानी । अगणितलक्षि उमाब्रह्माणी ३
भृकुटिबिलासजासुजगहोई । सीताराम बाम दिशि सोई ४
छबिसमुद्रहरिरूपबिलोकी । एकटक रहे नयन पट रोकी ५

चितवहिं सादर रूप अनूपा । तृप्तिनमानहिं मनुसतरूपा ६
हर्षबिवस तनदशा भुलानी । परे दंड इवगहि पदपानी ७
शिरपरसेप्रभु निज करकंजा । तुरत उठाये करुणा पुंजा ८
दो० बोले कृपानिधान प्रभु अति प्रसन्न मोहि जानि ।
मागहुं बरजो भावमन महा दानि अनुमानि ॥ ४२ ॥

चरण कमलों का सौंदर्य्यतौ बरणनही नहींकिया जाताहै कि शिव शुक सनकादिकों के मन मधुकर जिनपर निरंतर छायेही रहते हैं १ और बाम भाग में पति अनुकूला आदि शक्ति शोभा निधि जगत् मूला शोभाय मान है २ जाके अंशसे समस्त गुणखानि अनन्त कोटि लक्ष्मी भवानी ब्रह्माणी शक्ति चय उत्पन्न होतीहैं यहां बिष्णु के समान लक्ष्मी कोभी लक्ष्मीही की बिभूति जानो ३ जाकी भृकुटी बिलास सेही संसार की उत्पत्ति स्थिति प्रलय होतीहै सोई राम रूप बासुदेव भगवानके बामभाग में सीता रूप स्वयंश्री बिराजती है ४ ऐसा शोभा सागर हरि भगवान का रूप देखि कर राजा रानी दोनों पलकों को रोकि कर एकटक देखतेही रहगये ५ और देखतेदेखते अघातेही नहींहैं ६ फिरितौ आनन्द के वश होकर शरीर की दशाही भूलिगये तब तौ दंडके समान दौड़िके चरण पकर कर गिरपरे ७ यह दशा उनकी देखकर भगवान ने उन दोनोंके शिरों को अपने अभय हस्त कमल करिके स्पर्श किया और पृथिवी परसे उठाकर खड़ा कर दिया ८ ॥ दोहा ॥ और कृपा निधान स्वामी परम कोमल मधुर बचन बोले कि मैं तुमपर अति प्रसन्नहूं यह जानि कर जो तुम्हारा मन बांछित बर हो सोहमको महादानि शिरोमणि अनुमानि कर मांगो ॥ ४२ ॥

सुनिप्रभुबचनजोरि युगपाणी । धरिधीरजबोले मृदु बाणी १
नाथ देखि पद कमल तुम्हारे । अब पूजे सब काम हमारे २
एक लालसाबड़ि मनमाहीं । सुगमअगम कहिजातसो नाहीं ३
तुमहिंदेतअतिसुगमगुसांई । अगमलागुमोहिनिजकृपिनाई ४
यथा दरिद्र बिबुध तरुपाई । बहु संपति मांगत सकुचाई ५
तासु प्रभाव न जानहिंसोई । तथा हृदय मम संशय होई ६
सोतुम जानहु अंतरयामी । पुर बहु मोर मनोरथ स्वामी ७
सकुचबिहाइ मागु अनुमोही । मोरे नहिं अदेय कछु तोही ८
दो० दानिशिरोमणि कृपानिधि नाथ कहहुं सतिभाव ।
चाहत तुमहिंसमानसुत प्रभुसन कवन दुराव ॥ ४३ ॥

ऐसे उदार बचन सर्वेश्वर स्वामी के सुनकर दोनों हाथ जोरि धीरज धरि के अति कोमल बाणीसे मनु महाराज ने कहा १ कि हे नाथ आपके चरण कमलदेखिकर अबतो हमारे समस्त काम परिपूर्ण होगये २ परंतु आपकी परम मनोहर माधुरी मूर्त्ति देखकर एक बड़ी लालसा मनमें उत्पन्न हुई है सो सुगम अगम द्विविधा लालसा कहते नहीं बनती है ३ क्योंकि आपको देने में तो अतिही सुगम है परंतु हमको अपनी सौभाविकी कृपिणता से अगम दीख परती है ४ जैसे कोई महाजन्म दरिद्री कल्पवृक्ष को पाकर बहुत संपदा मांगते संकोच करता है ५ उस कल्पवृक्ष के प्रभाव को जैसे बिना जाने दरिद्री शंका करता है तैसेही हमारे हृदय में भी शंका होती है ६ सो उस हमारी लालसा को आप सर्वान्तरयामी जानतेही हो तो मेरे उस मनोरथ को पूर्ण कीजिये ७ ऐसे मनुके बचन सुनिकर भगवान बोले कि सकुच छोड़कर हे मनु हमसे मांगि ले हमारे तुमको कोई पदार्थ अदेय नहीं है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तब तो मनु बोले हे दानि शिरोमणि हे कृपानिधान हे नाथ सत्य भावही आप से कहता हूं कि आपके समान ऐश्वर्य्य सौंदर्य्य सौशील्यवात्सल्य औदार्य्य सौलभ्य गुण संपन्न आप सारिख पुत्र चाहताहूं आपसे कौन छिपाव है ॥ ४३ ॥

देखिप्रीति सुनि बचनअमोले । एवमस्तु करुणानिधि बोले १
आप सरिसकहं खोजहुंजाई । नृपतव तनय होब मैं आई २
सतरूपहि बिलोकि करजोरें । देवि मांगु बरजो रुचि तोरें ३
जो बरनाथ चतुरनृपमांगा । सोइकृपालुमोहिअतिप्रियलागा ४
प्रभु परंतु सुठि होति ढिठाई । यदपिभक्त हित तुमहिसुहाई ५
तुम ब्रह्मादि जनक जगस्वामी । ब्रह्म सकलउर अंतरयामी ६
अससमुझत मन संशयहोई । कहाजो प्रभुसमान पुनिसोई ७
येनिज भक्तनाथ तवअहहीं । जो सुखपावहिं जोगति लहहीं ८
दो० सोइ सुख सोइगतिभक्ति सोइसोइ निजचरण सनेहु ।
सोइ बिबेकसोइ रहनिप्रभु मोहिकृपाकरिदेहु ॥ ४४ ॥

ऐसी मनुकी प्रीति को देखि और अमोल बचन सुनि एवमस्तु ऐसाही होउ बरदान देकर करुणानिधान फेरिबोले १ किहे राजातूने तोऐसा बरदान मांगा जोमेरे घर में हैही नहीं क्योंकि मेरी दोनों विभूतियोंमें नतो कोई मेरे समान है न कोईमोतें अधिक है और मेरी बिभूति तें बाहर कहीं कोई किंचिन्मात्रभी नहींहै सर्वत्र मेरीही बिभूति है तातें अपने समान तो मैं कहां से ढूंढि कर लाऊं हां मेरी समान मैंहीहूं तातें हे राजा तेरा पुत्र मैं आपही आकर होऊंगा २ या प्रकार मनुको बरदान देकर भगवान ने सतरूपा रानी को हाथ जोरें देखकर बोले किहे देवी जिस बरदान पर

तुम्हारी अति प्रीति है इसो तुम भी मांगो ३ सतरूपा बोलीं किहे स्वामी जो बरदान परम चतुर मेरे पति ने मांगा है सोई मेरेको भी अति प्रिय है ४ परंतु हे स्वामी यह तो अति ढीठता है यद्यपि आपको सुहाता है ५ तुमतो ब्रह्मादिकों के भी पिता समस्त जगके स्वामी परात्पर ब्रह्म सर्वांतरयामी हो ६ ऐसा समुझतेतो मनमें संशय होती है परंतु जो कहा है प्रमाण तो सोई है ७ तातें हे स्वामी इतना बर और दीजिये कि जो आपके अनन्य भक्त सुखपाते हैं और जिस गति को प्राप्त होते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सोई हमको सुख मिले सोई गतिपावै तैसाही आपके चरणोंमें प्रेम होवे सोई बिवेक होवे तैसीही हमारी रहनि होवे ॥ ४४ ॥

सुनिमृदुगूढ़बचन बररचना । बिहंसि कृपानिधिबोलेबचना१
जोकछुरुचितुम्हरे मनमाहीं । मैंसोदीन्हि सबसंशय नाहीं २
मातुबिबेक अलौकिक तोरे । कबहुन घटिहि अनुग्रह मोरे ३
वंदिचरणमनु कहेउबहोरी । अवरएक बिनती प्रभु मोरी ४
सुतबिषयक तवपदरतिहोई । मोहिबरुमूढ़कहहिकिनकोई ५
मणिबिनुफणिजिमिजलबिनुमीनाममजीवनतिमितुमआधीना
असबरमांगिचरण गहिरहेऊ ।एवमस्तुकरुणानिधिकहेऊ ७
अबतुम ममअनुशासनमानी । बसहुजाहिसुरपतिरजधानी८
सो० तहं करि भोग बिलास तात गये कछुकाल पुनि ।
होइहहु अवध भुवाल तबमैंहोबतुम्हार सुत ॥ ४५ ॥

ऐसे सतरूपाके कोमल गूढ़ वचनोंकी सुन्दर रचना को सुनकर कृपासिंधु स्वामी मुसुकाइ कर बोले १ किहे देवी जो जो रुचि तुम्हारे मनमें है सो मैंने सब तुम को निःसंदेह दिया २ अब वरदान देनेके पीछे सतरूपा में मातृत्व भावसे बोले कि हे माता अलौकिक कहें प्रपंचातीत पारलौकिक ज्ञानतेरे हृदयसे मेरे अनुग्रहते कदापि नहीं मिटैगा ३ या प्रकार सतरूपा के बरदान को सुनकर राजाके मन में संका हुई कि कहीं ऐसा ज्ञान हमको भी न होजावे तबतो स्वामी के चरणों को वन्दन करिके हाथ जोरि कर मनु फेरि बोले किहे प्रभु मेरी एक विनती औरहै ४ किमेरी प्रीति तो आपके चरणोंमें पुत्र भावही कीरहै हमको भलेही मूढ़मति मन्द कोई कहाही करो ५ जैसे सर्पका जीवन मणिके आधीन और मीनका जीवन जल के आधीन होता है तैसेही मेरा जीवन आपके आधीन होवे ६ ऐसा बर मांगि कर स्वामी के चरण पकरि कर रहगया किहे स्वामी यह बरदान तोदेही दीजिये तबतो करुणा निधान स्वामी ने कहा कि जैसी तुम्हारी इच्छा है तैसाही होगा ७ अब तो या समय तुम मेरा अनुशासन मानि कर देवराज इन्द्रकी पुरी अमरावती में निवास करौ ८ ॥ सोरठा ॥

यहांके उत्तम भोग विलास करिके कुछ काल बीते हे तात तुमभी अयोध्याके राजा होओगे तब तहां मैं तुम्हारा पुत्र होऊंगा यहां तात पदका भी अर्थ पिता बाचकहा है क्योंकि वरदान देनेके पीछे स्वामीने कहा है ॥ ४५ ॥

इच्छा मय नर वेष संवारे । होइहौं प्रगट निकेत तुम्हारे १
अंशनिसहित देहधरिताता । करिहहुंचरितभक्त सुखदाता २
जोसुनिसादर नरबड़ भागी । भवतरिहैं ममता मदत्यागी ३
आदिशक्तिजिहिंजगउपजाया।सोउअवतरिहिमोरियहमाया ४
पुरउबमैंअभिलाष तुम्हारा । सत्य सत्यप्रण सत्य हमारा ५
पुनिपुनिअसकहि कृपानिधाना । अंतर्ध्यान भये भगवाना ६
दम्पतिउरधरिभक्तिकृपाला । तिहिआश्रमहिंबसेकछुकाला ७
समयपायतनुतजिअनयासा । जाइ कीन्हअमरावतिवासा ८
दो० यह इतिहास पुनीत अति उमहि कहेउ वृषकेतु ।
भरद्वाज सुनु अपर अब रामजन्म कर हेतु ॥ ४६ ॥

इच्छारूप मनुष्य बेष बनाये तहांमें तुम्हारे घरप्रगट होउंगा १ अपने अंशों करके सहित अर्थात् अपने अंश भूत पारषदों समेत शरीर धारण करके अपने भक्तों के आनन्ददायक चरित्र करूंगा ॥ सनत्कुमारसंहितायां ॥ शेषोभूल्लक्ष्मणोलक्ष्मी जानकी शंखचक्रिके भ्रातौभरतशत्रुघ्नौ देवाःसर्वेपिवानराः तत्रनारायणोदेवश्रीरामइतिविश्रुतः अर्थात् शेषजी तो लक्ष्मण हुये श्री लक्ष्मीजी जानकी सीता हुईं शंखावतार श्री भरत जी हुये सुदरशन चक्रावतार श्री शत्रुघ्नहुये ब्रह्मादिक देवता समस्त बानर हुयेऔर स्वयंदेव देवेश्वर श्री मन्नारायण श्री रामचन्द्र बिश्रुत बिख्यात हुये २ जिन चरित्रों को सुनकर बड़भागी जीव संसार सागर को ममता मद छोड़कर तरिजावेंगे ३ और यह मेरी सनातन शक्ति जिसने मेरी आज्ञासे संपूर्ण जगत उत्पन्न किया है सोभी अवतार लेगी यह जगज्जननी मेरी माया है ४ इस प्रकार मैं तुम्हारा संपूर्ण अभिलाष परिपूर्ण करूंगा हमारा प्रणसदा सत्यहै सत्यहै सत्यहै ५ ऐसे बारंबार कहकर स्वामी अंतर ध्यान होगये ६ राजा रानी हृदयमें भगवत् भक्ति कृपा रूपा धारण करिके उस आश्रममें कुछकाल बसे ७ फिरि समय पाकर देह त्यागकर बिना प्रयास अमरावती में जाबसे ८ ॥ दोहा ॥ यह अति पवित्र इतिहास इस प्रकार श्री शिव जीने श्रीपारवती से कहा अबहे भरद्वाज रामजन्मका और भी कारण सुनो ॥ ४६ ॥

सुनुमुनि कथा पुनीतपुरानी । जोगिरिजा प्रतिशंभु बखानी १
विश्वविदित एक केकय देशू । सत्य केतु तहं बसहि नरेश २

धर्मधुरंधर नीति निधाना । तेज प्रताप शील बलवाना ३
तिहिके भये युगुल सुतबीरा । सब गुणधाम महा रणधीरा ४
राजधनी जो जेठ सुत आही । नाम प्रताप भानु असताही ५
अपरसुतहिअरि मर्दननामा । भुजबल अतुलअचलसंग्रामा ६
भाइन भाइ परस्पर प्रीती । सकल दोष छल बर्जित रीती ७
जेठे सुतहि राज नृप दीन्हा । हरि हित आपगवन बनकीन्हा ८
दो० जब प्रताप रबि भयउ नृप फिरी दुहाई देश ।
प्रजापाल अति वेदविधि कतहुं नहीं अघलेश ॥ ४७ ॥

सुनो हे भरद्वाज मुनि श्री राम जन्म के कारण की कथा जो शिवजीने पारवती प्रति कही है १ विश्व बिख्यात एक कैकय नाम परम रमणीक कश्मीर देश तहां पूर्वकाल में सत्य केतु नाम एक राजा रहा२ बड़ा धर्मधुरंधर और नीतिका निधान और बड़ा तेजवान् प्रतापवान बलवान ३ उसके द्वयपुत्र बड़े बीर संपूर्ण शुभ गुणों के धाम महा रणधीर हुये ४ तिसमें जो राजधनी जेठापुत्र है उसका प्रताप भानुऐसा नाम हुआ ५ और छोटे पुत्रका अरिमर्दन ऐसा नाम रक्खा जिसका अतोल बाहुबल है और संग्राम में अचल है ६ भाई भाइयों में परस्पर बड़ी प्रीति हुई और समस्तदोष छल रहित एक की दूसरे के साथ रीति हुई ७ ऐसा सब प्रकार समर्थ और सहज प्रीति परस्पर दोनों भाइयोंको देखकर राजानेनीतिके अनुसार जेठे पुत्र को राजदिया और आप राजा भगवत् प्रीत्यर्थ बनको गया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जब प्रताप भानु राज्य पर बैठा और देश में उसकी दुहाई फिरी तबतो प्रजा को वेद विधि से पालनकरने लगा जिसके राज्य भरे में कहीं भी तो पाप का लेश न रहा ॥ ४७ ॥

नृपहित कारकसचिव सुजाना । नाम धर्म रुचिशुक्र समाना १
सचिव सयान बंधु बलबीरा । आप प्रताप पुंज रणधीरा २
सेन संग चतुरंगि अपारा । अमित सुभट सबसमर जुझारा ३
सेन बिलोकि राउ हरषाना । अरु बाजे गह गहे निशाना ४
विजय हेतु कटकई बनाई । सुदिन साधि नृप चलेउबजाई ५
जहं तहं परी अनेक लराई । जीते सकल भूप बरिआई ६
सप्त द्वीप भुज बल बस कीन्हें । लैलै दंडछांड़ि नृप दीन्हें ७
सकलअवनि मंडल तिहिकाला । एकप्रताप भानुमहिपाला ८

दो० स्ववश विश्व करि बाहुबल निज पुरकीन्ह प्रवेश ।
अर्थधर्म कामादिसब सेवाहिं सकल नरेश ॥ ४८ ॥

राजाका शुभ चिन्तक मंत्री बड़ा बुद्धिमान धर्मरुचि ऐसा जिसका नाम शुक्राचार्य के समान हुआ १ अब परम चतुर तो मंत्री और महाबीर बलवान भाई और आप प्रताप वान महा रणधीर २ साथमें चतुरंगिनी अपार सेना जिसमें अनेक समर प्रबीन योधा बड़े लड़ाक ३ ऐसी सेना को देखकर राजा बड़ा हर्षित हुआ और बड़े घन घोरि कर जुझाऊ बाजे बजाये ४ बिजय के निमित्त सेना बनाकर और सुन्दर दिन मुहूर्त साधिकर राजा ने पयान किया ५ जहां तहां द्वीपांतर में अनेक लराई हुई परंतु बरियाई से समस्त राजाओं को जीति लिया ६ सातहूं द्वीप अपने बाहुबल से बश करी लिये और दण्ड ले लेकर राजाओं को राजनीति के अनुसार अपनी ओर से बसा दिया ७ सप्तद्वीपावती पृथ्वी में ता समय एक छत्र प्रतापभानुही मंडलीक राजा हुआ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ समस्त विश्व को अपनी भुजों के बल से अपने बश करिके अपने नगर में प्रवेश किया और अर्थ धर्म काम सेवा सांसारिक समस्त सुखोंको प्रजा भोगने लगा ॥ ४८ ॥

भूप प्रताप भानु बलपाई । काम धेनु भइ भूमि सुहाई १
सब दुखबर्जित प्रजा सुखारी । धर्मशील सुंदर नर नारी २
सचिवधर्म रुचिहरि पदप्रीती । नृप हितहेतु सिखावत नीती ३
गुरुसुर संत पितर महिदेवा । करहिं सदा नृप सबकीसेवा ४
भूप धर्म जो वेद बखाने । सकल करहिसादर सुख माने ५
दिनप्रति देइ बिबिधबिधिदाना । सुनै शास्त्र बरवेद पुराणा ६
नाना बापी कूप तड़ागा । सुमन बाटिका सुन्दर बागा ७
बिप्रभवन सुर भवन सुहाये । सबतीरथनि बिचित्र बनाये ८
दो० जहंलागे कहे पुराण श्रुति एकएक सबयाग ।
बारसहस्र सहस्रनृप किये सहितअनुराग ॥ ४९ ॥

राजा प्रतापभानु के धर्मराज को पाकर पृथिवी सुन्दर कामधेनुके समान सकल काम दायक होगई १ जिसके राजमें सर्व दुख रहित प्रजा सुखी रहती है औरस्त्री पुरुष सुन्दर धर्म शील बसतेहै २ धर्मरुचि मंत्री जिसकी हरि भगवान के चरणों में बड़ी प्रीतिहै राजाके हितके निमित्त सदा सुन्दर नीतिका उपदेश करता रहताहै ३ सो मंत्री के उपदेश जु राजा गुरु अपने आचार्य्य सुर अपने इष्टदेव भगवान बासुदेव संत कहें छत्री वैश्य शूद्रादि भागवत पितर कहें देवता ऋषि मनुष्य दि अथवा

जीवते पितृभ्य पिता महादि पितर महिदेव कहैं ब्राह्मण महा भागवत सब की निरंतर सेवा करता है ४ जो राजाओं के धर्मवेदों में कहे हैं सो सब बड़ी प्रीति से करता है ५ और दिन प्रति अनेक बिधिके दान मही सुरों को देता है और सदैव उत्तम धर्म शास्त्र वेद पुराणों को श्रवण करता है ६ नाना प्रकार के कूप तड़ाग तलाव बापी बावड़ी जहां जैसी चाहिये मार्गों और तीर्थों में बना दिये और पुष्प बाटिका और सुन्दर बाग लगादिये ७ तीरथ बासी ब्राह्मणोंके घर और भगवदालय परम सुन्दर समस्त तीर्थोंमें अति विचित्र बना दिये ८ ॥ दोहा ॥ जहां जहां वेदों ने राजाओं को एक एक समस्त यज्ञ करना कहा है तहां तहां सहस्र सहस्र बार राजाने बड़े प्रेम समेत किये ॥ ४९ ॥

हृदय न कछु फल अनु संधाना । भूप बिबेकी परम सुजाना १
करै जो धर्म कर्म मन बानी । वासुदेव अर्पित नृप ज्ञानी २
चढ़िवर बाजि बार एकराजा । मृगया करसब साजिसमाजा ३
बिंध्याचल गंभीर बन गयऊ । मृगपुनीत बहु मारत भयऊ ४
फिरतविपिनइक दीखवराहू । जनुबन दुरेउशशिहिग्रसिराहू ५
बड़विधु नहिंसमात मुखमाहीं । मनहुंक्रोधवसउगिलतनाहीं ६
कोल कराल दशन छविगाई । तनविशाल पीवर अधिकाई ७
घुरघुरात हय आरवपाये । चकित बिलोकत कान उठाये ८
दो० नील महीधर शिखर सम देखि विशाल वराहु ।
चपरि चलेउ हय सुटुकि नृपहांकि न होइनिबाहु ॥५० ॥

और हृदय में कुछ भी उन के फल की चाहना नहीं क्योंकि राजा बड़ा विवेकी और परम सुजान है इन के फलको अपना बंधन जानता है १ तातें जो कुछ धर्म कर्म कायम नवाणी से करता है उस को वासुदेव समर्पण कर देता है जैसी गीता में आज्ञा है ॥ यत्करोसियदश्नासि यज्जुहोसिददासियत् यत्तपस्यसिकौंतेयतत्कुरुष्व मदर्पणं ॥ * २ * ॥ सो ऐसा धर्मधुरंधर राजा एक समय मृगया का साज सजाइ कर अपने अति अमोल सुन्दर घोड़ेपर चढ़िकर बिंध्याचल के महागंभीर बनमें गया और तहां पवित्र मृगों को मारता हुआ ॥ ३ ॥ ४ ॥ बनमें फिरते हुये एक बड़ा शूकर देखा मानो चन्द्रमा को मुखमें ग्रास करिके राहुही बन में आछिपा है ५ सो चन्द्रमा अति बड़ा मुख में तो समाता नहीं है और वैरी को पाकर क्रोध के बसउगिलता भी नहीं मुंह का मुंहही में पकरकर रहगया है ६ यह तो उसके महा कराल आगे के दांतों की छांबकही है और शरीर उसका अति बड़ा और बहुत मोटा है ७ सो घोड़े की टापों का पट पटाहट पाकर अपना घुरघुरा शब्द करत

है और चकित हुआ कान उठाये देखिरहा है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसा नील पर्वत के शिखरके समान अति विशाल वाराह को देख कर राजा चपरिक है हठकरिके घोड़े के सटुकामार कर चलिही तो दिया यद्यपि जानेका निवाह भी नहीं होनेका ॥ ५० ॥

आवतदेखि अधिकरवबाजी । चलावराहु मरुत गति भाजी १
तुरतकीन्हनृपसरसंधाना । महिमिलिगयउ विलोकतबाना २
तकितकितीरमहीशचलावा । करि छल सुवर शरीरबचावा ३
प्रकटत दुरतजाइ मृगभागा । रिस बस भूप चलेउसंगलागा ४
गयउ दूरि बन गहन वराहू । जहां नहीं गजबाजि निबाहू ५
अतिअकेल बनविपुलकलेशू । तदपि नमृग मगुतजै नरेशू ६
कोलविलोकि भूप बड़धीरा । भागि पैठ गिरि गुहागंभीरा ७
अगमदेखि नृपअति पछिताई । फिरेउ महाबनपरेउभुलाई ८
दो० खेदखिन्न अतिशय तृषित राजा बाजिसमेत ।
खोजत व्याकुलसरितसर जल बिनुभयउअचेत ॥ ५१ ॥

बड़े शब्दवान घोड़े को अपने ऊपर चला आता देखि कर शूकर पवनके वेग के समान भागा १ शीघ्रही राजाने वाण संधान किया शूकर वाण को देखिकर पृथ्वी में छिप होगया २ अनेक वाण राजा ने तकि तकि कर उसके ऊपर चलाये परंतु शूकरछल करि करिके आपको बचा गया ३ इस प्रकार छिपते और प्रगट होते शूकर भागता जाता है और रिसके बस राजा उसके पीछे लगाही चला जाता है ४ तब तो बड़ी दूर महा सघन बन में शूकर प्रवेश कर गया जहां हाथी घोड़े का निवाह नहीं है ५ अतितो अकेला और बन का महा कलेश है तो भी मृगकी पिछारी राजा नहीं छोड़ता है ६ ऐसे शूकर राजा को बड़ा धीरज वान देखि कर पर्वत की गंभीर गुहा में पैठि गया ७ तब तो अगम देखिकर राजा उसके हाथ न लगने का पछिताव करता हुआ लौटा और महा गह्वर बन में भूलगया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ बन के कष्टसे दुखित औरघोड़े समेत अत्यन्त प्यासा महा व्याकुल जलाशय ढूंढता फिरता है और अचेतहै ५१ ॥

फिरत विपिन इकआश्रमदेखा । जहं बस नृप तापसके वेषा १
जासुदेश नृप लीन्ह छुड़ाई । समर सेन तजि गयउ पराई २
समयप्रताप भानुकर जानी । आपन अतिअसमयअनुमानी ३
गयउनगृहमनबहुतगलानी । मिलानराजहिअतिअभिमानी ४
रिसउर मारिरंक जिमिराजा । विपिनि बसा तापसके साजा ५

तासुसमीपगवन नृपकीन्हा । यह प्रताप रविनृपतिहिं चीन्हा ६
राउतृषित नहिंसो पहिचाना । देखि सुवेस महा मुनिजाना ७
उतरि तुरंग तेंकीन्ह प्रणामा । परमचतुर न कहेउनिजनामा ८
दो० भूपति तृषित बिलोकितिहिं सरवर दीन्ह दिखाइ ।
मज्जनपान समेत हय कीन्ह नृपति हरषाइ ॥ ५२ ॥

इस प्रकार बनमें फिरते फिरते एक आश्रम दीख पड़ा जहां एक राजा तापस बेष बनाये बसता है १ जिसका देश इस राजा ने जब विजय किया तब सो राजा संग्राम में सेना छाड़िकर भागि गया २ समय प्रताप भानु के अनुकूल और अपने प्रतिकूल जानिकर ग्लानि खाकर नतौ घर गया और न अभिमान के बस राजासे मिलाप किया ३ । ४ रंककी नाईं रिस मनकी मनहीं में मारि कर इस बनमें तपस्वी के वेष आबसा ५ तिसके पास जब राजा गया तब उसने तौ राजा को पहिचानि लिया कि यह तौ प्रताप भानु राजा है मेरा शत्रु ही है ६ और राजा अति प्यासा महा व्याकुल उसको न पहिचानि सका सुवेष देखिकर कोई महा मुनीश्वर जाना ७ घोड़े से उतरि कर उसको दण्डवत प्रणाम किया परंतु जैसे मुनीश्वरों को नामोच्चारण समेत प्रणाम करने की प्रनाली है तैसे परम चतुर राजा ने अपना नामोच्चारण न किया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ राजा को अति प्यासा देखिकर उसने सरोवर बतादिया तहां जाकरराजाने स्नान किया और घोड़े समेत जल पान किया ॥ ५२ ॥

गेश्रम सकलसुखी नृप भयऊ । निजआश्रम तापसलैगयऊ १
आसन दीन्ह अस्त रविजानी । पुनि तापस बोलामृदुबानी २
कोतुम कसबन फिरहु अकेले । सुन्दर युवा जीव पर हेले ३
चक्रवर्त्ति के लक्षन तोरे । देखत दया लागि अति मोरे ४
नाम प्रताप भानु अवनीशा । तासु सचिव मैं सुनहुमुनीशा ५
फिरत अहेरहिं परेउं भुलाई । बड़ भाग्य देखेउं पद आई ६
हमकहं दुर्लभ दरश तुम्हारा । जानतहौं कछुभल होनहारा ७
कह मुनि तात भयउअंधियारा । योजन सत्तरि नगरतुम्हारा ८
दो० निशा घोर गंभीर बन पंथ न सूझ सुजान ।
बसहु आज यहि आश्रमहिं जायहु होतविहान ॥ ५३॥

जब राजाका समस्त श्रम दूरि हुआ और प्रसन्न चित्त होगया तब तपस्वी अपने आश्रम कोलिवा लेगया १ और सूर्य अस्त जानिकर बिश्रामासन दिया और बड़ी

कोमल बाणी से बोला २ कि तुम कौन हो और इस गह्वर बनमें कैसे अकेले फिरतेहो सुन्दर युवा तो तुम्हारी अवस्था है प्राणों पर क्यों वृथा खेलते हो ३ चक्रवर्ती राजा के से तो तुम्हारे संपूर्ण लक्षण हैं सो देखते मेरेको बड़ी दया लगती है ४ तबतो राजा उसको बड़ा विद्यामान जानकर बोला कि सत्य है महाराज प्रतापभानु नाम चक्रवर्ती राजा है उसका मैं मंत्री हूं ५ सो यहां मृगया करते करते वन में भूलिगया बड़े मेरेभाग्य जो आपके चरणों का दरशन हुआ ६ क्योंकि हमसे गृहमेधियों को आप लोगों का दरशन दुर्लभ होताहै मैं जानता हूं कि कुछ मेरा भला होनहार है ७ यह सुनिकर तपस्वी बोला कि हे तात अबतो अंधेरा होगया और यहां से तुम्हारा नगर सत्तरि योजन है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ महा घोर अंधेरी तो रात्री है और गंभीर वनमें मार्गभी नहीं दीख परताहै तातें रात्री भर तो यहांहीं निवास करो प्रातकाल होतेही उठि जाइयो ॥ ५३ ॥

भलहिंनाथ आयसु धरिशीशा । बांधितुरंग तरुबैठ महीशा १
नृप बहुभांति प्रशंसेउ ताही । चरण बंदिनिज भाग्यसराही २
मोहि मुनीश सुतसेवक जानी । नाथ नाम निजकहहुबखानी ३
पुनि बोलेउ मृदु गिरा सुहाई । जानि पितासम करहुंढिठाई ४
तिहिनजाननृपनृपहि सोजाना । भूपसुहृद सोकपटनिधाना ५
बयरी पुनिक्षत्री पुनिराजा । छलबल कीन्ह चहै निज काजा ६
समुझिराज्यसुखदुखितअराती।अंवाअनलइवसुलगतछाती ७
सरलबचन नृपके सुनिकाना । वैर संबारि हृदय हरषाना ८
दो० कपट बोरि बाणी मृदुल बोलेउ युक्ति समेत ।
नामहमार भिखारिअब निर्धन रहित निकेत ॥ ५४ ॥

बहुत भला महाराज ऐसे कहकर घोड़े को वृक्ष से बांधि कर राजा अपने आसन पर आ बैठा १ और मुनिकी अनेक भांति प्रशंसा की और चरण छूकर अपना भाग सराहि कर फिरि राजा बड़ी कोमल बाणी से बोला कि महाराज आपको पिताही के समान जानिकर ढिठाई करता हूं २ । ३ कि मेरेको अपने सेवक पुत्रके समान जानि कर हे नाथ अपना नाम धेय कहिये ४ तिसको तो राजा जानता नहीं है और सो राजा को जानता है राजा तो शुद्ध हृदय है और वह कपट का समुद्र है ५ एक तो वैरी तापर क्षत्री पुनि राजा छलका बल करिके अपना काम किया चाहे ६ अपने राज्यके सुखको स्मरण करिके महादुखित अराति कहेंवैरी सो उसकी छाती कुम्हारके अंवे की अग्निके समान भीतरही भीतर दहकती है ७ अति सरल राजाके बचन सुनि और अपनें वैर को स्मरण करिके हृदय में बड़ा हर्षित हुआ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ कपट

की सनी कोमल बाणी से बड़ी युक्ति समेत बोला कि नाम हमारा अब तो भिक्षुक है क्योंकि न तो हमारे किंचिद्धन है न धाम है हमतो अकिंचिन हैं ॥ ५४ ॥

सबप्रकार राजहि अपनाई । बोला अधिक सनेह जनाई १
सुनुसतिभावकहौं महिपाला । यहां बसत बीते बहुकाला २
तातें गुप्त रहहुं जग माहीं । हरितजि किमपिप्रयोजननाहीं ३
प्रभुजानतसबबिनहिंजनाये । कहहुकवनसिधिलोकरिझाये ४
जिमिजिमितापसकहैउदासातिमितिमिनृपहिउपजविश्वासा ५
देखा स्वबस कर्म मन बानी । तबबोला तापस बकध्यानी ६
नाम हमार एकतनु भाई । सुनिनृपबोलेउ पुनि शिर नाई ७
कहहु नाम करअर्थबखानी । मोहिं सेवकअति आपनजानी ८
दो० आदि सृष्टि उपजी जब तब उतपति भइ मोरि ।
नाम एक तन हेतु तिहि देह न धरी बहोरि ॥ ५५ ॥

सब ओर से राजा को अपनाकर और बड़ा स्नेह दिखाकर बोला १ कि सुनराजा मैं तेरे से अपना सरल भाव कहता हूं यहां बसते मेरे को बहुत काल व्यतीत हुआ २ परंतु इसलिये मैं अपने को गुप्त रखता हूं कि भगवत् व्यतिरिक्त मेरे को कुछ भी अन्यसे प्रयोजन नहीं है ३ स्वामी तो समस्त भीतर बाहेर की बिनाहीं जनाये जानते हैं फिरि कहो लोक रिझाने में कौनसी सिद्धु रक्खी है ४ इस प्रकार जैसा जैसा कपटी मुनि उदासीन की नाईं कहता है तैसा तैसाही राजा को उसके कहने पर विश्वास बढ़ता जाता है ५ जब उसने राजा को तन मन बचन से अपने बस सुदृढ़ जानि लिया तबतो बक ध्यानी मुनि बोला ६ कि सुनु हे राजा हमारा नाम एक तन है यह सुनिकर राजा उसको दण्डवत् करि के फिरि बोला ७ कि हे नाथ मेरेको अपना दासानुदास जानिकर अपने नाम का अर्थ बखानि कर कहिये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ यह सुनिकर मुनि बोला कि सुनु हे राजा जब ब्रह्माने नारायणके नाभि कमल से उत्पन्न होकर प्रथम पद्म कल्पमें आदि सृष्टि रचीरहे तब मेरी उत्पत्ति हुई है इस कारण मेरा नाम एकतन है कि मैंने दूसरी देह नहीं धरी है ॥ ५५ ॥

जनि आश्चर्य्य करहु मनमाहीं । सुततपतेंकछुदुर्लभनाहीं १
तपबलते जगसृजै बिधाता । तप बलाविष्णुभये जगत्राता २
तपबल शंभु करहिं संहारा । तपते अगम न कछु संसारा ३
भयउनृपहिसुनिअतिअनुरागा।कथापुरातनकहन सोलागा ४

कर्म धर्म इतिहास अनेका । करै निरूपण बिरति बिबेका ५
उद्भवपालन प्रलयकहानी । कहेसिअमित आश्चर्यबखानी ६
सुनिमहीशतापसबसभयऊ । आपन नामकहयतबलयऊ ७
कहतापसनृपजानहुं तोहीं । कीन्हेहु कपटलागु प्रियमोहीं ८
दो० जहंतहं नाम न कहहिं नृप सुनुमहीपअसि नीति ।
परमचतुरतानिरखितबमोहि तोहिपरअतिप्रीति ॥५६ ॥

यह मेरा बचन सुनिकर राजा तुम अपने मनमें कुछ आश्चर्य न करो क्योंकि तप से कोई पदार्थ दुर्लभ नहीं है १ देखो तपही के बलसे ब्रह्मा सृष्टि को रचता है और अपनी बिभूति में मिलकर विष्णु भी तपके बल से जगत को पालते हैं २ तप ही के बल से रुद्र सृष्टि संहार करते हैं फिरि भला तप से और कौन पदार्थ अगम हो सक्ता है ३ यह सुनिकर तो राजा को उस पर बड़ा अनुराग हुआ तब तो सो मुनि अनेक प्राचीन कथा कहने लगा ४ अनेक प्रकार के कर्म धर्म और इतिहास कहने लगा और ज्ञान वैराग भी निरूपण करनेलगा ५ अनेक कल्प भेदसे संसार की उत्पत्ति स्थिति और प्रलय की कथा कही और अनेक अद्भुत आश्चर्य वर्णन किये ६ सो सुनिकर राजा उसके बस में होगया और अपना नाम उससे कहना चाहा ७ सो पहिलेही समुझकर बोलि उठा अरे राजा मैं तुमको जानता हूं और तुमने जो कपट किया सो मेरे को अति प्रिय लगा ॥ ८॥ दोहा ॥ सुनु हे राजा जहां तहां अपना नाम राजा लोग नहीं कहते हैं यह तो नीतिही है यहां तेरी चातुर्य देखकर तेरे पर मेरी प्रीति हुईहै ॥ ५६ ॥

नाम तुम्हार प्रताप दिनेशा । सत्य केतु तव पितानरेशा १
गुरुप्रसादसबजानियराजा । कहियन आपनजानिअकाजा २
देखि तात तव सहज सुधाई । प्रीति प्रतीति नीतिनिपुनाई ३
उपजि परी ममता मनमोरे । कहेउं कथा निजपूछे तोरे ४
अब प्रसन्न मैं संशयनाहीं । मांगु जो भूप भाव मन माहीं ५
सुनिसुबचनभूपतिहरषाना । गहिपदबिनयकीन्हिबिधिनाना ६
कृपा सिंधु मुनि दरशन तोरे । चारि पदारथ करतल मोरे ७
प्रभुहितथापिप्रसन्नबिलोकी । मांगिअभय बरहोहुंविशोकी ८
दो० जरा मरन दुख रहित तन समर जीति नहिंकोइ ।
एक छत्र रिपु हीन महि राजकल्प शतहोइ ॥ ५७ ॥

सुनुहे राजा तुम्हारा नामतो प्रतापभानुहै और सत्यकेतु तुम्हारे पिताका नाम है १ गुरुके अनुग्रह ते जानते सबहैं परंतु अपना अकाज समुझ कर कहते नहीं हैं २ तेरी सौभाविक प्रीति और प्रतीति और नीति निपुणता और सुधाई देखि कर ३ मेरे मनमें तेरे ऊपर बड़ी ममता उत्पन्न हुई तब तेरे पूछनेसे मैंने अपनी कथा कही है ४ अबमें तेरे ऊपर अति प्रसन्नहूं ताते हे राजा जो तेरे मनमें भावे सो बरदान तू मांगिले ५ सो बचन तो सुनतेही राजा अति हर्षित होगया और चरण छूकर बड़ी बिनती की ६ कहाकि हे कृपासिंधु मुनि आपके दरशनके प्रभाव सेही चारों पदार्थ मैं अपने हाथही में मानताहूं ७ तथापि आपको प्रसन्न देखकर चाहता हूं कि आपसे महा अगम बरदान मांगिकर विशोक होजाऊं ८ ॥ दोहा ॥ सो मैं यह बरदान आपसे मांगता हूं कि यह मेरातन बुढ़ापे और मृत्यु और समस्त रोगादि दुखों से रहित हो जावे और संग्राम में कोइ न जीतिसके और एकछत्र अकण्टक राज्य मेरा सौकल्प भर कर होवे ५७ ॥

कह तापसनृप एसेइ होऊ । कारणएक कठिन सुनुसोऊ १
कालहु तवपदनाइहि शीशा । एकविप्र कुलछांडि महीशा २
तपबल बिप्र सदाबरियारा । तिनकेकोपन कोउ रखवारा ३
जौबिप्रन बसकरहु नरेशा । तौतबबस बिधिविष्णु महेशा ४
चलनबिप्रकुलसनबरियाई । सत्य कहौंदोउ भुजा उठाई ५
बिप्रशाप बिनुसुनुमहिपाला । तोरनाश नहिंकवनेहुंकाला ६
हरषेउ राउबचन सुनितासू । नाथन होइहि मोर बिनासू ७
तवप्रसाद प्रभु कृपानिधाना । मो कहं सर्बकाल कल्याणा ८
दो० होहिं बिप्रबस कवनि बिधिकहहु कृपाकरि सोउ ।
तुम तजि दीनदयाल निज हितू न देखहुं कोउ ॥५८॥

तब तो तपस्वी बोला कि हे राजा ऐसाही होगा परंतु भाई एक कारण इस में महा कठिन है सोभी सुनले १ कि और कीतो कौन गिनती है कालभी तेरे चरणों को प्रणाम करैगा एक ब्रह्म बंश को छोड़कर हे राजा २ कि तपके बल से ब्राह्मण सदा प्रबल चले आयेहैं उनके कोपसे कोई रक्षक नहींहै ३ जो तुम ब्राह्मणों को बश करो तो फिर तुम्हारे बश में ब्रह्मा विष्णु शिवादि सब देवता होजावेंगे ४ परंतु बिप्र बंशसे बरियाई किसी की नहीं चल सक्ती है यह मैं सत्य कहता हूं ५ हां ब्राह्मण के शाप बिना तो तेरा नाश किसी काल में न होगा ६ यह सुनकर राजा बड़ा हर्षित हुआ और बोला कि हे नाथ मैं जान चुका कि अब मेरा बिनाश नहीं होगा ७ आप के अनुग्रह से हे कृपा निधान हमको सर्वकाल में कल्याणही होगा ८॥

दोहा ॥ परंतु जिस उपायसे ब्राह्मण वशमें होजावें कृपा करिके सोभी कहि दीजियेक्यों कि आपके बिना हे दीनदयालु स्वामी मैं अपना हितकारी दूसरे को नहीं देखताहूं ॥ ५८ ॥

सुनुनृपबिबिधयतनजगमाहीं । कष्टसाध्यपुनिहोहिकिनाहीं १
अहै एक अति सुगम उपाई । तहां परंतु एक कठिनाई २
मम आधीन युक्ति नृप सोई । मोर जाबतव नगर न होई ३
आजलगें अरुजब तें भयऊ । काहूके गृह ग्राम न गयऊ ४
जौं न जाउं तौ होइ अकाजू । बना आइ असमंजस आजू ५
सुनिमहीप बोलेउ मृदुबानी । नाथनिगमअस नीतिबखानी ६
बड़ेसनेहलघुन परकरहीं । गिरिनिज शिरनिसदातृणधरहीं ७
जलधिअगाध मौलिबहफेणू । संतत धरणिधरति शिर रेणू ८
दो० असकहि गहे नरेश पद स्वामी होहु कृपालु ।
मोहिंलागि दुखसहिय प्रभु सज्जन दीनदयालु ॥ ५९ ॥

यह सुनकर तापस बोला सुनु हे राजा ब्राह्मणों के बश करनेके उपाय अनेकभांति के बहुतसे हैं परंतु कष्ट साध्यहैं उनके सिद्ध होनेमें भी संदेह है १ हां एक अति सुगम उपाय है परंतु उसमें एकबड़ी कठिनता यहहै २ किसो युक्ति मेरेही आधीन है और मेरा जाना तेरे घर नहीं हो सक्ता है ३ क्योंकि जबसे जन्माहूं आज तक किसीके घर और गाउं में नहीं गयाहूं ४ और अब जो नहीं जाताहूं तौ तेरा अकाज होता है यह मेरेको असमंजस आज आपड़ा है ५ यह सुन कर राजा बड़ी नम्रता से बोला कि महाराज वेद ऐसी नीति कहते हैं ६ कि महात् पुरुष अपने छोटों पर सभी प्रेम करते आये हैं देखो परबत अपने शिरोंपर तृणोंको धारण करते हैं ७ और अगाध समुद्र अपने ऊपर फेणुको बहाता है और पृथ्वी रेणु को अपने ऊपर ही रखती है ८ ॥ दोहा ॥ ऐसे कहकर राजाने उसके चरण पकरि लिये और कहा कि हे स्वामी अब कृपालु हूजिये और मेरे निमित्त कष्ट सहिये आपतौ सज्जन बड़े दीन दयालु हैं ॥ ५९ ॥

जानिनृपहिआपन आधीना । बोला तापस कपट प्रवीना १
सत्य कहौं भूपति सुनु तोहीं । जगनाहिनदुर्लभ कछुमोहीं २
अवसि काजमैं करिहौं तोरा । मनक्रम वचन भक्त तैं मोरा ३
योग युक्ति तप मंत्र प्रभाऊ । फलहिंतबहिंजबकरियदुराऊ ४
जौं नरेश मैं करहुं रसोई । तुम परसहु मोहिं लखै न कोई ५

अन्नसोजोइजोइभोजनकरहीं।सोइसोइतबआयसुअनुसरहीं६
पुनि तिनके गृह जेंउब जोई । तब बसहोइ भूपसोइ सोई ७
जाइ उपाय रचहु नृपयेहू । संवत भरि संकल्प करेहू ८
दो० नित नूतन द्विज सहस शत बरेहु सहित परिवार ।
मैं तुम्हरे संकल्पभरि दिनहिं करब जिवनार ॥ ६०॥

या प्रकार राजा को अपने आधीन जानि कर बड़ा कपट प्रवीन तापस बोलना १ सुनु राजा मैं सत्य तेरे से कहताहूं कि मेरेको संसार में कोईभी कार्य दुर्लभ नहीं है २ सोतू सोच मत कर मैं तेरा कार्य अवश्य करूंगा क्योंकि तूतन मन बच से मेरा भक्त है ३ परंतु भाई योग और युक्ति तप और मंत्रों का प्रभाव फलित तभी होताहै जब संसार की दृष्टि से छिपाकर किया जाताहै ४ ताते हे राजा जो मैंतेरे घर रसोई करूंतो तुम्हीं परसो और मेरे को कोई देखि नले तब यह कार्य सिद्ध होगा ५ फिर उस अन्न को जोइ जोइ ब्राह्मण भोजन करते जावेंगे सोइ सोइ तेरे बसमें होते जावेंगे ६ फिरि जो उनके घर भोजन करेंगे सोभी तेरे बसमें होंगे ७ ताते घर जाकर हेराजा यही उपाय रचो और संवत भरेका संकल्प करो ८ ॥ दोहा ॥ कि नित नये एक लक्ष ब्राह्मणों का कुटुम्ब समेत निमंत्रण करो मैं तुम्हारे संकल्प भरि के दिन प्रति जिवनार तपके बलसे बनाऊंगा ॥ ६० ॥

यहिविधि भूप कष्टअति थोरे । होइहिं सकल विप्र बसतोरे १
करिहैं विप्र होम मख सेवा । तिहि प्रसंग सहजहिं वसदेवा २
और एक तोहि कहौं लखाऊ । मैं यहि वेष न आउब काऊ ३
तुम्हरे उपरोहित कहं राया । हरि आनब मैंकरि निजमाया ४
तपबल तिहिकरिआप समाना । राखब यहां वर्ष परिमाना ५
मैंधरितासु वेष सुनु राजा । सबविधि तोर संवारब काजा ६
गइनिशिबहुतशयनअबकीजे । मोहितोहि भेटभूप दिनतीजे ७
मैं तपबल तोहि तुरंग समेता । पहुंचावहुं सोवतहिं निकेता ८
दो० मैं आउब सोइ वेषधरि पहिचानेहु तब मोहि ।
जब एकांत बुलाइ सब कथा सुनावहुं तोहि ॥ ६१ ॥

या विधि से तो हे राजा अतिही थोरे कष्ट करके समस्त ब्राह्मण तेरे बसमें होजावेंगे १ फिरि ते ब्राह्मण जो देवा राधन में होम यज्ञ पूजन करेंगे ता प्रसंग तें ब्रह्मा विष्णु शिवादि संपूर्ण देवता भीतेरे बसी भूत रहेंगे २ और एक लखाव अपने

गुप्त रहने के लिये मैं तेरेसे और भी कहे देताहूं किमैं इस वेषसे कभी तेरे घर न आऊंगा ३ किन्तु तेरे उपरोहित को अपनी माया से हर लाऊंगा ४ सोतप के बल से उसको अपने समान करिके वर्ष पर्य्यन्त यहां रक्खूंगा ५ औरमैं उसका रूप धारण करिके सब प्रकारसे तेरा काम बनाऊंगा तुम निधरकरहो ६ राति बहुत गई अब तो शयन करिये हमारी तुम्हारी भेट अब तीसरे दिन होगी ७ क्योंकि मैं तेरेको घोड़े समेत सोवतेही तेरे घर पहुंचाऊंगा ८ ॥ दोहा ॥ और एक पता देताहूं कि मेरे को उपरोहित के वेष में तब आया जानना कि जब एकांत में बुला कर यहां की कथा संपूर्ण तुमको सुना दूं ॥ ६१ ॥

शयनकीन्हिन्नृप आयसुमानी। आसन जाइ बैठ छल ज्ञानी १
श्रमित भूपनिद्रा अतिआई। सो किमि सोवशोच अधिकाई २
कालकेतुनिशिचर तहंआवा। जिहिं शूकरहोइ नृपहिभुलावा ३
परम मित्र तापस नृप केरा। जानहिं सो अति कपट घनेरा ४
तिहिके शतसुतअरुदशभाई। खलअतिअजयदेव दुखदाई ५
प्रथमहि भूप समर संहारे। विप्र संत सुर देखि दुखारे ६
तिहिखल पाछिलवैर संवारा। तापस नृप मिलिमंत्र बिचारा ७
जिहिरिपु क्षयसोइ रचेउउपाऊ। भावी बस न जानकछुराऊ ८

दो० रिपु तेजसी अकेल अपि लघु करि गनिय न ताहु।
अजहुंदेत दुख रविशशिहि शिर अवशेषितराहु ॥६२॥

राजाने उसकी आज्ञा मानि करके शयन करी और छलज्ञानी दुष्ट अपने आसन पर जा बैठा १ राजा तो सब दिनका श्रमित सोगया उस को शोचके मारे नींद कहां आतीहै २ इतनेमें कालकेतु नाम निशाचर उसके पास आया जिसने शूकर बन कर राजा को भुलाया रहे ३ यह दुष्ट इस कपटी राजा का परम मित्र है और बड़े बड़े अनेक कपट कर जानता है ४ जिसके सौ बेटे और दशभाई बड़े दुष्ट दुर्जय देवतों के दुखदाता पूर्व राजाने देवता संत ब्राह्मणों को उनके मारे दुखी देखकर उनको संग्राममें नाश करदियारहे ५ । ६ उनके वैरसे इस दुष्टने तपस्वी राजा अपने मित्रसे मिल कर मंत्र किया ७ जिस भांति वैरी का नाश हो सो उपाय बना लिया और भावी के बस राजा बिचारा कुछ नहीं जानता है ८ ॥ दोहा ॥ वैरी और तेजस्वी यदि अकेले भी होय तौभी उसको छोटा दुर्बल नहीं समुझना चाहिये देखो अब तक सूर्य्य चन्द्रमा को शिर कटेपर भी राहु दुख देताहै ॥ ६२ ॥

तापसनृपनिजसखहिनिहारी। हर्षिमिलेउउठिभयउसुखारी १
मित्रहिकहिसब कथा सुनाई । यातुधान बोला सुख पाई २
अबसाधेउं रिपु सुनहु नरेशा । जोतुम्हकीन्ह मोरउपदेशा ३
परिहरिशोचरहहुअबसोई। बिनुऔषधिहिव्याधिविधिखोई ४
कुलसमेत नृप मूल बिहाई । चौथे दिवस मिलब मैं आई ५
तापसनृपहि बहुतपरितोषी । चला महा कपटी अति रोषी ६
भानुप्रतापहि बाजि समेता । पहुंचायउ सोवतहि निकेता ७
नृपहि नारि पहं शयन कराई । हयगृहबांधेसि बाजिबनाई ८
दो० राजा के उपरोहितहि हरिलै गयउ बहोरि ।
लै राखेसि गिरि कन्दरा करिमाया मतिभोरि ॥ ६३ ॥

तापस राजा अपने सखाको आया देखकर हर्षित हो उठिकर मिला और सुखी होगया १ मित्रको संपूर्णकथा सुनाकर समुझा दी कि मेरेकरनेका तो काममैंकर चुका अब तू जाने तेरा काम जाने तबतो काल के तु सुखी होकर बोला २ कि अब मैं शत्रु का सब उपाय करलूंगा जिस भांति तुमने उपदेश किया है उसी भांति करूंगा ३ अब तुम शोच त्याग करिके से रहो यह रोग तो दैवने बिनाही औषधि के खोदिया ४ यह तुम देखना कि कुल समेत जरामूल से राजा का नाश करिके चौथे दिन मैं तुमको आमिलूंगा ५ इस प्रकार तापस राजा का परितोषण करिके महा कपटी बड़ा रोषी निशाचर चला ६ प्रतापभानु राजा को घोड़े समेत सोवतेही घर पहुंचा दिया ७ राजा को तो उसकी रानी के महलमें सुवादिया और घोड़ेको बाजिशाला में उसीके स्थान पर बांधि दिया ॥ दोहा ॥ और राजाके उपरोहित को हरले जाकर किसी पर्वत की खोहमें लेकर रखदिया और आसुरी मायासे उसपर मसान सा डारिदिया ॥ ६३ ॥

आपबिरचि उपरोहित रूपा । परेउजाइ तिहिसेज अनूपा १
जागेउ नृपअन भये बिहाना। देखि भवन अति अचरज माना २
मुनिमहिमा मनमहअनुमानी । उठेउगवहिंजिहि जाननरानी ३
काननगयउ बाजिचढ़ि तेहीं । पुरनर नारि न जानेउ केहीं ४
गये याम युग भूपति आवा । घर घर उत्सव बाजु बधावा ५
उपरोहितहिचितवजबराजा। चकितविलोकसुमिरिनिजकाजा ६
युगसमनृपहि गयेदिनतीनी । कपटी मुनिपद रहिमतिलीनी ७
समयजानि उपरोहितआवा । नृपहिमतेमहं कहिसमुझावा ८

दो० नृप हर्षेउ पहिचानि गुरु भ्रम बस रहा न चेत ।
वरे तुरत शत सहस वर विप्र कुटुम्ब समेत ॥ ६४ ॥

आप उसी उपरोहित का रूप बना कर उसकी शय्या पर जा सोया १ राजा प्रातकालसे पहलेही जगा घरमें सोवते देखकर बड़ा आश्चर्य्य माना २ केवल मुनिकी महिमा हृदय में अनुमान करिके ऐसे चुपकेही उठा जिससे रानी न जान लेवे ३ राची ही में उसी घोड़े पर चढ़ि कर बनको चला गया नगर के नर नारि किसी ने न जाना ४ मध्यान्ह वेला जब राजा बनसे आया तब तो घर घर नगर में उत्सव का बधावा बाजने लगा ५ अबतो जब राजा की दृष्टि में उपरोहित आता है तो राजा उसको चकित दृष्टि से देखता है अपने काम को स्मरण करिके ६ तीनि दिन राजा को युग समान वितीत हुये उस कपटी मुनिही के चरणों में राजा की बुद्धि लीन रही ७ समय जानि कर उपरोहित के वेष में काल केतु आया और राजा को एकान्त में ले जाकर सब कथा सुनादी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ राजा अपने गुरू को पहिचानि कर बड़ा हर्षित हुआ भ्रम के बस कुछ ज्ञान न रहा तत्कालही एकलक्ष अति उत्तम ब्राह्मणों का कुटुम्ब समेत निमंत्रण कर दिया ॥ ६४ ॥

उपरोहित जिवनार बनाई । छरसचारि विधिजसिश्रुतिगाई १
मायामय तिहिंकीन्ह रसोई । व्यंजन बहुगनि सकैन कोई २
विविधिमृगनकरआमिषरांधा । तिहिमहंविप्रमांसखलसांधा ३
भोजन कहं सब विप्र बुलाये । पद पखारि सादर बैठाये ४
परसन लागजबहिंमहिपाला । भइ अकाशबाणीतिहिकाला ५
विप्र वृंद उठिउठि गृह जाहू । है बड़ि हानि अन्न जनिखाहू ६
भई रसोई भूसुर मासू । सब द्विज उठे मानि विश्वासू ७
भूप विकल मतिमोह नसानी । भावी बस न आवमुख बानी ८
दो० बोले विप्र सकोप तब नहिं कछुकीन्ह विचार ।
जाइनिशाचर होहु नृप मूढ़ सहित परिवार ॥ ६५ ॥

उपरोहित ने क्षण मात्र में जिवनार बनाली षट रस चारि प्रकार की जैसी वेदों में कही है १ केवल माया मय सब रसोई बनाई जिसमें अनेक भांति व्यंजन जो गिने किसी पर न जावें २ अनेक भांतिके मृगों का आमिषबनाया तिनमें उसहत्यारे ने ब्राह्मण का मांस मिला दिया ३ भोजन के लिये सब ब्राह्मणों को बुलाया और उनको चरण प्रच्छालन करिके आदर समेत बैठाया ४ जब राजा पारुसि करने लगा तभी ऊपर से आकाश वाणी हुई ५ कि हे ब्राह्मणों तुम सबके सब उठि उठि कर

अपने अपने घर चले जाओ बड़ी हानि है इस अन्न को भोजन न करो ६ दूसरसोई में ब्राह्मण का मांस मिलाया है इस प्रकार की आकाश बाणी को सुनतेही समस्त ब्राह्मण विश्वास मानिकर उठि खड़ेहुये ७ राजा सुनकर महा व्याकुल होगया और भावी के बस कुछ भी मुखसे बोला न गया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तब तो ब्राह्मण बड़े कोप समेत बोले कुछ विचार नहीं किया कि अरे मूढ़ राजा तू अपने समस्तकुटुम्ब समेत दुष्ट राक्षस होगा ॥ ६५ ॥

क्षत्रि बंधु तैं विप्र बुलाई। घालय लिये सहित समुदाई १
ईश्वर राखा धर्म हमारा। जै हसि तैं समेत परिवारा २
संवत मध्य नाश तव होऊ। जल दाता न रहै कुल कोऊ ३
नृपसुनिशापविकलअतित्राशा। भइबहोरिनभगिराअकाशा४
बिप्रहुशाप विचारि न दीन्हा। नहिं अपराध भूप कछुकीन्हा५
चकितविप्रसब सुनिनभबाणी। भूपगयउजहंभोजन खानी ६
नहिं तहं असन न विप्रसुआरा। फिरे राउमन शोचअपारा७
सबप्रसंगमहिसुरन्हि सुनाई। त्राशितपरेउअवनी अकुलाई ८
दो० भूपति भावी मिटहि नाहिं यदपि न दूषण तोर।
किये अन्यथा होइ नाहिं विप्र शाप अति घोर ॥ ६६ ॥

अरे हे क्षत्रियाधम तूने परिवार समेत ब्राह्मणों को भ्रष्ट करने के लिये बुलाया १ हमारा धर्म तो ईश्वर ने रखलिया मूढ़ तूही अपने कुटुम्ब परिवार समेत भ्रष्ट होगा २ जा दुष्ट संवत् भरे में तेरा नाश होजाओ और कुल भरे में कोई किसी का जल दाता भी मति रहो ३ राजा यह महा दारुण शाप सुनतेही डरके मारे अति व्याकुल जब होगया तबतो फिरि आकाशबाणी हुई ४ किहे ब्राह्मणों तुमने बिचारि के शाप न दिया राजा बिचारे ने कुछ भी अपराध नहीं किया ५ ऐसी आकाशबाणी सुनकर संपूर्ण ब्राह्मण चकित होगये और राजा पाकशालामें गया ६ तो न तो तहां भोजन है न रसोइया है तब तो राजा बड़ा शोच करता हुआ तहां सेलौटा ७ और सब प्रसंग ब्राह्मणों से कहकर महा व्याकुल पृथ्वी पर गिर परा ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तब ब्राह्मण कुछ शाप अनुग्रह कह कर बोले किहे राजा भावी नहीं मिटती है यद्यपि तेरा कुछ दोष नहीं है क्योंकि अब ब्राह्मणों का अति घोर दुरत्यय शाप किसी के करने से अन्यथा नहीं हो सकता है ॥ ८ ॥

अस कहि सबमहि देविसिधाये। समाचार पुरलोगनिपाये १
शोचहिं दूषण दैवहि देहीं। विरचत हंस काक किये जेहीं २

उपरोहितहि भवन पहुंचाई । असुरतापसहि खबरि जनाई ३
तिहि खल जहंतहं पत्रपठाये । सजिसजि सेनभूप सबआये ४
घेरा नगर निशान बजाई । विविधिभांति नित होंहिंलराई ५
जूझे सकल सुभट करिकरणी । बंधु समेत परा नृप धरणी ६
सत्यकेतु कुल कोउनहिंबांचा । विप्रशाप किमि होइअसांचा ७
रिपुहिजीति नृप नगर बसाई । निज पुर गवनेजययश पाई ८
दो० भरद्वाज सुनु जाहि जब होइ विधाता बाम ।
धूरि मेरु सम जनक यम ताहि व्याल समदाम ॥ ६७॥

ऐसा कहकर संपूर्ण ब्राह्मण चलेगये और ये समाचार जब पुरवासियों ने पाये १ तबतौ सब शोचते हैं और दैवको दूषण देते हैं कि जिसने हंस बनाने के योग्यको काक बना दिया २ अब उस असुर ने उपरोहित को उसके घर पहुंचाकर अपनेमित्र तापस राजासे सब समाचार जाकहे ३ उस दुष्टने जहां तहांके राजाओंको पत्र भेजि दिये सो अपना अपनी सेना लेकर सब राजा चढ़ि आये और निशान बजाकर नगर घेरि लिया और दिन प्रति अनेक भांतिसेलराई होनें लगीं ४ । ५ संपूर्ण राजाके योधा अपना अपना बल पौरुष और वीरता कर कर जूझि गये और भाई समेत राजा भी संग्राम भूमि में जूझिगया ६ सत्यकेतुके वंश भरमें कोई भीतौ न बचा क्योंकि विप्र शाप असत्य कैसे होता है । ब्रह्मदंडं दुरत्ययं । ब्रह्म शाप महा दुरत्यय होता है ७ इस प्रकार संपूर्ण राजा शत्रु को जीतिकर और अपनी ओर से नगर को बसाकर और विजय यश पाकर अपने पुरीं को गये,॥ ८ ॥ दोहा ॥ सुनो हे भरद्वाज दैव जिसके जब विपरीत होता है उसको एक एक रजका कण सुमेर हो जाता है और पिता भी यम के तुल्य होजाता है और दाम कहें रज्जु उसको सर्प होजाती है ॥ ६७ ॥

कालपाइमुनिसुनुसोइ राजा । भयउनिशाचरसहितसमाजा १
दश शिर ताहि बीशभुजदंडा । रावण नाम वीर बर बंडा २
भूप अनुज अरिमर्दन नामा । भयउ सो कुंभकर्ण बलधामा ३
सचिवजो रहा धर्मरुचि जासू । भयउ विमातृ बंधु लघुतासू ४
नाम विभीषण जिहि जगजाना । विष्णुभक्त विज्ञाननिधाना ५
रहेजे सुत सेवक नृप केरे । भये निशाचर घोर घनेरे ६
कामरूप खलजनिसि अनेका । कुटिलभयंकर विगतविवेका ७
कृपा रहितहिंसक सब पापी । बरणिन जाहिं विश्व परितापी ८

दो० उपजे यदपि पुलस्त्य कुल पावन अमल अनूप ।
तदपि महीसुर शापबस भये सकल अघ रूप ॥६८॥

समय पाकर हे मुनि सोई प्रतापभानु राजा अपने संपूर्ण समाज समेत राक्षस बंश में उत्पन्न हुआ १ दश तो जिसके शिर और बीश भुजा और रावण ऐसा नाम महावीर अति प्रचण्ड २ राजा का छोटा भाई अरि मर्दन सो उसका अनुज कुंभकर्ण महा बल धाम हुआ ३ और धर्मरुचि जो राजा का मंत्री रहे सो उसका द्विमातृ छोटा भाई हुआ ४ जिसका बिभीषण ऐसा नाम हुआ जो विष्णु भक्तों में महाभगवत् विज्ञान निधान गिना जाता है ५ और जो पुत्र पौत्र सेवक राजा के रहे सोभी सबके सब महा घोर आ ।ा राक्षस होगये ६ सबके सब कामरूप बड़े मायाबीर अनेक जातिके महा कुटिल भयानक अज्ञानी हुये ७ कृपा शून्य बड़े हिंसक महापापी विश्वके दुखदाई सबके सब कुछ कहे नहीं जाते ॥ ८ ॥ दोहा ॥ यद्यपि महा पावन निर्मल परम अनूप महामुनि बर्य्य ब्रह्मपुत्र पुलस्त्य के कुलमे भी उत्पन्न हुये तथापि महीसुरों के शाप के बस सबके सब पाप की मूर्तिही हुये ॥ ६८ ॥

कीन्हविविधिविधि तपतिहुं भाई। परम उग्रसो बरणिन जाई १
गये निकट तपदेखि बिधाता । मांगहुवर प्रसन्न मैंताता २
करिविनती पद गहिदशसीशा । बोलाबचन सुनहुजगदीशा ३
हम काहू के मरहिं न मारे । बानर मनुज जाति द्वयवारे ४
एवमस्तु तुम बड़तप कीन्हा । मैंब्रह्मा मिलितिहि वरदीन्हा ५
पुनिप्रभुकुंभकर्णपहंगयऊ । तिहिविलोकिमन विस्मयभयऊ ६
जोयहखलनित करहिं अहारा । होइहिसब उजारसंसारा ७
सारद प्रेरि तासु मतिफेरी । मांगेसि नींद मास षटकेरी ८

दो० गयउ विभीषण पास प्रभु कहेउ पुत्र वर मांगु ।
तिहिमांगेउ भगवन्तपद कमलअमल अनुरागु ॥६९॥

जब तीनों भाइयों ने वनमें जाकर अनेक भांति का परम उग्रतप किया १ तब तो उनका महातप देखि कर उनके पास ब्रह्मा गये तहां प्रथम रावण के पास जाकर कहा कि हे तात मैं तुम पर प्रसन्न हूं तुम वरदान मांगो २ तब तो ब्रह्माजीकी बड़ी विनती करि औ चरण छूकर रावण बोला कि हे जगदीश्वर स्वामी हम किसी के मारे न मरैं ब्रह्माने कहा ऐसा नहीं होसक्ता है कहां तो मनुष्य और बानर द्वयजाति हमने छोड़दिये ३ । ४ तब ब्रह्मा ने एवमस्तु कहा कि तुमने बड़ा तप किया है जाउ मैंने तुमको ऐसाही वरदान दिया ऐसे मैंने और ब्रह्मा ने मिलिकर

हे पार्वती उसको वर दिया ५ फिरि ब्रह्मा कुम्भकर्ण के पास जब गये तो उस को देखतेही ब्रह्माको बड़ा विस्मयहुआ ६ किजो यहदुष्ट दिन प्रतिआहार करैगा तोसंपूर्ण संसार उजर हो जाइगा ७ यह बिचारि कर सरस्वती को प्रेरि कर उसकी मति फेरि दी सो उसहोने जागना और एक दिन सोवना मांगा चाहता रहै तिसके बिपरीति उसहोने की नींद मांगि ली ॥ ८ ॥ दोहा ॥ फिरि प्रभु विभीषण के पास गये और कहा कि हे पुत्र तुम भी अपनी रुचिका वर मांगिले तब उसने सर्वेश्वर भगवान् के चरणों का निर्मल अनुराग वर मांगि लिया ॥ ६९ ॥

तिनहिं देइवर ब्रह्म सिधाये । हर्षित ते अपने गृहआये १
मयतनुजा मंदोदरि नामा । परम सुंदरी नारि ललामा २
सोइमय दीन्ह रावणहिंआनी : भईसो यातुधान पतिरानी ३
हर्षितभयउ नारिभलिपाई । पुनिदोउ बंधु बिवाहेसि जाई ४
गिरित्रिकूटएकसिंधुमझारी । विधिनिर्मितदुर्गम अतिभारी ५
सोइमयदानवबहुरिसंवारा । कणकरचितमणिभवनअपारा ६
भोगावतिजसिअहिकुलवासा। अमरावतिजसिशक्रनिवासा ७
तिनतेअधिक रम्यअतिबंका । जगविख्यात नामतिहिलंका ८
दो० हरि प्रेरित जिहि कल्प जो यातुधान पतिहोइ ।
शूर प्रतापी अतुलबल दलसमेत बससोइ ॥ ७० ॥

इस प्रकार उन को वरदे कर ब्रह्मा तो अपने लोक को गये औते परम प्रसन्न अपने घर आये १ मय नाम दैत्य की बेटी मंदोदरी जिसका नाम परम सुन्दरी स्त्री जनों में रत्न रूपा सो मय ने रावण को विवाहिदी सोई यातुधान पति रावण की राज महिषी मुख्य पटरानी हुई २ । ३ ऐसी अति सुन्दर रानी को पाकररावण बड़ा हर्षित हुआ फिरि दोनों भाइयों का भी विवाह किया ४ त्रिकूट नाम एक समुद्र के भीतर पर्वत ब्रह्मा करिके रचित महा विस्तार और अति दुर्गम ५ उसको मयदानव ने फेरि करि संवारा जिसमें सुवर्ण की मणि जटित अपार भवन बनाये ६ जैसी परम रम्य नागकुल की राज धानी भोगावती और जैसी इन्द्र की निवासस्थली अमरावती तिन से भी अधिक रमणीक अति बांकी जग में अति प्रसिद्ध जिसकानाम लंका ॥ ८ ॥ दोहा ॥ भगवत इच्छा से जिस कल्पमें जो यातुधान पति होताहै बड़ा शूर बड़ा प्रतापी उस कल्पमें सोई अपनी सेना समेत उसमें निवास करताहै ॥ ७० ॥

रहेतहां निशिचर भट भारे । ते सब सुरनि समर संहारे १
अबतहं रहैं शक्रके प्रेरे । रक्षक कोटि यक्ष पतिकेरे २

दशमुखकतहुंखबरिअसिपाई । सेन साजि गढ़ घेरेसि जाई ३
देखि विकट भट बड़ि कटकाई । यक्ष जीव लै गये पराई ४
फिरिसबनगरदशानन देखा । गयउ शोचसुखभयउविशेषा ५
सुंदरसहज अगम अनुमानी । कीन्हि तहां रावण रजधानी ६
जसजिहियोगबांटि गृहदीन्हे । सुखीसकल रजनीचरकीन्हे ७
एक बार कुवेर पहं धावा । पुष्पक यान जीति लै आवा ८
दो० कौतुकहीं कैलाश पुनि लीन्हेसि जाइ उठाइ ।
मनहुं तौलि निज बाहुबल चला अमित सुखपाइ ॥७१॥

पूर्वकाल में तहां माली सुमाली मालिवान इत्यादि महा बलवान राक्षस रावणके माता मह रहते रहे सो विष्णु भगवान ने देवताओं की सहायता से लंकासे मारि कर निकासि दिये रहैं १ अब इस समय में तहां इन्द्र की आज्ञासे यक्षपति कुवेर के कोटिन रक्षक रहते रहे २ ये सब समाचार जब दशग्रीव रावण ने पाये तबतो सेना साथ लेकर गढ़ घेर लिया ३ यक्ष विचारे महा विकट योधाओं की बड़ी सेना देखि अपने प्राण लेकर भागि गये ४ तब फिरि रावण ने संपूर्ण नगर जाकर देखा महा सुखी होगया और संपूर्ण शोच जाता रहा ५ परम सुन्दर और सौभाविक अगम जानिकर रावण ने तहां अपनी राजधानी निरूपण की ६ जैसा घर जिसके निवाह के योग्य देखा सो तिसको देकर संपूर्ण राक्षस सुखी कर दिये ७ एक समय अपने द्विमातृ बड़े भाई यक्षराज कुवेर दिग्पाल पर चढ़ि गया उनसे पुष्पक विमान जीति कर ले आया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ फिरि खेलही करिके शिव समेत कैलाश पर्वत जाकर उठा लिया मानों अपनी भुजाओं का बल तौलिकर बड़ा हर्षित हो चला ॥ ७१ ॥

सुखसंपति सुत सेन सहाई । जय प्रताप बल बुद्धि बड़ाई १
नितनूतन सबबाढ़तजाहीं । जिमि प्रतिलाभलोभअधिकाहीं २
अतिबलकुंभकर्णअसभ्राता । जिहिकहंनहिंप्रतिभटजगजाता ३
करि मदपान सोव षटमासा । जागत होइ तिहूं पुर त्रासा ४
जो दिन प्रति अहार करुसोई । विश्व वेगि सब चौपट होई ५
समरधीर नहिंजाइबखाना । तिहि सम अमित बीरबलवाना ६
बारिद नाद जेठ सुततासू । भट मह प्रथम लीक जगजासू ७
जिहि न होइ रणसन्मुख कोई । सुरपुर नितहि परावनहोई ८

दो० कुमुख अकंपन कुलिश रद धूमकेतु अति काय ।
एक एक जग जीति शक ऐसे सुभट निकाय ॥ ७२ ॥

अबतौ सुख और संपदा पुत्र पौत्र सेना सहायक और विजय और प्रताप औरबल बुद्धि और बड़ाई १ नित्त नवीन सबके सब बढ़तेही जाते हैं जैसे लाभ प्रति लोभ बढ़ताही जाता है २ महाबली कुंभकर्ण सरीखा तौ जिसका छोटा भाई है जिसके लिये प्रति भट कहैं पटि तरिका युद्ध कर्त्ता तौ संसार में जन्माही नहीं है ३ इतनी कुशल है कि मद्य पान करि करि छः महीने भर सोवता है एक ही दिन के जागने में तीनों लोक भयभीत होजाते हैं ४ जो कहीं दिन दिन प्रति आहार करता तौ समस्त विश्व थोरेही दिनों में चौपट होजाता ५ युद्ध में परम धीर जिसका बल बखान नहीं किया जाता है ऐसा अकेला कुंभकर्णही नहीं किन्तु उसके समान और भी अनेक बीर महा बलवानहैं ६ मेघनाद नाम जिसका जेठापुत्रहै जिसकी योधाओं में प्रथम गणना है ७ रणमें जिसके सन्मुख तौ कोई होताही नहीं और देवलोकों में जिसके मारे नित्त भय हरिही रहती है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ फिरि ऐसा अकेला मेघनाद ही नहीं किंतु उसीके समान कुमुख है अकंपन है अतिकाय है वज्रदंत है धूमकेतु है जो एकही एक विश्व विजय कर सक्ता है इन्हीं के समान और भी अपार योधाओं के समूहों के समूह हैं ॥ ७२ ॥

कामरूप जानहिं सब माया । सपनेहुं जिनके धर्म न दाया १
दशमुख बैठ सभा एकबारा । देखिअमित आपन परिवारा २
सुतसमूह जन परिजन नाती । गनै को पार निशाचरजाती ३
सेनविलोकि सहजअभिमानी । बोलाबचनक्रोधमद सानी ४
सुनहु सकल रजनीचर यूथा । हमरे वैरी विबुध बरूथा ५
तेसन्मुख नहिं करहिं लराई । देखि सबलरिपु जाहिंपराई ६
तिनकर मरणएक विधिहोई । कहहुं बुझाइ सुनहुंसबसोई ७
द्विजभोजन मख होमसराधा । सबकी जाय करहु तुमबाधा ८

दो० क्षुधाछीन बल हीन सुर सहजहिं मिलिहैं आइ ।
तब मारिहौं कि छांड़िहौं भली भांति अपनाइ ॥ ७३ ॥

सबके सब कामरूप हैं और संपूर्ण राक्षसी माया को जानते हैं धर्म और दया तो जिनके स्वप्न में भी नहीं है १ एक समय रावण अपनी राज सभा में बैठातहां प्रथम तो अपना परिवारही अपार देखा २ पुत्र, पौत्रों के समूह सेवक कुटुम्ब जन और नाती कहें नतैत फिरि राक्षसों की अगणित जाति ता पीछे अपार सेना को

देखिकर स्वाभाविक अभिमानी रावण क्रोध मद के भरे बचन बोला ३।४ कि हे संपूर्ण राक्षसो सुनो हमारे वैरी समस्त देवता हैं ५ ते सन्मुख तो लराई नहीं करते हैं हमको प्रबल जानिकर भागि जाते हैं ६ उनका नाश एकही भांति होगा सो सुनो मूलंविष्णुर्हिदेवानांयत्रधर्मःसनातनः। यस्यचब्रह्मगोविप्रास्तपोयज्ञास्सदक्षिणाः १ तस्मात्सर्वात्मनासर्वे ब्राह्मणांवेदवादिनः। तपस्विनोयज्ञशीलान्गोश्चहन्योहविर्दुघाः २ ॥ विप्रागावश्चदेवाश्च तपःसत्यंदमःशमः। श्रद्धादयातितिक्षाच कृतवश्चहरेस्तनुः ३ ॥ सहिसर्वसुराध्यक्षोऽसुरद्विषगुहाशयः तन्मूलाःदेवतासर्वाः सेश्वराःसचतुर्मुखाः ४ अयंवै तद्वधोपायोयदृषीणांविहिंसनं अर्थात् सुनो इनसब देवताओं की मूल एक हमारापुरा वैरी विष्णु है उसी में सनातन धर्म रहते हैं और उसीके वेद गऊब्राह्मण तप और यज्ञ हैं १ तातें सब एक मन होकर जो ब्राह्मण वेदवादी और तपस्वी औरयज्ञशील और गऊ इन सबका बध करौ २ क्योंकि ब्राह्मण और गऊ और देवता तप सत्य दम शम श्रद्धा दया तितिक्षा कहें सहन शीलता और यज्ञ ये सब विष्णुहीके अंग हैं ३ सोई विष्णु समस्त देवताओंका स्वामीहै और हम असुरोंका वैरीहै और समस्त देवता शिव ब्रह्मा समेत उसी के आश्रित हैं ४ सबकी मूल विष्णु के बधका यही ठीक उपाय है कि ऋषियों को बध करौ ७ और ब्रह्म भोज यज्ञ होम श्राद्ध सब की बाधा करौ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इस प्रकार जब विष्णुहीके अंगभंग होजाइंगेतो मूल बिना वृक्ष कैसा तब तो समस्त देवता क्षुधा के मारे दूबरे महा दुर्बल आपही आमिलेगे तब चाहे मारूंगा चाहे भले प्रकार अपना करिके छोड़ दूंगा ॥ ७३ ॥

मेघनाद कहं पुनि हंकरावा । दीन्हि सीख बलवैर बढ़ावा १
यहिबिधिसबहीं आज्ञादीन्ही । आपनचलागदाकरलीन्ही २
चलत दशाननडोलति अवनी । गर्जतगर्भश्रवहिं सुररवनी ३
रावण आवत सुना सकोहा । देवनितके मेरुगिरि खोहा ४
दिक्पालन के लोक सुहाये । सूने सकल दशानन पाये ५
रण मदमत्तफिरै जगधावा । प्रतिभट खोजतकतहुं न पावा ६
रविशशिपवनवरुणधनुधारी। अग्निकालयमसबअधिकारी ७
आयसुकरहिंसकलभयभीता। नवहिंआइनितचरणविनीता ८

दो० भुज बल विश्व वश्य करि राखेसि कोउन स्वतंत्र ।
मंडलीक मणि रावण राज्य करै निज मंत्र ॥
देव यक्षगंधर्व नर किन्नर नाग कुमारि ।
जीतिबरी निज बाहुबल बहु सुंदर वर नारि ॥ ७४॥

तिस पीछे मेघनाद को बुलवाया और उसको इन्द्रादि देव मुख्यों के जीतने की शिक्षा दी और बलकहैं कटक साथकर दिया और वैर बढ़वादिया कि इनने हमारे पूर्वजों को लंका से निकासि दियाहै उसका वैर लेना है १ इस प्रकार सबको आज्ञा देकर विदा किया और पीछे से आप भी चलदिया गदा हाथ में लेली २ रावण के चलते पृथ्वी डोलती है और उसकी गर्ज्जना से देवांगनाओं के गर्भ स्रवतेहैं ३ इस प्रकार जब देवताओं ने रावण को सकोप आते सुना तबतो सभीत होकर सुमेरुकी कन्दरों में जा छिपे ४ दिक्पाल क हैं इन्द्र यम वरुण कुबेर अग्नि नैऋतु वायु रुद्र इन सबके सुन्दर लोक रावणने सूनेही पाये ५ रणके मदमें उनमत्त समस्त लोकोंमें दौड़ा फिरता है लरने को पटितर का योधा ढूंढ़ता है कहीं भी नहीं मिलता ६ सूर्य्य चन्द्रमा पवन वरुण कुबेर अग्नि काल यमराज इत्यादि समस्त अधिकारी महा भय भीत रावण की आज्ञा में रहते हैं और नित्त आकर महा नम्र उसके चरणोंको प्रणाम करते हैं ७ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ अपनी भुजों के बलसे समस्त विश्व वश करके कोई भीतौ स्वतंत्र नहीं रक्खा समस्त मंडली कों की शिरोमणि रावण अपनीही नीति पर राज्य करता है ॥ देवता अरु यक्ष गन्धर्व नर अर्थात् मनुष्य किन्नर नाग कुमारियोंको जो अति सुन्दरी हैं अपनी वाहु बलसे जीति करवर लेताभया ॥ ७४ ॥

इन्द्र जीसन जो कछुकहेउ । सोसब जनु प्रथमहिं करिरहेउ १
प्रथमहिंजिनकहंआयसुदीन्हा । तिनकरचरितसुनहुजोकीन्हा २
देखत भीम रूप सब पापी । निशिचर निकर देव परितापी ३
करहिं उपद्रव असुर निकाया । नानारूप धरहिं करिमाया ४
जेहिविधि होइधर्म निर्मूला । सोसब करहिं वेदप्रतिकूला ५
जिहिजिहिदेशधेनुद्विजपावहिं । नगरग्रामपुरआगिलगावहिं ६
शुभ आचरण कतहुं नहिंहोई । वेद विप्र गुरु मानन कोई ७
नहिं हरिभक्ति यज्ञ जप दाना । सपनेहु सुनिय न वेदपुराना ८
छं० जप योग विरागा तपमख भागा श्रवण सुनै दशसीशा ।
आपुन उठि धावै रहयन पावै धरि सब घालै खीशा ॥
अस भ्रष्टाचारा भा संसारा धर्म सुनिय नहिं काना ।
तिहि बहु विधि त्रासै देश निकासै जो कह वेद पुराना ॥
सो० वरणि न जाइ अनीति घोर निशाचर जो करहिं ।
हिंसापर अतिप्रीति तिनके पापहिं कवनिमिति ॥७५॥

मेघनाद ने तो अपना काम मानों पहिलेही कर लिया रहै १ जिनको प्रथम

आज्ञा दी रहे उनका चरित्र सुनो २ देखने में भयानक रूप बड़े पापी देव दुखदाई ३ राक्षसों के समूह महा उपद्रव करते हैं और अनेक रूप माया के धरते हैं ४ जिस प्रकार धर्म निर्मूल हो सोई वेद प्रतिकूल करते हैं ५ जिस जिस देश में गऊ ब्राह्मण पाते हैं उस नगर पुर ग्रामादिमें आगिलगा देतेहैं ६ श्राद्धादि शुभ आचरण कहीं भी नहीं होनेपाते वेद ब्राह्मण आचार्यों को कोई नहीं मानता ७ न तो कहीं भगवत् भक्ति है न यज्ञ जपदान है और वेद पुराणों का श्रवण तौ स्वप्न मेंभी नहीं होता है ॥ ८ ॥ क्योंकि शुभ कर्म्मों को जो रावण सुनि पाता है तो आपही जाकर खीशकर देता है ऐसा भ्रष्टाचार संसार होगया धर्म कहीं सुनाई भी नहीं परता जो कोई कहीं वेद पुराण कहता उसको बड़ादंड और देश निकारा देता है ॥ सोरठा ॥ ऐसी महाअनीति कही नहीं जाती जो महा घोर सक्षस करते हैं जिनकी हिंसा पर बड़ी प्रीति है उनके पापोंकी कौन गिनतीहै ॥ ७५ ॥

यह चौपाइयोंकी ७ सात पचीसी है वा १७५ चौपाइयोंमें बालकांडका पूर्वार्द्ध हुआ आगे इतनाहीं उत्तरार्द्ध होगा ॥

बाढे खल बहु चोर जुवारा । येलंपट पर धन पर दारा १
मानहिं मातुपिता नहिं देवा । साधुन सन करवावहिं सेवा २
जिनके ये आचरण भवानी । तेजानेहु निशिचर सम प्राणी ३
अतिशय देखिधर्मकी हानी । परम सभीत धरा अकुलानी ४
गिरितरु सिंधुभारनहिं मोही । जस मोहि गरुवएकपरद्रोही ५
सकलधर्म देखे विपरीता । कहिन सकति रावण भयभीता ६
धेनुरूप धरि धरणि विचारी । गई तहां जहं सुर मुनि झारी ७
निज संताप सुनायसि रोई । काहू तें कछु काज न होई ८
छं० सुर मुनि गंधर्वा मिलि कर सर्वा गे विरंचि के लोका ।
संग गोतनु धारी भूमि बिचारी परमविकल भयशोका ॥
ब्रह्मा सबजाना मन अनुमाना मोरहु कछु न बसाई ।
जाकरि तैं दासी सो अविनाशी हमरहु तोर सहाई ॥
सो० धरणि धरहु मन धीर कह विरंचि हरि पद सुमिरि ।
जानत जनकी पीर प्रभुभंजिहिं दारुण विपति ॥ १ ॥

॥ यहांसे रामावतार और शतपंच चौपाइयोंका प्रारंभहै जोअति मनोहर है ॥

ऐसे अनीति वान राजाको पाकर संसार में चोर ज्वारी महा दुष्टोंकी बाढ़ि हुई जो पराया धन पराई स्त्रियों को ताकते हैं १ न तो माता पिताको मानते हैं न

ईश्वरको जानते हैं सदा सेव्य भागवतों से उलटी अपनी सेवा कराते हैं २ जिन पापियोंके हे पार्वती ऐसे दुष्ट आचरण होवें उनको भी राक्षसों ही के समान जानना ३ जब ऐसा अधर्म प्राय संसार होगया और धर्मकी अतिही हानि हुई तबतो ऐसा देख कर महा भयभीत पृथ्वी घबरानी ४ कि मेरेको न तो ऐसे हिमालय इत्यादि पर्वत भारीहैं न दंडकादि बन भारी हैं न समुद्र भारी हैं जैसा एक परद्रोही कहैं भगवद्द्रोही भारी है प्रपन्न गीतायां शेषउवाच । नभूमि पर्वतानांच नसेभारोवनस्पति विष्णुभक्तिविहीनस्य तस्यभारोसदामम ५ समस्त धर्म पृथ्वी ने उलटे अर्थात् घोर कलियुगके समान वेद विपरीत देखे और रावण के भयके मारे महा सभीत कुछ कह नहीं सकती है ६ तबतो गऊका रूप धारण करिके पृथ्वी बिचारी जहां देव मुनीश्वर छिपे बैठे हैं तहां गई और रोकर अपना दुःख उनको सुनाया जब किसीसे कुछ काम न हुआ ७ ॥ ८ ॥ छन्दः ॥ तबतौ समस्त देवता मुनि गन्धर्वादि शर्बकहैं महादेवको साथ लेकर ब्रह्मा जगत्पितामहके पास गये साथमें धेनुरूपा विचारी पृथ्वी महा शोकाकुल भयभीत ब्रह्माने भी अपना पौरुष न जानि कर पृथ्वी को समाधान किया और कहा कि जिस ईश्वरकी तू दासी है सो अविनाशी है हमारा और तेरा सोई विष्णु भगवान सहायक है ॥ सो० ॥ ताते हे पृथ्वी हृदयमें धीर धरिके उसी विष्णु भगवानके चरणार विंदोंका स्मरण करो स्वामी अपने दासोंकी पीड़ाको जानते हैं सोई इस दारुण विपत्ति का नाश करेंगे ॥ १ ॥

बैठे सुर सब करहिंविचारा । कहंपाइयप्रभु करिय पुकारा १
पुर बैकुंठ जान कह कोई । कोउ कह पयनिधिबस प्रभु सोई २
तिहिसमाजगिरिजा मैं रहेऊं । अवसरपायबचनअसकहेऊं ३
जाके हृदय भक्ति जहं प्रीती । प्रभु तहं प्रगट सदा यहरीती ४
हरि व्यापक सर्वत्र समाना । प्रेमतें प्रगट होहिं मैंजाना ५
देशकालदिशिविदिशहुमाहीं कहहु सो कहां जहांप्रभुनाहीं ६
अगजगमयसबरहितविरागी । प्रेमतेंप्रगटहोहिंजिमिआगी ७
मोर बचनसबके मन माना । साधुसाधु कहि ब्रह्मबखाना ८
दो० सुनि विरंचि मनहर्ष अति पुलकि नयन भरिनीर ।
अस्तुति करत जोरिकर सावधान मति धीर ॥ २ ॥

अब संपूर्ण देवता बैठे बैठे बिचार करते हैं कि कहां चलैं कहां स्वामी मिलैं कहां पुकार करैं १ किसीने कहा कि विष्णुभगवान वैकुंठ निवासीहैं तहां को चलो किसीने कहा कि सोई विष्णु भगवान पृथिवीही पर क्षीर सागर में निवास करते हैं तहीं चलो २ उस समाज में हे पार्वती हम भी रहे जब सब अपनी अपनी कहि चुके

तब अवसर पाकर मैंने यह कहा ३ कि सुनो जिसके हृदयमें भगवत भक्ति है और जहां जिसकी प्रीति है तिसके लिये तहीं स्वामी प्रगट होते हैं यह सनातन रीतिहै क्योंकि विष्णु भगवान तो विश्व व्यापक सर्वत्र समानहीं हैं भक्तों के प्रेम से प्रगट होतेहैं यह मैं जानताहूं ४ । ५ कहो सो कौनसा देशहै और कौनसा समय है कौनसी दिशा और विदिशा है जब जहां विष्णु भगवान नहींहैं ६ विष्णु भगवान तो अग कहें स्थावर जग कहें जंगम सर्व व्यापकहैं और सबते भिन्नहैं प्रेमको रगरते प्रगटहोते हैं जैसे काष्ठकी रगरते अग्नि सर्वत्र प्रगट होतीहै । श्लोक । जले विष्णुस्थलेविष्णु विष्णुः पर्वतमस्तके ज्वालमालाकुलेविष्णुः सर्वविष्णुमयंजगत् ॥ ७ ॥ यह मेरा वचन सुनिकरि सबने मानि लिया और ब्रह्माने भी साधु साधु कहिकर सराहा ८ ॥ दोहा ॥ तबतो मेराही वचन प्रमाण करिके ब्रह्मा अति हर्ष पाकर प्रेम पुलकावली युक्त नेत्रोंमें स्नेह जल भरि कर बड़ी सावधानीसे महा मति धीर हाथ जोरि कर तहीं विष्णुभगवान की स्तुति करने लगे ॥ २ ॥

छं० जयजयसुरनायकजनसुखदायकप्रणतपालभगवन्ता ।
गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिंधुसुताप्रियकंता ॥
पालन सुरधरणी अद्भुत करणी मर्म न जानहिकोई ।
जोसहज कृपाला दीनदयाला करौ अनुग्रह सोई ॥ १ ॥
जयजय अविनाशी सबघटबासी व्यापक परमानन्दा ।
अविगत गोतीताचरित पुनीतामाया रहितमुकुन्दा ॥
जिहिलागिविरागीअतिअनुरागीविगतमोह मुनिवृन्दा ।
निशिबासरध्यावहिंगुणगणगावहिंजयतिसच्चिदानन्दा २
जिहिं सृष्टिउपाई त्रिविध बनाई संगसहायन दूजा ।
सोकरहु अघारी चिंतहमारी जानहिं भक्तिनपूजा ॥
जोभवभय भंजन जनमन रंजनगंजन विपतिबरूथा ।
मनबचक्रमबाणीछांडिसयानीशरणसकलसुरयूथा ॥ ३ ॥
शारदश्रुतिशेषाऋषय अशेषा जाकहं कोउनहिंजाना ।
जिहि दीनपियारे वेदपुकारे द्रवहुसो श्रीभगवाना ॥
भववारिधि मन्दरसबविधिसुन्दरगुणमन्दिरसुखपुंजा ।
मुनिसिद्धसकलसुरपरमभयातुरनमतनाथपदकंजा ॥ ४ ॥

दो० जानिसभयसुर भूमिसुनि बचन समेत सनेह।
गगनागिरा गंभीर भइ हरणिशोक संदेह॥

सर्वेश्वर हे स्वामी आपकी जय होहु हमसब देवताओं के मुख्य नायक आपही हो मैं और इन्द्र रुद्र तो सब उपनायक हैं जो मुख्य नायक हैं सोई सब का ठीक नायक होताहै क्योंकि आपही का वचन महा भारत में विद्यमान है रुद्रसमाश्रितो देवा: रुद्रोब्रह्माणमाश्रित: ब्रह्माममाश्रितोनित्यं नाहंकश्चिदुपाश्रित: अर्त्थात् संपूर्ण देवता रुद्र के आश्रितहैं और रुद्र ब्रह्मा के आश्रित हैं और ब्रह्मा मेरे आश्रित हैं मैं किसीके आश्रित नहींहूं याही ते हेस्वामी संपूर्ण देवताओं ने जाकर "रुद्रका आश्रय लिया रुद्रने सब देवताओं समेत मेरा आश्रय लिया मैंने उन सब समेत आपका आश्रय लिया है तातें आपही सबके स्वामी हो और ये सब दुखी हैं आप जन सुखदायक हो प्रणतपाल हो भगबान हो गऊ ब्राह्मणों के हितकारी हो असुरन के अरि वैरी हो हे लक्ष्मीपति स्वामी हम सबके सब आपकी जयमनाते हैं आपही अपनी अद्भुत करणी से देवताओं और पृथ्वी का पालन करते हो जिस करणी का कोई भी मर्म नहीं जान सक्ता है जो आप स्वभावही तें कृपालु और दीनदयाल हो सोई स्वामी इन परम आरतों पर अनुग्रह करो १ फिरि जो आप अविनाशीहो और सर्व घटबासी हो विश्व व्यापक हो आनन्द निधान हो तिन तुम्हारी जयरहै आप अव्यक्त हो समस्त इन्द्रियों से अग्राह्य हो जगत् पावन आपके संपूर्ण चरित्रहैं माया रहित कहैं अविद्यालेश वर्जित हो समस्त समाश्रितों को मुक्ति भुक्ति प्रदायक हो जिन तुम्हारे ऊपर परम वैरागी अति अनुरागी हैं जो सर्व संशय रहित मुनि वृन्द हैं सो अहर्निशि आपको ध्यावते हैं और आपही के गुण गणों को गावते हैं तिन आप सच्चिदानन्द स्वामी की सदा जय रहै २ जिसने यह सृष्टि अपनेही उपाय करिके तीनि प्रकारकी अर्त्थात् माया जीवकाल अथवा देशकाल वस्तु वा त्रिगुणात्मक बनाईहै बिना दूसरेकी सहायताके अर्त्थात् आपही रचताहै आपही पालताहै आपही संहार करता है जो कर्त्ता पालक संहर्त्ता अर्त्थात् जगज्जन्मादिकादि कारण है सोई अनघकहैं जिसको शुभा शुभा कर्म स्पर्श नहीं करतेहैं सोई स्वामी हम सबकी चिन्ता करो हमतो आपकी भक्ति पूजा कुछभी नहीं जानते हैं जो अपनी अहेतु की कृपाके कटाक्ष से जीवों को अपनी ओर लगा कर संसार से उद्धार करता है और मुनि जनों के मनका आनंददाता है और सदैव मत्स्य कूर्म वराहादि रूप धारण करिके अपने आश्रितों की विपत्ति निवारण करता है तिसही ईश्वर के तन मन बचन से अपना पुरुषार्थ छोड़कर हम सब देवता शरण हैं ३ जिस स्वामी की महिमा के समुद्रके शीकरके अनुमात्र को भी सरस्वती वेद शेषादि समस्त ऋषि नहीं जानते हैं जिसको दीन कहैं उपाय शून्य अकिंचन् परम प्यारे हैंऐसे वेद कहते हैं सो श्रीपति भगवान हमारे पर कृपा करो जो भवसागर को मंदराचल के समान मथन कर्त्ता है औरसब

भांति सुन्दर समस्त कल्याण गुणों का मंदिर आनन्द राशि है तिस विष्णु भगवान के चरण कमल को हम संपूर्ण मुनिसिद्ध और समस्तदेवता परम भय व्याकुल प्रणाम करते हैं कि आपके बिना हमारा और कोई रक्षक नाथ नहीं है ४ यह चतुर्मुख ब्रह्माने चारि छन्दों से स्तुति की है ॥ दोहा इसप्रकार सर्वेश्वर स्वामी ने सप्रेम वचनसुनि और पृथिवी समेत सब देवताओं को रावणसे भयभीत जाना तबतौ आकाश में परम गंभीर शोक संदेह दूरि करती हुई ब्रह्म वाणी हुई २ इस परमोत्तम ब्रह्म स्तुति के प्रकरण के देखने से स्पष्ट जाना जाता है कि ब्रह्म नारायण बासुदेव हरि विष्णु राम कृष्ण एकही परमेश्वर के नाम तुलसीदास जी के अभिमत हैं क्योंकि इस में विष्णुही को जगज्जन्मादि कारण और परात्पर ब्रह्म लिखा है और विष्णु हीके रामकृष्णा वतार सर्व शास्त्र विख्यात हैं ॥

जनिडरपहु मुनि सिद्ध सुरेशा । तुमहिंलागि धरिहौं नर वेषा१
अंशन सहित मनुज अवतारा । लेइहौं दिनकर वंश उदारा २
कश्यप अदिति महातपकीन्हा । तिन कहं मैं पूरब बरदीन्हा ३
ते दशरथ कौशल्या रूपा । कोशलपुरी प्रगट नरभूपा ४
तिनके गृह अवतरिहौं जाई । रघुकुल तिलक सुचारहु भाई५
नारद बचन सत्य सब करिहौं । परम शक्ति समेत अवतरिहौं६
हरिहौं सकलभूमि गरुवाई । निर्भय होहु देव समुदाई ७
गगन ब्रह्म बाणी सुनिकाना । तुरत फिरे सुर हृदय जुड़ाना८
दो० निजलोकहि विरंचिगये देवनि यही सिखाइ ।
बानर तनु धरि धरणि महं हरि पदसेवहु जाइ ॥ ३ ॥

मतिभय करौ हे मुनीश्वरौ हे सिद्धेश्वरौ हे सुरेश्वरौ मैं तुम्हारे निमित्त मनुष्य वेषधारण करूंगा १ अपने अंगों समेत मनुष्यावतार परम उदार सूर्य्यवंश में लूंगा २ कश्यप और अदितिने जो महा तप किया है तिन को मैं पहलेही वर दे चुकाहूं ३ ते दोऊ दशरथ कौशल्या रूप कोशल पुरी श्री अयोध्या में प्रत्यक्ष नरराज विद्यमान हैं ४ तिन के घर जन्म लेकर अवतरौंगा समस्त रघुकुल के तिलक चतुर्मूर्त्ति चतुर्व्यूहावतार परम सुन्दर चारो भाई होंगे ५ नारद के शाप के संपूर्ण बचन सत्य करूंगा अपनी परम शक्ति जगत पुरुषकार रूपा लक्ष्मी समेत अवतरौंगा ६ और इस पृथ्वी का समस्त दुष्ट भार नाशकर दूंगा हे देव समुदाय तुम सब निर्भय रहौ कुछ भय मति करौ ७ ऐसी आकाश में ब्रह्मवाणी कानों से सुनिकर सब तहांते फिरे और पृथ्वी समेत अशोच हुये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तबतौ ब्रह्मा भी देवताओं को यह

आज्ञा देकर अपने लोक को गये कि तुम यथा योग्य पृथ्वी पर बानर रूप धरि के विष्णु भगवान के चरणों का सेवन करो ॥ ३ ॥

गये देवसब निजनिजधामा । भूमि सहितमन लहिविश्रामा १
जोकछु आयसु ब्रह्मादीन्हा । हर्षे देव विलम्ब न कीन्हा २
बनचर देहधरी क्षितिमाहीं । अतुलितबल प्रतापतिनपाहीं ३
गिरितरुनखआयुधसबवीरा । हरिमारगचितवहिंमतिधीरा ४
गिरिकाननजहंतहंभरिपूरी । रहेनिजनिजअनीकरुचिरूरी ५
यहसबरुचिर चरितमैंभाषा । अबसोसुनहुजोबीचहिंराखा ६
अवधपुरी रघुकुलमणिराऊ । वेदविदित दशरथ तेहिनाऊ ७
धर्मधुरंधर गुणनिधि ज्ञानी । हृदय भक्ति मतिशारंगपानी ८
दो० कौशल्यादि नारि प्रिय सब आचरण पुनीत ।
पति अनुकूल प्रेम दृढ़हरि पद कमल विनीत ॥ ४ ॥

तबतो समस्त देवता ब्रह्मा की आज्ञा पाकर अपने अपने लोकों को गये और पृथवी समेत सब के मन को विश्राम होगया १ जो आज्ञा उन को ब्रह्मा देगयेरहें उसके करने में किसीने भी विलम्ब नहीं किया २ कि उसी क्षण उन्होंने बानरों की देह धारण करली जिनके शरीरों में अतुल बल और प्रताप देखि परता है ३ गिरि कहैं परवतों के शिखर और बृक्ष और नखहीहैं आयुध जिनके इस प्रकार बड़े मति धीर आपे को छिपाये स्वामी हरि के आगमन का मारग देखते हैं ४ पर्वतों में बनों में जहं तहं अपनी अपनी सेना बना कर रुचि पूर्वक निवास करते हुये ५ यह सब सुन्दर चरित्र तो मैंने कहा अबसो सुनों जो बीचही में छांड़ि दिया ६ श्री अयोध्या नाम पुरी में रघुकुल की मणि एक राजा वेदोंमें बिख्यात जिसका दशरथ ऐसा नाम ७ बड़ा धर्म धुरंधर सद्गुण सागर परम ज्ञानी शारंगपाणि कहैं अपने कुलदेव श्री रंग नारायण की हृदय में भक्ति ८ ॥ दोहा ॥ कौशल्यादिक जो परम प्यारी रानी हैं तिन सबके समस्त आचरण पवित्र हैं और सबकी सब पतिके प्रेममें दृढ़हैं और हरि चरणार विन्द परायण हैं ॥ ४ ॥

एक बार भूपति मन माहीं । भई गलानि मोरे सुतनाहीं १
गुरुगृहगयेतुरतमहिपाला । चरणबन्दिकरिविनयविशाला २
निजदुखसुखसबगुरुहिसुनावा।कहिवशिष्ठबहुविधिसमुझावा ३
धरहुधीरहोइहैं सुतचारी । त्रिभुवन विदित भक्तभयहारी ४

शृंगी ऋषिहिवशिष्ठबुलावा । पुत्र काम्य शुभ यज्ञकरावा ५
भक्तिसहित मुनिआहुतिदीन्हे । प्रगटे अग्निचारुकर लीन्हे६
जोवशिष्ठ कछुहृदय विचारा । सकलकाज भासिद्धतुम्हारा७
यहहवि बांटि देहुनृप जाई । यथायोग जिहि भागबनाई ८
दो० तब अदृश्य पावक भये सकल सभहि समुझाइ ।
परमानन्द मगन नृप हर्ष न हृदय समाइ ॥ ५ ॥

एक समय दैवेच्छासे राजा के मनमें यह ग्लानि हुई कि मेरा चौथा पन आय पहुंचा और मैं अनपत्यहूंमेरे कोई राजधनी पुत्र न हुआ १ फिरि यह बातविचारिकर कि हमारे कुल गुरू वशिष्ठ जी बड़े समर्थ हैं जो सदैव इच्छाकु से लेकर अब तक हमारे कुलकी वृद्धि औ रक्षा करते आयेहैं तत्कालही उन के घर चला गया जाकर उनके चरणों को दंडवत् कर बड़ी बिनती की २ और अपने अनपत्य होनेका दुख और चक्रवर्त्ती राज्यका सुख सोभी अनपत्य होनेसे दुखहीकेसमान निवेदनकिया तब तौवशिष्ठ ने राजाको समाधान करके सब भांतिसे समुझाया और कहा ३ किहे राजा धीरज करौऔर आनन्द मनऔ तुम्हारे तौ चारिपुत्र होंगे तीनों लोक में विख्यात भक्त भय हरण सर्वेश्वर स्वयं हरि चतुर व्यूहावतार लेकर अवतरेंगे ४ यह कहि कर राजा के मित्र लोमपाद के घर से शृङ्गीऋषि को बुलाया और उनसे पुत्र काम्य नाम यज्ञका प्रारम्भ करवाया ५ जब शृङ्गीऋषि ने भक्तिभाव समेत आहुति दियेतब तौ साक्षात् अग्नि देव चरू कहैं पुरोडास हवि हाथ में लिये यज्ञ कुंडसे प्रगट हुये और कहा ६ कि हे राजा जो कुछ तुम्हारे गुरू वशिष्ठ ने तुम्हारे लिये विचारा है सो संपूर्ण कार्य्य तुम्हारा सिद्धहोगया ७ अब तुम इस हविको अपनी मुख्यरानियोंको यथा योग्य चारि भाग करिके बांटिदो ८ ॥ दोहा ॥ यह कहिकर अग्नि देव अदृश्य होगये संपूर्ण सभा को समुझा कर और राजा परमानन्द में मगनहोगया ॥ ५ ॥

तबहिं राउप्रिय नारिबुलाईं । कौशल्यादि तहां चलिआईं १
अर्द्धभाग कौशल्यहि दीन्हा । उभय भागआधे करकीन्हा २
कैकेयी कहंसो नृपदयऊ । रहासो उभयभाग पुनिभयऊ ३
कौशल्या कैकेयी हाथधरि । दीन्हसुमित्रहिमनप्रसन्नकरि ४
यहिविधि गर्भसहित सबनारी । भईंहृदय हर्षित सुखभारी ५
जादिनतें हरि गर्भहि आये । सकल लोकसुख संपतिछाये६
मंदिरमहं राजहिं सबरानी । शोभाशील तेजकी खानी ७
सुखयुतकछुककालचलिगयऊ।जिहिप्रभुप्रगटसोअवसरभयऊ

दो० योगलग्न गृहवार तिथि सकल भये अनुकूल ।
चरअरु अचरहर्ष युत राम जन्मसुख मूल ॥ ६ ॥

तबतो राजा ने अपनी अति प्यारी रानी बुलाईं सो कौशल्या कैकेयी सुमित्रा यज्ञशाला में आईं १ राजा ने उस हविका आधा भाग तो अपनी राजमहिषी कौशल्या को दिया और आधे को द्वय भाग किया २ उस में से एक भाग कैकेयी को दिया और एक को फिर द्वय भाग किया ३ सो दोनों भाग एक एक कौशल्या और कैकेयी के हाथ रखकर बड़ी प्रसन्नता से सुमित्रा को देदिये ४ इस प्रकार तीनों रानी गर्भवती होकर महाभारी सुख से प्रसन्न हृदय हुईं ५ जा दिनतें विष्णु भगवान गर्भगत हुये ताही दिन से समस्त लोक सुखसंपति से छाइ गये ६ राजमंदिरसें तीनों रानी विराजती हैं शोभा और शील और तेज की खानि दृष्टि परती हैं ७ सुख संयुक्त कुछ काल बीता अर्थात् ज्येष्ठ शुक्ल दशमी चित्रा नक्षत्र से चैत्र शुक्ल नवमी पुनर्वसु नक्षत्र तक परिपूर्ण दशमास भासते हैं जिस समय में काला कल्प प्रति प्रभु का अवतार होता है सो समय आगया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तिस समय तिथिवार नक्षत्र योग लग्न समस्त गृह अनुकूल होगाये और चराचर जीव हर्षवंत होगये क्योंकि रामजन्म सुख का तो मूलही है ॥ ६ ॥

नवमी तिथिमधु मासपुनीता । शुक्लपक्ष अभिजित हरिप्रीता १
मध्यदिवस अतिशीत न घामा । पावन काललोक विश्रामा २
शीतल मंदसुरभि बहबाऊ । हर्षित सुरसंतन मन चाऊ ३
बनकुसुमितगिरिगणमणियारा । श्रवहिं सकलसरितामृतधारा ४
सो अवसर विरंचि जबजाना । चलेसकल सुरसाजि विमाना ५
गगनविमल संकुल सुरयूथा । गावहिं गुणगंधर्व बरूथा ६
वर्षहिं सुमनसुअंजलि साजी । गहगहि गगन दुंदुभीबाजी ७
अस्तुति करहिं नागमुनि देवा । बहुविधि लावहिंनिजनिजसेवा ८

दो० सुरसमूह विनतीकरि पहुंचे निजनिज धाम ।
जगनिवास प्रभुप्रगटभे अखिल लोक विश्राम ॥ ७ ॥

नवमी तो तिथि है और सुन्दर चैत्रमास है शुक्लपक्ष अभि जित मुहूर्त मध्यान्ह बेला न तो अति शीत है न अति घाम है महा पावन ऋतु राज वसंत काल समस्त

लोक का विश्रामदायक जैसा सर्व सम्मत है॥ मेषे चैत्रे शुक्लपक्षे नवम्यां च पुनर्वसौ। मध्यान्हे कर्कटेलग्ने जातो रामःस्वयंहरिः ॥

अथ जन्म कुण्डलिका ॥

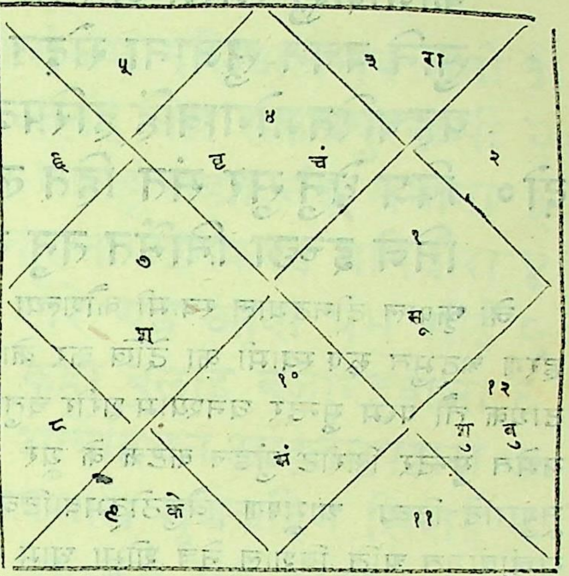

१।२ शीतल मंद सुगन्धित पवन बहती है देवता सब हर्षित हैं भगवत भक्तों के मनको बड़ा उत्साह है ३ संपूर्ण वनों के समस्त वृक्ष पुष्पित हैं और पर्वतों में मणि की खानि खुलिगईं संपूर्ण नदी अमृत धार से बहती हैं ४ सो ऐसा समयजब ब्रह्मा ने जाना तबतौ संपूर्ण देवताओं समेत श्री अयोध्या को चले ५ अब तौ निर्मल जो सुन्दरआकाश है सो देवताओंके विमानों के समूहों से भरिगया गन्धर्वों के समूह भगवतगुणों को गाते हैं ६ और देवता अंजलि भरि२ के फूलों की वर्षा करते हैं और अति गहगही दुन्दुभी बजाते हैं ७ और संपूर्ण नाग मुनि देवता भगवान की गर्भस्तुतिकरते हैं और अपनी अपनी सेवा जनावते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इस प्रकार जब देवताओं के समूह स्तुति करिकरि के अपने अपने धाम को गये तबतौ जगन्निवास अर्थात् नारायण स्वामी समस्त अंडकटाहों के आधार कौशल्यारूपी पूर्वदिशा से श्री रामचन्द्रमा होकर प्रकट हुये ॥ ९ ॥

छं० भये प्रगट कृपाला दीनदयालाकौशल्या हितकारी ।
हर्षित महतारी मुनिमन हारी अद्भुत रूप निहारी ॥
लोचन अभिरामा तनघनश्यामा निजआयुध भुजचारी।
भूषण बनमाला नयन विशाला शोभासिंधु खरारी॥१॥
कहदोउ करजोरीअस्तुति तोरी किहिविधि करौअनंता।
माया गुण ज्ञाना तीत अमाना वेद पुराण भनंता ।
करुणासुखसागरसबगुणआगरजिहिगावहिंश्रुतिसंता॥
सोमम हितलागी जनअनुरागी भयेप्रकटश्री कंता॥२॥
ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोमरोम प्रति वेद कहै ।
मम उरसोवासीयह उपहासीसुनतधीर मतिथिर नरहै॥
उपजाजबज्ञाना प्रभुमुसुकानाचरितबहुतविधिकीन्हचहै।
कहि कथा सुनाईमातुबुझाई जिहि प्रकारसुप्रेमलहै ॥३॥

माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा।
कीजैशिशु लीला अतिप्रियशीला यहसुखपरमअनूपा॥
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा।
यहचरितजोगावहिं हरिपद पावहिंतेन परैंभवकूपा॥४॥

दो० विप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुण गो पार॥

जो कृपाल दीनदयाल स्वामी कौशल्या के हितकारी प्रकट हुये सोई मुनि मन हरण अद्भुत रूप स्वामी को देखि कर कोशल्या हर्षित होगई १ नेत्रों का आनन्द दायक तौ परम सुन्दर घनश्याम शरीर चतुर्भुज शंख चक्र गदा पद्म अपने आयुधों समेत सुन्दर किरीट कुंडल कटक केयूर मुद्रिकाहार कौस्तुभमणि कटिकिंकिणी नूपुरादि दिव्य आभूषण वैकुंठोद्भवादिव्य तुलसी के पत्र पुष्पों की बन माला राजीवायत अति विशाल नेत्र शोभा धाम खरके वधकरने हारे १ तब तौ कौशल्या दोनों हाथ जोरिकर बोली कि हे अनन्त स्वामी मैं अल्प मति स्त्री आपकी कैसे स्तुति कर सकती हूं आपको तौ माया के तीनों गुण और ज्ञानसे परे और अमान कहें प्रमाण रहित, वेदपुराण सबकहतेहैं फिरि जिन तुमको करुणा और सुखकेसमुद्र और सब गुणों में सबसे अधिक श्रुति और संत कहते हैं सो अपनी दयालुता से मेरे हित के निमित्त आप साक्षात् श्रीपति स्वयंविष्णु भगवान प्रगट हुये हो २ जिन तुम्हारी आज्ञा से तुम्हारीही माया के रचित अनन्त कोटि ब्रह्मांडों के समूह आप के रोम रोम प्रति वेद कहते हैं सो ऐसा बड़ा ईश्वर मेरे उदर में वास करै यहतौ उपहासही है इसको सुनिकर कौन से बड़े धीर की बुद्धि थिर रह सकती है जब ऐसा ज्ञान कौशल्या को हुआ तब तौ स्वामी मुसुकाये क्योंकि स्वामी को तौ अनेक चरित्र करने हैं संपूर्ण कथा पूर्व जन्म की कहिकर माताको समझादिया जिस प्रकार से पुत्र भाव का प्रेम प्राप्त होजावै ३ तबतौ माता फेरि बोली सो ज्ञान बुद्धि चलि गई कि हे तात अब तुम इस रूप को तौ गुप्त करौ जो मेरे ऊपर कृपा करीहै तौ बाल लीला कीजिये यह परम अनूप आनन्द है ऐसे माता के बचन सुनिकर सुजान शिरोमणि भगवान देवेश्वरेश्वर बाल होकर रुदन करने लगे इस स्वामी के जन्म चरित्र को जो कोई कहते सुनते हैं सोविष्णु पद वैकुंठ अपुनर्भवपाते हैं॥ गीतायां॥ जन्मकर्मचमेदिव्यंयोमांवेत्तितत्वतः। त्यक्त्वादेहंपुनर्जन्म नैतिमामेतिसोर्जुन। अर्त्थात् मेरे दिव्य जन्म और दिव्यकर्मों को और यथार्थ मेरे को जो जानता है सो इस पंचभौतिक देह को छोड़कर फिरि जन्म नहीं पाता है क्योंकि मेरे को प्राप्त होता है ४ यह चारि छंदों से चतुर्व्यूहावतार चतुर्भुज स्वामी की कौशल्या ने स्तुति करी॥ दोहा॥ ब्राह्मण और धेनु कहें गऊ वा पृथ्वी और देवता और मुख्य अपने भक्त

जनों के निमित्त स्वामी मनुष्यावतार धारण किया अपनी इच्छा मय शरीर निर्माण किया माया के गुण और मायक इन्द्रियों से परे हैं ॥ ० ॥

सुनिशिशुरुदनपरम प्रियबाणी।संभ्रम चलिआईसब रानी १
हर्षित जहं तहं धाईं दासी । आनंद मग्न सकलपुरवासी २
दशरथ पुत्रजन्म सुनि काना । मानहुं ब्रह्मा नंद समाना ३
परम प्रेममन पुलकशरीरा । चाहत उठनकरत मतिधीरा ४
जाकर नाम सुनत शुभहोई । मोरे गृह आवा प्रभु सोई ५
परमा नंद पूरि मन राजा । कहा बुलाइ बजावहुबाजा ६
गुरुवशिष्ठ कहं गयउहंकारा । आयेद्विजन सहितनृपद्वारा ७
अनुपमबालक देखिनजाई । रूपराशि गुणकहिन सिराई ८
दो० तब नांदीमुख श्राद्धकरि जातकर्म सब कीन्ह ।
हाटक धेनु वसन मणि नृपविप्रन कहं दीन्ह ॥ ८ ॥

बालक के रुदन की परम प्यारी बाणी सुनतेही तो संपूर्ण रानी कौशल्या के मंदिर में अति उत्साह और संदेह समेत इकाइक अति शीघ्र दौड़ी आईं १ औरबड़ी हर्षवन्ती सहस्रों दासी जाके ताकेघर मंगल समाचारसुनाने को दौड़ींसो समस्तपुरवासी राजधनी राजपुत्र का जन्म सुनतेही आनन्द समुद्र में मग्न होगये २ और श्री महाराज दशरथ तो पुत्र जन्म सुनतेही ब्रह्मानन्दही में समागये ३ अत्यन्त उमगा जो मन में प्रेमता करिके पुलकाय मानशरीर देखने को उठि दौराही चाहतेहैं लोकलाज से मन को रोंकते हैं ४ ऐसे प्रेम की अधिकता से राजा को जानि परा कि जिसके नाम के सुनतेही जीवों का परम श्रेय कल्याण होता है उसी प्रभुने मेरे घरमें जन्म लियाहै ॥ श्लोक धन्याऽयोध्यादशरथनृपस्साचमाताचधन्या धन्योवंशोरघुकुल भुवियत्र रामावतार: धन्याबाणीकविवरमुखे रामनामप्रपन्ना धन्योलोकेप्रतिदिन मसौ रामनाम श्रृणोति ५ तबतो परमानन्द में पूरित मन होकर राजा ने बजंत्रियों को बुलाकर कहाकि हां गहगहे बाजे बजैं ६ और वशिष्ठकुलगुरूको बुलावागयासो ब्राह्मणों समेतराजा के राजदर्बारमेंआये ७ अनूपमबालक है जिसपर दृष्टिनहीं ठहरतीसहस्रादित्यतेजस: वा रविशतकोटिप्रकाश रूप की राशि जिसके गुण कहे नहीं जाते हैं ८ ॥ दोहा ॥ तब तो नान्दी मुख श्राद्ध करिके फिरि संपूर्ण जात कर्म किया और सुवर्ण गऊ वस्त्र मणि राजा ने ब्राह्मणों को दिये ॥ ८ ॥

ध्वज पताकतोरणपुरछावा । कहिनजाइ जिहिभांतिबनावा १
सुमन वृष्टि अंबर ते होई । ब्रह्मा नन्द मग्न सब कोई २

वृन्दवृन्द मिलि चलींलुगाईं । सहजशृंगार किये उठिधाईं ३
कनककलशमंगल भरि थारा । गावति पैठहिं राजदुआरा ४
करिआरती निछावरि करहीं । बारबार शिशुचरणनिपरहीं ५
मागध सूत बन्दिगणगायक । पावन यशगावहिंरघुनायक ६
सर्वस दान दीन्हं सबकाहू । जिहिं पावाराखा नहिंताहू ७
मृगमदचन्दनकुंकुमकीचा । मचीसकलवीथिन्ह बिचबीचा ८
दो० गृहगृह बाज बधाव पुर प्रगट भये सुख कन्द ।
हर्षवंत सब जहंतहं नगर नारि नरवृन्द ॥ ९ ॥

ध्वजा पताका बंदनवारों से समस्त पुर घरघर छवाया गया उस समय के नगर का
बनाव कहा नहीं जाताहै १ अम्बर आकाश से फूलोंकी वर्षा होती है और ब्रह्मानन्द
में समस्त पुरवासी मग्न हैं २ पुर वासिनी स्त्रियों के वृन्दों के वृन्द मिलि मिलि
कर साधरयाही शृङ्गारकर अति आनन्दित उठि दौरीं ३ सुन्दर सुवर्णके थारों में मंगल
द्रव्य कहैं दधिदूर्बा हरिद्रा रोचनादि आरतीलेलेकर मंगलबधाये गावतीं राज भवन
में प्रवेश करती हैं ४ सुन्दर आरती करिके निछावरि करती हैं और बारंबार बालकके
पैरों परती हैं ५ और मागध सूत बंदीजन परमपावन रघुनायक यश गानकरि रहे हैं
उनको सबहुंन ने सर्वस दान दिया सो जिन्होंने पाया उन्होंने भी उस आनन्द में औरों
को देदिया ६ । ७ तिस पीछे अवतों श्री रामहोरिल के जन्म महोत्सव में मृग मद
कहैं कस्तूरी और श्री खण्ड मलय चन्दन और कुंकुमादि मंगल सुरंग सुगन्ध लेलेकर
परस्पर एकोंने एकों पर यहांतक छिरका कि अयोध्याके संपूर्ण मार्गोंमेंकीच मचिगई ८॥
दोहा ॥ और घरघर नगरमें चाचरि बधावने होनेलगे और सुखकन्द स्वामी के जन्म
होनेसे नगरके नारि नर वृन्द के वृन्द जहांतहां हर्षवन्त होगये ॥ ९ ॥

केकय सुता सुमित्रा दोऊ । सुन्दर सुत जन्मति भइंओऊ १
सो सुखसंपति समय समाजा। कहिनशकहिं शारदअहिराजा २
अवधपुरी शोहै यहिभांती । प्रभुहि मिलनआई जनुराती ३
देखिभानु जनुमन सकुचानी। तदपिबनी सन्ध्या अनुमानी ४
अगर धूमबहु जनु अन्धियारी। उड़ैअबीर मनहुं अरुणारी ५
मंदिरमणि समूह जनुतारा । नृपगृह कलश सोइंदु उदारा ६
भवनवेदधुनिअतिमृदुबाणी।जनुखगमुखरसमयअनुमानी ७
कौतुकदेखि पतंग भुलाना। एक मासतिहिं जात न जाना ८

दो० मास दिवस कर दिवस भा मर्म न जानै कोइ ।
रथसमेत रवि थाकेउ निशा कवनि विधि होइ ॥ १० ॥

इतने में राजा केकयकी बेटी कैकेयी और सुमित्रा येभी सुन्दर पुत्रों को जन्मतीं हुईं १ अब उस सुख को उस संपति को उस समय को उस समाज के आनन्द को तो स्वयं सरस्वती और शेष भी नहीं कहि सक्ते हैं २ कि समस्त अयोध्या में होरिल के महोत्सव के उत्साह से मारे अबीर गुलाल केसरि कुम कुम के दिन की राति होरही है तिस से अयोध्या ऐसी शोभा देती है कि मानों प्रभु होरिल के देखने को रात्रि भी आई है ३ सो मानों सूर्य्य को देखिकर मन में सकुचाय गई है तो भी संध्या के समान बनी है क्योंकि संध्या के सब लक्षण अनुमान होते हैं ४ घर घर से उठा जो अगर का बड़ा धूम सोई तो मानौ संध्या की अंधियारी है और भारों के भार जो उड़िरहा है अबीर सोई मानौ संध्या की अरुणाई है ५ मंदिरों में जो मणि समूह प्रकाशित हैं सोई तारागण हैं राज मंदिर का कलश सोई उदार चन्द्रमा है ६ राजभवन में जो मनोहर वेदध्वनि होरही है सोई मानौ संध्याकाल जानिकर पक्षी शब्दकरि रहे हैं ७ ऐसा महोत्सव अपने घराने में देखिकर कुल वृद्ध पितामह सूर्य्यअपनी गति को भूलिगये कि एक मास जातेही न जाना ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इस कारण एक मास का एकही दिन हुआ और अति आनन्द से किसी ने यह मर्म न जाना रथ समेत जब सूर्य्यही थकि रहे फिरि रात्रि कैसे होती है १० इसी कारण अब तक ग्राम नगर वासी चैत्र को होरिल महोत्सव संबंध से महा पावन जानि कर अपने अपने घरों के कूरे करकट को फाल्गुण के अन्त में नगर के बाहिर जला कर उड़ा देते हैं और घरों को नवीन लेपन करिके शुद्ध करते हैं और नानाप्रकार के पक्वान्न मिष्टान्न बनाते हैं अबीर गुलाल अरगजादि परस्पर छिरकते हैं नृत्यबादित्र करते हैं नवीन वस्त्राभूषण सुगन्ध धारण करते हैं और महा मंगल परम पावन जानिकर मृतकों के शोक को विसर्ज्जन न करते हैं आनन्द मनाते हैंपरंतु अज्ञानता से उस को होरी होरी करते हैं होरी पद होरिल का अपभ्रन्स है और होरिल झडूले बाल को कहते हैं ॥

यह रहस्य काहू नहिंजाना । दिनमणि चले करत गुणगाना १
देखि महोत्सव सुरमुनिनागा । चलेभवन बरणत निजभागा २
औरौ एक कहौं निजचोरी । सुनुगिरिजा अतिदृढ़मति तोरी ३
काकभुशुंडि संग हम दोऊ । मनुजरूप जानहिंनहिं कोऊ ४
परमानन्द प्रेम सुख फूले । वीथिन फिरहिं मगन मन भूले ५
यहसब चरित जानपै सोई । कृपाराम की जा पर होई ६

तिहिअवसरजोजिहिविधिआवा।दीन्हभूपजोजिहिमनभावा ७
गजरथ तुरंग हेम गोहीरा । दीन्हेनृप नानाविधि चीरा ८
दो० मनसंतोष सबनिके जहं तहं देहिंअशीश ।
सकलतनय चिरजीवहु तुलसिदास के ईश ॥ ११ ॥

यह भगवच्चरित्र किसी ने नहीं जाना एक मास पीछे सूर्य्य भगवत् गुणगाते हुये चले १ और इस महोत्सव को देखिकर देवता मुनीश्वर नाग अपने अपने भाग को प्रशंसा करते अपने अपने घरों को चले २ हे पारबती तेरी अति दृढ़ बुद्धि जानि कर मैं अपनी एक सबसे छिपाई हुई चोरी तुम से कहता हूं ३ कि कागभुशुंडी और मैं दोनों साथ साथ मनुष्य रूप धारण किये जिससे कोई जानि न पावै ४ परमानन्द परम प्रेम परम सुखकारि के फूले हुये गलियों में मग्न मन भूले फिरने लगे ५ इस चरित्र के सुख को सोई जानता है जिसपर राम की कृपा होती है ६ तिस समय हे पार्वती जो जिसभांति की अभिलाषा से आया उस को राजा ने सोई दिया जो जिस ने मांगा ७ हाथी रथ घोड़ा सुवर्ण गऊ मणि नानाप्रकार के बस्त्र कंवल पाटांवर राजा ने सब को दिये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सब के मन में परम संतोष सो जहां तहां अशीश देते हैं कि तुलसीदास के स्वामी चारो भाई चिरंजीव रहो ॥ ११ ॥

कछुक दिवस बीते यहि भांती । जात न जाने दिन अरुराती १
नाम करण कर अवसर जानी । भूप बोलि पठये मुनिज्ञानी २
करिपूजा भूपतिअस भाषा । धरिये नाम जोमुनि गुणराखा ३
इनके नाम अनेक अनूपा । मैं नृप कहहुं स्वमति अनुरूपा ४
जो आनंद सिंधु सुख राशी । शीकर तें त्रैलोक्य प्रकाशी ५
जो सुखधामराम असनामा । अखिल लोकदायक विश्रामा ६
विश्वभरण पोषण करुजोई । ताकर नाम भरत अस होई ७
जाके सुमिरण तें रिपु नाशा । नाम शत्रुहन वेद प्रकाशा ८
दो० लक्षण धाम राम प्रिय सकल जगत आधार ।
गुरु वशिष्ठतिहि राखेउ लक्ष्मण नाम उदार ॥ १२ ॥

कछुक दिन इसी आनन्द में सबको ऐसे बीति गये कि किसी ने दिन राति जातेही न जाने १ तिस पीछे नाम करण का समय जानिकर राजा ने वशिष्ठ मुनि को बुलाइ भेजा २ उनसे प्रसूति शुद्धीकी पूजा विधान करा कर राजा ने हाथ जोरि कर कहा कि हे महाराज जो आपनेइन पुत्रन के नाम विचारि राखे हैं सो धरि दीजिये ३

यह सुनिकर बशिष्ठ मुनि बोले कि हे राजा इनके नाम तो अनंत गुणों के अनुसार अनन्त अनूप हैं जैसे मन्त्रादिकों ने कहे हैं ॥ आपो नाराइति प्रोक्ताआपोवैनरसूनव: । तावदस्यायनंपूर्वं तेननारायणस्मृत: जलमें निवास करने से तो नारायण नाम है येनसृष्टाजगत्सर्वं व्याप्यतस्मिन्व्यवस्थित: । ततश्च बिष्णु नामासिधाताव्याप्तश्चदर्शनात् ॥ बिश्वमें व्याप्तहोने से बिष्णु नामहै ॥ ब्रह्माणमिंद्ररुद्रंच यमंवरुणमेवच निगृह्य हरतेयस्मात्तस्माद्धारिरिहोच्यते ॥ इस गुण से हरिनाम है ॥ हरसिप्राणिनोदेव ततोहररितिस्मृत: ॥ हरनेसे हरनाम है शंकरोसियतोदेवततश्शङ्करतांगत: ॥ कल्याण करनेसे शंकर नाम है ॥ वृहत्वाद्वृंहणत्वाच्च तस्माद्ब्रह्मेतिशब्दित: ॥ वृहत् और वृंहणहोनेसे ब्रह्म नाम है ॥ कइतिब्रह्मणोनाम ईशोहंसर्वदेहिनां । आवांतवांगसंभूतौ तस्मात्केशव नामवान् ॥ ब्रह्मा शिव अंग संभूत होनेसे केशवनाम है ॥ माविद्याचहरे:प्रोक्ता तस्य ईशोयतोभवान् तस्मान्माधव नामासिधवस्वामीतिशब्दित: ॥ माया पति होने से माधवनाम है ॥ बसंतिन्त्वयिभूतानि भूताबासस्ततोहरि: । ईशत्वंसर्वभूताना मीश्वरोसिततोहरे: ॥ भूताबास और सर्वेश्वरहोने से ईश्वरनाम है वीर्य्यैश्वर्य्य शक्तितेजोविद्याबलसमग्रत: । वेत्यविद्यामविद्यांच सवाच्योभगवानिति ॥ इन षडैश्वर्य्य समन्वित से भगवान् ऐसा नामहै ऐसेहीं अनन्त नाम हैं परंतु हे राजा मैंभी अपनी बुद्धिके अनुरूप इनके नाम कहता हूं सो आप श्रवण करो ४ जो आनन्द सिंधुकहैं सच्चिदानन्द घन सुखकी राशि शीकर से लेकर त्रैलोक पर्य्यंत का प्रकाशक अर्थात् जो सबमें रमि रहा है और समस्त जड़ चेतन जिसमें रमते हैं उसका सुख धामका राम ऐसा नाम हे ना चाहिये सो ऐसे गुण तुम्हारे ज्येष्ठ पुत्रमें हैं तातें इसका नाम राम है यह समस्तलोक का बिश्रामदायक अर्थात् शरण्य होगा ५ । ६ यो बिश्वका भरण पोषण करताहै उस विश्वम्भर का भरत ऐसानामहोना चाहिये सो यह गुणतुम्हारी रानी कैकयी के पुत्र शंखावतार में है तातें इसका नाम भरत है जैसा प्रथम लिखि आये हैं ॥ विश्वंभरंभरत मंबुज पत्रनेत्रं ७ और जिसके स्मरणही से शत्रुओंका नाश होजाय उसका नाम शत्रुघ्न होना चाहिये सो यह गुण तुम्हारी रानी सुमित्राके कनिष्ठ पुत्र सुदर्शनावतार जो प्रथम सुमित्रा ने जन्मा है उसमें है यातें उस कनिष्ठ पुत्र का नाम शत्रुघ्न है वेदोंने इसके माहात्म्य को प्रकाशित किया है ॥ विष्णोश्चक्र महंबंदेबिद्वज्जनबिभूषणं । बिदारयतियोनित्यंवैदिकानांबिरोधिन: ॥ ८ ॥ दोहा ॥ समस्त भगवल्लक्षणों के धाम और राम के अद्वितीय प्यारे सतस्त जगत के आधार शेषावतार जानिकर बशिष्ठ जीने लक्ष्मण ऐसा उदार कहें सर्वस्वदातार सुमित्रा का ज्येष्ठ पुत्रका जो शत्रुघ्नसे पीछे जन्माहै उसका नाम रक्खा ॥ १२ ॥

धरे नाम गुरु हृदय बिचारी । वेद तत्व नृप तव सुत चारी १
मुनिधनजनसर्बसशिवप्राणा । बालकेलिरसतिहिंसुखमाना २
बारेहितें निजहित पतिजानी । लक्ष्मण राम चरण रतिमानी ३

भरत शत्रुहन दूनौ भाई । प्रभु सेवक जसि प्रीति बड़ाई ४
श्यामगौर सुंदर दोउजोरी । निरखहिंछबि जननी तृणतोरी ५
चारिहुशील रूप गुणधामा । तदपिअधिक सुखसागर रामा ६
हृदय अनुग्रह इंदु प्रकाशा । सूचित करनि मनोहरि हासा ७
कबहुंउछंगकबहुंबरपालन । मातुदुलारहिंकहिप्रिय लालन ८
दो० व्यापक ब्रह्म निरंजन निर्गुण बिगत विनोद ।
सो अज प्रेम भक्तिबस कौशिल्या की गोद ॥ १३ ॥

इसप्रकार गुरुवशिष्ठ ने विचारि कर चारौपुत्रौ के नामधरे और कहा कि हेराजन् समस्त वेद वेद्य और उन का सारतत्व ये तुम्हारे चारौ पुत्रही हैं १ मुनि जनोंके परम धन और अनन्य भक्तों के तो सर्वस्वही है जैसा इस श्लोक में कहा है रामो मातामत्पितारामचन्द्रः स्वामीरामोंमत्सखारामचन्द्रःसर्वस्वंमेरामचन्द्रोदयालुर्नान्यंजाने नैवजानेनजाने और सर्व भक्त शिरोमणि श्री शिवजीके तौ जीवन प्राणही हैं तुम्हारी प्रीती के अर्थ तिसही स्वामी ने बाल केलही में सुख माना है ॥ २ ॥ गीतावल्यां ॥ या शिशु के गुण नाम बड़ाई को कहि सकै सुनौ नर पति श्रीपति समान प्रभुताई सुर नर मुनि करि अभय दनुज हति हरिहिं धरणि गरु वाई कीरति कलितविश्व अघ मोचनि रहिहि सकल जगछाई याके चरण रोजपट तजिजो भजिहै मनलाई सो निज कुल समेततरिहै भव यहन कछू अधिकाई सुनि गुरु बचन पुलकि तनु दंपति हर्षन हृदय समाई तुलसि दास अवलोकि मातुमुखप्रभु मनमन मुसुकाई २ अति बालापन तेहीं अपने हितपति जानि कर लक्ष्मण जीने तौ रामही में प्रीति मानी ३ और भरत शत्रुघ्न में परस्पर स्वामी सेबक की प्रीति हुई ४ सुन्दर सांवरी गोरी दोनो जोरियो की छवि को देखिकर माता तृण तोरतींहैं ५ यद्यपि सब भाई रूप शील गुणके धामहैं तथापि आनन्द सिंधु अधिक रामहैं ६ हृदयान्तर्गत जो अनुग्रह के चन्द्रमा काप्रकाश है उसकी सूचक मनोहर हास है ७ कभी गोदमें कभी पालन में माता प्यारे लालन कहिकर दुलारती हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जो बिश्व व्यापक निरंजन परात्परब्रह्म है सोई प्रेमभक्ति के बस कौशल्य की गोद में खेलता है ॥ १३

काम कोटि छवि श्याम शरीरा । नील कंज बारिद गंभीरा १
अरुण चरण पंकज नखज्योती । कमलदलन बैठेजनु मोती २
रेख कुलिशध्वजअंकुश सोहैं । नूपुरधुनि सुनिमुनि मनमोहैं ३
भुजविशाल भूषणयुत भूरी । हियहरि नख शोभा अतिरूरी ४
कंबु कंठअति चिबुक सुहाई । आनन अमित मदनछबिछाई ५

दुइदुइ दशन अधर अरुणारे । नासा तिलककोबरणय पारे६
सुंदर श्रवणसुचारु कपोला । अति प्रिय मधुरतोतरे बोला ७
नीलजलजदोउनयनबिशाला।बिकटभृकुटिलटकनिवरभाल८
दो० सुख संदोह मोह पर ज्ञान गिरा गो तीत ।
दंपति परम प्रेम बस कर शिशु चरित पुनीत ॥ १४ ॥

कामते कोटि गुणित छबितो श्याम शरीर कोहो है जैसा नील कमल और गम्भीर मेघ होवै १ अरुण चरण कमलों पर सुन्दर नखों की ज्योति कैसी छवि देती है मानों कमल के दलों पर गजमुक्ताही आ बैठे हैं २ चरण तलों में कमल कुलिश ध्वजा और अंकुश ये मुख्य चारि रेखा सोहती हैं नूपुरों की धुनि मुनीश्वरों के मनको मोहती है ३ विशाल भुजाओं में सुन्दर सुढार कटकाङ्गदादि बिपुल भूषण विराजते हैं हृदय में बघनहां अति सुन्दर शोभा दे रहाहै ४ शंख के समान सुन्दर कंठ और अति सुहाई चिबुक है और अति मनोहर मुखपर अनन्त कामकी शोभा छाईहै ५ सुन्दर अरुणारे ओठोंके समीप दुइ दुइ दतूरीं महा छवि देरही हैं और नासिका से लेकर केश पर्य्यन्त गोरोचन के पीत तिलक की शोभा श्याम सुन्दर मुखपर कौन कहि सकताहै ६ सुन्दर समान श्रवण हैं अति सुन्दर कपोल हैं और अत्यन्त प्यारे महा मधुर तोतरे बोल हैं ७ नील कमल से दोनों विशाल नेत्र हैं अति बांकी सुन्दर भृकुटी हैं और मनोहर ललाट पर लटकनि लटकतीहै ८ ॥ दोहा ॥ जो ईश्वर आनन्द निधान है अभूत अज्ञानहै ज्ञानबाणी मन इन्द्रियों से अग्राह्यहै दशरथ कौशल्या के प्रेम के वश सोई ईश्वर सुन्दर बाले चरित्र करता है ॥ १४ ॥

यहिबिधिरामजगतपितुमाता । कोशलपुरबासिन सुखदाता १
जिन्हरघुबीरचरण रतिमानी । तिनकी यहगतिप्रगटभवानी२
रघुपतिबिमुख यतन करिकोरी । कौन सकैभवबंधन छोरी ३
जीवचराचर बस करि राखै। सो माया प्रभु सन भयभाखै ४
भृकुटिबिलाशनचावहिंताही । असप्रभुछांडिभजियकहुकाही५
मनक्रम वचन छांड़ि चतुराई । भजिय कृपाकर श्री रघुराई ६
यहिबिधिशिशुबिनोदप्रभुकीना।सकलनगरबासिन्हसुखदीना
लैउछंग कबहुंक हलरावहिं । कबहुंक पालनघालिझुलावहिं ८
दो० प्रेम मग्न कौशिल्या निशि दिन जातन जान ।
सुतसनेह बस माता बाल चरित कर गान ॥ १५ ॥

इस प्रकार जगत के माता पिता श्री रामचन्द्र ने कोशल पुर बासियोंको आनन्द दिये १ जिन्होंने अनन्य साधन अनन्य गति अनन्य प्रयोजन होकर हे पार्वति श्री रामचन्द्रही के चरणों में प्रीति मानी है तिन्ह को यह ब्रह्मादि दुर्लभ गति प्रत्यक्ष देखिपरतीहै। सोरठा। जिहिसुखलागिपुरारि अशिवबेषकृतशिवसुखद॥ अवधपुरीनरनारि तेहिसुखमासंततमगन २ और श्रीरामचन्द्र से बिमुख होकर तौ कोटिहू उपाय करिके महा कठिन भव बंधन को कौन छोरि सक्ता है॥ कवित्तावल्यां॥ जपयोगबिरागमहा मखसाधनदानदयादमकोटिकरै। मुनिसिद्धसुरेशगणेश महेशसेसेवतजन्मअनेक मरै॥ निगमागमजानि पुराण पढ़ै तपसानलमहंयुग पुंज भरै। मनसोंप्रणरोपिकहैतुलसी रघुनाथ बिनादुखकोनहरै॥ भागवते॥ तपस्विनोदानपरायशस्विनोमनस्विनोमंत्रविदः सुमंगला क्षेमंनविन्दन्तिबिनायदर्पणं तस्मैसुभद्रश्रवसेनमोनमः ३ क्योंकि जो मायासब जीवों को नचावती है सो केवल रामही से भय मानती है॥ शिवचतुरानन जाहि डराहीं। अपर जीव केहि लेखेमाहीं॥ तिस माया को भृकुटीविलासही से राम नचावते हैं तो हे पार्बती ऐसे समर्थ स्वामीको छोड़कर कहो किस को सेइये ४। ५ तातें बुद्धि कल्पित झूठी चतुराइयों को तन मन बचन से छोड़िकर कृपासिंधु श्री रामही को भजना चाहिये ६ इस प्रकार बाल विनोदस्वामी ने करि समस्त नगर बासियों को आनन्द दिया ७ माता कभी तो गोद में लेकर हलरावती है और कभी पालने में बैठारि कर झुलावती है ८॥ दोहा॥ इस प्रकार प्रेम में मग्न कौशल्या दिन राति जाते नहीं जानती है पुत्र के प्रेम के बस बाल चरितही गान करती है॥ १५॥

एकबार जननी अन्हवाये। करि सिंगार पालन पौढ़ाये १
निजकुल इष्ट देव भगवाना। पूजा हेतु कीन्ह अस्नाना २
करि पूजा नैवेद्य चढ़ावा। आपु गई जहं पाक बनावा ३
बहुरि मातु तहंवांचलिआई। भोजन करत दीख सुतजाई ४
गइ जननी सुतपहं भयभीता। देखा बाल तहां पुनिसूता ५
बहुरि आइ देखा सुत सोई। हृदय कंप मन धीरन होई ६
यहांवहां द्वयबालक देखा। मति भ्रममोरि किआनविशेषा ७
देखिरामजननी अकुलानी। प्रभुहंसि दीन्हमधुरमुसकानी ८
दो० दिखरावा मातहि निज अद्भुत रूप अखंड।
रोमरोम प्रति राजहिं कोटिकोटि ब्रह्मंड॥ १६॥

एक बार उत्सव के दिन माता ने उबटि कर स्नान कराया और सुन्दर नवीन वस्त्राभूषण शृङ्गार करि के पालने में सुवा दिया १ और आप कौशल्याने अपने कुल इष्टदेव श्रीरंग नारायण की पूजाके निमित्त स्नान किया २ पूजा करिके नैवेद्य निवेदन

किया और आप पाक शाला को गई ३ जो तहांते लौटिकर फिरि आई तो पुत्र को नैवेद्य भोजन करते देखा ४ तबतौ माता भयभीत पुत्र के पास दौरी गई तो बालक को जैसा का तैसाही सोवता पाया ५ फिरिजो पूजन स्थानमें आई तो उसी पुत्र को भोजन करता पाया तबतौ कौशल्या के हृदय में कम्प होगया और धीरज छूटि गया ६ यहां वहां द्वय बालक देखिकर मनमें कहती है कि मेरी मतिका भ्रम है किसांचहूं द्वय बालक हैं ७ जबरामने माताको व्याकुल देखा तबतौ मधुर मुसुकानि से हंसि दिया ८ ॥ दोहा ॥ और अपना अति अद्भुत अखंड महा विराट रूप माता को दिखा दिया जिसके रोम रोम में कोटिन कोटि ब्रह्मांड लगे हैं ॥ १६ ॥

अगणितरविशशिशिवचतुरानन बहुगिरसरितासिंधुमहिकानन
काल कर्म गुणदोष सुभाऊ । सोदेखा जो सुना न काऊ २
देखी माया सब बिधि गाढ़ी । अति सभीत जोरे कर ठाढ़ी ३
देखा जीव नचावहि जाही । देखी भक्ति जो छोरहि ताही ४
तनपुलकितमुखबचननआवा । नयनमूंदिचरणनाशिरनावा ५
अस्तुतिकरि न जाइभयमाना । जगतपिता मैंसुतकरिजाना६
विस्मयवन्त देखि महतारी । भये बहुरि शिशु रूपखरारी ७
हरिजननीबहुबिधिसमुझाई । यहजनिकतहुकहेसिसुनुमाई ८
दो० बार बार कौशल्या विनय करत कर जोरि ।
अबजनि कबहूं व्यापै प्रभु मोहि माया तोरि ॥ १७ ॥

अनन्त ब्रह्मांडोंमें अनन्त सूर्य्य देखे अनन्त चन्द्रमा देखे अनन्त शिव महादेव देखे अनन्त चतुरानन ब्रह्मा देखे तैसेही अनन्त पर्वत नदी समुद्र बनों समेत पृथ्वी देखी १ काल देखा कर्म देखा और उनके गुण दोष स्वभाव देखे और सोसो देखा जो कभी सुना भी न रहे २ सब प्रकार जिस का सुगाढ़ वन्धन है ऐसी माया देखी कि अत्यन्त भय भीत राम के सन्मुख हाथ जोरे खड़ीहै ३ और जीवभी देखा कि जिस को कर्म पाश में बांधेहुये अनेक प्रकारके नाच नचावती है और भगवत् भक्ति देखी जो उसजीव को समस्त माया वन्धन से छुटालेती है ४ यह भगवत् महिमा देखि कर कौशल्या को रोम हर्ष होगया और मुख से कुछ बचन नहीं आया केवल नेत्र मूंदि कर चरणों को शिर नवाकर रह गई ५ कुछ स्तुति भी करते नहीं बनती है क्योंकि कौशल्या इस विचारसे भयमान होरहीहै कि मैंने अपने अज्ञान से जगत्पिता स्वामी को अपना पुत्र जाना है ६ तबतौ रामचन्द्र माताको विस्मित देखि कर फिरि बाल रूप होगये ७ और माताको बहुत भांति समुझाया और कहाकि हे माता यह रहस्य कहीं किसीसे कहना नहीं ८ ॥ दोहा ॥ और कौशल्या भी बारंबार हाथ जोरि कर

विनती करती है कि हे स्वामी अब मेरे को आपकी प्रवल माया कभी फेरि बाधा न करै ॥ १०॥

बालचरितबहुविधिप्रभुकीन्हा। अतिआनन्ददासनकहंदीन्हा १
कछुककाल बीते सबभाई । बड़े भये परिजन सुखदाई २
चूड़ाकरण कीन्ह गुरुजाई । बिप्रन विपुल दक्षिणा पाई ३
परममनोहर चरित अपारा। करतफिरत चारिहु सुकुमारा ४
मनक्रमबचन अगोचर जोई। दशरथ अजिरबिचर प्रभुसोई ५
भोजनकरत बोलजबराजा । नहिंआवत तजिबाल समाजा ६
कौशल्या जबबोलन जाई। ठुमुकिठुमुकि प्रभु चलत पराई ७
धूसरधूरिभरे तन आये। भूपति बिहसि गोद बैठाये ८
दो० भोजनकरत चपलचित इतउत अवसर पाइ
भाजिचलत किलकत मुख दधि ओदन लपटाइ ॥१८॥

ऐसा बहुत भांति का बालविनोद स्वामी ने किया और अत्यन्त आनन्द अपने अनन्य भक्तों को दिया १ फिर कुछ काल बीते चारो भाई अपने परिवार के आनन्द दाता बड़े हुये २ तबतो चूड़ाकर्ण कहें मुंडन वशिष्ठ मुनि ने करवाया तहां ब्राह्मणों ने अप्रमेय दक्षिणा दान पाया ३ अबतो परम मनोहर अपार चरित्र चारो भाई राज मन्दिर में करते फिरते हैं ४ देखो जो स्वामी मन कर्म बाणी सबसे अगोचर है सोई राजा दशरथ के आंगन में खेलता फिरता है ५ जबकभी भोजन केसमय राजा बुलावते हैं तो अपने बाल समाज को छोड़ि कर नहीं आवते हैं ६ और जब कौशल्या बुलाने को जाती है तब तो माता को आवती देखिकर ठुमुक ठुमुक नूपुर बजाते हुये भागि चलते हैं ७ शरीर में मैली कुचैली धूरिभरे आये राजाने हंसिकर गोद में बैठाया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ भोजन करते अति चपलचित्त हैं कि इधर उधर दाउ पाकर किलकते हुये भागि चलते हैं दही भात मुखसे लपिटा है ॥ १८ ॥

बालचरित अतिसरल सुहाये। शारद शेषशंभु श्रुतिगाये १
जिनकर चितनहिं यहिरसराता। तेबुधिबंचित कियेबिधाता २
भयेकुमार जबहिंसब भ्राता। दीन्हजनेऊ गुरुपितु माता ३
गुरुगृह गयेपढ़न रघुराई अलपकाल विद्या सब पाई ४
जाकीसहज स्वासश्रुति चारी। सो प्रभुपढ़ यहकौतुकभारी ५
विद्याविनय निपुणगुणशीला। खेलहिंखेलसकलनृपलीला ६

करतल बाणधनुष अतिसोहा । देखतरूप चराचर मोहा ७
जिनबीथिन बिहरहिं सबभाई । थकित होहिंसब लोगलुगाई ८
दो० कोशलपुरवासी नरनारि वृद्धअरुबाल ।
प्राणहुंते प्रियलगाहिं सबकहं रामकृपाल ॥ १९ ॥

बाल चरित्र श्री रामचन्द्र के अतिही सरल और परम सुहाये बड़े प्रेम समेत सरस्वती और शेष, शिव, वेद सरीखे महात्मा विज्ञानियों ने गाये हैं १ तिन मनोहर चरित्रों के रसमें जिन मंदभागियों का मन नहीं रमता है उन की बुद्धि को विधाता ने ठगि लिया है २॥ कवित्त ॥ पग नूपुर औ पहुंची कर कंजनि मंजु बनी मणि मालहिये। नवनील कलेवर पीत झंगा झलकैं पुलकैं नृपगोद लिये। अरविन्द से आननरूप मरंद अनंदित लोचन भृङ्गपिये। मनमें न बसे असबालक जो तुलसी जगमें फल कौनजिये ॥ पदकंजनि मंजुबनीं पनहीं धनुहीं शर पंकज पाणि लिये । लरिकन संग खेलत डोलत हैं सरयू तट चौहट हारहिये । तुलसी अस बालक सों नहिं नेह कहा जप योग समाधि किये । नरते खर शूकर स्वान समान कहो जगमें फल कौन जिये २ फिर जब सबभाई बाल अवस्था से कुमार हुये तब तो गुरुमाता पिताने यज्ञोपवीत जनेऊ सब को दिये ३ और गुरु के घर पढ़ने को गये थोड़ेही काल में सब विद्या पागये अर्थात् ऋग्वेद १ सामवेद २ यजुर्वेद ३ अथर्वणवेद ४ शिक्षा ५ व्याकरण ६ छन्द ७ कल्प ८ ज्योतिष ९ निरुक्ति १० मीमांसा ११ न्याय १२ अष्टादशपुराण १३ बीसस्मृतिधर्मशास्त्र १४ येचतुर्दश विद्याधर्म के मूल सब पढ़लिये ४ अब तो विद्या और नीति में निपुण होकर सब राजकाजही के खेल खेलते हैं ५।६ सुन्दर कर कमलों में धनुष बाण अति सोहते हैं जिन के रूप को देखि कर चराचर मोहते हैं ७ जिन बीथियों में सब भाई बिचरते हैं तहां तहां के नरनारी थकित होकर दर्शन करते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ बालकों से लेकर बूढ़ों पर्य्यन्त अयोध्या के सब नर नारियों को प्राणों से भी प्यारे श्री रामकृपाल लगते हैं ॥ १९ ॥

बंधु सखासंग लेहिं बुलाई । बन मृगया नितखेलहिंजाई १
पावनमृगमारहिंजियजानी । दिनप्रतिनृपहिदेखावहिंआनी २
जे मृग राम बाण केमारे । ते तनु तजि सुरलोक सिधारे ३
अनुज सखासंग भोजनकरहीं । मातु पिताआज्ञाअनुसरहीं ४
जिहिविधिसुखीहोहिंपुरलोगा । करहिंकृपानिधिसोईसंयोगा ५
वेदपुराण सुनहिं मनलाई । आपु कहहिंअनुजहिंसमुझाई ६
प्रात काल नित उठि रघुनाथा । मातुपितागुरुनावहिंमाथा ७
आयसु मांगिकरहिं पुरकाजा । देखिचरितहर्षहिं मनराजा ८

दो० व्यापक अकल अनीह अज निर्गुण नाम न रूप ।
भक्तहेतु नाना विधि करत चरित्र अनूप ॥ २० ॥

तीनोंभाई और सब सखाओं को साथ लिवाइकर मृगया के निमित्त दिन प्रति जाते हैं १ तहां पवित्र मृगों को जानि कर मारते हैं और राजाको लाकर दिखाते हैं २ जो मृग रामबाण से मारे सो पशुशरीर त्यागिकर सुरलोक कहिं भगवद्धाम वैकुंठ को चले गये ३ फिरि मृगया से आकर सखाभाइयों समेत भोजन करते हैंऔर माता पिता की आज्ञा परचलते हैं ४ जिसभांति पुरवासी सुखपावैं कृपासिंधु रामचन्द्र सोई संयोग करते हैं ५ वेदपुराण मन लगाकर सुनते हैं और आपभाइयों से समुझाइकर कहते हैं ६ नित प्रति प्रातःकाल उठिकर मातापिता गुरनको दंडवत् करते हैं ७ और राजा से आज्ञा लेकर नगर का काज करते हैं सो चरित्र देखिकर राजा अति हर्षित होते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ विश्वव्यापकसर्वेश्वर को अपनी अनन्त कलाओं से अपना प्रयोजन नहीं याते अकल है और अनन्त चेष्टाओं से भी स्वप्रयोजन नहीं याते अनीह कहाता है ऐसेही अपने जन्मों से आप को कुछ भी प्रयोजन नहीं याते अजनाम है तैसेही अपने अनन्त गुणों और अनन्त नाम रूपों से भी अपना प्रयोजन नहीं रखता है याहीतें निर्गुण और अनाम अरूप कहावता है ये समस्त कला और इहां जन्मादिक केवल अपने भक्तोंही के निमित्त ईश्वर में हैं ताहीतें देखो कि अपने भक्तों के आनन्द के निमित्त श्री अयोध्या में जन्मलेकर नाना प्रकार के अनूप चरित्र करिके उनको आनन्द देता है ॥ २० ॥

यहसब चरित कहा मैं गाई । आगिलिकथासुनहुंमनलाई १
विश्वामित्र महामुनि ज्ञानी । बसहिं विपिनि शुभआश्रमजानी २
तहांजप यज्ञयोग मुनिकरहीं । खलमारीचसुबाहुहिडरहीं ३
देखत यज्ञ निशाचर धावहिं । करहिं उपद्रव मुनिदुख पावहिं ४
गाधितनय मनचिंताव्यापी । हरिबिनुमरिहिं ननिशिचरपापी ५
तबमुनिवर मनकीन्हविचारा । प्रभुअवतरेउ हरणमहि भारा ६
यहिमिसु देखहुं प्रभुपद जाई । करिविनती आनहुंदोउ भाई ७
ज्ञानविराग सकलगुण अयना । सो प्रभुमैं देखब भरिनयना ८
दो० बहुविधि करत मनोरथ जातनलागी बार ।
करिमज्जन सरयूसलिल गये भूपदरबार ॥ २१ ॥

यह बालकुमार पौगंड अवस्थाओं का चरित्र तो मैंने कहा अब आगे किशोर अवस्था के चरित्र मन लगाकर सुनो १ कि विश्वामित्र नाम महामुनि राजा गाधि

के पुत्र जो क्षत्री से तप के प्रभाव से ब्रह्मत्व को प्राप्तहोकर बनमें शुभ आश्रम जानि कर निवास करते रहे २ तहां जप यज्ञ योग करने में महा दुष्ट मारीच और सुबाहु रावण के मंत्रियों से डरते रहे ३ कि यज्ञ करतेही देखिकर दुष्ट निशाचर दौरि परते हैं और महा उपद्रव करिके यज्ञविध्वंस करदेते ४ विश्वामित्र को चिंता हुई कि ये दुष्ट तो बिना विष्णुभगवान के और के मारने से नहीं मरैंगे ५ तब तो महा मुनि वर्य्य ने विचार किया कि स्वामी तो पृथ्वी के भारहरने को सूर्य्य वंश में राजादशरथ के पुत्र होकर अवतरे हैं ६ चलो इसी ओखे से स्वामी के चरणारविन्द देखैं और राजा से विनती करिके दोनों भाइयों को मांगि लावैं यह विचारि कर अयोध्या को चलि दिये ७ मार्ग में अपने भाग को सराहते चले जाते हैं कि जो प्रभु विशुद्ध विज्ञान घन स्वरूप और समस्त कल्याण गुण महोदधि हैं सो मैं अपने नेत्रों भरि देखूंगा गीतावली । आज मैं सकल सुकृतफलपाइ हौं। सुख कीसींव अवधि आनंद की अवध विलोकन जाइहौं सुतनि सहित दशरथहि देखि यहितेंकिहि लाभअघाइहौं । रामचन्द्र मुखचन्द्रसुधा छवि नयन चकोरनि प्याइहौं। दोहा ॥ इस प्रकार बहुत से मनोरथ करते करते थोरेही काल में आकर परम पावन सरयू नहाइ कर राजदरबार को चले ॥ २१ ॥

मुनिआगमन सुनाजब राजा । मिलन गयेउलैविप्र समाजा १
करिदंडवत मुनिहिं सनमानी । निजआसन बैठारेसिआनी २
चरण पखारि कीन्हिअतिपूजा । मोसम आजधन्यनहिंदूजा ३
पुनि चरणनि मेले सुतचारी । राम देखि मुनि भये सुखारी ४
तबमन हर्षिबचनकहराऊ । मुनि असिकृपाकीन्हिनहिंकाऊ ५
किहि कारणआगमनतुम्हारा । कहहुसो करतनलावहुंबारा ६
असुर समूह सतावहिं मोही । मैं याचन आयेउं नृप तोही ७
अनुज समेत देहु रघुनाथा । निशिचर वध मैं होव सनाथा ८
दो० देहु भूप मन हर्षित तजहु मोह अज्ञान ।
धर्मसुयश नृप तुम कहं इनकहं अति कल्याण ॥ २२ ॥

मुनि विश्वामित्र का आगमन जब राजा दशरथ ने सुना तब तौ ब्राह्मणों का समाज साथ लेकर उनके मिलने को गया १ दंडवत् प्रणाम विधिवत् करिके बड़ा सन्मान किया और आदर समेत राजमंदिर में लाकर उच्चासन पर बैठाया २ चरण प्रच्छालन करिके भोजन सुगंध तांबूल पर्य्यंत अति पूजन किया और अपनेको अति धन्य कहा ३ तिस पीछे चारों पुत्रों को उनके चरणों पर पड़ा सो राम को देखिकर तौ मुनि अत्यन्त सुखी होगये ४ तब तौ हर्षित होकर राजा ने हाथ जोरि कर कहा कि महाराज आपने कभी मेरे पर ऐसी कृपा नहीं करी रहे ५ सो इसबारकिस

निमित्त आपका आगमन है सो आप आज्ञा करें मैं उसकी करनेमें ढीलनहीं करूंगा ६ यह राजा का बचन सुनि विश्वामित्र ने कहा कि हे राजा मेरे को राक्षसोंके समूह सतावते हैं योग जप यज्ञ नहीं करने देते हैं इस निमित्त मैं तुम्हारे पास याचना करने को आया हूं ७ सो लक्ष्मण समेत अपने ज्येष्ठ पुत्र रामचन्द्र को मेरे साथ कर दो तो राक्षसों का निधन होजाइगा और मैं भी सनाथ होजाऊंगा ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सो हे राजा प्रसन्न मन होकर मेरे साथ करदो और प्रेम करिके जो अज्ञान उसको छोड़ दो क्योंकि इसमें धर्म और सुयश का लाभ तो तुमको होगा और इनका परम कल्याण होगा ॥ २२ ॥

सुनिराजाअतिअप्रिय बाणी । हृदयकंपमुखद्युतिकुम्हिलानी १
चौथे पन पायेउं सुतचारी । विप्र बचन नहिं कहेहु विचारी २
मांगहु भूमि धेनु धन कोशा । सर्वस आज देहुं सहरोषा ३
देह प्राणतें प्रिय कछुनाहीं । सोउमुनिदेहुं निमिषएक माहीं४
सब सुतप्रिय प्राणनि कीनाईं । राम देत नहिं बनै गुसाईं ५
तबवशिष्ठ बहुविधि समुझावा । नृप संदेह नाश कहं पावा ६
अतिआदर दोउतनय बुलाये । हृदयलाइ बहुभांतिसिखाये७
मोरे प्राणनाथ सुत दोऊ । तुमपुनि पिता आन नहिं कोऊ८
दो० सौंपे भूपति ऋषिहि सुत बहु विधि देइ अशीष ।
जननी भवन गये प्रभु चले नाइ पद शीष ॥ २३ ॥

ऐसी अति अप्रिय मुनिकी वाणी सुनतेही राजा के हृदय में कंप होगया और मुख भी कुम्हिला गया बड़ी आधीनता और दीनता से बोला १ कि मैंने तो ये चारि पुत्र अपने चौथे पन में आंखों देखे हैं सो भला आंखों ओट कैसे किये जाते हैं आपने ये बचन विचारि कर नहीं कहे २ तातें आप फिरि कर जो धेनु धन कोश मांगें सो सर्वस मैं आपको पैज पूर्वक उत्साह हर्ष समेत देऊंगा ३ यहां तक कि देह प्राण से अधिक कुछ भी प्यारा नहीं होताहै सोभी पलमात्र में देदेऊंगा ४ और सब पुत्र तो मेरे को प्राणहीं के समान प्यारे हैं परंतु राम तो किसी भांति देते नहीं बनते हैं ५ जब राजा ने मुनीश्वर याचना भंग करिके सूखाही उत्तर दे दिया तब तो वशिष्ठ मुनि ने विश्वामित्र का प्रभाव और रामचंद्र की महिमा जानकर राजा का समस्त संदेह और अज्ञान दूरि करि दिया ६ तब राजा ने बड़े आदर समेत राम लक्ष्मण को बुलाया और हृदयसे लगाकर बहुत भांति सिखावन दिया औरमुनि से कहा कि मेरे तो हे नाथ ये दोनो पुत्र प्राणहीं हैं और आप भी इनके पिताहीहैं कुछ और नहीं हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ यह कहिकर राजाने दोनों पुत्रों को अशीष देकर

विश्वामित्र को सौंपि दिये तबतो माता कौशल्या के पास दोनों भाई जाकर आशीर्वाद लिया और चरणों को शीश नवाकर चलि दिये ॥ २३ ॥

सो० पुरुष सिंह दोउ बीर हर्षिचले मुनि भय हरण ।
कृपासिंधु मति धीर अखिल विश्व कारण करण ॥
अरुणनयनउरबाहु विशाला । नीलजलज तनश्यामतमाला १
कटि पट पीत कसेवर भाथा । रुचिरचाप शायक दोउहाथा २
श्याम गौर सुंदर दोउभाई । विश्वामित्र महा निधि पाई ३
प्रभु ब्रह्मण्य देवमैं जाना । मोहित पितातजेउ भगवाना ४
चलेजात मुनिदीन्ह दिखाई । सुनिताड़िका क्रोधकरि धाई ५
एकहिबाण प्राणहरिलीन्हा । दीनजानितिहिनिज पददीन्हा ६
तबमुनिनिजनाथहिजियचीन्ही । विद्यानिधिकहंविद्यादीन्ही ७
जातें लागुन क्षुधा पियाशा । अतुलितबल तनतेजप्रकाशा ८
दो० आयुध सर्व समर्पिकरि प्रभुनिज आश्रम आनि ।
कंद मूल फल भोजन दिये भक्त हित जानि ॥ २४ ॥

यहांसे श्रीरामचंद्र की प्रथम दिग्विजय यात्राका प्रारंभहै इस कारणयात्रा वीररूप रामचंद्र का वर्णन करते हैं ॥ सो० ॥ पुरुष सिंह कहैं साक्षात् नृसिंहहीके समान दोनों भाई बड़े वीर हर्ष करिके विश्वामित्रकी भय हरनेको चले कृपाके समुद्र मतिके धीर समस्त विश्वके कारण और करण हैं ॥ करणं कारणंकर्त्ता विकर्त्ता गहनो गुहः ॥ चौ० ॥ कैशोरत्व और वीरत्वके कारण अरुण नेत्र आयत हृदय और विशाल भुजा है नील कमल सा श्याम तमाल सा शरीर है १ पीत पटमे कटि पर सुन्दर निषङ्ग कसे हैं परम सुन्दर धनुष बाण दोनों हाथों में हैं २ ऐसी सुन्दर सांवरी गोरी दोनों भाइयों की जोरी विश्वामित्र तो महा निधिही पागये ३ स्वामी सांचहू वैदिकों के देव हैं मैंने जाना क्योंकि मेरे निमित्त पिता को भी छोड़ि आये ४ प्रथम मार्ग ही में मुनिने ताड़का दिखाइ दी सो तो सुनतेही रामके ऊपर दौरी ५ एकही बाणसे प्राण हरलिये और दीन जान कर वैकुंठ धाम दिया ६ तबतो मुनिने अपने नाथ विद्या निधान को बुला और अति बला दोनों विद्या पढ़ाईं जिनसे क्षुधा और प्यासन लगै और अतोल बल और तेजका प्रकाश बढ़ता रहै ७ ॥ ८ ॥ दो० ॥ फिर अपने आश्रम में लाकर कंद मूल फल भोजन दिये और जो बड़े अवराधन करिके शिवजी से दिव्य आयुध पाये रहैं सो सब रामचंद्र को समर्पण कर दिये ॥ २४ ॥

प्रातकहा मुनि सन रघुराई । निर्भययज्ञ करहुतुम जाई १

सुनि मारीच निशाचर कोही । लैसहाय धावा मुनि द्रोही २
बिनुफर बाण रामतिहि मारा । शतयोजनगा सागरपारा ३
पावकशर सुबाहु पुनि जारा । अनुजनिशाचर कटकसंहारा ४
तब मुनि सादरकहा बुझाई । चरितएक प्रभुदेखिये जाई ५
धनुशयज्ञ सुनिरघुकुल नाथा । हर्षिचले मुनिवरके साथा ६
आश्रमएक दीखमग माहीं । खगमृग जीवजन्तु तहँनाहीं ७
पूछामुनिहिं शिलाप्रभु देखी । सकलकथा मुनिकहीविशेषी ८
दो० गौतम नारि शाप बस उपल देह धरि धीर ।
चरण कमल रजचाहती कृपा करहु रघुबीर ॥

प्रात होतेही विश्वामित्र से रामचन्द्र ने कहा कि आप निर्भय होकर अपना यज्ञ कीजिये १ यह समाचार सुनिकर मारीच राक्षसमहा तामसी अपनी सेना और सुबाहु को साथ लेकर मुनीश्वरोंका द्रोही संग्रामको आया २ सो बिना फरका एक बाण रामचन्द्रने उसको मार दिया तिसके मारे सौ योजन समुद्रके उस पार जा परा ३ और अग्निबाण से सुबाहु को भस्म कर दिया इतने में लक्ष्मणने संपूर्ण राक्षसों का कटक संहारि लिया ४ यज्ञ समाप्तिके पीछे विश्वामित्र ने रामचंद्र से कहा कि मिथिलाधिपति राजा जनकने अपनी पुत्रीके स्वयम्बर के निमित्त धनुष यज्ञ रचाहै तहां अनेक राजा इकट्ठे होंगे चलो देखि आवें ५ धनुषयज्ञ के सुनतेही दोनों भाई अति हर्षित होकर विश्वामित्र के साथ चल दिये ६ मार्ग में एक आश्रम देखा जहां जीव जंतु कोई नहीं है एक शिलाही परी है ७ उसका कारण विश्वामित्र से पूछा मुनिने सब वृत्तांत कहा ॥ ८ ॥ दो० ॥ कि यह गौतम मुनि नैयायककी भार्य्या अहिल्याहै उनकेही शापसे पाषाण होगईहै आपके चरण कमलकी रजकी याचना करतीहै सो कृपा कीजियेगा

छं०परसत पदपावन शोकनशावन प्रगटभई तपपुंजसही ।
देखतरघुनायकजनसुखदायकसन्मुखहुइकरजोरिरही ॥
अतिप्रेमअधीरा पुलकशरीरा मुखनहिंआवे बचनकही ।
अतिशयबडभागीचरणनिलागीयुगलनयनजलधारबही १
धीरजमनकीन्हा प्रभुकहंचीन्हा रघुपतिकृपा भक्तिपाई ।
अतिनिर्मलवाणी अस्तुतिठानी ज्ञानगम्यजय रघुराई ॥
मैं नारिअपावन प्रभुजगपावन रावणरिपुजन सुखदाई ।
राजीवविलोचनभवभयमोचनपाहिपाहिशरणहिंआई २

मुनिशापजौ दीन्हाअतिभलकीन्हापरमअनुग्रहमैंमाना ।
देखेउंभरिलोचनप्रभुभवमोचन यहीलाभशंकर जाना ॥
विनतीप्रभुमोरी मैंमतिभोरी नाथनैमांगहुं वरआना ।
पदकमलपरागारसअनुरागा ममसनमधुपकरैपाना॥३॥
जेपदसुरसरिता परम पुनीताप्रगटभईशिव शीशधरी।
सोईपदपंकजजिहि पूजतअजममशिरधरेहुकृपालुहरी ॥
यहिभांतिसिधारी गौतमनारी बारबारहरि चरणपरी ।
जोअतिमनभावा सोवरपावा गईपतिलोकानन्दभरी ४ ॥
दो० असप्रभु दीनदयालु हरिकारण रहितकृपाल ।
तुलसिदास शठताहि भजिछांड़िकपटजंजाल ॥ २५ ॥

गुरु की आज्ञा के अनुसार जो रामचन्द्र ने चरण का स्पर्श किया सो चरण के छूतेही तप की राशि प्रगट होगई और रामचन्द्र के सामुहें हाथ जोरिरही प्रेम पुलकावली हो आई आंखों से जल की धार बहने लगी १ धीरज धरिके पहिचाना और भक्ति प्राप्तहुई अतिनिर्मल वाणी से जय रघुनायक कहिकर अस्तुति करी कि मैं तो अपावन स्त्री हूं आप जगपावन हैं मैं आप के शरण हूं २ मेरे पति ने जो शाप दिया अति अनुग्रह किया जिस के प्रसाद से मैंने आप को नेत्रों भरकर देखा इसी को देव देव महादेव परम लाभ मानते हैं मैं अपनी बुद्धिसमान विनती करती हूं और यही वर मांगती हूं कि आप के चरण कमलों में मेरा मन भृंग के समान वास करै ३ आप के चरण संभूता गंगा को शिवजी शीशपर धारण किये हैं सो ब्रह्मादि वंदित चरण आपने मेरे शिरपर रक्खा ऐसे बारंबार चरण छू और भक्ति वरपाकर अपने पति के पासगई ४ दोहा ॥ जो ऐसा दीनदयाल और अकारण कृपाल है रे मन तिस स्वामी को कपट जंजाल छोड़िकर अनन्य भाव से सेवन करो ॥ २५ ॥ यह प्रथम पच्चीसी शतपंच चौपाइयों की हुई ॥

चलेराम लक्ष्मण मुनिसंगा । गये जहां जगपावनि गंगा १
गाधितनयसबकथा सुनाई । जिहिप्रकारसुरसरि महिआई २
तबप्रभु ऋषिन्हसमेत नहाये । विविधिदानमहिदेवनिपाये ३
हर्षिचले मुनिवृंद सहाया । वेगिविदेह नगर नियराया ४
पुररम्यता राम जब देषी । हरषे अनुज समेत विशेषी ५
वापीकूप सरित सरनाना । सलिल सुधासम मणिसोपाना ६

वरण वरण विकसेबन जाता। त्रिविधिसमीर सदासुखदाता ७
गुंजत मंजुमत्त रसभृंगा । कूजतकल बहुवरण विहंगा ८
दो० सुमन वाटिका बाग बन विपुलविहंग निवास ।
फूलत फलत सुपल्लवित सोहत पुरचहुं पास ॥ २६ ॥

यहां से सीता स्वयंबर का प्रारंभ है इस में अति मधुर मनोहर ललित काव्य है और बड़े चमत्कार के साथ रचागया है और इस में समस्त प्रकर्ण बड़े विस्तार और रूपक अलंकारों के समेत कहे हैं तातें कोई अपनी अष्टपदी वा चौपाई दोहा छन्दादि भी नहीं मिलासका इस कारण इस का क्रम भंग भी नहीं हुआ है जो अष्टपदियां की छः पच्चीसी में अर्थात् १५० अष्टपदियों में ग्रन्थकार ने रचा है सोई विद्यमान है जो केवल पहिलीही चौपाई में गंगा का आगमन मिलादिया है ॥ २५ । २५ । ५० । २५ । २५ । अष्टपदियों पीछे हरि गीतिछन्द है छंदों में ग्रंथकार का नाम है छन्द पीछे सोरठा है तीनि संवादों में कोई भी पाया नहीं जाता है इस से प्रतीति होता है कि समस्त ग्रन्थ से पहिले रचा है सो अहिल्या के शापोद्धार के पीछे श्री राम लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ जगपावनी श्री गंगा के तीरपहुंचे १ तहां विश्वामित्र ने गंगा के पृथ्वीपर आने का प्रसंग सुनाया २ ऋषियों समेत रामलक्ष्मणने स्नान किया और तीर्थवासी ब्राह्मणों को दानदिया ३ फिरि प्रसन्न मन मुनीश्वरों के साथ तहां से चलिकर थोड़ेही कालमें जनकपुर के निकट पहुंचे ४ जनकपुर की रम्यता को तौ देखतेही लक्ष्मण समेत रामचन्द्र अतिहर्षित हुये ५ कि चारों ओर जिस नगर के परम सुन्दर बावड़ीं और कूप तलाव सरिता हैं जिन के अमृत से मधुर शीतल निर्मल जल हैं और मणिजटित सोपान बने हैं ६ और उन में रंग रंग के कमल फूलिरहे हैं शीतल मंद सुगन्ध लिये पवन बहती है ७ तिनकमलों पर रस माते भ्रमर गुंजते हैं और सुन्दर रंग रंग के जलपक्षी उन पर कूजते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ और पुर के चारोंलता अति सुन्दर पुष्पवाटि और बागबन उपबन हैं तिन में अनेक प्रकार के पक्षियों का निवास है ते सदैव फूलते हैं सदा फलते हैं नित्त पल्लवित हैं परम शोभा देते हैं ॥२६॥

बनै न वरणत नगर निकाई । जहां जाइये मन तहीं लुभाई १
चारुबजारविचित्रअटारीं । मणिमयजनौंविधिस्वकरसवारीं २
धनिकबणिक वरधनदसमाना । बैठे सकल वस्तुलिये नाना ३
चौहट सुंदर गली अथाई । संतत रहैं सुगन्ध सिचाई ४
मंगल मय मंदिर सब केरे । चित्रित जनौं रतिनाथ चितेरे ५
पुरनर नारि सुभग शुचि संता । धर्म शील ज्ञानी गुणिवंता ६

अतिअनूपजहंभूपनिवासू। बिथकाहिंविबुधविलोकिविलासू ७
होतचकित चितकोटविलोकी। सकलभुवन शोभाजनुरोकी ८
दो० धवल धाम मणि पुरट पट सुघटित नाना भांति।
श्री निवास सुंदर सदन शोभा किमि कहि जाति ॥ २७

भीतर नगरकी रचनाकी तौ सुन्दरता कुछ कहतेहींनहीं बनती कि जहांजाइये तहीं मन लुभाइ जाताहै १ अति सुन्दर हटसार जिसकी चित्र विचित्र अटारी मणि जटित बनी हैं मानो ब्रह्माही ने अपने हाथोंसे रची है २ जिसमें धनिक और वणिक कुबेरही के समान समस्त वस्तु लिये बैठे हैं ३ चौहट्ट सुन्दर चौरहे राज मार्ग और छोटी गली और अथाईं बैठके चौपारैं सदैव सुगन्धों से सींचे रहते हैं ४ और संपूर्ण पुरवासियों के भवन मंगल मय बने हैं मानों कामदेव ही चितेरेने चित्रित किये हैं ५ पुरके स्त्री पुरुष सब सुन्दर हैं पवित्र हैं सज्जन हैं धर्म शील हैं ज्ञानी हैं गुणवान हैं ६ और राजमंदिर तौ अतिही अनूप बना है जिसके बैभव विलास को देखकर देवता थकित होतेहैं ७ जिस के कोट कहैं प्राकार गढ़को देखिकर चित्त चकित होता है मानों चौदह भुवनकी शोभा इसीने रोक ली है ८ अति उज्वल जिसमें राजमन्दिर बने हैं जिनमें सुवर्ण मणि जटित किवाड़े लगे हैं जो अनेक भांतिके बनाव से बनाये गये हैं साक्षात् अनन्त कोटि ब्रह्मांड नायकी श्रीमहा लक्ष्मी के निवास का सुन्दर मन्दिर तिसकी शोभा कैसे कही जाती है ॥ २७ ॥

सुभगद्वारकल कुलिश कपाटा। भूरिभीर नटमागध भाटा १
बनीविशाल बाजिगज शाला। हयगयरथसंकुलसबकाला २
सूर सचिव सेनप बहुतेरे। नृप गृह सरिस सदन सबकेरे ३
पुरबाहिर सरसरित समीपा। उतरेजहंतहं विपुलमहीपा ४
देखि अनूप एक अमराई। सब सुपास सबभांति सुहाई ५
कौशिककहा मोर मनमाना। यहां रहिय रघुवीर सुजाना ६
भलहिंनाथ कहिकृपा निकेता। उतरे तहंमुनि वृंदसमेता ७
विश्वामित्र महामुनि आये। समाचार मिथिलापति पाये ८
दो० संग सचिव शुचि भूरिभट भूसुर वर गुरु ज्ञाति।
चलेमिलन मुनिनायकहि मुदित राउयहि भांति ॥ २८

गढ़ का अति विस्तारका सुन्दर द्वार बना है जिसमें बज्रके समान सुदृढ़ अटूट अति विशाल सुन्दर फाटक लगे हैं और जिस द्वारमें भाट नट मागधादि की बड़ी भीर है १ और अति विशाल जिसमें बाजिशाला रथशाला गजशाला बनी हैं जो

सदैव घोड़े हाथी रथोंसे भरी रहती हैं २ और जो राजाके सूर हैं सेनापति हैं सचिव मंत्री हैं उनके भी भवन उसमें राजमंदिरों केही समान बने हैं ३ नगरके वाहर जलाशयों के समीप जहां तहां अनेक राजा जो स्वयंबर के निमित्त आयेहैं परे हुये हैं ४ तहां एक अति सुन्दर अमराई जिसमें सब भांतिका सुपास है और परम सुहाई है सो देखकर विश्वामित्र ने रामचंद्र से कहा कि मेरा तो मन इसमें मानता है तातें इसीमें रहिये ५ । ६ ॥ इस प्रकारविश्वामित्रकी आज्ञाको सुन कर भले महाराज कहि कर कृपा निकेत रामचंद्र समस्त मुनीश्वरों समेत तहीं उतरते हुये ७ महा मुनीश्वर बिश्वामित्र आये ये समाचार भी राजा जनक ने पाये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तबतौ साथमें मंत्री और अनेक योधा और महिदेव और ज्ञातिके गुरुजनों को लेकर विश्वामित्र के मिलने को राजा जनक इस भांति से चला ॥ २८ ॥

कीन्ह प्रणामधरणिधरिमाथा।दीन्ह असशिमुदितमुनिनाथा १
बिप्र वृंद सब सादर बंदे ।जानिभाग्य बड राउ अनंदे २
कुशल प्रस्न कहि बारहिं बारा । बिश्वामित्र नृपहि बैठारा ३
तिहि अवसर आये दो भाई । गये रहे देखन फुलवाई ४
उठे सकल रघुपति जबआये । बिश्वामित्र निकट बैठाये ५
श्यामगौर मृदुबयस किशोरा । लोचनसुखद बिश्वचितचोरा६
भयसबसुखीदेखिदोउ भ्राता । बारिबिलोचन पुलकितगाता७
मूरति मधुरि मनोहरि देखी । भये बिदेह बिदेह बिशेषी ८
दो० प्रेममग्न मन जानि नृप करि बिबेक धरि धीर ।
बोले मुनि पदनाइ शिर गदगद गिरा गंभीर ॥ २९ ॥

जानेबिश्वामित्र को साष्टाङ्ग प्रणाम किया और बिश्वामित्र ने राजा को प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया १ फिरि जो बिश्वामित्र के साथ और मुनि वृन्द रहे उन सबको भी राजा ने अभिबंदन किया और अपनाबड़ा भाग्य मानिकर आनंदित हुये २ तिस पीछे बारंबार कुशल प्रस्न करिके बिश्वामित्र ने राजा को बैठाया ३ तिससमय रामलक्ष्मण दोनों भाई तहां आये अनेक पुष्प बाटिकाओं के देखने को गये रहे ४ जबरघुवंश विभूषण राम चद्र आये तब तौ सब उठि खड़े हुये और बिश्वामित्र ने अपने समीप बैठारि लिये ५ अति मनोहर सांवरे गोरेदोनों भाई हैं नेत्रों की आनन्द दायक कोमल नबीन किशोर अवस्था है और टृष्ट चिन्ता पहारक जिनके अंग अंग का सौंदर्य्य है ६ ऐसे सुन्दर सलोने दोनौं भाइयों को देखिकर राजा का संपूर्ण समाजसुखी होगया नेत्रों में जल और शरीरों में सबके रोम हर्ष हो आया ७ और अति माधुरी मनोहर मूर्त्ति को देखतेही राजा बिदेह तौ अतिही बिदेह होगये किजिनको

मन बुद्धि चित्त अहमिति की कुछ संभार ही न रही ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जिस गूढ भगवत् प्रेम को राजा जनक अपने योग भोग के संपुटमें छिपाये रहे सो रामके देखतेही प्रगट होगया तबतो प्रेम प्रवाह में मग्न मन जानि कर अपने विवेक से धीरजधरि के बिश्वामित्र को प्रणाम करि के गद गद वाणी बोले ॥ २९ ॥

कहहुनाथसुंदरदोउबालक।मुनिकुलतिलककिन्नृपकुलपालक१
ब्रह्मजोनिगमनेतिकहिगावा। उभयदेहधरिजनुसोईआवा २
सहजबिराग रूपमन मोरा। थकित होतजिमि चंद्र चकोरा ३
तातें प्रभु पूछहुं सतिभाऊ। कहहु नाथ जनिकरहु दुराऊ ४
इनहिंबिलोकतअतिअनुरागा। बरबसब्रह्मसुखहिमनत्यागा ५
कहमुनि बिहसिकहेहुनृपनीका। बचन तुम्हारनहोइअलीका६
येप्रियसबहि जहांलगिप्राणी। मनमुकाहिं रामसुनि बाणी ७
रघुकुलमणि दशरथ केजाये। मम हित लागि नरेशपठाये ८
दो० राम लखन दोउ बंधुवर रूप शील गुण धाम ।
मखराखेउ सब साखिजग जीति असुरसंग्राम ॥ ३०॥

सत्य कहो हे नाथ ये जो परम सुन्दर दोनों बालक आपके साथ हैं सो मुनि कुल तिलक हैं कि नृप कुल पालक हैं अर्थात् कोई मुनिपुत्र हैं वा कोई राजकुमार हैं १ मेरी दृष्टि में तो ऐसे देखि परते हैं कि जिस ब्रह्म को वेद नेति नेति कहतेहैं सोई मानो द्वयदेह धारण करिके अवतरा है २ क्योंकि सहजविराग रूप कहेंकेवल ब्रह्म परायण मेरा मन इनको देखिकर चन्द्र चकोरवत् थकित होता है ३ तातेंहे नाथ मैं आपसे सतिभाव से पूछता हूं सो आप सत्य सत्य कहिदेवें कुछ छिपाव न करें ४ कि इनको देखिकर अतिही प्रेम बढ़ता है और बरियाईं ब्रह्मानन्द को मन त्याग करता है ५ देखो अनन्य भाव का यह प्रभाव है कि ईश्वर अपनी माया के बल से अपने को कितनाही छिपावै परंतु अनन्य भक्तों को भगवत् मायाभी आवरण नहीं होती है अपने स्वामी को पहिचानिही लेते हैं ॥ प्रमाण ॥ मायाबलेनभवितापिनिगुह्यमानंपश्यंतिकेचिदनिसंत्वदनन्यभावाः नट कृत कपट बिकट खग राया नट सेवकहिन व्यापहि माया ॥ जबकि मत्स्य कूर्म बराहादि रूपों मेंभी अनन्य भक्तों ने अपने स्वामी को पहिचानि लिया तो देव मनुष्यादि रूपों में पहिचानि लेना कौन आश्चर्य्य है ऐसे जब राजा ने राम को सर्वेश्वर जानि लिया तब तो विश्वामित्र हंसिकर बोले कि हे राजा तुम्हारा बचन असत्य नहीं है ६ ये सब प्राणियों के प्राणहीं हैं ७ और रघुकुल की मणि महा राज दशरथ के पुत्र हैं मेरी यज्ञ रक्षा के निमित्त राजा ने मेरे को देदिये हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ राम लक्ष्मण इनके नाम हैं दोनों

भाई रूप शील गुणके धाम हैं संसार जानता है कि इनने अजय राक्षसों को जीति कर मेरी यज्ञ की रक्षा करी है ॥ ३० ॥

मुनितब चरण देखिकहराऊ। कहि न शकहुं निजपुण्यप्रभाऊ१
सुन्दर श्यामगौर दोउ भ्राता। आनन्द हूं केआनन्द दातार२
इनकीप्रीति परस्पर पावनि । कहि न जाइमन भावसुहावनि ३
सुनहु नाथकह मुदित विदेहू । ब्रह्मजीव समसहज सनेहू ४
पुनिपुनिप्रभुहिचितवनरनाहू । पुलकि गातउरअधिकउछाहू ५
मुनिहिप्रसंशिनाइपदसीशा । चलेउलिवायनगरअवनीशा ६
सुंदरसदन सुखद सबकाला । तहांबास लै दीन्ह भुवाला ७
करिपूजा सबविधि सेवकाई । गयेउ राउग्रह बिदाराई ८
दो० ऋषिन सहित रघुवंशमणि करिभोजन विश्राम ।
बैठेप्रभु भ्रातासहित 'दिवसरहा भरियाम ॥ ३१ ॥

यह सुनिकर राजा ने विश्वामित्र से कहा कि महाराज मैं आप के चरणों के देखिकर कुछ अपने पुण्यों का प्रभाव कहि नहीं सक्ता हूं १ कि ये सांवरे गोरे परम सुन्दर दोनो भाई आनन्द के भी आनन्द दाता हैं २ इन की परम सुहावनी परस्पर प्रीति महापावनि मनहीं में भावती है कही नहीं जाती है ३ ब्रह्म जीवके समान इन का स्वाभाविक परस्पर स्नेह है ४ ऐसे पुनि पुनि कहैं बारम्बार राम लक्ष्मण को राजा देखि देखिकर शरीर में रोम हर्ष और बड़ा उत्साह होता है ५ अनेक भांति मुनि की प्रसंशा करिके नगर को अपनेही साथ लिवाइ ले चाला ६ अति सुन्दर मंदिर सर्वकाल सुखदायक तहां वास करादिया ७ मुनि का सब प्रकार पूजन और सेवकाई करिके मुनि से विदा मांगिकर राजा अपने राज मंदिर को गया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तब तो समस्त ऋषियों समेत रघुवंश मणि श्री रामचन्द्र भोजन और विश्राम करिके लक्ष्मण समेत बैठे इतने में एक प्रहर दिन रहगया ॥ ३१ ॥

लखन हृदयलालसा विशेषी । जाइजनक पुरआइय देषी १
प्रभुभय बहुरिमुहिंसकुचाहीं । प्रगटनकहहिंमनहि मुसुकाहीं२
रामअनुज मनकी गतिजानी । भक्तबछलता हियहुलसानी ३
परमविनीत सकुचि मुसुकाई । बोलेगुरु अनुशासन पाई ४
नाथलखन पुरदेखन चहहीं । प्रभुसकोच उरप्रगट न कहहीं५
जो राउर अनुशासन पाऊं। नगर दिखाइ तुरत लै आऊं ६

सुनिमुनीश कह बचन सप्रीती । कसनराम राखहु तुमनीती ७
धर्मसेतु पालक तुमताता । प्रेमबिवस सेवक सुखदाता ८
दो० जाइदेखि अवहुनगर सुख निधान दोउभाइ ।
करहुसफल सबकेनयन सुन्दरबदन दिखाइ ॥ ३२ ॥

लक्ष्मण के हृदय अति लालसा हुई कि जाकर जनकपुर की रचना देखि आना चाहिये १ परंतु कुछ तो राम का भयमानते हैं और कुछ मुनि का संकोच करते हैं तातें प्रगट तो नहीं कहते मनहीं मन मुसुकाते हैं २ इस प्रकारकी लक्ष्मणके मनकी गतिकोजानिकर रामचन्द्रके हृदय में भक्तवत्सलता हुलसाइ उठी ३ तबतो अति नम्र वाणी से सकुचि मुसुकाइ और आज्ञा पाकर गुरु विश्वामित्र से रामबोले कि हे नाथ लक्ष्मण इस पुर को देखा चाहते हैं हृदय में आप की सकुच से प्रगट नहीं कहते हैं ५ जो आप का अनुशासन मिले तो नगर दिखाइकर शीघ्रही ले आऊं ६ यह सुनिकर बिश्वामित्र ने प्रेम समेत कहा कि हे राम तुम नीति कैसे न राखो ७ धर्म्म सेतु के तो तुम्हीपालक हो प्रेम के बश अनन्य सेवकों के सुख दायक हो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इच्छा पूर्वक जाकर समस्त नगर देखि आवो और अपने सुन्दर बदन दिखा कर संपूर्ण नगर के नर नारियों के नेत्रों को सफल करि आवो ॥ ३२ ॥

मुनिपदकमलबंदिदोउभ्राता । चले लोक लोचन सुखदाता १
बालक वृन्द देखिअतिशोभा । लगेसंग लोचन मनलोभा २
पीत बसनपरिकरकटि भाथा । चारुचाप शरसोहत हाथा ३
तनअनुहरित सुचन्दनखोरी । श्यामल गौरिमनोहर जोरी ४
केहरि कन्धरबाहु बिशाला । उरअति रुचिरनागमणिमाला ५
सुभग श्रोन सरसीरुह लोचन । बदन मयंक तापत्रैमोचन ६
कानन कनकफूल छबिदेहीं । चितवतचितहिचोरि जनुलेही ७
चितवनिचारुभ्रकुटि बरबांकी । तिलक रेखशोभा जनु चांकी ८
दो० रुचिर चौतनी सुभग शिर मेचक कुंचित केश ।
नखशिख सुंदर बंधुदोउ शोभा सकल सुदेश ॥ ३३॥

तबतो मुनिके चरणकमलों को बंदि करिके दोनों भाई नगर देखने को चले संपूर्ण प्राणियों के नेत्रों के आनन्द दाता १ स्थानसे निकसतेही पुरके बालकों के वृन्दअति शोभा देखि कर साथ होलिये नेत्र और मन लोभित होगये २ सुन्दर पीतांबरों से कटिन में निषंग कसेहैं और अति रुचिर धनुष बाण दोनो के हाथों में सोहते हैं३ तनतन के अनुहार सुन्दर श्रीखंड चन्दन की खोरि कहें लेपनि शोभा देरहीहैं ऐसी

सुन्दर सांवरी गोरी मनोहर दोनो भाइयों की जोरी है ४ केहरी के समान उन्नत स्कन्ध और बिशाल भुजाहैं हृदयो में अति रुचिर गजमुक्ताओं की माला बिराजती है ५ सुन्दर अरुण कमल से विशाल नेत्रहैं परिपूर्ण निर्मल चन्द्रमा के समान सुन्दर मुखत्रैताप मोचन हैं कानों में कनक कुंडल छबिदेरहेहैं जोदेखतेही मनको मोहते हैं ७ नेत्रों की चितवनि अति मनोहर और भृकुटी अति बांकी हैं तिनके मध्य से केश पर्य्यन्त ललाटों पर सुन्दर स्वेत तिलक की श्री समेत रेखा कैसी सोहती हैं मानों शोभाकी राशि पर चाकदे दिये हैं ८ ॥ दोहा ॥ अति रुचिर चतुःकोण टोपी सुन्दर मस्तकों पर सोहती है और सचिक्कन श्याम गह्वरे केशहैं नखते शिखा पर्य्यन्त सुन्दर दोनों भाईहैं जिनके अंगअंग की शोभा यथा योग्य है ॥ ३३ ॥

देखन नगरभूप सुतआये । समाचार पुर बासिन पाये १
धाये धामकाम सबत्यागी । मनहुं रंक निधिलूटन लागी २
निरखिसहज सुंदर दोउभाई । होहिं सुखीलोचनफलपाई ३
युवती भवन झरोखनलागी । निरखहिं रामरूप अनुरागी ४
कहहिंपरस्परवचनसप्रीती । सखिइन्हकोटिकामछविजीती ५
सुरनर असुरनागमुनिमांहीं । शोभाअसिकहुसुनियतनांहीं ६
बिष्णु चारिभुजविधिमुखचारी । विकट बेष मुखपंचपुरारी ७
अपरदेवअसकोजगआही । यहछबिसखिपटितरियहिजाही ८
दो० वयकिशोर सुखमासदन श्यामगौर सुखधाम ।
अंगअंग परवारिये कोटिकोटि शत काम ॥ ३४ ॥

जिनकमनीय किशोर राजकुमारों को राजा के साथ लोग देखि आयेहैं तेईदोनों राजपुत्र नगर के देखने को आयेहैं ये समाचार जो पुर बासियों ने पायेसोई अपने अपने कामोंको जैसाका तैसाही छोड़िछाड़ि कर कैसे शीघ्रदौरेहैं जैसे परम रंक कांचन राशि के लूटने के लिये दौरे १। २ सोसहज सुन्दर दोनो भाइयों के देखतेही अपने नेत्रो का फल पाकर सुखी होजातेहैं ३ युवती जन अपने अपने घरों के झरोखो में झांकर बड़े प्रेम समेत रामरूपको देखती हैं और परस्पर कहतीहैं किहेसखी इनने तौ कोटि कामहू की छबि जीति ली है ४। ५ देव मनुष्य दैत्य नाग मुनि त्रैलोक बासियों में ऐसीशोभा तो कहीं सुनीभी नहीं गई ६ विष्णु में लक्षण तो सब ऐसेही मिलतेहैं परंतु चतुर्भुज होनेसे यह मनोहरता नहीं बनती ब्रह्मा में सुन्दरता तोहै परंतु वृद्ध और चतुर्मुख हैं महादेव में लावण्यता तो अतिहीहै परंतु जटा भस्मादि से महारुद्र बेष और पंचमुख त्रिनेत्र हैं ७ जब इन्हीं तीनो अधीश्वरों में ऐसी शोभा नहीं मिलतीहै तो फिरि और देवता कौन ऐसाहै कि इनकी पटतरि जिस

की शोभा कही जावे ८ ॥ दोहा ॥ किशोर तो अवस्था हैं सुन्दरताके निवास आनन्द निधान हैं सोभला कामके समान कैसे कहेजावें इनके तो एक एक अंगपर सोकरोर काम निछावरि के योग्य हैं ॥ ३४ ॥

कहहु सखीअस को तनुधारी । जोनमोह यह रूप निहारी १
कोउसप्रेम बोली मृदुबाणी । जोमैं सुना सो सुनहुंसयानी २
ये दोउ नृप दशरथ के ढोटा । बाल मरालनि के कलजोटा ३
मुनिकौशिक मखकेरखवारे । इन रण अजय निशाचरमारे ४
श्यामगात कलकंजविलोचन । जो मारीच सुभुजमदमोचन ५
कौशिल्या सुतसो सुख खानी । रामनाम धनुशायक पाणी ६
गौर किशोर वेष बर काछें । कर शर चाप राम के पाछें ७
लक्ष्मण नाम राम लघु भ्राता । सुनुसखितासु सुमित्रा माता ८
दो० बिप्र काजकरि बंधु दोउ मग मुनि बधू उधारि ।
आये देखन चाप मख सुनिहर्षीं सब नारि ॥ ३५ ॥

कहो हे सखी ऐसा शरीर धारी कौन है जो इस रूप को देखि कर न मोहि जावे १ कोई सखी प्रेम समेत कोमल बाणी से बोली किहे सखियो मैंने जैसा इन को सुना है सो तुम सब सुनो २ किये दोनों अयोध्या धिपति महाराज दशरथ के कुमार हैं परम मनोहर बाल हंसों की सी इनकी जोरी है ३ ये दोनों बड़े बीर बलवान हैं जिनने संग्राम में महा अजय सुबाहुमारीच निशाचरों को मारिकर बिश्वामित्र की यज्ञ की रक्षा की है ४ तिनमें यह जो श्यामगात कमल लोचनहैं जिननेसुबाहु मारीच बिजय कियेहैं सोराजा दशरथकी पाटमहिषी कौशल्यारानीके पुत्र हैं राम ऐसा इसका पावन नाम है धनुषबाण लिये हैं ५ । ६ और यह जो गौरकिशोर सुन्दर वेष बनाये हैं हाथों में धनुषबाण लिये राम के पांछे चलते हैं इनका लक्ष्मण ऐसा शुभ नाम है राम के अनुज छोटे भाई हैं इनकी माता रानी सुमित्रा नाम है ७ । ८ दोहा ॥ ये दोनों भाई बिश्वामित्र की यज्ञकी रक्षा करि और मार्ग में गौतमऋषि की भार्य्या जो पति के शापसे शिलाहुई परीरहे उसका शाप मोचन करिके पति के धाम को पंठाइ दिया अब यहां धनुष यज्ञ सीतास्वयम्बर सुनि कर देखनेको आये हैं यह सुनि कर तो संपूर्ण सखी हर्षित होगई ॥ ३५ ॥

देखिरामछबिकोउअसकहहीं । योग्यजानकिहियहबरअहहीं १
जोसखिइनहिं देखिनरनाहू । प्रणपरिहरि हठि करै बिवाहू २
कोउ कह ये भूपति पहिचाने । मुनि समेत सादर सनमाने ३

सखिपरंतुप्रणराउनतजही। बिधिबसहठिअबिबेकहिभजही४
कोउकहइजोभलअहैबिधाता। सबकहंसुनियउचितफलदाता ५
तौ जानकिहि मिलिहि बरएहू। नाहिन आलि यहां संदेहू ६
जोबिधिबस असबनै संयोगू। तौ कृत कृत्य होंहिं सबलोगू७
सखि हमरे अतिआरतितातैं। कबहुं किये आवहिंयहि नातैं८
दो० नाहिं तो हम कहं सुनहुं सखि इन कर दरशन दूरि।
यहसंघट तब होइजब पुण्यपुरा कृत भूरि ॥ ३६ ॥

ऐसी मनोहर राम की छबि को देखि कर कोऊ यह कहने लगी कि जानकी के योग्य तौ यही बर है १ एक बोली कि हे सखी जो कहूं राजा इनको देखिपावै तौ अवश्य अपने प्रण को छोड़ि कर इन्ही के साथ जानकी का विवाहकरिही देवै२ किसीने कहा इन्हें तौ राजा ने भलेप्रकार पहिचाने हैं और कौशिकमुनि के साथबड़े आदर से सनमाने हैं ३ परंतु हे सखी सत्यब्रत राजा प्रण तौ नहीं तजैगा दैवबस हठ करि अपने अबिवेकही को निबाहैगा ४ कोऊ बोली जो बिधाता भला है और सब को उचित फलहीका दाता सुना जाता है तौ तौ जानकी को यहीबर मिलैगा इस में कुछ हे आली संदेह ही नहीं है ५ । ६ एक बोली कि जो दैवाधीन यह संयोग बनि जावै तौ हम सब पुरवासी कृत कृत्य होजावें ७ हमारे बड़ी आरतता यातें है कि जो इनका संबन्ध यहां होजावे तौ इस नाते से ये यहां फिरि फिरि भी आया करेंगे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ नहीं तौ हे सखी इनकादरशन हमको दुर्लभ है सो यह संयोग तौ तब होवै जब हमारे पूर्व जन्मोंके बड़े सुकृतोंको उदयहोवै ॥ ३६॥

बोलीअपरकहेहु सखिनीका। यहिबिवाहअतिहितसबहीका१
कोउकह शंकरचाप कठोरा। ये श्यामल मृदु गात किशोरा२
बड़ असमंजस यहेसयानी। यहसुनि अपर कहै मृदुबानी३
सखिइनकहंकोउकोउअसकहहीं।बड़प्रभावदेखतलघुअहहीं४
परसि जासु पदपंकज धूरी। तरी अहिल्या कृत अघभूरी ५
सोकिरहाहिबिनुशिवधनुतोरैं। असिप्रतीतिपरिहरियनभोरैं ६
जिहिबिरंचिरचिसीयसंवारी। तिहिंश्यामल बररचाबिचारी७
तासु बचन सुनिसब हरषानी। ऐसहि होहु कहहिं मृदुबानी८
दो० हिय हरषहिं बरषहिं सुमन सुमुखि सुलोचनि वृंद।
जाहिं जहां जहंबंधुदोउ तहंतहं परमानन्द ॥ ३७ ॥

यह सुनि कर और बोली कि सखी तूने सत्य कहा इस बियाह में तो हमसब पुर बासियों का अतिही हित है १ कोऊ बोली सो कैसे हो सकता है कहां तो महा कठोर शिवशंकर का दिव्य धनुष और कहां येश्याम सुन्दर परम सुकुमार कोमल गात किशोर अवस्था ॥ २ ॥ बड़ा असमंजस यही है हे सयानी यह सुनि कर और सखी समस्त संदेह निवारण करती हुई बोली ३ कि हे सखियो इस बात की तो तुम कोई चिन्ताही मति करो क्योंकि इनको कोई कोई विज्ञजन ऐसा कहते हैं कि ये देखनेही में छोटे हैं प्रभाव में अत्यान्त बड़े हैं ४ जिनके चरण कमलों की रज को स्पर्श करिके परम पातक युक्त अहिल्या विशुद्ध हो गई ५ सो भला इस शिवके धनुष तोरे बिना कैसे रहेगा यह बिश्वास तो कोई भूलिकर भी त्यागन मति करो ६ और जिस बिधाता ने ऐसी छबिवन्त रचि के सीता को संवारा है उसी बिधाता ने उसके लिये यही श्याम सुन्दर वर भी विचारा है ७ ऐसे उस के संदेह हरण वचन सुनि कर संपूर्ण हर्षित होगईं और परम कोमल बाणी से एवमस्तु कहनेलगीं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इस प्रकार राम लक्ष्मण की शोभा को देखि कर सब हृदय में हर्षित होती हैं और झरोखों से पुष्प वर्षा करती हैं ऐसेही जहां जहां दोनो भाई जाते हैं तहां तहां ऐसेही परम आनन्द होते जाते हैं ॥ ३० ॥

पुर पूरब दिशिगे दोउभाई । जहां धनुष मख भूमि बनाई १
अति बिस्तार चारु गच ढारी । बिमल वेदिका रुचिर संवारी २
चहुंदिशि कंचन मंच बिशाला । रचे जहां बैठैं महिपाला ३
तिहि पाछैं समीप चहुं पासा । अपर मंच मंडली विलाशा ४
कछुक ऊंचि सब भांति सुहाई । बैठहिं नगर लोग जहंआई ५
तिनके निकट बिशाल सुहाये । धवलधाम बहुबरण बनाये ६
जहां बैठि देखहिं पुर नारी । यथा योग्य निज कुलअनुहारी ७
पुरबालककहिकहिमृदुबचना । सादरप्रभुहिंदिखावहिरचना ८
दो० सब शिशु यहि मिसि प्रेम बश परसि मनोहर गात ।
तनपुलकाहिं अतिहर्षहिय देखिदेखिदोउभ्रात ॥ ३८ ॥

इस प्रकार समस्त पुर बासियों को आनन्द देते हुये पुर की पूर्व दिशा को दोनों भाई गये जहां धनुष यज्ञशाला बनी है १ अति लम्बा चौड़ा जिसका विस्तार और सुन्दर गचढार ऐसी तो बीचोबीच में उज्ज्वल वेदी धनुष के रखने की बनीहै २ तिसके चारो पास सुवर्ण मय बिशाल मंचान रचे हैं जहां राजा लोग बैठैंगे ३ तिन के पीछे निकटही और दूसरी मंच मंडली बनी है राजाओं के मंचानों से कुछ ऊंची चारों ओर अति सुहाई हैं जिन पर बैठि कर पुरबासी देखैंगे । ४ । ५ तिस

के पीछे निकटही चारो पास अति बिशाल सुहाये सुन्दर धाम विचित्र बनाये हैं जिन में बैठि कर समस्त पुरबासिनी यथा योग्य अपने अपने कुल के अनुहार देखैंगी ॥ ६ । ७ ॥ ऐसे पुरबालक कोमल वचन कहि कहि कर आदर समेत स्वामी को यज्ञ शाला की रचना को दिखावते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ संपूर्ण बालक इसी ओखे से प्रेम के बश स्वामी के अति मनोहर दिव्य मंगल शरीर को छू छू कर पुलकित शरीर और हर्षित मन दोनो भाइयों को देखि देखि कर होते हैं ॥ ३८ ॥

शिशु सब राम प्रेम बश जाने । प्रीति समेत निकेत बखाने १
निजनिजरुचिसब लेहिंबुलाई । सहित सनेहजाहिंदोउभाई २
राम देखावहिं अनुजहिंरचना । कहि मृदुमधुर मनोहरबचना ३
लवनिमेष महं भुवन निकाया । रचै जासु अनुशासन माया ४
भक्तहेत सोई दीनदयाला । चितवतचकित धनुष मखशाला ५
कौतुक देखि चले गुरु पाहीं । जानि बिलंब त्राश मन माहीं ६
जासु त्राश डर कहं डर होई । भजन प्रभाव देखावत सोई ७
कहिबातैं मृदु मधुर सुहाई । किये बिदा बालक बरियाई ८
दो० सभय बिनीत सप्रेम अति सकुच सहित दोउभाइ ।
गुरु पद पंकज नाइ शिर बैठे आयसु पाइ ॥ ३९ ॥

जब श्री रामचन्द्र ने सब बालकों को प्रेम के बश जाना तब तो प्रीति पूर्वक यज्ञ शाला के निकेत कहें बैठकों की रचना को अतिही बखाना प्रशंसा किया १ अपनी अपनी रुचि के अनुकूल जहां जहां जो बुलाते हैं तहां तहांप्रेम समेत दोनों भाई चले जाते हैं २ और राम चन्द्र आप लक्ष्मण को समस्त रचना दिखाते हैं अति कोमल अति मधुर अति मनोहर वचन कहि कहि बताते हैं ३ देखो किलव निमेष मात्रही में अनन्त कोटि ब्रह्माण्डों के समूहको जिसकी आज्ञासे उसी की माया रचि देती है अपने भक्तों की प्रसन्नता के निमित्त सोई सर्वेश्वर दीनदयाल इसयज्ञ की रचना को चकित चित्त देखते हैं ४ । ५ इस प्रकार समस्त नगर का कौतुक देखि कर गुरु के पास को चले विलम्ब बहुत हुआ जानि कर मन में बड़ी त्राश है ६ जिस की त्राश से डर को भी डर होता है सो ईश्वर अपने भजन के प्रभाव को दिखावता है ॥ येयथामांप्रपद्यंतेतांस्तथैवभजाम्यहं ७ फिर तो सुन्दर कोमल मनोहर वचन कहि कहि कर बालकों को बरियाई बिदा किया ॥ ८ ॥ देहा ॥ और आप दोनो भाई भयसहित अति नम्र प्रेम और संकोच समेत विश्वामित्र के चरण कमलों को प्रणाम करि आज्ञा पाकर बैठि गये ॥ ३६

निशि प्रवेश मुनिआयसुदीन्हा। सबहीं संध्या बंदनकीन्हा १
कहतकथा इतिहास पुरानी। रुचिररजनि युगयाम सिरानी २
मुनिवर शयनकीन्हि तबजाई। लगे चरण चापन दोउभाई ३
जिनकेचरण सरोरुह लागी। करतबिबिध जपयोग बिरागी ४
ते दोउ बंधु प्रेम जनु जीते। गुरुपद कमल पलोटत प्रीते ५
बारबार मुनि आज्ञा दीन्ही। रघुबर जाइ शयन तब कीन्ही ६
चापत चरण लखण मनलाये। सभय सप्रेम परम सचुपाये ७
पुनिपुनि प्रभुकह सोवहुताता। पौढ़े उरधरि पद जलजाता ८
दो० उठे लखन निशि बिगत सुनि अरुण शिखा धुनिकान।
गुरु तें पहिले जगतपति जागे राम सुजान॥ ४०॥

निशा प्रवेश जानिकर मुनिनेआयसु दियासोई सबने संध्या कालका भगवद् बंदनक्रिया १ तिस पीछे इतिहास पुराणों की कथा कहते२ अतिरुचिर रात्रिद्वय प्रहर बीती २ तबतो बिश्वामित्र ने जाकर शयन करी और राम लक्ष्मण दोनों भाई चरण चापने लगे ३ जिनके चरण कमलों के निमित्त अनेक भांति के जप योग महा बिरागी करते हैं ते दोनो भाई मानों प्रेम ने जीति लिये हैं कि बिश्वामित्र के चरण कमल बड़ी प्रीति से चापते हैं ॥ ४। ५ ॥ जब बारंबार मुनि ने आज्ञा दी तब श्री राम चन्द्र ने जाइ कर शयन की ६ तब अतिही मन लगाये लक्ष्मण श्री रामचन्द्र के चरण चापने लगे स्वामी के चरण परम कोमल और अपने हाथ कठोर जानिकर भय मानते हैं और प्रेम समेत परम आनन्द में मग्न होते जाते हैं ७ जब बारबार राम चंद्र ने कहा कि हे तात अब थोरी राति रही है बिश्राम करो तब प्रभु के चरण हृदय में धारण करिके जा पौढ़े॥ ८॥ दोहा ॥ रात्रि के अवसान में सब से पहिले लक्ष्मणही जगे अरुण शिखा है अरुण चूड़ अर्थात् कुक्कुट का शब्द सुनि कर उठे क्योंकि छोटे का धर्म है कि बड़े से पीछे सोवे और पहिले जगे इसी कारण गुरू से पूर्व रामचंद्र जगत्पति परम सुजान जागे ॥ ४० ॥

सकलशौच करिजाइनहाये। नित्यनिबाहि मुनिहिंशिरनाये १
समय जानि गुरु आयसु पाई। लेन प्रसून चले दोउ भाई २
भूप बाग बर देखेउ जाई। जनु बसंत ऋतु रही लुभाई ३
लागे बिटप मनोहर नाना। बरण बरण बरबेलि बिताना ४
नवपल्लव फलसुमन सुहाये। निज संपति सुररूख लजाये ५

चातक कोकिल कीरचकोरा । कूजतबिहंग नचतकल मोरा ६
मध्य बाग सरशोह सुहावा । मणिसोपान बिचित्र बनावा ७
बिमलसलिल सरसिज बहुरंगा । जलखग कूजतगुंजतभृंगा ८
दो० बाग तड़ाग बिलोकि प्रभु हरषे बंधु समेत ।
परम रम्य आराम यह जोरामहिं सुख देत ॥ ४१ ॥

समस्त शौच क्रिया करिके स्नान किये और नित्य कर्म निबाहि कर मुनि को दण्डवत् किये १ तिस पीछे पूजा का समय जानि और गुरु की आज्ञा पाकर फूलों के लेने को दोनों भाई चले २ अति सुन्दर राजा का बाग जा देखा मानो इस में बसंत ऋतु ही लुभाइ रही है ३ जिस में अति मनोहर नाना प्रकार के वृक्ष लगे हैं जिन पर बरण बरण की सुन्दर बेलियों का फैलाव है ४ और जिन में नवीन कोमल पल्लव हैं और मधुर मनोहर फल हैं सुन्दर सुगन्धित पुष्प हैं जो अपनी संपति के सामुहें देव वृक्षों को भी लजावते हैं ५ और जिनपर चातक पपीहे और कोकिला और कीर कहें शुक और चकोर इत्यादि पक्षी कूजत हैं और सुन्दर मयूर नृत्यकरते हैं ६ बाग के बीचों बीच अति सुहावन सरशोहता है जिस के मणिमय सुन्दर सोपान बने हैं और अति विचित्र जिस का बनाव है ७ निर्मल मधुर शीतल जिस में जल भरा है जिस जल में भांति भांति के शरद ऋतु के प्रभाव से कमल फूलि रहे हैं जिन कमलों पर सुन्दर जलपक्षी कूजते हैं और भ्रमर गुंजते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसा सुन्दर बाग और तड़ाग देखिकर रामचन्द्र लक्ष्मण समेत हर्षित होगये अति रम्य और अति धन्य यही आराम है जोअपनी शोभा से राम को आनन्द देता है ॥ ४१ ॥

चहुं दिशिचितयपूंछिमालीगन । लगेलेनदलफूल मुदितमन १
तिहि अवसर सीतातहं आई । गिरिजा पूजनजननि पठाई २
संग सखी सबसुभग सयानी । गावहिं गीत मनोहरवाणी ३
सरसमीप गिरिजागृहशोहा । बरणि नजाइदेखिमन मोहा ४
करि मज्जनसर सखिनसमेता । गई मुदितमन गौरिनिकेता ५
पूजाकीन्ह अधिक अनुरागा । निजअनुरूप सुभगवरमांगा ६
एक सखी सियसंग बिहाई । गई रही देखन फुलवाई ७
तिहिंदोउ बंधु बिलोके जाई । प्रेमबिवश सीतापहं आई ८
दो० तासु दशा देखी सखिन्ह पुलक गात जल नयन ॥
कहु कारण निजहर्ष कर पूछहिं सबमृदु बयन ॥ ४२

चारों ओर दृष्टि करि बाग के रक्षक माली गणों से पूछिकर प्रसन्न मन पत्रपुष्प लेने लगे १ उसी समय जगज्जननी जनकात्मजा सीता भी उस बाग में आईं गिरिजा पार्वती के पूजन के निमित्त माता की पठाई २ संग में जो सखी सहेली हैं सो सब सुभग हैं और सयानी हैं मनोहर वाणी से सुन्दर गीत गावती हैं ३ सर के निकटही गिरिजा का मंदिर शोहता है जिस को देखि कर सब का मन मोहता है ४ सखिन समेत सरस्नान करिके अति प्रसन्न मन गिरिजा के मंदिर में गईं ५ बड़े प्रेम समेत गौरी का पूजन भगवान्निमित्त किया और अपने अनुरूप गुण रूप शील संपन्न सुन्दर वर मांगा ॥ गुणेनरूपेनविलाशचेष्ठितैः सदातवैवोचितयातवश्रिया ६ ॥ एक सखी उनमें से बाग देखने को गई रहै ७ उसने दोनों भाइयों को जो देख प्रेमानन्द से भरी सीता के पास दौरी आई ॥ ८ ॥ दोहा ॥ उस की आनन्द दशा जो सब ने देखी कि पुलकायमान तो सब अंग हैं और नेत्रों में आनन्द का जल है यह दशा देखिकर सब सखी पूछती हैं कि तू अपने हर्ष का कारण तो बता कि ऐसी प्रफुल्लित क्यों है ॥ ४२ ॥

देखन बाग कुंवर द्वौ आये । बय किशोर सब भांति सुहाये १
श्याम गौरकिमिकहहुंबखानी । गिराअनयन नयनबिनुबानी २
सुनि हरषींसबसखी सयानी । सियहियअतिउतकंठाजानी ३
एककहानृप सुतसोइआली । सुने जो मुनि संग आयेकाली ४
जिन्ह निज रूपमोहनीडारी । कीन्हे स्वबसनगरनरनारी ५
बरणत छबिजहंतहंसबलोगू । अवशि देखिये देखन योगू ६
तासु वचनअतिसियहिसुहाने । दरशलागिलोचनललचाने ७
चलीअग्रकरिप्रियसखिसोई । प्रीति पुरातन लखैनकोई ८
दो० सुमिरि सीय नारद वचन उपजी प्रीतिपुनीत ।
चकितबिलोकतिसकलदिशि जनुशिशुमृगीसभीत ४३

सुनो हे सखी दोऊ द्वय कुमार इस बागके देखने को आये हैं किशोर तो उन की अवस्था है और सब भांति सलोने सुहाये हैं १ सांवरे गोरे दोनो कैसें बखानि कर कहे जावें कि जो वाणी कहि सक्ती है सो तो नेत्र नहीं रखती है कि देखिकर कहै और नेत्र जिन्होंने देखेहैं सो बोलि नहीं सक्ते हैं जो वरणन करैं २ ऐसे सुन्दरसुहाये उस सखी के वचन सुनिकर सब सखीं हर्षित होगईं सीता के मनकी भी लालसा जानिकर ३ किसी एक ने कहा हे सखियो ये सोई राजकुमार हैं जो विश्वामित्र मुनि के साथ काल्हि यहां आये सुने हैं ४ जिन्हौ ने अपने रूप की मोहनी डारिकर नगर के नरनारी ऐसे अपने वशकरिलिये हैं कि जो जहां हैं सो सब उन्हीं की छबि की प्रशंसा करि रहे हैं

तातैं इन को तौ अवश्य देखाही चाहिये क्योंकि देखनेही के योग्यहैं ५ । ६ तिस सखी के बचन तौ सीता को अति ही सुहाये और अपने स्वामी के दरशन को नेत्र भी ललचाये ७ तब तौ जो सखी देखि आई रहे उसी को अग्रसर करिके सब समेत सीता चली इस भांति से कि सनातन प्रीति को कोई न पहिचानि लेवै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ नारद के वचनों का स्मरण करके परम पुनीत प्रीति उत्पन्न हुई तामें मग्न चकित हुई चारों दिशाओं को कैसे देखती हैं जैसें भय भीत बालमृगी देखै ॥ ४३ ॥

कंकणकिंकिणिनूपुरधुनिसुनि।कहतलषणसनरामहृदयगुनि १
मानहुंमदनदुंदुभीदीन्ही । मनसाविश्वविजयकह कीन्ही २
असकहिफिरिचितयेतिहिओरासियमुखशशिभेनयनचकोरा ॥
भयेबिलोचनचारुअचंचल । मनहुं सकुचिनिमितजेदृगंचल ४
देखिसीयशोभा सुखपावा । हृयद सराहत वचन न आवा ५
जनुबिरंचिसबनिजनिपुणाई । विरचिविश्वकहंप्रगटदिखाई ६
सुंदरता कहं सुंदरकरई । छबि गृह दीप शिखाजनुबरई ७
सबउपमा कविरहे जुठारी । किहिपटतारिय विदेह कुमारी ८
दो० सिय शोभा हिय वरणि प्रभु आपनि दशा विचारि ।
बोलेशुचिमन अनुज सन वचनसमय अनुहारि ॥४४॥

यहां जो सखिन समेत सीता समीप आई सोई कंकण कड़ा ककना किंकिणी क्षुद्र घंटिका कटि भूषण नूपुर चरण भूषण इन की मधुर मनोहर धुनि सुनतेही रामचन्द्र ने लक्ष्मण से कहा १ कि कैसा यह मनोहर शब्द होता आता है मानो नगारा देकर विश्व विजय को कामही जाता है २ ऐसे कहिकर जो उस दिशा को देखा सोई रामचन्द्र के नेत्र सीता के मुख चंद्रमा के चकोर होगये ३ अति सुन्दर राम के नेत्र कैसे अचंचल कहैं एकटकरहिगये हैं मानो सकुचि करि निमि राजही रामचंद्र की पलकों को छोड़िगये हैं ४ परम अनूपम सीता की शोभा को देखिकर राम ने बड़ा सुख पाया अति अद्भुत अलौकिक शोभा को हृदय में ही सराहा मुख से कुछ भी बचन न आया ५ मानो ब्रह्माने अपनी संपूर्ण निपुणता रचिकर विश्व को प्रत्यक्ष दिखादी है ६ सुन्दरता को भी जिस की सुन्दरता सुन्दर करती है और छवि के मंदिरमे मानो दीपशिखाही जरतीहै ७ उपमातौ कवीश्वरों नेसंपूर्ण उच्छिष्ट करि राखी है तिन की पटतरि सीता को कैसें कहा जावै ॥ ८ ॥ दोह ॥ इस प्रकार सीता की शोभा हृदय ही में वर्णन कर और अपनी प्रेम मग्नदशा विचारिकर पवित्र मन से भाई लक्ष्मण से समय के समान बोले ॥ ४४ ॥

तातजनक तनया यहसोई । धनुषयज्ञ जिहि कारण होई १
पूजन गौरि सखीलै आई । करति प्रकाश फिरतिफुलवाई २
जासुबिलोकि अलौकिकशोभा । सहज पुनीतमोरमनछोभा ३
सोसब कारण जानबिधाता । फरकहिं सुभगअंग सुनुभ्राता ४
रघुबंशिन कर सहजसुभाऊ । मन कुपंथपगधरहिं न काऊ ५
मोहिं अतिशयप्रतीति मनकेरी । जिहिंसपनेहुं परनारिनहेरी ६
जिनकीलहहिंन रिपुरणपीठी । नहिंलावहिं परतियमनडीठी ७
मंगनलहहिं न जिनके नाहीं । ते नर बर थोरे जग माहीं ८
दो० करत बतकही अनुज सन मन सिय रूप लुभान ।
सुखसरोज मकरंदछबि करत मधुप इव पान ॥ ४५ ॥

हे लक्ष्मण यह तौ सोई जनक तनया है जिसके निमित्त यह धनुष यज्ञ होती है १ गौरी के पूजने को सखी यहां लेआई हैं सो इस फुलवाई में प्रकाश करती फिरती हैं २ जिसकी अलौकिक शोभा को देखिकर सहज पवित्र मेरा मन क्षोभित होता है ३ सो कारण तौ दैवजानै परंतु मेरे सुभग सब अंग फरकते हैं ४ हमारे रघु वंशियों का तौ सहज सुभावही है कि उनका मन कुमार्ग में कभी पाउं नहीं धरता है ५ तिस में मेरेको तौ अति ही अपने मनकी प्रतीति है कि जिसने स्वप्न में भी पराई स्त्री नहीं देखीहै ६ जिन संभवित पुरुषों को रण संग्राम में शत्रुपीठि नहीं देखतेहैं और जे मन करि के भी पर नारियों पर दृष्टि नहीं लाते हैं ७ और जिनके द्वार पर याचक जन आकर बिमुख नहीं जातेहैं ऐसे उत्तम पुरुष हे लक्ष्मण इस संसारमें थोरेही होतेहैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसे बातैंतौ भाई से करते हैं और मन सीताजीके रूप परलुभाइ रहाहै सीता के मुख कमलकीछबि मकरंद को जिनका मन भ्रमरके समान पानकरि रहाहै ॥ ४५ ॥

चितवतिचकितचहूंदिशिसीता । कहंगयेनृपकिशोरमनचीता १
जहंबिलोकिमृगशावकनयनी । जनुतहंबरषकमलसितश्रेणी २
लताओट तब सखिन लखाये । श्यामल गौर किशोर सुहाये ३
देखिरूप लोचन ललचाने । हर्षे जनु निज निधि पहिचाने ४
थके नयनरघुपति छबि देखी । पलकनहूं परि हरी निमेषी ५
अधिकसनेह देहभइभोरी । शरदशशिहि जनुचितवचकोरी ६
लोचन मगु रामहिं उरआनी । दीन्हे पलक कपाट सयानी ७

जबसियसखिनप्रेमबशजानी।कहिनसकहिंकछुमनसकुचानी ८
दो० लता भवन तें प्रकट भे तिहि अवसर दोउ भाइ।
निकसेजनु युगबिमलविधुजलद पटलविलगाइ॥४६ ॥

उहा सीता चकित चित्त चारों ओर देखती हैं कि राज कुमार किधर गये मन में बड़ी चिन्ताहै कि चलेतो न गये १ ऐसी दुचित्तई में अबजिस लता को बाल मृगनयनी सीता सखियों समेत पद्म पत्रायताक्षों के तिरीछे कटाक्षों से देखतीहैं तहां मानों इक इक कल कोमल स्वेत कमलों की माला की मालाही बर्षि परती हैं २ इतने में सुन्दर सुहाये सांवरे गोरे दोनों राज किशोर लता पटल की ओट में सखियों ने सीता को लखादिये ३ समस्त सौंदर्य्य धाम रामरूप के देखतेही बैदेहीं के नेत्र ललचाये और हर्षित होगये मानौ निज निधि कहें श्री निधि अपने स्वामीही पहिचानि लिये ॥ श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रीनिधिः श्रीविभावनः ४ राम चंद्र की छबि देखतेही नेत्र तौ थकित होरहे और पलकभी निमेषों को भूलि गये ५ स्नेहकी आधिक्यता से देह भी भोरी होगई जैसे शरद के चंद्रमाको देखिकर चकोरी की दशाहोती है ६ फिरि सखियों की सकुचसे नेत्रों के मार्ग राम की मधुर मनोहर मूर्त्ति को हृदय में लाकर परम सयानी सीताने पलकों के कपाट देलिये ७ जब सखियोंने राज कुमारी सीताको परबश देखा तबतौ सबसखी सकुचि गईं कुछ कहि नहीं सकती हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ताही समय लता ओट से दोनों भाई कैसे प्रगट हुये हैं मानो घटा पटल से द्वय परिपूर्ण निर्मल चंद्रमाही निकसि आये तबतौ निरावरण दोनों भाइयों की छबि को देखिकर कोई सखी सखियों से कहती हैं ॥ ४६ ॥

शोभा सींव सुभग दोउबीरा। नील पीत जल जात शरीरा१
काकपक्ष शिर सोहत नीके। गुच्छा बिचबिच कुसुमकलीके २
भालतिलक श्रम बिंदसुहाये। श्रवणसुभगभूषण छबिछाये ३
बिकट भ्रकुटि कच घूंघरवारे। नव सरोज लोचन रतनारे ४
चारु चिबुक नाशिकाकपोला। हास बिलाश लेत मनमोला५
मुखछबिकहिनजातिमोहिपाहीं। जोबिलोकिबहुकामलजाहीं६
उरमणिमाल कंबुकलग्रीवा। कामकलभ करभुजबल सींवां७
सुमन समेत बामकर दोना। सांवरकुंवर सखी सुठिलोना ८
दो० केहरि कटिपटपीत धर सुखमा शील निधान।
देखि भानुकुल भूषणहिं बिसरा सबहिंअपान॥ ४७ ॥

देखो हे सखियों शोभाकी मर्य्याद सुन्दर दोनो भाई हैं नीले पीरे कमल के बरण

मनोहर गात हैं १ शिर पर दोनो के काकपक्ष सोहते हैं ॥ काकपक्ष धराबुभा ॥ काकपक्ष अलका वली भेद विशेष तिन के बीच बीच फूलों के मनोहर गुच्छे लटकते हैं २ ललाटों पर सुन्दर श्वेत पीत तिलक और श्रम बिन्दु विराजते हैं सुन्दर श्रवण कुण्डलों की छबि से छाये हैं ३ भृकुटी बांकी और घुंघरारे केश हैं नवीन अरुण कमलों के समान रतनारे नेत्र हैं ४ अति सुन्दर नासिका कपोल और चिबुक देश हैं और हास का बिलास तो मन को मानो मोलही लिये लेतो है ५ मुख की छबि तो कही ही नहीं जाती है जिसको देखि कर अनेक काम लजाते हैं ६ उरों में सुन्दर गज मुक्ताओं के हार पहिरे हैं शंख के समान त्रैरेखा युक्त ग्रीवां हैं काम कुंजर के करके समान भुजा बल की सीवां हैं ७ फूलों समेत बांये हाथों में दोने लिये हैं तिस में सांवरा कुवर तो हे सखी अतिही सलोना है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ केहरि की सी अति सूक्ष्म कटि है पीत पट धारण किये हैं सुन्दरता और शील के सागर हैं ऐसे भानुकुल भूषण श्री राम चन्द्र को देखि कर सब सखियों को आप भूलि गया ॥ ४७ ॥

धरिधीरज इक सखी सयानी। सीतासन बोली गहिपानी १
बहुरि गौरिकर ध्यान करेहू। भूप किशोर देखि किनिलेहू २
सकुचि सीय तब नयनउघारे। सम्मुख दोउ रघुसिंह निहारे ३
नखशिखनिरखिरामकीशोभा।सुमिरिपितापनमनअतिछोभा ४
परबससखिनलखीजबसीता। भयेउगहरुसबकहहिंसभीता ५
पुनिआउबयहिबिरियांकाली।असकहिमनबिहसीइकआली ६
गूढ़गिरा सुनि सियसकुचानी। भयेउ बिलंब मातुभयमानी ७
धरिधीरज रामहिं उरआनी। फिरी अपुनपौ पितुबस जानी ८
दो० देखन मिस मृग बिहंग तरु फिरति बहोरि बहोरि।
निरखिनिरखि रघुबीरछबि बाढ़त प्रीतिनथोरि ॥ ४८ ॥

तब तो एक सयानी सखी धीरज धरि सीता से हाथ पकरि कर बोली १ कि हे सीते गौरी का ध्यान फिरि कीजियो अभी इन राज कुमारों को क्यों नहीं देखिलेती हो २ यह सुनि कर सीता ने सकुचि कर जो नेत्र खोले तो सन्मुख दोनो रघुसिंह खड़े देखे ३ नख से शिखा पर्य्यंत रामकी शोभा को देखि पिता के प्रण का स्मरण करके मन को बड़ा क्षोभ हुआ ४ जब सखियों ने सीता को प्रेम में परबस लखा तबतो सभीत कहने लगीं कि बड़ा बिलम्ब हुआ ५ कालि फेरि इसी बेला आवैगीं ऐसे कहिकर एक सखी मनही में मुसुकानी ६ उस की गूढ़ वाणी सुनि कर सीता मन में सकुचाइ गई और बिलम्ब जानि कर माता की भय भी मानी ७ धीरज धरि और राम की माधुरी मूर्त्ति को हृदय में लाकर तहां ते फिरी और आपे को पिता के बस

जाना ॥ ८ ॥ दोहा ॥ बाग के बृक्ष और मृग बिहंगों के देखने के औखे से बार बार फिरती है और श्रीरघुबीर की छबि को देखि देखिकर अतिही प्रीतिबढ़ती हैं ॥ ४८ ॥

जानिकठिनशिवचापबिसूरति । चलीराखिउरश्यामलमूरति १
प्रभु जब जात जानकी जानी । सुख सनेह शोभा की खानी २
परमप्रेम मयमृदु मसिकीन्ही । चारुचित्रभीतरलिखिलीन्ही ३
गई भवानी भवन बहोरी । बंदि चरण बोली कर जोरी ४
जयजयजय गिरिराज किशोरी । जयमहेश मुखचंद्र चकोरी ५
जयगजबदनषडाननमाता । जगतजननि दामिनिद्युतिगाता ६
नहिं तवआदि मध्य अवसाना । अमित प्रभाववेदनहिजाना ७
भवभवबिभवपराभवकारिणि।बिश्वबिमोहनिस्वबसबिहारिणि
दो० पति देवता सुतीय महं मातु प्रथम तव रेख ।
महिमा अमितन कहिसकहिं सहसशारदा शेष ॥४९ ॥

प्रेम अवस्था में भक्त जनों को सर्व सामर्थी स्वामी के प्रभाव के बिस्मरण होजाता है केवल स्वामी के मनोहर अंगों की सुकुमारताही चित्त में निबास करती है याही ते श्री जानकी शिवके धनुष को परम कठोर और राम चन्द्र को अति कोमल जानि बिसूरती हुई कहें चिन्ता करती हुई सुन्दर श्याम राम मूर्त्ति को हृदय में धारण कर घर को चली १ रामचन्द्रने भी आनन्द प्रेम और शोभा की खानि सीता को जब जाते जाना २ तब तो परम प्रेम रूप अति कोमल कज्जल से उनकी मनोहर मूर्त्ति को अपने चित्त के भीतर लिखि लिया ३ फिरि सीता अति आरत होकर गिरिजा भवानी के मंदिर में जाकर चरण बंदि हाथ जोरि कर बिनती करने लगी ४ हे गिरि राज कुमारी तेरी जय होइ जय होइ जय होइ हे शिव मुख चन्द्र चकोरी तेरी जय होइ ५ हे गज बदन गजानन और कार्त्तिकेय षड़ानन की माता तेरी जयहोइ हे जगदंबिके तेरी जय होइ हे विद्युद्वरणी तेरी जय होइ ६ न तो तेरी आदि है न तेरा मध्य है न तेरा कभी अंत है तेरे अमित प्रभाव को वेद भी नहीं जानते हैं ० तुही संसार को जन्मती है पालन करती है और संहार कारिणी है विश्व बिमोहनि और स्वेच्छाबिहारिणी है ॥ ब्रह्मेन्द्ररुद्रमुनिमोहनशीललीलांमायांपरांसमधिगम्यपरस्यविष्णोः ॥ ऐसी तुही जगन्मूला भगवन्माया है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ पति देवता सौभाग्यवती स्त्रियों में अंबे तेरीही प्रथम गणना है तेरी अनन्त महिमा को सहसानन शेष और सरस्वती भी नहीं कहि सकती है ॥ ४९ ॥

सेवत तोहि सुलभ फलचारी । बरदायिनि त्रिपुरारिपियारी १

देवि पूजि पद कमल तुम्हारे । सुरनर मुनि सब होहिंसुखारे २
मोर मनोरथ जानहु नीके । बसहु सदा उर पुर सबहीके ३
कीन्हेउ प्रगटन कारण तेहीं । असकहि चरण गहे बैदेहीं ४
बिनय प्रेमबस भई भवानी । खसी माल मूरति मुसुकानी ५
सादर सिय प्रसाद उरधरेऊ । बोली गौरि हर्ष हिय भरेऊ ६
सुनु सियसत्य अशीषहमारी । पूजिहि मनकामना तुम्हारी ७
नारदबचनसदाशुचिसाचा । सोइबरमिलिहिजानिमनराचा ८
छं० मनजाहि राच्यो मिलिहि सोइबर सहज सुंदरसांवरो ।
करुणा निधान सुजान शील सनेह जानत रावरो ॥
यहिभांति गौरिअशीष सुनिसियसहितहियहरषींअलीं।
तुलसीभवानिहिंपूजिपुनिपुनि मुदितमनमंदिरचलीं ॥
सो० जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हर्ष न जाइ कहि ।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे ॥ ५० ॥

तेरे सेवन करने से चारों फल सुलभ हो जाते हैं तू वरदायनी बरेश्वरी शंकर प्रिया हे १ हे देवी तेरे चरण कमल पूजि कर सुर नर मुनि सभी सुखी होतेहैं २ मेरे मनोऽर्थ को तो तुम भले प्रकार जानती हो क्योंकि सदा सब जीवों के उर पुर में निवास करती हो ३ जिस कारण मैंने प्रगट नहीं किया ऐसे कहिकर सीता ने भवानी के चरण पकरि लिये ४ जब इस प्रकार की सीता ने विनती करी तबतो उस विनती के प्रेम के बस भवानी हो गई प्रथम तो प्रेम के प्रारंभ में दैव प्रसाद सूचक पुष्प माला देवी के उरतें खसी तिस पीछे प्रेम की आधिक्यता से मूर्त्ति ही में मुसुकानी ५ सो माला जब सीता ने देवी का प्रसाद मानि कर पहिरि ली तब तो पारबती प्रेम की आनन्द दशा में पाषाण मूर्त्ति द्वारा बोलिही उठी ६ सुनु हे सीते हमारी सत्य अशीष से तुम्हारी मन कामना सब पूर्ण होगी ७ नारद का वचन सदैव सांचा है सोई बर तुमको मिलेगा जिस पर तुम्हारा मन सांचा है ॥ ८ ॥ छन्द ॥ सहज श्याम सुन्दर करुणा निधान सुजान शिरोमणि तुम्हारे शील सनेह को जानता है इस भांति पार्बती की अशीष सुनिकर सीता समेत सब सखी हर्षित होगईं और बारंबार पार्बती की बिनती करि प्रसन्न मन घर को चलीं ॥ सोरठा ॥ पार्वती को अनुकूल जानि कर सीता के मन का हर्ष कहा नहीं जाता है उज्ज्वल मंगल के मूल वाम अंग फरकने लगे ॥ ५० ॥ यह शत पंच चौपाइयों की दूसरी और सीता स्वयंबर की पहिली पचीसी हुई ॥

हृदय सराहत सीय लुनाई । गुरु समीप गवने दोउभाई १
रामकहा सबकौशिक पाहीं । सरल सुभावछुवा छलनाहीं २
सुमनपाइ मुनिपूजा कीन्ही । पुनिअशीष दोउभायिनदीन्ही ३
सफलमनोरथ होहिंतुम्हारे । रामलखण सुनिभयेसुखारे ४
करिभोजन मुनिवर बिज्ञानी । लगेकहन कछुकथा पुराणी ५
बिगत दिवसगुरु आयसुपाई । संध्याकरन चलेदोउ भाई ६
प्राचीदिशिशशिउगेउसुहावा।सियमुखसरिसदेखिसुखपावा ७
बहुरिविचारकीन्हमनमाहीं । सीयबदन समहिमकरनाहीं ८
दो० जन्मसिंधु पुनिबंधुविष दिनमलीन सकलंक ।
सियमुख समता पावकिमि चन्द्रबापुरोरंक ॥ ५१ ॥

हृदय में सीता की लावण्यता को शराहते हुये गुरु के पास रामलक्ष्मण समेत गये १ राम ने सब समाचार गुरुसे कहिदिये सरल सुभाव से कुछ छल नहीं किया २ पुष्प पाइकर मुनिने पूजन किया और दोनो भाइयों को अशीष दिया ३ कि तुम्हारे संपूर्ण मनोऽर्थ सफल होवैं यह सुनिकर रामलक्ष्मण दोनो सुखी होगये ४ फिर तो भोजन करिके विज्ञानी मुनिवर्य्य कथा कहने लगे ५ दिन के अंत में मुनि की आज्ञा लेकर संध्या करने को दोनो भाई चले ६ पूर्व दिशा में परिपूर्ण सुन्दर शरद ऋतु के चन्द्रमा का उदय देखिकर सीता के मुख के समान जानि कर बड़ा सुख पाया ७ फिर मनमें विचार किया कि सीता के मुख के समान तो हिमकर चंद्रमा नहीं है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ क्योंकि प्रथम तो इस का जन्म समुद्र जड़ से है और भाई इस का कालकूट हालाहल विष है दिन में मलीन होजाता है और सकलंक है सो भला ऐसा रंक बापुरा चंद्रमा सीता के मुख की समता को कैसे पासक्ता है ॥ ५१ ॥

घटैबढ़ै बिरहिन दुखदाई । ग्रसैराहु निजसंधिहि पाई १
कोकशोक प्रदपंकज द्रोही । अवगुण बहुत चंद्रमा तोही २
बैदेहीमुख पटितरि दीन्हे । होइदोष बड़ अनुचित कीन्हे ३
सियमुखछविविधुव्याजबखानी ।गुरुपहंचलेनिशाबड़िजानी ४
करिमुनि चरणसरोज प्रणामा । आयसु पाइकीन्हाबिश्रामा ५
बिगत निशा रघुनायक जागे । बंधुबिलोकि कहनअसलागे ६
उगेउ अरुण अवलोकहु ताता ।पंकजकोकलोकसुखदाता ७

बोले लखणजोरि युगपाणी । प्रभुप्रभाव सूचक मृदुबाणी ८
दो० अरुणोदय सकुचेकुमुद उडगण ज्योतिमलीन ।
जिमितुम्हार आगमन सुनिभये नृपतिबलहीन ॥ ५२ ॥

अरे बिचारे चंद्रमा तेरे में स्वयं प्रकाश भी तो नहीं है और के प्रकाश से प्रकाशवान है तातें घटाबढ़ा करता है और बिरही जनों का संताप कारी है अपनी संधि का योग पाकर तेरे को राहु ग्रास करता है १ चक्रवाकों को शोकदायक है और कमलों का द्रोही है ऐसे अनेक तेरे में अवगुण हैं २ सो तेरी पटतरि सीता के मुख को देने से तो बड़ा दोष हैं क्योंकि अनुचित करने से दोषही होता है ३ इस प्रकार चंद्रमा के ओखे से सीता के मुख की प्रशंसा करिके राति अधिक गई जानि कर गुरु के पास गये ४ गुरु के चरण कमल को प्रणाम करि आज्ञा पाइ बिश्राम किया ५ राति बीतें अरुणोदय बेला में श्री रामचंद्र जगे और लक्ष्मण को बैठा देखि यह कहनेलगे ॥ ६ ॥ विनता के पुत्र गरुड़के भाई सूर्य्यके सारथी अरुण के उदय को हे तात देखो जो कमल को और संपूर्ण लोक का सुख दाता है ७ यह सुनि दोनों हाथ जोरि अपने स्वामी के प्रभावकी सूचक कोमल बाणी लक्ष्मण बोले ॥ ८ ॥ दोहा ॥ हे स्वामी अरुणोदय होने से कैसे कुमुन्दगण मुंदगयेहैं और समस्त तारागण मलिन ज्योति होगये हैं जैसे आप का आगमन सुनतेही संपूर्ण राजा बलहीन होगये हैं ॥ ५२ ॥

नृप सबनखतकरहिंउजियारी । टारिनसकहिं चापतमभारी १
कमल कोकमधुकर खगनाना । हरषे सकल निशाअवसाना २
तैसेहिं प्रभु सब भक्त तुमारे । होइहहिं टूटे धनुष सुखारे ३
उदय भानुबिनु श्रमतम नाशा । दुरे नखत जगतेज प्रकाशा ४
रबिनिजउदयव्याजरघुराया । प्रभुप्रतापसब नृपनदिखाया ५
बंधु बचनसुनि प्रभुमुसुकाने । होइशुचि सहज पुनीतमहाने ६
सतानंद तब जनक बुलाये । कौशिकमुनि पहं तुरत पठाये ७
जनक बिनय तिन्ह आयसुनाई । हरषे बोलिलिये दोउभाई ८
दो० सतानंद पद बंदि प्रभु बैठे गुरु पहं जाइ ।
चलहु तात मुनि कहेउ तब पठवा जनकबुलाइ ॥ ५३ ॥

तारागणों के समान संपूर्ण राजा मिलकर भी धनुष रूपी महाभारी अंधकार को टारि नहीं सकते हैं १ और जैसे कमल चक्रवाक भ्रमर और सब पक्षी निशा के अबसान में हर्षित हुये हैं ऐसेही तुम्हारे भक्त जन सब धनुष के टूटने से प्रसन्न हों

गे २ । ३ सूर्य्य के उदय होतेही बिमाही भ्रम अंधकार का नाश होगया और जगत्
में तेज का प्रकाश होने से सब तारागण छिप गये ४ यह सब सूर्य्य ने अपने उदय
के ओखे से आपका प्रभाव अपनसा सब राजाओंको दिखाया है ५ ऐसी अति अनूपम
लक्ष्मण की सूक्ति के बचन सुनिकर राम मुसुकाये फिर शौच क्रिया करिकेनहाये
६ उसी समय गौतम मुनि के पुत्र सतानन्द अपने पुरोहित को राजा जनक ने बुलाया
और बिश्वामित्र को यज्ञशाला में लेआने के लिये उनके पास पठाया ७ जनक
की प्रार्थना सतानन्द ने आकर जब बिश्वामित्र को सुनाई तब तो विश्वामित्र ने प्रसन्न
होकर राम लक्ष्मण दोनों भाइयों को बुला लिया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सतानन्दके चरणों
को प्रणाम करिके दोनों भाई गुरु के पास जा बैठे तब बिश्वामित्र ने कहा चलो हे
तात हमको राजा जनक ने तुम समेत बुला भेजा हैं ॥ ५३ ॥

सीयस्वयंबर देखिय जाई । ईश काहि धौं देहि बडाई १
लखण कहा यश भाजनसोई । नाथ कृपा तव जापर होई २
हरषेमुनि सबसुनिबरबाणी । दीन्हिअशीषसबहिं सुखमानी ३
पुनिमुनि बृंद समेत कृपाला । देखन चले धनुष मखशाला ४
रंगभूमि आये दोउ भाई । असिसुधि सबपुरबासिन पाई ५
चले सकल गृहकाज बिसारी । बालक युवा जरठ नरनारी ६
देखा जनक भीर भइ भारी । शुचि सेवक सब लिये हंकारी ७
तुरत सकल लोगन पहंजाहू । आसन उचित देहु सबकाहू ८
दो० कहि मृदु बचन बिनीत तिन्ह बैठारे नर नारि ।
उत्तम मध्यम नीच लघु निजनिजथल अनुहारि ॥५४॥

चलिकर देखिये तो कि सीताके स्वयम्बर में नजानिये ईश्वर किसको बड़ाई देवै १
यह सुनि कर लक्ष्मणने कहा कि हेस्वामी जिसपर आपकी कृपा होगी सोई इस उत्तम
यशका पात्र होगा २ ऐसी बुद्धिमानी की समय उचित लक्ष्मण की सुन्दर बाणी सुनिकर
समस्त मुनि जन हर्षित होगये और अति सुखमानि करसबने आशीर्बाद दिये
३ तिसपीछे सब मुनीश्वरों समेत कृपालु राम चन्द्र धनुष यज्ञके देखने को चले ४
रंगभूमि के देखने को दोनों राजकुमार आये ऐसे सुन्दर समाचार जभी पुर वासियोंने
पाये ५ तबतो अपने अपने घरके कामों को छोड़ि छोड़ि कर बालक और युवा और
जरठ नरनारी सबदेखने को चले ६ राजा जनकने देखा कि बड़ी भारी भीर होगई
तबतो अपने शुचि सुन्दर सेवकों को बुला करकहा कि अभी सब पुरबासियों के
पास जाकर सबको यथा योग्यपर स्थानोंपर बैठारो ॥ ७ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तिन्होंने

उनसे कोमल मधुर मनोहर बचन कहि कहि कर सबनर नारि उत्तम मध्यम नीच लघुनको अपने अपने थलके अनुहार बैठारि दिया ॥ ५४ ॥

राजकुवर तिहिअवसर आये । मनहुं मनोहरता छबिछाये १
गुणसागर नागर बरबीरा । सुंदर श्यामल गौरशरीरा २
राजसमाज बिराजत रूरे । उड़गण महं जनुयुग विधुपूरे ३
जिहिमन रहीभावना जैसी । प्रभुमूरति तिहिंदेखी तैसी ४
देखहिं भूपमहा रणधीरा । मनहुं वीररस धरे शरीरा ५
डरेकुटिल नृपप्रभुहि निहारी । मनहुं भयंकर मूरति भारी ६
रहेअसुर छल जो नृपवेषा । तिन्हप्रभु प्रगटकाल समदेखा ७
पुरबासिन देखेदोउ भाई । नरभूषण लोचन सुखदाई ८
दो० नारिविलोकहिंहर्षिहिय निजनिज रुचिअनुरूप ।
जनुसोहत शृंगारधरि मूरतिपरम अनूप ॥ ५५ ॥

ताहीसमय सुन्दर सुहाये राम लक्ष्मण दोनो राजकुमार तहांआये मानों मनोहरता और महा छबिसे छायेहैं १ समस्त सद्गुणों के समुद्र और परमप्रवीण बड़े बीर हैं महा सुन्दर सांवरे गोरे शरीर हैं २ समस्त राजाओं के समाजमें कैसे सुन्दर बिराजते हैं मानो तारागणोंमें परिपूर्ण द्वय चन्द्रमाहीं राजते हैं ३ तहां जैसे कृष्णचन्द्र कंशकी रंगभूमि में प्रत्येक की रुचि और भावना के अनुसार दरशन देतेहुये बलभद्र समेत गयेथे ॥ मल्लानामशनिर्नृणांनरवरः स्त्रीणांस्मरोमूर्त्तिमान् गोपानांस्वजनोऽसतांक्षितिभुजांशास्तास्वपित्रोशिशुः मृत्युर्भोजपतेर्विराटविदुषांतत्वंपरंयोगिनां वृष्णीनांपरदेवतेति बिदितोरंगंगतस्साग्रजः ॥ ऐसेही यहां भी जिसके मनमें जैसी भावनारही तैसीहीराम लक्ष्मण दोनों भाईयोंकी मूर्त्तिको देखा ४ जोराजा महा रणधीर हैं तिनको तो मूर्त्ति वन्त बीररस ही दीखपरतेहैं ५ और जो महाकुटिल मूढ़ अभिमानी राजा हैं सोतो देखतेही भयभीत होगये मानो महा भारी भयंकर मूर्त्तिहैं ६ और जो असुर कपट से मनुष्य बने बैठेरहे तिनने तो साक्षात् कालही के समान देखे ७ पुर बासियोंने कैसे सुन्दर दोनों भाईदेखे मानो मनुष्यों के आभूषणहीहैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ स्त्रीसंपूर्ण प्रसन्न मन अपनी अपनी रुचिके अनुसार कैसा देखती हैं मानो शृङ्गार रसही परम अनूप द्वय मूर्त्ति धारण किये बिराजता हैं ॥ ५५ ॥

विदुषनि प्रभुबिराट मयदीसा । बहुमुखपदकर लोचन शीसा १
जनकजाति अवलोकहिंकैसे । सजनसगे प्रियलागहिंजैसे २
सहितबिदेह बिलोकहिंरानी । शिशुसम प्रीतिनजाइबखानी ३

योगिन परमतत्वमय भाशा । शांत शुद्धसमसहज प्रकाशा ४
हरिभक्तन देखे दोउ भ्राता । इष्ट देव इवसब सुख दाता ५
रामहिं चितवभाव जिहिसीया। सोसनेह सुखनाहिंकथनीया ६
उरअनभवतिन कहिशकसोऊ । कवनप्रकार कहैकविकोऊ ७
यहिबिधि रहाजाहि जसभाऊ । तिहिंतसदेखा कोशलराऊ ८

दो० राजत राज समाजमहं कोशल राज किशोर ।
सुंदर श्यामल गौरतन बिश्व बिलोचन चोर ॥ ५६ ॥

ज्ञान वानों को स्वामी बिराट रूप दीखि परे कि अनन्त मुख हैं अनन्तचरण हैं अनन्त करहैं अनन्त नेत्र हैं अनन्त शिर हैं १ और योगी जनों को परम तत्वरूप भासे परम शांत अति बिशुद्ध एक रस सहज प्रकाश रूप २ भगवद् भक्तों को दोनों भाई इष्ट देव से सर्वस्व दाताही दीखिपरे ३ जनक के कुटुम्ब के लोग बड़े प्रेम से कैसे देखते हैं जैसे अपने स्वजन संबंधी प्यारे लगते हैं ४ औरराजा जनक समेत सब रानी जो देखती हैं उन की तो पुत्रोंही के समान प्रीति कही नहीं जाती है ५ अबजिस भाव से कि सीता श्रीरामचंद्र को देखती है सो स्नेह और सो आनन्द तो अनिर्वचनीयही है ६ क्योंकि जिसस्नेह के आनन्द को सीता अपने हृदय में भोगि रही है सो भी तो उस को नहीं कहि सक्ती है तो तिस प्रेमानन्द को और कवि कैसे वर्णन करिसकै ७ या विधि जिस के हृदय में जैसा भावरहा उस ने कौशलाधीश श्री रामचंद्र को लक्ष्मण समेत तैसा ही देखा ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इस प्रकार श्री महाराज कोशलराज चक्रवर्ती दशरथ राजकुमार दोनों राजसमाज में विराजते हैं सुन्दर सांवरे गोरे दृष्टचित्तापहारक जिन के मनोहर सुहाये कोमल अंग हैं ॥ ५६ ॥

सहज मनोहर मूरतिदोऊ । कोटि कामउपमा लघुसोऊ १
शरद चंद निंदक मुख नीके । नीरज नयन भावते जीके २
चितवनिचारुमारमनहरणी । भावति हृदयजातनहिंबरणी ३
कलकपोलश्रुतिकुंडललोला । चिबुकअधरसुंदरमृदुबोला ४
कुमुद बंधुकरनिंदक हासा । भृकुटी बिकट मनोहरनाशा ५
भालबिशालतिलकझलकाहींकचबिलोकिअलिअवलिलजाहीं
पीत चौतनी शिरनि सुहाई । कुसुमकली बिचबीचबनाई ७
रेखारुचिर कंबुकल ग्रीवां । जनु त्रिभुवन सुखमाकी सीवां ८

दो० कुंजर मणि कंठा कलित उरनि तुलसिका माल ।
वृषभकंध केहरिठवनि बलनिधि बाहु बिशाल ॥ ५७

सुभावही सें मनोहर मूर्त्ति दोनों भाइयों को कोटि कामकी उपमा देनोभी छोटी ही लगती है १ शरद चंद्रमा के लजावन सुन्दर सुहाये दोनों के मनोहर मुख हैं और कमल पत्र से बिशाल मन भावने नेत्र हैं २ जिन नेत्रों की काम मन हरनी चितवनि हृदय ही में भावती है बरणी नहीं जाती है ३ अति सुन्दर कपोलों पर कर्ण कुंडल चंचल सोहते हैं चिबुक और अधर सुन्दर हैं कोमल बचन हैं ४ कुमुद बंधु कहे चंद्रमा की किरणियों की निन्दक मनोहर हास है अति बांकी भौहैं हैं सुन्दर नाशिका हैं ५ विशाल ललाट पटलों पर तिलक झलकते हैं सुन्दर श्याम सचिक्कन केशों को देखकर भ्रमर भी लजाते हैं ६ पीरी चौतनी अति सुहाई शिरों पर सोहती हैं जिनके बीच बीच में फूलों की कली गुही हैं ७ शंख के समान कंठ में सुन्दर तीनि रेखा कैसी शोभा देती हैं मानों तीनों लोक की सुन्दरता की सीवां ही हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सुन्दर गज मुक्ताओं के अति उज्वल कंठा बिराजते हैं और हृदयों पर तुलसी की माला सोहती हैं वृषभ के समान उन्नत कंधर हैं सिंह के समान चाल हैं बलकी सीवां आजानु बिशाल भुजा हैं ॥ ५७ ॥ नृसिंहपुराणे ॥ भलेदयानंशुक्लोर्द्ध्वपुंड्रं पीतश्रियं मध्यविराजमानं पद्माक्षतुलसीयुगतूलमुत्तमंसराघवंशिष्यगणावृतागतं ॥ १ ॥ जनकोपिचितंदृष्ट्वा बिश्वामित्रंगृहागतं प्राणंनिबेदयामास पूजयामासभक्तित: ॥ अर्थात् सब के ललाटों पर स्वेत ऊर्द्ध पुंड्र है पीतश्री जिन तिलकों के मध्य बिराज मान हैं कमल और तुलसी की दो दो माला धारण किये हैं ऐसे विश्वामित्र राम लक्ष्मण और समस्त शिष्य गणों समेत जनक पुरी में पधारे १ राजा जनकने भी उनको घर आया जानकर अपना प्राण निबेदन किया और प्रीति समेत उनका पूजन किया ॥ २ ॥

कटि तूणीर पीत पट बांधे । करशर धनुष बाम बर कांधे १
पीतयज्ञ उपवीत सुहाये । नखशिख मंजु महा छबिछाये २
देखिलोग सब भये सुखारे । इकटक लोचन टरहिं नटारे ३
हरषे जनक देखिदोउ भाई । मुनिपद कमलगहेतब जाई ४
करिबिनती सबकथासुनाई । रंगअवनिसबमुनिहिं दिखाई ५
जहंजहं जाहिंकुवरबरदोऊ । तहंतहंचकित चितवसबकोऊ ६
निजनिजरुचिरामहिंसबदेखा । कोउनजानकछुमर्मबिशेषा ७
भलिरचनामुनिनृपसनकहेऊ । राजा मुदित महासुखलहेऊ ८

दो० सब मंचनतें मंच इक सुंदर बिशद बिशाल ।
मुनि समेत दोउ बंधु तहं बैठारे महिपाल ॥ ५८ ॥

कटिदेश में पीतांबर से सुन्दर निषंग कसे हैं हाथों में एक एक बाण लिये हैं बायें कन्धों पर धनुष धारण किये हैं १ पीरे यज्ञोपवीत सुन्दर सोहते हैं चरणों के नखों से लेकर शिखा पर्य्यन्त संपूर्ण उज्ज्वल अंग महा छबि से छाये हैं २ ऐसे परम सुन्दर दोनों भाइयों को देख कर सब लोग सुखी होगये सबके नेत्र एकटक उन्हीं को देखते हैं हटाने से भी उनकी ओर से नहीं हटते हैं ३ राजा जनक भी दोनों भाइयों को देखि कर हर्षित हुये और बिश्वामित्र के चरण जा छुये ४ बिनती करिके अपने प्रण की सब कथा सुनाई तिस पीछे संपूर्ण रंगभूमि की रचना उनको दिखाई ५ मुनि के साथ जहां जहां दोनों राजकुमार जाते हैं तहां तहां चकित चित्त सब देखते हैं ६ अपनी अपनी रुचि के अनुसार सब राम को देखते हैं और इस मर्मको कोई भी विशेष करके नहीं जानता है ७ समस्त रंग भूमि देखि कर बिश्वामित्र ने राजा से कहा कि भली सुन्दर रचना है यह सुन कर राजा परम प्रसन्न होगया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सब मंचानोंसे एक मंचान जो अति सुन्दर और उज्जल औरअति-बिशालरहै तहां बिश्वामित्र समेत दोनों भाइयोंको राजा ने बैठादिया ५८ ॥

प्रभुहि देखिसब नृप हियहारे । जनु राकेश उदय भयेतारे १
असि प्रतीति सबकेमनमाहीं । रामचाप तोरब शकनाहीं २
बिनुभंजेहुं भवधनुषविशाला । मेलिहि सीयराम उरमाला ३
असबिचारि गवनहु गृहभाई । यशप्रताप बलतेजगंवाई ४
बिहंसेअपर भूपसुनि बाणी । जे अबिबेक अंधअभि मानी५
तोरेंहुंधनुष ब्याह अवगाहा । बिनुतोरे को कुवरि बिवाहा६
एकबार कालहु किनि होई । सियहित समरजितब हमसोई७
यहसुनि अपरभूप मुसुकाने । धर्मशील हरिभक्त सयाने ८
सो० सियहि बिवाहबराम गर्बदूरिकरि नृपनिकर ।
जीति कोशक संग्राम दशरथ के रणबांकुरे ॥ ५९ ॥

अब तो रामचंद्र के तेज से संपूर्ण राजा हियेहार होगये जैसे पूर्ण चंद्रमा के उदय में तारे होजाते हैं १ ऐसी प्रतीति तो सबही के मन में होगई कि निःसंदेह धनुष को रामही तोरेंगे २ और इस बिशाल शिव धनुष के बिना तोरे भी सीता तो जयमाल रामही को पहिरावैगी ३ यह समुझि कर भाइयो अभी अपने अपने घर को चलो यहां अपना संचित यश प्रताप तेज बलको बृथा मति गवांदो ४ ऐसी

बाणी सुनिकर और राजा बहुत हंसे जो अज्ञान अंध और अभिमानी हैं ५ अरे बिचारो ब्याह तौ धनुष तोरे पर भी अति दुर्लभ है सो भला बिना तोरे कौनबिवाहे लिये जाता है ६ एकबार जो काल भी हो तो सीता के निमित्त हम उसको भी संग्राम में जीतेंगे ७ यह सुनि और राजा उन को हंसे जो धर्म शील हैं भागवत हैं तातें परम सयाने हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सुनो रे मूर्खो तुम्हारा सब का गर्ब भंजन करिकेसीता को तौ रामही बिबाहेगे संग्राम में तौ इन को कौन जीति सक्ता है ये चक्रवर्ती दशरथ राज के रण बांकुरे हैं ॥ ५९ ॥

वृथामरहु जानिगाल बजाई । मनमोदकनि किभूखबिहाई १
शिखहमारि सुनिपरम पुनीता । जगदंबा जानहुजियसीता२
जगतपिता रघुपतिहि बिचारी ।भरिलोचन छबिलेहुनिहारी३
सुंदरसुखद सकल गुणराशी । ये दोउबंधु शंभुउर बासी ४
सुधासमुद्र समीप बिहाई । मृगजलनिरखि मरहुकतधाई ५
करहुजाइ जा कहं जो भावा । हमतौ आजुजन्म फलपावा६
असकहि भलेभूप अनुरागे । रूपअनूप बिलोकन लागे ७
देखहिं सुरनभ चढ़ेबिमाना । बरषहिं सुमनकरहिं कलगाना८
दो० जानि सुअवसर सीयतब पठई जनक बुलाइ ।
चतुरसखी सुंदरसकल सादरचली लिवाइ ॥ ६० ॥

तातें झूठेही मति गाल बजाइ लरो मन के मोदकों से कहीं भला भूख जाती है १ परम पावन हमारी शिक्षा को सुनिकर अपने जिय में सीता को जगज्जननी जानो२ और जगत्पिता रामचन्द्र को बिचारि कर नेत्रों भरि कर इनकी सुन्दर छबि को देखो ३ सुन्दर सुखदायक समस्त कल्याणों की राशि ये दोनो भाई सदैवशिव के हृदय के बासी हैं ४ तातें सुन्दर सुधाके समुद्र का समीप छोड़कर झूठे मृग जलको देखि कर क्यों दौरमरते हो ५ इस प्रकार की परम हित शिक्षा अपने सत् सुभाव से उन को उपदेशी परंतु ॥ नैवासुरिप्रकृतयःप्रभवन्तिबोद्धुं अर्थात् उन आसुरी प्रकृतियों को कब बोध होता है तब उन्होंने कहा कि जो जिस को भावै सो करो हम तौ आज अपने जन्म का परम फल पाचुके ६ ऐसे कहिकर साधु राजा अनूप रामरूप देखने लगे हैं ७ देवता आकाशस्थ बिमानो में चढ़े देखते हैं फूलों की बर्षा और सुन्दर गान करते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसा सुन्दर समय जानिकर सीता को राजा ने बुला भेजा बड़े आदर समेत सुन्दर सयानी सखी रंगभूमि को लिवा लेचली ॥ ६० ॥

सिय शोभा नाहिंजाइ बखानी । जगदंबिका रूपगुण खानी १

उपमासकल मोहिंलघुलागी । प्राकृत नारि अंग अनुरागी २
सियहि बरणि तेइ उपमादेई । कुकबि कहाइ अयशकोलेई ३
जौपटि तरि यतीयमसीया । जगआसि युवति कहांकमनीया ४
गिरामुखरतनुअधरभवानी।रतिअतिदुखितअतनपतिजानी ५
विष बारुणी बंधु प्रियजेही । कहिय रमासम किमि वैदेही ६
जोछबि सुधा पयोनिधि होई । परम रूप मय कच्छप सोई ७
शोभा रजु मंदर शृंगारू । मथै पाणि पंकज निज मारू ८
दो० यहि बिधि उपजै लच्छिजब सुंदरता सुख मूल ।
तदपि सकोचसमेत कवि कहहिं सीय समतूल ॥६१॥

सीता की शोभा तो बरणी ही नहींजातीहै क्योंकिअनन्त कोटि ब्रह्मांड कटाहों की माताहैं समस्त रूप और गुण जिसमें से प्रगट होतेहैं १ उपमा तो संपूर्ण सेरे को अतिही लघु समुझि परती है सीताके अंगोंके योग्य नहीं हैं क्योंकि जो उपमा सामान्य स्त्रियोंही के अंगोंपर अपनेको धन्य मानि चुकीहैं तेईउपमा सर्वेश्वरी सीता के अंगोंको देदेकर बरणन करिके कुकवि कहाइ कर अपयशकौनलेवै २।३ और जो किसी स्त्री हीके साथ सीताकी पटतरि दीजावे तो त्रैलोक्य में ऐसी सुन्दर निर्दोष कमनीय कौनसी स्त्रीहै ४ गिरा सरस्वती सुन्दर है परन्तु उसमें मुखरता का बड़ा दोषहै झूठ सांच सदैव बकाही करतीहै भवानी पारबती अति सुन्दर हैं परन्तु आधा बामाङ्गही है रति बिचारी तो अपने पतिको अनंग जानिकर सदा दुखीही रहती है हां लक्ष्मी सबप्रकार सीताही के समान हैं परन्तु उनका कुल सीता के कुलके समान विशुद्ध नहींहै लक्ष्मी का पिता समुद्र जड़ है भाई कालकूट विषहै बहिनी बारुणी मदिरा और दरिद्राहैं सीता का पिता परम ज्ञानवान राजा बिदेह जनक है भाई रूपशील गुणवान लक्ष्मी निधिहै मांडवी उर्मिला श्रुति कीर्त्ति सुन्दर बहिनी हैं यातें लक्ष्मी और सीता के घरानेमेंबड़ा अन्तर है सो सीता के समान लक्ष्मी को कैसे कहा जाइ ६ जो छबिका तो सुन्दर समुद्र होइ और परम रूपका कच्छप अवतरे शोभाकी रजुनेती बनै शृंगारका मंदराचल रई होइ परम सुन्दर काम अपने हाथों से मथै ७।८ ॥ दोहा ॥ इस प्रकार ऐसे घराने में जो फिर कर लक्ष्मी सुन्दरता और आनन्द की मूल जन्म लेवै तो भी सकोच समेतही कविजन सीता के समान कहिदेवैं ॥ ६१ ॥

चलीं संग लै सखी सयानी । गावहिं गीत मनोहर बानी १
सोहनवल तन सुंदरसारी । जगत जननिअतुलितछबिभारी २

भूषण सकल सुदेश सुहाये। अंग अंग रचि सखिन बनाये ३
रंगभूमि जब सिय पगधारी। देखि रूप मोहे नर नारी ४
हर्षि सुरनि दुंदुभी बजाई। बर्षि प्रसून अप्सरा गाई ५
पाणि सरोजसोहजयमाला। अवचक चितयेसकलभुवाला ६
सीयचकित चित रामहिंचाहा। भये मोह बस सब नरनाहा ७
मुनि समीप बैठे दोउ भाई। लगे ललकि लोचन निधिपाई ८
दो० गुरु जन लाज समाज बड़ देखि सीय सकुचानि।
लागिबिलोकन सखिनतन रघुबीरहिउरआनि ॥ ६२ ॥

ऐसे सीता को सयानी सखीं रंगभूमि को लिवाइ लेचलीं सुन्दर मनोहर वाणी से गीत गावती जातीहैं १ परम सुकुमार नवीन तनमें सुन्दर सारी सोहती है जगज्जननी है तिसकी छबिकी तोल कौन कर सकता है २ संपूर्ण आभूषण सुदेश कहैं यथा स्थान अंग अंग में सुन्दर सुहाये सखियोंने रचि रचि कर बनाये हैं ३ इस प्रकार जब सीता ने रंगभूमि में चरण धारण किये तौ अप्राकृत अलौकिक रूपको देखतेही नर नारी सब मोहित होगये ४ हर्षित होकर देवताओं ने दुन्दुभी बजाई और फूल वर्षाये अप्सरा गान करने लगीं ५ कमल से कोमल हाथों में जयमाला सोहती है अचानचक चित्त प्रसारि कर सब राजाओं को देखा ६ सीता तो चकित चित्त राम को चाहती हैं राजा सब मोहके बस होगये ७ मुनि बिश्वा मित्र के पास दोनो भाइयों को बैठा देखिकर नेत्र अपनी निधिको पाकर तहीं ललकि रहे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ गुरुजन कहें बड़े बूढ़ों की लाज और बड़े राज समाज को देखि कर सीता सकुचाय गई तबतो रामकी मनोहर मूर्त्ति को हृदय में लाकर सखियों की ओर देखने लगी ॥ ६२ ॥

रामरूप अरुसिय छबिदेखी। नरनारिन्ह परिहरी निमेषी १
सोचहिंसकलकहतसकुचाहीं। बिधिसनबिनयकरहिंमनमाहीं २
हरुबिधि बेगिजनक जड़ताई। मतिहमारि असिदेहुसुहाई ३
बिनुबिचार प्रणतजि नरनाहू। सीयराम कर करहिं बिवाहू ४
जगभल कहहि भावसब काहू। हठ कीन्हेअन्तहु उरदाहू ५
यहि लालसा मगनु सब लोगू। बर सांवरो जानकी योगू ६
तब बंदी जन जनक बुलाये। बिरदावली कहत चलिआये ७
कह नृप जाइ कहहु प्रणमोरा। चले भाट हियहर्ष नथोरा ८

दो० बोले बंदी बचन बर सुनहु महा महिपाल ।
प्रण बिदेह कर कहहिं हम भुजा उठाइ बिशाल ॥ ६३

अबतो रामचन्द्रका मनोहर रूप और सीता की महा छबि को देखि नरनारियोंने पलक लगानाहीं त्यागि दिया १ मनही मनमें सोचतेहैं राज भयसे कहते सकुचाते हैं और मनही में सब बिधाता से बिनती करते हैं २ कि हे बिधि राजा जनक की जड़ता को बेगही हरो और हमारी ऐसी सुन्दर सुहाई बुद्धि करो ३ कि बिनाही बिचारे अपने प्रणको छोड़ि कर राजा सीता राम का बिवाह करिदेवैं ४ संसार तो भलाकहै और सबही को भावै हठ करने से तो अंत को हृदय का दाहही होगा ५ इसी लालसा में सबलोग मग्नहैं कि सांवरा बर तो सीताही के योग्य है ६ इतने में राजा जनक ने बंदी जन भाटों को बुलाया सो बिरदावली उच्चरते हुये आये ७ राजाने उनसे कहा कि मेरा जो प्रणहै सो जाकर सब राजाओंको पुकारि कर सुनादो यह राजाकी आज्ञा सुनिकर अति हर्षित भाट राज मंडली में गये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ और दोनों भुजा उठाकर बड़े उच्च स्वरसे बीच सभामें बोले कि सब राजा महाराजा हमारे बचनों को कान देकर सुनो हम अपने महाराज जनकाधिराज का जो प्रणहै सो भुजा उठा कर कहे देतेहैं ॥ ६३ ॥

नृपभुज बल बिधुशिव धनुराहू । गरुअकठोरबिदितसबकाहू १
रावण बाण महाभट भारे । देखि शरासन गवहिंसिधारे २
सोइ पुरारिको दंडकठोरा । राजसमाज आजजिहिं तोरा ३
त्रिभुवन जय समेत वैदेही । बिनहिं बिचारबरिहि नृपतेही ४
सुनिप्रणसकलभूपअभिलाषी । भटमानीअतिशयमनमाषी ५
परिकर बांधि उठे अकुलाई । चले इष्ट देवन शिरनाई ६
तमकिताकिताकिशिवधनुधरहीं । उठैनकोटिभांतिबलकरहीं ७
जिनके कछु बिचार मनमाहीं । चाप समीप महीपन जाहीं ८
दो० तमकि धरहिं धनु मूढ़ नृप उठहि न चलहिं लजाइ ।
मनहुंपाइ भट बाहुबल अधिक अधिक गरुवाइ ॥ ६४

राजाओं की भुजाओं के बलरूपी चन्द्रमा को शिवका धनुष राहु रूपअति भारी और महा कठोर सबको बिदित है १ रावण और बाणासुर से महा भारी योधा इसधनुष को देखि कर चुपकेही चलेगये हैं २ सोई त्रिपुर मर्द्दन चंडीशके के दंडको राज समाज में आज जो कोई तोरेगा ३ त्रैलोक्य बिजय समेत सीता को बिनाहीं बिचार राजा उसे बरैगा ४ यह प्रणसुनि कर समस्त अभिलाषी राजा जो भटमानी

और सनमाषी रहे सो अपनी अपनी फेंटों को बांधि बांधि कर और अपने अपने इष्ट देवता ओं को प्रणाम करि करि धनुषके तोरने को चले ५ । ६ शौराःशाक्ताश्चगाणेशाः शैवाश्चवैष्णवंबिना उत्थिताधनुभङ्गायनृपामूढासुदुर्भगा अर्थात् सौर शाक्त गाणेश और शैवों में जो महामूढ़ रहें ते राजा धनुष तोरने को उठे तमकि तमकि और ताकि ताकि कर शिवके धनुष को पकरते हैं और उठाते हैं किसी प्रकारसे नहीं उठताहै कोटि भांति अपना सा बल करतेहैं ७ जिनके मनमें कुछ भी न अपमान का विचार है सो राजा तो चापके पासही नहीं जातेहैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जो महा मूढ़ राजा हैं सोई उस को तमकि तमकि कर उठाते हैं जब किसी भांति नहीं उठता है तब लजाय कर अधोमुख चलिदेते हैं मानो योद्धाओं की भुजाओं के बल को पाकर अधिक २ भारी होता जाता है ॥ ६४ ॥

भूप सहस दश एकहि बारा । लगे उठावन टरा नटारा १
डिगैन शंभु शरासन कैसे । कामी बचन सती मन जैसे २
सब नृपभये योग उपहासी । जैसे बिनुबिराग संन्यासी ३
कीरति बिजय बीरता भारी । चले चापकर बरवस हारी ४
श्रीहत भयेहारि हियराजा । बैठे निज निज जाइ समाजा ५
नृपनबिलोकि जनकअकुलाने । बोले बचन रोषजनुसाने ६
द्वीप द्वीप के भूपति नाना । आयेसुनि जोहम प्रणठाना ७
देवदनुज धरि मनुज शरीरा । बिपुलबीर आये रणधीरा ७
दो० कुवरि मनोहरि बिजयबड़ि कीरति अति कमनीय ।
पावनहार बिरंचि जनु रचेउ न धनु दमनीय ॥ ६५ ॥

तबतो दश सहस्र राजा एकही साथ उठाने लगे तो भी टारनेसे नहीं टरता है १ कैसे शिवका धनुष ठौर से नहीं डिगता है कामाशक्तों के बचनों से जैसे सती पतिव्रता का मन नहीं चलाइमान होता है २ संपूर्ण महा मूढ़ राजा कैसे उपहास के योग्य होगये हैं जैसे बिना बैराग के सन्यासी केवल हंसीहीके योग्य होता है ३ आजन्म की संपूर्ण कीर्त्ति बिजय और बड़ी बीरता धनुष के हाथ हटकते हटकते हठि कर हारि चले ४ और श्रीहत हिये हार होकर अपने अपने समाज में जा बैठे ५ तब तो राजाओं को देख कर जनक अकुलाइ उठे और रोष के भरे बचन बोले ६ देखो रे द्वीप द्वीप के राजा बड़े बड़े अभिमान से हमारे प्रणको सुनि कर यहां आये ७ और देव दनुज भी मनुष्य शरीर धरि कर और बड़े बीर रणधीर बन कर धनुष तोरने को आये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सो जो इन्हीं पर यह धनुष न टूटा तो मैं निश्चित यह बात जानि चुका कि इस मनोहर कुमारी और ऐसी बड़ी बिजय

और अति सुन्दर उदार कीर्त्ति को प्राप्त अति प्रचंड चंडीशको दंड खंडन ब्रह्मा ने नहीं बनाया है ॥ ६५ ॥

कहहु काहि यह लाभनभावा । काहुन शंकर चापचढ़ावा १
रहा चढ़ाउब तोरब भाई । तिलभरि भूमि न सकेछुड़ाई २
अब जनिकोउ भाषै भटमानी । बीरबिहीन मही मैंजानी ३
तजहुआशनिजनिजगृहजाहू । लिखान बिधिबैदेहिबिबाहू ४
सुकृतजाइ जो प्रणपरिहरहूं । कुवरि कुमारि रहौकाकरहूं ५
जौंजनतेउंबिन भटभुविभाई । तौप्रणकरिकरतेउंकिहंसाई ६
जनकबचनसुनिसबनरनारी । देखिजानकिहि भयेदुखारी ७
माखेलखण कुटिलभइं भौंहें । रदपट फरकतनयनरिसौंहें ८

दो० कहि न सकत रघुबीर डरलगे बचन जनुबाण ।
नाइ रामपद कमलशिर बोले गिरा प्रमाण ॥ ६६ ॥

कहो किसको ऐसा बड़ा लाभ नहीं भावता है अपने अपने बल पौरुष करने से भी किसीने इस धनुषको न चढ़ाइ पाया १ चढ़ावना और तोरना तो जहां तहां रहा कोइ तिल भरि जगह भी तो न छुड़ा सका २ तातें अब कोई अपने को बीर न माने क्योंकि बीर बिहीनपृथ्वीअब मैंने जानि ली ३ आशाछोड़ो अपने अपने घर चले जाओ ब्रह्मा ने सीता का बिवाह तो लिखाही नहीं है ४ और जो मैं अपने प्रण का त्याग करूं तो मेरा पुण्य यश सब नाश हो जावे यह अपयश तो मेरे से नहीं सहा जाता है ॥ संभावितस्यचाकीर्त्ति मरणादतिरुच्यते ॥ तातें कुमारि मेरी कुमारीहीं रहो मेरे कुछ बसकी नहीं है ५ जो मैं पहिलेही से पृथ्वीको बीर बिहीन जानता तो क्या ऐसा प्रण करिके अपनी हास्य करावता ६ ऐसे राजा जनक के बचन सुन कर पुरके सब नर नारि सीता की ओर देखि देखि कर दुखी होगये ७ और जनक के बचन सुनतेही लक्ष्मण रिसाने भौंहें टेढ़ी होगईं ओठ फरकने लगे लाल नेत्र होगये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ रामचंद्रके भयसे कुछ कहि तो नहीं सकते हैं परंतु जनक के बचन बाण से लगे सो सहे नहीं जाते हैं तब तो राम के चरण कमलों को शिर नाइ कर प्रमाण बचन बोले ॥ ६६ ॥

रघुबंशिनमहं जहंकोउहोई । तिहि समाजअसकहहिनकोई १
कहीजनक जसिअनुचितबानी । विद्यमानरघुकुलमणिजानी २
सुनहु भानुकुल पंकजभानू । कहहुं सुभाव नकछुअभिमानू ३

जौं राउर अनुशासन पाऊं । कंदुक इव ब्रह्मांड उठाऊं ४
कांचे घट जिमि डारहुं फोरी । सकहुं मेरुमूलक इमितोरी ५
तवप्रताप महिमा भगवाना । का बापुरा पिनाक पुराना ६
नाथ जानि अस आयसुहोई । कौतुक करहुं बिलोकियसोई ७
कमलनाल इमि चापचढ़ाऊं । शतयोजन प्रमाण लै धाऊं ८
दो० तोरहुं छत्रक दंड जिमि तव प्रताप बल नाथ ।
जौंन करौं प्रभुपद शपथ पुनि न धरौं धनूहाथ ॥ ६७॥

हे स्वामी हमारे रघुबंशियों में से जिस समाज में कोईभी बैठा होता है उस में कोई भी ऐसी अनुचित बाणी नहीकहताहै १ जैसीअनुचितबाणीया समय ऐसेबड़े इसराजसमाजमेंराजा जनकने ज्ञानवान होकरकही आपरघुबंशसिरोमणिको विद्यमान जानिकर २ सुनो हे स्वामी मैं स्वभाव कहताहूं कुछ अभिमान नहीं ३ जो आपका अनुशासन मिलै तो सप्तावरणावृत चतुर्दश भुवनात्मक इस ब्रह्मांड को गेंद सा उठा लूं ४ और कांचे घड़े के समान फोरि डालूं और सुमेर पर्वत को भी कठ फूले ही के समान तोर डाल सकता हूं ५ आपके प्रतापकी महिमासे हे स्वामी यह पिनाक पुराना बिचारा तौ कौन गणना में है ६ हे नाथ ऐसा जान कर आप मेरेको आज्ञा दीजिये तो मैं जो कौतुक करूं सो आप अवलोकन कीजिये ७ कि कमल की नाल के समान इस धनुष को चढ़ाऊं और सौ योजन पर्य्यन्त ले धाऊं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ और कठ फूले के दंड के समान बिना प्रयास तोरि गेरूं जो ऐसा न करूं तो आप के चरणों की शपथ फिरि हाथ में धनुषही न धारण करूं ॥ ६७॥

लषण बचन सकोपजब बोले । डगमगानि महिदिग्गजडोले १
सकललोक सब भूपसकाने । सिय हिय हर्ष जनक सकुचाने २
गुरुरघुपतिसबमुनिमनमाहीं । मुदितभये पुनिपुनिपुलकाहीं ३
सैनहिं रघुपति लषण निवारे । प्रीति समेत निकट बैठारे ४
बिश्वामित्र समय शुभजानी । बोले अति सनेह मृदुबानी ५
उठहुराम भंजहु भवचापू । मेटहु तात जनक परितापू ६
सुनि गुरुबचन चरणशिरनावा । हर्ष विषादनकछुउरआवा ७
ठाढ़भये उठि सहज सुभाये । ठवनि युवा मृगराज लजाये ८
दो० उदित उदय गिरि मंचपर रघुबर बाल पतंग ।
बिकसे संत सरोज सब हरषे लोचन भृंग ॥ ६८ ॥

जब ऐसे सकोप बचन लक्ष्मण बोले तबतौ पृथ्वी डगमगाइ उठी और दिग्गज डोलने लगे १ समस्त लोक और सब राजा सकइ गये सीता के मन में हर्ष और जनक सकुचाइ गये २ गुरु विश्वामित्र रामचन्द्र और सब मुनीश्वर मन में मुदित होगये बार बार रोम हर्ष होने लगा ३ सैनहीं में रामचन्द्र ने लक्ष्मण को निवारण किया और बड़े प्रेम से पास बैठारि लिया ४ जब बिश्वामित्र ने सुन्दर सावकाश समय जाना तब रामचन्द्र को प्रेम समेत अति कोमल वाणी से कहा ५ कि हेराम यह ईश्वर महेश्वर त्र्यम्बकेश्वर महादेव का धनुष है प्राकृत जीवों के उठाने चढ़ाने तोरने का नहीं है तातें हे तात अब आपही उठौ और इसको तोरो देखो राजा जनक को बड़ा परिताप होरहा है उसको निवारण करो ६ ऐसी आज्ञा सुनि कर रामचन्द्र ने गुरु के चरणों को शिर नवाया और हर्ष विषाद कुछ भी हृदयमें न आया ७ सहज सुभावही उठि खड़े हुये और अपनी मंद गति से युवा मृगराज की चाल को भी लजाया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ मंचान रूपी उदयाचल पर श्री राम बाल सूर्य्य के उदित होतेही भगवज्जन कमल तौ प्रफुल्लित होगये और सब पुरबासियों के नेत्र रूपी भ्रमर आनन्दित हुये ॥ ९८ ॥

नृपनकेरि आशानिशिनाशी । बचननखतअवलीन प्रकाशी १
मानी महिप कुमुद सकुचाने । कपटी भूप उलूक लुकाने २
भये बिशोक कोकमुनि देवा । बरषाहिं सुमन जनावहिंसेवा ३
गुरुपदबंदि सहित अनुरागा । राम मुनिनसन आयसुमांगा ४
सहजहिं चले सकलजग स्वामी । मत्तमंजु बरकुंजर गामी ५
चलत राम सब पुरनर नारी । पुलकि पूरितनु भये सुखारी ६
बंदि पितरसुर सुकृत संवारे । जोकछु पुण्य प्रभाव हमारे ७
तौशिव धनु मृनालकी नाईं । तोरहिं राम गणेश गुसाईं ८
दो० रामहिं प्रेम समेत लखि सखिन समीप बुलाइ ।
सीता मातु सनेह बस बचन कहे बिलखाइ ॥ ६९ ॥

राजाओं की आशा रूपी निशातौ नाश होगई और उन के बचन रूपी नक्षत्रावली फिरि न प्रकाशी १ मानीराजा कुमुद से सकुचाइ गये और कपटी राजा उलूक से लुकाइ गये २ देव मुनीश्वर कोकों का शोक जाता रहा पुष्प बर्षाते हैं और सेवा जनाते हैं ३ रामचंद्र ने प्रेम समेत गुरु के चरण बंदि कर मुनीश्वरों से आज्ञा मागी ४ सहजही सर्वेश्वर स्वामी मत्तगयंद की चालसे चले ५ राम के चलते ही सब पुरबासी पुलकावली से पूरित होकर सुखी होगये ६ देवपितरों को अभि बंदन करिके अपने अपने पुण्यसंवारे कि जो कुछ भी पुण्य इस जन्म के वा पूर्व जन्मों के हमारे

हो तो इस शिव धनुष को कमल नालकी नाईं हे गणेश स्वामी राम तोरिगेरैं ७ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ रामको बड़े प्रेम समेत देखि और सखियों को पास बुलाकर सीता की माता ने बिलखाइ के बचन ता समय कहे ॥ ६९ ॥

सखि सब कौतुक देखन हारे । येउ कहावत हितू हमारे १
कोउ न बुझाइकहै नृप पाहीं । येबालक असहठ भलनाहीं २
रावण बाण छुवा नहिं चापा । हारे सकल भूप करिदापा ३
सोधनु राजकुवर कर देहीं । बाल मराल किमंदर लेहीं ४
भूपसयानपसकलसिरानी । सखिविधिगतिकछुजातिनजानी ५
बोली चतुर सखी मृदु बाणी । तेजवंतलघु गनियन राणी ६
कहं कुंभजकहं सिंधुअपारा । शोषेउ सुयश सकलसंसारा ७
रबि मंडलदेखत लघुलागा । उदयतासु त्रिभुवनतमभागा ८
दो० मंत्र परम लघु जासु बस बिधि हरिहर सुर सर्ब ।
महा मत्त गजराज कहं बस कर अंकुश खर्ब ॥ ७०

हे सखी ये सब के सब कौतुक देखने हारेही हैं जो हमारे बड़े हितू कहावते हैं सो भी १ क्योंकि कोई राजा से समुझाकर यह नहीं कहता है कि ये बाल हैं ऐसी हट भली नही होती है २ जिसधनुष को रावण बाण ने नहीं छुवा और सब राजा अपनी अपनी दाप करिकरि हारि गये ३ सो धनुष इन राजकुमारों के हाथ में देते हैं सो हे सखी भला बालमराल भी कहीं मंदराचल उठालेते हैं ४ बड़े ज्ञानवान राजा की भी बुद्धि या समय सिराइ गई है सो हे सखी बिधाता की गति कुछ जानी नहीं जाती है ५ ऐसे रानी के बचन सुनिकर एक चतुर सखी बोली सुनो हे रानी तेजवंत छोटे नहीं गिने जाते हैं ६ देखो कहां तो घटपुत्र और कहां समुद्र उस को शोषि लिया संसार जानता है ७ सूर्य्य मंडल देखने मे छोटाही लगता परंतु उस के उदय से त्रिभुवनका अंधेरा दूरि होता है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ मंत्रपरम लघु होता है जिसके बस में विधिहरि हरादि सब देवता होते हैं औमहा मत्तगज को छोटा अंकुशही वसकरलेता है ॥ ७० ॥

कामकुसुम धनु शायकलीन्हे । सकल भुवनअपनेबसकीन्हे १
देवि तजिय संशयअस जानी । भंजबधनुष रामसुनु रानी २
सखीबचन सुनि भई प्रतीती । मिटाबिषाद बढ़ीअतिप्रीती ३
तब रामहिं बिलोकि बैदेही । सभयहृदय बिनवतिजिहितेही ४

मनहीं मन मनाइ अकुलानी । होहु प्रसन्न महेश भवानी ५
करहुसफलआपनि सेवकाई । करिहितहरहु चापगरुवाई ६
गण नायक बरदायक देवा । आजलगे कीन्ही तव सेवा ७
बार बार बिनती सुनि मोरी । करहु चापगरुता अतिथोरी ८
दो० देखि देखि रघुबीर छबि सुर मनाव धरि धीर ।
भरे बिलोचन प्रेम जल पुलकावली शरीर ॥ ७१ ॥

काम को देखो कि फूलोंही के धनुष बाण हाथ में लिये है उसी से चतुर्दश भुवन अपने बस में करि लिए हैं १ ऐसा जानिकर तुमसंशय मति करो राम बड़े तेजस्वी हैं अवश्य इस धनुष को तोरेंगे २ ऐसे सीता की माता सुनयना की सखी के बचन सुनिकर निश्चय होगई बिषाद सबमिटि गया और राम पर अति प्रीति बढ़ी ३ और सीता तो राम को देखिकर अति सभीत हृदय जिस तिस देवता को निहोरने लागी ४ मनही मन में सब का नाम ले लेकर मनाती है अत्यंत व्याकुल होकर कहती है हे महेश महाराज हे भवानी महारानी वेगि प्रसन्न हूजिये और अपनी सेवकाई को सफल कीजिये कृपा करिके अपने धनुष की गरुवाई को हरिये ५।६ हे गणनायक आप बड़े बरदायक देव हैं मैंने आजही के दिन के लिये आप की सेवा करी है सो बारंबार मेरी बिनती को सुनिकर इस धनुष की गरुता को हरो ॥ ७ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इस प्रकार राम की सुन्दर छबि को देखि देखिकर देवताओं को मनाती है और प्रेम के जल से दोनो नेत्रभरे हैं और शरीर में रोमांचखड़े हैं ॥ ७१ ॥

नीकेनिरखिनयनभरिशोभा । पितुप्रणसुमिरिबहुरिमनछोभा १
अहह तात दारुणहठ ठानी । समुझत नहिंकछुलाभन हानी २
सचिवसभय शिखदेइनकोई । बुधसमाजबड़ अनुचितहोई ३
कहंधनुकुलिशहुचाहिकठोरा । कहंश्यामलमृदुगातकिशोरा ४
बिधिकिहिभांतिधरहुं उरधीरा । सिरससुमनकणवेधहिंहीरा ५
सकलसभाकी मतिभइभोरी । अबमोहिशंभु चापगतितोरी ६
निज जड़तालोगनपरडारी । होहुहरुअ रघुपतिहिनिहारी ७
अतिपरिताप सीयमनमाहीं । लवनिमेष युगशतसमजाहीं ८
दो० प्रभुहि चितव पुनि महि चितव राजत लोचन लोल ।
खेलतमनासिज मीनयुगजनु विधुमंडलडोल ॥ ७२

भले प्रकार नेत्र भरि राम की शोभा देखी परंतु पिता के प्रण को स्मरण करिके

मनमें बड़ा क्षोभ हुआ १ हे पिता दारुण प्रणठानी हाइतुम अपना नतो लाभसमुझते हो न कुछ हानि जानते २ और मंत्री भी कोई इस समय शीक्षा नहीं देते हैं बुधजनों के समाज में ऐसा बड़ा अनुचित होता है ३ कहां तो यह बज्रकूट हू तें कठोर धनुष और कहां कमलहूं तें कोमल किशोर राम का सुन्दर श्यामल अंग ४ हे देव कैसे मनमें धीर धरूं सिरस के पुष्प के केशरासे हीरा में बेधकरते हैं ५ यहां तो समस्त सभा की बुद्धि भोरी होगई अब तो हे पिनाक मेरे को तेराही भरोसा है ६ अपनी जड़ता इनलोगों परडारिकर राम की कोमलता के समान तू भी हलुकाहो जा ७ ऐसा अत्यन्त परिताप सीता के मनमें होरहा है कि जिस को एक एक पल सो सो युग के समान बीतता है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ बारंवार राम को देखि देखिकर फिरि पृथ्वी को देखने लगती हैं ता समय सीता के चंचल नेत्र कैसे सोहते हैं कि मानो कामद्वय मीन रूपधरि के चंद्रमंडल के हिंडोले में झूलता है ॥ ७२ ॥

गिराअलिनिमुखपंकजरोकी । प्रकटन लाजनिशाअवलोकी १
लोचन जलरहु लोचन कोना । जैसे परम कृपण करसोना २
सकुची व्याकुलता बडिजानी । धरि धीरज प्रतीति उरआनी ३
तनमन बचन मोर मनसांचा । रघुपति पदसरोज महं रांचा ४
तौ भगवान सर्ब उरबासी । करहु मोहि रघुपति की दासी ५
जाकर जिहिपर सत्य सनेहू । सोतिहि मिलहिनकछु संदेहू ६
प्रभुतन चितै प्रेम प्रणठाना । कृपानिधान राम सबजाना ७
सियहिबिलोकितकेउधनुकैसै । चितवगरुडलघुव्यालहिजैसै ८
दो० लखणलखेउ रघुबंश मणि ताकेउ हरको दंड ।
पुलकि गात बोले बचन चरणचापि ब्रह्मंड ॥ ७३ ॥

सीता की बाणी रूपी अलिनी भ्रमरी मुख कमलने रोकि लीन्ही है गुरुजनो कीलाज रूपी रात्रि देखि कर न कमल खिलै न भ्रमरी निकसै १ नेत्रों का जल नेत्रोंके कोनेही में छिपा रक्खाहै जैसे अति कृपण का सुवर्ण सदा कोनेही को सेवन करता है २ ऐसी अपनी बड़ी बिकलता देखिकर सीता सकुचि गई और धीरधरि कर यहबिश्वास हृदय में लाई ३ कि जो तनमन बचन से सांचहूं मेरामन राम चन्द्रके चरण कमलों में राचाहै ४ तो सर्बातर्यामी भगवान मेरेको रामकी दासी करैहीगा ५ जिसका जिसपर सत्यसनेह होता है सोउसको निःसदेह मिलताही है ६ ऐसा दृढ़बिश्वास धारि रामको देखि राम कीप्राप्ति के निमित्त रामही के प्रेम को सबका भरोसा त्यागि अंगीकार किया तबतो कृपानिधान रामने सब जानिलिया कि अबतो सीता मध्यम धर्म से उत्तम धर्ममे आगई बिष्णू पायोऽन्यफलःसोधमःपरिकीर्त्तितः अन्योपायोबिष्णु

फल:मध्यम:परिकीर्त्तित:१माधवांघ्रिद्वयोपायोमाधवांघ्रिप्रयोजन: सउत्तमोऽधिकारीस्यात् कृतकृत्योऽत्र जन्मनि २ अर्थात् जो बिष्णुको उपाय और अन्यको फलकल्पना करताहै सो छोटाअधि कारी है और जो देवताको भगवत प्राप्ति निमित्त उपाय और बिष्णु को फल जानता है सो मध्यम अधि कारीहै १ जिसके भगवत्पद द्वन्दही उपाय हैं और भगवत्पद द्वन्दही प्रयोजन फलहैं सो उत्तम अधिकारी है और इसी जन्म मे कृत कृत्य होचुकाहै ७ तबतो रामने सीता की ओर देखिकर धनुषको कैसी तुच्छतासे तकाहै जैसे पच्छिराज गरुड़ अति छोटे सांप को तकै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ लक्ष्मणने लखा कि रघुबंशमणि रामने शिवके धनुष को तका पुलकित गातहो और ब्रह्मांड को चरणों से दबाकर बोले ॥ ७३ ॥

दिशिकुंजरहुकमठअहिकोला। धरहुधरणिधरिधीरन डोला १
राम चहहिं शंकर धनुतोरा। होहु सजग सुनि आयसुमोरा२
चाप समीप राम जब आये। नर नारिन सुरसुकृत मनाये ३
सब कर संशय अरु अज्ञानू। मंदमहीपन कर अभिमानू ४
भृगुपति केरि गर्ब गरुआई। सुर मुनि बरनि केरिकदराई ५
सियकरसोच जनकपछितावा। रानिनकर दारुणदुख दावा६
शंभु चाप बड़ बोहित पाई। चढ़े जाइ सब संग बनाई ७
राम बाहुबल सिंधु अपारा। चहत पार नहिं कोउ कनहारा८
दो० राम बिलोके लोग सब चित्र लिखे से देषि।
चितई सीय कृपायतन जानी बिकल बिशेषि ॥ ७४ ॥

हे अष्टदिग्गजो अहे कूर्महे बसुकी हेबाराह समस्त धरणीधर इसधरणी को धीर धरिके बड़ी सावधानी से धारण करो डुलिनजावै १ इस समय श्री राम चन्द्रशंकरके धनुषको तोरा चाहतेहैं सो मेरा अनुशासन सुनिकर सब सजगहो जाओ २ इसप्रकार जब धनुषके समीप रामचन्द्र आये तबतो सब नरनारी अपने अपने सुकृत मनाने लगे ३ अब सबलोगों का तो संशय और अज्ञान और महा मन्द राजोंका अभिमान ४ भृगुपति परशुरामके गर्व की गरुआई देव मुनीश्वरों की कदराई ५ सीताका सोच राजा जनक का प्रण करिके पछितावा रानियों का दारुण दुःख ६ येसबके सब महादेव के धनुष को सुदृढ़ जलयान जानिकर एक साथ उसपर चढ़ि बैठे ७ रामचन्द्र की भुजाओं के बलरूपी अपार समुद्रको पार जाया चाहते हैं कर्णधार कोई भी नहींहै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ रामने सबलोगों को देखातो चित्र लिखेहीसे दीख परे और सीताकी ओर जो चितये तो अतिही ब्याकुल जानी ॥ ७४ ॥

देखी बिपुल बिकल बैदेही । निमिष बिहात कल्प समतेही १
तृषित बारिबिनुजोतनुत्यागा । मुयेकरिय का सुधातड़ागा २
का बर्षा जब कृषी सुखाने । समय चूक पुनि का पछिताने ३
असजियजानिजानकिहिदेषी । प्रभुपुलकेलखिप्रीतिविशेषी ४
गुरुहिप्रणाममनहिमनकीन्हा । अतिलाघवउठाइधनुलीन्हा ५
दमकेउदामिनि जिमिधनलयऊ।पुनिधनुनभमंडलसमभयऊ ६
लेत चढावत खैंचत गाढे । काहुं न लखा देख सब ठाढे ७
तिहिक्षणमध्य रामधनुतोरा । भरेउ भुवन भरिघोर कठोरा ८
छं० भरि भुवन घोरकठोर रबि रथ बाजि तजिमारग चले ।
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि कोलकूरम कलमले॥
सुरअसुर मुनिकर कान दीन्हे सकल बिकल बिचारहीं।
कोदंडखंडेउ रामतुलसी जयति बचन उचारहीं ॥ १ ॥
सो० शंकर चाप जहाज सागर रघुबर बाहु बल ।
बूड़ेउ सकल समाज चढ़ेजो प्रथमहि मोहबस॥ ७५ ॥

रामने सीताको अतिही बिकल देखा कि एक एक पल कल्पके समान बीतता है १ तबतो स्वामीने सोचाकि जो प्यासेने अंजुलिभर जलबिना देहत्याग किया तो मरेपीछे तड़ाग भरे जलसे भी कौन कार्य सरताहै २ ऐसाजानि और सीताकी प्रीति को देखि मनही मनमें गुरूको प्रणाम करि बड़ी लाघवतासे धनुष को उठालिया ३।४।५ लेतेही तो क्षणमात्र बिजुली सा दीखिपरा फिरि अति लाघवताईसे धनुष और नभ मंडल एक ही सा होगया ६ लेते और चढ़ावते और खैंचते किसी ने न लखा सब खड़े देखतेही रहे ७ जिसक्षण उठाया उसी क्षण रामने बीचसे धनुष को तोरिगेरा धनुष के टूटते ही महाकठोर घोर रव से भुवन भरिगया ॥ ८ ॥ छन्द ॥ जिसशब्दके मारे सूर्य्यके रथके घोड़े अपने मार्ग को छोड़िगये दिग्गज चिक्कारने लगे प्रथ्वी चलने लगी बासुकी बाराह कूर्म सब कलमलाइ उठे सुर असुर मुनीश्वर कान मूदे ब्याकुल बिचारने लगे जब जाना कि रामने कोदण्ड खंडन किया तबतो जय जय जय उच्चारने लगे ॥ सोरठा ॥ शंकरका धनुष रूपी जहाज रामके बाहुबल समुद्र में समाज समेत जो प्रथम उसपर चढ़े रहे तासमेत बूड़ि गया यहशत पंच चौपाइयोंकी तीसरी पचीसी और सीता स्वयम्बर की दूसरी पचीसी हुई ॥ ७५ ॥

प्रभुद्वयचाप खंड महिडारे। देखि लोग सब भये सुखारे १

कौशिकरूप पयोनिधिपावन । प्रेम वारि अवगाह सुहावन २
राम रूप राकेश निहारी । बढ़ी वीचि पुलकावलि भारी ३
बाजे नभ गह गहे निशाना । देव बधू नाचहिं करि गाना ४
ब्रह्मादिकसुर सिद्ध मुनीशा । प्रभुहि प्रसंशहिंदेइ अशीशा ५
बरषहिं सुमन रंगबहु माला । गावहिं किन्नर गीत रसाला ६
रही भुवनभरि जयजयबानी । धनुष भंगधुनिजातन जानी ७
मुदितकहहिं जहंतहं नरनारी । भंजेउ रामशंभु धनु भारी ८
दो० बंदी मागध सूत गण विरदबदहिं मति धीर ।
करहिं निछावरि लोगसब हयगयधन मणिचीर॥ ७६॥

रामचन्द्रने जब धनुषके द्वय खंड करिके प्रथिवी पर डारि दिये तबतो सबपुरवासी देखतेही सुखीहोगये १ और बिश्वा मित्र रूपी परम पावन समुद्र जिसमे प्रेमका अथाह सुन्दर जल भराहै तिसमें राम षोड़श काला परि पूर्ण चन्द्रमा को देखि कर पुलकावली की अति ऊंची बारिबीचीं बढ़ने लगीं २ । ३ आकाश में अति गहगही दुन्दुभी बाजने लगी और देव बधूटीं अति आनन्दित नृत्यगान करने लगीं ४ ब्रह्मादिक देवता और सिद्धमुनीश्वर राम को अशीष देदेकर प्रसंशा करने लगे ५ फूलोंकी सुन्दर रंग माला बर्षाने लगे और किंपुरुष रशाल गीत गानेलगे ६ और समस्त लोकमें जय जय बाणी जो भरिगई ताकरि के धनुष के टूटने की धुनितो किसीने जाते भी नजानी ॥ ७ ॥ नगरमें अतिप्रसन्न नर नारी जन कहनेलगे कि रामने महा भारी महादेवका धनुष भंजन किया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ बंदीजन और सूतमागध बिरदावली उच्चारने लगे तिनको जहा तहां लोग सब हाथी घोड़ सुबर्ण वस्त्र निछावरि देने लगे ॥ ७६ ॥

झांझ मृदंग शंख सहनाई । भेरि ढोल दुंदुभी सुहाई १
बाजहिं बहु बाजने सुहाये । जहं तहं युवतिन मंगल गाये २
सखिन सहित हरषीं सबरानी । सूखत धान पराजनु पानी ३
जनक लहेउसुख सोच बिहाई । पैरतथके थाह जनु पाई ४
श्री हत भये भूप धनु टूटे । जैसे दिवस दीप छबि छूटे ५
सियहियसुखबरणियाकिहिभाती । जनुचातकीपावजलस्वाती ६
रामहिलखण बिलोकत कैसे । शशिहिचकोरकिशोरक जैसे ७
सतानंद तब आयसुदीन्हा । सीता गवन राम पहं कीन्हा ८

दो० संग सखी सुंदर चतुर गावहिं मंगल चार ।
गवँनी बाल मरालगति सुखमा अंग अपार ॥ ७७ ॥

और इस आनन्द के महोत्सव में झांझें मृदंग शंख सहनाई भेरी ढोल और सुन्दर सुहाई दुंदुभी इत्यादि अनेक बाजे बजाये और युवतियोंने जहां तहां मंगल गीत गाये १।२ सखियों समेतसब रानी हर्षित होगईं मानो सूखते धानोंपर जल वर्षा ३ जनक ने सोचछोड़ कर बड़ा सुखपाया. मानो पैरत्ते में थके ने थाहपाई ४ धनुष के टूटने से दुष्ट राजा कैसे श्रीहत होगये हैं जैसे छबिके छूटने सेदिनमें दीपक होते हैं ५ और सीता के हृदय का सुखतो कौन भांति बरणियेमानो परम तृषित चातकी ने स्वाति का जलही पाया ६ रामचन्द्र को लक्ष्मणकैसे प्रेम से देखते हैं जैसे पूर्ण शरद चन्द्रमा को चकोर किशोर देखै ७ तब तो सतानन्द जनक के पुरोहित ने ज्यों आयसु दिया त्योंई सीताने रामके पास गवन किया ८ दोहा ॥ संगमें सुन्दर चतुर सखी मंगल गान करतीं जाती हैं ऐसे बाल राज हंस कीसी अति मंद चालसे चलीक्योंकि अंग अंग पर शोभा का अपारभार छाइ रहा है ७७

सखिनमध्यसियसोहतिकैसी । छबिगणमध्यमहाछबिजैसी १
कर सरोज जयमालसुहाई । बिश्व बिजय शोभा जनुछाई २
तन सकोच मन परम उछाहू । गूढ़ प्रेम लखि परै न काहू ३
जाइ समीप राम छबि देखी । रहि जनु कुंवरिचित्र अवरेखी ४
चतुर सखी लखिकहा बुझाई । पहिरावहु जयमाल सुहाई ५
सुनत युगल करमाल उठाई । प्रेम बिबस पहिराइन जाई ६
सोहतजनुयुगजलजसनाला । शशिहिसभीतदेतजयमाला ७
गावहिंछबि अवलोकिसहेली । सियजयमालरामउरमेली ८

सो० रघुबरउर जयमाल देखि देव बरषहिं सुमन ।
सकुचे सकल भुवाल जनु बिलोकि रबि कुमुद गण ॥ ७८॥

सखियों के बीच सीता कैसी सोहती है छबि गणके बीच मानो महा छबि ही सोहती है १ अति कोमल कर कमलों में मनोहर जय माला लिये है मानो विश्व बिजय की शोभा इस माला ही परछाइ रही है २ तनमें तो संकोच है पर मन में परम उत्साह है वह गूढ़ प्रेम तो किसी को जानिही नहीं परताहै ३ जब समीप जाकर रामकी सुन्दर मनोहर छबि देखी तबतो सीता चित्रकी सी लिखीही रह गईं ४ तब एक चतुर सखी ने सीता को समुझा कर कहा कि हे सीते यह माला राम को पहिराइ देव ५ यह बचन सुनतेही दोनों कर कमलों से जयमाला उठाई तो

परंतु प्रेम के बस पहिराई नहीं जाती है दोनों भुजा रामके मुखके संमुख उठी ही रहि गईं सो कैसी शोभा दे रही हैं ६ मानो नाल समेत द्वय प्रफुल्लित कमल चन्द्रमा को अति सभीत जयमाला देते सोहते हैं ७ ऐसी सुन्दर छवि देखिकर संपूर्ण सखी सिय जयमाल राम उरमेली यही मंगल गीत गाइ उठीं इतने में सीता ने जयमाल राम को पहिराइ दी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ राम चन्द्र के हृदय में जय माल देखि कर देवता तो पुष्प बर्षाते हैं और दुष्ट राजा सब कैसे सकुचाइ गये मानो सूर्य्य को देखिकर कुमुद गण ही कुम्हलाइ गये ७८

पुर अरु ब्योम बाजनेबाजे । खलभये मलिन साधुसबगाजे १
सुर किन्नरनरनाग मुनीशा । जयजयजय कहि देहिंअशीशा२
नाचहिं गावहिं बिबुध बधूटी । बारबार कुसुमावलि छूटी ३
जहंतहं बिप्र वेद धुनि करहीं । बंदी बिरदावलि उच्चरहीं ४
महि पाताल नाकयश ब्यापा । राम बरी सियभंजेउ चापा ५
करहिं आरती पुरनरनारी । देहिं निछावरि बित्त बिसारी ६
सोहति सीय रामकी जोरी । छबि शृंगार मनहुं इकठोरी ७
सखींकहहिं प्रभुपदगहुसीता । करतिनचरणपरसअतिभीता८
दो० गौतम तिय गति सुरति करि नहिं परसति पद पानि ।
मनबिहसे रघुबंशमणि प्रीति अलौकिकजानि ॥ ७९ ॥

नीचे तो नगर में ऊपर आकाश में बाजे बाजने लगे भगवदुत्कर्ष असहन शील खल मलीन होगये संत जन गाजने लगे १ सुर और किन्नर नागनर मुनीश्वर जय राम जयराम बारंबार उच्चारण करते हैं और अशीष देते हैं २ देवांगना आनन्द भरी नाचती और गान करती हैं और आकाश ते बार बार पुष्पावली बरषती हैं ३ ब्राह्मण जहां तहां वेदध्वनि करते हैं बंदीजन रघुबंश की बिरदावली उच्चरते हैं ४ प्रथिवी और पाताल में नाक कहें स्वर्ग में यह यश ब्याप्त होगया कि राम ने सीता बरी धनुष तोरा ५ पुरके नर नारी राम की आरती करते हैं और अपने बित्त से अधिक निछावरि देते हैं ६ तहां सीता रामकी मनोहर जोरी कैसी सोहती है मानो छवि और शृंगारही मूर्त्ति मान एकट्ठे बिराजते हैं ७ अब सखी कहती हैं कि हे सीता रामके चरण छूले सो सीता राम बियोग के भय से चरण नहीं छूतीहैं ८ ॥ दोहा ॥ गौतम मुनि की भार्य्या अहिल्या की गति का स्मरण करिके राम के चरणों को अपने हाथों से स्पर्श नहीं करती है ऐसा सीताका अलौकिक प्रेम देखिकर रघुबंश मणि राम मनही में मुसुकाये ॥ ७९ ॥

तब सिय देखि भूप अभिलाषे । कूर कुपूत मूढ़ मन माषे १
उठिउठि पहिर सनाहअभागे । जहंतहं गाल बजावनलागे २
लेहु छिड़ाय सीय कहकोऊ । धरि बांधहु नृप बालक दोऊ ३
तोरे धनुष चाढ नहिं सरई । जीवत हमहिं कुवरि को बरई ४
जो बिदेह कछु करै सहाई । जीतहु समर सहित दोउभाई ५
साधु भूप बोले सुनि बानी । राज समाजहि लाज लजानी ६
बलप्रताप बीरता बड़ाई । नाक पिनाकहि संग सिधाई ७
सोइशूरताकिअबकहुं पाई । असिबुधितवबिधिमुहमसिलाई ८
दो० देखहु रामहिं नयन भरि तजिईर्षा मद मोहु ।
लषणरोष पावकप्रबल जानिशलभजनिहोहु ॥ ८० ॥

तब तो सीताकी परम सुन्दर शोभा को देखि कर राजा अभिलाषे जो कूरहैं कुपूत कहैं जार जातक महा मूढ़ क्रोध में भरि गये ॥ योपुत्र:पितरंद्वेष्टी तंबिद्धीदन्यरेतस: योबिष्णुवैनर:द्वेष्टीतंबिद्धीदन्यरेतस: ॥ अर्थात् जोपुत्र पितासे द्वेष करता हो उसकी उत्पत्ति औरके बीर्य से जानो ऐसेही जो मनुष्य बिष्णु से द्वेष रखता हो उसको भी जार जातकही जानो १ अपने अपने मंचानो से उठि उठि बख़्तरों को पहिरि कर जहां तहां कोलाहल करने लगे २ कोई तो कहता है कि सीता को छीनि लेहु और इन दोनों भाइयों को पकरि कर बांधि लेहु ३ धनुष के तोरनेसे कुछ अटक नहीं सरती है अर्थात् पूर नहीं परती है हमारे जीते जी इस कन्या को कौन बरसकता है ४ और जो राजा जनक कुछ इनकी सहायता करै तो उसको भी दोनों भाइयों समेत जीति लेहु ५ ऐसे उनके बचन सुनिकर साधु राजा बोले अरे मूढ़ो भली तुमने इस राज समाज की लाज लजाई हैं ६ यह नहीं जानते कि तुम्हारा बल और प्रताप और बीरता बड़ाई तो सब नाक समेत पिनाक ही के साथ गई ७ जो बीरता पिनाकहीके साथ गई सोई शूरता तुममें हैं कि अब कहीं से और पागये जब तुम्हारी ऐसी कुबुद्धि है तबतो देवने तुम्हारे मुखों में कारिखि लगाई ॥ ८ ॥ दोहा ॥ अब भी हमारा कहा मानो इस ईर्षा और मद मोह को छोड़ि कर रामकी शोभा को नेत्रों भरिकर देखो और लक्ष्मणके रोषको प्रचंड पावक जानि बूझिकर शलभ मत बनो ८०॥

बैनतेय बलिजिमिचहकागू । जिमि शशचहै नागअरिभागू १
जिमिचहकुशल अकारणकोही । सुखसंपदा चहैशिवद्रोही २
हरिपदबिमुखपरमगतिचाहा । तसतुम्हारलालचनरनाहा ३

लोभीलंपट कीरति चहई । अकलंकता कि कामी लहई ४
कोलाहल सुनिसीयसकानी । सखीलिवाइ गईंजहं रानी ५
रामसुभाय चले गुरु पाहीं । सियसनेह बरणतमनमाहीं ६
रानिनसहितसोचबससीया । अबधौंबिधिहिंकहाकरनीया ७
भूपवचनसुनि इतउततकहीं । लखणरामडरबोलिनसकहीं ८
दो० अरुण नयन भृकुटी कुटिल चितवत नृपनि सकोप ।
मनहुं मत्तगजगण निरखि सिंह किशोरहि चोप ॥ ८१

जैसे पक्षि राज गरुड़ के भाग को काग चाहे और सिंह के भागको खरहा ॥ १ ॥ फिरि अकारण क्रोधी जैसे कुशल चाहे और समस्त कामदायक श्री शिवजी का द्रोही संसार में सुख संपदा चाहे २ लोभी और लंपट उज्जल कीर्ति चाहै और कामी अकलङ्करहा चाहै ३ हरि के चरणों से विमुख अन्य उपायों से जैसे परमगति मोक्ष चाहै तैसे हे राजाओं तुम्हारा यह निस्फल मनोऽर्थ है ॥ योवासुदेवादन्यचमोक्षंप्रार्थयतेऽल्पधीअग्निभ्रांतिसखद्योतं शीतत्राणायकल्पते । प्रायश्चित्तानिचीर्णानि नारायणपरान्मुखान्नालंशुद्धतिराजेन्द्रसुराकुंभमिवापगा: ॥ अश्वमेधशतैरिष्ट्वा वाजपेयशतैरपि नयांतिपरसंस्थानंनारायणपरांमुखा: । येनृसंश दुरात्मान: पापाचाररतास्सदातेयांति परमंस्थानंनरानारायणाश्रया: ॥ ४ ॥ जबराजाओं का ऐसा कोलाहल सुनिकर सीता मन में सकाइ गईं तबतो सखी रानियों के पास लिवाइ ले गई ५ रामचन्द्र सीधेसुभायसीता के सनेह को मन में सराहतेगुरुकेपास चले गये ६ रानियों समेत सीता को बड़ा सोच है कि अब जाने बिधाता को क्या कर्तव्य है ७ राजाओं के वचन सुनि कर इधर उधर झांकते लक्ष्मण राम चन्द्र की भयसे कुछ बोलि नहीं सकते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ अरुण नेत्र और टेढ़ी भौंहों से कैसे सकोप राजाओं को देखते हैं जैसे मत्त करि वरों के यूथों को देखि कर युवामृगराज को चोंप होताहै ८१ ॥

खरभर देखिबिकलपुरनारी । सबमिलि देहिं महीपनगारी १
तिहिअवसरसुनिशिवधनुभंगा । आयेभृगुकुल कमलपतंगा २
देखि महीप सकल सकुचाने । बाजझपटजनु लवालुकाने ३
गौरशरीर भूतिभलि भ्राजा । भालबिशाल त्रिपुंडबिराजा ४
शीसजटाशशिबदनसुहावा । रिसबसकछुकअरुणहोइआवा ५
भृकुटी कुटिलनयनरिसराते । सहजहुचितवतमनहुंरिसाते ६
वृषभकंध उरबाहु बिशाला । चारुजनेउ मालमृग छाला ७

कटिमुनि बसन तूणिद्वयबांधे। धनुशरकर कुठारकलकांधे ८
दो० शांत वेष करणी कठिन बरणिन जाइ सरूप।
धरि मुनि तनु जनु बीररस आयेजहंसब भूप॥ ८२

ऐसा खरभर देखि पुरवासी बड़े ब्याकुल हैं और सब के सब दुष्टराजाओं को गारी देते हैं १ कि उसी समय शिव धनुष के भंग के शब्द को सुनिकर भृगुकुल कमल पतंग परशु राम वहां आगये २ उनको देखतेही सब राजा सकुचाइ गये बाज की झपट से लवा की नाईं लुकाइ गये ३ गौरशरीर में भली तौ विभूति भस्म धारण किये हैं और बिशालभालमें भस्महीका त्रिपुंड लगाये हैं ४ मस्तक परजटा भार धरे हैं चन्द्रमा सा मुख सोभी रिसकेवस अरुणही है ५ भृकुटी कोप से टेढ़ी हैं नेत्र रिस से लाल हैं सहज दृष्टि भी महा रिसौंही है ६ बृषभ के से उन्नत कन्धर औ भुजा हृदय बिशाल हैं ७ कटि देश पर बल्कलादि बस्त्रों से द्वयश रालय बांधे हैं धनुष बाण हाथों में और कुठार सुन्दर कांधे हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ वेषशांत और करनी कठिन ऐसा स्वरूप तो बरणही नहीं जाता है मानो मुनि वेष धरिके बीर रसही राजों के समाज में आया है ॥ ८२ ॥

देखतभृगुपति बेषकराला। उठेसकल भय विकलभुवाला १
पितुसमेत कहिकहि निजनामा। लगेकरन सबदंडप्रणामा २
जिहिसुभाय चितवहिं हितजानी। सोजानै जनुआयुखुटानी ३
जनकबहोरि आइ शिरनावा। सियहि बुलाइप्रणामकरावा ४
आशिषदीन्हि सखीहरषानी। निजसमाज लैगईं सयानी ५
विश्वामित्र मिलेपुनि आई। पदसरोज मेलेदोउ भाई ६
रामलषण दशरथ के ढोटा। दीन्हिअशीष देखिभल जोटा ७
रामहिचितै रहेथकि लोचन। रूपअपार मारमद मोचन ८
दो० बहुरिबिलोकि बिदेहसन कहेउकाह अतिभीर।
पूछतजानि अजानजिमि व्यापेउ कोपशरीर॥ ८३ ॥

ऐसा कराल उग्रतामसी परशुरामका वेष देखतेही भय ब्याकुल सब राजा उठि खड़े हुये १ पिता समेत अपना अपना नाम लेलेकर सब दण्डवत प्रणाम करने लगे २ जिस को हित जानि कर सहज सुभाव भी देखते हैं सो यही जानता है कि मेरी आयुतो खोटाइहोगई ३ सब राजों के पीछे राजा जनक ने आकर प्रणामकिया और सीता को बुलाकर चरणों पर गिराया४ आशीर्वाद दिया सखीप्रसन्न होकर अपने समाज को ले गईं ५ तिस पीछे विश्वामित्र आकर उनको मिले और राम लक्ष्मण

दोनोंभाइयों को उनके चरणों पर गेरा और कहा ६ कि राम लक्ष्मण इन के नाम राजा दशरथ के पुत्र हैं यह सुनि कर और सुन्दर सुहाई सांवरी गोरी दोनो भाइयों की जोरी देखि कर अशीष दी ७ राम को देखिकर परशुराम के नेत्र थकित होगये क्योंकि अपार रूप काम मद मोचन हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ फिरि सब ओर देखि कर जनक से पूछा कि तेरे यहां अति भीर कैसी है जानि बूझि कर अजानकी नाईं पूछते हैं और कोप शरीर में भरा है ॥ ८३ ॥

समाचार कहिजनक सुनाये । जिहिकारण महीप सबआये १
सुनतबचन फिरिअनत निहारे । देखेचाप खंडमहिडारे २
अतिरिस बोलेबचनकठोरा। कहुजड़ जनक धनुषकिहिंतोरा ३
बेगिदिखाउ मूढ़नतु आजू । उलटहुं महिजहंलगितवराजू ४
अपडर उतर देत नृपनाहीं । कुटिलभूप हरषे मनमाहीं ५
सुरमुनि नागनगर नरनारी । सोचहिंसकल त्रासउरभारी ६
मनपछितातिसीयमहतारी । विधिसवारिअबचहतबिगारी ७
भृगुपतिकरसुभावसुनिसीता । अर्द्धनिमेषकल्प समबीता ८
दो० सभय बिलोके लोगसब जानिजानकी भीर ।
हृदय न हर्षविषाद कछुबोले श्रीरघुबीर ॥ ८४ ॥

तबतो सब समाचार राजा जनकने कहि सुनाये जिसलिये सब राजा आये हैं १ बचन सुनतेही जो ओर दिशाओं को देखा तो पृथ्वी पर पिनाक के द्वय खंड परे देखे २ सोतो देखतेही बड़ी रिस करिके भरे महाकठोर वचन बोले कहु तोरे जड़ जनक इस धनुष को किसने तोरा है ३ वेगिही उसको दिखा दे अरे मूढ़ नहीं तो तेरे राज्य पर्य्यंत की पृथ्वी को उलटाता हूं ४ अपडर के मारे राजा कुछ उत्तर नहीं देते हैं यह दशा देखि कर कुटिल राजा मन में बड़े हर्षितहुये ५ सुर मुनि नाग और नगर के नर नारी बड़ी भय से सब सोच करते हैं ६ मन में सीता की माता पछिताती है कि देखो दैव सब बात बनाइ कर अब बिगारा चाहता है ७ परशुराम का सुभाव सुनि कर सीता को आधा पल एक २ कल्प के समान बीता ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तब तो सभय सब लोगों को देखिकर और सीता को भय भीत जानि कर हृदय में नतो कुछ हर्ष न कुछ बिषाद हैं सहज सुभावही श्री राम चन्द्र परशुराम से बोले ॥ ८४ ॥

नाथ शंभुधनु भंजनहारा । होइहि कोउ एक दास तुम्हारा १
आयसुकाह कहियकिनिमोही । सुनिरिसायबोलेमुनिकोही २

सेवक सो जो करै सेवकाई । अरिकरणी करि करियलराई ३
सुनहु रामजिहिंशिवधनुतोरा । सहसबाहु समसोरिपुमोरा ४
सो बिलगाइ बिहाइ समाजा । नतु मारे जइहहिं सबराजा ५
सुनिमुनि वचन लखणमुसुकाने । बोले परशु धरहिअपमाने ६
बहु धनुई तोरीलरिकाईं । कबहुन आसि रिस कीन्हि गुसाईं ७
यहिधनु परममताकिहिहेतू । सुनि रिसाइकह भृगुकुल केतू ८
दो० रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न सम्हार ।
धनुईसम त्रिपुरारिधनु बिदित सकल संसार ॥ ८५ ॥

हे नाथ इस धनुष का भंजनहार कोऊ एक आपका दासही होगा १ उसको क्या आज्ञा है सो मेरेको कहिये यह सुनि बड़े कोही मुनि रिसाय कर बोले २ सेवकतो सो होता है जो सेवकाई का काम करता है शत्रु की करणी करिके तो लराईही करनी चाहिये ३ तातें सुनो हे राम जिसने इस हमारे गुरु शिवके धनुष को तोरा है सो पितुघाती सहस्रबाहु के समानही मेरा बैरी है ४ सो अभी इस राज समाजको छांड़ि कर दूरि खड़ा होजावे नहींतो उसके साथ सब राजा मारे जावेंगे ५ ऐसे मुनिके बचन सुन लक्ष्मण मुसुकाने और उनके वेष का अपमान करते हुये बोले ६ हे महाराज ऐसी धनुहियां हमने लरकपन में बहुत तोरि गेरीं रहैं परंतु आपने कभी ऐसा कोप नहीं किया रहै ७ न जानै इस धनुष पर ऐसी आपकी ममता कौन हेतुसे है ऐसे लक्ष्मणके वचन सुनकर परशुराम रिसाय कर बोले ॥ ८ ॥ दोहा ॥ अरे काल बश राजपुत्र क्यों मरा चाहता है तेरेको बोलने में कुछ संभार नहीं है धनुहियों के ही समान यह शिव धनुष है जो समस्त संसार में विदित है ॥ ८५ ॥

लषण कहाहंसिहमरे जाना । सुनहुदेवसब धनुष समाना १
का क्षति लाभ जीर्ण धनु तोरे । देखा राम नये के भोरे २
छुवत टूट रघुपतिहिनदोषू । मुनि बिनुकाज करहु कत रोषू ३
बोले चितय परशु की ओरा । रे शठ सुना सुभाब न मोरा ४
बालबिलोकि बधउं नहिंतोही । केवलमुनिजड़जानेसिमोही ५
बाल ब्रह्मचारी अति कोही । बिश्व बिदित क्षत्री कुल द्रोही ६
भुजबल भूमिभूपबिनुकीन्ही । बिपुलबार महिदेवनिदीन्ही ७
सहसबाहु भुजछेदनहारा । परशु बिलोकु महीप कुमारा ८

दो० मातु पितहि जनि सोच बस करसि महीप किशोर ।
गर्भिनके अर्भकदलन परशु मोर अति घोर ॥ ८६ ॥

तबतो लक्ष्मण ने हंस कर कहा सुनो हे मुनि हमारे जानतो सब धनुष समान हीं हैं मूंग मोठ में कितनी बड़ाई छुटाई है १ और हमको इस जीर्ण धनुषके तोरने में कौन सी हानि लाभ रहै हां रामने नये के धोखे से इसे देखा रहै २ सो छूतेही टूट गया सबसभा साक्षी है रामका कुछभी दोष नहीं है हे मुनि निष्प्रयोजन क्यों रिसाते हो ३ तब तो परशुराम अपने कुठारकी ओर देख लक्ष्मण से बोले कि अरे शठ तूने मेरा स्वभाव नहीं सुना है ४ बालक जानिकर मैं तेरा बध नहीं करता हूं रे जड़ तूने मेरेको केवल मुनिहीं जाना है ५ मैं बाल ब्रह्मचारी बड़ा क्रोधी हूं औ बिश्वमें बिदित क्षत्री कुलका द्रोही हूं ६ अपनी भुजाओं के बलसे पृथ्वी बिनाभूप की अनेक बार करिके ब्राह्मणों को देदे दीन्ही है ७ सहस्रबाहुकी भुजाओंका छेदक हे राजकुमार इस मेरे कुठार को तू देखि ले ॥ ८ ॥ दोहा तातें अपने माता पिता को सोचके बस हे राजकुमार तू मति कर दे गर्भिनियोंके अर्भक कहें पेटके बच्चोंका दलन अति घोर मेरा यह कुठार है ॥ ८६ ॥

बिहसिलषण बोले मृदुबानी । अहोमुनीश महाभटमानी १
पुनिपुनि मोहिदिखाहु कुठारू । चहतउड़ावन फूंकपहारू २
यहांकुम्हड़बतिया कोउनाहीं । जो तर्जनी देखिमुरझाहीं ३
देखिकुठार शरासन बाना । मैं कछुकहा सहित अभिमाना ४
भृगुकुलसमुझिजनेउबिलोकी । जोकछुकहेहुसहेउंरिसरोकी ५
सुरमहि सुरहरिजन अरुगाई । हमरेकुल इनपर न शुराई ६
बधेपाप अपकीरति हारे । मारतहू पांपरिये तुम्हारे ७
कोटिकुलिशसम बचनतुम्हारा । वृथाधरहु धनुबाणकुठारा ८

दो० जो बिलोकि अनुचितकहेउं क्षमहुमहामुनि धीर ।
सुनिसरोष भृगुबंशमणिबोले गिरागंभीर ॥ ८७ ॥

हंस करिके लक्ष्मण कोमल बाणी से बोले कि हे मुनीश आप तौ अपनेको महा योद्धा मानते हैं १ बार बार मेरेको कुठार दिखाते हैं सो क्या आप फूंकसे पहाड़ उड़ा दिया चाहते हैं २ यहां कोई कुम्हड़े की बतिया तौ है नहीं जो अंगुलीहीके दिखाने से मुरझाइ जावें ३ मैंने तो आपको यह कुठार और धनुष बाणहीं देखिकर आपसे अभिमान समेत कुछ कहा है ४ और आपको महा भागवत भृगुवंश समुझि कर और ब्रह्मसूत्र यज्ञोपवीत देखकर कि आपमें येही द्वय चिन्ह मान्यताके बिशेषहैं

तातें आपने जो कुछ अवाच्य मुझको कहा सो मैंने रिस रोंकि कर सब सहलिया ५ क्योंकि देवता, ब्राह्मण, वैष्णव, गऊ इनके ऊपर हमारे कुलकी शूरता नहीं चलती है ६ वध के पापसे तो लोक परलोक उभय भ्रष्ट होते हैं और हारने से आप कीर्त्ति होती है तातें मारते परभी हमको आपके पैरों परनाहीं उचित है ७ कोटि इन्द्र वज्रके समान तो आपका वचन ही है फिर यह धनुष बाण और कुठार केवल भार वृथा क्यों धारण करते हो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ यह बेष आपके अनुचित है जो आपका अनुचित बेष देख कर मैंने आपसे अनुचित कहा है उसको आपतो बड़ेमुनि धीर हो क्षमा करो ऐसे लक्ष्मण के वचन सुनकर भृगुवंश मणि परशुराम रिस भरे गंभीर वचन बोले ॥ ८७ ॥

कौशिकसुनहुमंदयहबालक। कुटिलकालबसनिजकुलघालक १
भानु बंश राकेश कलंकू। निपट निरंकुश अबुध अशंकू २
कालकवरहोइहि क्षणमाहीं। कहहु पुकारि खोरिमोहिनाहीं ३
तुमहटकहु जौ चहहु उबारा। कहि प्रताप बलरोष हमारा ४
लखणकहामुनिसुयशतुम्हारा। तुमहिअछतको बरणौपारा ५
अपनेमुखतुम आपनिकरणी। बारअनेक भांति बहुबरणी ६
नहिंसंतोषतोपुनिकछुकहहू। जनिरिसरोकिदुसहदुखसहहू ७
बीरवृत्ति तुमधीर अक्षोभा। गारी देत न पावहु शोभा ८
दो० शूर समर करणी करहिं कहि न जनावहिं आप।
विद्यमान रण पाइ रिपु कायर करहिं प्रलाप ॥ ८८ ॥

हे बिश्वामित्र सुनो यह बालक तो बड़ाही मंदहै गांठिगांठि कुटिलहै और काल बस है और अपने कुलका नाश करता है ये सब लक्षण सर्पमें होते हैं १ सूर्य्यवंश चन्द्रमा में यह कलंक रूप है अतिही निरंकुश, अज्ञान, निडर है २ एक क्षण में कालका ग्रास होजायगा पुकारि कर कहे देता हूं मेरे को दोष नहीं है ३ तुम जो इसको बचाया चाहो तो हमारा बल प्रताप रोष कहिकर इसे समुझाओ ४ लक्ष्मणने कहा हे मुनि आपके सुयशको आपके होते और कौन बखान सकता है ५ देखो कि अपनेही मुखसे आपने अपनी करणी अनेक बार बहुत भांति बरणी है ६ तिस पर भी जो संतोष न हुआ हो तोफिर कहि चलो रिस रोकि कर दुख मति सहो ७ आप तो बड़े बीर वृत्तिधारी और बड़े धीर सावधान होकर गारी देते नही सोहते हो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ शूरबीर युद्ध में करणी करि दिखाते हैं कुछ आप पहिलेही से कहि नहीं जनाते हैं और जो कादर होतेहैं सो केवल प्रलापकहैं बकवादही करतेहैं ॥ ८८ ॥

तुमतौ कालहांकिजनु लावा । बारबारमोहि लागिबोलावा १
सुनत लखण के वचनकठोरा । परशुसुधारि धरेउकरघोरा २
अबजनि दोषदेहुमोहिलोगू । कटुबादी बालक बधयोगू ३
बालबिलोकि बहुत मैं बांचा । अबयहमरण हारभासांचा ४
कौशिककहा क्षमिय अपराधू। बालदोष गुणगणहिं न साधू५
करकुठार मैं अकरण कोही । आगे अपराधी गुरुद्रोही ६
उतरदेत छांड़ेउं बिनुमारे । केवलकौशिक शीलतुम्हारे ७
नतु यहि काटिकुठारकठोरे । गुरुहिअऋण होतेउं श्रमथोरे ८
दो० गाधि सुवन कह हृदय हंसि मुनिहि हरहरहि सूझ ।
अजगव खंडेउ ऊखजिमिअजहूंबूझअबूझ ॥ ८९ ॥

जिस काल के वश आप मेरे को कहते हो सो काल आप के तो बशही में है मानौ उसको आप अपने साथही लेते आये हैं उसी को बार बार मेरे लिये आप बुलाते हैं १ ऐसे लक्ष्मण के कठोर बचन सुनतेही परशुराम ने महाघोर अपना कुठार उठाया और कहा २ कि अब मेरे को कोई दोष न देवै यह कटुबादी तो बधही के योग्य है ३ बालक जानि कर मैंने इस को बहुत बचाया परंतु अबतो यह मरण हार ही है ४ विश्वामित्र ने कहा अपराध क्षमा कीजिये बालकों के गुण दोष साधु जन नहीं गृहण करते हैं ५ परशुराम ने कहा आप जानते हैं कि हाथ में तो मेरे यह कुठार है और मैं अकारण क्रोधी हूं तिस पर यह अपराधी मेरे गुरू का द्रोही सामुहें खड़ा है और उत्तर प्रत्युत्तर देता जाता है तिस को मैं बिना मारे छोड़ता हूं केवल आप का शील मेरे को मारता है ६ । ७ नही तो इस को इसी कठोर कुठार से काटि कर थोरेही श्रम में गुरू के ऋण से अऋण हो जाता ॥ ८ ॥ दोहा ॥ विश्वामित्र ने मन में कहा कि मुनि को अभी तकहराहराही सूझता है अजगवकहें पिनाक महा कठोर तो इक्षुदण्ड के समानतोरि गेरा है और ये अभीं बूझ अबूझही हैं नहीं जानते हैं कि भला ईश्वरों के धनुषों को कहीं जीव तोरि सकते हैं ॥ ८९ ॥

कहेउलखण मुनिशीलतुम्हारा । को नहिंजान विदितसंसारा १
मातापिताहिं अऋणभयेनीके । गुरुऋणरहा सोचबड़जीके २
सो जनुहमरे माथेकाढ़ा । दिनचलिगये ब्याजबहु बाढ़ा ३
अबआनिय ब्यवहरिया बोली । तुरतदेंव मैं थैली खोली ४

सुनिकटुबचन कुठार संवारा । हाइहाइ सबसभा पुकारा ५
भृगुवरपरशु दिखावहु मोही ।विप्रबिचारि बचहुनृपद्रोही ६
मिलेनकतहुं सुभटरणगाढ़े । द्विजदेवता घरहि के बाढ़े ७
अनुचित कहिसबलोगपुकारे ।रघुपति सैनहिं लखणनिवारे८
दो० लखणउतरआहुति सरिस भृगुपति कोपकृशानु ।
बढ़तदेखि जलसमबचन बोलेरघुकुलभानु ॥ ९० ॥

लक्ष्मण ने कहा हे मुनि आप के शील को कौन नहीं जानता है सब संसार में विख्यात तौ है १ रहा एक ऋणसो माता पिताके ऋण से तौ आप भली भांति अऋणाही हो चुके हो केवल गुरू का ऋण रहा है उसका आप को बड़ा सोच है २ क्योंकि सो हमारे शिर पर काढ़ा है उस को बहुत काल बीता ब्याज भी बढ़ गया होगा ३ सो अब आप अपने व्यवहारीही को बुलाइलावैं अभी मैं उनको थैली खोलि कर मूल ब्याज समेत हुंडी सी परखादूगा वा रोक थैलीही खोलदूंगा ४ ऐसे कटु वचन सुनतेही परशुरामने कुठार उठाया तबतौ सब सभामें हाहा कारहो उठा ५ लक्ष्मण ने कहासुनो हे भृगुबंशी मुनि तुम मेरे को कुठारक्या दिखाते हो मैं तुम को ब्राह्मणजानिकर छोड़ताहूं हे नृपद्रोही६ कहीं आपको रणधीर योधाओंसे कामनहीं परा है हेद्विज देवता अपने घरानेही में हाथ चला रहे हो ७ जब ऐसे लक्ष्मण के वचनों को लोग अनुचित कहने लगे तबतौ राम चन्द्र ने लक्ष्मण को सैनोही में निवारण करि दिया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ लक्ष्मण के वचन रूपी आहुति से परशुराम की क्रोधाग्नि को बढ़ते देखा तबतौ जल के समान रघुकुल भानु राम बोले ॥ ६० ॥

नाथ करिय बालक पर छोहू । शुद्धदूध मुखकरिय न कोहू १ ॥
जौपै प्रभु प्रभाव कछु जाना । तौकि बराबरि करत अयाना २॥
जोलरिका कछु अचगरि करई । गुरुपितु मातु मोदमन भरई ३॥
करिय कृपा शिशु सेवक जानी । तुमसम शीलधीर मुनिज्ञानी ४ ॥
राम बचन सुनिकछुक जुड़ाने । कहिकछुलखणबहुरिमुसुकाने५॥
हंसतदेखिनखशिखरिसव्यापी । राम तोर भ्राता बड़पापी ६ ॥
गौर शरीर श्याम मन नाहीं । कालकूट मुखपय मुख नाहीं ७॥
सहज टेढ अनुहरै न तोहीं । नीचमीच सम देखत मोहीं ८ ॥
दो० लखण कहेउ हंसि सुनहु मुनि क्रोध पापकर मूल ।
जिहि बस जन अनुचित करहिं जरहिविश्व प्रतिकूल९१

हे नाथ यह तो बालक है इसके कहे को आप न सुनै इस पर दया करो यह तो अभी शुद्ध दूध मुख है आप को क्रोध करना न चाहिये १ जो यह कुछ भी आप के प्रभाव को जानता होता तो क्या आप की पटतरि करता २ जो बालक कुछ चपलई करते हैं तो गुरु माता पिता उनके प्रमोद मानते हैं ३ तातें इसको अपना अज्ञशिशु सेवक जानि कर कृपा कीजिये आपतो सम शील कहें निन्दा स्तुति को समान मानी और धीर मुनि ज्ञानी हैं ४ ऐसे राम के वचन सुनि कर कुछ शीतल हुये हैं कि लक्ष्मण कुछ कहि कर मुसुकाइ दिये ५ लक्ष्मण को हंसते देखतेही नख से शिखा पर्य्यंत आगही होगये कहा कि हे राम यह तेरा भाई तो बड़ाही पापी है ६ ऊपर शरीर ही तो गौर है और भीतर से तो निरा कालाही है यह तो कालकूट मुख है दूध मुख कहां है ७ और सौभाविकही टेढा है तेरे को नहीं अनुहरता है देखो मेरे को मृत्यु के समान क्रोध भरा भुजंग की नाईं देखि रहा है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ लक्ष्मण ने कहा सुनो हे मुनि पापकी मूल तो क्रोधही होता है जिसके बश होकर जीव अनुचित करि बैठते हैं वा अनबसाते में बिनाहीं अग्नि विश्व प्रति कूल जरते रहते हैं ॥ ९१ ॥

मैं तुम्हार अनुचर मुनि राया । परिहरि कोपकरिय अबदाया १॥
टूट चापनहिं जुरहि रिसाने । बैठिय होइहिं पांइ पिराने २ ॥
जो अतिप्रिय तो करिय उपाई । जोरिय कोउ बड़ गुणीबुलाई ३ ॥
बोलत लषणहिं जनक डराहीं । मष्टकरहु अनुचित भलनाहीं ४॥
थर थर कांपहिं पुर नरनारी । छोट कुमार खोट अतिभारी ५ ॥
भृगुपतिसुनिसुनि निर्भयबानी । रिसतनु जरै होइ बलहानी ६ ॥
बोले रामहिं देइ निहोरा । बचौं बिचारि बंधु लघु तोरा ७ ॥
मन मलीन तन सुन्दर कैसे । विषरस भरा कनक घटजैसे८ ॥
दो० सुनि लक्ष्मण बिहंसे बहुरि नयन तरेरे राम ।
गुरु समीप गवने सकुचि परिहरि बाणीबाम ९२ ॥

मैं तो हे मुनिराय आप का अनुचर हूं कोप निवारण करिके मेरे पर आप कृपा कीजिये १ टूटा धनुष कोप करने से तो जुरा नहीं जाता है तातें बैठिये बड़ी बार हुई पाउं पिराने होंगे २ जो आप को यह धनुष अतिही प्यारा है तो इसके लिये उपाय कीजिये कोऊ बड़ा गुणी बुलाइ कर जुरवाइये ३ लक्ष्मण के बोलते तो राजा जनक डरते हैं कहा कि चुप करो अनुचित भला नहीं होता है ४ पुर के सब लोग थर थर कांपते हैं और कहते हैं कि छोटे कुमार में तो बड़ी खोट है ५ लक्ष्मण के निर्भय वचन सुनि सुनि कर परशुराम का शरीर तो कोप से जरता

जाता है और बल घटता जाता है ६ तव तो राम पर थरहाई करते बोले कि तेरा छोटा भाई जानि कर छोड़ता हूं ७ मन में मैला और तन में उज्जल कैसा है विष से भरा हुआ जैसा सुवर्ण का घट होता है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसे वचन सुनि कर लक्ष्मण फिरि हंसे जब रामने नेत्र तरेरे किये तब तो जो वाम वाणी कहा चाहते रहे उस को त्यागि गुरू के पास सकुचि करि चले गये ॥ ९२ ॥

अति बिनीत मृदु शीतल बाणी । बोले राम जोरि युग पाणी १
सुनहु नाथतुमसहज सुजाना । बालकबचन करियनहिं काना २
बररे बालक एक सुभाऊ । इनहिं न सन्त बिदूषहिं काऊ ३
तिन्ह नाहिन कछु काज बिगारा । अपराधी मैंनाथ तुम्हारा ४
कृपा कोप बध बंध गुसाईं । मोपर करिय दास की नाईं ५
कहियबेगिजेहिबिधि रिसजाई । मुनि नायकसोइकरियउपाई ६
कह मुनि राम जाइरिसकैसे । अजहुं अनुज तव चितवअनैसे ७
यहिके कंठ कुठार न दीन्हा । तौ मैं काह कोप करि कीन्हा ८
दो० गर्भ श्रवहिं अवनि पर बनि सुनि कुठार गति घोर ।
परशु अछत देखहुं जियत बैरी भूप किशोर ॥ ९३ ॥

तबतो अत्यन्त नम्र कोमल और शीतल बाणी से दोनों हाथ जोरि कर श्री राम चंद्र बोले १ सुनो हेनाथ आप तो सहज सुजान हैं आपको बालकों के वचन कान करने न चाहिये २ बरर कहैं बिषधर जन्तु कीट और बालक ये दोनों एकही सुभाव होतेहैं संत जन इनको नहीं छेड़तें हैं ३ और उसने तो कुछ आपका कामभी नही बिगारा है अपराधी तो हे नाथ आपका मैंहूं ४ कृपा वा कोप बध वा बंधन आप मेरे को दास की नांई कीजिये ५ जिस प्रकार आपका कोप शांत हो सो आप शीघ्र कहिये उसका मैं तैसाही उपाय करूं ६ परशुराम बोले कि सुनो हे राम मेरी रिस कैसे जाती है तेरा भाई तो अबतक मेरी ओर बुरी दृष्टि सेही देखता है ७ जो इसके कंठ में मैंने कुठार न मारि लिया तो वृथा कोप करिके क्या किया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जिस मेरे कुठार की घोर गतिके सुनतेही राजाओं की रानियों के गर्भगिरि परते हैं तिस कुठार के होते क्यामैं अपने बैरी इस राजकुमार को जीताही देखूं ॥ ९३ ॥

बहै न हाथ दहै रिस छाती । भा कुठार कुंठित नृप घाती १
भयउ बाम बिधि फिरेउ सुभाऊ । मोरे हृदय कृपाकसिकाऊ २
आजु दैव दुख दुसह सहावा । सुनि सौमित्र बिहंसि शिरनावा ३

बाउ कृपा मूरति अनुकूला। बोलत बचन झरत जनु फूला ४
जो पै कृपा जरै मुनि गाता। क्रोध भये तनु राखु बिधाता ५
देखु जनक हठि बालक येहू। कीन्ह चहत जड़ यमपुर गेहू ६
बेगि करहु किन आंखिन ओटा। देखत छोट खोट नृप ढोटा ७
बिहंसे लषण कहामुनि पाहीं। मूंदहु नयन कतहु कोउनाहीं ८
दो० परशुराम तब राम प्रति बोले बचन सक्रोध।
शंभु शरासन तोरि शठ करसि हमार प्रबोध ॥ ६४ ॥

क्या करूं रिस से तो मेरी छाती जरी जाती है और हाथ मेरा इस पर नहीं चलता है और यह नृपघाती मेरा कुठार भी कुछ मोथराहीसा होगया है १ बिधाता की बामता से कुछ मेरा सुभाव भी फिरि गया है मैंतो जानता भी नहीं रहूं कि हृदय में कृपा कभी कैसी होती है २ आज दैवने यह दारुण दुस्सह दुख मेरे को सहवायाहै यह सुनिकर लक्ष्मण ने हंसिकर शिरनीचा करलिया और कहा ३ वाहरी कृपा और वाहरी अनुकूल मूर्त्ति और वाहरे मधुर मनोहर बचन मानो फूलही तो झरते हैं ४ सुनो तो हे मुनि जो कृपा करते पर भी आपके अंग जरे जाते हैं तो क्रोध के समय आपके शरीर का रक्षक दैवही होता होगा ५ यह सुनिकर परशुराम जनक प्रति बोले हे जनक इस हठी बालक को तो देखो यह जड़ अपना घर अभी यमपुर में कियाही चाहता है ६ शीघ्रही इसको मेरी आंखों के ओट क्यों नहीं करि देते हो देखने में तो यह छोटा है परंतु बड़ाही खोटा है ७ यह सुनिकर तो लक्ष्मण हंसे और परशुराम से कहा कि महाराज इसका तो सुगमही उपाय है आप अपने नेत्र मूंदि लीजिये फिरि आपके जान कोई भी कहीं नहीं है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तब तो परशुराम रामप्रति बड़ा क्रोध करिके बोले कि रे शठ तू हमारे गुरू के धनुष को तोरि कर हमारा बातोंही में प्रबोध किया चाहता है ॥ ६४ ॥

बंधु कहत कटु संमत तोरें। तूछल बिनय करसि करजोरें १
करु परितोष मोर संग्रामा। नाहिं तौ छांडु कहाउब रामा २
छलतजि करहुसमर शिवद्रोही। बंधुसहित न तु मारहुं तोही ३
भृगुपति कहत कुठार उठाये। मन मुसुकाहिं राम शिरनाये ४
गुनह लषण कर हमपररोषू। कतहुं सुधाइहुं तें बड़ दोषू ५
टेढ़ जानि शंका सब काहू। वक्र चंद्रमहिं ग्रसै न राहू ६
रामकहा रिसतजहु मुनीशा। कर कुठार आगे यह शीशा ७

जिहिंरिसजाइकरियसोइस्वामी । मोहिजानि आपनअनुगामी ८
दो० प्रभुहि सेवकहि समर कस तजहु विप्र वर रोष।
वेष बिलोकि कहेउ कछु बालकहूं नहिं दोष ॥ ९५ ॥

भाई तेरातो तेरे संमत से कटु कठोर कहता है और तू हाथ जोरि जोरि करझूंठी छल बिनती करता है १ ऐसे छलसे मेरा परितोष नहीं होता है कितो संग्रामसे मेरा परितोषकर नहींतो रामकहाउना छोडिदे २ छलछोड़ि कर हे शिव द्रोही संग्रामही कर नहींतो भाई समेत तेरेको मारताहूं ३ इस प्रकार परशुराम तो कुठार लिये रिसातेहैं और राम शिरनवाये मनमें मुसुकाते हैं ४ देखो दोष तोलक्ष्मण का और रोष मेरेपर कहीं कहीं सुधाईमें भी बड़ा दोषहोता ५ टेढ़ादेखि करसबको शंकाहोती है टेढ़े चन्द्रमाको कभी राहु नही गृसताहै ६ रामने कहा हेमुनीश महाराज रिसको दूरि करो हाथमें आपके कुठार है और आगे मेरा शिरहै७ जिस प्रकार आपकी रिस जावै सोकीजिये मैंतो आपका दासहूं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ प्रभु स्वामी को और सेवक को संग्राम कैसा हेबिप्र वर रोषको त्यागन करो और इस बालक ने भी आपका वेषही देखिकर कुछ अवाच्य कहाहै उसको भी दोषनहींहै ॥ ९५ ॥

देखि कुठार बाण धनुधारी । भइ लरिकहिं रिसवीर बिचारी १
नाम जानपै तुमहिं नचीन्हा । वंश सुभाव उतरतिहिं दीन्हा २
जो तुम अवते मुनि की नांई । पदरज शिर शिशु धरत गुसांई ३
क्षमहु चूक अनजानत केरी । चहिय विप्र उर कृपा घनेरी ४
हमहिं तुमहिं सरबरिकसिनाथा । कहहु तौ कहांचरणकहंमाथा ५
राममात्र लघु नाम हमारा । परशु सहित बड़नाम तुम्हारा ६
देव एक गुण धनुष हमारे । नवगुण परम पुनीत तुम्हारे ७
सब प्रकार हम तुम सनहारे । क्षमहु विप्र अपराध हमारे ८
दो० बार बार मुनि विप्र वर कहा राम सनराम ।
बोले भृगुपति सरुष तब तुहूं बंधु समबाम ॥ ९६ ॥

आप को कुठार और धनुषबाण धारी देखकर बालकको बीर जानि कर रिसहुई १ आपका परशुराम ऐसा नामही जाना आपके प्रभाव को नहीं पहिचाना अपने वंश के सुभावसे उत्तर प्रत्युत्तरदिया २ जो आप हमारे गुरू महाराज कौशिकमुनि के समान मुनिके वेषमें आतेतो आपके चरणों की रज को यही बालक अपने शिर पर धारण करता ३ सो उसने आप में मुनीश्वरों कातो कोई भी लक्षणनहीं देखा तातें आप अन जानते की चूक को क्षमा कीजिये ब्राह्मण के हृदय मेंतो बिशेष कृपाही चाहिये ४

हमारी और आपकी तो हे नाथ सरवरि कैसे होसकती है कहोतो भला कहां चरणों की निचाई और कहां सिरकी बड़ाई ५ केवल राम मात्रतो अति छोटामेरा नामहै और परशु समेत बड़ानाम आपका है ६ हमारे तो हे देव एक धनुषही गुणहै और आपके तो परम पवित्र स्वभावज नवगुण हैं जो भगवत् गीतामें कहे हैं समोदमस्तपः शौचऽक्षांतिरार्जवमेवचज्ञानबिज्ञानमास्तिक्यंब्रह्मकर्मस्वभावजं अर्थात् १ सम २ दम ३ तप ४ शौच ५ शांति ६ आर्जव ७ ज्ञान ८ बिज्ञान ९ आस्तिक्य ७ हमतो सब प्रकार आपसे हारेही हैं तातें हे बिप्रवर हमारे सब अपराधों को आप क्षमाकीजिये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जब बार बार मुनि और विप्र वरही परशुराम ने कहा तबतो कोप समेत परशुराम बोले कि तूभी भाईही के समान बाम कहैंखोटाहै ॥ ९६ ॥

निपटहिं द्विजकरि जानेसि मोहीं । मैंजसविप्र सुनावहुं तोहीं १
चाप श्रुवा शर आहुति जानू । कोप मोर अति घोर कृशानू २
समिध सेन चतुरंग सुहाई । महा महीप भये पशु आई ३
मैं यहि परशु काटि बलि दीन्हे । समर यज्ञ जग कोटिनकीन्हे ४
मोर प्रभाव विदित नहिं तोरे । बोलसि निदरि विप्र के भोरे ५
भंजेउ चाप दाप बड बाढा । अहमिति मनहुं जीति जगठाढा ६
राम कहा मुनि कहहु विचारी । रिसअति बडि लघु चूकहमारी ७
छुवतहिं टूट पिनाक पुराना । मैं किहिं हेतु करहुं अभिमाना ८
दो० जो हम निदरहिं विप्रबदि सत्य सुनहु भृगुनाथ ।
तौ अस को जगसुभट जिहिं भयबस नावहिं माथ॥९७॥

निपट ब्राह्मणही करिके तूने मेरेको जानिरक्खा तोमैं जैसा यज्ञकर्त्ता वीर ब्राह्मण हूं सो तेरेको सुनाता हूं १ मेरायह धनुषही तो होमकरने का श्रुवा है और इसमें से छूटते हैं जो बाण तिनको आहुति जानो और महा दारुण मेरा कोप सोई अति घोर प्रचंड अग्नि है२ चतुरंगिनी सेना मेरी यज्ञकी समिधें हैं और महा महिपाल बलि पशु हैं ३ सो मैंने इसी कुठार से काटि काटि बलि दे दे दिये हैं ऐसे समर यज्ञ मैंने अगणित किये हैं ४ मेरे प्रभावको तू जानता नहीं है तातें केवल ब्राह्मणही के धोखे से निदरि कर बोलता है ५ एक धनुष ही के तोरने से तेरेको अति दर्प बढ़ि गया है तातें तू अपनेको अहमिति मानता है मानो जग जीति लिया है ६ तबतो रामने कहा हे मुनि आपने अपना प्रभाव जो कहा सब सत्यहै मैं सब जानता हूं अब आप मेरी कहनि को समुझि बिचारि कर उत्तर देवें छोटी सी चूक पर इतना बड़ा कोप क्यों करते हैं ७ सब सभा देखती है कि अति पुराना

पिनाक जो छूतेही टूट गया उसके तोरने पर मैं क्या अभिमान करूंगा ॥ ८ ॥ दोहा ॥ और जो हम आपको ब्राह्मण जान कर भी निदरते होते तो सत्य सत्य सुनौ हे भृगुनाथ संसार में ऐसा योधा तो कोईभी नहीं है जिसको हम भयभीत होकर हाथ जोरैं और शीश नवावें ॥ ९७ ॥

देव दनुज भूपति भट नाना । सम वा अधिक होइ बलवाना १
जो रण हमहिं प्रचारहि कोई । लरहिंसुखेन काल किन होई २
क्षत्री तनु धरि समर शकाना । कुल कलंक तिहि पामर आना ३
कहहुं सुभावन कुलहिं प्रसंशी । कालहु डरहिं न रणरघुवंशी ४
विप्र वंशकी असि प्रभुताई । अभय होइ जो तुमहिं डराई ५
सुनि मृदु वचन गूढ रघुपति के । उघरे पटल परशुधरमतिके ६
राम रमापति कर धनु लेहू । खैंचहु मिटै मोर संदेहू ७
देत चाप आपुहिं चढ़ि गयऊ । परशुराम मन विस्मय भयऊ ८
दो० जाना राम प्रभाव तब पुलकि प्रफुल्लित गात ।
जोरि पाणि बोले वचन प्रेम न हृदय समात ॥ ९८ ॥

चाहे सो देवता होइ और चाहे सो दैत्य होइ चाहे सो राजा होइ चाहे सो योधा होइ हमारे समान बल होइ वा हमतें अधिक बली होइ १ जो रणभूमि में आकर हमको प्रचारै तौ उससे प्रसन्न चित्त होकर युद्ध ही करैं कालही क्यों न होवै २ क्योंकि हम क्षत्री हैं क्षत्री होकर जो युद्धसे सकाता है सो अपने कुलको कलंक लगाता है ३ तिस पर मैं अपने समस्त कुलका सुभाव ही कहता हूं कुछ प्रशंसा नहीं करता हूं कि रघुवंशियों में तो कभी कोई काल से भी नहीं डरते हैं तिस पर मैं तौ रघुबंश शिरोमणि हूं मैं किससे भयमानता हूं मेरे समान शस्त्रधारी कौन है राम:शस्त्रभृतामहं ॥ ४ ॥ सो मैं जो आपसे नम्र होता हूं वह आपके ब्रह्मवंशकी ऐसीही प्रभुताई है कि जो अभय होता है अर्थात् परमेश्वर भी आपसे भय करता है ५ ऐसे कोमल गूढ़ार्थ वचन श्री रामचन्द्रके सुन कर परशुरामकी बुद्धिके कपाट खुल गये ६ कहा कि हे राम इस रमापति विष्णु के धनुषको लेकर चढ़ाओ मेरा शेष संदेह भी मिट जावै ७ ऐसे कह कर जो परशुराम ने शारंग धनुष रामको दिया सो देतेही आपही आप चढ़ि गया तबतौ परशुरामको बड़ा खेद हुआ ॥ ८ ॥ दोहा फिरि जब रामका प्रभाव और क्षमा शील सुभाव जाना तबतौ पुलकावली क प्रफुल्लित होगये औरहाथ जोड़कर बिनय वचनबोले हृदयमें प्रेम नहीं समा

जयरघुवंश बनज बन भानू । गहन दनुज कुल दहन

जय सुर विप्र धेनु हितकारी । जय मद मोह कोह भ्रमहारी २
बिनयशील करुणा गुणसागर । जयतिबचनरचना अतिनागर ३
सेवक सुखद सुभग सब अंगा । जयशरीर छवि कोटि अनंगा ४
करौं कहा मुख एक प्रसंशा । जय महेश मन मानस हंसा ५
अनुचित बहुत कहेउं अज्ञाता । क्षमहुक्षमा मंदिर दोउ भ्राता ६
कहि जय जय जय रघुकुल केतू । भृगुपतिगये बनहिं तपहेतू ७
अप भय कुटिल महीप डराने । जहं तहं कायर गवहिं पराने ८
दो० देवन दीन्ही दुंदभी प्रभुपर बरषहिं फूल ।
हर्षे पुर नर नारि सब मिटे मोह मय शूल ॥ ९९ ॥

हे रघुवंश कमल बन के आनन्दबर्द्धन दोनों भानुराम लक्ष्मण स्वामी आपकी जय होय और दैत्यों के कुल रूपी बन के दाहक अग्नि देव दोनो भाइयों की जय होय १ देवता ब्राह्मण पृथ्वी गऊ के हित कर्त्ता मद मोह क्रोध भ्रम के हर्त्ता दोनो भाइयों की जय होय २ बिनय शील और करुणा गुण के समुद्र और वचन रचना में अति प्रवीण दोनो भाइयों की जय होइ ३ सब भांति सुन्दर सेवक सुख दायक और कोटि काम के समान सुन्दर दोनो भाइयों की जय होइ ४ एक मुख से मैं आप की प्रसंशा कैसे कर सक्ता हूं जगद्वंद्य महेश्वर शिव के मन मानसर के हंस दोनो भाइयों की जय होय ५ जो मैंने आपको बिना जाने अनुचित अवाच्य कहा है उसको आप छमा करैं आप तौ दोनो भाई छमा मंदिर हैं ६ इस प्रकार बारंम्बार जय जय जय रघुकुल केतु कहि कर भृगु पति तप के निमित्त गन्ध मादन पर्वत के बन को चले गये ७ अपडर के मारे सब राजा डराने और जहां के तहां कायर क्रूर चुपकेही चले गये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ देवताओं ने दुन्दुभी बजाई और राम लक्ष्मण पर फूल बरषाये पुर के नर नारी सब हर्षित हुये और मोह जनित समस्त शूल मिटि गये ॥ ९९ ॥

अति गह गहे बाजने बाजे । सबहिं मनोहर मंगल साजे १
यूथयूथमिलिसुमुखि सुनयनी । करहिंगान कलकोकिलबयनी २
सुख बिदेहकर बरणि न जाई । जन्मदरिद्र मनहुं निधिपाई ३
बिगतत्राश भइ सीय सुखारी । जनुविधु उदय चकोर कुमारी ४
जनककीन्ह कौशिकहिं प्रणामा । प्रभु प्रसादधनु भंजेउरामा ५
मोहि कृतकृत्यकीन्हदोउभाई । अबजो उचितसोकहियगुसाई ६

कह मुनि सुनु नरनाह प्रवीना। रहा बिबाह चाप आधीना ७
टूटतहीं धनु भयेउ बिबाहू। सुर नर नाग बिदित सब काहू ८
दो० तदपि जाइ तुम करहु अब यथा वंश व्यवहार।
बूझि विप्र कुल वृद्ध गुरु वेद विदित आचार॥ १००॥

जब परशुराम श्री राम को शार्ङ्ग धनुष देकर चलेगये औरदुष्ट राजा भी अपनाही सामुह लिये गये तबतो जनक पुर में बड़े गह गहे बाजे बजे और सब पुरबासियों ने अपने अपने घरों में मंगल साजे १ यूथों के यूथ मिलि मिलि कर सखी सुलोचनी मधुर स्वर से कोकिल बयनी सुन्दर गान करने लगीं २ राजा जनक का सुख तो बरणाही नहीं जाता है मानों जन्म दरिद्री ने बड़ा धन पाया ३ त्राश बिगत सीता तो कैसी सुखी हुई है जैसे चन्द्रमा के उदय से चकोर किशोरी सुखी होती है ४ उसी समय राजा जनक ने बिश्वामित्र को प्रणाम किया और कहा कि आप के अनुग्रह से धनुष तो राम ने तोरि लिया और मेरे को दोनो भाइयों ने कृत कृत्य कर दिया अब जैसा आप उचित जानें सो कीजिये ५।६ तब बिश्वामित्र ने कहा हे राजा आप तो ज्ञान वान हैं सब जानते हैं कि सीता का विवाह इस धनुषही के आधीन रहा सो बिवाह तो धनुष के टूटतेही हो गया सुर नर नाग त्रैलोक बासी सब पर विदित हो गया॥ ७।८॥ दोहा॥ तथापि अब तुम जाकर अपने बंश का व्यवहार करो अपने यहां के पंडित और कुल के बूढ़ों बड़ों से बूझि कर जैसा वेद बिदित आचार हो सो करो १००॥

यह शत पंच चौपाइयों कीचौथी पचीसी और सीता स्वयम्बर की तीसरी पचीसी हुई और राम चन्द्र कादिग्विजय पूर्ण हुआ और सीता स्वयम्बर के पूर्बार्द्ध औ उत्तरार्द्ध के विभागन होजाने के निमित्त छन्द निर्माण नहीं किया और उनकी बिश्वामित्र का संभाषणभी असमाप्त रक्खा

दूत अवधपुर पठवहु जाई। आनै नृप दशरथहिं बुलाई १
मुदित राउ कह भलहिं कृपाला। पठये दूतबोलि तेहिकाला २
बहुरि महाजन सकल बुलाये। आइ सबनि सादर शिरनाये ३
हाट बाट मंदिर सुर वासा। नगर संवारहु चारिहु पासा ४
हर्षि चले निजनिज गृहआये। पुनि परिचारक बोलि पठाये ५
रचहु विचित्र बितान बनाई। शिर धरिबचन चले शिरनाई ६
पठये बोलिगुणी तिन्हनाना। जे बितान विधि कुशल सुजाना ७
विधिहि बंदितिन्ह कीन्हअरंभा। बिरचे कनक कदलिकेखंभा ८

दो० हरित मणिन के पत्र फल पद्म राग के फूल ।
रचना देखि विचित्र अति मन विरंचि कर भूल ॥ १०१॥

प्रथम तो अयोध्या को दूतभेजो सो बरात समेत महाराज दशरथको बुलाइलावैं १ यह सुनि कर राजा जनक अतिही प्रसन्न होकर बोले बहुत भला दूत उसी समय बुला कर अयोध्या को भेजि दिये २ फिरि नगर के महाजन बुलाये उन्हों ने आकर शीश नवाये ३ आज्ञा हुई कि हाट, मार्ग, घर, देवालय जो नगर के चारोंपास हैं उनको संवारो ४ राजा की आज्ञा को सुनि कर परम प्रसन्न अपने अपने घर आये फिरि राजा ने सेवकों को बुलाया ५ कहा कि अति बिचित्र बितान मंडप की रचना रचौ सो आज्ञा मानि शीश नवाइ कर चले ६ तिन ने देश देशतें बड़े बड़े गुणी शिल्पकार बुला भेजे जो बितान विधि में बड़े चतुर सुजान ७ रचना के मूल आचार्य्य बिधाता को बंदन करिके मंडप का उन्हों ने प्रारंभ किया तहां प्रथम तो सुवर्ण के केरौं के खम्भे बनाये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तिन के हरितमणिन के तो पत्र और फल बनाये और अरुण मणि पद्म राग के फूल लगाये जिस की बिचित्र रचना को देखि कर ब्रह्मा काभी मन मोहि जावे ॥ १०१ ॥

बेणु हरितमणिमय सब कीन्हे । सरलसपर्बपरहिं नहिं चीन्हे १
कनक कलित अहि बेलि बनाई । लखिनहिं परै सपर्ण सुहाई २
तिहि के रचि पचि बंध बनाये । बिच बिच मुक्ता दाम सुहाये ४
माणिक मरकत कुलिश पिरोजा । चीरि कोरिपचिरचे सरोजा ५
किये भृंग बहु रंग बिहंगा । गुंजहिं कूजहिं पवन प्रसंगा ६
सुर प्रतिमा खम्भनि गढ़िकाढ़ीं । मंगल द्रव्य लियें सब ठाढ़ीं ७
चौके भांति अनेक पुराये । सिंधुरमणि मय सहज सुहाये ८
दो० सौरभ पल्लव सुभग सुठि किये नील मणि कोरि ।
हेम बौर मरकत घवरि लसत पाट मय डोरि ॥ १०२॥

बांस भी हरित मणिहों के किये अति सरल सूधे गाठौ समेत जो पहिचानेहीं न परै १ सुवर्ण की अति उज्जल नागबेलि बनाई जो लखीही नहीं परती है ऐसी पत्रों समेत सुन्दर सुहाई है २ यहां एक चौपाई रहि गई है मैने अनेक प्राचीन पुस्तकों में भी नहीं पाई उस में जिस वस्तु का वर्णन है तिस के रचि करके और मिलाइ करिके बंधान बनाये तिन्ह बंधानों के बीच बीच मोतियों की सुहाई लरीं लगाईं ३ । ४ माणिक अरुणमणि मरकत नील मणि कुलिश श्वेत मणि पिरोजापीत मणि इनको चीरि चीरि के और कोरि कोरि के और पच्ची कहें मिलाइ मिलाइ के

चारों रंग के कमल लगाये ५ तिन कमलों पर नील पीत मणि के सचिक्कन भृंग और अनेक जाति के मनोहर चल बिहंग बैठाये जो पवन के प्रवेश से गुंजते और कूजते हैं ६ खंभों में देवताओं की प्रतिमा गढ़ि कर काढ़िदीन्ही है जो समस्त मंगलवस्तुओं को लिये खड़ी हैं ७ नीचे सुन्दर मणि मय भूमि में अनेक भांति के चौके पूरे हैं गजमुक्ताओं के जो सुभावही तें अति सुहाये हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सौरभ पल्लव कहें अति सुन्दर आम्रों के डाले नील मणि करि कोरि कर बनाये जिन में हेमकहें सुवर्ण को तो सुन्दर बौर हैं और नील मणि की छोटी छोटी अंबियों की गौहरियों केगुच्छे लगे हैं ऐसे मनोहर डालें सुन्दर पंचरंग पाट की डोरी से गुहे गये हैं ॥ १०२ ॥

रचे रुचिर वर बंदनवारे । मनहु मनोभव फंद संवारे १
मंगल कलश अनेक बनाये । ध्वज पताक पट चमर सुहाये २
दीप मनोहर मणिमय नाना । जाइन वरणि बिचित्रविताना ३
जिहिमंडपदुलहिनिबैदेही । तिहिवरणहिअसिमतिकविकेही ४
दूलह राम सकल गुणसागर । सोवितान तिहुलोक उजागर ५
जनक भवनकी शोभा जैसी । गृह गृह प्रति पुर देखिय तैसी ६
जिहिं तिरहुतितिहिसमयनिहारी।तिहिलघुलागभुवनदशचारी ७
जो संपदा नीच गृह मोहा । सो विलोकि सुर नायक मोहा ८
दोहा बसै नगर जिहि लक्षिकरि कपट नारि वर वेष ।
तिहि पुर की शोभा कहत सकुचहिं शारद शेष ॥ १०३

ऐसे सुन्दर मणिमय रसालकी गौहरियोंके बंदनवारें बनाये मानों काम किरातने देखने हारों के नेत्र और मन मृगों के बंधन के निमित्त फंदेही लगाये हैं १ मंगल द्रव्य संपन्न अनेक कलश रचे हैं ध्वजा पताका बिचित्र अमोल बस्त्र और चमर चारों पास सोहते हैं २ सुन्दर मनोहर मणिमय दीपकों का प्रकाश है ऐसे बिचित्र बितान की रचना कैसे वर्णी जाती है ३ जिस मंडप में श्री सीता दुलहिनि हैं तिस मंडप का बर्णन करै ऐसी बुद्धि किस कवीश्वर को है ४ और जिस मंडप के दूलह समस्त सद्गुण सागर श्री रामचंद्र हैं सो मंडप तो त्रैलोक प्रसिद्धही है ५ जैसी सुन्दर शोभा राजा जनक के मंदिर की है तैसीही जनकपुर में घर घर प्रति दीख परती है ६ जिस किसी ने तिरहुति नगर को उस काल में देखा है उसको चतुर्दश लोकों की भी संपदा लघुही लगी है ७ कि जो संपदा नीच कहें थोरे से थोरे धनवानों के घरों में है उसको देखकर देवराज इन्द्र को भी आश्चर्य्य होता है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जिस नगर में साक्षात् अनन्तकोटि ब्रह्मांड नायककी महारानी स्वयं महालक्ष्मी स्त्री

रूपा विराजती है उस नगर की शोभा कहते तो शेष सरस्वती भी लजाती हैं मैं मतिमंद क्या कहि सकता हूं ॥ १०३ ॥

पहुंचे दूत राम पुर पावन । हरषे नगर बिलोकि सुहावन १
भूप द्वार तिन खबरि जनाई । दशरथ नृप सुनि लिये बुलाई २
करि प्रणामतिन पातीदीन्ही । मुदित महीपआप उठि लीन्ही ३
वारि बिलोचन बांचत पाती । पुलकि गात भरि आई छाती ४
राम लषण उर करवर चीठी । रहि गये कहत न खाटीमीठी ५
पुनि धरि धीर पत्रिका बांची । हरषी सभा बात सुनि सांची ६
खेलत रहे तहां सुधि पाई । आये भरत सहित दोउ भाई ७
पूछत अति सनेह सकुचाई । तात कहां ते पाती आई ८
दो० कुशल प्राण प्रिय बंधु दोउ अहहिं कहहु किहिं देश ।
सुनि सनेह साने वचन बांची बहुरि नरेश ॥ १०४ ॥

अब राजा जनक के पठाये दूत परम पावन श्री अयोध्या में जो पहुंचे तोपरम सुहावन नगर को देखतेही हर्षित होगये १ राजद्वार पर जाकर द्वारपालों से अपने आने और राजा जनक की पत्रिका लाने के समाचार राजा दशरथ को निवेदन कराये सुनतेही राजा ने अपने समीप बुला लिये २ प्रणाम करिके जो दूतों ने पत्री दी सो राजा ने परम प्रसन्न होकर आपही उठ कर ली ३ पत्री के बांचतेही सजल नेत्र और गद्गद हृदय और पुलकित गात होगये ४ राम लक्ष्मण तो हृदय में और पत्री हाथ में याही प्रेम में मगन जैसे के तैसेही रहि गये पत्री की खाटी मीठी कुछ भी नहीं कहते हैं ५ फिरि धीरजधरिके जब पत्री बांची तबतो सत्य मंगल समाचार सुनि कर समस्त सभा प्रसन्न होगई ६ राजकुमारों में खेलते रहें तहां जोपत्री आनेकी सुधि पाई प्रेम समेत भरत दोनों भाई राज दरबार में दौरे आये ७ अति सनेह समेत सकुच कर पूंछते हैं हे तात यह पत्री कहां ते आई है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ कुशल समेत हमारे प्राण प्रिय दोनों भाई कहो कौन देश में हैं ऐसे प्रेम भरे भरत के वचन सुनि कर राजा ने फिरि पत्रिका बांचि सुनाई ॥ १०४ ॥

सुनिपाती पुलके दोउ भ्राता । अधिक सनेह समात न गाता १
प्रीति पुनीत भरत की देखी । सकल सभा सुख लहेउ विशेषी २
तब नृप दूत निकट बैठारे । मधुर मनोहर वचन उचारे ३
भय्या कुशल कहहु दोउबारे । तुम नीके निज नयन निहारे ४

श्यामल गौर धरे धनु भाथा। बय किशोर कौशिक मुनिसाथा ५
पहिचानहु तुम कहहु सुभाऊ। प्रेमबिवश पुनि पुनि कहराऊ ६
जादिन तें मुनि गये लिवाई। तब तें आजु सांचि सुधिपाई ७
कहहु बिदेह कवन बिधिजाने। सुनि प्रिय वचन दूतमुसुकाने ८
दो० सुनहु महीपति मुकुट मणि तुम सम धन्य न कोउ।
राम लषण जाके तनय विश्व बिभूषण दोउ ॥ १०५ ॥

पत्रीकेसुनतेही दोनों भाई कैसे पुलकित हो गये हैं मानो अधिक स्नेह शरीर में समाता ही नहीं है १ ऐसी निर्व्यलीक भरत की प्रीति राम पर देखि कर समस्त सभाने बड़ा सुख पाया २ तिस पीछे राजा ने दूतों को अपने समीप बैठारि कर अति मधुर मनोहर वचनोंसे पूंछा ३ अरे भाइयों कहोतो तुमने हमारे दोनों बारे बारे बालकों को कुशल कुशल अपनी आंखोंसे देखा है ४ जो दोनों भाई सांवरे गोरे धनुष बाणों को हाथों में लिये किशोर समान जिनकी अवस्था बिश्वामित्र मुनिके साथ हैं ५ जो तुम उनको पहिचानते हो तो उनके सुभाव को तो कहो ऐसे प्रेम के वश राजा बारंबार पूंछता है ६ जादिनतें विश्वामित्र यहां से लिवाइ ले गये हैं तादिनतें सांची सांची सुधि आजु पाई है ७ और यह भी तो कहो कि राजा जनक ने कौन विधि से जाने ऐसे प्रिय वचन सुनि कर दूत मुसुकाने और बोले ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सुनो हे महिपाल मणि आपके समान तीनि लोक तीनों काल में दूसरा कोई भी धन्य नहीं है समस्त बिश्व भूषण राम लक्ष्मण दोनों जिन के पुत्र हैं १०५

पूछन योग न तनय तुम्हारे। पुरुष सिंह तिहुं पुर उजियारे १
जिनके यश प्रताप केआगे। शशि मलीन रवि शीतल लागे २
तिनकहं कहहु नाथकिमिचीन्हे। देखियरबिकि दीपकरलीन्हे ३
सीय स्वयंबर भूप अनेका। समिटे सुभट एकतें एका ४
शंभु शरासन काहुं न टारा। हारे सकल भूप बरिआरा ५
तीनि लोक महं जेभट मानी। सब की शक्ति शंभु धनु भानी ६
सकै उठाइ सुरासुर मेरू। सोउहिय हारिगये करिफेरू ७
जिहिं कौतुकशिव शैलउठावा। सोतिहि सभा पराभव पावा ८
दो० तहां राम रघुवंश मणि सुनिय महा महिपाल।
भंजेउ चाप प्रयास बिनु जिमिगज पंकजनाल ॥ १०६ ॥

पुरुषों में सिंह तीनों लोकों के उजियारे आपके राज कुमार क्या १ पुंछने के योग्य हैं १ जिनके यश और प्रताप के सामुहें चन्द्रमा मलिन सूर्य्य शीतल लगते हैं २ तिन को आप कहते हो कि राजा जनक ने कैसे जाने भला कहीं सूर्य्यभी हाथ में दीपक लेकर देखे जाते हैं ३ सीताके स्वयंबर में अनेक राजा एक से एक बलवान एकट्ठे हुये ४ परंतु महादेव का धनुष कोई भी न हटाइ सकाबड़े बड़े बरियारवीर सब हारि गये ५ तीनि लोक बासियों में जो अपने को बलवान जानते रहे तिन्ह सब की शक्ति शिवके धनुष ने लपेट ली ६ जो सुरा सुर कि सुमेरु को उठा सकते रहे सो भी हिये हार होकर चुपकेही चले गये ७ जिस ने खेलही करिके कैलाश उठा लिया उसने भी उस समाज में पराभवही पाई ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तिस समाज में आप के पुत्र राम रघुवंश मणि ने हे महाराज उस शिवके धनुष को ऐसे बिनाही प्रयास तोरि गेरा जैसे गजराज अति कोमल कमल नाल को तोरि लेवै १०६

सुनि सरोष भृगुनायक आये । बहुत भांतितिन आंखिदिखाये १
देखिरामबल निजधनुदीन्हा । करि बहुबिनयगवनबनकीन्हा २
राजत राम अतुल बल जैसे । तेज निधान लषण पुनि तैसे ३
कंपहिं भूप बिलोकत जाके । जिमि करिहरि किशोर के ताके ४
देव देखि तव बालक दोऊ । अब न आंखि तर आवत कोऊ ५
दूत वचन रचना प्रिय लागी । प्रेम प्रताप वीर रस पागी ६
सभा समेत राउ अनुरागे । दूतन्ह देन निछावरि लागे ७
कहि अनीतितिन्हमूं देउ काना । धर्म बिचारिसबहिं सुखमाना ८
दो० तब उठि भूप वशिष्ठ कहं दीन्हि पत्रिका जाइ ।
कथा सुनाई गुरुहिं सब सादर दूत बुलाइ ॥ १०७ ॥

अपने धनुष विद्यागुरु शिवजी के धनुषका भङ्ग सुनिकर बड़े रिस भरे परशुराम आये और अनेक भांति लाल ताते हुये १ परिणाम को रामका बल देखिकर अपना शार्ङ्ग धनुष भी देदिया और अनेक भांति अपराध क्षमाकरा कर वनको प्रयान किया २ हे राजा जैसे अतोल बल राम हैं तैसे तेज निधान लक्ष्मण भी हैं ३ जिन के देखतेही बडे २ बीर राजा कैसे कांपते हैं जैसे हाथी सिंह किशोर के तांकनेसे ४ हे देव आप के दोनों पुत्रों कों देखिकर अबतो हमारी दृष्टिमें कोई भी नहीं आताहै ५ दूतोंके वचनौ की रचना सबहीको अति प्यारी लगी प्रेम प्रताप और वीर रस की पगी हुई ६ सभा समेत राजा प्रेममें मगन होगये दूतों को निछावरि देने लगे ७ उन्होंने अयोग्य कहिकर कानों पर हाथ रक्खे धर्म विचारि कर सबहीने

भला माना ८ ॥ दोहा ॥ तबतों उठि कर राजा ने वशिष्ठ मुनि को पत्रिका जाकर दी और दूतों को बुलाकर सब कथा सुनाई ॥ १०७ ॥

सुनि बोले गुरु अतिसुख पाई । पुण्यपुरुष कहंमहि सुखछाई १
जिमि सरिता सागर महं जाहीं । यद्यपि ताहि कामना नाहीं २
तिमिसुख संपतिबिनहिं बुलाये । धर्म शीलपहं जाहिंसुभाये ३
तुम गुरु विप्र धेनु सुर सेवी । तस पुनीत कौशिल्या देवी ४
सुकृती तुम समान जगमाहीं । भयउ न है कोउ होनेउनाहीं ५
तुमते अधिक पुण्य बड़ काके । राजत राम सरिस सुत जाके ६
वीर बिनीत धर्म ब्रत धारी । गुण सागर वर बालक चारी ७
तुम कहं सर्वकाल कल्याना । सजहु बरात बजाइ निशाना ८
दो० चलहु वेगि सुनि गुरु बचन भलेहि नाथ शिर नाइ ।
भूपति गवने भवन तब दूत निवास दिवाइ ॥ १०८ ॥

ऐसे मनोहर मंगल समाचारसुनि कर वशिष्ठअतिआनन्दित बोले कि पुण्य पुरुषों के लिये तो पृथिवी सदा सुख से छाईही रहती है १ जैसे समस्त नदी समुद्र को चलीजातीं यद्यपि उनको कुछभी कामना नहीं है २ तैसेही समस्त सुख और संपत्ति बिनाहीं बुलाये धर्म शीलों के पास सुभावही से जाती हैं ३ जैसे आप गुरु बिप्र धेनु भक्त और भगवत् सेवीहो तैसीही परम पुनीत कौशल्या देवी भी है ४ तुम ते बड़ा अधिक पुण्य कौन कहै हे राजा । राम के सरिस जिनका पुत्र है ५ बड़े वीर अति बिनीत धर्म धुरीण समस्त सद्गुणों के समुद्र ऐसे सुन्दर आपके चारों पुत्रहैं ६ पुण्यात्मा तुम्हारे समान इस संसार मे न कोई हुआ और न होनहार है ७ तुम को तो सर्व काल में कल्याण ही है तातें बाजे बजाकर बरात की सजनई कीजिये ८ ॥ दोहा ॥ वेगिही चलो ऐसी गुरुकी आज्ञा सुनिकर उनको शिरनवाया और दूतोंको बास दिवाकर रनिवास को पधारे ॥ १०८ ॥

राजासब रनिवास बुलाई । जनक पत्रिका बांचि सुनाई १
सुनिसंदेश सकल हरषानी । अपर कथा सब भूप बखानी २
प्रेम प्रफुल्लित राजहिं रानी । मनहुं शिखिनि सुनिवारिद बानी ३
मुदित अशीष देहिं गुरुनारीं । अतिआनन्द मगन महतारीं ४
लेहिं परस्पर अति प्रिय पाती । हृदय लगाइ जुड़ावहिं छाती ५
रामलषण की कीरति करणी । बारहिंबार भूपवर बरणी ६

मुनि प्रसाद कहिद्वार सिधाये । रानिनतब महिदेव बुलाये ७
दिये दान आनन्द समेता । चले विप्रवर आशिष देता ८
सो० यांचक लिये हंकारि दीन्हि निछावरि कोटि विधि ।
चिरजीवहु सुतचारि चक्रवर्त्ति दशरत्थ के ॥ १०६

राजा ने सब रनिवास को बुलाकर जनक की पत्री को बांचिकर सुना दिया १ रामलक्ष्मण का मंगल संदेश सुनिकर सब हर्षित होगई और ऊपर की कथा सब राजा ने कहिसुनाई २ सो सुनिकर प्रेम प्रफुल्लित सब रानी कैसी सोहती हैं जैसी मयूरनी सजल सुन्दर श्याम घटा की मंद मंद गर्जनि को सुनिकर आनन्दित होती हैं ३ प्रसन्न मन से गुरु जनौं की वधू अशीष देती हैं सो सुनिकर अतिही आनन्द में माता मगन हैं ४ परस्पर एकों से एक उसपाती को लेती हैं और हृदय से लगा लगाकर अपनी अपनी छाती शीतल करती हैं५ रामलक्ष्मण की कीर्त्ति और अमानुष करणी बारंबार राजा ने रानियों से कही ६ और यह सब रामलक्ष्मण का पुरुषार्थ केवल विश्वामित्रही का अनुग्रह कहि कर राज सभा को सिधारे तबतो रानियों ने पुरबासी ब्राह्मणों को बुलाया ७ और बड़े आनन्द समेत उनको अनेक भांति के दानदिये समस्त द्विजदेव आशीर्बाद देते हुये चले ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तिसपीछे याचकों को बुलाया उनको अनेक भांति की निछावरिदी चारौं पुत्र चक्रवर्त्ती राजा दशरथ के चिरंजीव रहौ दशरथपद बंदीजनौं की भाषा में ऐसाही आता है ॥ १०६ ॥

कहत चले पहिरे पटनाना । हर्षि हने गहगहे निशाना १
समाचार सब लोगन पाये । लागे घरघर होन बधाये २
भुवन चारि दश भरा उछाहू । जनक सुता रघुवीर बिवाहू ३
सुनिसुनि कथा लोग अनुरागे । मगगृह गलीसंवारन लागे ४
यद्यपि अवध सदैव सुहावनि । रामपुरी मंगल मयपावनि ५
तदपि प्रीति की रीति सुहाई । मंगल रचना रचहिं बनाई ६
ध्वज पताक पटचामर चारू । छावा परम बिचित्र बजारू ७
कनक कलश तोरण मणिजाला । हरदि दूबदधि अक्षत माला ८
दो० मंगल मयनिज निजभवन लोगनरचे बनाइ ।
बीथी सीची चतुरसब चौकेचारु पुराइ ॥ ११० ॥

ऐसे नाना भांति के वस्त्र पहिरे अशीषते चले तिसपीछे गहगहे बाजेबजाये १ पुरबासियों ने जो ये मंगल समाचार पाये तौ घर घर बधाये होने लगे २ बढ़तेबढ़ते

यहां तक उछाह बढ़ा कि चतुर्दश भुवन भरि गये क्योंकि सकल भुवनेश्वर सीता राम का बिवाह है ३ और कथा सुनि सुनिकर लोग प्रेम में मगन होकर पुर के मार्ग घरगली सब संवारने लगे ४ यद्यपि अयोध्या सदैव सुहावनी है क्योंकि रामपुरी है याते सर्व मंगल मय और जगत पावनी है ५ तथापि प्रीति की रीतिही न्यारी होती है तातें मंगल रचना बनाइ बनाइ कर रचते हैं ६ ध्वजापताका चमर और नानाभांति के वस्त्रों से परम बिचित्र बजार छादिया ७ और सुवर्ण के कलशा और तोरण और भांति भांति की मणि और श्री रूपा हरिद्रा दूर्बा दधि अक्षत पुष्पमाला ॥ ८ ॥ दोहा इन समस्त मंगल मय पदार्थों से अपने अपने मंदिरों को रचि रचिकर बनाया है और समस्त नगर की गलीं सुगन्धि से सींचीं हैं सुन्दर गजमुक्ताओं के चौके अपने अपने द्वारोंपर पुराइ राखे हैं ॥ ११० ॥

जहंतहंयूथयूथमिलिभामिनि । सजिनवसप्तसकलद्युतिदामिनि
बिधुबदनीमृगशावकलोचनि। निजस्वरूपरतिमानबिमोचनि २
गावहिंमंगलमंजुल बानी । सुनिकल रवकल कंठलजानी ३
भूपभवन किमि जाइबखाना । विश्व बिमोहन रचेउबिताना ४
मंगल द्रब्य मनोहर नाना । राजतबाजत बिपुल निशाना ५
कतहुं बिरद बंदी उच्चरहीं । कतहुं वेद धुनि भूसुर करहीं ६
गावहिं सुंदरि मंगल गीता । लैलै नाम राम अरु सीता ७
बहुत उछाहभवन अतिथोरा। मानहुं उमगि चला चहुंओरा ८
दो० शोभा दशरथ भवन की को कवि बरणय पार ।
जहां सकलसुर शीशमणि रामलीन्हअवतार ॥१११॥

जहां तहां यूथोंकेयूथ मिलमिलकर भामिनी अपनेअपने षोड़श शृङ्गार किये बिद्युद्वर्णी चंद्रबदनी मृगनयनी रतिमान मोचनी कोकिल बयनी मधुर स्वर से गान करती हैं जिनके मधुर गानको सुनिकर कोकिला भी लाजती हैं १ । २ । ३ जब कि पुरबासियोंही के मंदिरों की शोभा और उत्साह नहीं कहा जाता है तो फिरि राजा के भवन का वर्णन कैसे होसक्ता है जिसमें विश्वबिमोहन बितान रचा गयाहै ४ फिरि जिसमें नाना प्रकार के मंगल पदार्थ राजते हैं और अति गह गहे बाजे बाजते हैं ५ कहीं तो बन्दीजन बिरदावली उच्चरते हैं और कहीं भूमिसुरद्विज देव वेद धुनि करते हैं ॥ ६ ॥ कहीं सुन्दरीं मंगलगान करती हैं सीताराम वर दुलहिन दोनों के नाम लेलेकर ७ कैसा आनन्द कोलाहल बढ़ा है कि उत्साह तो बहुत और भवन अतिही थोरा सो मानों उमगि कर चारों ओर को फैलि चला है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ से

महाराज दशरथ के भवन की शोभा को कौन कवि वर्णि सकता है जहां समस्त देव देवेश्वर श्री रामचंद्र ने अवतार लिया है ॥ १११ ॥

भूपभरत पुनि लियेबुलाई। हय गज स्यंदन साजहु जाई १
चलहु वेगि रघुवीर बराता। सुनत पूरि पुलके दोउभ्राता २
भरतसकल साहनी बुलाये। आयसु दीन्ह मुदितउठिधाये ३
रचिरुचि जीनतुरंगतिन्हसाजे। बरणबरणवरबाजिविराजे ४
सुभगसकलसुठिचंचलकरणी। अयजिमिजरतधरतपगधरणी
नाना भांतिनजाहिं बखाने। निदरिपवन जनु चहतउड़ाने ६
तिनपर छयलभये असवारा। भरतसरिस सबराजकुमारा ७
सबसुंदर सब भूषण धारी। करशर चाप तूणि कटि भारी ८
दो० छरे छबीले छयल सब शूर सुजान नवीन।
युगपदचर असवारप्रति जेअसिकलांप्रवीन॥ ११२ ॥

फिरि तौ राजाने भरत को बुलाकर कहा कि जाकर हाथी घोड़े रथों को सजाओ १ और वेगिही राम की बरातको चलो यह सुनतेही दोनों भाई प्रेम पुलकावली से पूरित होगये २ भरत ने सबों के अधिकारियों को बुलाकर उनके सजने को जो आयसु दिया सोईपरम प्रसन्न हो अपने २ कामकरने को उठि दौरे ३ अति मनोहर रुचिर जीन रचि रचि कर तिनने घोड़े सजे जाति जाति के सुन्दर घोड़ों के यूथ शोभा देने लगे ४ सब के सब मनोहर हैं अति चंचल जिनकी करणी है जिनके पग पृथ्वी पर तप्तलोहे के समान ठहरतेही नहीं हैं ५ नाना रंग के वखानेही नहीं जाते हैं मानों पवन कोभी निदरि कर उड़ाचाहते हैं ६ तिन पर युवा राजकुमार चढ़ते हुये भरतही के समान समस्त राज कुमारहैं ७ सबके सब परम सुन्दर समस्त आभूषण धारण किये हाथों में धनुष बाण कटिपर तूणीर कसे हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसे सुन्दर छरे छबीले छैल सब शूर सुजान और नवीनद्वय द्वय पद चर एक एक चढ़ैत के आगे चलतेहैं जो असिकला कहैं पटैतीमेंपरम प्रवीण हैं ॥ ११२ ॥

बांधे बिरद वीर रण गाढ़े। निकसि भये पुर बाहिर ठाढ़े १
फेरहिं चतुर तुरंग गतिनाना। हरषहिं धुनिसुनिपणव निशाना २
रथ सारथिन्ह बिचित्र बनाये। ध्वज पताक मणि भूषण छाये ३
चमर चारु किंकिणि धुनि करहीं। भानु यान शोभा अप हरहीं ४
श्याम कर्ण अगणित हयहोते। ते तिन्ह रथनि सारथिन्हजोते ५

सुन्दर सकल अलंकृत सोहैं । जिनहिं विलोकत मुनि मन मोहैं ६
जे जल चलहिं थलहि की नांई । टापन बूड़ बेग अधिकाई ७
अस्त्र शस्त्र सब साज बनाये । रथी सारथिन्ह लिये बुलाये ८
दो० चढ़ि चढ़ि रथ बाहिर नगर लागी जुरन बरात ।
होतसगुण सुंदर सबहिं जोजिहिं कारज जात ॥११३॥

ऐसे वरवीररण बांकुरे जो बिरद बांधे हैं ते निकसि निकसिपुर बाहिर ठाढ़े हुये १ अपने अपने चतुर तुरंगों को नाना गति पर फेरने लगे जो पणव निशानों की ताल को सुनि सुनि हर्षित हो हो कर उसी की गति पर चलते हैं २ अब रथों के बरूथ तौ सारथियों ने अतिही बिचित्र बनाये जो ध्वजा पताका मणि भूषणों से छायेहैं ३ सुन्दर चमर जिनमें सोहते हैं और किंकिणी मधुर मनोहर धुनि करती हैं कैसे प्रकाशमान हैं मानों सूर्य्य के रथ की शोभा को भी मंद किये देते हैं ४ अगणित श्यामकर्ण की जाति के घोड़े जो अश्वमेध यज्ञमें होमने के योग्य होते हैं ते घोड़े तिन रथौं में सारथियों ने जोते ५ सब सुन्दर और अलंकार सहित सोहते हैं जिनको देखते ही मुनिन के भी मन मोहते हैं ६ जो जलमें भी थलही की नाई चलते हैं वेगकी लाघवता से जिनके टाप भी नहीं बूड़ते हैं ७ अस्त्र शस्त्र इत्यादि समस्त साज बनाकर सारथियों ने अपने अपने रथौं बुला लिये ॥ ८ ॥ दोहा चढ़ि चढ़ि रथौं पर नगर के बाहिर बरात जुरने लगी तिस समय सबको सुन्दर सगुण होते हैं जो जिस कार्य्य की यात्रा के योग्य कहे हैं ॥ ११३ ॥

कलित करिबरन्हिपरींअंबारीं । कहिनजाहिं जिहिभांतिसंवारीं १
चले मत्तगज घट्ट विराजैं । मनहुं सुभग श्रावण घन गाजैं २
बाहन अपर अनेक बिधाना । शिबिका सुभग सुखासन याना ३
तिन्ह चढ़िचले बिप्र बरबृंदा । जनु तनु धरे सकल श्रुतिछंदा ४
मागधसूत बंदि गुण गायक । चले यान चढ़ि जोजिहि लायक ५
बेसर ऊंट बृषभ बहु जाती । चले बस्तु भरि अगणित भांती ६
कोटिन कांवरि चले कहारा । बिबिधि बस्तु को बरणै पारा ७
चले सकल सेवक समुदाई । निज निज साज समाज बनाई ८
दो० सब के उर निर्भर हरष पूरित पुलक शरीर ।
कबहिं देखि हैं नयन भरि रामलषण दोउबीर ॥११४॥

अगणित गजराजों पर अति उज्ज्वल अंबारी रक्खी गईं सो कही नहीं जाती हैं

जिस भांतिसे संवारी हैं १ चले जो मत्तगजों के संघट्ट सो कैसे बिराजते हैं मानों सुन्दर श्रावण के मेघही गाजते हैं २ और अनेक विधान के बाहन शिविका सुखपाल इत्यादि ३ तिनपर चढ़िकर द्विज देवों के वृन्द चले मानों मूर्त्तिवंत वेदों के छन्द ही हैं ४ मागध सूत बंदीजन यथा योग्य यानों पर चढ़ि चढ़ि करचले ५ बेसर कहैं खच्चर ऊंट बैल अनेक जाति के अगणित भांति की वस्तु भरिभरि कर चले ६ कोटिन कामरि कहार अनेक भांति बस्तु लेलेकर चले ७ और सेवकों के समुदाय अपने अपने स्वामियों का साज समाज बनाकर चले ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सबके हृदय में निर्भरानन्द और पुलकावली से पूरित शरीर है कि कौन समय नेत्रों भरि कर राम लक्ष्मण दोनों भाइयों को देखैंगे ११४ ॥

गर्जहिं गज घंटा धुनि घोरा। रथ रव बाजि हींस चहुं ओरा १
निदरिघनहिंघुमरहिं निशाना। निजपरायकछुसुनियनकाना २
महा भीर भूपति के द्वारे। रज हुइ जाय पखान पवारे ३
चढ़ी अटारिन्ह देखहिं नारी। लिये आरती मंगल थारी ४
गावहिं गीत मनोहर नाना। अति आनन्द न जाइ बखाना ५
तब सुमंत द्वय स्यंदन साजी। जोते रवि हय निंदक बाजी ६
दोउ रथ रुचिर भूप पहंआने। नहिं शारद पहं जाहिं बखाने ७
राज समाज एक रथ साजा। दूसर तेज पुंज अति भ्राजा ८
दो० तिहि रथ रुचिर वशिष्ठ कहं हर्षि चढ़ाइ नरेश।
आप चढ़े स्यंदन सुमिरि हर गुरु गौरि गणेश॥ ११५

इस चला चली में हाथियों की गर्जनि और उनके घण्टों की धुनि और रथों का गरगराहट और घोड़ों की हींस चहुं ओर हो रही है १ और मेघोंको भी गर्जनि को निदरते हुये बाजे बाजते हैं तिस करिके अपना और पराया कुछ भी सुनाई नहीं परता है २ कैसी महा भीर राजद्वार पर होरही है कि पाषाण भी डारने से रज हो जाता है ३ अटारियों पर चढ़ी हुई यह शोभा युवती देखती हैं हाथों में आरती के मंगल थार लिये हैं ४ और नाना प्रकार के मनोहर मंगल गीत गावती हैं यह अति आनन्द कुछ कहा ही नहीं जाता है ५ तबतौ सुमंत ने द्वय रथ सजे जिनमें सूर्य्य के रथ के घोड़ों के भी निन्दक घोड़े जोते हैं ६ ऐसे रुचिर दोनों रथ राजा के पास लाये जो सरस्वती से भी नहीं बखाने जाते हैं ७ एक रथ तो राज समाज संयुक्त सजा है और दूसरा तेज पुंज सोहता है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तिस रुचिर रथ पर पहिले राजाने अपने कुल गुरु वशिष्ठ को चढ़ाया तिस पीछे अपने रथ पर आप श्री शिव गुरु गौरी गणेश को स्मरण करि के चढ़े ॥ ११५ ॥

सहित वशिष्ठ सोह नृप कैसे। सुर गुरु सहित पुरंदर जैसे १
करि कुलरीति वेदविधि राऊ। देखि सबहिं सब भांतिबनाऊ २
सुमिरि राम गुरु आयसु पाई। चले महीपति शंख बजाई ३
हरषे बिबुध बिलोकि बराता। वरषहिं सुमन सुमंगल दाता ४
भयउ कुलाहल हय गज गाजे। व्योम बरात बाजने बाजे ५
सुर नर नारि सुमंगल गाई। सरस राग बाजहिं सहनाई ६
घंट घंटि धुनि वरणि न जाई। सरौं करैं पायक फहराई ७
करहिं विदूषक कौतुकनाना। हास्य कुशल कलगान सुजाना ८
दो० तुरंग नचावहिं कुंवर सब। अकनि मृदंग निशान।
नागर नट चितवहिं चकित डिगै न तालविधान १६६॥

वशिष्ठ समेत राजा दशरथ कैसे सोहते हैं मानों देवगुरु बृहस्पति समेत देवराट् इन्द्रही हैं १ अपने कुल की रीति और संपूर्ण वेद विधि करि और सब बरात को सब साज समान समेत देखि कर २ तब श्री राम का स्मरण करि और गुरुकी आज्ञा लेकर राजा अपनी शंखधुनि करिके चले ३ अबतौ बरातको चलते देखि कर देवता हर्षित होकर सुन्दर सुमंगल दायिनी फूलों की वर्षा करने लगे ४ जब बरात चली तब तो बड़ाही कोलाहल हुआ कि घोड़े हाथी गाजने लगे आकाश और बरात में बाजे बाजने लगे ५ आकाशमें देव वधू और नगरमें पुर वासियोंकी स्त्री मंगल गाती हैं और रागोंहीं के समान बरात में सुन्दर सहनाई बाजती हैं ६ हाथियों के घंटा और घंटियों की धुनि बरणीही नहीं जाती है जिन पर सरौं करैं अर्थात् मल्लों के से व्याम कहें डंड करते लहराते हुये झंडे फहराते जाते हैं ७ मार्ग में आनन्द के कारण बिदूषक कहें भांड़ लोग अनेक भांति के कौतुक करते जातेहैं जो हास्य में बड़े प्रबीण और सुन्दर गान में भी सुज्ञान हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ मार्ग में समस्त राजकुमार अपने अपने घोड़ों को नचाते जाते हैं मृदंग और निशानों की गति पर जिनको देखि कर नागर नट भी चकित होते हैं कि जिनका ताल विधान डिगताही नहीं ॥ ११६ ॥

बनैन वरणतबनी बराता। होहिं सगुण सुंदर शुभदाता १
चाराचाख बाम दिशिलेई। मनहुं सकल मंगलकाहे देई २
दाहिन कागसुखेत सुहावा। नकुल दरश सब काहूपावा ३
सानुकूल बह त्रिविधि बयारी। सघटसबाल आववरनारी ४
लोवाफिरिफिरिदरशदिखावा। सुरभीसंमुखशिशुहिंपियावा ५

मृगमाला पुनिदाहिनि आई । मंगलगण जनुदीन्हि दिखाई ६
क्षेमकरी कहक्षेम विशेखी । श्यामाबाम सुतरुपर देखी ७
सम्मुखआयेउदधि अरुमीना । करपुस्तक द्वयविप्रप्रवीना ८
दो० मंगलमय कल्याणमय अभिमित फलदातार ।
जनुसब सांचेहोनहित भयेसगुण एकबार ॥ ११७ ॥

अब जैसी सजाव की सुन्दर बरात बनी है तैसी तो बरणी ही नहीं जाती है मार्ग में सुन्दर शुभदायक सगुणहोतेजाते हैं १ बामदिशामें तो नीलकंठ चारा चुनता है सो मानो समस्त मंगल ही जनावता है २ दाहिनेभाग शुभ क्षेत्रमेंसुन्दरकाकबैठा देखा और निवला, सरीश्रप जाति विशेष का दर्शन सबहीं को हुआ ३ शीतल मंद सुगन्ध त्रिविधि पवन पीछे से बहने लगी सजलघट लिये बालक समेत सौभागवती स्त्री सम्मुखचली आती देखी ४ लोमरी फिरिफिरि कर मुखदिखावती है सुन्दर गऊ सम्मुख बछरेको चुखा रहीहै ५ मृगों की माला दाहिनी ओर आगई मानों मंगल गणोंही ने दिखाई दी है ६ क्षेमकरी पक्षीजाति है तो विशेष क्षेमही मानों कहेदेती है और श्यामा भी बामदिशा में सुन्दर वृक्षपर बैठी देखी ७ सम्मुख से दधि और मीन आते देखे और हाथों में पुस्तक लिये द्वय द्विजदेव विद्यानिधानों का दर्शन हुआ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ मंगल मय और कल्याण मय और बांछित फल के दाता समस्त सगुण मानो सफल होने के लिये एकही बारहुये हैं ॥ ११७ ॥

मंगलसगुण सुगमसब ताके । सगुणब्रह्म सुन्दरसुतजाके १
रामसरिस वरदुलहिनि सीता । समधी दशरथ जनकपुनीता २
सुनिअस ब्याहसगुण सबनाचे । अबकीन्हे विरंचिहमसाचे ३
यहिविधि कीन्हबरात प्रयाना । हयगजगाजे हनेनिशाना ४
आवतजानि भानुकुल केतू । सरितन्हि जनक बंधाये सेतू ५
बीचबीच वरबास बनाये । सुरपुर सरिस संपदा छाये ६
असनशयन वरबसनसुहाये । पावहिं सबनिजनिज मनभाये ७
नितनूतन सुखलहि अनुकूले । सकलबरातिन्ह मंदिरभूले ८
दो० आवतजानि बरातबड़ि सुनिगहगहे निशान ।
सजिगजरथ पदचरतुरंगलेनचले अगवान ॥ ११८ ॥

समस्त मंगल और समस्त सगुण उस को तो सुगमही हैं जिस के सकल सद्गुण निधान सगुण परात्पर ब्रह्म पुत्र बना बैठा है १ जिस विवाह में राम तो दूलह

और सीता दुलहिनि है राजा दशरथ और जनक से परम पुनीत समधी हैं १ ऐसा उत्तम विवाह सुनिकर सब सगुण नाचे कि अब हम को ब्रह्मा ने सांचा किया है ३ इस प्रकार जबबरात ने पयान किया तब तो हाथी घोड़े गाजने लगे और बाजेबाजने लगे ४ यहां जनकपुर में राजाजनक ने भानु कुल केतु राजादशरथ को बरात समेत जो आवते जानातो मार्ग की समस्त नदियोंपर सुदृढ़ सेतु बंधादिये ५ और बीच बीच में सुन्दर निवास स्थान बनवादिये और देवलोकोंके समान सकल संपदा से छादिये ६ जिन में समस्त बराती भोजन शय्या सुन्दर सुहाये बस्त्र अपनी अपनी रुचि के अनुकूल पाते चले आते हैं ७ ऐसा नित्यनवीन अनुकूल सुखपाकर समस्त बरातियों को अपने अपने घरों के सुख भूलिगये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इस प्रकार जब बड़ी बरात आवती जानो और गह गहे बाजे सुने तब तो अपने अपने हाथी रथ घोड़ों को सजि सजिकर अगवानी लेने चले ॥ ११८ ॥

कनक कलश कल कोपरथारा।भाजन ललित अनेकप्रकारा१
भरेसुधा समसब पकवाना। भांतिभांति किमिकरियबखाना२
फल अनेक वर वस्तु सुहाई । हर्षि भेंटहित भूप पठाई ३
भूषणबसनमहामणि नाना।खगमृगहयगय बहुविधियाना ४
मंगल सगुण सुगंध सुहाये । बहुत भांति महिपाल पठाये५
दधिचिउरा उपहार अपारा । भरिभरि कांवरि चलेकहारा ६
अगवाननिन्ह जबदीख बराता । उरआनंदपुलकभर गाता ७
देखिबनाव सहितअगवाना। मुदितबरातिन हनेनिशाना ८
दो० हर्षि परस्पर मिलन हित कछुक चले बगमेल ।
जनु आनन्द समुद्र द्वयमिलत बिहाइ सुबेल ॥ ११९

सुवर्ण के कलश सुन्दर और कोपर थार इत्यादि अतिही ललित भाजन अनेक प्रकार के अमृत समान पक्वान्नों से सब भरे हैं भांति भांति के जो बखानेही नहीं जाते हैं १ । २ अनेक प्रकार के फल और उत्तम बस्तु सुहाईं अति हर्ष समेत भेंट के निमित्त राजा ने पठाईं ३ आभूषण सुन्दर बस्त्र महा मणि अनेक भांति के पक्षी मृग, घोड़ा, हाथी और अनेक प्रकार के यान ४ और मंगल सगुण और सुहाये सुगन्ध बहुत प्रकार के राजा ने पठाये ५ दही और चिउरा इत्यादि अनेक उपहार कांवरें भरि भरि कर कहार ले चले ६ अगवानियों ने जाकर जो बरात देखी तो आनन्द की पुलकावली से सब के शरीर भरि गये ७ और बरातियों ने बनाव समेत अगवानियों को देखि कर बाजे बजाये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ प्रसन्न होकर परस्पर मिलने के लिये कछुक दोनों ओरतें कैसे बग मेल चले हैं मानों द्वय आनन्द के समुद्रही

अपनी अपनी बेला कहें मर्य्यादा को छोड़ि छोड़ि कर मिलने को उमड़े हैं॥ ११६॥

वर्षिसुमन सुरसुंदरि गावहिं । मुदितदेव दुदुंभी बजावहिं १
बस्तुसकलराखींनृपआगे । बिनयकीन्ह तिनअतिअनुरागे २
प्रेमसमेत राउ सब लीन्ही । भइ बकसीसयाचकनदीन्ही ३
करि पूजा मानता बड़ाई । जनवासे कहं चले लिवाई ४
बसन बिचित्रपांवड़े परहीं । देखि धनद धनमदपरिहरहीं ५
अतिसुंदरदीन्हेउजनवासा । जहंसबकहंसबभांतिसुपासा ६
जानीसिय बरातपुरआई । कछुनिज महिमा प्रकटजनाई ७
हृदय सुमिरि सब सिद्धि बुलाईं । भूपपहुनई करनपठाईं ८
दो० सिधि सब सिय आयसु अकनि गईंजहां जनवास ।
लिये संपदा सकलसुख सुरपुर भोग बिलास ॥ १२०

सुर सुन्दरी तौ पुष्प वर्षा करिके मंगल गान करती हैं और आनन्द भरे देवता दुन्दुभी बजाते हैं १ इस प्रकार परस्पर मिलिकर संपूर्ण बस्तु राजा दशरथ के आगे राखी और बड़े प्रेम समेत राजा जनक की ओरतें बिनती करी २ बड़े प्रेम समेत राजा दशरथ ने समस्त गृहण करी और यथारुचि जनकपुर के याचकोंको देदी ३ तिस पीछे अगवानियों ने पूजन् किया मानता और बड़ाई करिके जनवासे को लिवाइ ले चले ४ तहां कैसे बिचित्र २ पावड़े बस्त्रों के पड़ते जाते हैं जिन को देखि कर कुवेर भी अपने धन के मद को छोड़ते हैं ५ ऐसे आदर समेत बरात को ला कर अतिही सुन्दर जनवासे दियेजहां सबहीको सब भांति का सुपास है ६ जब सीता ने पुर में बरात आई जानी तब तौ अपनी किंचिन्महिमा प्रत्यक्ष जनाई ७ हृदयही में स्मरण करिके समस्त सिद्धैं बुलाईं राजा की पहुनई करने को जनवासे में पठाईं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सिद्धि संपूर्ण सीता की आज्ञा जानिकर जहां जनवासे हैं तहां समस्त संपदा और देव लोक के समस्तभोग बिलास लिये गईं ॥ १२० ॥

निजनिजबासबिलोकिबराती।सुरसुखसकलसुलभसबभांती १
बिभवभेदकछुकोउनजाना । सकलजनक करकरहिंबखाना २
सियमहिमा रघुनायकजानी । हरषेहृदय हेतुपहिचानी ३
पितुआगमन सुनतदोउ भाई । हृदयन अतिआनन्दसमाई ४
सकुचत कहिनसकतगुरुपाहीं । पितुदरशनलालचमनमाहीं ५
बिश्वामित्र बिनय बड़िदेखी । उपजाउर संतोषविशेषी ६

हर्षिबंधु दोउहृदयलगाये । पुलकि अंग लोचन जलछाये ७
चलेजहां दशरथ जनवासे । मनहुं सरोवरतकेउ पियासे ८
दो० भूप बिलोके जबहिं मुनि आवत सुतन समेत ।
उठे हर्षि सुखसिंधुमहं चलेथाहसी लेत ॥ १२१ ॥

अपने अपने बासको जो बराती देखतेहैं तोदेवतोंके सुखसबको सबभांतिसे सुलभदीख परतेहैं ॥ १ ॥ इस बिभवके भेदको तो कोई भी नहीं जानताहै सब राजा जनकहो के बिभवकी प्रशंसा करतेहैं ॥ २ ॥ सीता जीकी महिमा केवल रामही ने जानी प्रीति पहिचानि कर हृदय में हर्षित हुये ॥ ३ ॥ पिता का आगमन सुनतेही दोनों भाइयों के हृदयमें अति आनंद समाताही नहींहै ॥ ४ ॥ गुरुसे कहते तो सकुचते हैं और पिता के दर्शन का लालच मनमें अतिही है ५ विश्वामित्र ने जबऐसी बड़ी नम्रता देखी तबतो हृदयमें बड़ाही संतोष उत्पन्न हुआ ६ प्रसन्न होकर दोनो भाइयों को हृदयमें लगालिया और प्रेमकी उमगमें रोमहर्ष और सजलनेत्र होगये ७ फिरि सावधानहोकर राम लक्ष्मण समेत राजादशरथ के पास जनवासे को कैसे शीघ्र चले हैं जैसे कोई अति प्यासा सरोवर को ताकिकर चले ॥ ८ ॥ दोहा ॥ राजानेजब विश्वामित्र को दोनोंपुत्रों समेत आतेदेखा तबतो उठे और आनन्दके समुद्र में थाह सीलेते चले ॥ १२१ ॥

मुनिहिंदंडवत कीन्हमहीशा । बारबार पद रज धरि शीशा १
कौशिक राउ लिये उर लाई । दै अशीश पूंछी कुशलाई २
पुनिदंडवत करत दोउभाई । देखिनृपतिउरसुख नँ समाई ३
सुतहिय लाइदुसह दुखमेटे । मृतक शरीर प्राण जनु भेटे ४
पुनिवशिष्ठ पदशिरतिन्हनाये । प्रेममुदितमुनिबर उरलाये ५
विप्रबृंद बंदे दोउ भाई । मन भावति अशीश बहु पाई ६
भरत सहानुज कीन्ह प्रणामा । लिये उठाइ लाइ उर रामा ७
हरषे लषण देखि दोउ भ्राता । मिले प्रेम परि पूरितगाता ८
दो० पुरजन परिजन जाति जन याचक मंत्री मीत ।
मिलेयथोचित सबहिंप्रभु परमकृपालुबिनीत ॥ १२२ ॥

मुनिको राजाने दंडवत प्रणाम की और बारंबार उनके चरणोंकी रजको शिर पर रक्खा १ बिश्वामित्र ने राजाको हृदयसे लगालिया और अशीशदेकर कुशलपूंछी २ तिसपीछे दंडवत करते राम लक्ष्मण दोनों भाइयोंको देखिकर तोराजा के हृदय में आनन्द समाताही नहीं है ३ पुत्रोंको हृदयसे लगाकर समस्त वियोग दुखकैसे दूर

करि दियेहैं मानों मृतक शरीरने प्राणहीं भेटेहैं ४ फिरि तो बशिष्ठ मुनिके चरणोंको दोनों भाइयोंने प्रणामकिये प्रेम प्रसन्न मुनिवर ने हृदयसे लगालिये ५ फिरि संपूर्ण ब्राह्मणों को दोनों भाइयों ने बंदनकिया सबसे आशीर्बाद लिया ६ फिरितौ अनुज समेत भरत ने रामचन्द्र को प्रणामकिया रामचन्द्र ने उठाकर हृदयसे लगालिया ७ लक्ष्मण दोनों भाइयों को देखिकर हर्षित हुये और प्रेम समेत मिले ॥ ८ ॥ दोहा ॥ पुरजन और परिजन, याचक, सचिव, सखा सबको यथोचित मिले क्योंकि परमकृपालु और बिनीत स्वभावहैं ॥ १२२ ॥

रामहिं देखि बरात जुड़ानी । प्रीति कि रीति न जाइ बखानी १
नृप समीपसोहहिं सुतचारी । जनु धन धर्मादिक तनु धारी २
सुतनसहित दशरथ कहंदेखी । मुदित नगर नरनारि बिशेषी ३
सुमनवर्षि सुरहनहिं निशाना । नाक नटी नाचहिं करिगाना ४
सतानंद अरु विप्र सचिव गन । मागध सूत बिदुष बंदीजन ५
सहित बरात राउ सनमाना । आयसु पाइ फिरे अगवाना ६
प्रथम बरात लग्न तें आई । तातें पुर प्रमोद अधिकाई ७
ब्रह्मानंद लोगसबलहहीं । बढ़हु दिवसनिशि बिधिसनकहहीं ८
दो० राम सीय शोभा अवधि सुकृत अवधि दोउ राज ।
जहंतहं पुरजन कहहिं सब मिलि नरनारि समाज १२३ ॥

राम को देखिकर समस्त बरात के हृदय शीतल होगये प्रीति की तो रीतिही भिन्न है बखानी कैसे जाती है १ अब तो राजा के पास चारों पुत्र कैसे सोहते हैं मानों अर्थ,धर्म, काम,मोक्ष चारोंपदार्थही शरीर धारी हैं २ इस प्रकार चारों पुत्रों समेत राजादशरथ को देखिकर नगर के नरनारी सबही आनन्द भरे बिशेष हैं ३ फूलों की बर्षाकर कर देवता बाजे बजाते हैं और स्वर्ग की नटींगान करकर नाचतीं हैं ४ तबतो सतानन्द पुरोहित औरबिप्रगण और मंत्री और मागधादिक याचक जन ५ उन्हों ने बरात समेत राजा को सन्माना और राजा से आज्ञा लेकर सब अगवानी फिरे ६ लग्नतें बहुत दिनपहिले जो बरात आगई है तातें नगर में दिनप्रति आनन्द की अधिकाई होती जाती है ७ ब्रह्मादिक दुर्लभ ब्रह्मानन्द सबलोग पाते हैं तातें रातिदिन का बड़ा बड़ा होना ब्रह्मा से मनाते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इसी आनन्द में मग्न समस्त पुरबासी जहां तहां हाट, बाट, घर, गली अथाइयों में नरनारियों के समाज मिलिमिलि कर यही चर्चाकरि रहे हैं कि राम और सीता तो शोभा के अवधि हैं और सुकृतों के अवधि दोनों राजा हैं ॥ १२३ ॥

जनक सुकृत मूरति बैदेही । दशरथ सुकृत राम धरि देही १
इन सम काहु न शिव अवराधे । काहु न इन समान फल लाधे २
इनसमकोउ न भयउ जगमाहीं । अहैनकोउ जगहोनेउ नाहीं ३
हमसब सकल सुकृतकी राशी । भेजग जन्मि जनकपुरबासी ४
जिन जानकी राम छबिदेखी । कोसुकृती हम सरिस बिशेषी ५
पुनि देखब रघुबीर बिवाहू । लहब भली बिधि लोचन लाहू ६
कहहिं परस्पर कोकिलबयनी । यहि बिवाह बड़लाभ सुनयनी ७
बड़े भाग बिधि बात बनाई । नयन अतिथ होइहैं दोउ भाई ८
दो० बारहिं बार सनेह बश जनक बुलाउब सीय ।
लेन आइ हैं बंधु दोउ कोटि काम कमनीय ॥ १२४ ॥

जनक के सुकृतों की मूर्त्ति तो सीता है और राजादशरथ के सुकृत राम की देह धारण किये हैं १ इनके समान तो किसी ने भी शिवधर्म नहीं अवराधे हैं न किसी ने इनके समान फलपाये हैं लाधे मरुभाषा में पाउने को कहते हैं २ इन के समान तो कोई संसार में हुआ होनहीं और है भी नहीं, होने हार भी नहीं है ३ और हम सब भी तो संपूर्ण सुकृतों की राशिही हैं जो जग में जन्म लेकर जनकपुरबासी हुये हैं ४ जिन हम सब नेसीतारामकी छबिजो बिधि शिव सनकादि से भी दुर्लभ है नेत्रोंभरि कर देखी तो भला हमारे समान सुकृती दूसरा कौन हो सकताहै और जब कोई समान ही नहीं तो बिशेष कहां से होगा ५ इस पीछे श्री रामचन्द्र का बिवाह मंगल देखेंगे और भली भांति नेत्रों का फल पावैंगे ॥ ६ ॥ ऐसे तो जहां तहां पुरुष कहि रहे हैं और परस्पर कोकिल बयनी कहती हैं कि हे सुनयनी इस बिवाह में तो बड़ाही लाभ है ॥ ७ ॥ बड़े ही भाग्य से दैव ने यह बात बनाई है अबतो ये दोनों भाई जब तब हमारे नेत्रों के अतिथी हुआही करैंगे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ क्योंकि सनेह के बस राजा जनक सीता को बार बार अयोध्या से बुलायाही करैंगे तब तब यहांसे ले जाने को ये दोनों भाई कोटि कांम तें सुन्दर आयाही करैंगे ॥ १२४ ॥

बिबिधि भांति होइहि पहुनाई । प्रिय काहिनअससासुरमाई १
तबतब राम लषणहि निहारी । होइहि सबपुर लोग सुखारी २
सखि जस रामलषण कर जोटा । तैसेहि भूप संग द्वय ढोटा ३
श्याम गौर सब अंग सुहाये । ते सब कहहिं देखि जो आये ४
कहा एक मैं आजु निहारे । जनु बिरंचि निज हाथ संवारे ५

भरत रामही की अनुहारी । सहसा लखि न सकहिं नरनारी ६
लषण शत्रु सूदन इक रूपा । नख शिखतें सब अंग अनूपा ७
मनभावहिं मुखबरणि न जाहीं । उपमाकहंत्रिभुवनकोउ नाहीं ८
छं० उपमानकोउकहदासतुलसीकतहुंकविकोविदकहैं ।
बलबिनयबिद्याशीलशोभासिंधुइनसमयइअहैं ।
पुरनारिसकलपसारिअंचलबिधिहिवचनसुनावहीं ।
ब्याहहिंसुचारिउभाइयहिंपुरहमसुमंगलगावहीं ॥
सो० कहहिं परस्पर नारि बारि बिलोचन पुलकितन ।
सखिसब पुरव पुरारि पुण्यपयोनिधि भूप दोउ१२५॥

तदनंतर अनेक भांति की पहुनाई हुआ करेगी तो भला ऐसा सासुरा किस को प्यारा नहीं होता है १ तब तब राम लक्ष्मण को देखि कर पुर के सब लोग सुखी हुआ करैंगे २ यह सुन कर दूसरी बोली कि हे सखि जैसा सांवरा गोरा राम लक्ष्मण का जोटा है तैसेही राजा के साथ दो पुत्र और भी हैं ३ ऐसेही सांवरे गोरे सब अंग सुहाये हैं ते सब कहते हैं जो देखि आये हैं ४ यह सुनिकर और ने कहा कि सत्य है मैने आजदेखे हैं मानों ब्रह्माने अपने हाथही से संवारे हैं ५ भरत तो रामही की अनुहारि हैं सहसा तो कोई चीन्हिभी नहीं सकता है ६ लक्ष्मण और शत्रुघ्न एकही रूप हैं नखतें शिखापर्य्यन्त सब अंग अनूप हैं ७ मनहीं में भावते हैं कहे नहीं जाते हैं उपमा को तो कोई तीनों लोकमें नहीं है ॥ छन्द ॥ क्योंकि बल, बिनय, विद्या, शील, शोभाके समुद्र इनके समान येई हैं पुरकी सपूर्णस्त्रियें अपने अपने अंचल पसारि कर देवसे यह मांगती हैं किये चारो भाई इसी नगर में बिवाहे जावें और हम सब सुमंगल गावें ॥ सोरठा ॥ परस्पर एकसे एक प्रेम भरी कहती हैं कि हे सखि त्रिपुरारि उमापति सब हमारी कामना परिपूर्ण करैंगे क्योंकि ये दोनों राजा पुण्योंके समुद्र हैं १२५ यहांतक शत पंच चौपाइयों की पांचपचीसी और सीतास्वयम्बर की चारि पचीसी हुईं ॥

यहिबिधि सकल मनोरथकरहीं । आनद उमगिउमगिउरभरहीं १
जे नृप सीय स्वयम्बर आये । देखि बंधु सब तिन्ह सुखपाये २
कहत राम यश बिशदबिशाला । निजनिज गेहगयेमहिपाला ३
गये बीति कछुदिन यहिभांती । प्रमुदितपुरजन सकलबराती ४
मंगल मूल लग्न दिनआवा । हिमऋतु अगहनमास सुहावा ५

गृहतिथिनखतयोगबरवारू । लग्न शोधि विधिकीन्ह बिचारू ६
पठै दीन्ह नारद सन सोई । गुनी जनक के गणकन्हि सोई ७
सुनी सकल लोगन यहबाता । कहहिं ज्योतिषी बुद्धिबिधाता ८
दो० धेनु धूलि बेला बिमल लग्न सुमंगल मूल ।
बिप्रनकहेउ बिदेहसन जानिसमय अनुकूल ॥ १२६॥

इसी प्रकार सब जनक पुरवासी मनोऽर्थ करते हैं और उमगि उमगि कर आनंद हृदय में भरते हैं १ अब जो साधु भगवद्भक्त राजा सीता के स्वयम्बर में धोखेसे आयेरहे तिनने सबभाइयों को देखिकर बड़े सुखपाये २ रामका बिशद बिशाल यश गावते हुये अपनी अपनी राजधानियों को गये ३ कुछदिन इसी आनन्द में सबको बीते कि राति दिन जातेही न जाने क्योंकि पुरजन और संपूर्ण बराती आनन्दमें मग्नरहे ४ फिरितो मंगल का मूल लग्न दिन आगया कि सुन्दर आरोग्य तो हिमऋतु है और सर्व मासोत्तम मास मार्गशिर सुहावन केशवमासहै जिसकी श्रीमद्रामायण और महाभारतदोनों वेदावतारों प्रवलइतिहासों में उत्तमता कही है॥ मासानांमार्गशीर्षोऽहं ५ गृह, तिथि, नक्षत्र, योग और उत्तम बार पंचांग समेत लग्न शोधन बड़े बिचार से ब्रह्माने किया और नारद के हाथ राजा जनक को भेजिदिया सोई यहां जनक के ज्योतिषियों ने शोधन किया रहे ६।७ जो यह बात लोगों ने सुनी तो कहने लगे कि ज्योतिषियों की बुद्धि भी विधाताही होती है ८ ॥ दोहा॥ धेनु धूली तो बिमल बेला और सुमंगल मूल लग्न है यह जानिकर अनुकूल समय ब्राह्मणों ने राजा जनक से जाकर कहा ॥ १२६ ॥

उपरोहितहि कहेउ नर नाहा । अब बिलंब कर कारण काहा १
सतानन्द तब सचिव बुलाये । मंगल सकल साजि लै आये २
शंख निशान पणव बहु बाजे । मंगल कलश सगुणनसबसाजे ३
सुभगसुआसिनि गावहिं गीता । करहिं वेद धुनि बिप्र पुनीता ४
चले लेन सादर यहि भांती । गये जहां जनवास बराती ५
कोशलपतिकर देखि समाजू । अतिलघुलागु तिनहिं सुर राजू ६
भयउ समय अब धारिय पांऊ । यह सुनि परा निशाननि घाऊ ७
गुरुहिं पूछिकरि कुल विधि राजा । चले संग मुनि साधु समाजा ८॥
दो० भाग्य बिभव अवधेश कर देखि देव ब्रह्मादि ।
लगे सराहन सहस मुख जानि जन्म निज बादि १२७॥

राजा ने कहा कि अब बिलंब
तबतो बिवाह का समय जानिकर पुरोहित को सतानन्द ने सब मंची बुलाये
करने का कौन कारण है १ यहराजा की आज्ञा सुनिकर अनेक बाजे बजने लगे
सो संपूर्ण मंगल का साज बनाकर ले आये २ शंख निशान ढोल गीत गाने लगीं
मंगल कलश और सगुन सब साजे गये ३ सुआसिनी सुन्दर मंगल समेत राजा दशरथ
ब्राह्मण परम पुनीत वेद धुनि करने लगे ४ इस प्रकार आदर महाराज कोशलेंद्र
समाज के लेने को चले जहां जनवासे में बराती हैं तहां गये ५ जाकर कहा कि अबतो
को तो देखिकर सुरेंद्र का भी राज्य अतिही छोटा लगा ६ इतना सुनतेही निशानों
बिवाह का समय हुआ आप बरात समेत चरण धारिये संपूर्ण कुल रीति कर महाराज
पर डंका परने लगा ७ अपने कुलगुरु बशिष्ठ से पूंछि ॥ ८ ॥ दोहा॥ ता समय
दशरथ कैसे चले हैं जिनके संग मुनि और साधु समाज है ब्रह्मादिक देवता देखिकर
तो अवधपति महाराज दशरथ के भाग्य की बिभव को मानने लगे १२७ ॥
सहस्र मुखसे सराहने लगे और अपने ऐश्वर्य्यों को बादि

सुरन सुमंगल अवसर जाना । बरषहिं सुमन बजाइ निशाना १
शिव ब्रह्मादिक बिबुध बरूथा । चढ़े बिमाननि नाना यूथा २
प्रेम पुलकि तन हृदय उछाहू । चले बिलोकन राम बिवाहू ३
देखि जनकपुर सुर अनुरागे । निज निज लोक सबहिं लघु लागे ४
चितवहिं चकित बिचित्र बिताना । रचना सकल अलौकिक नाना ५
नगर नारि नर रूप निधाना । सुघर सुधर्म सुशील सुजाना ६
तिनहिं देखि सब सुर सुर नारी । भये नखत जनु बिधु उजियारी ७
बिधिहिभयउ आश्चर्य बिशेषी । निज करणी कछु कतहु न देखी ८
दो० शिव समुझाये देव सब जनि आश्चर्य भुलाहु ।
हृदय बिचारहु धीर धरि सिय रघुबीर बिवाहु ॥ १२८ ॥

पुष्प बरषाने और बाजे बजाने लगे १
देवताओं ने जो ऐसा सुमंगल समय जाना चतुर्मुख ब्रह्मा षणमुख
चतुर्मुख, षणमुख, पंचमुख, प्रमुखाखिल दैवतमौलिमणि अर्थात् देव शिरोमणि बिमानों
कार्त्तिकेय पंचमुख शिव ये हैं मुखिया जिनमें ऐसे अखिल को चले २ । ३
में चढ़ि कर प्रेम पुलकित उत्साह समेत राम के बिवाह के देखने लगे ४ चकित
जनकपुर को देखिकर देवताओं को अपने अपने लोक अतिही छोटे ५ नगर के
हुये बिचित्र बितान को देखते हैं जिसकी समस्त रचना अलौकिक है देखि देखि
नरनारी सबरूप निधान, सुघर, सुधर्म, सुशील, सुजान हैं ६ तिनको चांदनी में
सब देव और देवांगना कैसे मंद तेज लगते हैं जैसे नक्षत्र पूर्ण चन्द्र की कुछ भी
देखि परते हैं ७ और ब्रह्माको तो अतिही आश्चर्य्य हुआ कि अपनी करणी

कहीं नहीं देखो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तवतोभगवन्महिमा के सम्यक् वेत्ता श्रीशिवजीने सब देवताओं को समुझाया कि आश्चर्य्य में न भूलो हृदय में धीर धरि कर बिचारो यहां तो सीता राम का बिबाह है ॥ १२८ ॥

जिनकर नामलेत जग माहीं । सकल अमंगल मूल नशाहीं १
करतल होहिं पदारथ चारी । ते सिय राम कहेउ कामारी २
यहि बिधि शंभु सुरन समुझावा । पुनिआगे बरबसह चलावा ३
देवन देखे दशरथ जाता । महामोद मन पुलकित गाता ४
साधु समाज संग महिदेवा । जनुतनु धरेकरहिं सुख सेवा ५
सोहत साथ सुभग सुत चारी । जनु अपबर्ग सकल तनुधारी ६
मरकत कनक बरण बरजोरी । देखिसुरन भइ प्रीति न थोरी ७
पुनिरामहिं बिलोकिहियहरषे । नृपहिंसराहि सुमन तिनबरषे ८
दो० रामरूप नखशिख सुभग बारहिंबार निहारि ।
पुलकिगात लोचन सजल उमासमेत पुरारि ॥ १२९ ॥

संसार में जिन के नामही के उच्चारण से समस्त अमंगलों के मूलनाश होजाते हैं और चारोंपदार्थ हाथ आते हैं तिन सीताराम का जहां बिवाह है तहां हमारा तुम्हारा किसी का कर्त्तब कौन गणना में है ॥ प्रपन्न गीतायां ॥ आर्त्ताविषण्णा शिथिला श्चभीताघोरेषुव्याघ्रादिषुवर्त्तमानाः संकीर्त्य नारायण शब्दमात्रं बिमुक्तदुःखात्सुखिनो भवंति १ । २ इस प्रकार शिव जी ने देवताओं को समुझाया और आगे अपने वृषभोत्तम नन्दिकेश्वर को चलाया ३ तब तो देवताओं ने समाज समेत राजा दशरथ को जाते देखा कि मनमें महा आनन्द और पुलकित अंग चलेजाते हैं ४ साथ में साधुसमाज और द्विजदेवता हैं मानों मूर्त्तिमान समस्त सुखही है ५ और चारों मनोहर पुत्र साथ में कैसे सोहते हैं मानों सारूप्य सालोक्य सामीप्य सायोज्य चारों अपबर्गही शरीर धारी हैं ६ मरकत और कनक बर्ण दोनों जोरियों को देखि कर देवताओं को बड़ी प्रीति बढ़ी ७ फिरिराम को देखिकर हृदय में हर्षित हुये राजा के भाग्य की प्रशंसा करिके पुष्प बरषाये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ अबतौ राम के परम सुन्दर नखशिख रूप को देखिकर बारंबार पुलकित गात और सजल नेत्र पार्बती समेत शिव जी होजाते हैं ॥ १२९ ॥

केकिकंठ द्युतिश्यामल अंगा । तड़ित बिनिन्दकबसन सुरंगा १
ब्याह बिभूषण बिबिधि बनाये । मंगलमय सब भांति सुहाये २
शरदबिमलबिधुबदन सुहावन । नयन नवलराजीव लजावन ३

सकल अलौकिक सुन्दर ताई। कहि न जाइ मनहींमन भाई ४
बंधुमनोहर सोहहिं संगा। जात नचावत चपल तुरंगा ५
राजकुंवर बरबाजि नचावहिं। बंशप्रशंसक बिरद सुनावहिं ६
जिहितुरंगपरराम बिराजहिं। गतिबिलोकिखगनायकलाजहिं ७
कहि न जाइ सब भांतिसुहावा। बाजिबेष जनु काम बनावा ८

केशवायनमः

छं० जनुबाजि बेषबनाइ मनसिजराममहित अतिसोहई।
आपनेबय बलरूपगुण गतिसकल भुवनबिमोहई॥
जगमगतिजीनजड़ावज्योतिसुमोतिमणिमाणिक लगे।
किंकिणिललामलगामललितबिलोकिसुरनरमुनिठगे॥१॥

दो० प्रभुमनसहिलवलीनमनचलतबाजि छबिपाव।
भूषित उड़गण तड़ितघन जनु बरबरहिंनचाव॥ १३०॥

मयूर के कंठ की द्युतितो सुन्दर श्यामल अंग है औरतड़ितहूं के निन्दक मनोहर पीत बस्त्र हैं १ मंगल मय ब्याह के बिभूषण अंग अंग में सोहते हैं २ शरच्चन्द्र के समान मुख और कमल तें सुहाये नेत्र हैं ३ समस्त सुन्दरता अलौकिक कही नहीं जाती है ४ भरतादि अति मनोहर तीनों भाई साथ में सोहते हैं अपने अपने चंचल तुरंगों को नचाते जाते हैं ५ राजकुमार सबतुरंग नचाते हैं बंदीजन इत्यादि बिरद सुनाते जाते हैं ६ जिस तुरंग पर राम बिराजते हैं उसकी गति को तो देखि कर गरुड़ भी लाजते हैं ० ऐसा सुन्दर है मानो कामहीं ने घोड़े का बेषबनाया है॥ ८॥

केशवायनमः॥

छन्द॥ अपनी अवस्था और बल, रूप, गुण और चाल से सब को मोहता है जिसकी जीन मणि माणिक मोतियों के प्रकाश से जगमगाती है जिसकी किंकिणी और सुन्दर लगाम को देखि कर सुर, नर, मुनि भी ठगे हैं॥ १॥ दोहा॥ राम की मनसाही में लवलीन है मन जिस का चलते में घोड़ा कैसी छबि पावता है मानों तड़ित और उड़गणों से भूषित मेघ मयूर कोही नचावताहै॥ १३०॥ यहां से द्वादश चौपाइयां केशवादिक नाम पर सछन्द हैं उनमें एक पचीसी छन्दों की है

जिहि बर बाजि राम असवारा। तिहि शारदा कि बरणै पारा १
शंकर राम रूप अनुरागे। नयन पंच दश अति प्रिय लागे २
हरि हित सहित राम जब जोहे। रमा समेत रमापति मोहे ३

निरखि राम छबि बिधि हरषाने। आठै नयन जानि पछिताने ४
सुर सेनप उर अधिक उछाहू। बिधिते डिउढ़ बिलोचन लाहू ५
रामहिं चितव सुरेश सुजाना। गौतम शाप परम हित माना ६
देव सकल सुरपतिहिं सिहाहीं। आज पुरंदरसम कोउ नाहीं ७
मुदित देवगण रामहिं देखी। नृप समाज दुहुं हर्ष बिशेषी ८

नारायणायनम:

छं० अति हर्ष राज समाज दुहुं दिशि दुंदुभी बाजहिं घनी।
बरषहिं सुमन सुरहर्षि कहि जयजयतिजयरघुकुलमनी॥
यहि भांति जानि बरात आवत बाजने बहु बाजहीं।
रानी सुआसिनि बोलि परछन हेतु मंगल साजहीं॥ २॥

दो० सजि आरती अनेक बिधि मंगल सकल संवारि।
चलीं मुदित परछन करन गजगामिनि बर नारि॥ १३१

जिस उत्तम घोड़े के श्रीरामचन्द्र चढ़ेत हैं उसकी शोभा को क्या सरस्वतीभी बर्णन कर सकती हैं १ शंकरको तो राम के रूपके अनुराग में पंच दश नेत्र अति ही प्यारे लगे २ और बिष्णु ने बड़े हित से अपना राम रूप जो देखा तो लक्ष्मी समेत मोहित होगये ३ और ब्रह्मा राम की छबिको देखि हर्षित तो हुये परंतु आठही नेत्र जानि कर पछिताये ४ और कार्त्तिकेय को तो बड़ाही आनन्द हुआ कि ब्रह्मा पितामह से भी डिउढ़ा लोचनकालाभहै ५ सहस्राक्ष इन्द्र ने रामकी छबि देखिकर गौतम के शापको परम हित माना ६ देवता सब अपने राजइंद्रही को धन्य मानते हैं और रामको देखि बड़े प्रमुदित हैं ७ दोनों राज समाज में तो अतिही आनन्द है॥ ८॥ नारायणायनम:॥

छन्द॥ देवता दुन्दुभी बजाते हैं और जय जय कहिकर पुष्प बरषाते हैं इस प्रकार बरात चढ़ी जानि कर रानी सवासिनि को बोलि परछन का मंगल साज सजने लगीं॥ २॥ दोहा॥ अनेक भांति आरती सजि और मंगल संवारि के सब गज गामिनी प्रसन्न मन परछन को चलीं॥ १३१॥

बिधुबदनीमृगशावक लोचनि। सबनिजतनछबिरतिमद मोचनि १
पहिरे बरण बरण बर चीरा। सकल बिभूषण सजे शरीरा २
सकल सुमंगल अंग बनाये। करहिं गान कलकंठ लजाये ३
कंकणकिंकिणि नूपुरबाजहिं। चालबिलोकिकामगजलाजहिं ४

बाजहिं बाजनबिविधिप्रकारा । नभ अरु नगर सुमंगलचारा ५
शची शारदा रमा भवानी । जेसुरतिय शुचि सहज सयानी ६
कपट नारि बर बेष बनाई । मिलीं सकल रनिवासहिं जाई ७
करहिं गान कल मंगल बानी । हर्षबिबस सब काहुन जानी ८

माधवायनमः ॥

छं० कोजान किहि आनंद बस सब ब्रह्म बर परछन चलीं ।
कलगान मधुर निशान बरषहिं सुमन सुर शोभा भलीं ॥
आनंद कंद बिलोकि दूलह सकल हिय हर्षित भईं ।
अंभोज अंबक अंबु उमगि सुअंग पुलकावलि छईं ॥ ३ ॥

दो० जो सुख भा सिय मातु मन निरखि राम बर बेष ।
सो न सकहिं कहि कल्प शत सहस शारदा शेष ॥ १३२

सब बिधु बदनी मृगलोचनी रति मान मोचनी हैं १ रंग रंग के बस्त्र और समस्त आभूषण पहिरे हैं २ समस्त सुमंगल अंग बनाये मंगल गान करती चली आती हैं ३ कंकण किंकिणि नूपुर बाजते जाते हैं चाल देख कर काम गज भी लजाते हैं ४ अनेक प्रकार के बाजे बाजते हैं नभ और नगर में मंगलाचार हो रहा है ५ इन्द्राणी सरस्वती लच्मी पार्बती इत्यादिक पट नारियों के बेष बनाकर रनिवास में जा मिलीं ६ । ७ आनन्द के बश किसी ने न जाना ॥ ८ ॥

माधवायनमः ॥

॥ छन्द ॥ परब्रह्मबर के परछन के आनन्द में कौन किसको जानताहै सुन्दरतो मंगल गानहो रहे हैं मधुर बाजे बाजते हैं पुष्प बर्षा होती है आनन्द कन्द दूलहको देखि सब हर्षित होगईं नेत्रोंमें जलउमगा और शरीरमें पुलकावलीछागईं ॥ ३ ॥ ॥ दोहा ॥ जो सुख कि रामचन्द्र के सुन्दर बेष को देखि कर सीता की माता सुनयना को हुआ उसको तो सौ कल्प में भी सहस्र सरस्वती और शेष भी नहींकहि सकते हैं ॥ १३२ ॥

नयन नीरहठि मंगल जानी । परछन करहिं मुदित मनरानी १
वेदबिहित अरुकुल ब्यवहारू । कीन्हभली बिधि सब आचारू २
पंच शब्द धुनि मंगल गाना । पट पांवड़े परैं बिधि नाना ३
करि आरती अर्घ तिन दीन्हा । राम गवन मंडप तब कीन्हा ४
दशरथ सहित समाज बिराजैं । बिभव बिलोकि लोकपति लाजैं ५
समय समय सुर बरषहिं फूला । शांति पढ़हिं महिसुर अनुकूला ६

नभ अरु नगर कुलाहल होई। आपन पर कछु सुनै न कोई ७
यहि विधि राम मंडपहिं आये। अर्घ देइ आसन बैठाये ८

॥ गोविंदाय नमः ॥

छं० बैठारि आसन आरती करि निरखि बर सुख पावहीं।
मणि बसन भूषण भूरि वारहिं नारि मंगल गावहीं॥
ब्रह्मादि सुर बर विप्र बेष बनाइ कौतुक देखहीं।
अवलोकि रविकुलकमल रविछबि सफलजीवनलेखहीं॥ ४
दो० नाऊ बारी भाट नट राम निछावरि पाइ।
मुदित अशीशहिं नाइ शिरहर्षनहृदयसमाइ॥ १३३॥

महां मंगल समय जानि कर नेत्रों के प्रेमानन्द जल को रोकती हैं और महा प्रमोद भरे मन परछन करती हैं १ वेद विधि और कुल रीति के अनुसार सब आचार किये २ पंचशब्द धुनि अर्थात् वेदधुनि १ बंदी धुनि २ जय धुनि३ शंख धुनि ४ निशान धुनि ५ मंगल गान होते जाते हैं और पांवड़े परते जाते हैं ३ जब आरती करिके अर्घ दिया तब राम ने मंडप में गमन किया ४ दशरथ समाज समेत विराजते हैं देव पुष्प बरषाते हैं ब्राह्मण शांति पढ़ते हैं ५।६ ऊपर नीचे कुलाहल हो रहा है ७ ऐसे राम को अर्घ देकर आसन पर बैठाया ॥ ८ ॥

॥ गोविन्दाय नमः ॥

छन्द ॥ और आरती कर बर को देख सुख पाती हैं मणि भूषण निछावरि करती हैं और मंगल गावती हैं ब्रह्मादि देव विप्र बेष बनिकर कौतुक देखते हैं अपने जीवन को सुफल लेखते हैं ४ दोहा ॥ नाऊ, बारी, भाट, नट, सब राम की निछावरि को पाइ कर आनन्द भरे शिर नाइ कर अशीश देते हैं और हर्ष हृदय में नहीं समाता है ॥ १३३ ॥

मिले जनक दशरथ अति प्रीती। करि लौकिक वैदिक सब रीती १
मिलत यथा दोउ राज बिराजे। उपमा खोजि खोजि कवि लाजे २
लहीन कतहुं हारि हिय मानी। इन समये उपमा उर आनी ३
समधी देखि देव अनुरागे। सुमन बर्षि यश गावन लागे ४
जग बिरंचि उपजावा जबते। देखे सुने व्याह बहु तबते ५
सकल भांति सब साज समाजू। सम समधी देखे हम आजू ६
देव गिरा सुनि सुन्दर सांची। प्रीति अलौकिक दोउ दिशि मांची ७

देत पांवड़े अर्घ सुहाये । सादर जनक मंडपहिं लाये ८

॥ बिष्णवेनमः ॥

छं० मंडप बिलोकि बिचित्र रचना रुचिरता मुनि मन हरे ।
निज पाणि जनक सुजान सब कहं आनि सिंहासन धरे ॥
कुल इष्ट सरिस बशिष्ठ पूजे बिनय करि आशिष लही ।
कौशिकहिं पूजत परम प्रीति कि रीति सो न परै कही ॥ ५ ॥

दो० बामदेव आदिक ऋषय पूजे सकल महीश ।
दिये दिब्य आसन सबहिं सब सन लही अशीश ॥ १३४ ॥

राजाधिराज जनक और श्री महाराज दशरथ समधी की लौकिक और वैदिक सब रीति करके बड़ी प्रीति से मिले १ मिलते समय जैसे दोनों राजेन्द्र बर्य्य बिराजे हैं उसकी उपमा को खोजि खोजि कविराज भी लाजे हैं २ जब कहीं भी न मिली तब तो हारि मानि कर इनको इन्हींकी उपमा लाये ३ और देव गण भी इस समधी को देखि पुष्प बर्षा कर कहने लगे ४ कि जब से ब्रह्माने इस जगको रचा है तब से हमने अनेक ब्याह देखे और सुनेहैं ५ सब भांति साज समाज समेत समान समधी आजही देखे हैं ६ ऐसी देव बाणी सुनिकर अलौकिक प्रीति दोनों राज समाज में बढ़ी ७ फिरि तो सुन्दर पांवडे और अर्घ देते आदर समेत राजा को जनक मंडप में लाये ॥ ८ ॥ ॥ बिष्णवे नमः ॥

छंद ॥ अपनेही हाथोंसे सबको सिंहासन दिये कुलपूज्य सतानन्दके समानबशिष्ठका पूजन किया बिनती करि अशीश पाई और बिश्वामित्र के पूजते तो परम प्रीति की रीत कही नहीं जाती है ॥ ५ ॥ दोहा ॥ तिस पीछे बामदेवादि समस्त ऋषियों का पूजन किया सबको दिब्य आसनदिये सबसे अशीशपाई ॥ १३४ ॥

बहुरि कीन्हि कौशलपतिपूजा । जानि ईश सम भाव न दूजा १
कीन्हि जोरिकर बिनय बड़ाई । कहिनिज भाग्य बिभव बहुताई २
पूजे भूपति सकल बराती । समधी सम सादर सब भांती ३
आसन उचित दिये सब काहू । कहौं कहा मुख एक उछाहू ४
सकल बरात जनक सनमानी । दान मान बिनती बर बानी ५
बिधि हरि हर दिशि पति दिन राऊ । जे जानहिं रघुबीर प्रभाऊ ६
कपट बिप्र बर बेष बनाये । कौतुक देखहिं अति सचुपाये ७
पूजे जनक देव समजाने । दिये सु आसन बिनु पहिचाने ८

॥ मधुसूदनायनमः ॥

छं० पहिचान को किहिं जान सबहिं अपान सुधि भोरी भई ।
आनन्द कन्द बिलोकि दूलह उभय दिशि आनंद मई ॥
सुर लखे राम सुजान पूजे मानसिक आसन दये ।
अवलोकिशीलसुभाव प्रभुकरबिबुधमनप्रमुदितभये ॥ ६ ॥
दो० रामचंद्र मुखचंद्र छबि लोचन चारु चकोर ।
करत पान सादर सकल प्रेम प्रमोदन थोर ॥ १३५ ॥

फेरि तो कौशलाधीश महाराज दशरथ का पूजन किया ईशही के समान जानिकर दूसरा भाव नहीं १ हाथ जोरि कर बिनती करी और बड़ाई अपने भाग्य के बिभव की बहुताई कहिकर २ तिस पीछे सब बरातियों का पूजन किया समधीहीके समान आदर समेत सब भांति से ३ और सब को यथा योग्य आसन दिये एक मुख से इस उत्साह को कैसे कहि सकूं ४ समस्त बरात का सन्मान जनक ने किया दान मान, बिनती, मधुरबाणी से ५ तिस पीछे जो देवदेव ब्रह्मा बिष्णु शिव और दशों दिग्पाल और कुल वृद्ध पितामह सूर्य्य इत्यादि जो भगवत् प्रभाव को जानतेहैं ६ ते कपट द्विज देव देह धारण किये प्रेम मग्न कौतुक देखिरहे हैं उनकोभी जनक ने देव समानही जानिकर पूजनकिया और अन पहिचानेही सुन्दर उत्तम आसन दिये ७ । ८ ॥

मधुसूदनायनमः

छन्द ॥ पहिचानता कौन किसको है और कौन किसको जानता है किसी को आपेहीकी सुधि नहीं है आनन्द के मूल दूलह को देखि दोनों दिशाओं में आनन्दमयी ही छाइ रही है देवताओं को राम ने पहिचाना उनको मानसिकही पूजन किया और आसन दिये ऐसा शील सुभाव रामका देखिकर सब देव आनन्दित हुये ६ दोहा ॥ सब के नेत्र चकोर रामके मुख चन्द्रमा को प्रेम समेत देखि रहे हैं ॥ १३५ ॥

समय बिलोकि बशिष्ठ बुलाये । सादर सतानंद मुनि आये १
बेगि कुंवरिअब आनहु जाई । चले मुदित मन आयसु पाई २
रानी सुनि उपरोहित बानी । प्रमुदित सखिन समेत सयानी ३
बिप्र बधू कुल वृद्ध बुलाईं । करि कुल रीति सुमंगल गाईं ४
नारि वेष जे सुर बर बामा । सकल सुभाय सुन्दरी श्यामा ५
तिनहिं देखि सुखपावहिंनारी । बिनु पहिचानि प्राणते प्यारी ६
बार बार सनमानहिं रानी । उमा रमा शारद सम जानी ७
सियहिं संवारि समाज बनाई । मुदित मंडपहिं चलीं लिवाई ८

त्रिविक्रमायनमः ॥

छं० चलिल्याइ सीतहिसखी सादर सजि सुमंगल भामिनी ।
नव सप्त साजहिं सुन्दरी सब मत्त कुंजर गामिनी ।
कलगान सुनि मुनि ध्यान छूटहिं काम कोकिल लाजहीं ।
मंजीर नूपुर कलित कंकण ताल गति बर बाजहीं ॥ ७ ॥

दो० सोहति बनिता वृंद महं सहज सुहावनि सीय ।
छबिललनागण मध्य जनु सुखमाअतिकमनीय ॥ १३६ ॥

आदर सन्मान के पीछे बशिष्ठ के बुलाये सतानन्द आये १ बशिष्ट ने कहा कि शीघ्रहीं कन्या को लाओ यह सुनिकर सतानन्द ने रानियोंसे जाकर कहा कि बेगही कन्या को पठावो २ रानी पुरोहित की बाणी सुनतेही सखियों समेत आनन्दित होगई ३ विप्र बधू और कुलकी बड़ी बूढ़ियों को बुलाकर कुलरीति करके मंगल गान किये ४ नारियों का बेष बनाये जो देवोत्तमों की बधू सुभावही तें अति सुन्दरी हैं ५ तिनको देखि देखि कर सब सखियां सुख पावती हैं अन पहिचाने प्राणही सो प्यारी लगती हैं ६ तिनको बारंबार रानी भी सनमान करती हैं और पार्वती लक्ष्मी शारदाही के समान उनको जानती हैं ७ तेई सब सुर बधू सीता का सुन्दर शृंगार करि और समाज बनाकर प्रसन्न मन मंडप को लेचलीं ॥ ८ ॥

॥ त्रिविक्रमायनमः ॥

छन्द ॥ सोरहों शृंगार सजे मत्त गयन्द की गति से मन्द मन्द चली आती हैं जिनके मधुर स्वर गान को सुनतेही मुनि जनों के ध्यान छूटते हैं और कामकोकिला भी लाजती हैं जिनके बिछुआ नूपुर कंकणतालही गतिपर बाजते चले आते हैं ॥ ७ ॥ दोहा ॥ ऐसी सुन्दर सखियोंके बीच सहज सुहावनी सीता कैसी सोहतीहै मानों छबि ललनाओं में महा छबिही है ॥ १३६ ॥

सिय सुन्दरता बरणि न जाई । लघुमति बहुत मनोहरताई १
आवत जानि बरातिन सीता । रूपराशि सबभांति पुनीता २
सबहिं मनहिं मन कीन्ह प्रणामा । देखि राम भे पूरण कामा ३
हरषे दशरथ सुतन समेता । कहिन जाय उरआनंद जेता ४
सुर प्रणामकरि बरषहिं फूला । मुनिअशीश धुनिमंगल मूला ५
गान निशान कुलाहल भारी । प्रेम प्रमोद मगन नर नारी ६
यहिविधि सीय मंडपहिं आई । प्रमुदितशांति पढ़हिंमुनिराई ७
तिहिअवसरकरबिधिब्यवहारू । दुहुंकुल गुरुन कीन्ह आचारू ८

॥ बामनायनमः ॥

सीताकी सुन्दरता तो बरणीही नहींजातीहै क्योंकि बुद्धि तो थोरी और मनोहरता बहुत है १ इसप्रकार रूपकी राशि सीताको बरातियों ने जब आवते देखा २ तब सबों ने मनहीमन में प्रणाम किया और रामतो देखतेही पूर्णकाम होगये क्योंकि जिसकामनासे अवतार लियाहै उस कार्य्यकी करनहारी सीताही है । कृत्स्नं रामायणं काव्यं सीतायाश्चरितं महत् अर्थात् चौबीसों सहस्र रामायण सीताहीका बड़ा चरित्र है ३ पुत्रोंसमेत राजा दशरथ को जो आनन्द हुआ सोतो कहाही नहींजाता है ४ देवता तो प्रणाम करि करि के पुष्प बरसाते हैं और मुनीश्वर अशीश देतेहैं ५ गान और निशानोंका महाभारी कुलाहल होरहा है प्रेम और आनन्द में सब नर नारीमग्नहैं६ इसप्रकार सीता मंडप में आई तबतो परम प्रमुदित मुनीश्वरशांति ऋचापढ़नेलगे ७ तिससमय की बिधिका ब्यवहार बशिष्ठऔर सतानन्द दोनोंकुल गुरुओंनेकिया ॥ ८ ॥

॥ बामनायनमः ॥

छं० आचार करिगुरु गौरि गणपति मुदित बिप्रपुजावहीं ।
सुरप्रकट पूजालेहिंदेहिं अशीश अति सुख पावहीं ॥
मधुपर्क मंगलद्रव्यजोजिहि समय मुनि मनमहं चहैं ।
भरिकनक कोपरकलश सोसबलिये परिचारक रहैं ॥ ८ ॥

॥ बामनायनमः ॥

छं० कुल रीति प्रीति समेत रवि कहिदेत सब सादर किये ।
यहि भांति देवपुजाइ सीतहिंसुभग सिंहासन दिये ॥
सियराम अवलोकनि परस्पर प्रेमकाहु न लखिपरै ।
मनबुद्धि बरबाणी अगोचर प्रकट कबिकैसे करै ॥ ९ ॥

॥ श्रीधरायनमः ॥

दो० होमसमय तनुधरि अनल अतिहित आहुति लीन्हि ।
बिप्र भेषधरि बेदसबकहि बिवाहबिधि दीन्हि ॥ १३७ ॥

बाल्मीकि रामायण में तो रामबिवाह का बिधि बिधान औरही भांतिहै अर्थात् बिष्णुपीठके अनुसार लिखाहै१परंतु गुसाईं तुलसीदास ने रुद्रपीठके अनुसारजो इस कालमें प्रचलित है उसीके अनुसार लिखाहै कि आचार करिके दोनों कुल गुरुप्रथम गौरी गणेशका पूजन करावतेहैं सोदेवता प्रत्यक्ष पूजा गृहण करतेहैं और अशीश देतेहैं बड़ा सुखपाते हैं मधुपर्ककहें कांसेके पात्रमें दधि मधु घृतमिलाहुआ इत्यादि और भी मंगल द्रब्य जो जिससमय बशिष्ठ मनमें चाहतेहैं सो सुबर्णके कोपर कलशा भरे सेवक जन पहिलेहीसे लियेरहते हैं ॥ ८ ॥

कुलकी रीति बड़ीप्रीतिसे आपसूर्य्यंही कहतेजातेहैं सोई सादर करतेजाते हैं इस भांति सीताको देवपूजन कराइके सुन्दर सिंहासन दिया सीता रामकी परस्पर अवलोकनि का प्रेम किसीको नहीं लखिपरता है जो प्रेममन बुद्धि बाणीसे आगेदर है उसको कबि कैसे प्रकटकरि सकते हैं ॥ ६ ॥ श्रीधरायनमः ॥ दोहा ॥ होमके समय अग्निदेव ने देहधरिके बड़ेप्रेम समेत आहुति गृहणकी और विप्ररूप होकर चारों बेदोंनेविवाह की समस्त बिधि कहिदी ॥ १३० ॥

जनक पाट महिषी जग जानी । सीय मातु किमि जाइबखानी १
सुयश सुकृत सुखसुन्दरताई । सब सकेलि बिधि रची बनाई २
समयजानि मुनिबरन बुलाई । सुनत सुवासिनिसादर ल्याई ३
जनक बामदिशिसोहसुनयना । हिमगिरिसंग बनीजनु मयना ४
कनक कलश मणि कोपररूरे । शुचि सुगंध मंगल जल पूरे ५
निजकर मुदित राउ अरुरानी । धरे राम के आगे आनी ६
पढ़हिं वेद मुनि मंगल बानी । गगनसुमन झर अवसर जानी ७
बर बिलोकि दंपति अनुरागे । पांय पुनीत पखारन लागे ८

जगत बिख्यात राजा जनक की राज महिषी मुख्य पटरानी सीता की माता कैसे बखानी जाती है १ मानो समस्त सुयश, सुकृत, सुख, सुंदरता, को सकेलि कर ब्रह्माने संवारि के सुनयनाही रची है २ सो समय जानि कर जो मुनीश्वरों ने बुलाई सुनतेही सुवासिनी आदर समेत लेआईं ३ जनकके वाम भाग अथवा जनक जिसके वाम भाग कैसी सुनयना सोहती है जैसी हिमाचल के साथ पार्वती के बिवाह में मयना सोहती रहै ४ सुबर्ण के तो कलश और मणिन के सुन्दर कोपर पवित्र सुगन्धित मंगल जल से भरे हुये ५ अपनेही हाथों से प्रमुदित राजारानी ने राम के आगे लेकर धरे ६ ता समय मुनीश्वर तो मंगल बाणीसे वेद पढ़तेहैं और पाणि गृहण का सुन्दर समय जानिकर आकाश से फूलों की वर्षा होरही है ७ जगज्जन्मादि कारण पूर्ण परब्रह्म बरको देखिकर राजा रानी दोनों परम प्रेम परिपूर्ण पुराणपुरुषोत्तम के पाय पुनीत पखारने लगे ॥ ८॥

श्री धरायनमः ॥

छं० लागे पखारन पांय पंकज प्रेम तनु पुलकावली ।
नभनगरगाननिशानजय धुनिउमगि जनुचहुं दिशिचली ॥
जे पद सरोज मनोज अरि उर सर सदैव बिराजहीं ।
जेसुकृतसुमिरतबिमलतामनसकलकलिमलभाजहीं॥१०॥

॥ हृषीकेशायनमः ॥

छं० जे परसि मुनि बनिता लहीगति रही जो पातक मई।
मकरंद जिनको शंभु शिर शुचिता अवधि सुर बरणई॥
करि मधुपमन मुनियोगिजनजिहिं सेइअभिमितगतिलहैं।
ते पद पखारत भाग्यभाजनजनकजय जयसबकहैं॥११॥

॥ पद्मनाभायनमः ॥

जा समय श्री रामचद्र के चरण कमल पखारने लगे ता समय राजा रानी दोने के अंग में प्रेम की उमंगसे पुलकावली हो आई और आकाश और नगरसे गान और निशान औ जय जय धुनि उमंगि कर मानों चारों दिशा को चलि हुई श्री रामचद्र के चरण कैसे कमल हैं कि जो महादेव के हृदयरूपी सरोवर में सदा बिराजते हैं और जिनको एकबार स्मरण करतेही मन बिशुद्ध होजाता है और समस्त कलिमल नाश होजाते हैं ॥ १० ॥ हृषीकेशायनमः ॥ फिरि कैसे चरण हैं॥ शरद भव सुन्दर तरुण तर अरुण बारिज बरण ॥ लच्छि लालित ललित पदतल छबि अनूपम धरण गङ्ग जनक अनङ्ग अरि प्रिय कपट बटु बलि छरण॥ बिप्र तिय नृगव्याध के दुख दोष दारिद दरण ॥ सिद्ध सुर मुनि बृन्द बंदित सुखद सेवक शरण ॥ सुकृत उर आनत जिनहिं जन होत तारण तरण ॥ और जिनकी रजही के स्पर्श से महापातकिनि अहल्याने पावनगति पाई और जिन चरण कमलोंका मकरंद मंदाकिनी शिवकेशिरपर बिराजे है जिसको शुचिता की मर्य्याद सब देव बरणते हैं जिन चरण कमलों पर अपने अपने मनको मुनीश्वर और योगी जन मधुप की नाईं बसाकर अभिमितगति पाते हैं तिन चरणों को भाग्य भाजन राजा रानी पखारते हैं सब देखने हारे जय जय करते हैं ॥ ११ ॥

॥ दामोदरायनमः ॥

छं० बर कुंवरि करतल जोरि शाखोच्चार दोउ कुल गुरु करैं।
भयो पाणिगृहण बिलोकिसबसुरमनुज मुनि आनंदभरैं॥
सुख मूल दूलह देखि दंपति पुलकि तन हुलस्यो हियो।
करि लोकवेद बिधानकन्यादान नृप भूषणदियो॥ १२॥

॥ दामोदरायनमः ॥

छं० हिमवंत जिमि गिरिजा महेशहिं हरिहिं श्री सागर दई।
तिमि जनक रामहिं सिय समर्पी बिश्व कल कीरति नई॥

किमि करै बिनय बिदेह कियो बिदेह मूरति सांवरी।
करि होम बिधिवतगांठि जोरी होनलागी भांवरी॥ १३॥

॥ वासुदेवाय नमः॥

दो० जय धुनि बंदी वेद धुनि मंगल गान निशान।
सुनि हर्षहिं वर्षहिं बिबुध सुर तरु सुमन सुजान १३८

वर श्री राम चन्द्र और कुमारी श्री जानकी दोनों के करतल जोरि कर जगन्मूल नारायण से लेकर दशरथ पर्य्यंत शाखोच्चार तो बशिष्ठ ने किया तैसेही नारायण से लेकर शीरध्वज राजा जनक पर्य्यंत शाखोच्चार सतानन्द ने किया इस प्रकार पाणिगृहण हुआ देखि कर समस्त देवता और मुनि मनुष्य आनन्दित हो गये सुख मूल दूल्ह को देखि राजा रानी का पुलकित तन और प्रफुल्लित हृदय हो गया तबतो लोक और वेद बिधान करि भूप शिरोमणि राजा जनक ने कन्यादान दिया ॥ १२॥

हिमाचल ने जैसे पार्वती महादेव को और समुद्र ने जैसे लक्ष्मी भगवान बिष्णु को समर्पण करी तैसेही जनक ने श्री राम चंद्र को सीता समर्पण करी जिसकी विश्वमें नित्य नवीन सुन्दर कीर्त्ति हो रही है अब राजा जनक बिदेह बिनती करै तो कैसे कर सकता है कि उसको तो सुन्दर सलोनी श्यामल सुकुमार मूर्त्ति ने अतिही बिदेह करि दिया है तातें बिनती तो न करि सको परंतु बिधिवत होम करिके गृन्थि बंधनही किया और वेदी कीप्रदक्षिणा, भांवरी होने लगीं ॥ १३॥

॥ बासुदेवाय नमः॥

दोहा ॥ तिस समय तो जय जय धुनि बंदी धुनि, बेद धुनि, और मंगल गान होने लगे बाजे बाजने लगे देवता कल्प वृक्ष के पुष्प बरषाने लगे ॥ १३८ ॥

॥ राम बिवाह का शाखोच्चार ॥

जगन्मूल श्रीमन्नारायण १ नारायण ते जल प्रथम उत्पन्न हुआ २ जल से कमल हुआ ३ कमल से ब्रह्मा हुये ४ ब्रह्मा से मरीचि हुये ५ मरीचि से कश्यप हुये ६ कश्यप से बिबस्वानमनु अयोध्याधिपति हुये ७ बिवस्वान मनुसे राजा इक्ष्वाकु हुये ८ इक्ष्वाकु से बिकक्षी हुये ९ बिकक्षी से पुरंजय हुये १० पुरंजय से काकुत्स्थ हुये ११ काकुत्स्थ से अनेनास हुये १२ अनेनास से पृथु हुये १३ पृथु से बिश्वगश्वहुये १४ विश्वगश्व से आर्द्र हुये १५ आर्द्र से भाद्र आर्द्र हुये १६ भाद्र आर्द्र से युवनाश्व हुये १७ युवनाश्व से श्रवश्व हुये १८ श्रवश्व से बृहदश्व हुये १९ बृहदश्व से कुवलयाश्व हुये २० कुबलयाश्व से दृढ़ाश्व हुये २१ दृढ़ाश्वसे हर्य्यश्व हुये २२ हर्य्यश्व से निकुम्भ हुये २३ निकुम्भ से संकटाश्व हुये २४ संकटाश्व से प्रसेनजित् हुये २५ प्रसेनजित् से दूसरे युवनाश्वहुये २६ युवनाश्व से मान्धाता हुये २७ मान्धाता से पुरुकुत्स हुये २८ पुरुकुत्ससेत्रिशदश्व हुये २९ त्रिशदश्वसे अनरण्य हुये ३० अनरण्य से पृषदश्व हुये ३१

पृषदश्व से दूसरे हर्य्यश्व हुय ३२ हर्य्यश्व से बसुमानहुये ३३ बसुमान से त्रिधन्वा हुये ३४ त्रिधन्वा से त्रयारण्य हुये ३५ त्रयारण्य से त्रिशंकु हुये ३६ त्रिशंकु सेहरिश्चन्द्र हुये ३७ हरिश्चन्द्र से रोहिताश्व हुये ३८ रोहिताश्व से हारीत हुये ३९ हारीत से चुंचु हुये ४० चुंचुसे बिजय हुये ४१ बिजय से रुरुक हुये ४२ रुरुक से बृक हुये ४३ बृक से बाहु हुये ४४ बाहु से सगर हुये ४५ सगरसे असमंजस हुये ४६ असमंजस से अंशुमान हुये ४७ अंशुमान से दिलीप हुये ४८ दिलीप से भागीरथ ४९ भागीरथ से श्रुत हुये ५० श्रुत से नाभागहुये ५१ नाभाग से अंबरीष हुये ५२ अंबरीष से सिंधुद्विप हुये ५३ सिंधुद्विप से अयुताश्व हुये ५४ अयुताश्व से ऋतुपर्ण हुये ५५ ऋतुपर्ण से सर्ब काम हुये ५६ सर्ब काम से सुदास हुये ५७ सुदास से कल्माषपाद हुये ५८ कल्माष पाद से अस्मक हुये ५९ अस्मक से हरिकवच हुये ६० हरिकवच से प्रथम दशरथ हुये ६१ दशरथ से इलिवथ हुये ६२ इलिवथ से बिश्वासह हुये ६३ बिश्वासह से खट्वांग हुये ६४ खट्वांग से दीर्घबाहु हुये ६५ दीर्घ बाहु से रघु हुये ६६ श्रीमहाराज रघु के प्रपौत्र और श्रीमहाराज अज के सुपौत्र और श्रीमन्महाराजाधिराज चक्रवर्त्ति दशरथ राजा के वंश बिवर्द्धन पुत्रदशरथ नन्दन श्री रामचन्द्र बर चिरंजीवः ॥ ७० ॥

कुंवर कुंवरि कल भांवरि देहीं । नयन लाभसब सादर लेहीं १
जाय न बरणि मनोहर जोरी । जो उपमा कछुकहियसो थोरी २
राम सीय सुन्दर प्रतिछाहीं । जग मगातिमणिखंभन माहीं ३
मनहु मदनरतिधरिबहुरूपा । देखत राम बिवाह अनूपा ४
दरश लालसा सकुच नथोरी। प्रकटत दुरत बहोरि बहोरी ५
भये मग्न सब देखन हारे । जनक समान अपान बिसारे ६
प्रमुदित मुनिन भांवरैं फेरीं । नेग सहित सब रीति निबेरीं ७
बहुरि बशिष्ठदीन्ह अनुशासन । बर दुलहिन बैठे एकआसन ८

॥ हृषी केशाय नमः ॥

कुंवर और कुंवरितो बेदी की भांवरे देतेहैं और देवमुनि मनुष्य सब बड़े आदर से नेत्रों का लाभ लेते हैं १ ता समय तो सुन्दर सीता राम की मनोहर जोरी बरणिहीं नहीं जाती है जो उपमा दीजिये सो अधिक तो कहा समान भी नहीं होती है किन्तु अतिही थोरी देखि परती है २ राम और सीता की परम सुन्दर प्रतिछाहीं मंडप के मणि और खंभोंमें ठौर ठौर जग मगातीहैं सो कैसीछबि देती है ॥ ३ मानों काम और रतिही अनेक रूप धरि के राम बिवाह के अनूप उत्सव को देखते हैं ४ दरशन की तो लालसा भी बड़ी है और अपनी सुन्दरता के मान भंग

की सकुच भी बड़ी है तातें बारंबार प्रकट भी होते हैं औ छिपि छिपि भीजाते हैं ५ ऐसी सुन्दर शोभा को देखि कर सब मग्न हो गये जनक से ज्ञानियों ने भी आपे भुला दिये ६ इस प्रकार मुनीश्वरों ने सातों प्रदक्षिणा करवाईं और नेगसमेत संपूर्ण बिवाह की रीतें निवेरीं परंतु ॥ यावद्भवेन्नबामांगी तावत्कन्याकुमारिका ॥ अर्थात् जब तक कन्या वर के आसन परबामांगी नहीं होती है तब तक कुमारीही रहती है इस कारण ७ फिरिबशिष्ठनेआयसु दियाकिबरऔरदुलहिनिएकही आसनपरबैठे ८॥

संकर्षणायनमः ॥

छं० बैठे बरासन राम जानकि मुदित मन दशरथ भये ।
तन पुलक पुनि पुनि देखि अपने सुकृत सुरतरुफलनये ॥
भरि भुवन रहा उछाह राम बिवाहभा सबहीं कहा ।
किहिभांतिबरणि सिरातरसना एक मुखमंगलमहा ॥ १४

॥ संकर्षणायनमः ॥

छं० तब जनक पाइ बशिष्ठ आयसु ब्याह साज संवारिकै ।
मांडवी श्रुति कीरति उरमिला कुमरि लईं हंकारिकै ॥
कुश केतु कन्या प्रथम जो गुण शील सुखशोभा मई ।
सबरीतिप्रीतिसमेत करिसो ब्याहिनृप भरतहिंदई ॥ १५

॥ प्रद्युम्नायनमः ॥

जब बशिष्ट की आज्ञा से बर के आसन पर राम और जानकी दोनों बैठे तब तो महा मुदित मन दशरथ हुये और अपने सुकृतों के कल्पतरु के परम सुहाये फलों को देखि देखि पुलकित तन होते हैं इस महा उत्साह से समस्त लोक भरि रहा सबने साखी भरी कि राम बिवाह हुआ किस भांति वर्णन किया जाता है मुख में रसना तो एकही है और यह महा मंगल है ॥ १४ ॥ संकर्षणायनमः ॥ तबतो बशिष्ट ने जनक से कहा कि जैसी रूप, शील, गुणवती तुम्हारे तीनि कन्या हैं तैसेही बल, बुद्धि, विद्या, बिनय, संपन्न, रूप, शील, गुण, योवन शाली, दशरथ के तीनों कुमार हैं तातें उनका भी बिवाह कर देना तुमको उचित है ऐसी बशिष्ठ की आज्ञा पाकर और समस्त ब्याहका साज बनाकर मांडवी १ श्रुतिकीर्त्ति २ उरमिला ३ तीनों कुमारियों को बुला लिया कुशध्वज अपने भाईकी बड़ी बेटी मांडवी जो गुणशील सुख शोभा शालिनी है उसको समस्त बिवाह की रीति प्रीति समेत करिके भरतको ब्याहि दिया ॥ १५ ॥

॥ प्रद्युम्नायनमः ॥

छं० जानकी लघु भगनी सकल सुन्दरि शिरोमणिजानिकै ।
सोजनक दीन्हिबिवाहिलषणहिं सकलबिधिसनमानिकै ॥

जिहि नाम श्रुति कीरतिसुलोचनिसुमुखिसबगुणआगरी।
सो दई रिपुसूदनहिं भूपति रूपशील उजागरी ॥ १६

॥ अनिरुद्धायनमः ॥

छं० अनुरूप बर दुलहिनि परस्पर लखिसकुचि हियहर्षहीं।
सब मुदित सुन्दरता सराहहिं सुमन सुरगणबर्षहीं ॥
सुन्दरी सुन्दर बरनि युत सबएक मंडप राजहीं।
जनुजीवअरु चारिहुअवस्था बिभुनसहित बिराजहीं ॥ १७

॥ पुरुषोत्तमायनमः ॥

दो० मुदित अवधपति सकल सुत बधुन समेत निहारि।
जनुपायउमहिपालमणि क्रियनिसहितफलचारि ॥ १३६

सीता की छोटी बहिन समस्त सुन्दरि शिरोमणि जिसका उरमिला नाम है सो राजा ने बड़े सन्मान से लक्ष्मण को बिवाहि दी और जिसका नाम श्रुतिकीर्ति है जो सुलोचनी, सुमुखी, सब गुण खानि है सो राजा ने शत्रुघ्न को बिवाहि दी रूपशील करि के सब भांति संपन्न और उजागरी है ॥ १६ ॥

॥ अनिरुद्धायनमः ॥

अबतो यथा योग्य चारोंबर और चारों दुलहिनि परस्पर देखते तो सकुचते हैं परंतु हृदय में हर्षित होते हैं सब देखने हारे अति प्रसन्न सुन्दरता को सराहते हैं और देवगण पुष्प बरषाते हैं सुन्दरी अपने अपने सुन्दर बरों समेत एकही मंडपमें कैसे राजते हैं मानों चारि प्रकार के जीव अर्थात् नित्य मुक्त मुमुक्षु बद्धजो सृष्टिकी आदि में उत्पन्न और प्रलय में नाश नहीं होते हैं सो नित्य बैकुंठ बासी हैं जो अहेतुकी भगवत् कृपा कटाक्ष से संसार बंधन से छूटते हैं सो मुक्त कहाते हैं संसार में भगवज्जन मुमुक्षु हैं और समस्त जीव बद्धहीहैं चारों अवस्था जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय इनके क्रमसे बिभु विश्वतैजस प्राज्ञ ब्रह्म समेत बिराजते हैं ॥ १७ ॥ पुरुषोत्तमायनमः ॥ दोहा ॥ अवध पति सब पुत्रों को बधुन समेत देखिकर कैसे मुदितहैं मानों राजा ने क्रियों समेत चारों फलही पाये हैं ॥ १३६ ॥

जसरघुबीरब्याह बिधिबरणी। सकल कुंवरब्याहेतिहिंकरणी १
कहि न जाइ कछु दायज भूरी। रहा कनक मणि मंडप पूरी २
कंबल बसन विचित्र पटोरे। भांति भांति बहु मोल न थोरे ३
गज रथ तुरंग दास अरु दासी। धेनु अलंकृत काम दुहासी ४
बस्तुअनेक करियकिमि लेखा। कहिनजाइ जानहिंजिनदेखा ५

लोकपाल अवलोकि सिहाने। लीन्ह अवधपति सबसुखमाने ६
दीन्ह याचकनि जोजिहि भावा। उबरासो जनवासेहिं आवा ७
तब कर जोरि जनक मृदुबानी। बोले सब बरात सनमानी ८

॥ पद्मनाभायनमः ॥

जैसी कुछ दान मान समेत श्रीरामचन्द्र के बिवाह की बिधि मैंने बरणी है उसी करणी करतूति से सब कुमारों को बिवाहा १ तिस पीछे जैसा कुछ अलख दायज दिया है सो तो कहाही नहीं जाता है कि मणि सुबर्ण से समस्त मंडप भरि रहा है २ अति विचित्र कंबल, वस्त्र और पाटम्बर भांति भांति के और बड़े बड़े मोल के दिये ३ अगणित हाथी, रथ, घोड़े, दास, दासी और कामधेनु के समान अलंकृत गायें दीं ४ और अनेक वस्तुओं का लेखा कैसे किया जाता है सोइ जानते हैं जिन्होंने देखा है ५ लोकपाल भी जिसको देखि कर सिहाने लगे राजा अवध पति ने सुख मानि कर सब गृहण किया ६ तहां जिस याचक की जिस पर रुचि देखी उसको सोई दे दिया देते देते जो बचि रहा सो जनवासे में आया ७ तिस पीछे हाथ जोरि कर राजा जनक अति कोमल बाणी से सब बरात को सनमानि कर बोले ॥ ८ ॥

॥ पद्मनाभायनमः ॥

छं० सनमानि सकल बरात आदर दानबिनय बड़ाइकै।
प्रमुदित महा मुनि वृंद बंदे पूजि प्रेम लड़ाइकै॥
शिर नाइ देवमनाइ सबसन कहत कर संपुटकिये।
सुर साधुचाहत भाव सिंधुकितोषजल अंजलिदिये॥ १८

॥ अधोक्षजायनमः ॥

छं० करजोरि जनक बहोरि बंधु समेत कोशल रायसों।
बोले मनोहर बयन सानि सनेह शील सुभायसों॥
संबंध राजन रावरे हम बड़े सब भांतिहिं भये।
यह राज साज समेत सेवक जानिवी बिनुगथलये॥ १९

॥ नृसिंहायनमः ॥

समस्त बरात का सन्मान आदर, दान, बिनती, बड़ाई से करिके प्रमुदित हृदय महा मुनीश्वरों को अभि बंदन किया पूजि के और प्रेम से लड़ाइ के फिरि सब देवताओं को शिर नाइ हाथ जोरि सन्मान करि बोले कि सुर और साधु तो केवल भावही चाहते हैं समुद्र क्या अंजली मात्र जल देने से अघाता है ॥ १८

॥ अधोक्षजायनमः ॥

फिरि तो भाई समेत राजा जनक दोनों हाथ जोरि कर महाराज दशरथ से अति ही मनोहर बचन सौभाविक शील सनेह के साने बड़ी दीनताई से बोले कि हे राजन् आपके सम्बन्ध से हम इस संसार में सदैव को सब भांतिही से बड़े हुये ताते तन मन बचन से इस राज समेत हमको अपना सेवक अनमोल का जानना १९ ॥

॥ नृसिंहायनमः ॥

छं० ये दारिका परिचारिका करिपालिवी करुणामयी ।
अपराध क्षमिबो बोलि पठये बहुत हम ढीठी दयी ॥
पुनि भानुकुल भूषण सकल सन्मान निधिसमधी किये ।
कहिजातिनहिं बिनती परस्पर प्रेम परिपूरणहिये॥२०॥

॥ अच्युतायनमः ॥

छं० वृंदारिकागण सुमन बर्षहिं राउ जनवासे चले ।
दुंदुभी जय वेद धुनि नभ नगर कौतूहल भले ॥
तब सखी मंगलगान करति मुनीश आयसु पाइकै ।
दूलहदुलहिनिनसहितसुन्दरिचलींकुहवरल्याइकै॥२१ ॥

॥ जनार्द्दनायनमः ॥

दो० पुनिपुनि रामहिं चितवसिय सकुचति मन सकुचयन ।
हरत मनोहर मीन छवि प्रेम पियासे नयन ॥ १४० ॥

॥ नृसिंहायनमः ॥

ये जो हमारी कन्या हैं इनको भी अपनी सेवकिनी करिके केवल दया दृष्टि से पालना और हमारे सब अपराध क्षमा करना कि हमने आपको इतना परिश्रमदिया कि यहां बोलि पठाया बड़ी ढीठताकी तबतो भानुकुल भूषण महाराज दशरथने समधी राजा जनक को समस्त सन्मान निधान कहा ऐसी परस्पर बिनती कही नहीं जाती है दोनों के हृदय प्रेमरससे परिपूर्ण होरहे हैं २० ॥ अच्युतायनमः ॥

इस प्रकार जब महाराज दशरथ जनवासे को चले तबतो देवताओं के गण मार्ग में पुष्प बरषाते जाते हैं दुंदुभी बाजती जाती हैं जय धुनिहोती जाती है वेद धुनि होरही है आकाश और नगर में महा कौतूहल है तबतो सखी बशिष्ठजी आज्ञा पाकर मंगल गान करती हुईं चारों दुलहों को दुलहिनिन समेत कुहबर को भीतर भवन में ले गईं २१ ॥ जनार्द्दनायनमः ॥ ॥ दोहा ॥ फिरि फिरि रामको देखते सीता तो सकुचती हैं परंतु मन नहीं सकुचता है ता समय सीता के मनोहर प्रेमपियासे नेत्र चंचल मीन की छबि को भी हरते हैं ॥ १४० ॥

श्याम शरीर सुभाय सुहावन । शोभा कोटि मनोज लजावन १
जावक युत पदकमल सुहाये । मुनिमनमधुपरहत जहं छाये २
पीत पुनीत मनोहर धोती । हरत बाल रवि दामिनि जोती ३
पीत जनेउ महा छबि देई । कर मुद्रिका चोरि चित लेई ४
सोहत ब्याह साज सब साजे । उर आयत उर भूषण साजे ५
नयन कमलकलकुंडलकाना । बदन सकल सौंदर्य्य निधाना ६
सुन्दर भृकुटि मनोहरिनासा । भाल तिलक रुचिरता निवासा ७
सोहत मौर मनोहर माथें । मंगल मय मुक्तामणि गाथें ८

॥ दामोदरायनमः ॥

सहज सुहावन तो सुन्दर श्याम शरीर है जिस पर कोटि काम लजावनी शोभा की भीरहै १ महावर संयुक्त कैसे सुहाये चरण कमल हैं मुनीश्वरों के मन मधुकर जिनपर सदा छायेही रहते हैं २ पीत बिशुद्ध परम मनोहर धोती बाल दिवाकर और दामिनी की क्रांति को भी हरती है ३ पीत यज्ञोपवीत सुन्दर श्याम शरीर पर कसौटी कनक रेखकी नाईं महाछबि देता है और करकी मणि मुद्रिका तो चित्त को चुरायेही लेती है ४ व्याहके सब साज सजे हुये सोहते हैं और आयत हृदय पर समस्त उर भूषण राजते हैं ५ प्रफुल्लित कमल पत्र से बिशाल लोचन हैं कानों में मकराकृत कुंडल झलकते हैं और मुखारबिंद तो समस्त सौंदर्य्य का निधानही है ६ अति सुन्दर बांकी भृकुटी हैं मनोहर नासिका है ललाट पटल पर रुचिरता का निवास अर्थात् श्री मंदिर सुन्दर स्वेत तिलक बिराजता है ७ तदुपरि अतिमनोहर मस्तक पर मंगलमय मुक्ता मणि गाथें हुये मौर सोहता है ॥ ८ ॥

उपेंद्रायनमः

छं० गाथैंमहा मणिमौरमंजुल अंगसब चितचोरहीं ।
पुरनारि सुरसुन्दरी बरहिबिलोकि सबतृणतोरहीं ॥
मणिबसन भूषण वारिआरति करहिं मंगल गावहीं ।
सुरसुमन बरषहिं सूतमागध बंदिसुयश सुनावहीं ॥ २२ ॥

उपेन्द्रायनमः

छं० कुहवरहिं आने कुंवरकुंवरि सुवासिनिन सुखपाइ कै ।
अति प्रीति लौकिक रीतिलागी करनमंगल गाइकै ॥
लहकौरि गौरिसिखाव रामहिं सीय सन शारद कहैं ।

रनिवास हासबिलास रसबस जन्म को फलसबलहैं २३

हरयेनमः

महाअमोल मणि गांथें अति मंजुल मौर तो माथे पर सोहता है और समस्त नखशिख अंगों की शोभा चित्त को चोरती है १ ऐसी बर की परम सुन्दरता कोदेखि पुर की नारीं और सुरसुन्दरीं दृष्टि दोष निवारण के लिये सब तृण तोरती हैं २ और मणि भूषण निछावरि करि आरती करती हैं मंगल गावती हैं देवगण पुष्प बरषाते हैं सूतमागध बंदी जन सुयश सुनाते हैं ॥ २२ ॥

इस प्रकार सुवासिनी बरदुलहिनों को कुहवर में ल्याईं और बड़ी प्रीति समेत मंगल गान करिके लौकिक रीतिकरने लगीं तहां पार्वती तो रामको लहकौरि सिखावती हैं और सीता को सरस्वती बतावती हैं समस्त निवास इस हासबिलास के रस के बश जन्म का फलपावती हैं ॥ २३ ॥

कृष्णायनमः

छं० निजपाणि मणिमहंदेखिप्रति मूरति सुरूपनिधान की ।
चालति न भुजबल्ली बिलोकत बिरहभय बस जानकी ॥
कौतुक बिनोद प्रमोद प्रेम न जाइकहि जानहिं अलीं ।
बरकुंवरि सुन्दर सकल सखींलिवाइजनवासेचलीं ॥२४॥

श्री रामायनमोनमः

छं० तिहिसमय सुनिय अशीशजहं तहंनगरनभ आनंदमहा ।
चिरजियहुजोरीचारु चारिहु मुदित मनसबहीं कहा ॥
योगीन्द्र सिद्ध मुनीशदेव बिलोकि प्रभु दुंदुभि हनी ।
चलेहर्षिबर्षिप्रसूननिजनिजलोक जयजयजयभनी ॥२५॥

श्री रामाय नमोनमः

दो० सहितबधूटिन कुंवर सब तब आये पितुपास ।
शोभामंगल मोदभरि उमगेउ जनु जनवास ॥ १४१ ॥

अपने हाथ की आदर्शिका की मणि में सुरूप निधान श्री रामचंद्र की प्रति मूर्ति को देखिकर उस के बियोग के भय से अपनी भुजबल्ली को नहीं चलाती है यह कौतुक बिनोद प्रमोद और प्रेम कहाही नहीं जाता है देखने हारी सखोही जानती हैं इस आनन्द के पीछे सुन्दर बर दुलहिनियों को संपूर्ण सखीं जनवासे को लिवालेचलीं ॥ २४ ॥   कृष्णायनमः ॥

ता समय तो जहां तहां अशीश धुनिही सुनाई परती है नगर और आकाश में

महा आनन्द होरहा है और मुदित मन सबही अशीशते हैं कि ये सुन्दर चारों जोरी चिर जियो इस प्रकार सिद्धयोगींद्र मुनीश्वर और देवगण सुन्दर रामरूप को देखि दुंदुभी बजाते हुये पुष्पबरषाइ जयजय करते अपने अपने लोकको गये ॥ २५ ॥

॥ श्रीरामायनमोनमः ॥

दोहा ॥ बधूटियों समेत चारों कुमार जगपिता के पास आये तबतो शोभा और मंगल और आनन्द से भरिकर मानों समस्त जनवासा उमगिही उठा ॥ १४१ ॥

पुनि जिवनार भई बहु भांती । पठये जनक बुलाइ बराती १
परत पांवडे बसन अनूपा । सुतन समेत गमन किय भूपा २
सादर सबके पांव पखारे । यथा योग पीढ़न बैठारे ३
धोये जनक अवध पति चरणा । शील सनेह जाइ नहिं बरणा ४
बहुरि राम पद पंकज धोये । जे हर हृदय कमल महं गोये ५
तीनो भाइ राम सम जानी । धोये चरण जनक निज पानी ६
आसन उचित सबहिं नृप दीन्हें । बोलि सूपकारी सब लीन्हें ७
सादर लगे परन पनवारे । कनक कील मणि पान संवारे ८
दो० सूपोदन सुरभी सरपि सुन्दर स्वाद पुनीत ।
क्षण महं सब कहं परसिगे चतुर सुआर बिनीत ॥ १४२

फिरितो अनेक भांतिकी जिवनार बनाकर जनक ने बराती बुलाइ भेजे १ तबतो अनूपम वस्त्रके पांवडे परते हुये राजा दशरथ ने पुत्रों समेत गमन किया २ आदर समेत बरातियों के पद पखारे गये और यथायोग पीढ़ों पर बैठारे गये ३ तिस पीछे राजा जनक ने जिस शील सनेह से महाराज अवधेश के चरण धोये हैं सोतो बरणाही नहीं जाता है ४ फिरि श्री रामचन्द्र के चरण कमलोंको धोया जिनको देव देव महादेव ने कृपिण धनकी नाईं अपने हृदय कमल में छिपा रक्खा है ५ और तीनों भाइयों को भी रामही के समान जानकर उनके भी चरण राजा ने अपनेही हाथों से धोये ६ उचित आसन सबको दिये और सब सूपकारी कहें रसोंइयां बुलाये ७ बडे आदरसे बिचित्र पनवारे परने लगे सुन्दर सुहाये हरित मणि के तो पावन पत्र हैं और सुवर्ण की कीलोंसे कीलित हैं ॥ ८ दोहा ॥ तिस पीछे सुन्दर स्वादिष्ट और परम पावन सूपोदन कहें दालि भात और गऊका घृत एक छणही में परम प्रवीण रसोंइया अति लाघवता से सबको पारस करि गये ॥ १४२ ॥

पंच कवल करि जेंवन लागे । गारि गान सुनि अति अनुरागे १
भांति अनेक परे पकवाना । सुधा सरिस नहिं जाहिं बखाना २

परसन लगे सुआर सुजाना । ब्यंजन बिबिधि नाम को जाना ३
चारि भांति भोजन बिधि गाई । एक एक बिधि बरणि न जाई ४
छरस रुचिर ब्यंजन बहु जाती । एकएकरस अगणित भांती ५
जेंवत देहिं मधुर धुनि गारी । लै लै नाम पुरुष अरु नारी ६
समय सुहावन गारि बिराजा । हंसतराउसुनिसहितसमाजा ७
यहिबिधि सबहींभोजनकीन्हा । आदरसहितआचमनलीन्हा ८
दो० देइ पान पूजे जनक दशरथ सहित समाज ।
जनवासे गवने मुदित सकल भूप शिर ताज ॥ १४३ ॥

पंचग्रासी आपोसानी करि करिके जेवनेलगे और गारियों का गान सुनि अति आनन्दित हुये १ पीछेसे अनेक भांति के पकवान परोसे गये अमृतके समान जो बख ने नहीं जाते हैं २ और अनेक भांति के व्यंजन सुजान रसोइयां परोसने लगे जिनका कोई नाम भी नहीं जानता है ३ चारि प्रकार की भोजन की विधि कही है एक भक्ष जो चाबने में आती है दूसरी भोज्य जो जेंवी जाती है तीसरी लेह्य जिससे लगाकर जेवते हैं चौथी संधान चटनी इत्यादि चोष्य सो एक एक विधि अगणित भांतिकी हैं ४ छरस कहैं मीठा १ खट्टा २ लवण ३ करुवा ४ कसैला ५ चरपरा ६ सो एक एक रस के व्यंजन अनेक अनेक भांति के परोसे गये ५ जेंवते में मधुर धुनि से गारी देती हैं अपनी ओरके पुरुष और दशरथ की रानियों के नाम लेलेकर ६ समय सुहावनी गारी सुनि सुनि कर राजा समाज समेत हंसते हैं ७ इस प्रकार सबने आनंद समेत भोजन किये और आदर समेत आचमन लिये ८ ॥ दोहा ॥ फिरि तो पान देदे कर जनक ने समाज समेत राजा दशरथ को स्रग चन्दन सुगंधियों से पूजन किया ऐसे अति आनन्द भरे राजाधिराज जनवासे को गये ॥१४३ ॥

नित नूतन मंगल पुरमाहीं । निमिष सरिस दिनजानि न जाहीं १
बड़े भोर भूपति मणि जागे । याचक गुण गण गावनलागे २
देखि कुंवरबर बधुन समेता । किमि कहिजाइ मोदमन जेता ३
प्रात क्रिया करि गे गुरुपाहीं । महा प्रमोद प्रेम मन माहीं ४
करि प्रणाम पूजा कर जोरी । बोले गिरा अमिय जनु बोरी ५
तुम्हरी कृपा सुनहु मुनिराजा । भयेउं आजु मैं पूरण काजा ६
अब सब बिप्र बुलाइ गुसाईं । देहु धेनु सबभांति बनाईं ७
सुनि गुरुकरि महिपाल बड़ाई । पुनि पठये मुनि बृन्द बुलाई ८

दो० बामदेव अरुदेव ऋषि बालमीकि याबालि ।
आये मुनिबर निकर तब कौशिकादि तपशालि ॥ १४४ ॥

इसीप्रकार के नित्य नवीन मंगल पुरमें होतेहैं और लवनिमेष के समान दिन राति चले जाते हैं १ बड़े प्रात भूपाल चूड़ामणि जगे याचक लोग यश गाने लगे २ चारों कुमारों को बधुन समेत देखिकर जैसा मनमें मोदहै सो कैसे कहाजाता है ३ फिरि प्रातक्रिया करिके बशिष्ठ के पास गये मनमें महा आनन्द और प्रेम भरा है ४ प्रणाम और पूजन किया पुनि हाथ जोरि कर मधुर वाणी बोले ५ आपकी कृपासे हे मुनि राज आज मैं पूरण काज होगया ६ अब आप सब ब्राह्मणों को बुलाकर बिधिवत् गोदान कराइ दीजिये ७ यह सुनिकर बशिष्ठ ने राजाकी प्रशंसा करी और मुनीश्वरों को बुलाइ भेजा ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तबतो बामदेव, देवर्षि नारदादि, बाल्मीकि, याबालि मुनि और बिश्वामित्र इत्यादि मुनीश्वरों के वृंदों के वृंद महा तपशाली बशिष्ठ के बुलाये सब आये ॥ १४४ ॥

दंडप्रणाम सबहिं नृप कीन्हे । पूजि सप्रेम बरासन दीन्हे १
चारि लक्षबर धेनु मंगाईं । काम सुरभि समशील सुहाईं २
सबबिधि सकलअलंकृतकीन्ही । मुदित महिप महिदेवन दीन्ही ३
करत बिनय बहुबिधि नरनाहू । लहेउं आज जगजीवन लाहू ४
पाइ अशीश महीश अनन्दा । लिये बोलि पुनि याचक वृंदा ५
कनकबसन मणिहयगय स्यंदन । दिये बूझिरुचिरबिकुलनन्दन ६
चले पढ़त गावत गुणगाथा । जयजय जयदिन करकुल नाथा ७
यहिबिधि राम बिवाह उछाहू । सकैन बरणि सहस मुखजाहू ८

दो० बारबार कौशिक चरण शीश नाइ कह राउ ।
यहसब सुख मुनि राज तव कृपाकटाक्ष प्रभाउ ॥ १४५ ॥

सबको राजा ने दंडप्रणाम किये और प्रेम समेत पूजन करिके उत्तमासन दिये १ चारि लक्ष चारों बिवाह प्रति एक एक लक्ष गायें मंगाईं जो काम धेनुही के समान सुन्दर सुहाई हैं २ सबभांति सबको अलंकृत करिके प्रसन्न मन राजाने द्विजदेवोंको दान करदीं ३ और सबसे बारबार बिनती करते हैं कि आज मैंने जग में जीवन का लाभ पाया ४ तबतो मुनीश्वरोंका आशीर्वाद पाकर राजा आनन्दितहुये फिरि याचकों के वृंदों को बुलाया ५ उनको कनक हिरण्य, बस्त्र, घोड़े, हाथी, रथ, उनकी रुचिके अनुरूप दिये ६ ते सब कबित्त पढ़ते और यश गावते और महाराज दशरथ की जय भाषतेहुये चले ७ इसप्रकार रामबिवाह का महोत्सवहुआ कि उसको सोभी तो नहीं

बरणि सकता है जिसके सहस्र मुख होवैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ बारबार विश्वामित्र के चरणों को बन्दन करि करि के राजा कहते हैं कि हे मुनि राज महाराज यह समस्त सुख केवल आपकी कृपा कटाक्षही का प्रभाव है १४५ ॥

जनक सनेह शील करतूती । नृपसब भांति सराह बिभूती १
दिनउठि बिदा अवध पतिमांगा । राखहिंजनक सहित अनुरागा २
नितनूतन आदर अधिकाई । दिनप्रति सहस भांति पहुनाई ३
नितनव नगर अनंद उछाहू । दशरथ गवन सुहाइ न काहू ४
बहुत दिवस बीते यहि भांती । जनु सनेह रजु बंधे बराती ५
कौशिक सतानंद तब जाई । कहाबिदेह नृपहिं समुझाई ६
अब दशरथ कहं आयसु देहू । यद्यपि छांड़ि न सकहु सनेहू ७
भलहिं नाथकहि सचिवबुलाये । कहिजयजीव शीश तिननाये ८
दो० अवध नाथचाहत चलन भीतर करहु जनाउ ।
भये प्रेम बससचिवसुनि बिप्रसभा सदराउ ॥ १४६ ॥

इस सब आनन्द के पीछे महाराज दशरथ राजा जनक के सनेहशील और करतूति और विभूति की सब भांति प्रशंसा बारम्बार करते हैं १ नित्यउठि कर राजा दशरथ जनक से बिदा मांगते हैं परतु राजा जनक बड़े प्रेम समेत राखते हैं २ नित्य नवीन आदर बढ़ताही जाता है और दिन दिन प्रति सहस्र भांति की पहुनाई होती हैं ३ नित्यनवीन नगर में आनन्द उत्साह होता है दशरथ का जाना तौ किसी को सुहाताही नहीं है ४ बहुत दिन इसी आनन्द में बीते मानों सनेह की रज्जु ही में बराती बंधे हैं ५ तब तौ सतानन्द और विश्वामित्र ने जाकर राजा बिदेह को समुझाकर कहा ६ कि अब तौ महाराज दशरथ को आज्ञा करो यद्यपि सनेह से छोड़ नहीं सक्ते हो ७ तबतौ राजा ने कहा भला महाराज तैसा ही करेंगे यह कहि कर मंत्रियों को वुलाया उन्होंने जयजीव कहिकर शिरनाया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तबतौ राजा ने कहा कि अवध पति महाराज चलाचाहते हैं तातें रनिवास में इस का जनाव करो यह कहिकर सभा समेत राजा प्रेम के बस होगये ॥ १४६ ॥

पुरबासी सुनि चली बराता । पूंछत बिकल परस्पर बाता १
सत्यगवन सुनि सबबिलखाने । मनहुंसांझ सरसिज सकुचाने २
जहं जहं आवत बसे बराती । तहं तहं सीध चला बहु भांती ३
बिबिधि भांति मेवा पकवाना । भोजन साज न जाइ बखाना ४

भरिभरि बस्तु अपार कहारा । पठये जनक अनेक सुआरा ५
तुरंग लाख रथ सहस पचीसा । सकल संवारे नखअरुशीसा ६
मत्तसहस दशसिंधुर साजे । जिनहिं देखिदिशि कुंजर लाजे ७
कनक बसन मणि भरिभरियाना । महिषी धेनुवस्तु बिधिनाना ८
दो० दायजअमित न कहिसकिय दीन्हबिदेह बहोरि ।
जो अवलोकत लोकपति लोकसंपदा थोरि ॥ १४७ ॥

पुरबासियों ने जब बरात चली सुनी तबतो महा व्याकुल एक से एक पूंछने लगे १ सत्यही याचा सुनिकर सब कैसे उदास होगये हैं जैसे सांझ के समय कमल मुरझाइ जाते हैं २ अब जहां जहां आते समय बरातियों ने बास किये रहें तहां तहां को राजाजनक ने आगेही से अनेक भांति सीधा सामान चलादिया ३ अनेक भांति के मेवा और पकवान भोजन का सब साज कांवरैं भरि भरि कहार और अनेक रसोंइयां पठादिये ४ । ५ ता पीछे एकलक्ष घोड़े और पचीस सहस्र घोड़ों के रथ सब नख शिख पर्य्यन्त संवारे गये ६ और महामत्त दश सहस्र सिंधुर कहें हाथी सजाये जिन को देखिकर दिग्गज भी लजाये ७ और कनक हिरण्य और अमोल वस्त्र मणि यानभरिभरि कर और महिषी भैंसें, धेनु,गायें और अनेक भांति की वस्तु ॥ ८ ॥ दोहा ॥ येसा अमित दायज फेरिकर जनक ने सजाया जिसको देखते लोकपालों के लोकों की भी संपदा थोरीही जानि परती है ॥ १४७ ॥

सब समाज यहि भांति बनाई । जनक अवधपुर दीन्ह पठाई १
चलतबरात सुनत सबरानी । बिकलमीनगण जनुलघु पानी २
पुनिपुनि सियहिंगोद भरिलेहीं । देइ अशीश सिखावन देहीं ३
होइहहु संतत पतिहिं पियारी । चिरअहिवात अशीश हमारी ४
सासु ससुर गुरु सेवाकरेहू । पतिरुख लखिआयसु अनुसरेहू ५
अति सनेह बशसखी सयानी । नारिधर्म सिखवहिं मृदुबानी ६
सादर सकल कुंवरि समुझाईं । रानिन बार बार उर लाईं ७
बहुरि बहुरि भेटहिं महतारी । कहहिं बिरंचिरची कत नारी ८
दो० तिहिं अवसर भाइन सहित राम भानु कुल केतु ।
चले जनक मंदिर मुदित बिदा करावन हेतु ॥ १४८ ॥

इस भांति का सब समाज बना कर जनक ने राजा दशरथ से छिपा कर ऊपर से ऊपरही अयोध्या को पठाइ दिया १ बरात को चलते सुनतेही सब रानी थोर

जलके मीन गणों की नाईं बिकल होगईं २ बार बार सीता को गोदमें लेती हैं और अशीश देकर सिखावन देती हैं ३ हमारी अशीश से तुम सदैव पतिको अति प्यारी होवोगी और तुम्हारा अहिवात अचल होगा ४ सासु ससुर और गुरुजनों की सेवा करना पति का रुख देखि कर आज्ञा पर अनुसरना ५ इस प्रकार सनेह के वश सब सखी नारि धर्म सब कुमारियों को भी सिखावती हैं ६ तैसेही रानियों ने भी सब कुमारी समुझाईं और बार बार हृदय से लगाईं ७ बारंबार माता मिलती हैं और कहती हैं कि हे बिधाता तूने नारी क्यों रची है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ताही समय भाइयों समेत भानुकुल केतु रामचन्द्र प्रसन्न मन रानियों से बिदा होने के लिये जनक मंदिर को चले ॥ १४८ ॥

चारिउ भाइ सुभाइ सुहाये। नगर नारि नर देखन धाये १
कोउ कह चलन चहत हैं आजू। कीन्ह बिदेह बिदाकर साजू २
लेहु नयन भरि रूप निहारी। प्रिय पाहुने भूप सुत चारी ३
कोजानै किहिसुकृत सयानी। नयनअतिथि कीन्हे बिधि आनी ४
मरण शील जिमि पाव पियूषा। सुरतरु लहै जन्मकर भूखा ५
पाव नारकी हरि पद जैसे। इन कर दरशन हम कहं तैसे ६
निरखि रामशोभा उरधरहू। निजमनफणि मूरतिमणि करहू ७
यहिबिधि सबहिं नयनफलदेता। गये कुंवरसब राजनिकेता ८
दो० रूप सिंधु सब बंधु लखि हर्षि उठेउ रनवासु।
करहिं निछावरि आरती महा मुदित मन सासु ॥ १४९

चारों भाई सहजही सुन्दर सुहाये जब आये सुने तबतो नगर के सब नरनारी देखने को दौरे १ कोई कहता है कि आज ये चला चाहते हैं राजा ने बिदाका सब साज सजा है २ तातें नेत्रों भरि कर इनका रूप देखि लेवो ये चारों राजकुमार पाहुनेहीं हैं ३ कौन जानता है कौन जन्म के कौन पुण्य से दैव ने हमारे नेत्रों के अतिथि इनको करि दिया रहे ४ जैसे किसी मृत्युमाण को अमृत मिलि जावे और जन्म दरिद्री कल्पतरु पाजावे ५ नारकी जीव को जैसे हरिपद बैकुंठ मिलना दुर्लभहै ऐसेही हमको इनका दर्शन दुर्लभही जानो ६ तातें रामकी शोभाको देखि कर हृदय में धरि राखो अपने अपने मन को सर्प और इस सुन्दर सांवरी सलोनी मूर्ति को मणि करि राखो ७ इस प्रकार सबको नेत्रों का फल देते हुये राजमंदिर को सबभाई जाते हुये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ रूप सागर सब भाइयों को आया देखि कर सब रनिवास हर्षि उठा निछावरि और आरती महा मुदित सब सासु करने लगीं ॥ १४९ ॥

देखि रामछबिअतिअनुरागीं । प्रेम बिबश पुनिपुनि पदलागीं १
रही न लाज प्रीति उरछाई । सहज सनेह बरणि किमिजाई २
भाइन सहितउबटि अन्हवाये । छरस असन अतिहेतुजिंवाये ३
बोले राम सुअवसर जानी । शील सनेह सकुच मय बानी ४
राउ अवधपुर चहत सिधाये । बिदा होन हम यहां पठाये ५
मातु मुदित मन आयसु देहू । बालक जानि करवनित नेहू ६
सुनतबचन बिलखेउरनिवासू । बोलिनसकहिं प्रेमबश सासू ७
हृदयलगाइकुंवरिसबलीन्ही । पतिनसौंपिबिनती अतिकीन्ही ८

छं० करिबिनयसियरामहिंसमर्पी जोरिकरपुनिपुनिकहै ।
बलि जाउंतातसुजानतुमकहं बिदितगति सबकीअहै ॥
परिवारपुरजन मोहिंराजहिंप्राणप्रिय सियजानिबी ।
तुलसीसुशीलसनेहलखिनिज किंकरीकरिमानिबी ॥ २६

सो० तुम परिपूरण काम जानि शिरोमणि भाव प्रिय ।
जन गुण गाहक राम दोष दलन करुणाय तन ॥ १५०

राम की सुन्दर छबि को देखि कर अतिही प्रेम में मग्न होगईं तातें बार बार पांव लागने लगीं १ अत्यन्त हृदय में प्रीति जो छाइगई तातें सब लाजभी छूटिगई सोभाविक स्नेह कैसे बरणा जाता है २ भाइयों समेत उबटि कर अन्हवाये और षट् रस भोजन बड़े बड़े प्रेम से जिवांये ३ तबतो राम सुन्दर समय जानि कर शील सनेह सकुच भरी बाणी से बोले ४ श्री महाराज अयोध्या को प्रयान किया चाहते हैं आप से बिदा होने को हम यहां भेजा है ५ सो हे माता प्रसन्न मन हम को आज्ञा दीजिये और अपने बालक जानि कर सदा कृपा कीजिये ६ रामके बचन सुनतेही सब रनिवास उदास होगया प्रेम के बश बोलि भी न सकीं ७ सब कुमारियों को हृदय से लगा लिया और तिन तिनके पतिनको सौंपि कर बड़ी बिनती करी ॥ ८ ॥ छन्द ॥ बिनती करिके सीता राम को सौंपी और हाथ जोरि बार बार यह कहती हैं कि हे तात तुमको सबकी गति बिदित है परिवार को पुरजनों को मेरे को राजा को यह सीता प्राणों से भी अधिक प्रिय है सो इसका शील सुभाव जानि कर अपनी किंकरी के समान मानना ॥ २६ ॥ सोरठा ॥ आपतो परिपूर्ण काम सुजान शिरोमणि केवल भावही चाहते हो भक्तों के गुणों के ग्राहक हो और उनके

दोष दलनहो करुणा निकेत हो ॥ १५० ॥ यहांतक शतपंच चौपाइयों की छ पचीसी और सीता स्वयंबर की पांच पचीसी हुईं ॥

अस कहि रही चरण गहि रानी । प्रेम पंकजनु गिरासमानी १
सुनि सनेह सानी बर बानी । बहु बिधि राम सासु सनमानी २
राम बिदा मांगी कर जोरी । कीन्ह प्रणाम बहोरि बहोरी ३
पाइ अशीश बहुरि शिर नाई । भाइन सहित चले रघुराई ४
मंजु मधुर मूरति उर आनी । भई सनेह शिथिल सब रानी ५
पुनि धीरज धरि कुंवरि हंकारी । बार बार भेटहिं महतारी ६
पहुचावहिं फिरि मिलहिं बहोरी । बढ़ी परस्पर प्रीतिनथोरी ७
पुनि पुनि मिलतिसखिन बिलगाई । बाल बत्स जनु धेनुलवाई ८
दो० प्रेम बिबश नर नारि सबसखिन सहितरनिवास ।
मानहुं कीन बिदेह पुर करुणा बिरह निवास ॥ १५१ ॥

ऐसे कहि कर रानी रामके चरणही गहि कर रहि गईं और वाणी तो मानो प्रेम की कीचही में समा गई १ ऐसी स्नेहकी भरी वाणी सुनि कर अनेक बिधि से राम ने सासु को सन्माना २ फिरि तो राम ने हाथ जोरि कर बिदा मांगी और बारंबार प्रणाम की ३ सब सासुन से अशीश पाई और फिरि शिर नवाइकर भाइयों समेत राम बिदा हुये ४ रानी सब सोई मंजुल माधुरी मूर्ति हृदय में लाकर स्नेह में शिथिल होगईं ५ फिरि धीरज धरिके सबकुमारी बुलाईं और बारंबार माता भेटने लगीं ६ पहुंचावती हैं और फिर फिर मिलती हैं तातें परस्पर अति प्रीति बढ़ती जाती है ७ फिरि फिरि सखियों को बिलगाइ कर माता को सीता औ सीताको माता परस्पर कैसे मिलती हैं जैसे बालवत्स और लवाईगाइ मिलती है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ता समय पुर के नर नारी और सखियों समेत सब रनिवास कैसे प्रेम के बश व्याकुल हैं मानों जनकपुर में या समय करुणा और बिरहही ने निवास किया है ॥ १५१ ॥

शुकशारिका जानकी जाये । कनक पींजरन राखि पढ़ाये १
ब्याकुल कहहिं कहां बैदेही । सुनिधीरज परिहरै न केही २
भये बिकलखगमृगयहिं भांती । मनुज दशाकैसे कहिजाती ३
बंधु समेत जनक तब आये । प्रेमउमगि लोचन जल छाये ४
सियहिं बिलोकि धीरता भागी । रहे कहावत परम बिरागी ५
लीन्ह राउउर लाइ जानकी । मेटिमहा मर्य्याद ज्ञानकी ६

समुझावत सबसचिव सयाने। कीन्हबिचार अनवसर जाने ७
बारहिं बार सुता उरलाई। सजि सुन्दर पालकी मंगाई ८
दो० प्रेमबिबश परिवार सब जानिसुलग्न नरेश।
कुंवरि चढ़ाईं पालकिन सुमिरे सिद्धिगणेश ॥ १५२ ॥

जो शुक और शारिका सीता ने पाले रहें और जिन को सुवर्ण के सुन्दर पींजरोमें राखिकर पढ़ाया रहे १ सो महाब्याकुल पुकारते हैं कि सीते हम को कहां छोड़े जाती हो ऐसे बचन सुनते भला किस को धीरज त्यागन करै २ जहां खग मृग ऐसे ब्याकुल हैं तहां मनुष्य की दशा कैसे कही जाती है ३ ताही समय भाई कुशध्वज समेत राजा जनक तहां आये उनके भी प्रेम की उमंग से नेत्र जल से छागये ४ सीता को देखते ही धीरता जाती रही यद्यपि परम बिरागी वीतराग भी कहावते रहे ५ राजा जनक ने जानकी को अपने ज्ञान बैराग का फल जानि कर हृदय से लगा लिया ज्ञान की महामर्य्याद को भी मेटिकर। क्योंकि सीता राम दोनो ज्ञान ज्ञेय हैं ज्ञान इन की प्राप्ति का साधन है और सीता रामपरम फल हैं ६ जब मंत्रियों ने राजा को समुझाया तब तो प्रेम बढ़ाने का समय न जानिकर धीरज किया ७ बारबार और पुत्रियों को भी मिलिकर सुन्दर पाल की मंगाई ॥ ८ ॥ ता समय प्रेम के बश सब परिवार होरहाहै और यात्रा की शुभलग्न जानिकर राजा ने सब कुमारियों को पालकियों में सिद्धि गणेश मनाकर चढ़ाया ॥ १५२ ॥

बहु बिधि भूप सुता समुझाईं। नारिधर्म कुलरीति सिखाईं १
दासी दास दिये बहुतेरे। शुचिसेवक जे प्रिय सियकेरे २
सीयचलत ब्याकुल पुरबासी। होहिं सगुण शुभमंगल राशी ३
भूसुर सचिव समेत समाजा। चले संग पहुंचावन राजा ४
समय बिलोकि बाजने बाजे। रथगज बाजि बरातिन साजे ५
दशरथ बिप्र बोलि सब लीन्हे। दानमान परिपूरण कीन्हे ६
चरण सरोज धूरिधरि शीशा। मुदित महीपति पाइ अशीशा ७
सुमिरि गजानन कीन्ह प्रयाना। मंगल मूलसगुण भयेनाना ८
दो० सुरप्रसून बरषहिं हरषि करहिं अप्सरागान।
चले अवधपति अवधपुर मुदितबजाइ निशान ॥ १५३ ॥

बहुत भांति राजा ने पुत्रीं समुझाईं नारिधर्म और कुल की रीतें उन को सिखाईं १ दासी और दास उन की परिचर्य्या को बहुत से दिये जो परम शुचि और सीता के

अतिप्यारे हैं २ सीताके चलते पुरकेलोग तो बड़े व्याकुलहैं और शुभ सगुण महामंगल की राशि होते हैं ३ द्विज देव और मंत्रियों समेत राजा पहुंचाने को साथ चले ४ ४ ऐसा प्रयान समय जानिकर जब बाजे बजे तबतो अपने अपने रथ हाथी घोड़े बरातियों ने सजे ५ ता समय राजा दशरथ ने जनक पुरबासी सब ब्राह्मणों को बुलाइ लिया और दान मान से परि पूर्ण करि दिया ६ और उनके चरण कमलों की रज को शिर पर धारण करि आशीर्बाद पाइ प्रमुदित होगये ७ गजानन देव को सुमिरि कर प्रयान किया ता समय सुन्दर मंगलमूल नाना प्रकार के शुभ सगुण होने लगे ॥८॥ दोहा ॥ देवगण तो हर्षि कर पुष्पबरषाते जाते हैं और अप्सरा गान करती जाती हैं इस प्रकार महाराज अवध पति अति प्रसन्न बाजे बजाइकर श्री अयोध्या को चले ॥ १५३ ॥

नृपकरि बिनय महाजन फेरे। सादर सकल मांगने टेरे १
भूषण बसन बाजिगज दीन्हे। प्रेम पोषि ठाढ़े सब कीन्हे २
बारबार बिरदावलि भाखी। फिरे सकल रामहिं उरराखी ३
बहुरि बहुरि कोशलपति कहहीं। जनकप्रेमबसफिरन न चहहीं ४
पुनिकह भूपति बचन सुहाये। फिरिय महीप दूरिबड़ि आये ५
राउ बहोरि उतरि भये ठाढ़े। प्रेमप्रवाह बिलोचन बाढ़े ६
तब बिदेह बोले करजोरी। बचन सनेह सुधाजनु बोरी ७
करहुं कवनि बिधि बिनय बनाई। महाराज मोहि दीन्हि बड़ाई ८
दो० कोशलपति समधी सजन सनमाने सब भांति।
मिलनि परस्पर बिनय अति प्रीति न हृदय समाति ॥ १५४

राजा ने बड़ी बिनती करिके महाजन कहैं पुर के शिष्टजनों को फेरा और आदर समेत मांगनों को टेरा १ उन को आभूषण, वस्त्र, घोड़े, हाथी दिये और प्रेम से पोषण करिके सब ठाढ़े किये २ सो सब बारंबार राजा की बिरदावली कहि और राम को हृदय में धरिकर घरों को फिरे ३ अब तो बारबार राजा दशरथ कहतेहैं परंतु अति प्रेम के बश जनक फिरा नहीं चाहतेहैं ४ तबतो फिरि दशरथ ने सुहाये बचनोंसे भी कहा कि हे राजन् अबतो आप फिरिये बड़ी दूरि आगये ५ तिसपर भी जब न फिरे तबतो राजा दशरथ उतरि खड़े हुये और दोनों नेत्रों से प्रेम के जल के प्रवाह बढ़े ६ तब तो राजा बिदेह हाथ जोरिकर स्नेह सुधा के साने बचन बोले ७ मैं एक मुख से कौन भांति कहां लगि आपकी बिनती बनाइकर करूं हे महाराज आपने तो मेरे को सब भांति से सदैव को बड़ाकरि दिया है ॥ ८ ॥ तबतो कोशलेंद्र महाराज दशरथ ने अपने सजन समधी को सब भांति से सन्माना और दोनों के

हृदय में परस्पर मिलने और परस्पर बिनती की प्रीति समातीही नहीं है ॥ १५४ ॥

मुनिमंडलिहिं जनक शिरनावा। आशिरबाद सबन सनपावा १
सादर पुनि भेटे जा माता । रूपशील गुण निधिसब भ्राता २
जोरिपंकरुह पाणि सुहाये । बोले बचन प्रेम जनु जाये ३
राम करहुं किहिं भांति प्रशंसा । मुनिमहेश मनमानस हंसा ४
करहिं योग योगी जिहिं लागी । क्रोहमोह ममता मदत्यागी ५
व्यापक ब्रह्म अलख अबिनाशी। चिदानंद निर्गुण गुणराशी ६
मनसमेत जिहि जाननबाणी। तर्किन सकहिं सकल अनुमानी ७
महिमा निगम नेतिकरि कहहीं। जो तिहूं काल एक रसरहहीं ८
दो० नयन बिषय मोकहं भये सो समस्त सुखमूल ।
सबहिं सुलभजग जीव कहंभये ईशअनुकूल ॥ १५५ ॥

राजा दशरथ से मिलिकरजनक ने बशिष्ठादि मुनि मंडली को प्रणाम किया और सब से आशीर्बाद लिया १ तिसपीछे बड़े आदर से रूप शीलगुणों के निधान चारों जामातों को भेटा २ और सुन्दर कमल से सुहाये हाथ जोरि कर प्रेम भरे बचन राम प्रति बोले ३ हे राम मैं आप की प्रशंसा कौन भांति कर सकता हूं आप को तो नारदादि और सनकादि मुनीश्वर और देव देव श्री महादेव अपने अपने हृदय मानसर में हंस की नाईं सदाबसाये रहते हैं ४ आपही की प्राप्ति के लिये क्रोध मोह ममता मदछोड़ि छोड़िकर योगी जन महाकठिन अष्टांगयोग साधते हैं ५ आपही बिश्वब्यापक ब्रह्म अलख अबिनाशी चिदानन्द निर्गुण समस्त सद्गुण सागर हो ६ मन समेत अर्थात् सबइन्द्रियों समेत जिन तुम को बाणी भी नहीं जानसक्ती और सर्बानुमानी भी जिन आप को नही तर्किसक्ते हैं ७ जिन आप की महिमा को स्वयंबेदही नेतिकरि कहते हैं और जो आप तीनों काल में एकही रसरहते हो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सो आप समस्त सुख मूलमेरे को नेत्र गोचर हुये जिनतुम्हारे अनुकूल होने से सबही पदार्थ जीव को सुलभ होजाते हैं ॥ १५५ ॥

सबहिं भांतिमोहिं दीन्हबड़ाई । निजजनजानिलीन्हअपनाई १
होंहिं सहसदश शारद शेषा । करहिं कल्प कोटिनभरि लेषा २
मोर भाग्य राउर गुणगाथा । कहिन सिराहिं सुनहु रघुनाथा ३
मैं मछु कहहुं एक बल मोरे । तुम रीझहु सनेह सुठि थोरे ४
बार बार मांगहुं कर जोरे । मन परि हरे चरण जनि भोरे ५

सुनि बर बचन प्रेम जनु पोषे । पूरण काम राम परि तोषे ६
करिबर बिनयससुर सनमाने । पितु कौशिक बशिष्ठ समजाने ७
बिनती बहुरिभरतसनकीन्ही । मिलिसप्रेम पुनिआशिषदीन्ही ८
दो० मिले लषण रिपु सूदनहिं दीन्हि अशीश महीश ।
भये परस्परप्रेम बश फिरिफिरिनावहिं शीश ॥ १५६ ॥

सोमेरेको तो आपनेसबही भांतिकहैंऐहिक और आमुष्मिक सनातनको बड़ाई दे दीन्ही और अपना खरा खोटो जन जानिकर अपना लिया १ अबतो जो दश सहस्र भी शेष सरस्वती इकट्ठे होकर करोड़ों कल्प भरि के लेखाकरें २ तो भी मेरे भाग्य और आपकी गुण गाथा को नहीं कहिकर पूरा कर सकतेहैं ३ मैं यह कहूं किकर्मोपासना ज्ञान मेसे एक बात का भी मेरे कुछ भी बलहै सो तो एकभी नहींहै आप अपनी अहेतुकी कृपा कटाक्ष के अनुसार थोरेहीप्रेम से रीझि जाते हो ४ मैंतो बारंबार हाथ जोरि कर यही मांगताहूं कि मेरा मन आपके चरणों को भूलिकर कभी न छोड़े ५ ऐसी सनेह सानी राजा की बाणी सुनकर पूर्ण काम राम अघा गये ६ बिनती करिके सन्मान किया पिता बशिष्ठ विश्वामित्र को समान जाने ७ फिरि तो राजा ने बहुत बिनती भरत की करी और मिलिकर आशीर्ब्बाद दिया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ फिर लक्ष्मण और शत्रुघ्न ने मिलिकर राजा को आशीर्ब्बाद दिया और परस्पर प्रेम के बस होकर बारंबास सीश नवाने लगे ॥ १५६ ॥

बार बार करि बिनय बड़ाई । रघुपति चले संग सब भाई १
जनक गहे कौशिक पदजाई । चरण रेणु शिर नयनन लाई २
सुनु मुनीश बर दरशन तोरे । अगमन कछु प्रतीति मन मोरे ३
जो सुखसुयश लोकपति चहहीं । करतमनोरथ सकुचतअहहीं ४
सोसुखसुयशसुलभमोहिं स्वामी । सबबिधितवदरशनअनुगामी ५
कीन्हि बिनय पुनिपुनि शिरनाई । फिरे महीपति आशिषपाई ६
चली बरात निशान बजाई । मुदित छोट बड़ सब समुदाई ७
रामहिं निरखि ग्राम नरनारी । पाइ नयन फलहोहिं सुखारी ८
दो० बीच बीच बर बास करि मग लोगन सुख देत ।
अवध समीप पुनीत दिन पहुंची आइ जनेत ॥ १५७ ॥

इस प्रकार बारंबार राजा जनक की बिनती और बड़ाई करिके रामचन्द्र भाइयें समेत बिदा हुये १ सबसे पीछे अपने परम पुरुष का रूप बिश्वामित्र के चरण राजा

जनक ने जो छुये और उनके चरणों की रज अपने नेत्र और शिर पर धारण कर
कहा २ कि सुनो हे मुनिबर्य्य आप के दर्शनों से तो कुछ भी अगम नहीं है
मेरे मन को तो अति निश्चय है ३ देखो जिस सुख और सुयश को इंद्रादि लोक
पाल भी चाहते हैं और जिसका मनोऽर्थ करते भी अपने को अनधिकारी मानि
कर मनमें सकुचाते हैं ४ सोई सुख सुयश मुझ को सुलभ होगया कि आपके दर्शन
के पिछापेलही चला आया ५ इस प्रकार बिनती करि और बारबार प्रणाम करि के
राजा जनक आशीर्ब्बाद पाकर बिश्वामित्र से भी बिदाहुये ६ अबतो बड़े गहगहे बाजे
बजाकर बरात चली छोटोंसे बड़ों पर्य्यंत समस्त समुदाय प्रसन्न चले जाते हैं ७
मार्ग में ग्रामों के नर नारी राम की सुन्दरता को देखि नेत्रों का फल पाकर सुखी
होते जाते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इस प्रकार बीच बीच में बास करती और मग बासी
लोगों को आनन्ददेती अयोध्या के निकट सुन्दर शुभ दिन शुभ बार नक्षत्र में बरात
आ पहुंची ॥ १५७ ॥ श्री रामायनमोनमः॥

हनेनिशान पणव बहु बाजे । भेरिशंख धुनिहय गज गाजे १
झांझमृदंग डिमि डिमी सुहाई । सरस राग बाजहिं सहनाई २
पुरजन आवत अकनि बराता । मुदित सकल पुलकावलिगाता ३
निजनिज सुन्दर सदनसंवारे । हाट बाट चौहट पुरद्वारे ४
गलीसकल अरगजा सिंचाई । जहं तहं चौके चारु पुराई ५
बनाबजारन जाइ बखाना । तोरण केतु पताक बिताना ६
सफलपुंगिफल कदलि रसाला । रोपेबकुल कदंब तमाला ७
लगेसुभग तरुपरसत धरणी । मणिमय आलबालकल करणी ८
दो० बिबिधि भांतिमंगल कलश गृहगृह रचे संवारि ।
सुरब्रह्मादि सिहांहिं सब रघुबर पुरीनिहारि ॥ १५८ ॥

जब अयोध्या के पास बरात आई तबतो बहुत से निशान कहें नगारे और ढोल बाजने लगे शंख भेरियों की धुनि होने लगी घोड़े हाथी गाजने लगे १ झांझ मृदंग और सुन्दर सुहाई डिमिडिमी बाजने लगी औ उन्हीं की गतिपर रस भरे रसीले राग से सहनाई बाजती आती हैं २ इस प्रकार पुरबासी बरात आवती जानि कर सब आनन्दित होगये और पुलकावली हो आई ३ बड़ी प्रीति से सदा सुहाये सुन्दर अपने अपने घर संवारे हाटैं चौरहे पुरके द्वारसंवारे ४ संपूर्ण गली अरगजा से सिंचाई द्वारद्वार सुन्दर चौकेपुराये ५ बजार जैसा बना है सो तो कहाही नहीं जाता है संपूर्ण तोरणों, केतु, पताकों, बिता नों से छादिया है ६ फल समेत सुपारी, केरे, आम्र बौर, सरी, कदंब, तमालादि मंगल वृक्ष द्वार द्वार प्रतिरोपे गये ७ कैसे सुन्दर वृक्ष लगे हैं

जिनकी शाखापत्र फलों के बोझे से पृथ्वी को छूती हैं और मणि जटित जिनके थावरों की सुन्दर रचना है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ अनेक भांति के मंगल कलश घरघर संवारिकर धरे हैं ब्रह्मादिक देवता भी तो उस समय श्रीअयोध्यामहाराजदशरथ की पुरी को देखिकर सिहाते हैं ॥ १५८ ॥

भूपभवन तिहिं अवसर सोहा । रचना देखिमदन मन मोहा १
मंगलु सगुण मनोहर ताई । ऋद्धि सिद्धि सुखसंपदा सुहाई२
जनु उछाह सब सहज सुहाये । तनुधरिधरि दशरथ गृहआये ३
देखन हेतु राम बैदेही । कहहु लालसा होइ न केही ४
यूथयूथमिलिचलींसुवासिनि।निजछबिनिदरहिंमदनबिलासिनि
सकल सुमंगल सजे आरती । गावहिं जनु बहु बेष भारती ६
भूपति भवन कुलाहल होई । जाइ न बरणि समय सुखसोई ७
कौशल्यादि राम महतारी । प्रेम बिबश तन दशा बिसारी ८

दो० दिये दान बिप्रन बिपुल पूजि गणेश पुरारि ।
प्रमुदित परम दरिद्रजनु पाइपदारथ चारि ॥ १५९ ॥

राजा का घर तो ता समय कैसा सोहता है जिसकी रचना को देखिकर काम का भी मन मोहता है १ मानों संपूर्ण मंगल सगुण और बिश्व की मनोहरता और ऋद्धि सिद्धि सुख संपदा इत्यादि उत्साह ही शरीर धरिधरि कर राजा दशरथ के घर आये हैं २ । ३ क्योंकि सीताराम के बिवाहोत्सव के देखने को कहौ किस को लालसा न होवे ४ यूथों के यूथ मिलिकर सुवासिनी चलीं जो अपनी छबि से मदन बिलासिनी रति को भी निदरतीं हैं ५ समस्त सुमंगलों से आरती सजे हैं और गान करती हुईं कैसे चली आवती हैं मानों सरस्वती ही ने अनेक बेषधारण किये हैं ६ राजा के घर में महाकुलाहल हो रहा है महा आनन्द समय बरणाही नहीं जाता है ७ कौशल्यादिक संपूर्ण राम की माता तो प्रेम के बश अपने अपने शरीरोंही की दशा भूलि गईं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ अनेक भांति के दान ब्राह्मणों को दिये और गणेश पुरारि को पूजिकर कैसी प्रमुदित हैं जैसा परम दरिद्री चारों पदार्थों को पाइकर प्रमुदित होजावै ॥ १५९ ॥

प्रेम प्रमोदबिबशसब माता ।चलहिं न चरणशिथिलसबगाता १
रामदरश हितअति अनुरागीं । परछन साजसजन सब लागीं २
बिबिधि बिधान बाजने बाजे । मंगल मुदित सुमित्रा साजे ३

हरिद दूर्ब दधि पल्लव फूला । पान पुंगिफल मंगल मूला ४
अक्षत अंकुर रोचन लाजा । मंजुल मंजरि तुलसि बिराजा ५
छुहे पुरट घट सहज सुहाये । मदन शकुनि जनु नीड़ बनाये ६
सगुण सुगंधन जाहिबखानी । मंगल सकलसजहिं सबरानी ७
रची आरती बिबिधिबिधाना । मुदित करहिं कल मंगल गाना ८
दो० कनक थार भरि मंगलन कमल करन लिये मात ।
चलीं मुदित परछन करन पुलकि प्रफुल्लित गात ॥१६०॥

प्रेम और आनन्दके वशसब माताओं के चरण नहीं चलतेहैं समस्त अंग शिथिल हैं १ राम के दर्शन के लिये अतिही प्रेम में मग्न परछन का सर्व साज सब रानी सजनेलगीं २ अनेक भांतिके बाजे बजनेलगे समस्त मंगल मुदित मनपरम प्रवीण सुमित्रानेसजे ३ हरिद्र, दूर्ब, दधि, पल्लव, पुष्प, पान, पुंगीफल, अक्षत, अंकुर, रोचनकहैं गोरोचन वा हरिद्रा चूर्ण, लाजा धान की खील, महा मंजुल तुलसी की मंजरी विराजती है ४ । ५ छुहे कहैं हरिद्रादि मंगल द्रव्यों से संस्कृत चित्रित सुवर्ण के सहज सुहाये घट हैं मानों काम पक्षेरू ने अपने बसने को घोंसिलेही बनाये हैं ६ और अनेक प्रकार सगुण सुगन्ध मंगलवस्तु सब रानी सजनेलगीं ७ ऐसी अनेक विधानकी आरती सजी और प्रसन्नमन मंगल गान करनेलगीं॥ ८ । दोहा॥ सुन्दर सुवर्ण के थारोंपर मंगल द्रव्य भरि भरिकर कमलसे उज्ज्वल कोमल हाथों में संपूर्ण माता लिये हुये प्रसन्न मन परछन को चलीं पुलकावली से जिन के गात प्रफुल्लित हो रहे हैं ॥ १६० ॥

धूप धूम नभ मेचक भयऊ । श्रावण घन घुमंड जनु ठयऊ १
सुर तरुसुमनमालबहु बर्षहिं । मनहुं बलाकअवलिमनकर्षहिं २
मंजुल मणि मय बंदन वारे । मनहुं पाकरिपु चाप संवारे ३
प्रकटहिंदुरहिंअटनिपरभामिनि । चारुचपलजनुदमकहिंदामिनि
दुन्दुभि धुनि घन गर्जनि घोरा । याचक चातक दादुर मोरा ५
शुचि सुगंध बहु बषरत बारी । सुखी सकल शशि पुरनर नारी ६
समय जानि गुरुआयसुदीन्हा । पुर प्रवेशरघुकुल मणिकीन्हा ७
सुमिरि शंभुगिरिजागणराजा । मुदित महीपतिसहितसमाजा ८
दो० होहिं सगुण बर्षहिं सुमन सुर दुन्दुभी बजाइ ।
बिबुध बधू नाचहिं मुदित मंजुल मंगल गाइ ॥ १६१ ॥

ता समय तो धूप के धूम को बहुताई से आकाश ऐसा श्याम हो रहा है मानों श्रावण के मेघहीं ने घुमंड किया है १ आकाश तें देव वृक्षोंके पुष्पों की सुन्दर श्वेत माला वर्ष रही हैं सोई मानों बगुलों की पांति श्याम मेघ में शोभा दे रही है २ अति उज्ज्वल श्वेत, पीत, अरुण, हरित, नील मणिन के जो बंदनवारे हैं सोई मानों पाकरिपु इन्द्र ने अपने धनुष उगाये हैं ३ अटाओं पर जो युवती जन बरात को देखने को प्रगटतीं दुरती हैं सोई मानों चंचला चपला सौदामिनी दमकती हैं ४ दुन्दुभियों की जो धुनि है सोई मानों मेघ की गर्ज्जनि महाघोर है याचक जो बिरदावली कहि रहे हैं सोई पपीहे और दादुर मयूर हैं ५ सुन्दर पवित्र सुगन्ध का जो छिरकाव है सोई मानों जल बर्षता है पुर के नर, नारी, औरखेतियों का सुखदायक है ६ ऐसा अति शुभ समय जानि कर जब बशिष्ठ ने अनुशासन दिया तबतो रघुकुल मणि महाराज दशरथ ने पुर में प्रवेश किया ७ श्री शिव पार्वती और गणेश को सुमिरि कर सब समाज समेत राजा परम प्रसन्न चले आते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ता समय सुन्दर सगुण होते हैं और देवता दुन्दुभी बजा कर पुष्प बरषाते हैं देव वधू मंगल गान करिके अति प्रसन्न नाचती जाती हैं ॥ १६१ ॥

मागध सूत बंदि नट नागर । गावहिंयश तिहुं लोक उजागर १
जय धुनि बिमलबेदबरबानी । सुनियदशहुं दिशिमंगलसानी २
बिपुल बाजने बाजन लागे । नभ सुर नगर लोग अनुरागे ३
बने बराती बरणि न जाहीं । महा मुदित मन सुख न समाहीं ४
पुर बासिन तब राउ जुहारे । देखत रामहिं भये सुखारे ५
करहिं निछावरिमणिगण चीरा । बारिबिलोचन पुलकशरीरा ६
आरति करहिंमुदितनरनारी । हरषहिं निरखि कुंवरबरचारी ७
शिविकासुभगउघारि उघारी।देखिदुलहिनि नहोहिं सुखारी ८
दो० यहि बिधि सबहिं देत सुख आये राज दुआर ।
मुदित मातु परछन करहिं बधुन समेत कुमार ॥ १६२ ॥

मागध सूत बंदीजन सुन्दर यश गाते जाते हैं १ जयधुनि और सुन्दर वेदध्वनि दशहूं दिशा में मंगल भरी सुनाई पड़ती है २ अनेक भांति के बाजन बजने लगे ऐसा आनन्द देखि कर आकाश में देवता और नगर में पुरवासी सब प्रेम मग्न होगये ३ बड़े बनाव से बराती बने चले आते हैं महा मुदित हैं जिनके मनमें आनन्द समाताही नहीं है ४ जब राजा ने पुर में प्रवेश किया तबतो पुरबासियों ने राजा को जुहार किया और रामको देखतेही सब सुखी होगये ५ प्रेमके वश सजल नेत्र और रोम हर्ष हो रहा है महामणि वस्त्र निछावरि करने लगे ६ महा मुदित पुरके

नरनारीसब आरती करतेहैं और चारों कुमारोंको देखिकर हर्षित होते हैं ७ युवती जन सुन्दर पालकियों को उघार उघार कर दुलहिनों को देखि देखि सुखी होती हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इस प्रकार सब पुरजनोंको आनन्द देते देते अपने राजद्वार पर आये तबतो महा मुदित बधुन समेत सब कुमारोंको माता परछन करने लगीं ॥ १६२ ॥

करहिं आरती बारहिं बारा। प्रेम प्रमोद कहै को पारा १
भूषण मणि पट नाना जाती। करहिंनिछावरि अगणितभांती २
बधुन समेत देखिसुत चारी। परमानंद मग्न महतारी ३
पुनिपुनि सीयरामछबि देखी। मुदित सफलजगजीवनलेखी ४
सखीसीयमुख पुनिपुनिचाही। गानकरहिं निजसुकृतसराही ५
बरषहिंसुमन छनहिंछन देवा। नाचहिं गावहिं लावहिंसेवा ६
देखि मनोहर चारिहुं जोरी। शारद उपमा सकल ढंढोरी ७
देत न बनी निपट लघु लागी। इकटक रहीं रूप अनुरागी ८
दो० निगम नीति कुलरीति करि अर्घ पांवड़े देत।
बधुनसहित सुत परछि सब चलींलिवाइ निकेत ॥ १६३

जिस प्रेम प्रमोद से माता बारंबार आरती करती हैं उस प्रेम प्रमोद को कौन कहि सकता है १ अगणित भांति के भूषण बस्त्र मणि गण जाति जाति के निछावरि करती हैं २ बधुन समेत चारों पुत्रों को देखि कर परमानन्द में मग्न सबमाता होरही हैं ३ फिरि बारंबार सीता राम की छबि को देखि देखि अधिक मुदित होती हैं और जग में अपने जीवन को सफल मानती हैं ४ सखी सीता के मुख को बार बार देखि देखि कर गान करती हैं और अपने संचित प्रारब्ध क्रियमान सुकृतों को सराहती हैं ५ क्षणक्षण प्रति देवता पुष्प बरषाते और आनन्द मग्न नाचते गातेसेवा जनावते हैं ६ सुन्दर मनोहर चारों जोड़ियों को देखि कर सरस्वती ने तो समस्त बिश्व की उपमा ढूंढ़ि डारीं ७ कोई भी देते न बनी सबकी सब अतिही छोटी लगीं तबतो इकटकरूप देखतही रहि गईं ॥८॥ दोहा ॥ वेदरीति, कुलरीति दोनों करि अर्घ पांवड़े देतीहुई बधुन समेत सब पुत्रोंको परछनकरि मंदिरमें लिवाइ ले गईं ॥ १६३ ॥

चारि सिंहासन सहज सुहाये। जनु मनोज निजहाथबनाये १
तिन पर कुंवरि कुंवर बैठारे। सादर पांय पुनीत पखारे २
धूप दीप नैवेद्य बेद बिधि। पूजे बर दुलहिनि मंगल निधि ३
बारहिं बार आरती करहीं। ब्यजन चारु चामर शिर ढुरहीं ४

बस्तु अनेक निछावरि होहीं । भरीं प्रमोद मातु सब सोहीं ५
पावा परम तत्व जनु योगी । अमृत लहेउ जनु संतत रोगी ६
जन्म रंक जनु पारस पावा । अंधहिं लोचन लाभ सुहावा ७
मूक बदन जनु शारद छाई । मानहुं समर शूर जय पाई ८
दो० यहि सुखतें शत कोटि गुण पावहिं मातु अनन्द ।
भाइन सहित बिवाहि घर आये रघुकुल चन्द ॥ १६४ ॥

चारि सिंहासन सहजहीं सुन्दर मानों कामदेव ने अपनेही हाथों से बनाये हैं १ तिन पर चारों बधू और चारों बर बैठारे प्रीति समेत उनके चरण पखारे २ वेद बिधि के अनुसार धूप दीप नैवेद्य इत्यादि से मंगल निधि चारों बर और चारों दुलहिनियों को पूजा ३ बार बार आरती करने लगीं और सुन्दर चमर ब्यजन ढुरने लगे ४ और अनेक बस्तु निछावरि होने लगीं तासमय आनन्द भरीं सब माता कैसी सोहती हैं ५ मानों योगी को परम तत्व ही मिलि गया और असाध्य रोगी ने मानों अमृत पाया ६ जन्म दरिद्री मानों पारस पा गया और अंधे को निर्मल नेत्रोंका लाभ हुआ ७ गूंगे के मुख में मानों सरस्वती ने निवास किया शूरबीर ने मानों संग्राममें बिजय पाई ॥ ८ ॥ इन सब सुखों से सौकरोड़ गुण आनन्द माता पावती हुईं जो भाइयों समेत रघुकुल चंद्र श्रीरामचन्द्र को बिवाहि आया देखाहै ॥ १६४ ॥

देव पितर पूजे बिधि नीकी । पूजी सकल बासना जीकी १
सबहिं बंदि मांगहिं बरदाना । भाइन सहित राम कल्याना २
अंतर हित सुर आशिष देहीं । मुदित मातु अंचल भरि लेहीं ३
भूपति बोलि बराती लीन्हे । यान बसन मणि भूषण दीन्हे ४
आयसुपाइराखिउररामहिं । मुदित गयेसब निजनिजधामहिं ५
पुर नर नारि सकल पहिराये । बाजहिं घर घर अनंद बधाये ६
याचक जन याचहिं जोइ जोई । प्रमुदित राउ देहिं सोइ सोई ७
सेवक सकल बजनियां नाना । पूरण किये दान सनमाना ८
दो० देहिं अशीष जुहारि सब गावहिं गुण गण गाथ ।
तब गुरु भूसुर सहित गृह गमन कीन्ह नरनाथ ॥ १६५ ॥

देव और पितरों को भली बिधि से पूजि कर जी की सब बासना पूर्ण हुईं १ सबको बंदि कर भाइयों समेत राम का कल्याण उनसे बर मांगते हैं २ अंतरिक्षमें छिपे हुये देवता आशीर्ब्बाद देते हैं उसको माता अंचल भरि भरि लेती हैं ३ फिरि

तो राजा ने सब बराती बुला लिये उनको बस्त्र, मणि, भूषण और यान दिये ४ ते सब राजा की आज्ञा पाइ और राम की मनोहर मूर्त्ति को हृदय में धारण करिके सब अपने अपने धाम को गये ५ तो पीछे पुरबासी पहिराये गये घर घर आनन्द बधाये बजने लगे ६ अबतो याचक लोग जोई जोई बस्तु याचना करते हैं सोईसोई राजा उनको देते जाते हैं ७ सेवक और सब प्रकार के बजंत्री लोग दान सन्मान से परिपूर्ण करि दिये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ते सब जुहार करि करि अशीशते और गुण गावते हैं तब गुरु और ब्राह्मणों समेत राजमंदिर को राजा पधारे ॥ १६५ ॥

जो बशिष्ठ अनुशासन दीन्हा । लोक बेद बिधि सादर कीन्हा १
भूसुर भीर देखि सब रानी । सादर उठीं भाग बड़ जानी २
पांय पखारि सकल अन्हवाये । पूजि भली बिधि भूप जिंवाये ३
आदर दान प्रेम परितोषे । देत अशीष चले मन तोषे ४
बहु बिधि कीन्ह गाधिसुत पूजा । नाथ मोहिं सम धन्य न दूजा ५
कीन्ह प्रशंसा भूपति भूरी । रानिन सहित लीन्ह पग धूरी ६
भीतर भवन दीन्ह बर बासू । मन जुगवत रह नृप रनिवासू ७
पूजे गुरु पद कमल बहोरी । कीन्ह बिनय बहु प्रीति न थोरी ८
दो० बधुन समेत कुमार सब रानिन सहित महीश ।
पुनि पुनि बंदत गुरु चरण देत अशीष मुनीश ॥ १६६ ॥

तहां जो बशिष्ठ ने अनुशासन दिया सो सब लोक वेद बिधि के अनुसार राजा ने प्रीति समेत किया १ घर में ब्राह्मणों को आया देखि कर संपूर्ण रानी अपना बड़ा भाग्य जानि कर उठीं २ उन सबको चरण प्रक्षालन करिके स्नान करवाये और पूजन करिके भली बिधि से राजा ने जिंवाये ३ आदर, दान, प्रेम से पोषण किये सो सब संतोष पाकर अशीष देते हुये चले ४ फिरि अनेक भांति से विश्वामित्र का पूजन किया और कहा कि हे नाथ आपही की कृपा से आज मेरे समान दूसरा धन्य कोई नहीं है ५ इस प्रकार राजा ने प्रशंसा की और रानियों समेत उनके चरणोंकी रज शिर पर रक्खी ६ और भीतर भवनहीं में उनको निवास दिया तहां राजा और सब रानी उनके मनहीं को देखते रहे ७ तिस पीछे गुरु बशिष्ठ का पूजन किया और बड़ी प्रीति से बिनती की ॥ ८॥ दोहा ॥ बधुन समेत तो चारों पुत्र और रानियों समेत राजा बार बार गुरुके पैरों परते हैं और गुरु अशीष देते हैं ॥ १६६ ॥

बिनय कीन्ह उर अति अनुरागे । सुत संपदा राखि सब आगे १
नेग मांगि मुनि नायक लीन्हा । आशीर्बाद बहुत बिधि दीन्हा २

धरि रामहिं सीय समेता। हर्षि कीन्ह गुरु गमन निकेता ३
बिप्र बधू कुल बृद्ध बुलाईं। चीर चारु भूषण पहिराईं ४
बहुरि बुलाइसुवासिनिलीन्ही। रुचि बिचारिपहिरावनि दीन्ही ५
नेगी नेग योग सब लेहीं। रुचि अनुरूप भूप मणि देहीं ६
प्रिय पाहुने पूज्य जे जाने। भूपति भली भांति सनमाने ७
देव देखि रघुबीर बिवाहू। बर्षि प्रसून प्रशंसि उछाहू ८

दो० चले निशान बजाइ सब निज निज पुर सुख पाइ।
कहत परस्पर राम यश हर्ष न हृदय समाइ॥ १६७॥

तिस पीछे समस्त संपदा पुत्रों समेत गुरुके आगे धरिदी और बड़े प्रेम से बिनती की १ बशिष्ठ मुनि ने अपना नेग मांगि लिया और राजा को आशीर्बाद दिया २ राम की सीता सहित सुंदर मूर्ति हृदय में धरि के आनन्द समेत घरको गये ३ फिरि बिप्र बधू और कुल बृद्ध सब बुलाईं सुन्दर बस्त्र भूषणों से पहिराईं ४ तापीछे सुवासिनी बुलाईं उनकी रुचिके अनुरूप पहिरावनि पहिराई ५ नेगी लोग नेग योग में जो जो मांगते हैं प्रसन्न मन राजा सोई सोई सबको देते हैं ६ जो राजा ने अपने पूज्य पाहुने जानें सो सब भली भांति से सन्माने ७ देवता श्री रामचन्द्र के बिवाह को देखि पुष्पों की वर्षा करि और राम के बिवाह के उछाह की प्रशंसा करि ॥ ८ ॥ दोहा ॥ निशान बजाते हुये अपने अपने लोकों को चले जाते हैं परस्पर रामयश कहते जाते हैं हर्ष हृदयमें नहीं समाता हैं॥ १६० ॥

सबबिधि सबहिं समदि नर नाहू। रहाहृदय भरिपूरि उछाहू १
जहं रनिवास तहां पगु धारे। सहित बधूटिन कुंवर निहारे २
लिये गोद करि मोद समेता। कोकहि सकै भयउ सुख जेता ३
बधू सप्रेम गोद बैठारी। बार बार उर लाइ दुलारी ४
देखि सिहात सकल रनिवासू। सबके उर आनन्द हुलासू ५
कहेउभूप जिमि भयउ बिवाहू। सुनि सुनि हर्षहोत सबकाहू ६
जनक राज गुण शील बड़ाई। प्रीति रीति संपदा सुहाई ७
बहुबिधिभूप भाटजिमि बरणी। रानीसब प्रमुदितसुनिकरणी ८

दो० सुतन समेत नहाइ नृप बोलि लिये गुरु ज्ञाति।
भोजन कीन्ह अनेक बिधि घरी पांच गइ राति॥ १६८॥

सब प्रकार सबको समदि कर राजा के हृदय में आनन्द भरि पूरि छा रहा १ अबतो जहां रनिवास है तहां को चरण धारे और जाकर बधूटियों समेत चारोंपुत्र निहारे २ बड़े आनन्द समेत जब गोद में चारों पुत्र बैठारे ता समय जितना सुख राजा को हुआ उसको कौन कहि सकता है ३ फिरि चारों पुत्रबधू प्रेम समेतगोद में बैठारीं और बारंबार हृदयसे लगा कर दुलारीं ४ यह बिनोद देखिकर सब रानी ऐसी सिहाती हैं मानों इनके हृदय में आनन्दहो ने निवास किया है ५ तब तो राजा ने जिस करणी करतूति से बिवाह हुआ सो सब रानियों से कहा सो सुनि सुनि कर सब आनन्द होने लगीं ६ जनक राजा के गुण शील और प्रीति की रीति और सुन्दर संपदा की बड़ाई अनेक भांति राजा ने भाट की नाईं बर्णन करी सो सब राजा जनक की करणी को सुनि कर रानी आनन्दित होतीं हैं ७। ८ दोहा तिस पीछे पुत्रों समेत राजा ने स्नान किया और अपने गुरु ज्ञातिओं बुलाकर अनेक भांति से भोजन किया इतने में पांच घरी रात्रि व्यतीत हुई ॥ १६८ ॥

मंगलगान करहिंबर भामिनि । भइसुखमूल मनोहरयामिनि १
अचै पान सब काहुन पाये । मृगसुगन्ध भूषण छबि छाये २
रामहिं देखि रजायसु पाई । निजनिज भवन चले शिर नाई ३
प्रेम प्रमोद बिनोद बड़ाई । समय समाज मनोहरताई ४
कहि न सकहिं शत शारद शेषू । वेद बिरंचि महेश गणेशू ५
सोमैंकहौं कवनिबिधि बरणी । भूमिनाग शिरधरहिंकिधरणी ६
नृप सब भांति सबहिंसनमानीं । कहि मृदु बचनबुलाईं रानीं ७
बधू लड़िकिनी पर घर आईं । राखेहु नयन पलक की नाईं ८
दो० लरिका श्रमित उनींद बश शयन करावहु जाइ ।
अस कहि गे बिश्राम गृह राम चरण चितलाइ ॥ १६९

जबतें समय सुन्दर भामिनी मंगलगान करती हैं ता करिके मनोहर रात्रि सुखमूल होरही हैं १ फिरि आचमन करिके सबने पान पाये माला, सुगन्ध, आभूषण की छबि से छागये २ राम का मनोहर रूप देखि राजा की आज्ञा पाइ अपने अपने धाम को गये ३ श्री रामचन्द्र के बिवाह के प्रेम, प्रमोद, बिनोद, बड़ाई और समय समाज की मनोहरताई को तो अनन्त शारदा शेष वेद ब्रह्मा महादेव गणेशभी नहीं कहि सकते हैं ४ । ५ तिसको भला मैं कैसे कहि सकता हूं भूमिनाग कहैं प्राकृत सर्प भी कहीं पृथ्वी को धारण कर सकते हैं ६ राजा ने सब भांति सब का सन्मान करिके कोमल बचनों से रानियों को बुलाकर कहा ७ देखो ये बधू अभी लड़िकिनी हैं घरतें प्रथमहीं माता पिता को छोड़ि परघर आई हैं इनको नयन पलककी नाईं राखो ॥ ८ ॥

दोहा ॥ लड़िका भी श्रमित उनींदे हैं इनको भी शयन कराओ। ऐसे कहि कर आप श्री राम चरण में चित्त लगा कर विश्राम घर को गये ॥ १६९ ॥

भूपबचन सुनिसहज सुहाये । जटितकनक मणिपलंगडसाये १
सुभग सुरभि पय फेनुसमाना । कोमल कलित सुपेती नाना २
उप बरहणबर बरणि नजाहीं । सृगसुगन्ध मणिमंदिर माहीं ३
रतन दीप सुठि चारु चंदोवा । कहत न बनैजान जिहिंजोवा ४
सेज रुचिर रचि राम उठाये । प्रेम समेत पलंग पौढ़ाये ५
आज्ञापुनि पुनिभाइनदीन्ही । निजनिजसेज शयनतिनकीन्ही ६
देखि श्याम मृदुमंजुल गाता । कहहिं सप्रेम बचन सबमाता ७
मारग जात भयावनि भारी । किहिं बिधि तात ताड़का मारी ८
दो० घोर निशाचर बिकट भट समर गनैं नहिं काहु ।
मारे सहित सहाय किमि खल मारीच सुबाहु ॥ १७० ॥

ऐसे सहज सुहाये राजा के बचन सुनि कर रानियों ने कनक मणिजटित सुन्दर पलंग बिछवाये १ तिन पर सुन्दर पयफेन के समान अति कोमल सुपेती उज्ज्वल तोसकें बिछाईं २ तिन पर सुन्दर उपबरहण तो बरणेही नहीं जाते हैं और मणि मन्दिर में पुष्प मालाओं की सुगन्ध होरही है ३ रत्नो के दीपकों का जहां प्रकाश होरहा है अति सुन्दर चंदोवा लगे हैं जिसने देखा है सोई उस शोभाको जानता है कहा नहीं जाता है ४ तहां अति रुचिर सेज रचि कर रामको उठाय बड़े प्रेम समेत पलंग पर पोढ़ाया ५ जब रामने बार बार भाइयों को आज्ञा दी तब उन्होंने भी अपनी अपनी सेजों पर शयन की ६ तबतो अति सुकुमार रामका सुन्दर श्यामल कोमल अंग देखि कर बड़े प्रेम समेत माता पूंछती हैं ७ कि मार्ग जात में महा भारी भयानक ताड़का हे तात तुमने कैसे मार ली ॥ ८ ॥ दोहा ॥ महाघोर राक्षस बड़े बिकट योधा जो युद्ध में किसीको गनतेही नहीं रहें ते महाबल मारीच और सुबाहु तुमने सेना समेत कैसे मारि लिये ॥ १०० ॥

मुनि प्रसाद बलि तात तुम्हारे । ईश अनेक करवरे टारे १
मख रखवारी करि दोउ भाई । गुरु प्रसाद सब बिद्या पाई २
मुनि तिय तरी लगत पग धूरी । कीरति रही भुवन भरिपूरी ३
कमठ पीठि पवि कूट कठोरा । नृप समाज महं शिवधनुतोरा ४
बिश्व बिजय यश जानकिपाई । आये भवन ब्याहि सब भाई ५

सकल अमानुष कर्म तुम्हारे । केवल कौशिक कृपा सुधारे ६
आज सफल जग जन्म हमारा । देखितात बिधुबदन तुम्हारा ७
जे दिन गये तुमहिं बिनु देखे । ते बिरंचि जनि पारहिं लेखे ८
दो० राम प्रतोषी मातु सब कहि बिनीत बर बयन ।
सुमिरि शंभु गुरु बिप्र पद किये नींद बस नयन ॥ १७१

मुनि बिश्वामित्र के अनुग्रह से बलि जांइ हे तात ईश्वर ने तुम्हारी अनेक कर यें कहें सैकड़ों बिपत्तियांटारि दीं १ फिरि गुरुकी कृपा से बला अति बला सबबिद्या पाकर दोनों भाइयों ने यज्ञकी रक्षा करी २ गौतम मुनि की पत्नी अहल्या तुम्हारे चरणों की रज लगतेही तरि गई यह पावन कीर्ति तुम्हारी सब लोकों में भरि गई ३ धरणीधर कमठ की पीठि और बज्र के पर्बत के समान महा कठोर शिव का धनुष तुमने राज समाज में तोरि गेरा ४ जिसके तोरने से बिश्व बिजय यश के समेत जानकी पाई और बड़े उछाह समेत चारों भाई ब्याहि आये ५ ये सब अमानुष कहें अति मानुष तुम्हारे कर्म केवल बिश्वामित्र की कृपाही ने सुधारि दिये ६ हमारा तो संसार में आज सफल जन्म हुआ है हे तात तुम्हारा चन्द्र बदन देखि कर ७ जे दिन हमको तुम्हारे बिना देखे बीते हैं उनको दैव हमारी आयु के लेखे में न डारै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसे सुन्दर माताओं के सप्रेम बचन सुनिकर रामने उनको अति बिनीत सुन्दर बचन कहि कर परितोष किया और शिव गुरु ब्राह्मणोंके चरणों का स्मरण करिके सो गये ॥ १७१ ॥

नींदहु बदन सोह सुठि लोना । मनहु सांझ सर सीरुहसोना १
घर घर करहिं जागरण नारी । देहिं परस्पर मंगल गारी २
पुरी बिराजति राजति रजनी । रानी कहहिं बिलोकहुसजनी ३
सुन्दरिबधुन सासु लैसोईं । फणिकिन्हजनु शिरमणिउरगोई ४
प्रात पुनीत काल प्रभु जागे । अरुण चूड़बर बोलन लागे ५
बंदी मागध गुण गण गाये । पुर जन द्वार जुहारन आये ६
बंदि बिप्रसुर गुरुपितु माता । पाइ अशीष मुदित सब भ्राता ७
जननिन सादर बदन निहारे । भूपति सहित द्वार पगु धारे ८
दो० कीन्ह शौच सब सुभग शुचि सरित पुनीत नहाइ ।
प्रात क्रिया करि तात पहं आये चारों भाइ ॥ १७२ ॥

नींद में भी सुन्दर सलोना रामका मुख कैसा सोहता है मानों संध्याकाल में

अरुण कमलही सोहता है १ अबतो अयोध्या में घरघर युवती जन जागरण करती हैं और परस्पर मंगल गारी देती हैं २ तातें समस्त अयोध्यापुरी और सुन्दर रात्रि दोनों महाशोभा देरही हैं सो देखिकर रानी कहती हैं हे सखियों देखो तो कैसी सुहावनी राति है ३ सुन्दर बधूटियों को लेकर सासु कैसे सोई है मानों नागिनियों ने शिरकी मणि हृदय में छिपा ली है ४ प्रातं अरुणोदय पुनीत बेला में जब अरुण चूड़ बोलने लगे तब रामचन्द्र जगे ५ ता समय बंदी, मागध गुण गाने लगे औरपुरजन जुहारने को आये ६ ता समय चारों भाई द्विज, देव, गुरु, माता, पिताको अभिबंदन करि अशीष पाइ प्रसन्न होगये ७ माताओं ने उनके सुन्दर मुख देखे राजा समेत द्वार बाहर आये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ समस्त शौच क्रिया करिके परम पावन सरयू में स्नान किये फिरि प्रात क्रिया करिके पिताके पास चारों भाई आये ॥ १७२ ॥

भूप बिलोकि लिये उर लाई। बैठे हर्षि रजायसु पाई १
देखि राम छबि सभा जुड़ानी। लोचन लाभ अवधिअनुमानी २
पुनि बशिष्ठ मुनिकौशिक आये। सुभग आसन न मुनिबैठाये ३
सुतन समेत पूजि पद लागे। निरखि राम दोउगुरु अनुरागे ४
कहहिं बशिष्ठ धर्म इतिहासा। सुनहिं महीपसहितरनिवासा ५
मुनिमनअगमगाधिसुत करणी। मुदितबशिष्ठबिपुलबिधिबरणी ६
बोले बामदेव सब सांची। कीरति कलित लोक तिहुं मांची ७
सुनि आनन्द भयउ सब काहू। राम लषणउरअधिकउछाहू ८
दो० मंगल मोद उछाह नित जाहिं दिवस इहि भांति।
उमगिअवधआनन्दभरि अधिक अधिकअधिकाति॥ १७३

राजा ने देखि कर हृदय से लगा लिये और पिताकी आज्ञा पाकर राजसभा में बैठे १ रामकी छबिको देखि कर संपूर्ण सभा शीतल हृदय होगई और राम दर्शन ही को नेत्रों के लाभकी अवधि जानी २ फिरि बशिष्ठ और कौशिक मुनि दोनों आये राजा ने उत्तम आसनों पर बैठाये ३ पुत्रों समेत उनका पूजन किया दंडवत प्रणाम किया रामको देखि दोनों गुरु प्रेम परिपूर्ण होगये ४ बशिष्ठ मुनि बेदपुराण और धर्म इतिहास बांचते हैं राजा रनिवास में सुनते हैं ५ मुनीश्वरों के मनको भी अगम बिश्वामित्र की करणी प्रसन्न मन बशिष्ठ ने अनेक भांतिसे बरणी ६ बामदेव ने कहा सब सत्य है इनकी उज्ज्वल कीर्ति तीनों लोक में बिदित है ७ सुनि कर आनन्द तो सबही को हुआ परंतु राम लक्ष्मण को तो बड़ाही उछाह हुआ ॥ ८ ॥ दोहा इसी भांति मंगल आनन्द उछाह समेत दिन राति सबको नित्य बीततीहैं समस्त अयोध्या आनन्दसे उमगिकर अधिक अधिक बढ़तीही जातीहै १७३

बिश्वामित्र चलन नित चहहीं । राम सप्रेम बिनयबश रहहीं १
दिन दिन शतगुण भूपतिभाऊ । देखि सराहिमुदित मुनिराऊ २
मांगत बिदा राउ अनुरागे । सुतन समेत ठाढ़ भे आगे ३
नाथ सकल संपदा तुम्हारी । मैं सेवक समेत सुत नारी ४
करहु सदा लरिकन पर छोहू । दर्शन देत रहेहु नित मोहू ५
अस कहि राउसहित सुतरानी । परेचरण मुखआव न बानी ६
दीन्हिअशीष बिप्र बहुभांती । चले न प्रीति रीति कहिजाती ७
राम सप्रेम संग सब भाई । आयसु पाइ फिरे पहुंचाई ८

दो० राम रूप भूपति भगति ब्याह उछाह अनंद ।
जातसराहत मनहिं मन मुदितगाधिकुलचंद ॥ १७४ ॥

बिश्वामित्र दिनदिन प्रति चला चाहते हैं परंतु रामकी सप्रेम बिनती को सुनि सुनि करि रहिजाते हैं १ दिन दिन प्रति सोगुण राजा का भाव बढ़ताही जाताहै सो देखिकर महामुनि राज बिश्वामित्र मनहीं मन सराहते हैं २ निदान जब बिदाही मांगी तबतो राजा प्रेमाकुल होगये पुत्रों समेत ठाढ़े होकर बोले ३ हेनाथ यह सब संपदा आपकी है मैंतो आप का पुत्र कलत्र समेत सेवक हूं ४ सदा इन बालकों पर छोह करते रहना और मेरे को भी सदा दर्शन देते रहना।५ ऐसे कहिकर राजा चारों पुत्र और रानियों समेत मुनिके चरणों पर गिर पड़ा और मुख से कुछ भी बचन नहीं आया ६ बिश्वामित्र राजा को अनेक भांति आशीर्ब्बाद देकर बिदा हुये सो प्रीतिकीरीति कही नहीं जाती है ७ रामचंद्र सब भाइयों समेत बहुत दूरि पहुंचाइ आज्ञा पाकर फिरि आये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ मार्ग में गाधिकुल चंद्र बिश्वामित्र रामका मनोहर रूप, राजा दशरथ की भक्ति और व्याहका उछाह और आनंद सबको मनहींमन सराहतें परम प्रसन्न चले जाते हैं ॥ १७४ ॥

बामदेव रघुकुल गुरु ज्ञानी । बहुरि गाधि सुत कथा बखानी १
सुनिसुनि सुयश मनहिंमनराऊ । बरणत आपन पुण्यप्रभाऊ २
बहुरे लोग रजायसु भयऊ । सुतन समेत नृपति गृहगयऊ ३
जहंतहं रामब्याह यशगावा । सुयश पुनीतलोक तिहुंछावा ४
आये राम ब्याह गृह जबतें । बसे अनंद अवध सब तबतें ५
प्रभु बिवाह जस भयउ उछाहू । सकैंन बरणि गिरा अहिनाहू ६

कबि कुल जीवन पावन जानी । राम सीय यश मंगल खानी ७
तातें मैं कछु कहा बखानी । करन पुनीत हेतु निज बानी ८
छं० निज गिरा पावन करनकारण रामयश तुलसी कहा ।
रघुबीर चरित अपार बारिध पार कवि कौने लहा ॥
उपवीत व्याह उछाह मंगल सुनहिं सादर गावहीं ।
बैदेहि राम प्रसाद ते जन सर्बदा सुख पावहीं ॥ ७ ॥
सो० सिय रघुबीर बिवाह जे सप्रेम गावहिं सुनहिं ।
तिनकहं सदाउछाह मंगलायतन राम यश ॥ १७५ ॥

वामदेव और बशिष्ठ मुनि ने राज सभा में बैठि कर फेरि बिश्वामित्र की कथा कही १ उनके सुयश की महिमा को सुनिसुनि कर राजा दशरथ मनहीं मनमेंअपने पुण्यके प्रभाव की बर्णन करते हैं २ फिरि तो राजा की आज्ञा हुई सब लोग अपने अपने घरों को गये और चारों पुत्रों समेत राजा भी राज मंदिर को पधारे ३ इस प्रकार राम के ब्याह का यश जहां तहा गाया गया और यह परम पावन सुयश तीनों लोकों में छागया ४ जब से राम ब्याहिकर घर आये तबतें समस्त आनन्द श्रीअयोध्या में आ बसे ५ प्रभु रामचंद्र के बिवाह में जैसा कुछ उछाह हुआ है तैसा तो स्वयं सरस्वती और शेष भी नहीं कहि सकते हैं मेरी कौन सामर्थ्य है ६ कबि जनों के कुलके जीवन का पावनकारी समस्त मंगल की खानि सीताराम के सुयश को जानि कर ७ मैंने भी अपनी बाणी के पवित्र करने के निमित्त यथामति कुछ बखानि कर कहा है ८ ॥ छन्द ॥ अपनी बाणीके पवित्र करने के लिये यह रामयश तुलसीदास ने कहाहै और रामचरित्र तो अपार समुद्र है उसका पार कौनसे कबिने पाया है यज्ञोपवीत पर्य्यंत तो जन्म महोत्सव और बिवाहके मंगल उछाह को जो प्रीति समेत गाते सुनते हैं सीताराम जीकी कृपा से ते मनुष्य सर्बदा सुख पाते हैं ॥ ७ ॥

श्रीसीतारामकेबिवाहकोजोमनुष्यप्रेमसमेतगाववासुनतेहैंउनकोतोसर्बदाउछाह.
मंगलहीरहताहैक्योंकिरामयशतोमंगलभवनहीहै ॥ १७५ ॥

श्लोक

मंगलंभगवान्बिष्णु:मंगलंगरुड़ध्वज: । मंगलंपुंडरीकाक्ष:मंगलायतनोहरि: ॥

इति शुकदेव भणित मानसहंस नाम भूषण बालकांड संपूर्ण शुभं ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

अथ तुलसीदासकृत रामायण अयोध्याकाण्डसटीकलिख्यते ॥

श्लोक कौशल्योदधिसंभवं दशरथप्राणप्रियं जीवनं ।
सीतानेत्रचकोरमोदनकरं भूतिप्रमोद प्रदं ॥
भक्तानांहृदयांबरेसमुदितं शालिप्रजापोषकं ।
भक्तानंदसुधाकरं सुविमलं श्रीरामचंद्रंभजे ॥

दो० प्रफुलित भयउ न राज रबि बंन शशि तेन मलान ।
मुख सरोज श्री राम कर मंगल मोद निधान ॥ १ ॥

यह अयोध्याकाण्ड रामचरित्रमानस का दूसरा सोपान है इसको गुसाईं जी मे बड़े क्रमकेसाथरचाहै कि आठ आठ चौपदियों की एक एक चौपाई कहीं और पचीश पचीश चौपाइयोंके पीछे एक एक हरिगीत छन्द कहा है छन्द छन्दमें अपना नाम जतायाहै चौपाई चौपाई पीछे एक एक एक दोहा है छन्द छन्द पीछे एक एक सोरठ है सब कांड में तेरह २ चौपाइयों की पचीशी हैं इस कारण इसमे ३२५ चौपाई और ३५३ दोहे १३ छन्द १३ सोरठे हैं और इस कांडकी अति मनोहक ललित काव्य नवरस रूपक अलंकारादि समेत बड़े बिस्तारसे दिखाई है ऐसे एहे से क्रम समेत और कोई कांड नहीं है हां बालकांड में केवल सीता स्वयम्बरही है. कथा इस कांड में इतनी कही है ॥ प्रथम राम अभिषेक प्रसंगा ॥ पुनि नृप बचन राज रसभंगा ॥ पुरबासिन करबिरहबिषादा । बहुरिरामलक्ष्मण संबादा ॥ बिपिनिगमन केवटअनुरागा । सुरसरिउतरि निवासप्रयागा ॥ बाल्मीकिप्रभु मिलनबखाना । चित्रकूट जिमिबस भगवाना ॥ सचिवागमन नगरनृपमरणा । भरतागमनप्रेम बहुबरणा ॥ करिनृप क्रियासंगपुरबासी । भरतगयेजहं प्रभुसुखरासी ॥ पुनिरघुपति बहुबिधि समुझाये । लै पादुकाअवधपुरआये ॥ अंत में भरत का नन्दिग्राम में निवास और भरत की रहनि है इस कांड की कठिन काव्य होने से कोई छेपक भी विशेष नहीं करि सका है

बामांकेचबिभातिभूधरसुतादेवापगामस्तके ।
भालेबालबिधुर्गलेचगरलंयस्योरसिव्यालराट् ॥

सोयंभूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा ।
शर्वःसर्वगतः शिवः शशिनिभः श्रीशंकरःपातुमां ॥ १ ॥
प्रसन्नतांयोनगतोभिषेक तस्तथान मम्लौबनबासदुःखतः ।
मुखांबुजंश्रीरघुनंदनस्यमेसदास्तुतन्मंजुलमंगलप्रदम् ॥ २ ॥
नीलांबुजश्यामल कोमलांगं सीतासमारोपितबामभागं ।
पाणौ महाशायकचारुचापं नमामि रामं रघुबंश नाथं ॥ ३ ॥

अयोध्या कांड के प्रारम्भ में गुसांई तुलसीदास जी इस ग्रन्थ के आचार्य्यबर्य्य श्री शिवजी को प्रणाम करते हैं जिन श्री शिव जी के बाम भाग में तो भूधरसुता श्री पार्वती बिराजती हैं और मस्तक पर देवापगा त्रिबिक्रमचरणसंभूता गंगा सोहती हैं ललाट पर बाल चन्द्रमा है कंठ में हलाहल विष और जिनके हृदय में भुजगराज राजते हैं तेई ये विभूतिभूषण देवोत्तम सब के अधिपति सनातन सर्वरूप सर्वगत कल्याणमूर्त्ति चन्द्रवर्ण श्री शंकर मेरी रक्षा करो १ अब अपने इष्ट देव श्री रामचन्द्र को प्रणाम करते हैं जो श्री राम चन्द्र का मुख कमल राज तिलक से तो कुछ प्रसन्न न हुआ तैसेही वनबास के दुःख से कुछ मलीन नहीं हुआ सोई श्री रघुनन्दन का मुख कमल मेरे को सदा उज्ज्वल मंगल का दाता रहैं २ नील कमल के समान तो जिनका श्यामल कोमल अंगहै और बाम भाग में जगज्जननी श्री जानकी बिराजती हैं हाथोंमें महा कहैं अप्रतिहत शार्ङ्ग धनुष और बाण सोहते हैं ऐसे रघुबंश नाथ श्री रामचन्द्रको मैं प्रणाम करता हूं ॥ ३ ॥

दो० श्रीगुरुचरण सरोजरज निजमनमुकुर सुधारि ।
बरणौं रघुबर बिमल यश जोदायक फलचारि ॥
जब ते राम ब्याहि घर आये । नित नव मंगल मोद बधाये १
भुवन चारिदश भूधर भारी । सुकृत मेघ बरषहिं सुख बारी २
ऋधिसिधि संपतिनदीसुहाई । उमगि अवधि अंबुधिकहंआई ३
मणिगण पुरनरनारि सुजाती । शुचिअमोल सुन्दरसबभांती ४
कहि न जाइ कछुनगर बिभूती । जनु इतनी बिरंचि करतूती ५
सबबिधि सब पुरलोगसुखारी । रामचन्द्र मुखचन्द निहारी ६
मुदित मातु सब सखी सहेली । फलितबिलोकि मनोरथबेली ७
राम रूप गुण शील सुभाऊ । प्रमुदित होंहिं देखिसुनिराऊ ८

दो० सबके उर अभिलाष अस कहहिं मनाइ महेश।
आप अछत युवराज पद रामहिं देहिं नरेश ॥ १ ॥

दोहा ॥ श्रीमान् अपने गुरुदेव के चरणकमलोंकी रजसे अपने मनरूपी दर्पणको निर्मल करके रघुबर श्री रामचन्द्र का परम पावन यश वर्णन करता हूं जो लोक परलोक में अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष चारों फलका दाताहै ॥ चौपाई ॥ जबसे श्रीरामचन्द्रभाइयों समेत बिवाहि कर घर आयेहैं तबसे अयोध्या में नित्य नये मंगल, नित्यनये आनन्द बधाये घर घर होते हैं १ चतुर्दशहूं लोकरूपी पर्वतों में जीवों के पुण्यरूपी मेघ आनन्दही के जल बर्षि रहे हैं २ ताते समस्त ऋद्धि सिद्धि संपति की सुन्दर नदी उन पर्वतों से उमगि उमगि अयोध्या रूपी समुद्रही को आई हैं ३ जिस समुद्र में नर वा नारी जाति जाति के मणिगण भरे हैं जो अति पावन, अमोल सब भांति से सुन्दरहैं ४ नगरकी बिभूति तो कुछ कहने में आतीही नहीं है मानों ब्रह्मा की करतूति इतनीहीहै ५ सब भांति से पुरके समस्तलोग सुखी रहतेहैं रामचन्द्रके मुख चन्द्रमाको सदा देखते हैं ६ कौशल्यादिक माता सखी सहेलियों समेत अपने मनोरथों की बेलियों को फलित देख कर सदा प्रसन्न रहती हैं ७ रामचन्द्र के रूप, गुण शील सुभाव को सबके मुख से सुनि और अपने नेत्रों से देखि कर राजा भी अति प्रसन्न रहते हैं ८ ॥ दोहा ॥ इसी आनन्द में बारह बर्षबीते अबतो सबके मन में यह अभिलाष है सो महेश को मनाकर मांगते कि अपने जीते जी युवराज पदवी राजा दशरथ रामचन्द्र को देवें ॥ १ ॥

एक समय सब सहित समाजा। राजसभा रघुराज बिराजा १
सकल सुकृत मूरति नरनाहू। रामसुयश सुनि अतिहिं उछाहू २
नृपसब रहहिं कृपा अभिलाषी। लोकप रहहिं प्रीतिरुखराखी ३
त्रिभुवन तीनिकाल जगमांही। भूरिभाग दशरथ सम नांही ४
मंगल मूल राम सुत जासू। जोकछुकहिय थोर सबतासू ५
राउसुभाउमुकुरकर लीन्हा। बदन बिलोकिमुकुटसम कीन्हा ६
श्रवण समीप भयेसित केशा। मनहुं जठरपन अस उपदेशा ७
नृप युवराज राम कहं देहू। जीवन जन्म लाहु जग लेहू ८
दो० यह बिचारि उर आनि नृप सुदिन सुअवसर पाइ।
प्रेम पुलकि तन मुदित मन गुरुहिं सुनायउ जाइ ॥ २ ॥

एक समय अपने मंत्री और सेनापतियों समेत अपनी राजसभा में रघुराज श्रीमान्महाराज दशरथराज बिराजे रहें १ समस्त सुकृतों की तो मानों राजा मूर्त्तिही हैं

और तापर रामचन्द्रका सुयश सबके मुखसे सुनि बड़ाही उत्साहमनमें बाढ़रहाहै २ सप्तद्वीप, नव खण्ड के राजा जिनकी कृपाके अभिलाषीही सदा रहते हैं और इन्द्र, बरुण यम कुबेर लोकपाल जिनका रुख राखि कर सदा उनकी प्रीतिही करते हैं ३ त्रिभुवन कहैं स्वर्ग महीतल पाताल पर्य्यन्त तीनों कालमें महाराज दशरथ केसमान बड़भागी न कोईकहीं कभी हुआ न होगा ४ क्योंकि समस्त मंगलों की मूर्त्ति स्वयंहरि रामरूप जिनके पुत्र बने बैठेहैं उनको जो कुछ कहिये सो सब थोराही है ५ सभा में राजा ने सहज स्वभाव दर्पण हाथमें ले लिया मुख देखकर मुकुट सम्हारा ६ मुकुट सम्हारतेही कानों के निकट केश स्वेत हुये देखे मानों बुढ़ापा राजा के कानों में यह उपदेश करताहै ७ कि हे राजन् अबयुवराज पदवी रामको दीजिये और जगमें जीवन जन्मका फल लीजिये ८ अर्थात् अपने को बूढ़ा हुआ जानि कर यह बिचार राजा ने आपही किया ॥ दोहा ॥ फिरि यह बिचार बिचारि कर मनहीं में रहने दिया जब सुन्दर दिन और अवकाश पाया तब प्रेम और आनन्द समेत अपने गुरु बशिष्ठ को जासुनाया ॥ २ ॥

कहेउ भुआल सुनिय मुनि नायक। भये राम सब बिधि सब लायक १
सेवक सचिव सकल पुरबासी। जे हमार अरि मित्र उदासी २
सबहिं राम प्रिय जेहिं बिधि मोही। प्रभु अशीष जनु तनु धरि सोही ३
बिप्र सहित परिवार गुसाईं। करहिं छोह रौरेहि की नाईं ४
जे गुरु चरण रेणु शिर धरहीं। ते नर सकल बिभव बश करहीं ५
मोहिं समान भयो नहि दूजा। सब पायउं पद पावन पूजा ६
अब अभिलाष एक मन मोरे। पूजिहि नाथ अनुग्रह तोरे ७
मुनि प्रसन्न लखि सहज सनेहू। कहेउ नरेश रजायसु देहू ८
दो० राजन राउर नाम यश सब अभिमित दातार।
फल अनुगामी महिप मणि मन अभिलाषतुम्हार ॥ ३ ॥

राजा दशरथ ने कहा हे मुनिनायक महाराज अबतो रामचन्द्र सब भांति से सब लायक हुये १ जितने हमारे सेवक मंत्री और पुरबासी हैं और जो हमारे शत्रु, मित्र, और उदासीन हैं राम सबको ऐसेही प्यारेहैं जैसे मुझको प्यारे हैं मानों आपकी अशीषही शरीर धारण किये सोहती है २।३ और समस्त अयोध्या के द्विज देव परिवार समेत राम पर ऐसा छोह करते हैं जैसा आप करते हो ४ सत्य है जे कोई गुरुदेव के चरणों की रजको शिरपर धारण करते हैं ते मनुष्य समस्त गुण बिभूति को स्वाधीन कर लेते हैं ५ मेरे समान तो मैं जानता हूं कोई दूसर नहीं हुआ है कि मैंने केवल आपही के पावन चरणों की पूजा से समस्त

जन्म लिये के फल पाये ६ अब एकही अभिलाष मेरे मनमें और है सोभी आप के अनुग्रह से पूरी होगी ७ फिर तो गुरुदेव वशिष्ठमुनि को प्रसन्न देखि और अपने पर उनका सहज स्नेह जानि कर राजा ने कहा कि हे महाराज आप इस मेरी अभिलाषा के पूर्ण होने की आज्ञा दीजिये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसे प्रेम भरे राजा के वचन सुन कर वशिष्ठ ने कहा कि हे राजन् जैसा आप का नाम समस्त बांछित फलोंका दात है तैसाही फलों का अनुगामी तुम्हारे मनका अभिलाष है ॥ ३ ॥

सब बिधि गुरु प्रसन्न मन जानी। बोलेउ राउ बिहंसि मृदु बानी १
नाथ राम करिये युवराजू। कहिय कृपा करि करिय समाजू २
मोहिं अछत यह होइ उछाहू। लहहिं लोग सब लोचन लाहू ३
प्रभु प्रसाद शिव सबै निबाहीं। यह लालसा एक मन माहीं ४
पुनि न सोच तनु रहै कि जाऊ। जेहि न होइ पाछे पछिताऊ ५
सुनि मुनि दशरथ बचन सुहाये। मंगल मोद मूल मन भाये ६
सुनु नृप जासु बिमुख पछिताहीं। जासुभजनबिनुजरनिनजाहीं ७
भयउ तुम्हार तनय सोइ स्वामी। राम पुनीत प्रेम अनुगामी ८
दो० बेगि बिलंब न करिय नृप साजिय सकल समाज।
सुदिन सुमंगल तबहिं जब राम होहिं युवराज ॥ ४ ॥

सब प्रकार गुरुको प्रसन्न मन जानकर राजा भी प्रसन्न होकर कोमल बाणी से बोले १ हे नाथ यह मेरी प्रार्थना है कि अब रामचन्द्र को आप युवराज कीजिये जो कृपा करिके आज्ञा देवें तो सब तिलक का समाज संजाया जावे २ मेरे जीते जी यह उत्सव भी हो जावे और सब प्रजा नेत्रों का लाहु लेवें ३ आप के अनुग्रह से शिव जीने मेरी सब निबाहदी है यही एक लालसा मनमें रही है ४ फिर मुझको सोच नहीं है शरीर पंचभौतिक रहे वा न रहे जिससे पाछे को यह पछिताउ नहोय ५ ऐसे सुन्दर सुहाये राजा के वचन बशिष्ठ मुनि सुन कर मंगल और आनन्द के मूल जान कर मनमें अतिही भाये और बोले ६ सुनो हे राजन् जिस अपने प्राणनाथ प्राणपति प्राणदायक सदा संघाती ईश्वरसे जो अभागे जन्म भरि विमुख रहिकर अंत को यमपुर में पछताते हैं और जिसके शरण गये बिना जीवकी जरनि अन्य उपायों से नहीं जाती है रघुपति बिमुख यतन करि कोरी कौनश के भवबंधन छोरी ७ सोई सर्वेश्वर स्वामी तुम्हारा पुत्र राम हुआ है जो केवल प्रेमही का अनुगामी है ॥ ८ ॥ दोहा तातें यह कार्य्य तुम बेगही करो बिलंब मत करो जकर सब साज सजाओ सुन्दर दिन और सुमंगल तभी है जबराम राजा होवें ४ ॥

मुदित महीपति मंदिर आये । सेवक सचिव सुमंत बुलाये १
कहि जय जीवशीश तिननाये । भूपसुमंगल बचन सुनाये २
प्रमुदित मोहिं कहेउ गुरुआजू । रामहिं राजदेहु युवराजू ३
जोपांचहिं मतलागहि नीका । करहु हर्षिहिय रामहिं टीका ४
मंत्रीमुदित सुनत नृपबाणी । अभिमत बिरवपरा जनु पानी ५
बिनती सचिव करहिं करजोरी । जियहुजगतपति बर्षकरोरी ६
जगमंगल भलकाज बिचारा । बेगिहिं नाथ न लाइय बारा ७
नृपहिं मोद सुनिसचिव सुभाषा । बढ़तबिटप जनु लही सुशाषा ८
दो० कहेउ भूपमुनिराज कर जोइजोइ आयसु होइ ।
रामराज अभिषेकहित बेगिकरहु सोइसोइ ॥ ५ ॥

ऐसे मनभावते बशिष्ठमुनि के वचन सुनकर राजा परम प्रसन्न अपने राज मंदिर को आये और अपने मुख्य सेवक और मंत्रियों को बुलाया १ उनसबों ने जयजीव कहि कर शीश नवाये राजा ने बैठतेही मंगल समाचार सुनाये २ कि आज गुरू से प्रसन्न होकर गुरु देव ने कहा है कि हे राजन् अबतुम युवराज पद राम को देओ ३ जो यह मत तुम सबपंचों को अच्छा लगे तो प्रसन्न होकर रामचन्द्र को तिलक कीजिये ४ यह वचन राजा का सुनतेही मंत्री सब प्रसन्न होगये मानों उन के मन बांछित के पौधों में जलसींचिदिया ५ मंत्री सब हाथ जोड़कर कहने लगे कि महाराज आप कोटिवर्षजीवें ६ यह तो जगमंगलदायक कार्य्य आपने भलाविचारा है इस को बिलम्ब न कीजिये बेगिही प्रारंभ कीजिये ७ ऐसी मंत्रियों की सुभाषा सुनिकर राजा को कैसा आनन्द हुआ मानों बढ़ते हुये वृक्ष ने सुन्दर २ शाषा पाई ॥ ८ ॥ दोहा तब तो राजा ने मंत्रियों से कहा कि महाराज मुनिराज की जोजो आज्ञा होवे रामचन्द्र के राजतिलक के लिये सो बेगिही करो ॥ ५ ॥

हर्षिमुनीश कहेउ मृदुबानी । आनहु सकल सुतीरथ पानी १
औषधि मूलफूल फल नाना । कहेउ नामगणि मंगल जाना २
चामर चमर बसनबहु भांती । रोमपाट पट अगणित जाती ३
मणिगण मंगल वस्तु अनेका । जो जगयोग भूप अभिषेका ४
वेदबिहित कहिसकल बिधाना । कहेउरचहु पुर बिबिधि बिताना ५
पनस रसाल पुंगिफल केरा । रोपहु बीथिन पुरचहुं फेरा ६

रचहुमंजु मणि चौके चारू । कहेउ बनावन बेगि बजारू ७
पूजहु गणपति गुरु कुलदेवा । सब बिधिकरहु भूमिसुर सेवा ८
दो० ध्वजपताक तोरण कलश सजहुतुरंग रथनाग ।
शिरधरि मुनिबर बचन सब निजनिज काजहिंलाग ॥ ६ ॥

तबतो वशिष्ठ ने प्रसन्न होकर मंत्रियों से कहा कि प्रथम समस्त तीर्थों का जल लाना चाहिये १ फिरि नाना भांति की औषधियों और मूल, फल, फूलोंके नाम मंगल जानिकर कहिगनाये २ छोटे, बड़े चामर, चमर और बहुत भांतिके तूलवस्त्र रोमवस्त्र, पाटवस्त्र, गनाये ३ माणिक मरकतादि मणिगण औरअनेक मंगल वस्तु जो जग में राज तिलक के योग्य हैं ते सब कहि सुनाये ४ इस प्रकार वेद विहित समस्त बिधान कहिकर कहा कि नगर में द्वार द्वार बितानतनाये जावें ५ और कटहर, आम्र, पूंगीफल, केरों के वृक्ष रोपेजावें ६ गजमुक्तानके द्वार द्वार चौके पूरेजावें और नगर हाटों को शीघ्रबनाया जावें ७ और विनायक गणपति का पूजन करो गुरुजनों को और अपने अपने कुलदेवों का घर घर पूजनकरो और सबभांति से द्विजदेवों की सेवा करो ॥ ८ ॥ दोहा ध्वजा, पताका, तोरण, कलश द्वार द्वार धरेजावें और तुरंग, रथ, हाथी सब सजाये जावें ऐसे बशिष्ठ के बचन सुनकर सब अपनेअपने कामों पर उद्यत होगये ॥ ६ ॥

जोमुनीश जेहिं आयसुदीन्हा । तेहिं सोकाजप्रथमजनुकीन्हा १
बिप्र साधु सुर पूजत राजा । करत राम हित मंगल काजा २
सुनत राम अभिषेक सोहावा । बाजहिं घरघर अवध बधावा ३
रामसीय तन सगुण जनाये । फरकहिं मंगल अंग सोहाये ४
पुलकि सप्रेम परस्पर कहहीं । भरत आगमन सूचक अहहीं ५
भयेबहुत दिन अति अवसेरी । सगुण प्रतीति भेट प्रिय केरी ६
भरत सरिस प्रियकोजगमाहीं । यही सगुण फलदूसर नाहीं ७
रामहिं बंधुसोच दिन राती । अंडन कमठ हृदय जेहिं भांती ८
दो० तेहिं अवसर मंगल परम सुनिहर्षेउ रनिवास ।
शोभित लखि बिधु बढ़तजिमि बारिधबीच बिलास ॥ ७ ॥

वशिष्ठमुनि ने जिस काम करने को जिसको आज्ञा दी रहे उसकाम को उसने ऐसा शीघ्रकिया मानों पहिलेही से करिलिया रहे १ राजा तो द्विजदेव और संतजन और देव पूजन करते हैं और रामके हित समस्त मंगल काज करते हैं २ नगरमें

रामचद्र का राज्याभिषेक सुनकर घर घर बधाव बाजि रहाहै ३ रामचंद्र और सीता
को शकुन जनावने लगे कि दोनों के सुन्दर सुहाये मंगल अंग फरकने लगे ४ तब
तो पुलकित अंग होकर प्रेम समेत दोनों परस्पर कहनेलगे कि ये सुन्दर मंगल शकुन
भरत के आगमन के सूचकहैं ५ बहुतदिन गयेपीछे बीते हैं तातें बड़ी चिन्ता और
मिलने की उत्कंठाहै और शकुनों से भी प्रतीति अपने प्रियतम के मिलनेही कोहोती
है ६ सो भरत समान हमारे दूसरा कौन प्याराहै तातें इन शकुनों का यही फलहै
दूसरा नहीं है ७ देखो राम के भायप भावको कि दिन राति भरतही का सोचकैसा
लगा रहताहै जैसे अंडोंका सोच कछुये का लगा रहताहै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ उसी समय
यह परम मंगल सुनकर रनिवास कैसा हर्षि उठा है जैसा चन्द्रमा को बढ़ता देखि
कर समुद्र की लहरों का बिलास शोभित होता है ९ ॥

प्रथम जाइजेहिं बचन सुनावा। भूषण बसन भूरितेहिं पावा १
प्रेम पुलकि तन मन अनुरागीं। मंगल साजसजन सबलागीं २
चौके चारु सुमित्रा पूरे। मणिमय बिबिधि भांति अति रूरे ३
आनंद मगन राम महतारी। दिये दान बहु बिप्र हंकारी ४
पूजे ग्राम देव सुर नागा। कहे बहोरि देन बलि भागा ५
जेहि बिधिहोइ राम कल्याना। देहु दया करि सो बरदाना ६
बारबार गणपतिहिं निहोरा। कीजे सकल मनोरथ मोरा ७
गावहिं मंगल कोकिलबयनी। बिधुबदनी मृगशावक नयनी ८
दो० रामराज अभिषेक सुनि हियहरषे नरनारि।
लगेसुमंगल सजन सब बिधि अनुकूल बिचारि ॥ ८ ॥

सबसे पहिले जिसने जाकर यह जगन्मंगल बचन रानियों को जासुनाया उसने तो भूषण, बस्त्र बहुत से पाये १ प्रेम करिके पुलकित तनहोगईं और मनमें अतिही अनुरागीं तातें अपने अपने मंदिरों में सब मंगल साज सजने लगीं २ लक्ष्मण की माता सुमित्रा ने गजमणि, अहिमणि, शैलमणि मय अनेक भांति के अति सुहाये सुन्दर चौके पूरे ३ रामचन्द्र की माता कौशिल्याने अनन्द में मग्न होकर द्विजदेवों को बुलाइ बहुत से दान दिये ४ ग्रामदेव देवनाग पूजे और उनकी बिनती करिके उनको यथा योग्य बलिभाग देने कहे और यहमांगा ५ कि जिसप्रकार रामचन्द्रका कल्याण हो कृपा करिके सो बरदान दीजिये ६ बारंबार बिनायक गणपति को निहोरा कि मेरे मनोऽर्थ को सफल कीजिये ७ समस्त रनिवास में कोकिलबयनी चन्द्रबदनी मृगशावकलोचनी मधुर मंगल गान करिरही हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ नगर में रामचन्द्र का राज तिलक सुनकर हृदयमें समस्त नर और नारी हर्षित होगये और अपने

अपने घरों में बिधाता को दहिना जानि कर भीतर बाहर सुमंगल साज सजने लगे

तब नर नाह बशिष्ठ बुलाये । राम धाम शिख देन पठाये १
गुरु आगमन सुनत रघुनाथा । द्वार आय पद नायउ माथा ३
सादर अर्घ देइ घर आने । सोरह भांति पूजि सन माने ३
गहे चरण सिय सहित बहोरी । बोले राम कमल कर जोरी ४
सेवक सदन स्वामि आगमनू । मंगल मूल अमंगल दमनू ४
तदपिउचित जन बोलिसप्रीती । पठइयकाज नाथ असनीती ६
प्रभुता तजि प्रभु कीन्ह सनेहू । भयउ पुनीत आज यह गेहू ७
आयसु होइ सो करिय गुसाईं । सेवक लहैं स्वामि सेवकाई ८
दो० सुनि सनेह साने बचन मुनि रघुबरहिं प्रशंस ।
राम कसन तुम कहहु अस हंस बंश अवतंस ॥ ९ ॥

तबतो राजा ने बशिष्ठमुनि को बुलाया और रामके पास शिक्षाकरनेको पठाय १ रामचंद्र ने गुरुका आगमन सुनतेही द्वारही पर आकर उनके चरणों को प्रणाम किया और अर्घ देकर मंदिर को लिवालेगये तहां षोड़श बिधान से पूजन करिके बड़ा सन्मानकिया २ । ३ फिर सीतासमेत उनके चरणगहे और हाथ जोरि रामचंद्र बिनीत बचन बोले ४ सेवकके घर स्वामी का आगमनतो यद्यपि मंगलोंका मूलओर अमंगलों का नाशक होताही है ५ तोभी उचित यही है कि स्वामी सेवक को बुलाकर जिस काजपर चाहे भेज देवे ६ सो आपने प्रभुता को छोड़ि कर स्नेहही किया कि आप चलेआये तो आपके आगमन से आजयह घर परम पवित्र हुआ ७ अब आज्ञा होय सो किया जाय क्योंकि सेवक स्वामी की सेवकाईहीसे शोभा लहता है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसे स्नेह के भरे बचन सुनकर मुनिने रामचंद्र को बहुत प्रशंसा ओरकहा हेराम तुम ऐसे बचन क्यों नकहो तुम्हारा तो यह सूर्य्यवंश सदा गुरु भक्त चला आया है तापर तुम तो इस बंश के भूषण मुकुट मणिही हो ॥ ९ ॥

बरणि रामगुण शील सुभाऊ । बोले प्रेम पुलकि मुनि राऊ १
भूप कीन्ह अभिषेक समाजू । चाहत तुमहिं देन युवराजू २
राम करहु सब संयम आजू । जो बिधि कुशल निबाहै काजू ३
गुरु शिखदेइ राम पहं गयऊ । राम हृदय अति बिस्मयभयऊ ४
जनमे एक संग सब भाई । भोजन शयन केलि लरिकाई ५
कर्ण वेध उपवीत बिवाहा । संग संग सब भयउ उछाहा ६

बिमलबंश यह अनुचितएका । अनुजबिहाय बड़े हि अभिषेका ७
प्रभु सप्रेम पछितानि सुहाई । हरउ भक्त मनकी कुटिलाई ८
दो० तेहिं अवसर आये लषण मगन प्रेम आनंद ।
सनमाने प्रिय बचनकहि रविकुल कैरव चंद ॥ १० ॥

इस प्रकार रामके गुण,शील, सुभाव की प्रशंसा करिके प्रेमसे पुलकित अंग होकर बशिष्ठ मुनि बोले १ कि राजा ने राजतिलक का साज सजा है तुमको युवराज पद दिया चाहते हैं २ तातें आज आप संयम कीजिये जो बिधाता इसकाज को निबाहेगा तो कुशल समेत पूरा होगा ३ यह कहकर बशिष्ठ तो राजा के पास गये और राम के हृदय में यह सुनकरबड़ा पछिताव हुआ ४ कि हम चारोंभाई एकसाथही तो जन्मे हैं और साथही साथ भोजन किये,सोये, खेल खेले ५ एकही साथ कर्णवेध जनेऊ बिवाहभी हुआ ६ इस निर्मल वंश में यही एकअनुचित है कि छोटे भाइयों को छोड़िकर बड़ेही को राजतिलक होता है ७ इस प्रकार राम स्वामी की सप्रेम सुहाई पछितानि ने समस्त भक्तों के हृदय की कुटिलताको हर लिया अर्थात् जो स्वामी अपने सेवकों को तन मन से चाहता है उसके सेवक भी उनको तनमन से भजतेहैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ उसी समय लक्ष्मण यह मंगलसुनकर प्रेम और आनन्द में मग्न राम के पास आये और रामने प्रिय बचनों से उनका सन्मान किया ॥ १० ॥

बाजहिं बाजन बिबिधि बिधाना । पुर प्रमोदनहिं जाइबखाना १
भरतआगमन सकलमनावहिं । आवहिं बेगिनयन फलपावहि २
हाट बाट घर गली अथाईं । कहहिं परस्पर लोग लुगाईं ३
कालिह लगनभलि केतिकबारा । पूजिहिबिधि अभिलाषहमारा ४
कनक सिंहासन सीय समेता । बैठहिं राम होइ चित चेता ५
सकल कहहिं कबहोइहिकाली । बिघ्न मनावहिं देव कुचाली ६
तिनहिं सुहाय न अवध बधावा । चोरहिं चांदनि रातिनभावा ७
शारद बोलि बिनय सब करहीं । बारहिं बार पांय लै परहीं ८
दो० बिपति हमारि बिलोकि बड़ि मातु करिय सो आजु ।
रामजाहिं बन राजतजि होइ सकल सुर काजु ॥ ११ ॥

अनेक भांतिके तो बाजे बाजते हैं और नगर का आनन्द कुछ कहाही नहीं जाता है १ भरत का आगमन सब पुरबासी मनाते हैं बेगिही आवें तो नेत्रों का फल पावें २ हाटों, बाटों, घरों, अथाइयों में लोगों से तो लोग और लुगाइयों

से लुगाइ जहांतहां परस्पर यह चर्चा करते हैं ३ कि काल्हिलग्न जाने कौन बेलामें
है जब बिधाता हमारा अभिलाष पूरा करैगा ४ जब सुबर्ण के सिंहासन पर सीता
समेत रामचन्द्र निर्बिघ्न बैठेंगे हमारे चित्त को तो तब चेत होगा ५ सब पुरबासी
तो यह कहते हैं कि काल्हि जाने कब होगी परंतु स्वर्ग में बड़े कुचाली देवताबिघ्न
बिचारते हैं कि कौन उपाय करैं केवल एक आजही की रातिरही है ६ उनको यह
अयोध्या का आनन्द बधावा कैसे नहीं सुहाता है जैसे चोरों को चांदनी रातिनहीं
भावती है ७ तबतो सरस्वतीको बुलाकर सबउसकी बिनती करने लगे और बारंबार
उसके पैरों पर गिरने लगे और बोले ॥ ८ ॥ दोहा ॥ हेमाता हमारी बड़ी बिपत्तिको
देखिकर आप ऐसा कुछ कीजिये जिससे रामचन्द्र इस राज्य को छोड़िकर बन को
चले जावें तो हम सब का काज होजावे ॥ ११ ॥

सुनि सुर बचन ठाढ़ि पछिताती। भइउं सरोज बिपिनहिमराती १
देखि देव सब कहहिं बहोरी। मातु तोहिं नहिं थोरिउ खोरी २
बिस्मय हर्ष रहित रघुराऊ। तुम जानहु सब राम सुभाऊ ३
जीवकर्म बश दुख सुख भागी। जाइय अवध देव हित लागी ४
बार बार गहि चरण सकोची। चलीबिचारि बिबुध मतिपोची ५
ऊंचनिबास नीच करतूती। देखि न सकहिं पराइ बिभूती ६
आगिल काज बिचारि बहोरी। करिहैं चाह कुशल कबिमोरी ७
हर्षि हृदय दशरथ पुर आई। जनु ग्रह दशा दुसह दुखदाई ८
दो० नाम मंथरा मंद मति चेरि कैकयी केरि।
अयश पिटारी ताहि करि गई गिरा मति फेरि ॥ १२ ॥

ठाढ़ी पछिताती है
ऐसी स्वार्थसाधक देवताओं की बिनती सुनकर सरस्वती ठाढ़ी पछिताती है
कि मैं यहां क्यों आई अब सुन्दर प्रफुल्लित कमलों के बनको हेमंतऋतु की रीति
हुई १ ऐसी दशा सरस्वती की देखकर फिर देवता कहनेलगे हे माता तेरेको इसमें
किंचित् भी खोरि न होगी २ रामचन्द्र के स्वभावको तो तुम जानतीहीहो किदुख
सुख रहितही हैं और जीव अपने अपने कर्मों के बश सदा दुख सुख के भोगीही
होते हैं तातें हम सब देवताओं के कार्य्य के निमित्त आप जाइये ३ । ४ इस प्रकार
बारंबार चरण पकड़िकर उसको सकोच लिया तब तौ सरस्वती देवताओं की बुद्धि
को पोच जानिकर अयोध्या को चली ५ कि इनका केवल निबासही तो ऊंचा है
करतूति महानीच है देखो दूसरे की बिभूति को देख नहीं सकते हैं ६ परंतुफिर
सरस्वती आगे काज बिचारिकर कि बनमें राम जो जो चरित्र करैंगे उनके प्रबन्धों

की रचना के लिये प्रवीण कविमेरी चाह किया करेंगे प्रसन्न होकर कैसी अयोध्या में आईहै मानों ग्रहों की संकटा दशाही महा दुखदाई है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ मंथरा नाम महामंद मति एक भरत की माता केकयी की चेरी रहै उसको इस महा अपयश की पिटारी करिके सरस्वती उसकी मतिको फेरिकर चली गई ॥ १२ ॥

देखि मंथरा नगर बनावा । मंगल मंजुल बाज बधावा १
पूंछेसि लोगन काह उछाहू । राम तिलक सुनि भाउर दाहू २
करैबिचार कुबुद्धि कुजाती । होइ अकाज कवन बिधि राती ३
देखिलाग मधुकुटिलकिराती । जिमिगंवतके लेउंकेहि भांती ४
भरत मातुपहं गइ बिलखानी । का अनमन हंसिकह असरानी ५
उतर देइनहिं लेइ उसांसू । नारि चरित करि ढारति आंसू ६
हंसिकह रानि गालबड़तोरे । दीन्हिलषण शिख असमन मोरे ७
तबहुं नबोलि चेरि बड़िपापिनि । छांड़ै स्वासकारिजनुसांपिनि ८
दो० सभय रानिकह कहसि किनि कुशल राम महिपाल ।
भरतलषण रिपु दमन सुनि भाकुबरी उरशाल ॥ १३ ॥

सरस्वती की प्रेरणा से मंथरा ने घरघर नगरमें बधावा और तोरण केतु पताकादि से बनाव देख कर लोगों से पूंछा कि क्या उत्सव हैं जब सबके मुख से रामचंद्र का राज तिलक सुना तबतो उसके हृदय में बड़ाही दाह हुआ १ । २ और महा दुर्बुद्धि कुजाति बिचार करनेलगी कि आजही की राति बीचहै इस रातिही में कैसे अकाज होजावे ३ जैसे कोई किरातिनी मधु को वृक्ष पर लगा देखकर दांउ तकै कि इसको कैसे लेलूं ४ सोच बिचारकर भरत की माता के पास गई और रोई तब तो केकयी ने हंसिकर पूछा कि क्यों अनमनी है ५ उसने सुनकर उत्तर तो कुछ न दिया गहरीं उसांसे और लेने लगी और नारि चरित्र करकर आंसू ढारने लगी ६ तब तो रानी ने हंसकर कहा कि तेरा गाल बड़ा है कुछ किसीसे कहा होगा तिस पर बोली लक्ष्मण ने तेरे को कुशिक्षा दी होगी यहमैं जानती हूं ७ इस कहने पर भी पापिनी न और सांपिनी के समान स्वास छोड़ने लगी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तबतो रानी भयभीत होकर कहने लगी कि तू कहती क्यों नहींहै रामतो कुशल हैं और राजा भरत लक्ष्मण शत्रुहन येभी सबकुशलतोहैं ऐसे रानी के बचन सुनकर कुबरीके हृदयमें शाल होगया ॥ १३ ॥

कत शिष देइ हमहिं कोउमाई । गाल करब केहिकर बलपाई १
रामहिं छांड़ि कुशल केहि आजू । जाहि नरेश देत युवराजू २
भा कौशल्यहि बिधिअति दाहिन । देखतगर्बरहत उर नाहिन ३

देखहु कसनजाइ असि शोभा । जो अवलोकि मोरमन क्षोभा ४
पूत बिदेशन सोच तुम्हारे । जानति हौ बश नाह हमारे ५
नींद बहुत प्रिय सेज तुराई । लखहु न भूप कपट चतुराई ६
सुनिप्रिय बचन मलिन मनजानी । झखीरानि अरहू अरगानी ७
पुनि अस कहसि कबहुं घरफोरी तो धरि जीह कढ़ावहुं तोरी ८
दो० कानी खोरी कूबरी कुटिल कुचाली जानि ।
तेहिं बिशेष पुनि चेरि कहि भरत मातुमुसुकानि ॥ १४ ॥

तबतो मंथरा दीनोंकी नाई बचन बोली हे माता हमको कोइ शिक्षा किसलिये करेगा और मैं किसके बलसे गालकरूंगी अर्थात् किसी को बुराभला कहूंगी १ रामको छोड़ि आज दूसरे किसको कुशल हो जिसको राजा युवराज पदवी देरहा हैं २ अति अनुकूल तो बिधाता आज कौशल्या को है जिसके गर्व को देखते मेरा हृदय नहीं रहता है ३ आपभी जाकर ऐसी शोभा को क्योंनहीं देखती हो जिसको देखकरमेरे मनमें यह छोभ हुआ ४ तुम्हारा पुत्र बिदेश में पड़ा हैं और तुमको कुछ भी छोभ नहीं है तुम यह जानती हो कि राजा हमारे बशी भूतहै ५ तुमको तो शय्या और उपबरहण प्यारे हैं और बहुत सी नींदहै कभी राजा की कपट चतुरई न देखी ६ ऐसे भेदके बचन जब मंथरा ने कहे सो सुनिकर और उसको मलिन मन जानकर रानी उसपर रिसानी और कुबरी भी चुपकी रही ७ तब रानी ने उससे कहा कि जो तू घर फोरनि ऐसे बचन फिरि कभी कहेगी तो तेरी यह जीह पकड़ि कर कढ़ा लूंगी ८ ॥ दोहा ॥ फिरितो कानी, लंगरी, कूबरी, महा कुटिल, कुचाली, समस्त दोष दुष्ट जानि और तापर बिशेष चेरी कहिकर भरत की माता कैकयी ने मुसुका दिया और यह बचन बोली ॥ १४ ॥

प्रिय बादिनि शिष दीन्हेउं तोहीं । सपनेहुं तो परकोह न मोहीं १
सुदिन सुमंगल दायक सोई । तोर कहा फुरजा दिन होई २
जेठ स्वामि सेवक लघु भाई । यह दिनकर कुल रीति सुहाई ३
राम तिलक जो सांचेहु काली । मांगुदेहुं मन भावत आली ४
कौशल्या सम सब महतारी । रामहिं सहज सुभाव पियारी ५
मोपर करहिं सनेह बिशेषी । मैं करि प्रीति परीक्षा देषी ६
जो बिधि जन्म देइ करि छोहू । होहिं राम सिय पूत पतोहू ७
प्राण ते अधिक राम प्रियमोरे । तिनके तिलक क्षोभ कस तोरे ८

दो० भरत शपथ तोहिं सत्य कहु परि हरि कपट दुराव ।
हर्ष समय बिस्मय करसि कारण मोहिं सुनाव ॥ १५ ॥

हेप्रियबादिनि यह मैंने तेरे को सीखही दी है कि तुझको ऐसा कहना न चाहिये और कोप तो तेरे ऊपर मेरा सपने में भी नहीं है १ सुमंगल दायक सुदिन तो सोई है जिसदिन यह कहना तेरा सच्चा होवे २ जेठे भाई तो स्वामी और छोटे भाई उनके सेवक होते आये हैं यहतो इस दिनकर कुलकी सुन्दर सुहाई रीति ही है ३ तातें जो रामचन्द्र को राज तिलक सांचहूं कालि है और यह मंगल बचन तुहीने मेरे को सुनाया है तो जो तेरे मन भावता हो सो तू मेरे से मांगिले में तेरे को निःसंदेह दूंगी ४ क्योंकि राम को तो और सब माता कौशल्या के समान सुभावही से प्यारी हैं ५ मेरेपर तो राम कौशल्या से भी अधिक स्नेह करते हैं मैंने उनकी प्रीति को परीक्षा करिके देखि लिया है ६ मैंतो बिधाता से यह मनाती हूं कि जो बिधाता कृपाकरिके मनुष्य जन्म देवेतो राम सीताहोसी पुत्र और बधू हुआ करैं ७ सो भलाजो राम मेरे प्राणों से भी अधिक प्यारे हैं उनके तिलक होने में तेरे हृदय में क्षोभ कैसे है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तेरे को भरत की शपथ है तू कपट दुराव छोडि कर सत्यही कहना कि इस हर्ष समय में जो तू बिस्मय करती है इसका कारण मुझ को सत्य सत्य सुनादे ॥ १५ ॥

एकहिं बार आश सब पूजी। अब कछु कहब जीह कर दूजी १
फोरै योग कपार अभागा । भलेउ कहत दुख रौरेहु लागा २
कहै झूंठ फुर बात बनाई । सो प्रिय तुमहिं करुइ मैं माई ३
हमहुं कहब अब ठकुर सुहाती। नाहि तो मौन रहब दिनराती ४
करि कुरूप बिधि परबश कीन्हा। बवा सो लुना पाव जो दीन्हा ५
कोउ नृप होउ हमहिं का हानी। चेरी छांडि होब नहिं रानी ६
जारै योग सुभाव हमारा। अनभल देखि न जाइ तुम्हारा ७
तातें कछुक बात अनुसारी । क्षमव देबि बड़ि चूक हमारी ८
दो० गूढ कपट प्रिय बचन सुनि तीय अधर बुधि रानि ।
सुर माया बश बैरिनिहिं सुहृद जानि पतियानि ॥ १६ ॥

जब कैकयी ने ऐसे परतोष के बचन कर उससे बिस्मय का कारण पूंछा तब तो मंथरा गूढ़ कपट के बचन बोली यश रानी आशा तो हमारी एकही बार पूरी हो गई अब क्या मैं दूसरी जीह करिके कहूं १ हमारा तो यह अभागा कपार फोरनेही के योग्य है क्योंकि भलाई कहतेभी आप को दुख लगा २ तुमसे तो जो कोई झूंठ

को सच्च बात बनाकर कहता है सो प्यारा लगता मैंने कभी ऐसा नहीं कहा इसी से मैं करुई हूं ३ ऐसाही है तो मैं भी अब ठकुर सुहाती कहा करूंगी नहीं तो दिन राति चुपकी ही बैठी रहा करूंगी ४ हमको तो बिधाता ने कुरूप करिके पर बश करदिया है बिधाता का कौन दोष है जैसा हमने बोया रहै तैसा लुना जो दिया रहे सो पाया ५ कोई राजा होवै हमारी कौन घटी है हमतो चेरी से रानी होनेही की नहीं हैं ६ स्वभाव हमारा जारनेहीके योग्य है कि हम से तुम्हारा अन भला देखा नहीं जाता है ७ तातें किंचित् बात अभागे मुखसे निकसि गई चूकतो हमारी बड़ी है परंतु हे देबि कृपा करके आप क्षमा कीजिये यही मानों हमने सर्बस्व पाया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसे गूढ़ कपट के परम प्यारे मंथरा के बचन सुन कर स्त्री सुभाव से ओठ बुद्धि रानी देव माया के बश महा बैरिनि को सुहृद जानि कर उसकी बातों पर पतियाइ गई ॥ १६ ॥

सादर पुनि पुनि पूंछत ओही । शवरी गान मृगी जनु मोही १
तस मति फिरी अहै जसि भावी । रहसी चेरि घातभलि फावी २
तुम पूछहु मैं कहत डराऊं । धरेहु मोर घर फोरनि नाऊं ३
सजिप्रतीति बहु बिधि गढ़ि छोली । अवधसाढ़ साती तब बोली ४
प्रिय सियराम कहा तुमरानी । रामहिं तुम प्रिय सो फुर बानी ५
रहे प्रथम अबते दिन बीते । समय फिरे रिपु होहिं पिरीते ६
भानु कमल कुल पोषण हारा । बिनुजल जारि करै सोइ छारा ७
जर तुम्हारि चह सवति उपारी । रूंधहु करि उपाय बरबारी ८
दो० तुमहिं न सोच सुहाग बल निज बश जानहु राउ ।
मन मलीन मुख मीठ नृप राउर सरल सुभाउ ॥ १७ ॥

बड़े आदर से उसका बारबार पूंछती है उसकी कपट कहानीपर ऐसी मोहित हो गई है जैसे भीलिनी के बरवै राग को सुन कर मृगी मोहित होकर अपने को बिपत्ति जाल में फंसा देती है १ जैसी कुछ भवतब्यता है तैसीही उसकी बुद्धि हो गई तबतो मंथरा मनमें बड़ीही प्रसन्न हुई कि मेरी घात तो भले प्रकार से फबि गई २ बोली कि हे रानी तुम तो पूंछती हो मैं कहते डरपती हूं क्योंकि मेरा नाम तो घर फोरनि तुमने पहलेही रखि दिया है ३ ऐसे बहुत भांति गाढ़ छोलि कर अर्थात् सुधारि सम्हारि कर अपनी बातों में रानी की प्रतीति कराय अयोध्या को बिपत्तिदायनी शनिश्चर की साढ़ साती दशाके समान मंथरा यह बचन बोली ॥ ४ ॥ सुनो हे रानी तुमने राम को अपना प्राण प्यारा कहा और रामको तुम कौशल्या से अधिक प्यारी यह तुम्हारा कहना सत्य है ५ परंतु जो दिन पहले रहें तेदिन अब

बीत गये समय पलटने से मित्रही शत्रु होजाते हैं ६ देखो जो सूर्य्य कमल कुल का शरद ऋतु में पोषक होता है सोई हेमंत में जल बिना उनको जरा कर भस्मकर देता है ७ तुम्हारी जड़को तो तुम्हारी सपत्नी कौशल्या उपारा चाहती है उसको अभी उपाय की बारि रूंधोगी तो दृढ़ होजायगी नहीं तो उखड़नेमें कौन संदेह है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तुमको तो सुहागके बल से कुछ सोच नहीं है राजा को अपने वश जानती हो और राजा मुखही का मीठा है मन में बड़ मैला है तुम सरल सुभाव उसके कपट को नही जानती हो ॥ १० ॥

चतुर गंभीर राम महतारी। बीच पाइ निज बात सम्हारी १
पठये भरत भूप ननि औरे। राम मातु मत जानव रौरे २
सेवहिं सकल सवति मोहिं नीके। गर्बित भरत मातु बल पीके ३
शाल तुम्हार कौशलहि माई। कपट चतुर नहिं होतलखाई ४
राजहिं तुम पर प्रीति बिशेषी। सवति सुभाव सकै नहिं देखी ५
रचि प्रपंच भूपहिं अपनाई। राम तिलक हित लग्न धराई ६
यहि कुल उचितराम कहं टीका। सबहिं सुहाइमोहि सुठि नीका ७
आगिल बात समुझि डर मोहीं। दैव देवफल सो फिरि ओही ८
दो० रचि पचि कोटिक कुटिल पन कीन्हेसि कपट प्रबोध।
कहेसि कथा शत सवति कीजेहि बिधि बाढ़ बिरोध ॥ १८ ॥

चतुर गंभीर तो राम की माता है जिसने अवकाश पाकर अपनी बात सम्हार ली १ भरत को जो राजा ने नानाकेघर पठाया है यह सब रामकी माताहीका मत आप जानो २ कौशल्या ने मन में बिचारा है कि और सब सौति तो मेरी भले प्रकार सेवा करती हैं एक भरत की माता पतिके घमंड से गर्बित रहतीहै ३ यह तुम्हारा शाल कौशल्या को शालता है कपट में बड़ी प्रवीण है ताते लखि नहीं पड़ता है ४ राजा को जो तुमपर बिशेष प्रेम है उस को सौति सुभाव से देखिनहीं सकती है ५ इसलिये यह प्रपंच राजा को अपना कर रचा है कि राम के तिलक के लिये यह शीघ्र लग्न धराई है ६ राम को तिलक होना तो कुलके उचितही है सबको सुहाता है और मेरे को भी अति भला है ७ परंतु जो मैं कौशल्या का मनोऽर्थ आगे कहि आई हूं सो समुझ कर मेरे को बड़ा डर है सो दैव फिरि कर उसका फल उसी को देगा ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इस प्रकार के कोटिन कुटिल पन रचि पचि कर मंथरा ने कैकेयी को प्रबोध किया और सैकड़ों सौतिन की ऐसी कथाकही जिस भांति परस्पर बिरोध बढ़ि जावै ॥ १८ ॥

भावी बश प्रतीति उर आई । पूंछ रानि निज शपथ दिवाई १
का पूंछहु तुम अजहुंन जाना । निजहित अनहितपशुपहिचाना २
भये पाख दिन सजत समाजू । तुम पायहु सुधि हमसन आजू ३
खाइय पहिरिय राज तुम्हारे । सत्य कहैं नहिं दोष हमारे ४
जो असत्य कछु कहब बनाई । तो बिधि देइहि हमहिं सजाई ५
रामहिं तिलककाल्हिजो भयऊ । तुमकहं बिपतिबीजबिधिबयऊ ६
रेखा खैंचि कहौं बल भाखी । भामिनि भइहु दूध की माखी ७
जो सुत सहित करहु सेव काई । तो घर रहहु न आन उपाई ;८
दो० कद्रू बिनतहि दीन्ह दुख तुमहिं कौशला देव ।
भरत बंदि गृह सेइ हैं राम लषण कर नेव ॥ १६ ॥

भावी के बश रानी के हृदय में प्रतीति आगई और अपनी शपथ दिवाकर उससें पूंछने लगी कि तूने यह कैसे जाना १ तबतो मंथरा ने कहा कि पूंछती क्या हो तुमने अबभी नही जाना अपने शत्रु, मित्र को तो पशु, पक्षी भी पहिचानते हैं २ देखो इस समाज को सजते पाख दिन बीते और तुमने आज मेरे मुखसे सुधि पाई है किसीने तुम को जतावतक नहीं दिया ३ हमतो तुम्हारेही राज्यमें खाती पहरती हैं तातें हमको तो तुमसे सत्य कहने में दोष नहीं है ४ ऐसे परभी जो हम तुम से झूठ को सच्च बनाकर कहैंगी तो बिधाता हमको दंडही देगा ५ ऐसे कहिकर यह बचन बोली सुनो हे रानी जो कहीं काल्हि राम को तिलक होगया तो मानों तुम्हारे बिपत्ति का बीजही विधाता ने बोया है ६ यह तो मैं तुमसे रेखा खैंचि कर पैज पूर्बक कहती हूं कि हे भामिनि तुम दूधकीसी माखी काढ़िकर दूरकरी जाओगी ७ हां जो भरत समेत उनकी सेवा कियाकरौगी तोघरमेंरहने पाओगी नहीं तो और कोईउपायनहीं है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जैसे जैसे दुःख सर्पों की माता कद्रू ने गरुड़की माताबिनता अपनी सौति को दिये हैं तैसेही तैसे दुःख कौशिल्या तुमको देवैगी भरततो जन्म भरि कारागार सेवनकरैंगे और राम लक्ष्मण का तो एकही है १६ ॥

केकय सुतासुनतकटु बानी । कहि न सकै कछु सहमि सुखानी १
तन पसेव कदली जिमि कांपी । कुबरी दशन जीह तब चांपी २
कहि कहि कोटिक कपट कहानी । धीरज धरहु प्रबोधेसि रानी ३
कीन्हेसि कठिन पढ़ाइ कुपाठू । जिमि ननवै फिरिउकठा काठू ४
फिरा कर्म प्रियलागि कुचाली । बकिहिं सराहति मनहु मराली ५

सुनु मंथरा बात फुर तोरी । दाहिनि आंखि फरकत नित मोरी ६
दिन प्रति देखौं राति कुसपने । कहौंन तोहिं मोहबश अपने ७
कहा करौं सखि शुद्ध सुभाऊ । दाहिन बाम न जानहुं काऊ ८
दो० अपने चलत न आजु लगि अनभल काहुक कीन्ह ।
केहिं अघ एकहि बार मोहि दैव दुसह दुखदीन्ह॥ २० ॥

राजा केकय की बेटी केकेयी मंथरा की कटुबाणी सुनतेही कुछभी न कहि सकी सहमि कर सूखि गई १ शरीर में पसीनाही होगया और केलेकी नाई कांपने लगी तब तो मंथराने दांतों से जीहको बोलनेसे दबालिया २ और अनेकभांतिकी कपट कहानीकहि कहिकर कहाकि हे रानी धीरज धरो धर्माबिगरा क्या है ऐसे रानी को प्रबोध किया ३ महा पाठ पढ़ाकर रानी को ऐसा कठिन कार दिया जैसे उकठ काठ फिरि नहीं नवता है ४ कर्म जिसका फिरि गया कुचालिनिमंथरा अतिप्यारी लगी और उसको सराहने लगी जैसे बकीको हंसिनो सराहै ५ सुनुरी मंथरा तोरी बात सत्य है मेरी दाहिनी आंखि सदा फरका करती है ६ दिन दिन प्रति रातिको दुःस्वप्न देखती हूं मोह के बश कभी तेरेसे नहीं कहे ७ क्या कहूं हे सखी मैंतो शुद्ध स्वभाव हूं दाहिना बायां कभी नहीं जानती हूं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ अपने बसाते तो मैंने कभी किसी का अनभला नहीं किया है न जाने कौन पापसे यह दुःसह दुःख देवने मेरे को दिया है ॥ २० ॥

नैहर जन्म भरब बरु जाई । जियत न करब सवति सेवकाई १
अरिबश दैव जियावत जाही । मरण नीक तेहिं जीवन चाही २
दीन बचन कह बहुबिधि रानी । सुनि कुबरी तिय माया ठानी ३
असकस कहहु मानिमन ऊना । सुख सुहाग तुम कहं दिनदूना ४
जेहिं राउर अस अनभल ताका । सोइपाइहियह फलपरिपाका ५
जबतें कुमत सुना मैं स्वामिनि । भूख न बासर नींद न यामिनि ६
पूंछा गुणिन रेखतिन खांची । भरत भुआल होहिं यह सांची ७
भामिनि करहु तो कहौं उपाऊ । हैं तुम्हरी सेवा बश राऊ ८
दो० परौं कूप तव बचनलगि सकौं पूत पति त्यागि ।
कहसि मोर दुख देखिबड़ कस न करब हित लागि ॥ २१ ॥

तातें हे मंथरा मैं अपने जन्मको मायके में तो जाकर टेरकरूंगी परंतु जीतेजी सौति की सेवकाई तो न करूंगी १ वैरी केबश दैव जिसको जियावता है उस जीव-

नेकी अपेक्षा तो मरनाही भला होता है २ ऐसे दीन बचन जब रानीने बहुत भांति के मंथरा से कहे तबतो उसने स्त्रियों के छल छन्दठानि कर कहा ३ हे रानी तुम अपने मनमेंहीनतामानकर ऐसा क्यों कहती हो तुमको तो सुख सुहाग दिन२ दून ही होगा ४ जिसने तुम्हारा ऐसा अनभला बिचारा है सोई इसका परिपाक फल पावेगा ५ सुनो हे रानी मैंने जबसे इस कुमत को सुना है तबसे न तो मेरे को दिनमें भूख है न राति में नींद है ६ तुरंतही मैंने गुणीगणों से जाकर जो पूंछा तो उन्हों ने पैज बांध कर कहा है कि उपाय करनेसे तो भरतही राजा होंगे यह उनका कहना सत्यही है ७ सो हे रानी जो तुम करना चाहो तो मैं उपाय कहूं तुम्हारी सेवा के वशमें राजा हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तबतो रानी बोली अय मंथरा तू कैसी बात कहती है मैं तेरे कहेपर कूपमें भी गिरपडूंगी और पति पुत्रको भी त्याग दूंगी तूसे मेरा यहबड़ादुख देखकर कहतीहै अपनेहितके लियेमैं कैसे नहीं करूंगी२१

कुबरी करी कुबलि कैकेई । कपट छुरी उर पाहन टेई १
लखै न रानि निकट दुख कैसे । चरत हरित तृणबलि पशुजैसे २
सुनत बात मृदु अंत कठोरी । देति मनहु मधु माहुर घोरी ३
कहै चेरि सुधि अहै कि नाहीं । स्वामिनि कहेहु कथामोहिं पाहीं ४
द्वय बरदान भूप सन थाती । मांगहु आजु जुड़ावहु छाती ५
सुतहिं राज रामहिं बन बासू । देहु लेहु सब सवति हुलासू ६
भूपति राम शपथ जब करहीं । तब मांगेहु जेहिं बचन न टरहीं ७
होइ अकाज आज निश बीते । बचन मोर प्रिय मानहु जीते ८
दो० बड़ कुघात करि पातकिनि कहेसि कोप गृह जाहु ।
काज सम्हारेहु सजग ह्वै सहसा जनि पतियाहु ॥ २२ ॥

इस प्रकार कुबरी ने कैकेयी को बल पशु किया और कपट की छुरी उस के हृदय पाषाण पर टेइदी १ निकट आये दुख को रानी कैसे नहीं देखती है जैसेबलि पशु हरित तृणों को चरता है खड्गको नहीं देखता है २ मंथरा की बात सुनने में तो कोमल है अंत में महा कठोर है मानों मधु में मिलाकर विषही देती है ३ बोली कि हे रानी तुमको सुधि है कि नहीं जो तुमने मुझसे कथा कही रहे ४ कि दो वरदान मेरे राजा पर थाती हैं ते दोनों बर आज राजा से मांग कर छाती शीतल करो ५ एक बरतो अपने पुत्र भरत को राज्य दूसरा रामको बनवास देकर सौति का सब हुलास लेलो ६ परतु जब राजा राम की शपथ करैं तब मांगना चाहिये जिस से बचन टरि न जावे ७ और आज की राति बीते तो अकाज होजाइगा आजही मांगना चाहिये इन मेरे बचनों को तनमन जीसे प्यारे मानना चाहिये ॥ ८ ॥ दोहा ॥

महा पातकिनी ऐसी बड़ी कुघात करिके बोली कि अभी कोप घर को चली जाओ और काज को सजग होकर सम्हारना किसी के सुमुझाने पर न पतियाना २२ ॥

कुबरिहिं रानिप्राण प्रियजानी । बारबार बड़ि बुद्धि बखानी १
तोहिं सम हित न मोर संसारा । बहे जात कर भयसि अधारा २
जो बिधि पुरव मनोरथ काली । करो तोहिं चखपूतरि आली ३
बहु बिधि चेरिहिं आदर देयी । कोपभवन गवनी कैकेयी ४
बिपति बीज बर्षा ऋतु चेरी । भुइं भइ कुमति केकयी केरी ५
पाइकपट जल अंकुर जामा । बरद्वयदल फलदुख परिणामा ६
कोप समाज साजि सब सोई । राजकरत निजकुमति बिगोई ७
राउर नगर कुलाहल होई । यह कुचालि कछु जानन कोई ८
दो० प्रमुदित पुर नरनारि सब साजि सुमंगल चार ।
एक प्रबिशहिं इक निकसहिं भीर भूप दरबार ॥ २३ ॥

कुबरी को रानी ने प्राणों के समान प्यारी जानकर बारम्वार बड़ी बुद्धिमतीसराही १ कहने लगी कि हे मंथरा तेरे समान मेरा हितकारी संसार में कोई नहीं है बहे जाते को आधार तुहीहुई है २ जो बिधाता काल्हि मेरा मनोऽर्थ पूराकरैगा तो तेरे को नेत्रों की पुतरी करलूंगी ३ ऐसे बहुत भांति चेरीको आदर देकर कैकेयी कोपागार को चलीगई ४ इस बिपत्ति बीज को मंथरा तो बर्षा ऋतु है और कैकेयी की कुमति भूमि हुई ५ कपट का जल पाकर उस बीज का अंकुर फूटा तहां दोनो बरही तो प्रथम द्वयदलहुये परिणाम को दुःखही फलहुआ अर्थात् कैकेयी को जन्म दुःखहुआ ६ कैकेयी जौलों जियति रही तौलों कबहुं न भरत भूलि हूं मुंहभरि मातु कही तहां जाकर सब साज कोपही का सजिकर सोरही राज करते हुये अपनी ही कुमति ने नाश कर दी ७ रनिवास और नगर में आनन्द कोलाहल होरहा है इस कुचालि को कोई भी नहीं जानता है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ परम प्रसन्न पुरबासी नर और सब नारी सुन्दर मंगलाचार सजिकर एक तो राजमंदिरि में प्रवेश करते हैं एक निकसते हैं ऐसी बड़ी भीर राज दरबार में हो रही है ॥ २३ ॥

बालसखा सुनि हियहरषाहीं । मिलि दशपांच रामपहं जाहीं १
प्रभु आदरहिं प्रेमपहिचानी । पूछहिं कुशल क्षेम मृदु बानी २
फिरहिं भवन प्रभु आयसु पाई । करत परस्पर रामबड़ाई ३
को रघुवीर सरिस संसारा । शील सनेह निबाहन हारा ४

जेहिजेहि योनिकर्मबश भूमहीं । तहंतहं ईशदेहिं यह हमहीं ५
सेवक हम स्वामी सिय नाहू । होइ नाथ यह और निबाहू ६
अस अभिलाष नगर सब काहू । कैकय सुता हृदय अतिदाहू ७
कौन कुसंगति पाइ नशाई । रहै न नीच मते गरुआई ८
दो० सांझ समय सानंद नृप गयउ कैकयी गेह ।
गवन निठुरता निकट किय जनु धरि देह सनेह ॥ २४ ॥

बालसखा रामचन्द्र का राज तिलक सुनकर हृदय में हर्षित होते हैं और दश दश पांच पांच मिल मिलकर उनके पास जाते हैं १ रामचंद्र उनका प्रेम पहचानि कर बड़ा आदर देते हैं और कुशल क्षेम कोमल बाणी से पूछते हैं २ फिरि रामचंद्र की आज्ञा पाकर घर को फिरते हैं मार्ग में परस्पर राम की बड़ाई करते जाते हैं ३ कि शील सनेह का निबाहक और रामचंद्र के समान दूसरा संसार में कौन है ४ हम तो ईश्वर से यह मनाते हैं कि जिस जिस योनि में अपने कर्मों के वश भ्रमें तहां तहां ईश्वर हमको यह दियाकरै कि हम तो सेवक और सीतापतिराम हमारे स्वामी हुआ करें यह हमारा और निवाह होवै ५।६ ऐसोही अभिलाष नगर में और सबको भी है पर कैकेयी के मन में अतिही दाह होरहा है ७ सच्च है कुसंगति पाकर कौन नहीं नशाता है नीचों के मते में गुरुता नहीं रहती है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ संध्या के समय आनन्द समेत राजा कैकेयी के भवन में कैसे गया मानों निठुरता के पास शरीर धरकर सनेह ही ने गमन किया है ॥ २४ ॥

कोपभवन सुनि सकुचेउ राऊ । भय बश आगे परै न पांऊ १
सुरपति बसै बाहु बलजाके । नरपति रहहिं सकल रुखताके २
सो सुनितिय रिसगयउ सुखाई । देखहु काम प्रताप बड़ाई ३
शूल कुलिश असि अंगवनहारे । ते रतिनाथ सुमन शरमारे ४
सभय नरेश प्रिया पहं गयऊ । देखिदशा दुख दारुण भयऊ ५
भूमि शयन पट मोट पुराना । दिये डारि पट भूषण नाना ६
कुमतिहिं कसि कुबेषता फावी । अन अहिवात शूच जनु भावी ७
जाइ निकट नृपकह मृदु बानी । प्राणप्रिया केहि हेतु रिसानी ८
छं० केहिहेतु रानिरिसानि परसत पाणिपतिहि निवारई ।
मानहुसरोषभुअंगभामिनिविषमभांतिनिहारई ॥

हृदयबासनारसनादशनबरमर्मठाहरदेखई ।
तुलसीनृपतिभवितव्यताबशकामकौतुकलेखई ॥
सो० बारबार कहराउ सुमुखि सुलोचनि पिकबयनि ।
कारण मोहिंसुनाउ गजगामिनि निजकोपकर ॥ २५ ॥

रानी को कोपभवन में गया सुनतेही राजा सकोचिगया भय के मारे जिस को आगे पैरही नहीं परता है १ जिस राजादशरथ की भुजाओंके बलहीसे देवराजइन्द्र बैरियों के भय से निर्भय बसता है और महिमंडल के सब राजा जिसका मुख तका करते हैं २ ऐसा बलीराजा स्त्री को रिसाना सुनतेही सुखिगया ऐसी काम के प्रताप की बड़ाई को देखो ३ कि जो महा शूरवीर त्रिशूल बज्र खड्ग के घाव के सहने वाले हैं उनको भी रतिपति काम ने फूलोंही के बाणों से मारिलिये हैं ४ डरडराते राजा रानी के पासगया तो उसकी दशादेखतेही महा दारुण दुख होगया ५ भूमिमें तो शयन करिरही है और मोटे पुराने बस्त्र पहिरे हे राज बस्त्र भूषण उतारि फेंकिदिये हैं ६ कुमति को अमंगल बेषता कैसी फबी है मानों भावीबैधव्यता आगे ही से शूचन करती है ७ समीप जाकर राजा ने कोमल बाणी से पूछा कि हे प्राणप्रिया तू क्योंरिसानी है ॥ ८ ॥ छन्द ॥ यह कहिकर जो राजा ने उस के छूने को हाथकिया सोई उस ने मारदिया और रिसभरी सर्पिनी की नाईं बुरीभांति देखने लगी भरत को राज्य,राम को बनबासये दोनों ही तो दो रसना हैं और दोनों बर दांत हे मर्म ठौर को देखती है राजा भवतव्यता के बश काम कौतुकही जानता है ॥ सोरठा ॥ बार बार राजा ने पूंछा हे सुमुखि सुलोचनि कोकिलबयनि अपने कोप का कारण तो मेरे को सुना ॥ २५ ॥ यह अयोध्या काण्डकी पहिली पचीसीहुई ॥

श्रीरामायनमः

अनहिततोरप्रियाकेहिं कीन्हा ।केहिद्वयशिरकेहिंयमचहलीन्हा १
कहुकेहिं रंकहिं करौं नरेशू । कहुकेहिं नृपहि निकारौं देशू २
सकौतोर अरि अमरहु मारी । कहा कीट बपुरे नर नारी ३
जानसि मोर सुभाव बरोरू । तव मुख मम दृगचंद चकोरू ४
प्रियाप्राण सुत सर्बस मोरे । परिजन प्रजा सकल बश तोरे ५
जो कछु कहौ कपट करितोहीं । भामिनि रामशपथ शतमोहीं ६
बिहंसि मांगु मन भावति बाता । भूषण सजहु मनोहर गाता ७
घरीकुघरी समुझि जियदेखू । बेगिप्रिया परिहरहु कुबेखू ८
दो० यहसुनिमन गुणशपथ बड़िबिहंसि उठी मतिमन्द ।

भूषण सजति बिलोकिमृग मनहुं किरातिनिफंद ॥ १ ॥

हे प्रिया तेरा अनहित किस मरणशील ने किया है दो शीश किसके हैं और यमराज किस को लिया चाहते हैं १ कहु तो किस रंक को राजाकर दूं और किसराजा को देश से निकार दूं २ तेरे वैरी देव जाति को भी तो मारसक्ता हूं मनुष्य जाति बिचारे कीटबिशेषों की कौन गनती है ३ हे चारुरु, तू तो मेरे स्वभाव को जानती हैं कि तेरेमुख को मेरे नेत्र चन्द्र चकोरही हैं ४ जब कि मैंहीं तेरे वश हूं तो मेरे प्राण, पुत्र,प्रजा, परिजन और मेरा सर्वस्व सब तेरेही बश हैं ५ जो मैं तेरे से कुछ कपट करिके कहता होऊं तो हे भामिनि मेरेको सौ शपथ रामचंद्र की हैं ६ त ले उठे और विहंसि कर मन भावती बातमांगो और सुन्दर मनोहर गात में भूषण पहिरो ७ घरी कुघरी मन में विचारिकर देखो हे प्रिया इस कुवेष को को बेगिही त्यागकरो ॥ ८ ॥ दोहा ऐसे राजा के वचन सुनि और मनमें बड़ो राम की शपथ गुणि हंसिकर महामतिमंद उठी और उठा उठाकर भूषणोंको कैसे सजती है जैसे मृग को देखकर किरातिनी फंदे सजै ॥ १ ॥

पुनि कहराउ सुहृद जियजानी । प्रेम पुलकि तनु मंजुल बानी १
भामिनि भयउ तोरमन भावा । घरघर नगर अनंद बधावा २
रामहिं देउं कालि युवराजू । सजहु सुलोचनि मंगल साजू ३
दलकिउठेउ सुनिहृदयकठोरा । जनु छुइगयउ पाक बरतोरा ४
ऐसिहु पीर बिहंसि उर गोई । चोरनारि जिमि प्रगटन रोई ५
लखैन भूप कपट चतुराई । कोटि कुटिल गुणगुरू पढ़ाई ६
यद्यपि नीति निपुण नरनाहू । नारि चरित जलनिधि अवगाहू ७
कपट सनेह बढ़ाइ बहोरी । बोली बिहंसि नयन मुखमोरी ८
दो० मांगु मांगुपै कहहु पिय कबहूं देहु न लेहु ।
देनकहेउ बरदान द्वय तेउ पावत संदेहु ॥ २ ॥

फिरि तो राजानें उसको सुहृद मनमें जान कर प्रेम पुलकित तन उज्ज्वलबाणी से कहा १ हे भामिनि आज तेरे मनका भाया हुआ देखो नगर में घरघर आनन्द बधावा होरहा है २ काल्हिमें रामचन्द्र को युवराज करूंगा तातें हे सुलोचनि तुमभी मंगल साजसजो ३ इस बचन के सुनतेही महा कठोर उसका हृदय कैसे धधकि उठा है जैसे पका बरतोरा फोरा बिशेष किसीसे छुइकर दुखता है ४ ऐसीदुस्सह पीरभी उसने पेटही में छिपारक्खी चोरकी नारि अथवा कुलटा जैसे प्रगट नहींरहती है ५ सो उसके कपट की चतुराई राजाने न लखि पाई क्योंकि कोटिन कुटिल गुण मंथरा

की पढ़ाई है ६ यद्यपि राजाभी नीतिमें प्रबीणहैं परंतुनारि चरित्र अथाह समुद्र है० बहुतसा कपट का सनेह फिर बढ़ाइ करनेच और मुख मोरि कर बोली ॥ ८ ॥ दोहा हंसि कर कहा कि हेपति मागुमांगु ही तुमसदा कहा करते हो परंतु देते लेते कभी नहींहो हमको तो बहुत काल से द्वय बरदान देने कहेहैं उमको भी पाने में संदेहही है ॥ २ ॥

जानेउं मर्म राउ हंसिकहही । तुमहि कोहाब परम प्रियअहही १
थाती राखिन मांगेहु काऊ । बिसरि गयउ मोहिं भोरसुभाऊ २
झूठहिं हमहिं दोष जनि देहू । द्वयके चारि मांगि किन लेहू ३
रघुकुल रीति सदा चलिआई । प्राणजाइ बरु बचन न जाई ४
नहिं असत्य सम पातक पुंजा । गिरि समहोंहिं किकोटिक गुंजा ५
सत्यमूल सब सुकृत सुहाई । बेद पुराण बिदित मुनि गाई ६
तेहिंपर राम शपथ करि आई । सुकृत सनेह अवधि रघुराई ७
बात दृढ़ाइ कुमति हंसिबोली । कुमत बिहंग कुलह जनु खोली ८
दो० भूप मनोरथ सुभग बन सुख सुबिहंग समाज ।
भीलिनि जिमि छाड़न चहति बचन भयंकर बाज ॥ ३

तबतो राजाने हंस करकहाकिमैंने सबमर्म जानलिया तुमकोकोह करना अतिही प्यारा है १ धरोहरि रखिकर तो कभी मांगीनहीं भोरे सुभाव से मेरेको भूलिगया २ झूंठेही को तो हमको दोष मत लगाओ द्वयके पलटे अब चारि मांग लीजिये ३ रघुकुल की तो यहरीति सदासे चली आई है कि प्राणभलेही जाइ परंतु बचन नहीं जाता है ४ क्योंकि असत्य के समान पातकों के समूह भी तो नहीं होते हैं जैसे कोटिन गुंजामिलने सेभी एक पर्बतके समान नहीं होते हैं ५ सत्यही समस्त सुकृतों को सुहाई मूल बेद पुराणों में बिख्यात है और सब मुनि जनों ने कही है ६ तिसपर रामचन्द्र की शपथ होचुकी है जो राम मेरे समस्त सुकृत और सनेह की अवधि हैं ७ ऐसी बात दृढ़करिके कुबुद्धिनी कैकेयी कैसे बचन बोलीहै मानोंकुमत के पक्षीकी टोपी खोलीहै ॥ ८ ॥ दोहा देखो राजाका मनोऽर्थ सुन्दर बन जो सुखके पक्षियों के समाज से भरा है उसआनन्द बिहंग समाज पर भीलिनी कीनाई महा भयंकर बचन रूपी बाजको छोड़ा चाहती है ॥ ३ ॥

सुनहु प्राण पति भावत जीका । देहु एक बर भरतहिं टीका १
मांगहुं दूसर बर कर जोरे । पुरवहु नाथ मनोरथ मोरे २
तापस बेष बिशेष उदासी । चौदह बर्ष राम बन बासी ३

सुनि सो बचन भूपउर शोकू । शशि करछुवत बिकल जिमिकोकू ४
गयेउसहमिनहि कछु कहि आवा । जनुसचानबन झपटेउ लावा ५
बिबरण भयउ निपटमहिपालू । दामिनि मनहुं हने तरुतालू ६
माथे हाथमूंदि दोउ लोचन । तनु धरि सोच लागुजनुसोचन ७
मोर मनोरथ सुर तरु फूला । फरतकरिनि जनु हतेंउसमूला ८
दो० कवने अवसर का भयउ गयेउं नारि बिश्वास ।
योग सिद्धि फल समय जिमि यतिहि अबिद्यानाश ॥ ४ ॥

सुनौ हे प्राणपति मेरे जीका भावता एक बर तो राज तिलक भरतको दीजिये १ और दूसरा बर मैं हाथ जोरि कर आप से मांगती सो मेरे मनोऽर्थ को आप पूरा ही करैं २ कि तापस वेष अर्थात् मुनि जनों का वृत्त बेष आहार और बिशेष उदासी ब्रह्मचारी होकर चौदह बर्षभर राम बनमें निवास करैं ३ इस दूसरे बचनके सुनते ही राजा के मनमें शोकही होगया जैसे चन्द्रमा की किरणों के छूतेही चक्रवाक व्याकुल हो जाता है ४ अतिही सहमिगया मुखसे कुछ भी न कहि आया मानों सचान अर्थात् बहीरी पक्षी बिशेष ने बन में लवाको झपट लिया ५ ऐसा बिबर्ण राजा हो गया मानों दामिनी ने ताल कावृक्ष मारा है ६ माथे पर तो दोनों हाथ धर लिये और दोनों आंखि मूंदिकर कैसे सोच करने लगा मानौ शरीर धरि कर सोचही सोचता है ७ देखौ मेरा मनोऽर्थ कल्पवृक्ष के समान कैसा सुन्दर फूला रहै फरते समय उसको मानों हथिनी ने मूलसे उखारि लिया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ कौनसुन्दर समय में क्या हो गया मैं ऐसा बुद्धिमान होकर स्त्रीके बिश्वास पर गया जैसे योग की सिद्धि के फलके समय यतीको अबिद्या माया नाश कर देती है ४ ॥

यहि बिधिराउमनहिं मनझाखा । देखि कुभांति कुमतिमनमाखा १
भरत किराउर पूत न होहीं । आनेहु मोल बेसाहिकि मोहीं २
जो सुनि शरअस लाग तुम्हारे । काहे न बोलेहु बचन सम्हारे ३
देहु उतरनहिं कहहुकि नाहीं । सत्य सिंधु तुम रघुकुल माहीं ४
देन कहेहु बर अबजनि देहू । तजहु सत्य जग अपयश लेहू ५
सत्य सराहि कहेहु बर देना । जानेहु लेइहि मांगि चबेना ६
शिविदधीच बलि जोकछुभाखा । तनधनतजा बचनपन राखा ७
अति कटु बचन कहति कैकेई । मानहुं लवण जरे पर देई ८
दो० धर्म धुरंधर धीर धरि नयन उघारे राउ ।

शिर धुनि लीन्ह उसास अति मारेसि मोहिं कुठाउ ॥ ५ ॥

इस प्रकार राजा मनही मन में अपने आपेहीपर झखा तबतो राजाको कुभांति देखि कर कैकेयी के मनमें.बड़ा क्रोध हुआ और बोली कि भरत क्या आपके पुत्र न होंगे और मेरे को क्या आप मोल बिसाहि लाये हैं १।२ जो भरत का राज तिलक सुनतेही आपके बाणसा लगा तो पहिले ही आप बिचारि कर क्यों न बोले रहें ३ अबभी क्या बिगरा है देने कहो नहीं तो यह कहो कि नहीं देंगे इस रघुकुल में आप तो बड़े सत्य सिंधु हैं ४ देने तो कहेही हैं परंतु अब भलेहीं मत देव सत्यको त्याग करो संसारमें अपयश लेओ ५ आपने तोअपने सत्यकी बड़ीप्रशंसाकरि के बर देने कहे रहें तो क्या यह जाना रहे कि कुछ चर चबेना मांगि लेगी ६ सत्य बोलना तो ऐसा होता है देखो राजा शिवि और दधीच राजा बलि ने जो कुछ कहा तोतन धन सर्बस्व का त्याग किया बचन का पन राखा ७ ऐसे अति ही कटु बचन कैकेयीने कहे मानों जरेहुये शरीर पर लवण लगाती है ॥ ८ ॥दोहा ॥ तबतो धर्म धुरंधर राजा ने धीरज धरिकर नेत्र खोलेऔर शीश धुनि कर अति उसास लेने लगे कि मेरे को इस पापिनी ने कुठौर मारा ॥ ५ ॥

आगे देखि जरति रिसभारी। मनहुं रोषतरवारि उघारी १
मूंठि कुबुद्धि धार निठुराई। धरी कूबरी सान बनाई २
लखी महीप कराल कठोरा। सत्यकि जीवन लेइहि मोरा ३
बोलेउ राउ कठिन करिछाती। बाणी बिनय न ताहि सुहाती ४
प्रियाबचन कसकहसि कुभांती। प्रीति प्रतीत रीति करिहांती ५
मोरे भरत राम द्वय आंखी। सत्यकहौं करि शंकर साखी ६
अवशि दूत मैं पठउब प्राता। अइहहिं बेगि सुनत दोउ भ्राता ७
सुदिन साधि सबसाज सजाई। देहौं भरतहिं राज बड़ाई ८
दो० लोभन रामहिं राजकर बहुत भरतपर प्रीति।
मैंबड़ छोट बिचारकरि करत रहेउं नृपनीति॥ ६ ॥

जो राजाने आंखि खोलीतो उसकोमहाभारी रिससे जरतीहुई सामुहें देखा मानों रोषकी नग्न तरवारिहोहै १ कुबुद्धितो उसकी मूंठिहै और निठुरता निशित धारहै और कूबरी सानिपर पैनाइधरीहै २ राजाने उसको महाकराल कठोर लखिकर जाना कि यह सांचहूं मेरे सत्यको अथवा मेरे प्राणोंको लेवेगी ३ तौभी राजा कठिन छाती करिकर अति नम्र बिनयरूपी बाणी बोलातौभी निर्दयनीको नहींसुहाती है ४ हे प्रिया तू कैसे कुभांतिबचनकहतीहै मेरी प्रीति प्रतीतिकी रीतितूने सबभुलादी५ मेरेतोभरत और

राम दोनों आखों के समानही प्यारे हैं यह मैं शिव जीको साक्षी करके कहताहूं ६ सो प्रात होतेही में दूतोंको अवश्य भरत के पास भेजूंगा सुनतेही दोनों भाई बेगि आवैंगे ७ तब शुभ दिन साधिकर और सब समाज साजि कर राज पदवी भरत ही को दूंगा ॥ ८ ॥ दोहा ॥ राम को तो कुछ राज का लोभ भी नहीं है और भरत परतो बड़ी प्रीति करते हैं मैंहीं उनको छोटा बड़ा बिचारि कर राजनीति के अनुसार राम को तिलक करता रहूं ॥ ६ ॥

राम शपथ शत कहौं सुभाऊ। राम मातु मोहि कहान काहू १
मैंसब कीन्ह तोहि बिनु पूंछे । ताते परेउ मनोरथ छूंछे २
रिसपरि हरि अब मंगल साजू । कछुदिन गये भरत युवराजू ३
एकहि बात मोहिं दुख लागा । बर दूसर असमंजस मांगा ४
अजहूं हृदय दहत तेहिं आंचा । रिसपरिहास कि सांचहुंसांचा ५
कहुतजि रोष राम अपराधू । सब कोउ कहै राम सुठि साधू ६
तुहूं सराहसि करसि सनेहू । अब सुनि मोहिं परम संदेहू ७
जासु सुभाव अरिहु अनुकूला । सोकिमिकरहि मातुप्रतिकूला ८
दो० प्रियाहास रिस परिहरहु मांगु बिचारि बिवेक ।
जेहिं देखहुं अब नयन भरि भरत राज अभिषेक ॥ ७ ॥

रामचन्द्र की सौ शपथ करिके सत्य सुभाव कहता हूं कि राम की माता ने जो मेरेसे कभी कुछ कहा हो १ मैंने यह सब तेरे बिना पूंछे किया इसीसे यह मेरा मनोऽर्थ व्यर्थ होगया २ ताते तुम रिस को त्यागकर अब मंगल साज सजो कुछदिन बीते भरतही युवराज होंगे ३ दुखतो मेरेको एकहीबातका लगाहै कि दूसराबरतुमने कठिन मांगा है ४ अबभी मेरा हृदय उसकी आंचसे जराजाता हैसो रिसहै कि परिहास है कि सांचहूं सांचही है ५ भला रिसको छोड़ि कर रामका अपराध तो बताओ रामको तो सबकोई अतिही साधु कहतेहैं ६ तूभी तो उनको सराहती रहै और बड़ा सनेह करती रहे आज तेरे ये बचन सुनि कर मेरेको बड़ा संदेह है ७ जिन राम का सुभाव बैरियों को भी सदा सानुकूलही रहता है सो भला माता के प्रतिकूल कैसे करेंगे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ताते हे प्रिया जो हास्य है तोउसका त्याग करो और जो रिस है तोभी त्याग करो जिससे नेत्रों भरिकर अब मैं भरतके राजतिलक को देखूं ॥ ७ ॥

जियै मीन बरुबारि बिहीना । मणि बिनुफणिक जियै दुखदीना १
कहौं सुभाव न छल मन माहीं । जीवन मोर राम बिनु नाहीं २
समुझि देखु चित प्रिया प्रवीना । जीवन राम दरश आधीना ३

सुनिमृदुबचनकुमति अतिजरई । मनहुं अनलआहुतिघृतपरई ४
कहउ करहु किनि कोटि उपाया । यहांनलागिहिराउरिमाया ५
देहु कि लेहु अयश करि नाहीं । मोहिं न बहुत प्रपंच सुहाहीं ६
राम साधु तुम साधु सयाने । राम मातु हम भल पहिचाने ७
जस कौशला मोर भल ताका । तसफल देहुंउनहिंकरिशाका ८
दो० होत प्रात मुनि बेष धरि जो न राम बन जाहिं ।
मोर मरण राउर अयश नृप समुझेउ मन माहिं ॥ ८ ॥

मछली जल बिना भलेही जिये ओर सर्पभी मणि बिनादीन दुखित होकरभलेही जियै परंतु मैं छल छोड़ि कर सुभावही से कहता हूं कि मेरा जीवन राम बिना न होगा ॥ १ । २ हे प्रवीण प्रिया तू अपने चित्तहीं में समुझि ले कि मेरा जीवन तो राम के दर्शनही के आधीन है ॥ ३ ॥ ऐसे कोमल राजा के बचन सुनि कर भी कुबुद्धिनी ओर भी जरने लगी मानों जरती हुई अग्नि में घीकी आहुति देदी ॥ ४ बोली कि अब तुम कोटि उपाय क्योंन करो तुम्हारी माया मेरेको नहीं लगेगी ५ ॥ के तो जो बरदान देने कहे हैं सो देहु के नाहीं करिके अपयश लेहु मेरेको बहुत से प्रपंच नहीं सुहाते हैं ॥ ६ ॥ एक तो राम साधु हैं दूसरे तुम साधु हो तीसरी राम की माता साधु हैं अब तो मैंनेये तीनों साधु भली भांति पहिचाने हैं ॥ ७ ॥ सो जैसा कुछ कौशल्या ने अपने साधु सुभाव से मेरा भला तका है तैसा फल उन को शाकाकरिके दूंगी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ प्रात होतेही मुनिका बेष धरिके जोरामबनको न जाइगे तो मेरा मरना ओर तुम्हारा अपयश होगा यह समुझि रखना ॥ ८ ॥

अस कहि कुटिल भई उठि ठाढी । मानहुं रोष तरंगनि बाढ़ी १
पाप पहार प्रगट भइ सोई । भरी क्रोध जल जाइ न जोई २
दोउ बर कूल कठिन हठ धारा । भंवर कूबरी बचन प्रचारा ३
ढाहति भूप रूप तरु मूला । चली बिपति बारिध अनुकूला ४
लखी नरेश बात सब सांची । तिय मिस मीच शीश पर नांची ५
गहि पद बिनय कीन्ह बैठारी । जनिदिन करकुल होसिकुठारी ६
मांगै माथ देउं मैं तोहीं । राम बिरह जनि मारेसि मोहीं ७
राखु रामकहं जेहिंतेहिंभांती । नाहि तौ जरहि जन्म भरिछाती ८
दो० देखी ब्याधि असाध्य नृप परेउ धरणि धुनि माथ ।

कहत परम आरत बचन राम राम रघुनाथ ॥ ६ ॥

ऐसे कहिकर कुटिल कैकेयी उठकर कैसी ठाढ़ी हुई है मानों रोषकी नदीही बढ़ी है ॥ १ ॥ पाप के पर्बत से तो प्रगट हुई है और क्रोध के जल से कैसी भयंकर भरी है कि देखीही नहीं जाती ॥ २ ॥ दोनों बर जिसके तट हैं और महा कठिन हठही घोरधार है कुबरी के सिखावन के बचन उसके चक्रावर्त्तों का प्रचार है ॥ ३ ॥ ऐसी रोष रूपी महाघोर नदी दशरथ रूपी बृक्षकी मूल को ढाहती हूई बिपत्ति के समुद्र को चली ॥ ४ ॥ राजा ने जो उस महा कराल कठोर को देखा जाना कि यह मेरी मृत्यु इसके बहानेसे मेरे शीश पर आई है ॥ ५ ॥ तबतो उसको बैठारा और पाउं पकरि कर बिनती करिके कहा कि इस दिनकर कुल की कुठारी मत होजा ॥ ६ मैं तेरे मांगने से अपना माथा भी दे सक्ताहूं परंतु राम के बियोग से तू मेरेको मत मारे ॥ ७ ॥ जैसे तैसे किसी प्रकारसे तू रामको घर रहने दे नहीं तो फिर जन्म भर तेरी छाती जरैगी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जब राजा ने उस को असाध्यब्याधि देखा तबतो परम आरत हा रामहा राम हा रघुनाथ ऐसे कहिकर शीशको धुनते हुये पृथ्वीमें गिरिपरे ॥ ६ ॥

व्याकुलराउशिथिलसबगाता। करिणिकलप तरुमनहुंनिपाता १
कंठसूख मुख आव न बानी। जिमि पाठीन दीन बिनुपानी २
पुनि कहकछु कठोर कैकेई। मर्म पाछि जनु माहुर देई ३
जो अन्तहु अस करतब रहेऊ। मांगु मांगु तुम केहि बल कहेऊ ४
द्वयकि होहिं एकसमय भुआलू। हंसब ठठाइ फुलाउब गालू ५
दानि कहाउब अरु कृपणाई। चाहिय कुशल क्षेम रौताई ६
छांड़हु बचन कि धारज धरहू। जनि अबलाजिमि कारुण करहू ७
तन तिय तनय धामधन धरणी। सत्य सिंधु कहं तृणसम बरणी ८
दो० मर्म बचन सुनि राउकह कछुक दोष नहितोर ।
लागेउ तोहिं पिशाच जिमि काल कहावत मोर ॥ १० ॥

अब तो राजा महा ब्याकुल हैं सब अंग कैसे शिथिल होगये हैं मानो हथिनी ने कल्पवृक्ष को उखारि गेराही है १ कंठ तो सूखि गया है मुख से बोला नहीं जाता है जैसा पाठीन मीन जलबिना दीन होता है २ तिसपर भी कैकेयी ने कठोरही बचन कहे जैसे कोई घावको पोंछिकर लवण भरता है ३ अंत को जो तुम्हारा ऐसाही कर्त्तब रहे तो मांगु मांगु तुमने किसके बलसे कहा रहे ४ दोनों बातें हे राजन् एकही साथ कैसे हो सक्ती हैं अट्टहास से हंसना और गालों को फुलावना ५ कृपणाई करो और दानी कहाया चाहो रावत भी बना चाहो और

कुशल क्षेम भी चाहो यहतो असंभव है ६ तातें याते. सत्यका त्यागकरो नहीं तो धीरज धरो अबला की नाईं कारण कर करके रुदन मत करो ७ सत्यसिंधु पुरुषों को तो शरीर, स्त्री, पुत्र, धन, धाम, धरणी सब तृणके समान कहे हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसे मर्म बेधक वचन सुनकर राजाने कहा तेरा कुछभी दोष नहीं है यह तो मेरा काल तेरे को पिशाच के समान लगा है सो ऐसा कहावता है ॥ १० ॥

चहत न भरत भूपपद भोरे । बिधि बशकुमति बसी उर तोरे १
सो सब मोर पाप परिणामू । कछुन बसाइ भयउ बिधि बामू २
सुबस बसिहि फिरि अवध सुहाई । सब गुणधाम राम प्रभुताई ३
करिहैं भाइ सकल सेवकाई । होइहि तिहुं पुर राम बड़ाई ४
तोर कलंक मोर पछिताऊ । मुयेहु न मिटहि न जाइहि काऊ ५
अब तोहि नीक लाग करुसोई । लोचन ओट बैठु मुख गोई ६
जबलगि जियौं कहौं करजोरी । तबलगि जनि कछु कहसि बहोरी ७
फिरि पछितैहसि अंतअभागी । मारेसि गाय नाहरू लागी ८
दो० परेउ राउ कहिकोटि बिधि काहे करसि निदान ।
कपट चतुर नहिं कहति कछु जागति मनहु मसान ॥११॥

भरत तो राजपदको सपने में भी नहीं चाहते यह कुमति तो तेरेही हृदय में बिधाता की बामगतिसे उत्पन्न हुई है १ सो यह सब मेरे पापों का ही परिपाक फल है जबजिस को बिधाता बामहोताहै तब उसका कुछभी नहीं बसाता है २ अयोध्या तो क्लेश सहिसहाइ कर फिरि सुबासही बसैगी और समस्त गुण निधान रामही की प्रभुताई होगी ३ तीनों भाई तन, मन से रामकी सेवकाई ही करेंगे और तीनों लोकों में रामही की बड़ाई होगी ४ परंतु तेरा तो यह कलंक और मेरा पछितावा मरने परभी नमिटेगा न कभी जावेगा ५ अब तेरे को जो रुचे सो कर परंतु मुंहछिपा करमेरी आखों की ओट जाबैठ ६ अब तुझसे हाथ जोरि कर कहताहूंकि जबतक मैं जीत रहूं तबतक फिरि कुछन कहना ७ अंतको हे अभागिनि तूफेरिऐसी पछितावेगी जैसे कोई अल्पचर्म रज्जु के लिये गाइ को मारि कर पछिताता है ८ ॥ दोहा ॥ इस प्रकार कोटि भांति से राजा समुझाइ हारा कि क्यों इस घराने का अंतकिये देतीहै परंतु कपट में बड़ी चतुर कैकयी कुछ भी नहीं कहती है जैसे मसान जगाती है ॥ ११ ॥

राम राम रटि बिकल भुआला । जनुबिनु पंख बिहंग बिहाला १
हृदय मनाव भोर जनि होई । रामहिं जाइ कहै जनि कोई २

उदयकरहु जनि रबिकुल गूरा । अवधि बिलोकि शूलहोइ ऊरा ३
भूप प्रीति कैकेयि कठिनाई । उभय अवध बिधि रची बनाई ४
बिलपत नृपहिं भयउ भिनसारा । बीणा बेणु शंख धुनि द्वारा ५
पढ़हिं भाटगुणगावहिं गायक ।सुनतनृपहिं लागहिं जनुशायक ६
मंगल सकल सुहाइ न कैसे । सहगामिनिहिं बिभूषण जैसे ७
तेहिं निशि नींद परी नहिं काहू । राम दरश लालसा उछाहू ८
दो० द्वार भीर सेवक सचिव कहहिं उदय रबि देखि ।
जागे अजहुं न अवधि पति कारण कवन बिशेखि ॥ १२ ॥

अब तो राजा राम राम रटिरहा है जैसा पंखो बिना पक्षी बिकल होता है १ हृदय में यह मनाता है कि प्रात न होवे और कोई राम से न जा कहे २ सूर्य्य सविता से कहता है कि हे कुलगुरु आप उदय न कीजिये क्योंकि अयोध्या को देखि कर आप के हृदय में शूल होगा ३ राजा की प्रीति तो प्रीति की ओरकैकेयी की कठोरता कठोरता की बिधाता ने दोनों अवधि बनाइ कर रचीहैं ४ इस प्रकार राजा को बिलाप करते २ प्रात:काल हुआ तब तो द्वार पर बीणा, बांसुरी, शंख बाजने लगे ५ भाट बिरदावली पढ़ने लगे, गायक यश गाने लगे सो सुनतेही राजा के हृदय में बाण से कसकने लगे ६ समस्त मंगल राजा को कैसे नहीं सुहाते हैं जैसे सहगामिनी सती को आभूषण नहीं भाते हैं ७ उसराति राम के दर्शन की लालसा के उत्साह में किसी को नींद भी नहीं परी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ द्वार पर राजा के सेवक सचियों की बड़ी भीर हो रहीथी ते सूर्य्योदय को देख कर कहते हैं कि आज राजा अभी तक नहीं जागे इस का क्या कारण है ॥ १२ ॥

पछिलेपहर भूपनितजागा । आज हमहिं बड़ अचरज लागा १
जाहु सुमंत जगावहु जाई । कीजिय काज रजायसु पाई २
गे सुमंत नृप मंदिर माहीं । देखि भयानक जात डराहीं ३
धाइ खाइ जनु जात न हेरा । मानहु बिपति बिषाद बसेरा ४
पूंछत कोउ न उत्तर देई । गे जेहिं भवन भूप कैकेयी ५
देखि भूप गति गयउ सुखाई । कहि जय जीव बैठ शिरनाई ६
शोकबिकल बिबरण महिपरेऊ । मानहुं कमलमूल परिहरेऊ ७
सचिव सभीत सकै नहिं पूंछी । बोली अशुभ भरी शुभ छूंछी ८

दो० परी न राजहिं नींद निशि हेतु जान जगदीश ।
राम राम रटि भोर किय कहेउ न मर्म महीश ॥ १३ ॥

राजा तो राति के पिछले पहरे नित्यजागते रहें आज ऐसे आवश्यक काज में न जागे हम को बड़ा आश्चर्य्य है १ तातें हे सुमंत तुम जाओ और राजा को जगा लाओ तो आज्ञा मांगि मांगि कर सब काज कियाजावे २ ऐसे सबों के बचन सुमंत सुनके जो रनिवास में गये तो सब ओर भयानक देखकर जाते हुये डरने लगे ३ मंगल भवन कैसा अमंगल हो गया है मानों दौरेखाये लेता है और बिपत्तिबिषाद का निवासही है पूंछने से कोई उत्तरही नहीं देता है तबतो जिस भवन में राजा और कैकेयी रहे तहां चले गये ५ राजा की दशा देखतेही सुमंत सूखि से गये और जय जीव कहिकर शिरनवाइ कर बैठ गये ६ शोक में तो राजा व्याकुल हैं और बिवर्ण पृथ्वी पर परे हैं मानों कमल ने मूल का त्याग किया है ७ मंत्री तो भय से पूंछ भी नहीं सकता है तबतो अमंगल की भरी मंगलसे छूंछी, रीती, कैकयी बोली ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सुनो हे सुमंत आज राति भर राजा को नींद नहीं परी है कारण तो दैव जाने क्या है परन्तु राम राम रटि के राति काटी मर्म कुछ नहीं राजा ने कहा है ॥ १३ ॥

आनहु रामहिं बेगि बुलाई । समाचार तब पंछेहु आई १
चले सुमंत राउ रुख जानी । लखी कुचाल कीन्ह कछु रानी २
सोच बिबश मगु परै न पाऊ । रामहिं बोलि कहहिं का राऊ ३
उर धरि धीरज गयउ दुआरे । पूछहिं सकल देखि मनमारे ४
समाधान मनकरि सबहीका । गयउ जहां दिनकर कुलटीका ५
राम सुमंतहिं आवत देखा । आदर कीन्ह पिता सम लेखा ६
निरखि बदन कहि भूप रजाई । रघुकुल दीपहिं चलेउलिवाई ७
राम कुभांति सचिव संगजाहीं । देखि लोग जहंतहं बिलखाहीं ८
दो० जाइ दीख रघुबंश मणि नृपतिहिं निपट कुसाज ।
सहमि परेउ लखिसिंहनिहिं मनहुंवृद्ध गजराज ॥ १४ ॥

तातें प्रथम राम को बेगि बुला लाओ तब आकर समाचार पूंछना १ सुमंत यह जानकर चले कि राजा का भी यही अभिप्राय होगा परंतु यह तो जानही गये कि कुछ रानीही की कुचालि है २ सोच में व्याकुल मार्ग में पांउ नहीं परते हैं कि राम को बुलाकर राजा जाने क्या कहैंगे ३ बड़ी धीर धरिकर द्वारे पर गये तबतो उन को मन मारे देख कर सब पूंछने लगे ४ सुमंत उन सबों का समाधान

करिके रामके पास गये ५ रामचन्द्र ने जब सुमंत को आवते देखा अतिही आदर किया और पिता के समान जाना ६ सुमंतुने राम की ओर देख कर राजा की आज्ञा कही और राम को साथ लिवाले चले ७ राम जो राजा के सोच से मंत्री के साथ उदास चले जाते हैं यह देखकर लोग जहां तहां बिलखाते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जाकरिके रघुबंशमणि रामचन्द्र ने राजा को निपटही कुसाज कैसा देखा है मानों सिंहिनी को देख कर महा वृद्ध गजराज ही परा है ॥ १४ ॥

सूखे अधर जरे सब अंगा । मनहुं दीन मणि हीन भुजंगा १
सरुष समीप दीख कैकेई । मानहु मीच घरी गणि लेई २
करुणा मय रघुनाथ सुभाऊ । प्रथम दीख दुखसुना न काऊ ३
तदपि धीरधरि समय बिचारी । पूंछा मधुरबचन महतारी ४
मोहिकहु मातु तातदुख कारण । करियजतन जेहिहोइनिवारण ५
सुनहु राम सब कारण येहू । राजहिं तुम पर बहुत सनेहू ६
देन कहे मोहि द्वयबरदाना । मांगेउं जो कछु मोहि सुहाना ७
सोसुनि भयउभूप उर सोचू । छांडि न सकहिं तुम्हार सकोचू ८
दो० सुत सनेह इत बचनउत संकट परेउ नरेश ।
सकहु तो आयसु धरहु शिर मेटहु कठिन कलेश ॥ १५ ॥

ओंठ जिसके सूखे हैं और अंग सब जरते हैं मानों मणिके बिना नागराज ही महादीन होरहा है १ और रोष भरी समीपही कैकेयी कैसी देखी है मानों मृत्युही स्वासोंकी घड़ी गनिकर प्राण लियेही लेती है २ रामचंद्र को एकतो अति करुणामय स्वभाव तिसपर प्रथम यही दुःख देखा है जो कभी सुनाभी न रहै ३ तौभी समय बिचारि धीर धरि कर अति मधुर बचनों से माता से पूंछा ४ हेमाता पिता के दुःखका कारण तो मुझसे कहो जिस यत्नसे निवारण हो सो किया जावै ५ यह सुन कर कैकेयी ने कहा सुनौ हेराम कारण सब यह है कि राजा को तुमपरबड़ा प्रेम है ६ मेरे को राजा ने दो बरदान देने कहे रहें राति जो मेरे मनमें भाये सो मैं ने मांगि लिये ७ सो सुन कर राजाको बड़ा सोचहोगया है कि तुम्हारा सकोच छोड़ि नहीं सकते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इधर तो पुत्र का प्रेम उधर सत्य बचन का निबाह इस संकट में राजा परे हैं जो तुमसे होसके तो उनकी आज्ञा को शिरपर धारण करो सब उनका यह कठिन कलेश मिट जावेगा ॥ १५ ॥

निधरक बैठि कहति कटुबानी । सुनत कठिनताअतिअकुलानी १
जीह कमान बचन शरनाना । मनहुं भूप मृदुलच्छ समाना २

जनु कठोर पन धरे शरीरा। सिखै धनुष बिद्याबर बीरा ३
सब प्रसंग रघुपतिहिं सुनाई। बैठि मनहुं तनुधरि निठुराई ४
मन मुसुकाइ भानु कुल भानू। राम सहज आनन्द निधानू ५
बोले बचन बिगतसब दूषण। मृदुमंजुल जनुबाग बिभूषण ६
सुनुजननी सोइ सुतबड़भागी। जोपितु मातु चरण अनुरागी ७
तनय मातु पितु पोषण हारा। दुर्लभ जननि सकल संसारा ८
दो० मुनिगण मिलन बिशेष बन सबहिं भांति भलमोर।
तेहिंमहंपितु आयसु बहुरि सम्मत जननी तोर॥ १६॥

ऐसे कटुबचन बैठीहुई निधरक कहती है जिनको सुनकर कठिनता भी अकुलाती है १ जीह तो उसकी धनुष है, कठोर बचन भांति भांति के बाण हैं और राजा मानों अति कोमल बोझा हैं, कठोर पन बड़ा बीर है सो मानों शरीर धरिकर धनुष बिद्या सीखता है २॥३ इसप्रकार समस्त प्रसंग कि मैनेभरत को राज्य और तुमको चौदह बर्षका बनबास राजा से मांगा है सुनाकर सशरीर निठुराई की नाईं बैठि रही ४ तबतो भानुकुल कमल के भानु रामचन्द्र सुभावही ते आनन्द निधान मनमें मुसुकाइ कर समस्त दूषण रहित अतिही कोमल उज्ज्वल बचन बोले मानों बाणी के आभूषणही हैं ५६ सुनु हेमाता पुत्रतो सोई बड़भागी है जो माता पिता के चरणों का अनुरागी होता है ७ माता, पिता का आनन्ददायक पुत्र तो हे माता समस्त संसार में भी दुर्लभ है॥ ८॥ दोहा॥ बनमें मुनिगणों कातो मिलना और मेरा सब भांति से बिशेष भला होगा तिसपर पिता की आज्ञा है और हेमाता तेराभी सम्मत है॥ १६॥

भरत प्राण प्रियपावहिं राजू। सबहिभांति बिधिसम्मुखआजू १
जो न जाउं बन ऐसेहु काजा। प्रथमगणिय मोहि मूढ़समाजा २
सेवअरंड कल्प तरु त्यागी। परिहरि अमृत लेहिं बिषमागी ३
तेउनपाइ अससमय चुकाहीं। देखु बिचारि मातु मन माहीं ४
एकहिंदुख मोहिमातु बिशेषी। निपट बिकल नरनायक देखी ५
थोरी बात पितहिं दुख भारी। होति न मोहि प्रतीति महतारी ६
राउ धीर गुण उदधि अगाधू। भा मोते कछु बड़ अपराधू ७
ताते मोहि न कहत कछुराऊ। मोरिशपथतोहिं कहु सतिभाऊ ८

दो० सहज सरल रघुबर बचन कुमति कुटिल करिजान।
चलैजोंक जिमिवक्र गति यद्यपि सलिल समान ॥ १७ ॥

मेरे प्राण प्यारे भरत भाई को राज का लाभ होगा सब भांति मेरे को तो बिधाता आज सन्मुखही हैं १ ऐसे उत्तम काज के लिये भी जो मैं बनको नजाऊं तो मूढ़ों की समाज में प्रथम गणना मेरी होगी २ जो मूढ़ कल्प बृक्ष को छोड़िकर अरंड को सेवते हैं और अमृत के पलटे बिष ले लेते हैं ३ तेभी तो ऐसा समय पाइकर नहीं चूकते हैं हे माता तू अपने मनमें बिचारि देखु कि मैं ऐसी बड़ी लाभ के लिये बन क्यों नहीं जाऊंगा ४ परंतु हे माता मेरे को तो एकही बात का बिशेष दुःख राजा को अति व्याकुल देखि कर होता है ५ यह बात तो अतिही थोरी है पर पिता को महा भारी दुःख है ताते तेरे इस कहने पर मेरे को प्रतीति नहीं होती है ६ राजा तो बड़े धीर और गुणों के अगाध समुद्रहैं इस बातसे ऐसे दुखी न होते यह तो मेरेसे कुछ बड़ा अपराध हुआ है ७ इसीसे राजा मेरे को कुछ नहीं कहते हैं मेरी शपथ है तूसतिभाव कहि दे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सहज सूधे रामचंद्र के बचनों को भी कुमति ने कुटिलही जाने जैसे जोंक समान जल में भी बक्रही चलती है तैसेही निर्ब्यलीक रामचन्द्र के साथ भी छलही से बोली ॥ १७ ॥

रहसी रानि राम रुख पाई। बोली अधिक सनेह जनाई १
शपथ तुम्हारि भरथकी आना। हेतु न दूसर मैं पहिचाना २
तुम अपराध योग नहि ताता। जननी जनक बंधु सुखदाता ३
राम सत्य सब जो कछु कहहू। तुमपितु मातु बचन रत अहहू ४
पितहिं बुझाइ कहहु बलिसोई। चौथेपनजेहिं अयश न होई ५
तुमसम सुवन सुकृत जिन्हदीन्हे। उचित न तासुनिरादर कीन्हे ६
लागहिं कुमुखि बचन शुभ कैसे। मगह गयादिक तीरथ जैसे ७
रामहिं मातु बचन सब भाये। जिमि सुरसरि गत सलिल सुहाये ८
दो० गइ मुर्छा रामहि सुमिरि नृपफिरि करवट लीन्हि
सचिव राम आगमन कहि बिनयसमय सम कीन्ह॥ १८ ।

तबतो कैकेयी राम का हार्द पाकर बड़ी प्रसन्न हुई और सदा से अधिक स्नेह जन
कर बोली १ हे राम मेरे को तुम्हारी और भरत की शपथ है दूसरा और कार
मैंने नहीं जानि पाया २ और हे तात तुमतो सदा माता पिता भाइयों के आनन्ददात
हो अपराध योग कदापि नहीं हो ३ हे राम तुमजो कुछ कहतेहो सो सब सत्यही
तुम तो सदा माता पिता के आज्ञाकारीहो हो ४ ताते मैं तुम्हारी बलिजाऊं पित

को समुझा कर सोई कहो जिससे चौथेपन में इनका अयश न होजावे ५ जिनने तुम सरीखे सुकृत पुत्र हमको दियेहैं उनका निरादर करना हमको उचित नही है ६ उस कुमुखी के कुमुख में शुभ बचन कैसे लगते हैं जैसे मगध कुदेश में गयादिक शुभ तीर्थहैं ७ रामचंद्र को माता के अनहित बचन भी हितही होगये जैसे सुरसरी में मिलने से अपावन जल भी पावनही होजाताहै॥ ८ ॥ दोहा ॥ इतने मेंराजा की जब मूर्छा जागी तबतो फिरि कर राम राम कहते हुये करवटली और सुमंत ने राम का आगमन कहि कर समय अनुसार बिनती करी ॥ १८ ॥

जबनृप अकनि राम पगधारे। धरि धीरज तब नयन उघारे १
सचिव संभारि राउ बैठारे। चरण परत नृप राम निहारे २
लिये सनेह बिकल उरलाई। गइमणिफणिक बहुरिजनुपाई ३
रामहिं चितै रहे नर नाहू। चला बिलोचन बारि प्रबाहू ४
शोक बिकल कछु कहैन पारा। हृदय लगावत बारहिं बारा ५
बिधिहिं मनाव राउ मनमाहीं। जेहिंरघुनाथ न कानन जाहीं ६
सुमिरि महेशहिंकहहिं निहोरी। बिनती सुनहु सदाशिव मोरी ७
आशु तोष तुम औघड़ दानी। आरति हरहु दीन जनजानी ८
दो० तुम प्रेरक सबकेहृदय सोमति रामहिं देहु
बचन मोर तजिरहहिं गृह परिहरि शील सनेहु ॥१९॥

जबराजा ने राम आये सुने तबतो धीरज धरिकर नेत्र खोले १ सुमंत ने सम्हारि कर राजा कोउठाय बैठारा उस समय राजाने पैरों परते राम को देखा २ सनेह में व्याकुल राजाने उठा कर छाती से लगालिया मानों खोई मणि सर्पने फेरिपाई ३ राम को राजा देखतेही रहिगये और दोनों नेत्रोंसे जलके प्रवाह चले ४ शोक में विकल कुछ कहितो सकते नहींहैं बारंबार हृदयही से लगा लगा लेते हैं ५ बिधाता को राजा मनहीं में मनाते हैं जिससे राम चंद्र बनको न जावें ६ फिरि महादेव का भी स्मरण करि निहोरि करकहा कि हे शिव शंकर स्वामी मेरी बिनती आप सुनिये ७ आपतो बड़े दीनदयाल शीघ्र प्रसन्न होजाते हो सर्वस्व दातार हो मेरेको दीनजन जानिकर इस मेरी आर्त्ति को निवारण कीजिये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ आपतो सबके हृदय के प्रेरक हो ऐसी बुद्धि रामको दीजिये कि मेरे बचन शील सनेह सबको त्याग करिके घरही में रहें बनको न जावें ॥ १९ ॥

अयश होइ बरु सुयश नशाऊं। नर्क परहुं बरु पुरसुर जाऊं १
सब दुख दुसह सहावहु मोहीं। लोचनओट राम जनि होहीं २

अस मन गुणत राउनहिं बोला । पीपरपात सरिस मनडोला ३
रघुपतिपितहिं प्रेम बशजानो । पुनि कछुकहेउमातु अनुमानी ४
देश काल अवसर अनुसारी । बोले बचन बिनीति बिचारी ५
तात कहौं कछु करहुं ढिठाई । अनुचित क्षमेहु जानिलरिकाई ६
अतिलघुबातलागिदुखपावा । काहेन कहिमोहि प्रथमजनावा ७
देखि गुसाइहिं पूंछेउ माता । सुनि प्रसंग भा शीतल गाता ८
दो० मंगल समय सनेह बश सोच परि हरिय तात ।
आयसु देइय हर्षि हिय कहि पुलके प्रभु गात ॥ २० ॥

संसार में अप यश मेरा भलेही होजाइ और सुयश भी नाश हो जाइ नर्क में भलेही परूं सुरपुर बास भी मेरा जाता रहै १ ये सब दुस्सह दुःख मेरे को हे विधाता भलेही सहाओ परंतु मेरे नेत्रों के ओझिल राम न होंय २ इस प्रकार राजा मनही में गुणतेहैं बोलते कुछ नहीं हैं पीपर के पत्तों के समान मन चला चला फिरता है ३ रामचन्द्र पिता को प्रेमके बश जानिकर और जो कुछ माताने कहा रहै उसको बिचार कर देश काल समय के अनुसार नीत बिचारि कर बोले ४ । ५ हे पिता मैं कुछ ढिठाई करिके आप के बिना पूछे कहता हूं मेरे इस अनुचित को लरिकाई जानि कर क्षमा करना ६ अतिही अल्पबात के लिये आप ने इतना दुःख क्यों पाया प्रथमही मेरे को कहि कर क्यों नही जताय दिया ७ आपकी यह दशा देखिकर माता से पूंछा तब यह प्रसंग सुनिकर मेरा शीतल गात हुआ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ यह तो सुयश बिबर्द्धन मंगल समय है ऐसा बिचार कर स्नेह के बश आप सोच न कीजिये प्रसन्न मन होकर मुझ को आज्ञा दीजिये ऐसे कहि कर रामचन्द्रपुलकित गात होगये ॥ २० ॥

धन्य जन्म जगतीतल तासू । पितहिं प्रमोद चरित सुनिजासू १
चारि पदारथ करतल ताके । प्रियपितु मातु प्राणसम जाके २
आयसु पालि जन्म फल पाई । ऐहौं बेगिहिं होइ रजाई ३
बिदा मातुसनआवहुं मागी । चलिहौं बनहिं बहुरि पगलागी ४
अस कहिरामगमन तबकीन्हा । भूप शोकबश उतर न दीन्हा ५
नगरब्यापिगइबात सुतीछी । छुवत चढ़ै जिमिसबतन बीछी ६
सुनिभय बिकलसकलनरनारी । बेलिबिटपजिमिलागिदवारी ७
जो जहं सुनै धुनै शिर सोई । बड़ बिषाद नहिं धीरज होई ८

दो० मुख सुखाहिं लोचन श्रवहिं शोक न हृदय समाइ ।
मानहुं करुणा रस कटक उतरेउ अवध बजाइ ॥ २१ ॥

इस पृथ्वीतल में हे तात उसी पुत्र का तो धन्य जन्म है जिस के चरित्रों को सुनि कर पिता को आनन्द होवे १ चारों पदार्थ उस पुत्र के हाथही में होते हैं जिस पुत्र को मातापिता प्राणों के समान प्यारे होवें २ आप की आज्ञा को पूरा करि और जन्म का फल पाकर बेगिहीबनसे आजाऊंगा आपआज्ञादीजिये ३ अबमैं माता से भी बिदा हो आऊं फिरि आप के चरण बंदिकर बन को जाऊंगा ४ ऐसेकहि कर रामने माता के पास को गमन किया राजा ने शोक के बश कुछ उत्तर न दिया ५ नगर में यह बिषभरी महा तीक्ष्ण बात तुरंत कैसे व्यापि गई जैसे बीछी छूतेही सब अंग में चढि जाती है ६ सोतो सुनतेही नगर के सब नर नारी कैसे व्याकुल हो गये हैं जैसे बृक्ष और बेली बन मेंदावाग्नि के लगने से जरने लगते हैं ७ जो जहां सुनता है सो तहीं शिर धुनता है महा बिषाद के मारे धीरज होताही नहीं है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ मुख तो सब के सूखते हैं लोचन जल से बहते हैं शोक हृदय में नहीं समाताहै मानोंकरुणा रस का कटक अयोध्यापर दुन्दुभी देकर चढ़ा है ॥ २१ ॥

भलि बनाइ बिधि बात बिगारी । जहंतहं देहिं केकयिहिं गारी १
यहि पापिनिहिं सूझि का परेऊ । छाय भवन पर पावक धरेऊ २
निजकर नयन काढ़ि चह देखा । डारि सुधाबिष चाहतिचीखा ३
कुटिल कठोर कुबुद्धि अभागी । भइ रघुबंश बेणु बन आगी ४
पालव बैठि पेड़ चह काटा । सुख महं शोक ठाट यहि ठाटा ५
सदा राम यहि प्राण समाना । कारण कवन कुटिल पन ठाना ६
सत्य कहहिं कबि नारि सुभाऊ । सबबिधि अगम अगाध दुराऊ ७
निजप्रति बिंब मुकुर गहि जाई । जानि न जाइ नारिगति भाई ८
दो० काहि न पावक जारि सक का न समुद्र समाइ ।
का न करै अबला प्रबल केहि जग काल न खाइ ॥ २२ ॥

देखो कैसी भली बात बिधाताने बनाइ कर बिगारीहै जहां तहां सबलोग कैकेयी को गारी देते हैं और कहते हैं १ अरे देखो इस पापिनी को जाने क्या सूझिपरा है कि छाये हुये घरपर आगि रखदी है २ अपने हाथों आंखें काढ़ि कर फिरि देखा चहतीहै और अमृत को छोड़ि कर बिष खाया चाहती है ३ यह तो बड़ीही कठोर कुबुद्धि कुटिल अभागी है देखो रघुबंश बेणु वनमें अग्नि रूप हुई ४ पल्लव पर बैठि कर पेड़ को काटा चाहती है आनन्द में शोक का ठाट इसने ठाटा है ५ इसको

तो राम प्राणों के समान प्यारे रहैं जाने कारण है जो इसने यह कुटिलपन ठाना है ६ अरे भाई कबिलोग जो स्त्रियों का सुभाव कहते हैं सो सब सत्यही है इनका दुराउ सब भांति अगम और अगाधही होता है ७ दर्पण में अपने प्रतिबिंब को चाहै कोई पकरि भी लेवै परंतु नारि की गति तो किसी प्रकार नहीं जानी जाती है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसी कौनसी पंचभौतिक बस्तुहै जिसको अग्नि जारि न सकै और समुद्र में न समा सकै और कौनसा निंद्य कर्म है जिसको नारी न करि पावै और काल किस को नहीं खा शकता है ॥ २२ ॥

का सुनाइ बिधि काह सुनावा । का दिखाइचह काह दिखावा १
एक कहहिं भलभूपनकीन्हा । बर बिचारिनहिं कुमतिहिंदीन्हा २
जोहठि भयउ सकल दुखभाजन । अबलाबिबशज्ञानगुणगाजन ३
एक धर्म परमिति पहिचाने । नृपहि दोष नहिं देहिं सयाने ४
शिवि दधीच हरिचंद्र कहानी । एक एक सन कहहिं बखानी ५
एक भरत कर सम्मत कहहीं । एक उदास भाइ सुनि रहहीं ६
कानमूंदि कर रदगहि जीहा । एक कहहिं यह बात अलीहा ७
सुकृत जाइ अस कहत तुम्हारे । राम भरत कहं प्राण पियारे ८
दो० चंद्र चुवैबरु अनल कण सुधा होइ बिषतूल ।
सपनेहुकबहुन करहिं कछु भरत राम प्रतिकूल ॥ २३ ॥

कौन आनन्द सुनाकर दैवने कौन दारुण बिषाद सुनाया कौन महोत्सव दिखाया चाहता रहै और कौन परम दुस्सह राम बियोग दिखाया १ कोई एक कहते हैं कि राजाने भला न किया कि इस कुमति कैकेयी को बिचारि कर बर न दिया २ जो अपना आप हठि कर समस्त दुःख का भाजन होगया जिस राजाका ज्ञान गुण विश्व में गाजता है सो ज्ञान गुण गाजन राजा अबला के विबश हो गया ३ कोईएक जो धर्म की परिपाटी को जानते हैं ते सयाने राजा को दोष नहीं देते हैं ४ राजा शिवि और दधीच ऋषि राजा हरिश्चन्द्र के इतिहास अनेक अनेकों से वखानि वखानि कर कहते हैं ५ कोई एक अज्ञ इसमें भरत का संमत कहते हैं ऐसा सुनि कर कोई बिचारे अल्पज्ञ उदास होरहते हैं कुछभी नहीं कहि सकते हैं ६ कोई एक बिशेषज्ञ यह सुनतेही हाथों से कानों को मुंदि और दांतों से जीह को दाबिकर इस बात को निरी झूंठीही कहते हैं ७ अरे मूढ़ो ऐसा कहतेही तुम्हारे समस्त पुण्य नाश होजावेंगे क्योंकि भरत को तो रामचन्द्र प्राणों सेभी अधिक प्यारे हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ चन्द्रमा अंगार भलेही बरषावें और अमृत बिष के समान भलेही हो जावै परंतु भरत तो राम के प्रतिकूल कदापि नहीं करने के है ॥ २३ ॥

एक बिधातहिं दूषण देहीं । सुधा दिखाइ दीन्ह बिष जेहीं १
खरभर नगर सोच सब काहू । दुसह दाह उर मिटा उछाहू २
बिप्र बधू कुल मान्य जठेरी । जे प्रिय परम कैकयी केरी ३
लगीं देन सिख शील सराही । बचन बाण सम लागत ताही ४
भरतन मोहि प्रिय राम समाना । सदा कहहु यह सब जग जाना ५
करहु राम पर सहज सनेहू । केहि अपराध आजु बन देहू ६
कबहुं न कीन्ह सवति अवरेसू । प्रीति प्रतीति जान सब देशू ७
कौशल्या अब काह बिगारा । तुम जेहि लागि बज्र पुर पारा ८
दो० सीय कि पियसंग परि हरिहि लषण कि रहिहहिं धाम ।
राज कि भूजब भरतपुर नृप कि जियहिं बिनु राम ॥ २४ ॥

कोई एक बिधाताही को दोष देते हैं जिस ने अमृत दिखाकर बिष दे दिया १ इस प्रकार का समस्त नगर में खरभराहट है और सब को सोच है सब के अंतःकर्ण में महादुसह दाह हो रहा है उत्साह सब मिटि गया २ ऐसा नगर का घबराहट सुनि कर ब्राह्मणी और कुल पूज्यबड़ी बूढ़ी जो कैकेयी को परम प्यारी हैं ३ ते सब उस के शील की प्रशंसा करिके उपदेश करने लगीं ते हित बचन उसको बाणों के समान लगे ४ सुनो हे कैकेयी तुमतो सदा यह कहती रहीं और सब जग जानता है कि भरत मेरे को राम के समान प्यारे नहीं हैं और सदा उन पर छोह करती रहीं आज कौन अपराध से उनको बनबास देती हो ५ । ६ कौशल्या ने भी तो कुछ तुम्हारा बिगार नहीं किया तुम्हारी उनकी प्रीति प्रतीति को सब देश जानता है आज कौशल्या ने तुम्हारा क्या ऐसा बिगाड़ किया है जिस लिये तुमने समस्त नगर पर बज्र गेरदिया ॥ ७ । ८ ॥ दोहा ॥ सुनो हेकैकेयी तुम यहजानती हो कि सीता क्या राम के साथ को छोड़ देवेगी किन्तु नहीं छोड़ैगी और लक्ष्मण क्या फिरि घर रहेंगे नहीं राम के साथही जावेंगे और भरत क्या राम बिना इस राजको भोगैंगे किन्तु अङ्गीकारही नहीं करैंगे और राजाक्या रामके बियोगमें जीवेंगे नहीं उन के बिछुरतेही प्राण त्याग करैंगे ॥ २४ ॥

अस बिचारि जिय छांड़हु कोहू । शोक कलंक कोट जनि होहू १
भरतहिं अवशि देहु युवराजू । कानन कवन राम कर काजू २
नाहिन राम राज कर भूंखे । धर्म्म धुरीण बिषय रस रूखे ३
गुरु गृह बसहिं राम तजि गेहू । नृप सन अस बर दूसर लेहू ४

राम सरिस सुतकानन योगू । कहा कहहिं सुनितुमकहंलोगू ५
जोन मानिहौ कहे हमारे । नहिं लागहि कछु हाथ तुम्हारे ६
जो परिहास कीन्ह कछु होई । तोकहि प्रगट जनावहु सोई ७
उठहु बेगि सोइ करहु उपाई । जेहि बिधि शोक कलंकनसाई ८
छ० जेहिं भांति शोककलंक जाइ उपाय करि कुल पालहू ।
हठि फेरि रामहिं जात बन जनि बात दूसर चालहू ॥
जिमिभानुबिनुदिनप्राणबिनु तन चंदबिनुजिमि यामिनी ।
तिमि अवधतुलसीदास प्रभुबिनु समुझि धौंमनभागिनी ॥
सो० सखिन सिखावन दीन्ह सुनत मधुर परिणाम हित ।
तेइ कछु कान न कीन्ह कुटिल प्रबोधी कूबरी ॥ २५ ॥

ऐसा जी में बिचार कर रिस का त्याग करो शोक और कलंक का घेरा मत बनो १ भरत को तो अवश्य युवराज पद देओ परंतु राम का बन में कौन काम है २ राम तो राज के भूंखेभी नहीं हैं धर्म धुरंधर और बिषय से बिरागीहैं ३ तातें राम घरको छोड़ि कर गुरु कुल में बास करैं यह बर दूसरा राजा से मांगो ४ रामसा सुशील सुन्दर सुकुमार पुत्र भला वन के योग्य है संसार ऐसा सुनि कर तुम को क्या कहेगा ५ यदि तुम हमारा कहा न मानोगी तो तुम्हारे हाथ कुछ भी न आवेगा ६ और जो परिहासही किया हो तो उसको प्रकट करो ७ तातें उठि कर बेगिही सो उपाय करो जातें इस शोक और कलंक का नाश होय ॥ ८ ॥ छन्द ॥ इस प्रकार अपने कुल का पालन करो और राम को बन जाने से हठि कर फेरो दूसरी बात मत चलाओ जैसा सूर्य्य बिना दिन दुर्दिन होता है और प्राण बिना तन मृतक होता है चन्द्रमा बिना रात्रि अंधेरी होती है तैसेही तुलसी दास के स्वामी राम बिना अयोध्या को शूनी जानों ॥ सोरठा ॥ सखियों ने ऐसा सुन्दर सिखावन उसको दिया जो सुनने में मधुर और अंत में हित है परंतु उसने कुछ न सुना बड़ी कुटिल कूबरी की पढ़ाई है ॥ २५ ॥ यह दुसरी पचीसी हुई ॥

नारायणायनमः

उतरुनदेइ दुसह रिसरूखी । मृगिहि चितवजनु बाघिनिभूखी १
ब्याधिअसाधिजानितिन त्यागी । चलीकहतिमतिमन्दअभागी २
राजकरत इहिं दैव बिगोई । कीन्हेसि अस जस करै न कोई ३
इहिबिधि बिलपहिं पुरनरनारी ।देहिंकुचालिहिं कोटिकगारी ४

जरहिं बिषम ज्वरलेहिंउसासा । कवनरामबिनुजीवन आसा ५
बिकल बियोग प्रजा अकुलानी । जिमिजलचरगणसूखतपानी ६
अति बिषाद बश लोग लुगाईं । गयेमातु पंह राम गुसाईं ७
मुखप्रसन्न चितचौगुन चाऊ । इहै सोचजनि राखहिं राऊ ८
दो० नवगयंद रघुबंशमणि राजअलानसमान ।
छूटजानिबन गवनसुनि उरआनंद अधिकान ॥ १ ॥

सखियों ने जो हितोपदेश किया उसका उत्तर तो कुछ नहीं देती है दुस्सह रिस की महारूखी बैठी है और उन को ऐसे कोप से देखती हैं जैसे मृगियों को भूखी बाघिनी देखती है १ तबतो उन्हों ने उस को असाध्य व्याधि जानिकर त्याग दिया और मतिमंद अभागी कहती हुईं अपने अपने घरों को चलीं २ राज्य करते हुये दैव ने इस का बिनाश कियां ऐसा बुराकिया जैसा कोई भी नकरे ३ इस प्रकार पुरके नरनारीसब बिलाप करते हैं और इस कुचालिनी को गारीदेते हैं ४ महा बिषमज्वर से जरे जाते हैं उसासे लेते हैं और कहते हैं कि रामबिना जीने की कौन आशा है ५ रामबियोग से व्याकुल प्रजा कैसी अकुलानी है जैसे जल जीव पानी के सूखने से घबराते हैं ६ इस प्रकार बिषाद के बश पुरबासी होरहे हैं कि उसी अंतर में रामचन्द्र अपनी माता कौशल्या के पासगये ७ मुख तो जिनका परम प्रसन्न है और चित्त में चौगुणा चाउ है एकही बातका कुछ सोच है कि राजा बनजाने से रोंकि न राखै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ युवा मृगराज के समान तो रघुबंश मणि श्री रामचंद्र हैं और राज अलानि कहैं निगड़गज बंधन के समान रहै उसको छूटा जानि बनगमन से अति आनन्द हुआ ॥ १ ॥

रघुकुलतिलक जोरि दोउहाथा । मुदितमातु पदनायउ माथा १
दीन्ह अशीश लाइ उरलीन्हे । भूषनबसन निछावरि कीन्हे २
बार बार मुखचूमति माता । नयन नेहजल पुलकित गाता ३
गोदराखि पुनि हृदय लगाये । श्रवतप्रेम रसपयद सुहाये ४
प्रेमप्रमोद न कछुकहि जाई । रंकधनद पदवी जनु पाई ५
सादर सुन्दर बदन निहारी । बोली मधुर बचन महतारी ६
कहहुतात जननी बलिहारी । कबहिं लग्न मुदमंगल कारी ७
सुकृत शील सुखसीव सुहाई । जन्मलाभ की अवधि अघाई ८
दो० जेहिंचाहत नरनारिसब अतिआरतयहि भांति ।

जिमिचाहत चातक तृषित वृष्टिशरद ऋतुस्वाति॥ २ ॥

रघुकुल तिलक श्रीरामचंद्रने दोनों हाथ जोरिकर परम प्रसन्नमन माता के चरणों को प्रणाम किया १ माता ने अशीश दिया और हृदय से लगा लिया आभूषण और बस्त्र निछावरि किये २ बारम्बार माता मुख चुम्बन करती है नेत्रोंमें स्नेह का जलभरा है और अंगपुलकित होरहा है ३ गोद में बैठारिकर फिरि हृदय से लगालिया पुत्रप्रेम करिके सुन्दरसुहाये स्तन श्रवने लगे ४ प्रेम और आनन्द कौशल्या का तो कुछ कहाही नहीं जाता है मानों परम रंक ने कुबेर का धनपाया ५ बड़े आदर समेत रामचंद्र का सुन्दर मुख देखिकर अति मधुर कोमल बचन कौशल्या बोली ६ बलि जाऊं हे तात यह तो कहो कि आनन्द मंगलकारी लग्न कौन समय है ७ जो अतिही पुण्यशीला और सुखसींवां है और जन्मलाभ की तो अवधि कर अवधिही है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जिस लग्न को नगर के नरनारी अतिआतुर ऐसे चाहते हैं जैसे शरद ऋतु में अति प्यासा पपीहास्वाति नक्षत्र की वर्षा को चाहता है सो तुम्हारे अभिषेककी लग्न कौन समयहै ॥ २ ॥

तात जाउं बलि बेगि नहाहू । जो मन भाव मधुर कछु खाहू १
पितु समीप तब जायहु भय्या । प्रेम बिबश सादरकहमय्या २
मातु बचन सुनि अति अनुकूला । जनु सनेह सुरतरु के फूला ३
सुख मकरन्द भरे श्री मूला । निरखि राम मन भ्रमरन भूला ४
धर्म धुरीण धर्म गति जानी । कहेउ मातु सन अति मृदुबानी ५
पिता दीन्हमोहिं कानन राजू । जहंसब भांतिमोर बड़ काजू ६
आयसु देहु मुदित मन माता । जेहि मुदमंगल कानन जाता ७
जनि सनेह बश डरपसि भोरे । आनंद अंब अनुग्रह तोरे ८
दो० बर्ष चारि दश बिपिन बसि करि पितु बचन प्रमाण ।
आइ पांय पुनि देखिहौं मन जनि करसि मलान ॥ ३ ॥

बलि जाउं हेतात अब तुम बेगहीस्नान करो और जो कुछ रुचैसो मधुर भोजन करो १ तब हेभय्या पिता के पास जाइयो प्रेम के बश बार बार माता कहती है २ ऐसे अति अनुकूल माता के बचन सुन कर मानों स्नेह सुर तरुके फूलही झरतेहैं जो सुख मकरंद से भरे हैं और मंगल मूल हैं अर्थात् राजश्री उनकी मूल है उनको और देख कर रामचन्द्र का मन मधुकर मोहित न हुआ ३ । ४ धर्म धुरंधर रामधर्म की गति जानिकर माता से अति कोमल बाणी बोले ५ हेमाता पिताने तो मेरेको बनका राज्यदिया है जहां सब भांति से बड़ा कार्य्य होगा ६ आप भी प्रसन्न मन मेरेको आ-

ज्ञा दीजिये जिससे बनके जाने में मेरेको आनन्द मंगल होवे ७ क्यहके बश कुछभय मत करै तेरे अनुग्रह से हेमाता मेरेको बनमें आनन्दही होंगे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ चौदह वर्ष बन में बसि पिता के बचन का प्रतिपालन करि फिरि तेरे चरण आकर देखूंगा तू अपने मनको उदास मतकरै ॥ ३ ॥

बचन बिनीत मधुर रघुबरके। शर सम लगे मातु उर करके १
सहमि सूखि सुनिशीतल बानी। जिमिजवास परपावसपानी २
कहि न जाइ कछुहृदय बिषादू। जनु सहमेउ करिकेहरिनादू ३
नयन सलिल तनुथरहर कांपी। मांजा मनहु मीनकहं ब्यापी ४
धरि धीरज सुत बदन निहारी। गद्‌गद बचन कहति महतारी ५
तात पितहितुम प्राणपियारे। देखिमुदित नितचरित तुम्हारे ६
राज देन कहं शुभदिन साधा। कहेउ जानबनकेहिं अपराधा ७
तात सुनावहु मोहिं निदानू। कोदिन कर कुल भयउ कृशानू ८
दो० निरखि राम रुख सचिव सुत कारण कहेउ बुझाइ।
सुनि प्रसंग रहि मूक गति दशा बरणि नहिं जाइ ॥ ४ ॥

ऐसे मधुर कोमल बचन रामचन्द्र की माता के हृदय में बाणोंके समान लगे और करके १ परम शीतल बाणी के सुनतेही कौशल्या सहमिकर सूखि गई जैसे जवासा बर्षा के शीतल जल से सूखि जाता है २ कौशल्या के हृदय का बिषाद तो कुछ कहाही नहीं जाता है मानों सिंह के नाद से हथिनी सहमि गई है ३ नेत्रतो सजल होगये और अंग थर थर कांपने लगे मानों नवीन बर्षा के जलका मलीन फेनु मीन को ब्यापि गया है ४ फिरि तो धीरज धरि और राम का मुख देखि कर गद्‌गद बचन कौशल्या बोली ५ सुनो हे तात जिन पिता को तुम प्राणों के समान प्यारे हो और तुम्हारे चरित्रों को देखि सुनि कर सदा प्रसन्न रहते हैं और जिन्हों ने तुम्हारे राज्य देने को शुभदिन आज का बिचारा है तो तुम्हारे पिता तुमको कौन अपराध से बनको जानेको कहैंगे इस परतो मैं बिश्वास नहीं करती हूं ६ ॥ ७ हे तात मेरेको इसका मुख्य कारण सुनाओ कि इस दिनकर कुलके लिये कौन अग्नि हुआ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जब कौशल्या ने यह पूंछा तबतो सुमंत के पुत्र सुमति ने रामका अभिमत जानि कर समस्त कारण समुझा कर कह दिया सो तो सुनतेही कौशल्या गूंगीसी होगई ४ ॥

राखिन सकहिं न कहिसक जाहू। दुहूं भांति उर दारुण दाहू १
लिखत सुधाकर लिखि गा राहू। बिधिगत बामसदासबकाहू २
धर्म्म सनेह उभय मति घेरी। भइगति सांप छुछूंदरि केरी ३

राखौं सुतहिं होइ अनुरोधू । धर्म्म जाइ अरु बंधु बिरोधू ४
कहौं जान बनतौ बड़ि हानी । संकट सोच बिकल भइ रानी ५
बहुरि समुझि तिय धर्म्म सयानी । राम भरतद्वौ सुत समजानी ६
सरल सुभाव राम महतारी । बोली बचन धीरधरि भारी ७
तात जाउं बलि कीन्हेउ नीका । पितुआयसु सबधर्म्म कटीका ८
दो० राजदेन कह दीन्हबन मोंहिन सोच लवलेश ।
तुमबिनु भरतहिं भूपतिहिं प्रजहिं प्रचंड कलेश ॥ ५ ॥

अबतो कौशल्या न तो राखि सकती है न जानेको कहि सकती है दोनो भांति से हृदय में दारुण दाह है १ चन्द्रमा निखते राहु लिखिगया बिधाता की गति सदा सबको बामहै २ धर्म और स्नेह दोनों ने कौशल्या की मति घेरिली तो उसकी गतिछछूंदरि पकरे सांपकीसी होगई ३ बिचारती है कि जो पुत्रको हठ करिके राखतीहूं तो धर्म जाताहै और भायप बैर होताहै ४ जो बन जानेको कहती हैं तो बड़ी हानि होतीहै इससंकट के सोचमें कौशल्या ब्याकुल होगई ५ फिरि तो धर्म में प्रवीण रानी राम और भरत दोनो पुत्रों को समानही समुझि कर सरल सुभावसे राम की माता बड़ी धीर धरिकर बोली ६ ॥ ७ बलिजाउं हेतात तुमने अतिभल किया पिता का अनुशासन समस्त धर्मोंका तिलक होताहै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ राज्यदेने कहिकर जो राजाने तुमको बनबास दिया इसका मेरेको तो कुछ सोचका लवलेश मात्रभी नही है परंतु तुम्हारे बिना भरतको और प्रजाको और राजाही को महा प्रचण्ड क्लेश होगा ॥ ५ ॥

जो केवल पितु आयसु ताता । तो जनिजाहु जायबलि माता १
जो पितुमातु कहै बनजाना । तो कानन शत अवध समाना २
पितु बनदेव मातु बनदेवी । खग मृग चरण सरोरुह सेवी ३
अंतहु उचित नृपहि बनबासू । बय बिलोकि हियहोत हरासू ४
बड़भागी बन अवध अभागी । जोरघुबंश तिलक तुम त्यागी ५
जो सुतकहौं संग मोहिंलेहू । तुम्हरे हृदय होइ संदेहू ६
पुत्र परम प्रिय तुम सबहीके । प्राण प्राणके जीवन जीके ७
तेतुम कहहु मातु बनजाऊं । मैं सुनि बचन बैठि पछिताऊं ८
दो० यह बिचारि नहिं करहुहठ झूंठ सनेह बढ़ाइ ।

मानि मातुके नातबलि सुरति बिसरि जनिजाइ ॥ ६ ॥

तातें जो तो हे तात केवल पिताही की अज्ञाहै तो तो मेरी आज्ञासे बनको न जाइये मैंबलि जाऊं १ और जो माता पिता दोनों नेबनजाने को कहा है तो तुमको बनही सो अयोध्या के समान है २ बनमें बनदेव तो तुमको पिताके समानहैं और बनदेबी माता हैं बनके पक्षीमृग सब तुम्हारे सेवक होंगे ३ राजाको तो अन्त में बनबास उचितही होताहै परंतु तुम्हारी अवस्था देखिकर जीमें संकोच होताहै ४ बनतो बड़भागी हे और अयोध्या अभागी है जिसको हे रघुबंशतिलक तुमने त्याग किया है ५ हे पुत्रजो मैंकहूं कि मेरेको भी साथ लेचलो तोतुम्हारे हृदयमें संदेह होगा कि माता मेरे स्वरूपको भूलि गई सो मैं नही भूली ६ मैंतुमको हे पुत्र भले प्रकार जानतीहूं कि तुम सबके परम प्रियतमहो, सबके प्राणोंके प्राणहो और सबजीवों के जीवनहो ७ तो तुम मेरे भी प्राणोंके प्राण बनजाने को कहतेहो और मैं ऐसेभी वचन सुनिकर जीती हुई बैठी पछिताती हूं तो मेरा स्नेह भी झूंठाही है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ यह बिचारि करिभी झूठा स्नेह बढ़ाकर चलने को हठ नहीं करती हूं तुम अपनी ओरसे माता का नातामानिकर मेरी सुरति न बिसारना ॥ ६ ॥

देव पितर सब तुम्हहिं गुसाईं । राखहिं नयन पलक की नाईं १
अवधिअंबु प्रिय परिजन मीना । तुम करुणाकर धर्म्म धुरीना २
असबिचारि सोइकरहु उपाई । सबहिं जिवत जेहिं भेंटहु आई ३
जाहुसुखेन बनहिंबलिजाऊं । करि अनाथ जन परिजन गाऊं ४
सब कर आजु सुकृतफलबीता । भये कराल काल बिपरीता ५
बहुबिधिबिलपि चरणलपटानी । परमअभागिनिआपुहिंजानी ६
दारुण दुसहदाह उरब्यापा । बरणि नजाय बिलाप कलापा ७
राम उठाइ मातु उर लाई । कहि मृदु बचन बहुत समुझाई ८
दो० समाचार तेहिं समय सुनि सीय उठी अकुलाइ ।
जाइ सासु पग कमल युग बंदि बैठि सिर नाइ ॥ ७ ॥

समस्त देव और पितर तुमको हे पुत्र नेत्र पलक के समान रक्षा करें १ यहजो चौदह बर्ष की अवधि है सोई तो जल है और परिवार सब मीन हैं और तुम परम दयालु धर्म धुरीण हो २ ऐसा बिचार कर सोई उपाय कीजिये जिससे सबके जीतेजी सबको आ मिलो ३ बलि जाउं हेतात तुम सुख पूर्वक बनको जाव समस्त जन परिजन नगरको अनाथ छोड़ि कर ४ आज सबके पुण्यों का फल एक साथही बीति गया ऐसा महाकरालकाल बिपरीत होगया ५ ऐसे अनेकभांतिके बिलापकरिके रामचन्द्र

केचरणों पर गिरपरी और अपनेको परम अभागिनी मानती हुई६ महा दुस्सहदारुण दाह कौशल्या के हृदयमें व्यापि गया उस समय के विलापों का समूहकहाही नहीं जाताहै ७ तब रामचंद्र ने माताको उठाकर हृदय से लगा लिया और कोमलबचन कहिकहि कर अनेक भांतिसे समझाया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ उसी समय सीताऐसे समाचार सुनि कर अकुलाइ उठी और जाकर सासु के पांय लागिकर अधोमुख बैठिगईं ॥ ७ ॥

दीन्ह अशीश सासु मृदुबानी । अतिसुकुमारि देखिअकुलानी-१
बैठि नमित मुख सोचति सीता । रूपराशि पति प्रेम पुनीता २
चलन चहतबनजीवन नाथा । कवन सुकृत सन होइहि साथा ३
कीतनुप्राण किकेवल प्राणा । बिधि करतब कछुजातन जाना ४
चारु चरण नखलेखति धरणी । नूपुर मधुर मुखरकबि बरणी ५
मनहुंप्रेम बशबिनती करहीं । हमहिं सीयपद जनिपरिहरहीं ६
मंजु बिलोचन मोचति बारी । बोली देखि राम महतारी७
तातसुनहु सियअतिसुकुमारी । सासुससुरपरिजनहिंपियारी ८
दो० पिता जनक भूपाल मणि ससुर भानुकुल भान ।
पति रबिकुल कैरव बिपिन बिधु गुण रूप निधान ॥ ८ ॥

सासु ने अति कोमल वाणी से सीता को आशिष दी और उसको अतिही सुकुमारि देख कर व्याकुल होगई १ सीता नमित मुख बैठी सोचती है कि ऐसा मेरा कौनसा पुण्य है जिससेस्वामीजो बनको चला चाहतेहैं उनका और मेरासाथहोगा२।३ तन और प्राण दोनों साथ जावेंगे कि तन को छोड़ि कर केवल प्राणही जावेंगे यह कुछ बिधाता का कर्तब जाना नहीं जाता है ४ सुन्दर चरणों के नखसे पृथ्वी को लेखती हैं उससे होता है जो नूपुरोंका मधुर मधुर शब्द उसको कविजन ऐसा कहते हैं कि मानों नूपुर सीता के पैरों से यह बिनती करते हैं कि आप हमको यहां न छोड़ि जावें साथही लिये जावें५ । ६ अति उज्जल दोनों नेत्रों से सीताजल धार छोड़ि रही है ऐसी उसकी दशा देखिकर कौशल्या रामचंद्रसे यह बचनबोली७ सुनो हे तात यह सीता अतिही तो सुकुमारी है और सासु, ससुर, परिवार सबको प्राणों के समान अतिही प्यारी है ॥ ८ ॥ दोहा राजाओं के शिरमणि जनक तो इसके पिता हैं और सूर्य्यकुल के उजियारे श्री महाराज इसके स्वसुरहैं और समस्त गुण रूप निधान रबिकुल कैरवचन्द्र आप पति हैं ॥ ८ ॥

मैं पुनिपुत्र बधू प्रियपाई । रूपराशि गुणशील सुहाई १
नयन पुतरिइव प्रीतिबढ़ाई । राखहु प्राणजानकिहिंलाई २

कल्पबेलिजिमिबहुबिधिलाली। सींचिसनेहसलिलप्रतिपाली ३
फूलतफलतभयउ बिधिबामा । जानिनजाइकाहपरिणामा ४
पलंगपीठ तजिगोद हिंडोरा। सियनदीन्हपगअवनिकठोरा ५
जियनिमूरिजिमि जुगवतिरहेउं। दीपबातिनाहिं टारनकहेउं ६
सो सियचलन चहतिबनसाथा। आयसुकहा होइरघु नाथा ७
चंदकिरिणिरसरसिकचकोरी। रबिरुखनयनसकैकिमिजोरी ८
दो० करिकेहरि निशिचर चरहिं दुष्टजंतु बनभूरि ।
बिषबाटिका किसोहसुत सुभगसजीवन मूरि ॥ ९ ॥

मैंने इस रूपराशि गुणशीला सुन्दर सुहाई प्यारी सीता को पुत्र बधूपाइकर १ नेत्रों की पुतरी की नाईं प्रीति बढ़ाई है और इसी को देखिदेखि कर मेरे प्राण रहते हैं २ कल्पबेलि की नाईं मैंने इस को बहुत भांति लड़ाया है और प्रेम के जल से सींचिकर पाला है ३ फूलते फलते समय बिधाता बाम होगया जानानहीं जाता है कि इसका परिणाम क्या होगा ४ यह तो ऐसी सुकुमारी है कि सदा पलंग और पीढ़ोहीं पर रही है अथवा उन को छोड़िकर सखियों को दबा हिंडोरे में रही है परंतु सीता ने कभी कठोर पृथ्वी पर पैर भी तो नहीं दिया है ५ जीवन मूरि की नाईं मैं इस को सदा देखतीही रही हूं और कभी दीपक की बाती भी टारने को मैंने इससेनहीं कहाहै ६ ऐसीसुकुमारी सीता अब तुम्हारे साथ बनको चलाचाहती है उसको क्या आज्ञा होती है ७ जो चकोरकुमारी कि चंद्रमा की शीतल किरणियों के रसरसिकहै सो भला सूर्य्यके सन्मुख कैसे देखि सक्तीहै अर्थात् राजबधूसीता बन में कैसे रहैगी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जिस बनमें गज, सिंह, निशाचरादि दुष्ट जीव अनेक जातिके रहतेहैं विष की बाटिकामें सुरसजीवन मूर्त्ति हेपुत्र क्या शोभा देवैगी ॥ ९ ॥

बनहितकोल किरात किशोरी। रचीबिरंचि बिषय रसभोरी १
पाहनकृमिजिमिकठिनसुभाऊ। तिन्हहिंकलेशनकाननकाऊ २
कै तापस तिय कानन योगू। जिन तप हेतुतजा सबभोगू ३
सियबन बसिहितात केहिभांती। चित्रलिखाकपि देखिडराती ४
सुरसरि सुभगबनजबनचारी। डाबर योगकि हंसकुमारी ५
असबिचारि जसआयसु होई। मैं सिखदेउं जानकिहिंसोई ६
जो सियभवन रहैकह अंबा। मोकहंहोइ प्राणअवलंबा ७
सुनिरघुबीर मातुप्रिय बानी। शीलसनेह सुधाजनुसानी ८

दो० कहिप्रियबचन बिबेकमय कीन्हमातु परितोष ।
लगेप्रबोधन जानकिहिं प्रगटिबिपिन गुणदोष ॥१०॥

बनबास के लिये तो हे तात कोल किरातों की किशोरी बिधाता ने रची जो बिषय को जानतीहीनहीं हैं १ पाषाण के कीटों के समान जिनकेकठिन सुभाव हैं तिन को बन में कभी क्लेश नहीं है २ अथवा तपस्वियोंकीस्त्रियांबनके योग्य होती हैं जिन्हों ने तपके लिये सब भोगत्याग दिये हैं ३ सीता तो हे तात बन में कैसे बास करेगी जो चित्रलिखे बानरही को देखकर डराती है ४ देवतड़ागों के सुन्दर कमलों के बनों की बासिनी हंसकुमारी पोखरों के योग्य कैसे होती है ५ ऐसा बिचारि कर जैसी आज्ञा होय तैसीही मैं सीता को शिक्षा करूं ६ मैं यह कहती हूं कि जो सीता घरहीमेंरहैं तो मेरे को प्राणों का अवलम्ब होय ७ ऐसी शील स्नेह की सानी रामचंद्र माता की कोमल वाणी को सुनकर ॥ ८ ॥ दोहा ॥ अतिप्यारे बिबेक के बचन कहकर तो माता को समुझाया फिरि बन के अनेक दोष कहि कहि कर सीता को समुझाने लगे ॥ १० ॥

मातु समीप कहत सकुचाहीं । बोले समयसमुझि मनमाहीं १
राज कुमारि सिखावन सुनहू।आनभांतिकछुजियजनिगुणहू२
आपन मोर नीक जो चहहू । बचन हमार मानि घररहहू ३
आयसुमोरसासुसेवकाई । सब बिधि भामिनिभवनभलाई ४
यहिते अधिक धर्मनाहिंदूजा । सादर सासु ससुरपदपूजा ५
जबजबमातुकरिहि सुधिमोरी । होइहिप्रेमबिकलमतिभोरी ६
तबतब तुमकहि कथापुराणी । सुन्दरिसमुझायहु मृदुबाणी ७
कहौंसुभाव शपथ शतमोहीं । सुमुखि मातुहितराखहुंतोहीं ८
दो० गुरु श्रुति सम्मत धर्म फल पाइय बिनहिं कलेश ।
हठवस सब संकट सहे गालव नहुष नरेश ॥ ११ ॥

माता के सन्मुख कहते तो सकुचते हैं परंतु मनमें समय बिचारि करबोले १ हे राजकुमारी हमारे सिखावन को परम धर्म परम हित जानिकर सुनो और किसी भांति का बिचार जीमें मतकरो २ जो तुम अपना और मेरा भला चाहो तो हमारे बचनो को मानि कर घरही रहो ३ मेरी अज्ञा का तो पालन और सासुकी सेवा है तुमको तो हेभामिनी सबभांति घरही रहने में भलाईहै ४ इससे अधिक और दूसरा धर्म कोई नहीहै श्रद्धा समेत सासु, ससुरकी सेवा करना ५ जब जब माता मेरीसुधि किया करैगी और प्रेमके बश महा व्याकुलहुआ करेगी ६ तब तब तुमपुरातन कथा

कहि कहि कर उनको समुझाया करोगी ७ मैं सौंशपथ करिके तुमसे सुभावही कहता
हूं कि हे सुमुखि मैं तेरेको केवल माताही के अवलम्ब के लिये घर राखताहूं ॥ ८ ॥
दोहा ॥ गुरुजन औ वेदों के संमतसे जो धर्म उसका फल बिनाही कष्ट तुमको मिलता
है और हठ के कियेसे तो गालवऋषि और राजा नहुषने समस्त संकटही सहेहैं ॥ ११

मैंपुनिकरिप्रमाणपितुबानी । बेगि फिरबसुनुसुमुखिसयानी १
दिवसजातनहिंलागहि बारा । सुंदरि सिखवनसुनहुहमारा २
जोहठ करहु प्रेमबश बामा । तौतुम दुखपाउबपरिणामा ३
कानन कठिन भयंकर भारी । घोरघाम हिमबारि बयारी ४
कुशकंटक मग कांकर नाना । चलब पयादे बिनुपदत्राना ५
चरणकमल मृदु मंजु तुम्हारे । मारगअगम भूमिधरभारे ६
कंदर खोह नदी नद नारे । अगमअगाध नजाइनिहारे ७
भालुबाघ वृक केहरिनागा । करहिं नाद सुनिधीरजभागा ८
दो० भूमि शयन बल कल बसन अशन कंद फलमूल ।
तेकि सदा सबदिन मिलहिं समयसमय अनुकूल १२

मैंफिरि पिताकी वाणी को प्रमाण करिके हेसुमुखि बेगही तो आजाऊंगा १ दिन जाते हुये बारभी तो नही जानि परती है हे सुन्दरि तातें इस हमारे सिखावन को प्रमाण करो २ और जो स्त्रियोंके सुभाव से प्रेम के बश हठही करोगी तो तुम परिणाम में दुःखही पावोगी ३ क्योंकि बन महाकठिन और भारी भयंकर है जिसमें ग्रीष्ममेंतो महाघोर घाम होता है और हेमंत में अति शीत और पवन होती है बर्षा में जल बर्षता है ४ मार्ग में तीक्ष्ण कुश, कांटे, कंकड़हैं उसमें पदत्राण बिना चलना परेगा ५ तुम्हारे उज्ज्वलचरण कमलपत्रों से भी अति कोमल हैं और मार्ग अति अगम हैं जिसमें अति उतंग पर्वतहैं ६ जिन पर्वतो की भयंकर कन्दरा और खोह, नदी, नद, और नारे हैं जो महा अगम और अगाध देखे भी नहीं जाते हैं ७ उसमें रीछ, बाघ, भेड़िये, हाथी, ऐसा नाद करते हैं जिसको सुनि कर बड़े धीरोंका भी धीर छूटजाता है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ प्रथिवी परतो शयन होगा पहिरने को बल्कल मिलेगे कन्द, मूल फल भोजन होंयगे सोभी क्या सदा सबदिनों में मिलेंगे समय समय के अनुसार पाये जावेंगे ॥ १२ ॥

नर अहार रजनीचर करहीं । कपट बेषबन कोटिक फिरहीं १
लागै अति पहार कर पानी । बिपिन बिपतिनहिं जाइबखानी २
ब्यालकराल बिहंगबनघोरा । निशिचर निकर नारि नर चोरा ३

डरपहिं धीरगहन सुधिआये । मृग लोचनि तुमभीरु सुभाये ४
हंसगमनि तुमनहिं बनयोगू । सुनिअपयशमोहिंदेइहहिं लोगू ५
मानससलिल सुधाप्रतिपाली । जियैकिलवणि पयोधिमराली ६
नवरसाल बनबिहरण शीला । सोहकिकोकिलबिपिन करीला ७
रहहुभवन असहृदय बिचारी । चंदू बदनि कानन दुख भारी ७
दो० सहज सुहृदगुरु स्वामि सिख जोनकरै हितमानि ।
सोपछिताइ अघाइउर अवशि होइहित हानि ॥ १३ ॥

मनुष्यों का आहार राक्षस करतेहैं ते कपट के रूपधारण किये बनमें अगणित फिरते हैं १ फिरि अति बेकारक पहारों का पानी लगना होताहै बनकी अनेक बिपत्ति कही नहीं जाती हैं २ महा घोर बिहंग और सर्प जिसमें बासकरते हैं राक्षसों के समूहों से भराहै नर,नारी,कोल, किरात सब चोर ठग रहतेहैं ३ जब उसबनकी सुधि आती है तब बड़े बड़े धीर भी पुरुष डरजाते हैं हे मृगलोचनि तुम सुभावही सेभीरू हो ४ हे हंसगवनि तुमबन जानेके योग्य नहीहो सुनिकर सबलोग मेरेको अपयश देवेंगे५ जो हंसिनी मान सरोवरके अमृत जलकी पालीहैं सो लवणके समुद्रमें कैसे जीसकती है ६ अतिरम्यनवीन रसालके बनकी बिहारिणी कोकिला करीलों के वनमें क्या शोभा पावैगी ७ यहबात बिचारिकर हे चन्द्रवदनी तुम घरही रहो क्योंकि बनमें बड़े बड़े भारी दुःखहैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जो कोई अपने सुहृद स्वामी और बड़ोंकी शिक्षको मांथे मानिकरनहीं करताहैसो परिणामको पछितताहै औरउसकेहितकीहानिहीहोतीहै॥१३॥

सुनिप्रिय बचनमनोहर पियके । लोचननलिन भरेजलसियके १
शीतल शिख दाहक भइ कैसे । चकइहिशरद चंदनिशि जैसे २
उतर न आव बिकल बैदेही । तजनचहत शुचिस्वामिसनेही ३
बरबस रोकि बिलोचन बारी । धरिधीरज उरअवनि कुमारी ४
लागिसासु पद कह करजोरी । क्षमबमातुबड़ि अबिनयमोरी ५
दीन्हप्राणपति मोहिंशिख सोई । जेहिबिधिमोरपरमहितहोई ६
मैंपुनि समुझि दीख मनमाहीं । पियबियोगसम दुखजगनाहीं ७
यहिबिधि सियसासुहिंसमुझाई । कहतिपतिहिंबरबिनयसुहाई ८
दो० प्राणनाथ करुणायतन सुन्दर सुखद सुजान ।
तुमबिनु रघुकुल कुमुदबिनु सुरपुर नरकसमान ॥ १४ ॥

ऐसे मधुरमनोहर पतिके बचन अति प्यारे सुनिकर कमल से सुन्दर सीता के नेत्र जलसे भरि आये १ शीतल शिक्षा सीता को कैसे दाहक हुई जैसे चकई को शरदका चन्द्रमा रात्रि में होताहै २ उत्तर मुखसे नहीं आताहै ऐसी ब्याकुल है क्योंकि शुचि परम सनेही स्वामी श्री रामचन्द्र तजाचाहते हैं ३ बरियांई दोनो नेत्रों के जलको रोकि कर और बड़ी धीर धरि कर प्रथिवी की पुत्री सीता सासु के पांयलागि हाथ जोरि कर बोली कि हेमाता मेरी बड़ी अबिनयको क्षमा करना ४ ॥ ५ मेरे स्वामीने मेरे को शिक्षा तो सोईदीहै जिसमें मेरा परम हित होवे ६ परंतु मैंने अपने मनमें समुझि देखाहै कि पतिके बियोग के समान स्त्रीको दूसरा दुख संसारमे में नहीं है ७ आठवीं चौपाई मेरेको कहीं किसी प्रतिमें नही मिली इसलिये बनाकर लिखिदीहै जहांजिस पाठक को मिले उसको लिखिदेवे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ अब सीता रामचन्द्र से कहतेहैं सुनो हेप्राणनाथ हेकरुणायतन हे सुखदायक सुजान स्वामी आपके बिना तो मेरेको देवलोक भी नर्कही है ॥ १४ ॥

मातु पिता भगनी प्रिय भाई । प्रिय परिवार सुहृद समुदाई १
सासु ससुर गुरु सुजन सुहाई । सुठि सुन्दर सुशील सुखदाई २
जहंलगि नाथ नेह अरु नाते । पिय बिनु तियहि तरणिते ताते ३
तनधन धाम धरणि पुनिराजू । पति बिहीन सब नरक समाजू ४
भोग रोग सम भूषण भारू । यमयातना सरिस संसारू ५
जिय बिनु देहनदी बिनुबारी । तैसेहिं नाथ पुरुष बिनु नारी ६
प्राणनाथ तुम बिनु जगमाहीं । मोकहं सुखद कतहु कोउनाहीं ७
नाथ सकल सुखसाथतुम्हारे । शरद बिमल बिधु बदन निहारे ८
दो० खग मृग परिजन नगर बन बल कलबसन दुकूल ।
नाथ साथ सुर सदन सम पर्ण शाल सुख मूल ॥१५ ॥

मायाके मेंतो माता, पिता, बहिनी, भाई और सुहृद, परिवार ये सब सुखदाई होतेहैं १ सासुरे में सासु, ससुर, गुरुजन, बांधव, सहायक ये सब अतिसुन्दर सुखदायक होते हैं २ और जहांतक हे नाथ स्नेह की सगाई होती है एक पतिके बिना स्त्री को सब सूर्य्य से भी अधिक संताप कारी लगते हैं ३ तन, धन, घर, धरणी राज्य ये सब पतिके बिना नर्कही का समाज लगते है ४ भोग सब रोग होजाते हैं आभूषण सब बोझही जान पड़ते हैं संसार सब पतिके बिना यमयातनाहीं दीख परता है ५ प्राणों के बिना जैसी देहीं होती है और जलके बिना जैसी नदी होती है तैसीही एक पतिके बिना हेनाथ मृतक समान स्त्री होती है ६ सो हेप्राणनाथ स्वामी

मेरेको तो एक तुम्हारे बिना समस्त संसार में सुखदायक कहीं कोई भी तो नहीं है ७ हे नाथ समस्त सुख तो मेरे को आप के साथ में आपका चन्द्रमा समान मुख देखनेही से हैं अन्यच कहींभी नहीं हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ आपके साथ में बनके खग,मृग तो मेरेको परिजन होंगे और बनही नगर होगा बल्कलही निर्मल पाटांबर होंगे और देवेंद्र के सदन के समान समस्त सुखों की मूल पर्णशाला मेरे को होवैगी १५ ॥

बन देवी बन देव उदारा । करि हैं सासु ससुर सम सारा १
कुश किशलय साथरी सुहाई । प्रभु संग मंजु मनोज तुराई २
कंदमूल फल अमिय अहारू । अवध सौध शत सरिस पहारू ३
क्षणक्षणप्रभुपदकमलविलोकी । रहिहौंमुदितदिवसजिमिकोकी ४
बन दुख नाथ कहे बहुतेरे । भय बिषाद परिताप घनेरे ५
प्रभुबियोगलवलेश समाना । सबमिलि होहिं न कृपानिधाना ६
असजियजानिसुजान शिरोमनि । लेइय संगमोहि छाडियजनि ७
बिनती बहुत करौं का स्वामी । करुणामय उरउर अंतर्यामी ८
दो० राखिय अवध जो अवधि लगि रहत जानिये प्राण ।
दीन बंधु सुन्दर सुखद शील सनेह निधान ॥ १६ ॥

अतिउदार बनदेवी और बनदेव सब मेरी सार सम्हार सासु ससुर हो के समान किया करेंगे १ कुश और वृक्षों की कोमल कोंप की सुन्दर सुहाई साथरी आपके साथ उज्वल कामशय्या के समान होगी २ कन्द, मूल, फलों का आहार अमृत के समान होगा अयोध्या के राज मंदिरो से शतगुण अधिक पहाड़ होगा ३ क्षण क्षण प्रति आपके चरण कमलों को देख देखकर ऐसी प्रसन्न रहा करूंगी जैसी दिवस में कोकी रहता है ४ वनके जो दुख आपने बहुत से कहे हैं जिनमें अनेक भांति भय बिषाद और संताप हैं ५ तेसब मिलकर भी आप के बियोग के दुखके लवलेशके समान न होंगे ६ ऐसा जी में जानकर हे सुजान शिरोमणि कृपानिधान स्वामी आप मेरेको साथही लीजिये त्याग न कीजिये ७ बहुतसी बिनती हे स्वामी मैं आप से क्या करूं आप तो बडे करुणावान और अंतर्यामी हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जो आप मेरे प्राणों को चतुर्दश बर्ष अवधि पर्य्यंत रहते जानो तौ मेरे को अयोध्या में छोड़ जाइये आपतो दीन बंधु सुख दायक शील सनेह के निधान हो ॥ १६ ॥

मोहिं मग चलत न होइहि हारी । क्षणक्षण चरण सरोजनिहारी १
सबहि भांति पिय सेवा करिहौं । मारगजनित सकलश्रमहरिहौं २

पांय पखारि बैठि तरु छाहीं । करिहौं बायु मुदित मन माहीं ३
श्रमकण सहित श्याम तनदेखी । का दुख समय प्राणपति पेखी ४
सम महिपर तृण पल्लव डासी । पांयपलोटव सब निशि दासी ५
बार बार मृदु मूरति जोही । लागहि ताप बयारि न मोही ६
कोप्रभुसंगमोहिचितवनहारा।सिंहबधुहिजिमिशिशुकसियारा ७
मैं सुकुमारि नाथ बन योगू । तुमहिं उचित तप हमकहं भोगू ८
दो० ऐसेहु बचन कठोर सुनि जो न हृदय बिलगान ।
तौ प्रभु बिषम बियोगदुख सहिहैंपामर प्रान ॥ १७ ॥

मेरेको मार्ग चलने में भी कुछहार न होगी क्षण क्षण प्रति आपके चरण कमलों को देखिकर १ सब भांति से आप की सेवा किया करूंगी और मार्ग के समस्त श्रम को हरा करूंगी २ सुन्दर वृक्षकी छाया में बैठ कर आपके चरण पखारि कर प्रसन्न मन पवन किया करूंगी ३ श्रम की बुन्दों समेत श्याम तनको देखि कर मेरे को दुखका लेश भी तो न होगा ४ और बारम्बार आपकी श्यामल कोमल मूर्ति को देखि देखि कर न मेरे को कुछ ताप होगी न उष्णपवन लगेगी ५ समान प्रथ्वीतल पर तृण पत्र बिछाकर सब राति दासी चरण पलोटा करैगी ६ और आप के साथ में ऐसा कौन बलवान है जो मेरी ओर देखि सकैगा जैसे सिंहबधू को क्षुद्र सियार नहीं देखि सकता है ७ मैं तो सुकुमारी हूं और आप बनके योग्य हैं आप को तप उचित है तो मुझे भोग कैसे उचित हो सकते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसे भी कठोर बचन सुनि कर जो मेरा हृदय न बिदरा तो मैं जानती हूं कि ये मेरे महानीच प्राण आप के विषम बियोग को भी दुखसहि लेवेंगे ॥ १७ ॥

असकहि सीय बिकल भइभारी । बचन बियोग न सकी सम्हारी १
देखिदशा रघुपति जिय जाना । हठि राखै राखहि नहि प्राना २
कहेउ कृपालु भानु कुल नाथा । परि हरि सोच चलहु बनसाथा ३
नहिं बिषाद कर अवसर आजू । बेगि करहु बन गमन समाजू ४
कहिप्रियबचन प्रियहि समुझाई । लगेमातु पद आशिष पाई ५
बेगि प्रजा दुख मेटव आई । जननी निठुर बिसरि जनि जाई ६
फेरहि दशा कबहिं बिधि मोरी । देखिहौं नयन मनोहर जोरी ७
सुदिनसुघरीतातजबहोइहि । जननी जियतबदन बिधुजोइहि ८

दो० बहुरि बच्छ कहि लाल कहि रघुपति रघुबर तात ।
कबहिं बुलाइ लगाइ उर हरषि निरखिहौं गात ॥ १८ ॥

ऐसे कहिकर सीता महा ब्याकुल हो गई बियोग के भयसे बचनों की सम्हार न रही १ ऐसी दशा देखकर राम चन्द्र ने जी में जाना कि हठकर इसको घर राखने से यह अपने प्राण नहीं राखैगी २ तब तो परम कृपाल भानुकुल नाथ रामचन्द्र ने कहा कि सोच को छाड़ि कर साथही चलो ३ आज यह बिषाद करने का समय नहीं है बेगिही बनके चलने का समाज करो ४ इस प्रकार अतिप्रिय बचन कहिकर सीता को समुझाया फिरि तो माता के चरण छुये और आशिष पाई ५ फिरि माता रामचन्द्र को आशिष देकर बोली कि बेगही प्रजाके दुख को आकर दूर करना और इस महानिठुर माता को भी न बिसारना ६ अब जानै कब बिधाता मेरी दुर्दशा को फेरैगा कि इस मनोहर जोरी को जब नेत्रों से देखूंगी ७ ऐसाशुभ दिन शुभ घरी हे तात जाने कब होवैगा कि माता जीतेजी तुम्हारे मुख को देखैगी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ फिरि हे तात तुम को बत्स लाल रघुपति रघुबर कहिकर जाने कब बुलाइ और हृदय से लगाइ कर अति प्रसन्नमन इस मनोहर गात को देखूंगी ॥ १८ ॥

लखि सनेह कातरि महतारी । बचन न आव बिकलभइभारी १
राम प्रबोध कीन्ह बिधि नाना । समय सनेह न जाइबखाना २
तब जानकी सासु पग लागी । सुनिय मातु मैं परम अभागी ३
सेवा समय दैव बन दीन्हा । मोर मनोरथ सफल न कीन्हा ४
तदपि जननि जनिछांड़हु छोहू । कर्म कठिन कछुदोषन मोहू ५
सुनि सियबचनसासु अकुलानी । दशा कवनबिधि कहौंबखानी६
बारहिं बार लाइ उरलीन्ही । धरि धीरज शिख आशिषदीन्ही ७
अचल होउ अहिवात तुम्हारा । जब लग गंगयमुन जलधारा ८
दो० सीतहिं सासु अशीष शिख दीन्ह अनेक प्रकार ।
चलीनाइ पद पदुम शिर अति हित बारहिंबार ॥ १९ ॥

ऐसी सनेह में बावरी माता को देख कर कि जिसके मुखसे बचनभी नहीं आता है महा ब्याकुल है १ रामचन्द्र ने अनेक भांति से समुझाया यह सनेह का समय कुछ कहा नहीं जाताहै २ तबतो सीताने सासुके पांय लागे और बोली सुनो हे माता मैं बड़ी अभागिनी हूं ३ सेबाके समय में बिधाता ने मेरे को बनबास दिया और मेरा मनोऽर्थ सफल न किया ४ तो भी हे माता आप अपनी ओरसे छोह न छांड़ना

कर्म महा कठिन है कुछ मेरा भी दोष नहीं है ५ ऐसे सीता के बचन सुनि कर सासु अकुलाइगई सो दशा कौन भांतिसे कबिसे कहीजावे ६ बारंबार सासुने सीता को हृदय से लगा लिया और बड़ी धीर धरि कर सिख और आशिष दी ७ कि हे सीते तुम्हारा अहिवात जबलों गंगा यमुना में जलधार है तबलों अचल रहै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इस प्रकार सीताको सासु ने अशीश और सीख अनेक भांतिसे दी तबतो सीताने सासु के चरणोंपर बड़े हित से शीश बारंबार नवा कर राम के साथ बनको चली ॥ १९ ॥

समाचार जब लक्ष्मण पाये । ब्याकुल बिलखि बदनउठिधाये १
कंप पुलक तनु नयन सनीरा। गहे चरण अति प्रेम अधीरा २
कहि न सकत कछु चितवत ठाढ़े । मीन दीन जनु जलते काढ़े ३
सोच हृदय बिधिका होनहारा। सब सुख सुकृतसिरानहमारा ४
मोकहं काह कहबरघुनाथा। रखिहहिंभवनकिलेइहहिं साथा ५
राम बिलोकि बंधु कर जोरे। देह गेह सब तृण सम तोरे ६
बोले बचन राम नय नागर। शील सनेह सरल सुख सागर ७
तात प्रेम बश जनि कदराहू। समुझि हृदय परिणाम उछाहू ८
दो० मातु पिता गुरु स्वामि सिख शिर धरि करिय सुभाय।
लेहु तात जग जन्म फल नतरु जन्म जग जाय ॥ २० ॥

सीता समेत रामचन्द्र के बन जाने के समाचार जब लक्ष्मण ने पाये तत्कालही ब्याकुल होकर बिलखित मुख उठि धाये १ पुलकित और कंपित तो अंग है और नेत्रों में जल भराहै इस प्रकार अति आतुर आकर रामचन्द्र के चरण छुये २ कहितो कुछ सकते नहीं हैं ठाढ़े देखतेही हैं जलसे निकासे हुये मीन की नाईं दीन होरहे हैं ३ हृदय में बड़ाही सोच है कि हे बिधाता कैसा होगा क्या हमारा समस्तसुख और सुकृत एक बारही सिराइ गया ४ रामचन्द्र मेरेको जानें क्या कहैंगे घर राखैंगे कि साथ लेचलेंगे ५ रामचंद्र ने जो लक्ष्मण को अपने सन्मुख हाथ जोरे देखा किदेह और घरके समस्त सुख तृणके समान त्यागि दिये हैं केवल मेरे चरणोंही में आशक्त हैं योनित्यमच्युतपदांबुजयुग्मरुक्मब्यामोहितस्तदितराणितृणायमेनेद्ऐसी उनकी दशा देखि कर नीति निपुण रामचंद्र बोले ७ हे भाई तुम प्रेम के बश होकर मत डरो परिणाम को आनन्द मंगलही होवेंगे यह समझो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ माता, पिता, अपने बड़े और स्वामी की आज्ञा माथे मानि कर करना चाहिये तातें इस आज्ञाको मानि कर जन्म धरेका फल लेव नहीं तो संसार में यह जन्म बृथाही है ॥ २० ॥

असं जिय जानि सुनहु सिखभाई। करहु मातुपितुपदसेवकाई १

भवन भरत रिपु सूदन नाहीं । राउ वृद्ध मम दुख मन माहीं २
मैंबनजाउं तुमहिं लै साथा । होइ सबहिं बिधिअवध अनाथा ३
गुरु पितु मातु प्रजा परिवारा । सब कहं परै दुसहदुखभारा ४
रहहु करहु सब कर परितोषू । नतरु तात होइहि बड़ दोषू ५
जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी । सो नृप अवशि नर्कअधिकारी ६
रहहु तात असनीति बिचारी । सुनत लषण भय व्याकुलभारी ७
सियरे बचन सूखि गय कैसे । परसत तुहिन ताम रस जैसे ८
दो० उतर न आवत प्रेम बश गहे चरण अकुलाइ ।
नाथदास मैं स्वामि तुम तजहु तो कहा बसाइ ॥ २१ ॥

ऐसा जी में जान कर हमारी सिखावन को हे लक्ष्मण तुम सुनो कि घर रहि कर माता पिता की सेवाही करो १ देखो घर पर न तो भरत हैं न शत्रुघ्न हैं और पिता अति वृद्ध हैं ता पर मेरे दुःख से अति बिकलहैं २ ऐसे समय में जो मैं तुमको साथ ले जाऊं तो सब प्रकार से अयोध्या अनाथ हो जावेगी ३ औ गुरुजन, माता पिता, प्रजा, परिवार सबपरदुख का भार आपरैगा ४. ताते भाई तुम घरही रहो और सबको परितोष करो नहीं तोमेरेको बड़ा दोष होगा ५ जिस राजा के राज्यमें प्रजा दुखी रहती है सो राजा अवश्य नर्कके योग्य होता है ६ यह नीति विचारि कर हे भाई तुम घरही रहो यह सुनतेही तो लक्ष्मण महा व्याकुल होगये ७ शीतल बचनों से लक्ष्मण कैसे सूखि गये तुषारके परतेही जैसे कमल सूखि जाते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ प्रेम के वश उत्तर तो आता नहीं है अकुलाइ कर रामचन्द्र के चरणों पर गिरि परे और बोले हेनाथ मैंतोसेवक हूं आपमेरे स्वामीहैं जोत्याग करोगे तोमेराकौनबशहै २१

दीन्हिमोहि सिख नीकगुसाईं । अगम लागि आपनि कदराईं १
नर बर धीर धर्म धुर धारी । निगम नीति के ते अधिकारी २
मैं शिशु प्रभु सनेह प्रतिपाला । मंदर मेरु कि लेइ मराला ३
गुरु पितु मातु न जानौं काहू । कहौं सुभाव नाथ पतियाहू ४
जहं लगि जगत सनेह सगाई । प्रीतिप्रतीति निगमनिजगाई ५
मोरे सबै एक तुम स्वामी । दीनबंधु उर अंतरयामी ६
धर्म नीति उपदेशिय ताही । कीरति सुगति भूति प्रिय जाही ७
मन क्रम बचन चरण रतहोई । कृपासिंधु परिहरिय कि सोई ८

दो० करुणासिंधु सुबंधु के सुनि मृदु बचन बिनीत।
समुझाये उर लाइप्रभु जानि सनेह सभीत॥ २२॥

सीख तो आपने मेरको हे स्वामी अतिही हितकी दी है परंतु अपने असाहस से मेरको अगम लगती है १ जो मनुष्य बड़े धीर और धर्म धुरंधर हैं निगम नीति के अधिकारी ते कहे हैं २ मैंतो अबोध बालक के समान आपका पाला हुआहूं निगम नीति का पालन कैसे करि सकता हूं मंदराचल और सुमेरुको कहीं हंसभी उठा सकता है ३ माता, पिता, गुरु मैं तो आपही को जानता हूं दूसरे किसी को नहीं जानता हूं यह मैं सहजही कहता हूं आप सत्यही मानिये ४ इस जगतमें जितनी सनेह सगाई हैं और प्रीतिप्रतीति वेदोंने कही हैं ५ मेरेतो समस्त नेह नाते आपही से हैं हे दीनबंधु आप अंतर्य्यामी हैं॥ रामोमाता मत्पितारामचंद्रः स्वामीरामो मत्सखारामचंद्रः सर्बस्वमेरामचंद्रोदयालु नान्यंजानेवजानेनजाने ६धर्म नीति तो हे स्वामी उस को उपदेशना चाहिये जिस को इस संसार में कीर्त्ति वा सुगति अथवा संपत्ति प्यारी हो ७ और जो तन,मन,बचन से अपने चरणोंहीं में आशक्त हो हेकृपा सिंधु सो क्या त्यागके योग्य होता है॥ ८॥ दोहा॥ जब करुणासिंधु रामने भाई के ऐसे कोमल नम्रबचनसुने तबतो उनको हृदयसे लगा कर समुझाया और कहा॥ २२॥

बिदा मातु सन मांगहु जाई। आवहु बेगि चलहु बन भाई १
मुदित भये सुनि रघुबर बानी। भईलाभ बड़ि गइबड़ि हानी २
हर्षित हृदय मातु पहं आये। मनहुं अंध फिरि लोचन पाये ३
जाइ जननि पद नायउ माथा। मन रघुनन्दन जानकि साथा ४
पूंछेउ मातु मलिन मन देखी। लषण कही सब कथा बिशेषी ५
गई सहमि सुनि बचन कठोरा। मृगी देखि जनु दव चहुंओरा ६
लषण लखेउ भाअनरथ आजू। यह सनेह बश करब अकाजू ७
मांगत बिदासमयसकुचाहीं। जानसंग बिधिकहहिं कि नाहीं ८
दो० समुझि सुमित्रा राम सिय रूप सुशील स्वभाव।
नृप सनेह लखि धुनेउ शिर पापिनि कीन्ह कुदाव॥ २३॥

माता से जाकर बिदा मांगो और आकर बेगही बनको चलो १ जब ऐसे बचन रामचंद्र के सुने तबतो लक्ष्मण अतिही आनन्दित होगये मानो बड़ी हानि दूरिहो कर बड़ीही लाभ हुई २ अति हर्ष भरे हृदय माताके पास आये मानों अंधेको फेरि नेत्रोंके लाभ का आनन्द हुआ ३ जाय कर माथा तो माता के चरणों पर नवाया पर मन राम और जानकी के पास है ४ माताने उदास मन देखि कर लक्ष्मण से पूंछा.

तबतो उन्होंने समस्त कथा माता से कही ५ लक्ष्मण के मुखसे महा कठोर वचन सुनि कर ऐसी सहमि गई जैसी बनमें सब ओर दवाग्नि देखकर मृगी सहमि जाती जाती है ६ लक्ष्मण ने देखा कि आजतो अनर्थही हुआ क्योंकि यह सनेह के वश अकाजही करैगी ७ समय बिचारि कर बिदा मांगते सकुचाते हैं कि रामके साथमेरे को जाना कहैगी वा नहीं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सुमित्रा राम और सीता के तौ रूपशील सुभाव को समुझि कर और राजा के प्रेम को देखिकर शिर धुनने लगी कि पापिनी ने बड़ा कुदांव किया ॥ २३ ॥

धीरज धरेउ कुअवसर जानी । सहज सुहृद बोली मृदु बानी १
तात तुम्हार मातु बैदेही । पिता राम सब भांति सनेही २
अवध तहां जहं राम निवासू । तहां दिवस जहं भानुप्रकाशू ३
जोपै सीय राम बन जाहीं । अवध तुम्हार काज कछु नाहीं ४
गुरु पितु मातु बंधु सुर साईं । सेइय सकल प्राण की नाईं ५
राम प्राण प्रिय जीवन जीके । स्वारथ रहित सखा सबहीके ६
पूजनीय प्रिय परम जहांते । सब मानिये रामके नाते ७
अस जिय जानि संग बन जाहू । लेहुतात जग जीवन लाहू ८
दो० भूरि भाग भाजन भयउ मोहिं समेत बलि जाउं ।
जो तुम्हरे मन छांड़ि छल कीन्ह राम पद ठाउं ॥ २४ ॥

फिरि तो सुमित्रा ने कुसमय जानि कर धीरज किया और सहजही सुहृद कोमल बाणी बोली १ सुनो हे तात सीता तो तुम्हारी सनातन माता है और पिता तुम्हारे सर्व संबंधी रामहीहैं २ जहां सीतारामका निवासहै तहांहीं तुम्हारी अयोध्या है क्योंकि दिन तो तहांहीं हैं जहांकासूर्य्य प्रकाशहै ३ सो जबकि सीता, रामहीं बन को जाते हैं तो अयोध्या में तुम्हारे रहने का कुछकाम नहीं है ४ रामंदशरथंबिद्धि मांबिद्धिजनकात्मजां अयोध्यामटवींबिद्धि गच्छतातयथासुखं ॥ गुरु, पिता, माता, भाई इष्टदेव, स्वामी ये सब प्राणों के समान सेवने कहे हैं ५ राम तो सहजही प्राण प्रिय हैं और जीवके भी जीवन हैं स्वार्थ बिना सबके सदा संघाती सखा हैं ६ तातें ऊपर जो परम प्रियपूज्य जहा लों कहे हैं ते सब नाते रामही में मानने परमार्थ हैं ७ ऐसा जियमें जानि कर कि रामही की सेवा में सबकी सेवा है तुम रामही के साथ बनको जाओ और जगमें जीवन का फल लेओ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ बलिजाउं हे तात तुम मुझ समेत बड़ भागी हुये जो तुम्हारे मन ने निर्व्यलीक होकर राम के चरणोंही में अपना धाम किया ॥ २४ ॥

पुत्रवती युवती जग सोई। रघुपति भक्त जासु सुत होई १
नतरु बांझ भलि बादि बियानी। राम बिमुख सुतते हितआनी २
तुम्हरेहि भाग राम बन जाहीं। दूसर हेतु तात कछु नाहीं ३
सकल सुकृत कर फल सुत येहू। सीयराम पद सहज सनेहू ४
राग रोष ईर्षा मद मोहू। जनि सपनेहुं इन के बश होहू ५
सकल प्रकार बिकार बिहाई। मन क्रम बचन करेहु सेवकाई ६
तुम कहं बनसब भांतिसुपासू। संग पितु मातुरामसिय जासू ७
जेहिं न राम बन लहैं कलेशू। सुत सोइ करेहु यही उपदेशू ८
छं० उपदेश यह जेहिं तात तुमते राम सिय सुख पावहीं।
पितुमातु प्रियपरिवार पुरसुख सुरतिबन बिसरावहीं॥
तुलसीसुतहिं सिखदेइ आयसुदीन्ह पुनिआशिष दई।
रतिहोहु अबिरल अमलश्री रघुबीर पदनितनित नई॥
सो० मातु चरण शिरनाइ चले तुरत शंकित हृदय
बागुर बिषम तुराइ मनहुं भागमृग भागबश॥ २५॥

पुत्रवती तो हे तात संसारमें सोई युवती है जिसका पुत्र भगवद्भक्तहोवै॥ कुलं पवित्रंजननीकृतार्थावसुन्धराभागवतीचधन्या स्वर्गस्थितायेपितरोपिधन्यायेषांकुलेबैष्णव नामध्येयं१आस्फोटयंतिपितरःप्रनृत्यंतिपितामहाःवैष्णवोनःकुलेजातासनःसंतारयिष्यति२ अर्थात् समस्तकुल तो पवित्र होजाता है माता धन्य होती है जन्म भूमि भीतीर्थ होती है स्वर्ग बासी पितर भी धन्य होते हैं जिनके कुलमें वैष्णव जन्म लेता है पितर तो उसके पट्टे ठोंकतेहैं और पितामह अति नृत्यकरने लगते हैं और कहते हैं किआज हमारे कुलमें वैष्णव जन्मा हैं यह हम सबको तारैगा १ नहीं तो हे तात बांझही भली है उसका जनना बृथाही है भगवद्विमुख पुत्रसे तो सर्बथा हितकी हानि ही होती है॥ माजनिष्टसनोबंशेजातोवाद्राग्बिपद्यतां आजन्ममरणेयस्यबासुदेवोनदैवतं ३ धिग्जन्मनस्त्रिवृद्विद्याधिग्व्रतंधिग्बहुज्ञतांधिक्कुलंधिक्क्रियादाक्ष्यं बिमुखायेत्वधोक्षजे ४ अर्थात् उसके पितर कहते हैं कि ऐसा अवैष्णव हमारे वंश में जन्मैही मत और जन्मैतो जन्मतेही मरि मरि जावै जिसको जन्म भरि बासुदेवही इष्टदेव न होवै उसके जन्मको धिक्कार उसकी बिद्याको धिक्कार उसके ब्रतों को धिक्कार उसके बहुत जानने को धिक्कारउसके कुलको धिक्कार उसकेयज्ञादि क्रियाओं को धिक्कार जे अधोक्षज से बिमुख हैं २ और अब जो सीताराम बनको जाते हैं सोकेवल इसी निमित्त

जाते हैं कि समस्तके कैंकर्य्य उनका तुम्हारेही बांट परै दूसरा कारण और कुछभी तो नहीं है ३ और समस्त सुकृतों काभी तो फल यहीहै कि सीताराम के चरणों में सौभाविक सनेह होवै ४ ताते तुम राग, द्वेष, मद, मोह के बंश नहो और सबप्रकार तन, मन, बचन से सेवकाई करो ५ । ६ तुमको तो सब भांति का सुपास बनहीं में है क्योंकि सीता रामसे माता पिता साथ हैं ७ और मेरा उपदेश तो तुम को यही है कि जिससे सीता राम बनमें क्लेश न पावें सोई उपाय तुमको कर्त्तव्य है ॥ ८ ॥

छं० हे तात यही मेरा तुमको उपदेश है जिसमें तुम्हारे कैङ्कर्य्य से राम और सीता दोनों ऐसे सुखी रहैं कि अतिही प्यारे पिता, माता, परिवार, पुरवासियोंकी सुधिभी बनमें न करैं इस प्रकार सुमित्रा ने लक्ष्मण को सिखावन देकर बन जाने को आज्ञा दी और इस प्रकार का लक्ष्मण के अभिमत आशिष दिया कि तुम्हारे हृदय में अति निर्मल अबिरल श्रीरामचन्द्र के चरणों में प्रीति नित्यनित्यनवीन मेरी आशिषसे बढ़ती हो रहै ॥ सोरठा ॥ लक्ष्मणनेमाता के मुख से आज्ञा पातेही उनके चरणों को शीश नवाय अति शंकित हृदय तुरंतही तहांते कैसे शीघ्र चले हैं जैसे महा कठिन फंदे को तोरि कर भाग्यबलदैवयोग से हिरण भागता है ॥७५॥ यह चौपाइयों की तीसरी पचीसी हुई ॥ ३ ॥

माषवायनम:

गये लषण जहंजानकि नाथा । भयमन मुदितपाइ प्रिय साथा १
बंदि राम सिय चरण सुहाये । चले संग नृप मंदिर आये २
कहहिं परस्पर नर अरु नारी । भलि बनाइ बिधि बातबिगारी ३
तनकृश मन दुख बदन मलीने । बिकल मनहुं माखी मधुछीने ४
कर मींजहिं शिरधुनि पछिताहीं । जनुबिनु पंखबिहंग अकुलाहीं ५
भइ बड़ि भीर भूप दरबारा । बरणि न जाइ बिषाद अपारा ६
सचिव उठाइ राव बैठारे । चरण परत नृप राम निहारे ७
सिय समेत दोउ तनय निहारी । ब्याकुल भये भूमिपति भारी ८

दो० सीय सहित सुत सुभग दोउ देखि देखि अकुलाइ ।
बारहिं बार सनेह बश राउ लेइ उरलाइ ॥ १ ॥

मातासे बिदा होकर लक्ष्मण तहांगये जहां जानकीनाथ राम हैं और अति प्रिय साथ पाकर मन में प्रसन्न होगये १ रामचंद्र सीता के सुंदर सुहाये चरणों को बन्दन करि के उनके साथ चले और राजा के पास आये २ देखि कर नगर के नर नारी परस्पर कहते हैं बिधाता ने भली बात बना कर बिगारदी ३ शरीर तो सब के कृश होगये हैं मन सब के दुखी हैं मुख मैले हैं ऐसे ब्याकुल हैं जैसे मधु के छीने से मधुकर होते हैं ४ हाथ मीजते हैं शिर धुनते हैं पछिताते हैं मानो बिन पंख

के पक्षी अकुलाते हैं ५ राजा के मंदिर में बड़ी ही भीरहोगई उस समय का अपार बिषाद कहा ही नहीं जाता है ६ तो समय सुमंत ने उठाय कर राजाको बैठारे और राजा ने चरणों पर परते राम को देखा ७ फिरि तो सीता समेत जब दोनों पुत्रों को देखा तबतो राजा महा ब्याकुल होगये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सीता समेत दोनों सुन्दर पुत्रों को देखिदेखि कर राजा अकुलाते हैं और सनेहके बश उनको बार बार हृदय से लगा लगा लेता है ॥ १ ॥

सकै न बोलि बिकल नर नाहू। शोक बिबश उर दारुणदाहू १
नाइ शीश पद अति अनुरागा। उठि रघुबीर बिदा तब मागा २
पितु आयसु अशीश मोहिं दीजै। हर्ष समय बिस्मयकत कीजै ३
तात किये प्रिय प्रेम प्रमादू। जग यस जाइ होइ अपबादू ४
सुनि सनेह बश उठि नरनाहू। बैठारे रघुपति गहि बाहू ५
सुनहु तात तुम कहं मुनिकहहीं। राम चराचर नायक अहहीं ६
शुभ अरु अशुभ कर्म अनुहारी। ईशदेइ फल हृदय बिचारी ७
करैजो कर्म पाव फल सोई। निगम नीति असकह सब कोई ८
दो० और करै अपराध कोइ और पाव फलभोग।
अति बिचित्र भगवंत गति को जग जानै योग ॥ २ ॥

महा ब्याकुल राजा बोलभी नहीं सकताहै शोकके बश हृदयमें दारुण दाहहै १ तबतो बड़े प्रेम समेत रामचन्द्र ने राजा के चरणों पर शीश नवाइ कर बिदा मांगी २ हे पिता मेरे को बनजानेकी आज्ञा और आशिषदीजिये इस हर्षके समयमें बिषाद न कीजिये ३ हे तात प्रेमके बश अधीरता करने से जग में अपयश हो जाइगा और यश जाता रहेगा ४ ऐसे रामचंद्र के बचन सुनि कर राजा ने दोनों भुजा पकरि कर उनको बैठारा ५ सुनो हे तात तुमको मुनिजन ऐसा कहते हैं कि राम चराचर जीवों के स्वामी हैं ६ ईश्वर तो जीवों के शुभाशुभ कर्मों के अनुहार सबको फल देता है ७ जो जैसा कर्म करता सोई उसका फल पाता है ऐसी निगम नीति सब कोई कहते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ कोई तो अपराध करै और कोई उस कर्म के फल का भोग करै यह तो ईश्वर की अति बिचित्र गति है उसके जानने को कौन समर्थ है ॥ २ ॥

राउ राम राखन हित लागी। बहुत उपाय किये छल त्यागी १
लखा राम रुखरहत नजाने। धर्म धुरन्धर धीर सयाने २
तबनृप सीयलाइउरलीन्ही। अतिहित बहुतभांतिसिखदीन्ही ३

कहि बनकेदुख दुसह सुनाये । सासुससुर पितुसुख समुझाये ४
सियमन रामचरण अनुरागा । घर न सुगम बनअगम न लागा ५
औरहु सबहिं सीयसमुझाई । कहिकहि बिपिनबिपतिअधिकाई ६
तुमकहं तो नदीन्ह बनबासू । करहु जोकहहिं ससुरगुरु सासू ७
सचिव नारि गुरुनारि सयानी । सहितसनेह कहहिं मृदुबानी ८
दो० सिख शीतल हित मधुर मृदु सुनि सीतहिं नसुहानि ।
शरद चंदचांदनि लगत जनु चकई अकुलानि ॥ ३ ॥

इस प्रकार राजा ने राम के राखने के लिये छल छोड़िकर बहुतेरे उपाय किये १ परंतु रामका मन रहने को न जानि परा क्योंकि धर्मधुरंधर हैं और बड़े धीर हैं धर्म की गति को जानते हैं (धर्मगुप्धर्मकृद्धर्मीधर्मीधर्मबिदुत्तमः) अर्थात् धर्म के रक्षक हैं धर्मके कर्त्ता हैं धर्मात्मा हैं धर्मामूर्ति हैं धर्म के बेत्ताओं में उत्तम हैं २ तब तो राजा ने सीता को हृदय से लगालिया और उन को बड़ेहित से अनेक प्रकार का सिखावन दिया ३ बन के तो महा दुस्सहदुःख कहि सुनाये और मायके सासुरे के रहने के सुख भी समुझाये ४ परंतु सीता के मनमें रामके प्रेम से घर का रहना सुगम न लगा न बनका जाना अगम लगा ५ और सब ने भी बनवास की बिपत्ति की अधिकाई कहिकहिकर सीता को समुझाया ६ मंत्रियों और गुरुजनों की नारीबड़ी प्रीति से सीता को समझाने लगी कि तुम को तो राजा, रानी ने बनबास नहीं दिया है तुम को सोई करना उचित है जो तुम्हारे सासु,ससुर, गुरुजन तुमसे कहते हैं ॥ ७ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसी शीतल मधुरकोमल सब की सीख सुनिकर सीताको न सुहाई जैसे चकई शरद के चन्द्रमा की चांदनी के लगतेही अकुलाइ उठती है ऐसेही सीता अकुलाइ उठी ॥ ३ ॥

सीय सकुचबश उतर नदेई । सोसुनि तमकि उठी कैकेई १
मुनिपट भूषण भाजन आनी । आगे धरि बोली मृदुबानी २
नृपहिं प्राणप्रिय तुमरघुबीरा । शील सनेह नछाड़हिं धीरा ३
सुकृत सुयश परलोक नशाऊ । तुमहिं जानबन कहहिनराऊ ४
असबिचारिसोइकरहुजोभावा । राम जननिसिखसुनिसुखपावा ५
भूपहिं बचन बाण सम लागे । करहिं न प्राण पयान अभागे ६
शोक बिकल मूर्छित नर नाहू । काह करिय कछु सूझनकाऊ ७
राम तुरत मुनिबेष बनाई । चलेजनक जननिहिं शिरनाई ८

दो० सजि बन साज समाज सब बनिता बंधु समेत ।
बंदि बिप्र गुरु चरण प्रभुचले करि सबहिं अचेत ॥ ४ ॥

सीता तो सकुच के बश किसी को कुछ उत्तर नहीं देसक्ती है इस मझेले को सुनिकर कैकेयी तमकिकर उठी १ घर में से मुनिजनों के बस्त्र, भूषण और पाच लाकर राम के आगे रखदिये और महा कठोर बचन कोमलवाणी से बोली २ राजा को तो हे राम तुम प्राणों के समान प्यारे हो ताते तुम्हारे शीलसनेह को छोड़ि नहीं सक्ते हैं ३ राजा का तो सुकृत और सुयश, परलोक चाहे सो नाश हो जावे परंतु तुम को तो बनमें जाने को कभी कहनेही के नहीं हैं ४ यह बिचारि कर जो तुम को रुचा है सो तुम करो रामचन्द्र ने माता के बचन सुनिकर बड़ा सुखपाया ५ राजा को कैकेयी के बचन बाणों के समान लगे मनमें कहते हैं कि अभागे प्राण निकसते भी नहीं हैं ६ फिरि तो शोक में व्याकुल राजा मूर्छित होगये क्या कीजिये कुछ भी उपाय नहीं सूझता है ७ रामचंद्र ने तुरंतही मुनि बेषबनाइ कर माता, पिता को प्रणाम किया और चलदिये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ बन जाने का समस्त साज समाज सजिकर भार्य्या और भाई समेत मनमें ब्राह्मण और गुरु के चरणों को बंदन किया और सब को अचेत करि के चलदिये ॥ ४ ॥

निकसि बशिष्ठ द्वार भय ठाढ़े । देखे लोग बिरह दव डाढ़े १
कहि प्रिय बचन सकल समुझाये । बिप्रबृन्द रघुबीर बुलाये २
गुरु सन कहि बर्षासन दीन्हे । आदर दान बिनय बशकीन्हे ३
याचक दान मान संतोषे । मीत पुनीत प्रेम परितोषे ४
दासी दास बुलाइ बहोरी । गुरुहि सौंपि बोले कर जोरी ५
सब की सार सम्हार गुसाईं । करब जनक जननी की नाईं ६
बारहिं बार जोरि युग पाणी । कहत राम सब सन मृदुबानी ७
सो सब भांति मोर हितकारी । जेहितें रह नरनाह सुखारी ८

दो० मातु सकल मोरे बिरह जेहि न होंहिं दुख दीन ।
सोइ उपाय तुम करब सब पुरजन परम प्रबीन ॥ ५ ॥

घरसे निकसि कर गुरूके द्वारपर खड़े हुये तहां सबको अपने बियोग की अग्नि से संतप्त देखा १ उन सब को शीतल वचनों से समुझाया औ द्विज देवों को बुलाया २ गुरु से कहिकर सब को चौदह बर्ष के बर्षौढ़ी बंधान दिवा दिये और आदर दान बिनती से सब अपने बश करि लिये ३ याचक जनें दान मान संतोषित किये और मित्र सखाओं को प्रेमही से पोषण किया ४ फिरि दास और दासियों को बुलाकर गुरु

को सौंपा और कहा ५ कि इन सब की सारसम्हार आप माता, पिता के समान करते रहेंगे ६ फिरि तो राम वारंवार हाथ जोरि जोरि कर समस्त अयोध्या बासियों से ये बचन कहने लगें ७ कि सुनो भाइयों मैं सब भांति से अपना हितकारी उसी को जानूंगा जिससे मेरे पिता सुखी रहेंगे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ और जिस प्रकार मेरे बियोग से मेरी समस्त माता दुखी न होजावें सोई उपाइ तुमपरम प्रबीण पुरजन करते रहना ॥ ५ ॥

यहिबिधिराम सबहिं समुझावा । गुरुपदपद्म हरषि शिरनावा १
गणपति गौरि गिरीश मनाई । चले अशीश पाइ रघुराई २
राम चलत अति भयउ बिषादू । सुनि नजाइ पुरआरत नादू ३
कुशकुन लंक अवध अति शोकू । हर्ष बिषाद बिबश सुर लोकू ४
गइ मूर्छा तब भूपति जागे । बोलि सुमंत कहन अस लागे ५
राम चले बन प्राण न जाहीं । केहि सुख लागि रहेतनमाहीं ६
यहि तें कवन व्यथाबलवाना । जो दुखपाइ तजहिं तनप्राना ७
पुनि धरि धीर कहहिं नर नाहू । लै रथ संग सखा तुमजाहू ८
दो० सुठि सुकुमार कुमार दोउ जनक सुता सुकुमारि ।
रथ चढ़ाइ दिखराइ बन फिरेहु गये दिन चारि ॥ ६ ॥

इस प्रकार रामचंद्रने सब को समुझाया और प्रसन्न मन गुरुदेव के चरणों को शीश नवाया १ गुरु से अशीश पाई तब तो गणपति, गजानन और गौरी श्रीपार्वती और गिरीश श्रीशिवजी को मनाकर अयोध्या से चल दये २ राम के चलते तो अयोध्या में ऐसा महा बिषाद हुआ कि नगर का महा आरतनाद सुनाहीनहीं जाता है ३ उसी समय लंका में कुशकुन होने लगे अयोध्या में शोक हुआ यह देखिकर देव लोकबासी हर्ष बिषाद के बश होगये ४ यहां राजा की जबमूर्छा जागी सुमंत को बुलाकर ये बचन बोले ५ कि हेसखा राम तो बन को गये और मेरे प्राणनहीं जाते हैं जाने और कौन सा सुख अथवा दुःख देखने को शरीर में रहे हैं ६ इस व्यथा से भी बढ़िकर जाने कौन बलवान व्यथा हो जिस के दुख को पाकर मेरे प्राण देहत्याग करैंगे ७ फिरिधीर धरिकर राजाबोले कि हे सखा तुमरथ लेकर राम के पासजाओ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ देखो अतिसुकुमार तो मेरे दोनों कुमारहैं और जनकपुत्री भी अतिही सुकुमारी है तातें उन को रथपर चढ़ाइ और बनदिखाइ चारिदिन पीछे फेरि लाना ॥ ६ ॥

जोनहिं फिरहिं धीरदोउ भाई । सत्यसंध दृढ़ ब्रत रघुराई १
तौ तुम बिनय करेहु करजोरी । फेरहिं प्रभुमिथलेश किशोरी २

जब सिय कानन देखि डराई । कहेहु मोरि सिख अवसरपाई ३
सासु ससुर अस कहेउ संदेशू । पुत्रि फिरिय बन बहुतकलेशू ४
पितु गृह कबहुं कबहुं ससुरारी । रहेहु जहां रुचि होइतुम्हारी ५
यहिबिधि करेहु उपायकदंबा । फिरै तो होइ प्राण अवलंबा ६
नाहित मोरमरण परिणामा । कछुन बसाइ भयउ बिधिबामा ७
अस कहि मूर्छिपरेउ महिराऊ । राम लषणसिय आनिदिखाऊ ८
दो० पाइ रजायसु नाइ शिर रथ अति बेगि बनाइ ।
गयउ जहां बाहिर नगर सिय समेत दोउ भाइ ॥ ७ ॥

और जो बड़े धीरदोनों भाई फेरने से न फिरैं क्योंकि रामचंद्र सत्य संधान औरसत्य व्रत है १ तोतुम हाथजोरि कर बिनती करना कि सीताही को फेरि दीजिये २ और जिस समय सीता बन को देखकर डरै तब तुम समय पाकर मेरे बचन कहना ३ कि तुम्हारे सासु स्वसुर ने यह संदेश कहि दिया है कि हे पुत्रि तुम फिरि आओ बन में बड़े क्लेश हैं ४ कभी पिता के घर कभी सासुर में जब जहां तुम्हारी रुचि होरहा करना ५ इस प्रकार उपायकरो कदाचित् सीताही फिरि आवै तो भी मेरे प्राणों को अवलम्ब होजावे ६ नहीं तो परिणाम को मेरा मरना तो हैही जब विधाता बाम होता है तब कुछ नहीं बसाता है ७ फिरि तो राजा यह कहते हुये मूर्छित होगये कि राम लक्ष्मण सीता मेरे को लाकर दिखा दो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सुमंत राजा की आज्ञा पाय शीश नवाइ अति बेगही रथ बनाकर जहां नगर के बाहर सीता समेत दोनों भाई थे तहां आगया ॥ ९ ॥

तब सुमंत नृप बचन सुनाये । करि बिनती रथ राम चढ़ाये १
चढ़ि रथ सिय समेत दोउ भाई । चले हर्षि अवधहिं शिरनाई २
चलत राम लखि अवध अनाथा । बिकललोक सब लागेसाथा ३
कृपासिंधुबहुबिधिसमुझावहिं । फिरहिंप्रेमबशपुनिफिरिआवहिं ४
लागति अवध भयानक भारी । मानहु काल रात्रि अंधियारी ५
घोर जंतु सम पुर नर नारी । डरपहिं एकहिं एक निहारी ६
घर मसान परिजन जनु भूता । सुत हित मीत मनहुं यमदूता ७
बागन बिटप बेलि कुम्हिलाहीं । सरिस सरोबर देखिनजाहीं ८
दो० हय गज कोटिन केलि मृग पुर पशु चातक मोर ।

पिक रथांग शुकसारिका सारस हंस चकोर ॥ ८ ॥

तबतो सुमंत ने राजा के बचन रामचंद्र को सुनाये और बिनती करिके रथ पर चढ़ाये १ सीता समेत दोनों भाइयोंने रथ पर चढ़कर प्रसन्न मन अयोध्याको शीशनवाया और बनको पयान किया २ रामचंद्र के चलतेही अयोध्या को अनाथ जानिकर महा व्याकुल सबलोग साथही चलहुये ३ कृपासिंधु रामचंद्र बहुतेरा समुझाते हैं तब कुछ फिरि कर प्रेमके बश फिरि साथही चलि होते हैं ४ उन सब को अयोध्या तो महा भयावनी लगती है मानों अंधेरी काल रातिही है ५ घोर जन्तुओं के समान तो उनको पुरवासी लगते हैं परस्पर एक को एक देखकर डराते हैं ६ घर तो स्मशान देखि परतेहैं परिजन भूतसे लगतेहैं सुत, मित्र, हितू, यमदूत से जानि परते हैं ७ बागों में वृक्ष, वेली सब कुम्हलाते हैं नदी, सरोवर देखे भी नहीं जातेहैं ॥ ८ दोहा॥ हाथी घोड़े और केलिमृग, पुरके पशु,पक्षी, चातक, पपीहे, मयूर,कोकिल, चक्रवाक, शुक, सारिका, हंस, सारस चकोर ॥ ८ ॥

राम बियोग बिकल सबठाढ़े । जहं तहं मनंहु चित्रलिखि काढ़े १
नगर सकलबनखरभर भारी । खग मृगबिकल सकलनरनारी २
बिधिकेकयीकिरातिनिकीन्ही । जेहिंदवदुसहदशहुंदिशिदीन्ही ३
सहिन सके रघुबर बिरहागी । चले लोग सब व्याकुल भागी ४
सबहिं बिचार कीन्ह मनमाहीं । रामलषण सियबिनुसुखनाहीं ५
जहां राम तहं सकल समाजू । बिनु रघुबीर अवधकेहिं काजू ६
चले साथ अस मंत्र दृढ़ाई । सुर दुर्लभ सुख सदन बिहाई ७
रामचरण पंकज प्रियजिन्हहीं । बिषयभोगबशकरहिं कितिन्हहीं ८
दो० बालक वृद्धबिहाइ गृह लगे लोग सब साथ ।
तमसातीर निवास किय प्रथम दिवस रघुनाथ ॥ ६ ॥

रामचंद्र के बियोग से जहां के तहां सब ऐसे खड़े हैं मानों चित्रही के काढ़े हुये हैं १ नगर रूपी बनमें बड़ाही खरभराहट होरहा है क्योंकि समस्त नर, नारी रूप खग, मृग सब महा व्याकुल हैं २ जहां बिधाता ने कैकेयी किरातिनी रची है जिसने दशहूं दिशाओं में महा दुस्सहदवाग्नि देदी है ३ जब रामचंद्र के बियोग की अग्निको नसहिसके तब तो सबके सब रथहीं के पीछे भाग चले ४ सबों ने अपने अपने मनमें यही बिचार किया कि राम, लक्ष्मण, सीता बिना हम सुख कहीं भी तो न पावेंगे ५ जहां राम हैं तहीं समस्त सुख समाज है रामकेबिना अयोध्या में हमारा कौन काम है ६ ऐसा दृढ़ बिचार करिके देव दुर्लभ सुख अपने

अपने घरों में छोड़ि छोड़ि कर सब रामके साथही चले ७ जिनको रामचन्द्रही के चरणकमल परम प्यारे हैं उनको बिषय भोग क्या बश करि सकते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ बालक और बृद्धोंको घरमें छोड़ि छोड़ि सब लोग रामही के साथ हो लिये इस प्रकार सब पुरबासियों समेत तमसा नाम नदी के तट प्रथम दिन रामने निवास किया ॥ ९ ॥

रघुपति प्रजा प्रेम बश देखी। सदय हृदय दुख भयउ बिशेषी १
करुणामय रघुबीर गुसाईं। बेगि पांइ यहि पीर पराई २
कहि सप्रेम मृदु बचन सुहाये। बहुबिधि राम लोग समुझाये ३
किये धर्म उपदेश घनेरे। लोग प्रेम बश फिरहिं न फेरे ४
शील सनेह छांड़ि नहिं जाई। असमंजस बश भे रघुराई ५
लोग शोक बश गे सब सोई। कछुक देव माया मति भोई ६
जबहिं यामयुग यामिनि बीती। राम सचिव सन कहेउ सप्रीती ७
खोज मारि रथ हांकहु ताता। आन उपाय बनिहिं नहिं बाता ८
दो० राम लषण सिय यान चढ़ि शंभु चरण शिरनाइ।
सचिवचलायउ तुरत रथ इत उत खोज दुराइ ॥ १० ॥

रामचन्द्र ने अपनी सब प्रजा प्रेम के बश जब देखी तबतो अतिदया युक्त हृदय तातें बड़ाही दुःख हुआ १ करुणावान् रामचन्द्र तातें उनको पराई पीर बेगिही पाई जाती हैं २ बड़े प्रेम समेत अति कोमल सुन्दर सुहाये बचन कहि कहिकर सब लोगों को राम ने समुझाया ३ धर्म के भी अनेक उपदेश उनको किये परंतु प्रबल प्रेम के बश फेरनेसे कोई भी नहीं फिरते हैं ४ शील, सनेह रामचंद्र से छोड़ाजाताही नहीं है तातें बड़ेही असमंजस के बश होरहे हैं ५ जब शोक के मारे लोग सबके सब सोगये और कुछ देवमाया ने उनकी बुद्धि भोइदी ६ जब दोपहर राति बीती तब रामचन्द्र ने सुमंत से समुझाय कर यह कहा ७ किहे तात तुम दांयें बांयें सब ओर से रथके खको छिपाकर उसको हांको और किसी उपायसे बातनहीं बनैगी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ राम, लक्ष्मण, सीता रथपर चढ़िकर चले और सुमंत ने रथ को जिस लीक पर कि आया रहै उसी लीक पर योजनों पर्य्यन्त उत्तर दिशाही को हांक दिया जिस से दांयें बांयें कहीं भी खोज न हुये फिरि कहीं दाउं देखकर शृङ्गबेर पुरको ले गये ॥ १० ॥

जागे सकल लोग भा भोरू। गेरघुबीर भयउ अति सोरू १
रथकरखोजकतहुं नहिंपावहिं। रामरामकहिचहुं दिशिधावहिं २

मनहुं बारिनिधिबूड़ जहाजू। भयउ बिकलजनु बणिकसमाजू ३
एकहिं एक देहिं उपदेशू। तजे राम हम जानि कलेशू ४
निन्दहिं आपु सराहहिं मीना। धिक जीवन रघुबीर बिहीना ५
जो पै प्रिय बियोग बिधिकीन्हा। तो कस मरणनमांगेदीन्हा ६
यहि बिधि करत प्रलाप कलापा। आये अवध भरे परितापा ७
बिषमबियोग न जाइबखाना। अवधि आश सबराखहिंप्राना ८
दो० राम दरश हित नेम ब्रत लगे करन नर नारि।
मनहुंकोक कोकी कमल दीन बिहीन तमारि॥ ११॥

प्रात होतेही जो सब लोग जागे तो राम गये राम गये ऐसा अतिही खरभर हुआ १ रथको तो खोज कहीं पाते नहीं है राम राम कहिकर सब ओरको दौरतेहैं २ जैसे समुद्र में जहाज बूड़ता है और बणिकों का समाज बिकल होता है तैसेही सब अयोध्याबासी राम बियोग में व्याकुल हैं ३ एकको एक उपदेश करते हैं अरे भाइयो रामने केवल कलेशही जानि कर हम सबको त्याग दिया है ४ अपने सनेहको तो निन्दते हैं मीनों के प्रेमको सराहते हैं और कहतेहैं किराम रहितजीवनको धिक्कार है ५ जो पै प्रीतम का बियोग बिधाता ने बनाया तो मांगने से मरना भी क्यों नहीं दिया ६ इस प्रकार प्रलापोंके समूह करते हुये परिताप भरे अयोध्या में सब आये ७ महा बिषम राम बियोग कहाही नहीं जाता है अबतो अवधि की आशा पर सब अयोध्याबासी अपने अपने प्राणों को राखते हैं॥ ८ ॥ दोहा ॥ रामके दर्शन के लिये अयोध्याके सब नर, नारी नेम, ब्रत करनेलगे और जैसे सूर्य्य बिना चक्रवाक चकई और कमल दीन होते हैं ऐसेही सब अयोध्याबासी महादीन होरहे हैं ॥ ११ ॥

सीता सचिव सहित दोउ भाई। शृंगबेर पुर पहुंचे जाई १
उतरे राम देवसरि देखी। कीन्ह दंडवत हर्ष बिशेषी २
लषणसचिवसियकीन्हप्रणामा। सबहिं सहितसुखपायउरामा ३
गंग सकल मुदमंगल मूला। सब सुख करनि हरनिसबशूला ४
कहि कहि कोटिक कथा प्रसंगा। राम बिलोकहिं गंगतरंगा ५
सचिवहिं अनुजहिं प्रिय हिं सुनाई। बिबुधनदीमहिमाअधिकाई ६
मज्जनकीन्हपंथश्रम गयऊ। शुचिजल पियतमुदितमनभयऊ ७
सुमिरतजाहि मिटहिभवभारू। तेहिश्रमयहलौकिकब्यवहारू ८

दो० शुद्ध सच्चिदानन्दमय राम भानु कुल केतु।
करत चरित नर अनुहरित संसृति सागर सेतु ॥ १२ ॥

सीता, सुमंत समेत राम लक्ष्मण शृंगवेरपुर के पास जा पहुंचे १ तबतो रामचंद्र श्रीगंगा को देखि कर रथ से उतरे और बड़े हर्ष समेत गंगाको दंडवत प्रणाम किया २ फिरि लक्ष्मण, सुमंत, सीता ने भी गंगाको प्रणाम किया और सब समेत राम ने बड़ा सुख पाया ३ क्योंकि गंगा समस्त आनन्द और मंगलों की मूल हैं फिरि समस्त सुख कारिणी और समस्त शूल हारिणी हैं ४ अनेक कथाओं के प्रसंग कहि कहि रामचंद्र गंगाकी तरंगों को देखते हैं ५ फिरितो रामचंद्र ने सुमंत लक्ष्मण सीता से गंगाकी महिमा बढ़ाइ बढ़ाइ कर कही ६ तिस पीछे सब समेत राम ने स्नान किया मार्ग का श्रम खोया महा पवित्र गंगाजल पीतेही परम प्रसन्न होगये ७ जिन राम स्वामी के स्मरणही से जीवोंका संसार भार नाश होजाता है उस स्वामी को पंथश्रम होना केवल लौकिक व्यवहारही है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ शुद्ध सात्विक आनन्द चिन्मय भानुकुल केतु राम हैं ते संसार सागर के पार कर्त्ता सेतु मनुष्यों के चरित्र करते हैं ॥ १२ ॥

यह सुधि गुह निषाद जब पाई। मुदित लियेप्रिय बंधुबुलाई १
लै फल मूल भेंट भरि भारा। मिलन चलेउ हिय हर्ष अपारा २
करि दंडवत भेंट धरि आगे। प्रभुहिं बिलोकत अति अनुरागे ३
सहज सनेह बिबश रघुराई। पूंछी कुशल निकट बैठाई ४
नाथ कुशल पद पंकज देखे। भयउं भाग्य भाजन जन लेखे ५
देव धरणि धन धाम तुम्हारा। मैं जन नीच सहित परिवारा ६
कृपाकरिय पुर धारियपाऊं। थापिय जनसब लोकसिहाऊं ७
कहेहु सत्य सब सखा सुजाना। मोहिं दीन्हपितुआयसु आना ८
दो० बर्ष चारि दश बास बन मुनि ब्रत बेष अहार।
ग्राम बास नहिं उचित सुनि गुहहिं भयउ दुखभार ॥ १३

जब रामचंद्र के आने के समाचार गुह नाम निषाद राज ने पाये तबतो अति प्रफुल्लित होकर ज्ञाति के लोगबुला लिये १ फल, मूल, भेंट, भार भरि भरि कर साथ लेकर बड़े हर्ष से मिलने को चले २ दंडवत प्रणाम करिके भेंट निबेदन की और बड़े प्रेम से रामचंद्र को देखने लगा ३ रामचन्द्र तो केवल प्रेमही के बश हैं उसको अतिही समीप बैठारि कर कुशल पूंछी ४ तबतो निषाद ने कहा कि हे नाथ आपके चरण कमल देखने से मेरे सब प्रकार से कुशल हुई और आपके सेवकों के लेखे में

मैं भी भाग्य भाजन हुआ ५ हे देव यह धरणी और धन, धाम सब आपही का है मैं तो परिवार समेत आपका अति नीच सेवक हूं ६ आप कृपा कीजिये और पुरमें पग धारिये और मेरेको अपना करिके स्थापन कीजिये तातें समस्त लोक मेरे को सिहावै ७ ऐसे निषादराजके बचन सुनि कर रामचन्द्र ने कहा हे सखा तुमने जो कहा सो सब सत्यही है परंतु मेरे पिता ने औरही आज्ञा दी है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ चौदह वर्ष तो बनमें बास और मुनिजनों का बेष मुनिजनोंही का आहार मुनिजनोंहीके व्रत किये जावेंगे ग्रामबास अब मेरेको उचित नहीं है यह सुनि कर गुह को बड़ाही दुःख हुआ ॥ १३ ॥

रामलषण सिय रूपनिहारी। कहहिं सप्रेम नगर नर नारी १
ते पितु मातु कहौ सखि कैसे। जिन पठये बन बालक ऐसे २
एक कहैं भल भूपति कीन्हा। लोचनलाहु हमहिं जिन दीन्हा ३
तब निषाद पति उर अनुमाना। तरु शिंशुपा मनोहर जाना ४
लै रघुबीरहिं ठाउं दिखावा। कहेउ राम सब भांति सुहावा ५
पुरजन करि जुहार गृह आये। रघुपति संध्या करन सिधाये ६
गुह सम्हारि साथरी बनाई। कुश किशलय मृदु परम सुहाई ७
शुचि फल मूल मधुर मृदु जानी। दोना भरिभरि राखे आनी ८
दो० सिय सुमंत भ्राता सहित कन्दमूल फल खाइ।
शयन कीन्ह रघुबंश मणि पांय पलोटत भाइ ॥ १४ ॥

राम, लक्ष्मण, सीता तीनों के अलौकिक रूपको देखि देखि कर शृंगपुरके नरों की नारी बड़े प्रेम समेत परस्पर कहती हैं अरीहे सखी कहो तो ते माता पिता कैसे निर्दयी हैं जिन्हों ने ऐसे रूप शील गुणवान अपने पुत्र बधू समेत बनको निकास दिये हैं १। २ कोई एक कहती हैं राजाने बहुतही भला किया जिन्होंने हम सब बनबासियों को नेत्रों का लाभ देदिया ३ तबतो निषादराज ने मनमें बिचारि कर एक शिंशुपाका वृक्ष अति मनोहर स्वामीके बिश्राम के योग्य जाना ४ रामचन्द्रको तहां लेजाकर स्थानदिखाया रामचंद्र ने उसको देखिकर कहा कि बहुत सुन्दर है ५ जब रामचंद्र तहां ठहर गये तब तो पुरवासी उनको जुहार करिकरि अपने अपने घर आये और रामचंद्र संध्या करने को गये ६ गुह ने कुश और कोमल पत्रों की सुन्दर सुहाई साथरी स्वामीके बिश्राम को बनाई ७ और अति पावन मधुर कोमल कन्द, मूल, फल, दोने भरि भरि कर ला रक्खे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सीता, लक्ष्मण, सुमंत समेत रामचंद्रने कन्द, मूल, फल पाइ कर बिश्राम किया लक्ष्मण चरणचापने लगे १४

उठे लषण प्रभु सोवत जानी। कह सचिवहि सोवनमृदुबानी १
कछुक दूरि सजि बाण शरासन। जागन लगे बैठि बीरासन २
गुह बुलाइ पाहरू प्रतीती। ठाउं ठाउं राखे अति प्रीती ३
आप लषण पहं बैठेउ जाई। कटि भाथा शर चाप चढ़ाई ४
सोवत प्रभुहिं निहारि निषादा। भयउ प्रेमबश बिकलबिषादा ५
तन पुलकित लोचन जल बहई। बचन सप्रेमलषणसनकहई ६
भूपति सदन सुभाय सुहावा। सुरपति सदन न पटुतर आवा ७
मणिमय रचित चारु चौवारे। जनुरतिपति निज हाथ संवारे ८
दो० शुचि सुबिचित्र सुभोग मय सुमन सुगंध सुबास।
पलंग मंजु मणि दीप जहं सबबिधि सकल सुपास॥ १५

फिरि तो लक्ष्मण स्वामी को सोवते जानि कर उठे और सुमंत से भी सोवने को कोमल बाणी से कहा १ आप धनुष चढ़ाइ उस में बाण संधान किया और रामचन्द्र से कुछ दूरि बीरासन बैठि कर जागने लगे २ निषादराज ने भी प्रतीति के पाहरू बुला कर बडो प्रीति से ठौर ठौर बैठार दिये३ और आपभी कटि में भाथा बांधि धनुष में बाण संधानि लक्ष्मण के पासही जाबैठा ४ तबतो निषादपति रामचंद्र जानकी को प्रथिवी में साथरी पर सोवता देखिकर प्रेम के वश अतिही व्याकुल होगया ५ तनतो उसका पुलकित होगया नेत्रों से जल बहने लगा प्रेम समेत बचन लक्ष्मण से कहने लगा ६ देखो हे लक्ष्मण महाराज दशरथ का मंदिर सहज ही सुंदर देवराज इन्द्र का भी मंदिर जिस के समान नहीं हैं ७ जिस में मणि जटित चौबारे बने हैं मानों कामहीने अपने हाथों से रचे हैं॥ ८॥ दोहा अति बिचित्र पवित्र समस्त भोग पुष्प सुगन्ध जहां बासतेहैं उज्ज्वलंगमणिमय दीप और सब भांति सुपास है॥ १५॥

बिबिधि बसन उपधान तुराई। क्षीर फेनु मृदु बिशद सुहाई १
तहंसियरामशयन नितकरहीं। निजछबिरति मनोजमदहरहीं २
ते सिय राम साथरी सोये। श्रमित बसन बिनुजाहिं नजोये ३
मातु पिता परिजन पुरबासी। सखा सुशील दास अरु दासी ४
जुगवहिं जिनहिं प्राणकी नाईं। महि सोवत तेइ रामगुसाईं ५
पिता जनकजग बिदित प्रभाऊ। ससुर सुरेश सखा रघुराऊ ६

रामचंद्र पति सो बैदेही। सोवति महि बिधि बाम नकेही ७
सिय रघुबीर कि कानन योगू। कर्म प्रधान सत्य कह लोगू ८
दो० केकय नन्दनि मंदमति कठिन कुटिल पन कीन्ह।
जेहिं रघुनन्दन जानकिहिं सुख अवसर दुखदीन्ह ॥ १६

अनेक भांति के बस्त्र उपबर्हण शय्या अति कोमल दुग्ध के फेनु के समान उज्ज्वन तहां सीता राम नित्य शयन करतेरहे अपनी छबि से रति और कामके भी मदको हरतेरहें १।२ तेई महा अमित सीता, राम आज इस साथरी पर सोवते हैं बस्त्रों बिना देखे नहीं जाते हैं ३ समस्त माता और पिता, परिवार पुरबासी संग के सखा और दासी, दास जिन राम को प्राणों के समान रक्षा करतेरहे ते राम स्वामी आज पृथ्वी पर सोवते हैं ४।५ जिस सीताके पितातो विश्व में बिख्यात महाराज जनकहें और देवेंद्र के सहायक महाराज दशरथ स्वसुरहें रामचंद्र पतिहें सो सीता पृथ्वी पर सोवती हैं सच्चहै बिधाता किसको बामनहीं होताहै ६।७ सीता रामचन्द्र क्या बनके योग्य हैं कर्महो मुख्य है यह लोग सत्यही कहते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ केकेयी मंदमति बड़ीही कठोर है देखो कैसा कुटिलपन कियाहै जिसने रघुनन्दन श्रीराम और जानकी को इस सुख समय में दुख दिया है ॥ १६ ॥

भइदिनकर कुल बिटप कुठारी। कुमतिकीन्ह सबबिश्व दुखारी १
भयहु बिषाद निषादहिं भारी। रामसीय महि शयन निहारी २
बोले लषण मधुर मृदुबानी। ज्ञान बिराग भक्तिरस सानी ३
कोउ न काहुदुख सुखकर दाता। निज कृत कर्म भोगसुनुभ्राता ४
योग बियोग भोग भलमंदा। हित अनहित मध्यम भ्रमफंदा ५
जन्म मरण जहं लगि जगजालू। संपति बिपति कर्मअरुकालू ६
धरणि धाम धन पुर परिवारू। स्वर्गनर्क जहंलगिब्यवहारू ७
देखिय सुनिय गुणिय मनमाहीं। मोह मूल परमारथ नाही ८
दो० सपने होइ भिखारि नृप रंक नाक पति होइ।
जागे लाभन हानि कछु तिमि प्रपंच जगजोइ ॥ १७ ॥

दिनकर कुलको तो हेलक्ष्मण यह कैकेयी कुठारीही हुई और समस्त विश्व को भी इस कुमतिने दुखीही करिदिया १ इस प्रकार राम जानकी को प्रथवी पर शयन किये देखि कर जब निषादराज को महा मारी बिषाद हुआ तबतो लक्ष्मण उससे ज्ञानबैराग भक्तिकीसानी मधुर कोमलबाणी बोले २।३ सुनो हे भाई संसारमें कोई किसी

को दुख सुख का दाता नहींहै सब अपनेही किये कर्मों के फलों को भोगते हैं ४ संसारमें योगहोना, बियोग होना, भला, बुरा मानना, शत्रु, मित्र, उदासीन होना यह सब अज्ञान ही का जालहै ५ जन्मना, मरना, संपति, बिपति, कर्म और काल धरणी धन, धाम, पुरजन, परिवार, स्वर्ग, नर्क पर्य्यंत समस्त व्यवहारजो देखा जाताहै सुननेमें आता है मन के बिचार मेंहै उससबका केवल मोहही मूल है परमार्थ कुछभी नही है ६।७ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जैसे सपनेमें कोई भिखारी राजा होजावे अथवा कोई राजा भिखारी हो जावेजागेपीछे नतो उस भिखारीको कुछ लाभहुआ न उस नाकपति की कुछ हानि हुई ऐसेही संसार में भले बुरे पदार्थ सब अनित्य हैं परमार्थ नहीं हैं ॥ १८ ॥

अस बिचारि नहिं कीजिय रोषू। बादिन काहुहिं दीजिय दोषू १
मोहनिशा सब सोवन हारा। देखहिं स्वप्न अनेक प्रकारा २
यहि जगयामिनि जागहिं योगी। परमारथी प्रपंच बियोगी ३
जानिय तबहिं जीव जगजागा। जबसबबिषयबिलासबिरागा ४
होइ बिबेक मोह भ्रम भागा। तब रघुबीर चरण अनुरागा ५
सखा परम परमारथ एहू। सीय राम पद सहज सनेहू ६
राम ब्रह्म परमारथ रूपा। अबिगत अलख अनादि अनूपा ७
सकल बिकार रहित गत भेदा। कहि नितनेति निरूपहिं बेदा ८
दो० भक्तिभूमि भूसुर सुरभि सुरहित लागि कृपाल।
करत चरित धरि मनुज तनु सुनत मिटहिं जगजाल ॥ १८

ऐसा इन सबको स्वकर्म जनित भोग जानि करनतो किसीपर रोषकरना चाहिये न बृथा किसीको दोष दीजिये १ मोहकी रातिके सोनेहारे सब अनेक प्रकार केस्वप्न देखतेहैं २ इस संसाररूपीरात्रि में केवल योगीजनही जागतेहैं जो परमार्थ चिंतकहैं और बिधि प्रपंचसे बिरागी हैं ॥ यानिशासर्वभूतानां तस्यांजागर्त्तिसंयमी यस्यांजागर्त्ति भूतानि सानिशापश्यतोमुने: ३ संसार रूपी रातिमें इस जीवको तब जागा जानिये जब समस्त बिषय बिलाससे बिराग होजावै ४ जब संसार से बिराग होता है तब इसको स्वरूप का ज्ञान होताहै मोह, भ्रम दूरि होताहै तिसपीछे जब परस्वरूप का ज्ञान होताहै तबश्रीरामचन्द्रके चरणों का प्रेम उत्पन्न होताहै ५ हे सखा यही परम परमार्थ जानो जो सीता, रामके चरणों में जीको प्रेमहो ६ सो रामही ब्रह्म परमार्थ रूप अव्यक्त अलक्ष्य अनादि अनूप हैं ७ ॥ रामःसत्यपरब्रह्म रामात्किंचिन्नबिद्यते समस्त बिकार शून्यहैं भेद रहितहैं जिनको नेति कहिके बेद निरूपण करते हैं ॥ ८ दोहा ॥ अपने भक्त जान और प्रिथवी, द्विज देवताओं के अर्थ कृपालु स्वामीने अवतारा लियहै और तैसेही चरित्र करते हैं ॥ १८ ॥

सखा समुझि अस परिहरि मोहू । सिय रघुबीर चरण रत होहू १
कहत राम गुण भा भिनसारा । जागे जग मंगल दातारा २
सकल शौच करि राम नहावा । शुचि सुजान बटक्षीर मंगावा ३
अनुज सहित शिर जटा बनाये । देखि सुमंत नयन जल छाये ४
हृदय दाह अति बदन मलीना । कह करजोरि बचन अतिदीना ५
नाथ कहेउ अस कौशल नाथा । लै रथ जाउ राम के साथा ६
बन दिखाइ सुरसरि अन्हवाई । आनेहु फेरि बेगि दोउ भाई ७
राम लषण सिय आनेहु फेरी । संशय सकल सकोच निवेरी ८
दो० नृप अस कहेउ गुसाइं जस कहिय करौं बलि सोइ ।
करि बिनती पायन परेउ दीन बाल जिमि रोइ ॥ १६ ॥

ऐसा समुझि कर हे सखा इस बृथा अज्ञान को छोड़ि कर परम परमार्थ रूप सीता, रामचंद्र के चरणों में आशक्त हो‍ओ १ इस प्रकार रामचंद्र के गुणों को बर्णन करते जब प्रातःकाल हुआ तबतो जगत् के मंगल दायक राजाजागते हुये २ समस्त शौच क्रिया करिके रामचंद्र ने स्नान किया और परम बिशुद्ध सुजान रामने बट का चीर मंगाया ३ लक्ष्मण समेत परम मनोहर काकपक्ष अलकावलियों के शिर पर जटा जूट बनाये सोतो देखतेही सुमंत के नेत्र जल से भरि आये ४ हृदय में तो दाह हो उठा मुख मलीन हो गया हाथ जोरि कर अतिही दीन बचन बोले ५ हे नाथ मेरे को महाराज कोशलेन्द्र ने ऐसा कहा है कि तुम रथ ले कर राम के साथ जाओ ६ उन को चारि दिन बन दिखा कर और गङ्गा स्नान करा कर फेरि लाना ७ राम समेत सीता लक्ष्मण को उनको संशय सकोच दूरि करिके फेरि लाना ॥ ८ ॥ दोहा । राजा ने तो मेरे को यही आज्ञा दी है अब जैसा आप कहें तैसा मैं करूं इस प्रकार बहुत सी बिनती करिके रामचंद्र के चरणों पर गिर परा और बालकों की नाईं रो दिया ॥ १६ ॥

तात कृपा करि कीजिय सोई । जाते अवध अनाथ न होई १
मंत्रिहिं राम उठाइ प्रबोधा । तात धर्म मारग तुम शोधा २
शिबिदधीच हरिचन्द नरेशा । सहे धर्म हित कोटि कलेशा ३
रंति देव बलि भूप सुजाना । धर्म धरेउ सहि संकट नाना ४
धर्म न दूसर सत्य समाना । आगम निगम पुराण बखाना ५
मैं सोइ धर्म सुलभ करि पावा । तजे तिहूं पुर अपयश छावा ६

संभावित कहं अप यश लाहू । मरण कोटि सम दारुणदाहू ७
तुम सन तात बहुतकाकहहूं । दियेउतर पुनि पातक लहहूं ८
दो० पितु पद गहिकर कोटि बिधि बिनय करब कर जोरि ।
चिन्ता कवनेहु बातकी तात करिय जनि मोरि ॥ २० ॥

हे तात कृपा करिके सोई आप को करना उचित है जिस प्रकार अयोध्या अनाथ न हो जावे १ तबतो सुमंत को उठा कर राम ने समुझाया और कहा कि हे तात धर्मका मार्गतो तुमने भले प्रकार शोधन कियाहै २ देखो राजा शिविनेऔर दधीच ऋषि, हमारे प्रपितामह महाराज हरिश्चन्द्र ने धर्म के लिये अपार क्लेश सहे हैं ३ राजा रंतिदेव और परम सुजान दानवेंद्र बलि ने बड़े बड़े संकट सहि कर धर्म धारण किया ४ सत्य के समान और दूसरा धर्म नहींहै बेद, पुराण, शास्त्र सब में प्रसिद्ध है सो धर्म मैंने तो थोरेही में पाया है उसको त्यागने से तीनों लोक में अपयश मेरा औमेरेपिता का हो जायगा ५ । ६ सभावित् अर्थात् प्रतिष्ठावान पुरुषों को अपयश का लाभ मरण से कोटि गुण दुख दायक होता है॥ संभाबितस्य चाकीर्त्तिर्मरणादतिरिच्यते ७ तुम से तो हे तात मैं बहुत नहीं कहि सकता हूं क्योंकि आप को उत्तर देने में मेरे को बड़ा पाप होता है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जाकर मेरी ओर से पिता के चरण छूजिये और हाथ जोरि कर बिनती कीजिये और कहिये कि हे तात किसी बात की आप मेरी चिन्ता न करैं ॥ २० ॥

तुम पुनि पितुसम अतिहितमोरे । बिनती करौं तात करजोरे १
सबबिधि सोइ कर्त्तब्य तुम्हारे । दुखन लहै पितु सोच हमारे २
सुनि रघुनाथसचिव सम्बादू । भयउ सपरि जनबिकलनिषादू ३
पुनिकछु लषणकही कटुबानी । प्रभुबरजेउ बड़ अनुचित जानी ४
सकुचि रामनिज शपथदिवाई । लषण संदेश कहबजनि जाई ५
कह सुमंत पुनिभूप संदेशू । सहिनसकिहि सियबिपिनकलेशू ६
जेहिंबिधिअवध आवफिरिसीया । सोइरघुनाथतुमहिंकरनीया ७
नतरु निपटअवलंब बिहीना । मैंनजियब जिमिजलबिनुमीना ८
दो० मैकै ससुरे सकल सुख जबहिं जहां मनमान ।
तबतहं रहब सुखेनसिय जबलगि बिपति बिहान ॥ २१

आप भी पिताही के समान मेरे अति हित हो ताते हाथ जोरि कर आपसे बिनती करताहूं १ कि आप को सबभांति से सोई कर्तब्य है जिसमें मेरे सोच से

पिता दुखनपावें २ ऐसा अश्रोतव्य सुमंत और रामचन्द्र का संबाद सुनतेही परिवार समेत निषादराज गुह बिकल होगया ३ फिरि तो लक्ष्मण ने कुछ कठोर बचन राजा को कहे तबतो रामचन्द्र ने बड़ा अनुचित जानिकर उनको रोका ४ और सकुचि कर राम ने अपनी शपथ सुमंत्र को दिवाई कि हे तात लक्ष्मण के बचन पिता से नकहना ५ फिरितो सुमंत ने राजा का संदेशा रामचन्द्र से कहा कि हेराम आप के पिता ने यह कहा है कि सीता बनके दुःखोंको न सहि सकैगी ६ ताते जिसभांति घरको फिरि आवै सोई हे राम आप को कर्तव्य है ७ नहीं तो अतिही अवलंब रहित मेरा जीवन जलबिहीन मीनकी नाईं न होगा ॥ ८ ॥ दोहा ॥ उसके मायके ससुरे में समस्त सुख हैं जब जहां उसका मनमाने तब तहां अपनी इच्छा से रहा करै जबतक इसबिपत्ति की राति का बिहान होजावे ॥ २१ ॥

बिनती भूप कीन्ह जेहिभांती । आरति प्रीतिनसो कहिजाती १
पितुसंदेशसुनि कृपानिधाना । सियहिदीन्हिसिख कोटिबिधाना २
सासुससुरगुरुप्रिय परिवारू । फिरहुतोसबकर मिटहिंखवारू ३
सुनिपति बचन कहति बैदेही । सुनहु प्राणपति परम सनेही ४
प्रभु करुणामय परम बिबेकी । तनतजि रहति छांहकिमि छेंकी ५
प्रभा जाइ कहं भानु बिहाई । कहं चन्द्रिका चंद्रतजि जाई ६
पतिहि प्रेममय बिनय सुनाई । कहतिसचिव सन गिरासुहाई ७
तुमपितुससुर सरिस हितकारी । उतरदेउंफिरि अनुचितभारी ८
दो० आरति बश सन्मुख भई बिलग न मानव तात ।
आरज सुतपद कमल बिनु बादिजहांलग नात ॥ २२ ॥

यह बिनती राजा ने जिस आरति और प्रीति से करीहै सोमेरे से कही नहीं जाती है १ ऐसा पिताका संदेशा सुनिकर कृपानिधान राम ने सीता को अनेकप्रकार से सिखावन दिया २ कि हे प्रिया तुम्हारे फिरने से सासु, ससुर, गुरुजन, परिवार सबका दुख दूरि होता है तुमको फिरनाही उचित है ३ ऐसे रामचन्द्र के बचन सुनिकर सीता ने कहा किहेप्राणपति स्वामी आपतो करुणानिधान परम बिबेकी हैं यहतो कहिये कि तनको छोड़िकर छाया छेंकि कैसे जाती है ४ । ५ सूर्य्यको छोड़िकर उसकी प्रभा कहांजावे और चंद्रमा को तजिकर उसकी चंद्रिका कैसे कहीं रहे ६ इस प्रकार प्रेममय बिनती पतिको सुना कर फिरि सुमंत से सुन्दर बाणी बोली ७ कि आप तो ससुरही के समान मेरेहितकारी हो आपको उत्तर देनेमें बड़ापातक होता है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इस बिपत्ति के बश में आपके संमुख हुई हूं इसका आप बिलग नमानिये आर्य्य कहिये पिता, माता, अग्रज, गुरुजन, सासु, ससुर ज्येष्ठ इत्यादि

यहां सासु ससुर का अर्थग्राह्य है किसासु ससुर के पुत्र अर्थात् पतिबिना स्त्री को समस्त मातेबादि हैं ॥ २२ ॥

पितु बैभव बिलास मैं दीठा । नृप मणि मुकुट मलित पदपीठा १
सुख निधान असपितु गृहमोरे । पति बिहीन मन भावन भोरे २
ससुर चक्रवी कौशल राऊ । भुवन चारि दश प्रगट प्रभाऊ ३
आगे हुइ सुरपति जेहिं लेई । अर्द्ध सिंहासन आसन देई ४
ससुर एतादृश अवध निवासू । प्रिय परवार मातु सम सासू ५
बिनु रघुपति पद पद्म परागा । मोहिं कोउसपनेहु सुखद नलागा ६
अगम पंथ बन भूमि पहारा । करि केहरि सर सरित अपारा ७
कोल किरात कुरंग बिहंगा । मोहिं सबसुखद प्राणपति संगा ८
दो० सासु ससुर सन मोर हित बिनय करब परिपांय ।
मोरसोच जनि करिय कछु मैंबन सुखी सुभाय ॥ २३ ॥

पिताके ऐश्वर्य्य का बिलास मैंने अपनीआंखो से देखाहै राजाओं के शिरोमणि के मुकुटों के अग्र भागसे जिनके चरण पीठ सदा घिसे जाते हैं १ ऐसा सुखनिधान मेरे पिता का घरहै परंतु पतिके बिनाभूलि करि भी मेरे मनमें नहीं भावता है २ और स्वसुर मेरे चक्रवर्ती कौशलाधीश हैं जिनको प्रभाव चौदहूं लोकों में प्रगट है इंद्र महेंद्र भी जिनको उठ कर आगे से लेता है और अपने सिंहासन के अर्द्ध भाग पर आसन देता है ३ । ४ ऐसे तो मेरे स्वसुर हैं अयोध्यापुरी मेरी राजधानी है समस्त परिवार प्राणों के समान मेरे पर प्यार करतेहै सासु समस्त माताही के समान हैं ५ परंतु एक रघुनाथ रामचंद्र के चरण कमल बिना मेरेको कोई भी सुख दायक नहीं है ६ और यह जो महा अगम पन्थ, बन, भूमि, पर्बत बन के जीव, हाथी, सिंह सरोवर, सरिता, बनबासी, कोल, किरात, बनके पक्षी मृगहैं ये सब मेरे को प्राणपति रामचंद्र के साथ अति सुखदायक हैं ७ । ८ ॥ दोहा ॥ तातें सासु, स्वसुर से मेरे लिये बिनती करना कि मेरा सोच कोई भी कुछ न करै मैं अति सुखी हूं ॥ २३ ॥

प्राणनाथ प्रिय देवर साथा । बीर धुरीण धरे धनु भाथा १
नहिं मगश्रम पुनि भ्रमनमोरे । मोहिं लगिसोचकरियजनिभोरे २
सुनिसुमंतसियशीतलबाणी । भयउबिकलजिमिफणिमणिहानी ३
सूझन नयन सुनै नहिकाना । कहिन सकैकछु अतिअकुलाना ४
राम प्रबोध कीन्ह बहु भांती । तदपि होइ नहिं शीतल छाती ५

यतन अनेक साथ हितकीन्हे । उचित उतर रघुनंदन दीन्हे ६
मेटि जाय नहिं राम रजाई । कठिन कर्म गति कछु न बसाई ७
राम लषणसिय पदसिर नाई । फिरेउ बणिक जिमि मूलबिहाई ८
दो० रथ हांकेउ हय रामतन हेरि हेरि हिहनाहिं ।
देखि निषाद बिषाद बश धुनहिं शीश पछिताहिं ॥ २४ ॥

प्राणनाथ मेरे पति और देवर बीरों में अग्रगण्य धनुष बाण लिये मेरे साथहैं तातें नतो मेरेकोपंथ का श्रमहै न किसी बातका भ्रमहै मेरे लिये सोच कदापि न कीजिये १ । २ ऐसी सीता की शीतल वाणी सुनतेही सुमन्त ऐसे बिकलहो गये जैसे मणिकी हानि से सर्पहो जाता है ३ नेत्रों से जिनको कुछ सूझता नहींहै और कानों से सुनते नहीं हैं मुखसे कहनहीं सक्ते हैं ऐसे अति बिकल होगये ४ रामचंद्र बहुतेरा समुझाते भीहैं तौभी छाती नहीं सिराती है ५ साथजानेके लिये बहुतेरे उपाय किये उसके अतिही उचित उत्तर रामचंद्र ने दिये ६ रामचन्द्र की अपेल आज्ञामेटी जाती नहींहै कर्मकी कठिन गतिसे किसी का कुछभी वशनहीं चलताहै ७ पराधीन बिचारे राम, लक्ष्मण सीताके चरणों कोशीश नायकर जैसे कोई बणिक मूल भी गवां कर पलटता है ऐसेही सुमंत अयोध्या को फिरे ८ ॥ दोहा ॥ जब अयोध्या को रथ हांका तबतो घोड़े रामकी ओर देख देख कर हिन हिनातेहैं उनकी दशा देखिकर निषाद लोग पछिताते हैं ॥ २४ ॥

जासु बियोग बिकल पशुऐसे । प्रजा मातु पितु जीवहिं कैसे १
बरबस राम सुमन्त पठाये । सुरसरि तीर आप तब आये २
मांगी नाव न केवट आना । कहै तुम्हार मर्म मैं जाना ३
चरण कमल रज कहंजग कहई । मानुष करणि मूरिकछु अहई ४
छुवत शिला भइ नारि सुहाई । पाहन ते न काठ कठिनाई ५
यहि प्रति पालहुंसब परिवारू । नहिं जानहुंकछु और कबारू ६
तरणिहुंमुनि घरनी होइ जाई । बाट परै मोरि नाव उड़ाई ७
जो प्रभु अवशि पारगा चहहू । मोहिंपद पद्म पखारन कहहू ८
छं० पद पद्म धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं ।
मोहिं राम राउरि आन दशरथ शपथ सबसांचीकहौं ॥
बरु तीर मारहु लषणपै जबलगि न पाउं पखारिहौं ।

तबलगि न न तुलसी दासनाथ कृपालु पार उतारिहौं ॥

सो० सुनि केवटके बयन प्रेम लपेटे अट पटे।
बिहंसे करुणा अयन चितै जानकी लषण तन ॥ २५ ॥

निषाद लोग रथके घोड़ोंकी दशाकोदेखिकर बिलखतेहैं और कहते हैं कि जिसके बियोगकी संतापसे पशु ऐसे ब्याकुलहैं उनके प्रजा, माता,पिता कैसेजीवते होंगे१ बरियाई रामने सुमंत घरको फेरे तबआप श्रीगंगाके तीरआये २ केवटसे नांवमांगतेहैंसो नहीं लाता है औरकहता है कि तुम्हारा मर्म मैं जानताहूं ३ तुम्हारे चरण कमलों की रजको संसार कहता है किकोई मानुष करनी मूरि है ४ जिसके छूते ही शिला महा कठोरभी सुन्दर युवतीहे गई तो पाषाणसे काठ कुछ कठोरनहीं होता है ५ मैं तो इसीसे अपने सब परिवारको पालताहूं और दूसरा उद्यम कुछनहीं जानताहूं ६ जो कदाचित् तरणीभी मुनिकी घरनी होजावै तो उसके उड़िजानेसे मेरीतो बाटही मारी जावै अर्थात् जीविकाही जाती रहै ७ तातें हेस्वामी जो आप अवश्य पारगया ही चाहते हो तो मेरेको अपने हाथों से चरण धोवनेकी आज्ञा दीजिये ८॥छन्द ॥ चरण कमल धोनेके पीछे नावपर चढ़ाकर उतराई भी नहीं चाहत हूं मेरेको हेराम आपकी और महाराज दशरथ की शपथ है सब सांचीही कहताहूं लक्ष्मण मेरे बाण भलेहीं मारो परंतु जबतक चरण न धोऊंगा तबतक हे तुलसीदासके नाथ पार न उतारूंगा ॥ सोरठा ॥ ऐसेप्रेम भरे बचन ब्यंग केवट के सुनि कर करुणा निधान राम सीता औरलक्ष्मण की ओरदेखिकर मुसुकाये९ २ यह अयोध्याकांडकीचौथी पचीसी चौपाइयों कीहुई ॥ ४ ॥

कृपा सिंधु बोले मुसु काई। सोइ करहु जेहि नाव न जाई १
बेगि आनि जल पांय पखारू। होत बिलंब उतारहु पारू २
जासु नाम सुमिरत इकबारा। उतरहिं नर भवसिंधु अपारा ३
सोइ कृपाल केवटहिं निहोरा। जेहिं जग कीन्ह त्रिपदते थोरा ४
पदनख निरखि देवसरि हरषी। सुनिप्रभु बचन मोह मतिकरषी ५
केवट राम रजायसु पावा। पानि कठौता भरि लै आवा ६
अति आनंद उमगि अनुरागा। चरण सरोज पखारन लागा ७
बर्षि सुमन सुर सकल सिहाहीं। यहिसम पुण्यपुंज कोउनाहीं ८
दो० पद पखारि जलपान करि आप सहित परिवार।
पितर पारकरि मुदित पुनि प्रभुहिं गयउ लैपार ॥ १ ॥

फिरितो कृपानिधान रामकेवट से मुसुकाकर बोले अरेभाई सोईकर जिसमें तेरी

नाव जातीन रहे १ बेगिही जल लाकर पाउं पखारि ले हमको विलंब होता है पार उतारि दे २ जिस स्वामी के राम नाम को एकबार भी उच्चारण करिके अपार संसार सागरके पारजीव होजातेहैं ॥ बारिक राम कहत जग जेऊ ॥ होततरण तारण नर तेऊ ३ सोकृपाल स्वामी ऐसा प्रेमके बशहैं किकेवट को निहोरता है जिसस्वामी ने चतुर्दश भुवनात्मक इस अंडकटाह को दोही पगका कियां ४ अपना जन्मस्थान रामके चरणों के नखों को देखि कर गंगा हर्षित तो हुई परंतु स्वामी के मोहन बचनों से मोहने उसकी बुद्धि खींचिली ५ केवटने जोरामचन्द्र की आज्ञा पाई दौरि कर गंगा जल से कठौता भरिकर ले आया ६ बड़ेआनन्द और अनुराग की उमंग से रामचंद्र के चरण कमलों को धोवने लगा ७ उस समय देवगण उस पर पुष्प वर्षाने लगे और उसके भाग्य को सिहाने लगे कि इसके समान पुण्य पुंज दूसरा आज नहींहै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ केवट ने रामचंद्र के चरण पखारे परिवार समेत चरणोदक पान किया पितरों को संसार सागर से पार करिके फिरि प्रसन्नमन राम,लक्ष्मण,सीता को पार लेगया ॥

उतरि ठाढ़भये सुरसरि रेता । सीय राम गुह लषण समेता १
केवट उतरि दंडवत कीन्हा । प्रभुसकुचे यहिं कछुनहिं दीन्हा २
पियहियकीसिय जाननहारी । मणिमुंदरी मनमुदित उतारी ३
कहेउ कृपालु लेहु उतराई । केवट चरण गहे अकुलाई ४
नाथ आजु मैं काह न पावा । मिटे दोष दुख दारिद दावा ४
बहुत कालमैं कीन्हि मजूरी । आज दीन्हि बिधिसब भरिपूरी ६
अब कछु नाथ न चाहिय मोरे । दीन दयाल अनुग्रह तोरे ७
फिरती बार मोहिं जोदेवा । सोप्रसाद मैंशिर धरि लेवा ८
दो० बहुत कहेउ हठि लषण प्रभु नहिं कछु केवट लेइ ।
बिदा कीन्ह करुणायतन भक्ति बिमल बरदेइ ॥ २ ॥

जब सीता और रामचन्द्र गुह लक्ष्मण समेत पार उतरि गङ्गाकी रेती में खड़ेहुये १ तबतो केवट ने नाव से उतरि कर जो रामचन्द्र को दंडवत् प्रणाम किया सोई राम को संकोच हुआ कि इसको कुछ दिया नहीं है २ पति के मन की जाननेहारी सीता ने मणिजटित मुद्रिका उतारि कर रामचन्द्र को चुपके ही देदी ३ जब रामचन्द्र ने उतराई लेने को केवट से कहा तबतो उसने दौरि कर चरण पकरि लिये और कहा ४ हेनाथ ऐसा कौन पदार्थ है जो आज मैंने नहीं पाया आपके चरणोदक ही से मेरे समस्त दोष और दुखरूपी दरिद्र के संताप सबजाते रहे ५ अनादि काल से मैंने घरघर की सेवा करि देखी ॥ देव दनुज मुनि नाग मनुज नहिं याचत कोउ ढबरो। मोरे दुसह दरिद्र दोष दुख काहूंतो न हरो ॥ सोभरिपूरि मजूरी बिधाता ने मेरे को

आजही दीन्ही है ६ अबतो हे दीनदयाल स्वामी आपकी कृपा से मेरे को कुछ भी नहीं चाहिये ७ फिरतीबार जोकुछ आप मुझको देवेंगे सो आपकाप्रसाद माथे धरिकर लेलेऊंगा ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इसप्रकार राम लक्ष्मण उससे बहुतेरा कहते हैं पर केवट नहीं लेता है तबतो रामचन्द्र ने अपनी निर्मला अनपायनी भक्ति बरदेकर उसको बिदाकिया ॥ २ ॥

तबमज्जन करिरघुकुल नाथा। पूजिपार्थविहि नायउ माथा १
सियसुरसरिहिं कहेउ करजोरी। मातु मनोरथ पुरउब मोरी २
पति देवर संग कुशल बहोरी। आइ करौं जेहिं पूजा तोरी ३
सुनिसिय बिनय प्रेमरससानी। भइतब बिमलबारि बरबानी ४
सुनु रघुबीर प्रिया बैदेही। तवप्रभाव जग बिदित नकेही ५
लोकप होहिं बिलोकत तोरे। तोहिंसेवहिं सबसिधि करजोरे ६
तुमजोहमहिं बड़िबिनयसुनाई। कृपाकीन्हिमोहिं दीन्हिबड़ाई ७
तदपि देविमैं देउं अशीशा। सफल होनहितनिज बागीशा ८

दो० प्राणनाथ देवर सहित कुशल कोशला आइ।
पूजिहि सबमन कामना सुयश रहिहि जगछाइ ॥ ३ ॥

जब केवट बिदा होगया तबतो रघुकुलनाथ रामचंद्र ने पार्थवी श्रीगङ्गाजी का पूजन करिके प्रणाम किया १ और सीता ने भी गङ्गाजीको हाथ जोरिकर कहा कि हे मेरी माता मेरेइस मनोऽर्थ को पूर्णकीजियो २ जिससे पति और देवर समेत कुशलसे फेरि आकर तेरापूजन करूं ३ ऐसी प्रेमरस भरी जब सीताकी बिनती गङ्गा ने सुनी तबतो परम पवित्र जलमें सुन्दर बाणी हुई ४ सुनो हेरामप्रिया जानकी तुम्हारा प्रभाव जगतमें किसको बिदित नहीं है ५ जिनको तुम कृपा कटाक्ष से देखती हो तेरंक लोकपाल होजाते हैं और समस्त सिद्धिहाथ जोरे तुम्हारी सेवाकरती हैं ६ तुमने यह जो अति बड़ी बिनती सुनाई है केवल अपनी कृपाकरिके मेरेको बड़ाई ही दी है ७ तथापि हेदेवी मैं अपनी बाणी सफल करने के निमित्त आपको यह आशिष देती हूं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ कि प्राणनाथ अपने पति रामचंद्र और लक्ष्मण देवर समेत कुशल पूर्वक कोशलपुरी श्री अयोध्या में आकर तुम्हारे समस्त मनोऽर्थ पूरे होवेंगे और परम पावन तुम्हारा सुयश संसार में सदा छायारहैगा ॥ ३ ॥

गंग बचन सुनि मंगल मूला। मुदित सीय सुरसरि अनुकूला १
तब प्रभु गुहहिं कहेउ गृहजाहू। सुनत सूख मुख भाउरदाहू २

दीनबचन गुह कह करजोरी। बिनयसुनिय रघुकुलमणिमोरी ३
नाथ साथ रहि पंथ दिखाई। करि दिन चारि चरण सेवकाई ४
जेहि बन जाइ रहब रघुराई। पर्ण कुटी मैं करब सुहाई ५
तब मोकहं जस देव रजाई। सोइ करिहौं रघुबीर दुहाई ६
सहज सनेह राम लखि तासू। संग लीन्ह गुह हृदय हुलासू ७
तब गुह ज्ञाति बोलिसब लीन्हे। करि परितोष बिदासब कीन्हे ८
दो० तब गणपति शिव सुमिरि प्रभु नाइ सुरसरिहिं माथ।
सखा अनुज सिय सहित बन गमन कीन्ह रघुनाथ ॥ ४

ऐसे मंगलमूल गंगा के वचन सुनि कर और गंगा को अपने ऊपर परम प्रसन्न जानि कर सीता अति आनन्दित होगई १ तबतो रामचन्द्र ने गुह को भी घर जानेको कहा सो सुनतेही सहमि कर मुख सूखि गया और हृदय में दाह होगया २ महा दीनबचन हाथजोरि कर कहने लगा कि हे रघुकुलमणि स्वामी मेरी बिनती सुनि लीजिये ३ मैं चाहता हूं कि आपके साथ रहि कर मार्ग दिखाता जाऊं और कुछ दिन चरण सेवा करूं ४ फिरि जिस बनमें आप जा बसें तहामें आपकेनिमित्त पर्णशाला सुन्दर बनाऊंगा ५ तब मेरेको जैसी आज्ञा करोगे तैसाही करूंगा ६ ऐसा स्वाभाविक उसका प्रेम देखि कर साथही चलने को कहा सो सुनिकर निषादराज आनन्दित होगया ७ और उसने अपने सब परिवार को बुलाया उनका परितोष करिके सबको बिदा किया ॥ ८ ॥ दोहा तबतो गणपति बिनायक और श्री शिवजीका स्मरणकरिके और गंगाको प्रणाम करिके गुह लक्ष्मण सीता समेत रामचन्द्रने बनको पयानकिया ४॥

तेहिंदिनभयउ बिटपतर बासू। लखणसखा सबकीन्ह सुपासू १
प्रात प्रातकृत करि रघुराई। तीरथ राज दीख प्रभु जाई २
सचिव सत्य श्रद्धा प्रिय नारी। माधव सरिस मीत हितकारी ३
चारि पदारथ भरा भंडारू। पुण्य प्रदेश देश अति चारू ४
क्षेत्र अगम गढ़ गाढ़ सुहावा। सपनेहुं जेहिं प्रतिपक्षनपावा ५
सेन सकल तीरथ गण बीरा। कलुष अनीक दलन रणधीरा ६
संगम सिंहासन सुठि सोहा। छत्र अखयबट मुनि मन मोहा ७
चौंर यमुन अरु गंग तरंगा। देखि होहिं दुख दारिद भंगा ८

दो० सेवहिं सुकृती साधु शुचि पावहिं सब मन काम।

बंदी वेद पुराण गण कहहिं बिमल गुण ग्राम ॥ ५ ॥

ता दिन तो कोई एकने वृक्षही के नीचे निवास किया तहां लक्ष्मण और निषाद हो ने सब सुपास किया १ प्रात होतेही प्रातक्रिया करिके जो चले सो समस्ततीर्थों का राजा प्रयागराज जा देखा २ जिस तीर्थराज का सत्य तो मंत्री है, श्रद्धारानी है माधव मित्र है, जो राजा प्रजा सबके हितकारी हैं ४ अर्थ,धर्म,काम, मोक्ष चारों पदार्थों से जिसका भंडार भराही रहता है पृथ्वी भरे के पुण्य प्रदेश सब उसके सुन्दर देश हैं ४ तीर्थ का क्षेत्रही अगम सुदृढ़ गढ़ है जिसको काम, क्रोध, लोभ, जनित पाप शत्रु स्वप्न में भी नहीं पासकते हैं ५ सप्त द्वीप नवखंड के तीर्थों के गण उसकी सेना है जो पापों की सेना के नाशकर्त्ता बड़े रणधीर हैं ६ संगम गंगा यमुना का उसका सिंहासन अति शोभा देरहा है और अक्षयबट उसका छत्र मुनि जनों के मनको भी मोहता है ७ गंगा यमुना की सितासित तरंगों के गंगा यमुनी चौंर ढुरते हैं जिनको देखि कर दुख दरिद्रों का नाश होता है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ बड़े बड़े सुकृती साधु उसका सेवन करते हैं ते लौकिक पारलौकिक सब मन कामना पातेहैं वेद पुराण उसके बंदीजन हैं ते निरंतर उसके गुणों का गान करते हैं ॥ ५ ॥

को कहि सकै प्रयाग प्रभाऊ । कलुष पुंज कुंजर मृग राऊ १
अस तीरथपति देखि सुहावा । सुख सागर रघुबर सुखपावा २
कहि सिय अनुजहिं सखहिं सुनाई । श्रीमुख तीरथराज बड़ाई ३
करि प्रणाम देखत बन बागा । कहत महातम अति अनुरागा ४
यहि बिधि आइ बिलोकेउ बेणी । सुमिरत सकल सुमंगल देनी ५
मुदित नहाइ कीन्ह शिव सेवा । पूजि यथा बिधि तीरथ देवा ६
तब प्रभु भरद्वाज पहं आये । करत दंडवत मुनि उर लाये ७
मुनि मन मोद न कछु कहि जाई । ब्रह्मानंद राशि जनु पाई ८

दो० दीन्हि अशीश मुनीश उर अति आनंद अस जानि ।
लोचन गोचर सुकृत फल मनहु किये बिधि आनि ॥ ६ ॥

ऐसे परमोत्तम प्रयागराज के प्रभाव को कौन कहि सक्ता है जो समस्त पाप रूपी कुंजरों के पुंजो को मृगराज सिंह है ॥ १ ॥ ऐसे सहज सुहावन तीर्थराज को देखिकर सुख सागर राम ने भी सुख पाया ॥२॥ श्री प्रयागराज की बड़ाई श्रीमुख से रामचंद्र नेकहि कहि कर सीता लक्ष्मण और निषादराज को सुनाई ॥ ३ तीर्थराज को दडवत् प्रणाम करिके उस के बन उपबनों को देखते जाते हैं और बड़े प्रेम समेत उनका माहात्म्य कहते जातेहैं ॥ ४ ॥ इस प्रकार आकर गंगायमुन

के संगम बेणी को देखा जो स्मरण माचही से समस्त सुमंगलों की दाताहै ५ प्रसन्न होकर प्रयागमें मज्जन करिकै शिव भगवान् का पूजन किया फिरि यथाबिधि तीर्थ देव बेणीमाधव का पूजन किया ॥ ६ ॥ फिरि भरद्वाज मुनि के आश्रम में आकर उन को दंडवत् प्रणाम किया सोई उन्होने उठाकर हृदयसे लगालिये ॥ ७ ॥ औरभरद्वाज के मन में जो आनन्द हुआ कुछ कहाही नहीं जाता है मानों ब्रह्मानन्द की राशि हीपागये ॥ ८ दोहा ॥ प्रेम समेत मिलकर आशिष दिया और यह जानिकर उन को अतिही आनन्द हुआ मानो समस्त सुकृतों का परम सुन्दर अति उत्तम फलबिधाता ने प्रत्यक्ष करदिया ६ ॥

कुशल प्रश्न करि आसन दीन्हे । पूजि प्रेम परिपूरण कीन्हे १
कंद मूल फल अंकुर नीके । दिये आनि मुनि मनहुं अमीके २
सीय लषण जन सहितसुहाये। अति रुचि राम मूल फल खाये ३
भये बिगत श्रम राम सुखारे । भरद्वाज मृदु बचन उचारे ४
आज सफल तप तीरथ त्यागू । आज सफल जप योग बिरागू ५
सफल सकल शुभ साधन साजू । राम तुमहिं अवलोकत आजू ६
लाभ अवधि सुख अवधि न दूजी । तुम्हरे दरश आश सब पूजी ७
अब करि कृपा देहु बर एहू । निज पद सरसिज सहज सनेहू ८

दो० कर्म्म बचन मन छांड़ि छल जब लगि जन न तुम्हार ।
तब लगि सुख सपनेहुं नहीं किये कोटि उपचार ॥ ७ ॥

फिरितो कुशल प्रश्नकरिके यथायोग्य आसनदिये और बड़े प्रेम से पूजिकर स्नेह हीसे अघाइ दिये ॥ १ तिस पीछे कंद, मूल, फल, अंकुर मधुर कोमल लाकर निवेदन किये २॥ ते सुन्दर सुहाये मूल, फल बड़ी रुचिसे सीता लक्ष्मण गुरु समेत रामचंद्रने पाये ॥ ३ ॥ जब रामचंद भोजन पाकर बिगतश्रम परम प्रसन्न हुये तवतो भरद्वाज मुनि अति कोमल बचन बोले ॥ ४ ॥ सुनो हे स्वामी. आज मेरातप सफल हुआ आज मेरा प्रयाग निवास सफल हुआ आज मेरा त्रिदंड सन्यास सफल हुआ आज मेरा जप, योग, बैराग सफल हुआ ॥ ५ और मेरा समस्त सुकृत साधनों का साज हे राम आपके देखतेही आज सब सफल होगया ॥ ६ ॥ लाभकी अवधि और आनन्द की अवधि आपका दर्शनही है औरकोई दूसरा नहींहै क्योंकि आपके दर्शनसे मेरी समस्त आशा पूर्ण होगई ॥ ७ ॥ ताते अब आप कृपाकरिके मेरेकोयही बर दीजिये कि आपके चरण कमलों में मेरा सहज स्नेह रहे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ क्योंकि जब तक यह जीव तन, मन, बचन से निष्कपट होकर आपका दास नहीं होताहै तब तक

इसको स्वप्न में भी सुख नहीं मिलता है कोटि उपाय करने से भी ॥ रघुपति बिमुख यतन करिकोरी कौन सकै भव बंधन छोरी ॥ ७ ॥

सुनि मुनि बचन राम सकुचाने । भाव भक्ति आनन्द अघाने १
तबरघुबर मुनिसुयश सुहावा । कोटि भांतिकहिसबहिं सुनावा २
सोसब भांति सकल गुणगेहू । जेहिं मुनीश तुम आदर देहू ३
मुनिरघुबीर परस्पर नवहीं । बचन अगोचर सुख अनुभवहीं ४
यह सुधिपाइ प्रयाग निवासी । बटुतापस मुनि सिद्ध उदासी ५
भरद्वाज आश्रम सब आये । देखन दशरथ सुवन सोहाये ६
रामप्रणाम कीन्ह सब काहू । मुदित भये लहि लोचन लाहू ७
देहिं अशीष परम सुख पाई । फिरहिं सराहत सुन्दरताई ८
दो० रामकीन्ह बिश्राम निशि प्रात प्रयाग नहाइ ।
चले सहितसिय लषण जन मुदित मुनिहिं शिरनाइ॥८॥

ऐसे यथार्थ भरद्वाज मुनिके बचन सुनिकर माया मनुष्य राम सकुचि गये और उनकी भक्ति भावके आनन्दसे अघाइगये १ तबतो रामचन्द्रने भी भरद्वाज मुनि का सुन्दर सुयश कोटि भांतिसे सबको सुनाया और भरद्वाजसे कहा २ सोतो सब भांति समस्त गुण गणोंका निधान होत ही है जिसको हे मुनीश आपलोग आदर देते हो ३ इस प्रकार मुनि और रामचन्द्र परस्पर नवते हैं और जो आनन्द बचन अगोचर है उसमें मग्नहैं ४ ऐसमाचार पाय कर प्रयाग के बासी ब्रह्मचारी तपस्वी मुनीश्वर सिद्ध संन्यासी सब चक्रवर्त्ती कुमार रामचन्द्र के देखने को भरद्वाज के आश्रम में आये ५।६ रामचन्द्र ने सबको प्रणाम किया और सब नेत्रों का फल पाय कर प्रसन्न होगये ७ बड़ा आनन्द पाइ कर सब रामचन्द्र को आशिष देकर अपने अपने आश्रमों को फिरते हैं और मार्ग में उनकी सुन्दरता को सराहते जाते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इस प्रकार रामचन्द्र ने रातिको तहां बिश्राम किया प्रातहोतेही प्रयाग नहाइ कर सीता लक्ष्मण गुह समेत चले और मुनिको प्रणाम किया ॥ ८ ॥

रामसप्रेम कहा मुनि पाहीं । नाथ कहियहम केहिं मगुजाहीं १
मुनिमनबिहंसिरामसनकहहीं । सुगमसकलमगतुमकहं अहहीं २
साथ लागिमुनिशिष्य बुलाये । सुनि मन मुदित पचाशक धाये ३
सबहिं रामपर प्रेम अपारा । सकल कहहिं मगु दीखहमारा ४
मुनि बटु चारि संग तबदीन्हे । जिन बहुजन्मसुकृत बड़कीन्हे ५

करिप्रणाम मुनि आयसु पाई । प्रमुदित हृदय चले रघुराई ६
ग्राम निकट निसरहिं जबजाई । देखहिं दरश नारिनर धाई ७
होहिं सनाथ जन्म फलपाई । फिरहिं दुखित मन संगपठाई ८
दो० बिदाकिये बटुबिनय करि फिरे पायमन काम ।
उतरि नहाये यमुन जल जोशरीर सम श्याम ॥ ९ ॥

चलते समय रामचन्द्रने मुनिसे पूंछा कहो हेनाथ हम कौन मार्ग जावें १ यह सुनिकर मुनि मन में हंसे और कहा कि आप को तो समस्त मार्ग सुगमही हैं २ साथ केलिये मुनि ने अपने शिष्य बुलाये सुनतेही प्रसन्न मन पचाशक दौरे ३ सब को रामपर अपार प्रेमहै ताते सब कहतेहैं कि मार्ग हमारा देखा हुआ हैं ४ तबतो भरद्वाज ने चारि बटु साथ करदिये जिन्हों ने बहुत जन्म भरि बड़े२ पुण्य कियेरहैं ५ फिरतो रामचन्द्रने मुनिको प्रणाम करि आज्ञा पाइ प्रसन्न मन आगे को चले ६ जबकहीं ग्राम के समीप जा निसकतेहैं तो ग्राम के बासी नरनारी सब दौरि कर दर्शन करते हैं ७ अपने अपने जन्म के फलपाय कर सब सनाथहोते हैं और फिर दुःखी होकर पलटते हैं मनको उनके साथ पठाइ देते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जब यमुना के तट पहुंचे तबतो चारो बटु बिनती करके फेरिदिये और आप बेराबांधि यमुना के पार होकर अपने शरीरके समान सुन्दर श्याम यमुना जलमें नहाये ९ ॥

सुनत तीर बासी नरनारी । धाये निज निज काज बिसारी १
लषण राम सियसुन्दरताई । देखि करहिं निज भाग्य बड़ाई २
अति लालसा सबहिं मनमाहीं । नाउं गाउं पूछत सकुचाहीं ३
जे तिन महं बय बृद्ध सयाने । तिन करि युक्ति राम पहिचाने ४
सकल कथा तिन सबहिं सुनाई । बनहिं चले पितु आयसु पाई ५
सुनि सबिषाद सकलपछिताहीं । रानी राउ कीन्ह भल नाहीं ६
राम लषण सिय रूप निहारी । सोच सनेह बिकल नरनारी ७
ते पितु मातु कहौ सखि कैसे । जिन पठये बन बालक ऐसे ८
दो० तब रघुबर अनेक बिधि सखहिं सिखावन दीन्ह ।
राम रजायसु शीश धरि भवन गमन तिन कीन्ह ॥ १० ॥

तीरबासी नर नारियों ने जो सुना अपने अपने घरों के कामो को छोंड़ि छोंड़ि कर दौरे १ राम लक्ष्मण सीताके रूपकी सुन्दरता को देखिकर अपने भाग्यकी बड़ाई करते हैं २ लालसा तो उनके नाम और गाउं के जानने की सबके मनमें है परंतु पूछते

सकुचते हैं ३ जो कोई उनमें बृद्ध और चतुररहैं उन्होंने युक्ति करिके राम को पहिचानलिया ४ और संपूर्ण कथा सबको कहि सुनाई कि पिताकी आज्ञा से बन को जाते हैं ५ यह सुनिकर बिषाद समेत सब पछिताते हैं और कहते हैं कि रानी राजा ने भला नहींकिया ६ राम, लक्ष्मण, सीता के रूपको देखिकर सोच और सनेहमें सबनर नारी बिकल हैं ७ एक से एक कहती हैं हेसखी ते माता पिता कैसे कठोर होंगे जिन्होंने ऐसे सुकुमार अपने बालक बनको भेजेहैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तबतो रामचन्द्र ने गुह को अनेक प्रकार का सिखावन देकर बिदा किया रामचन्द्र की आज्ञा मानि कर उसने शृङ्गबेर पुर को यात्रा की ॥ १० ॥

पुनि सियराम लषण करजोरी। यमुनहिं कीन्ह प्रणाम बहोरी १
गवने सीय सहित दौ भाई। रवितनया की करत बड़ाई २
पथिक अनेक मिलहिं मगजाता। कहहिं सप्रेम देखि दौभ्राता ३
राज लषण सब अंग तुम्हारे। देखि सोच अति हृदय हमारे ४
मारग चलहु पयादेहिं पाये। ज्योतिष झूठ हमारे भाये ५
अगम पंथ गिरि कानन भारी। तेहिमहं साथ नारिसुकुमारी ६
करि केहरि बन जाहिं न जोई। हमसंग चलहिं जोआयसु होई ७
जाव जहांलगि तहं पहुचाई। फिरब बहोरि तुमहिं सिरनाई ८
दो० इहिबिधिकहि कहि वचन प्रियलहहिं नीरभरिनयन।
कृपासिंधु फेरहिं तिनहिं करिबिनती मृदु बयन ॥ ११ ॥

फिरि सीता और राम लक्ष्मण ने हाथ जोरिकर यमुनाको प्रणामकिया १ और सीता समेत दोनो भाई श्री यमुना जीकी प्रशंसा करते तहांते चले २ तहां मार्ग में अनेक पथिक मिलते हैं ते दोनों भाइयों के रूपको देखि कर बड़ प्रेम से पूछते हैं ३ कि तुम्हारे अंग अंग में तो समस्त राजलक्षणही लक्षित होते हैं यह देखिकर हमारे हृदय में बड़ा सोच होता है ४ कि तुमतो इस कठिन मार्ग में पयादे चलते है हमारे जान में ज्योतिष सबझूठोही है ५ महा अगम तो यह मार्ग है भारी भारी पर्वतऔर बन हैं तिसपरतुम्हारेसाथमें अति सुकुमारी यह अबला है ६ इसबन में महा भयंकर हाथी सिंह देखेभी नहीं जातेहैं ताते जो आज्ञाहो तो हम आपके साथ चलें ७ जहांतक आप जाओगे तहां तक आप को पहुंचावेंगे जब तुम्हारी आज्ञा पावेंगे तब तुमको प्रणाम करिके फिरेंगे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इस प्रकार प्रेमके बश पथिक लोग जहां तहां पूछते हैं जब उनके पुलकित अंग और सजल नेत्र होजाते हैं तब तो रामचन्द्र उनको कोमल बाणी से बिनती कर कर फेरते हैं ॥ ११ ॥

जेपुर ग्राम बसहिं मगमाहीं। तिनहिं नाग सुरनगर सिहाहीं १
केहिं सुकृती केहिं घरी बसाये। धन्य पुण्यमय परम सुहाये २
जहंजहं राम चरण चलिजाहीं। तेहिं समान अमरावति नाहीं ३
पुण्य पुंज मग निकटनिवासी। तिनहिं सराहहिं सुरपुर बासी ४
जोभरिनयनबिलोकहिं रामहिं। सीता लषणसहितघनश्यामहिं ५
जेहिसरसरित राम अवगाहहिं। तिनहिं देवसर सरित सराहहिं ६
जेहिं तरु तर प्रभु बैठहिं जाई। करहिं कल्पतरुतासु बड़ाई ७
परसि राम पद पद्म परागा। मानति भूमि भूरि निज भागा ८
दो० छांह करहिं घन बिबुधगण बर्षहिं सुमन सिहाहिं।
देखत गिरिबन बिहंगमृग राम चले मगजाहिं ॥ १२ ॥

जोपुर बड़े नगर और छोटछोटे ग्राम मार्गमें बसते हैं उनको देखिकर समस्त नागलोक और देवलोकके नगर सिहाते हैं १ किकौन पुण्यात्मा ने कौन शुभघरी में बसाये हैं अतिधन्य पुण्यश्लोक परम सुहाये हैं २ जहां जहां रामचन्द्र के चरण परतेहैं उन स्थानों के समान इंद्रकी अमरावती भी नहीं है ३ मार्गके समीपबासी भी सब पुण्योंकी राशिही हैं ऐसेउनकी प्रशंसा देवलोकबासी सब करते हैं ४ कि ये तो नेत्रों भरिकर सीता लक्ष्मणसमेत रामचन्द्रकी घनश्याम मूर्त्तिको देखतेहैं जो हमको ध्यानमेंभी दुर्लभ हैं ५ जिनसरोवर और नदियों को राम उतरतेहैं उनको देवसरोवर और मंदाकिनी आदि देवनदी सराहतीहैं ६ जिसबृक्षके नीचे रामचन्द्र बिश्राम पातेहैं उसकी बड़ाई कल्पवृक्षभी करताहै ७ और रामचंद्रके चरणकमलों को छूकर पृथ्वीभी अपना धन्य भाग्य मानतीहै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ मेघमालातो मार्गमें छाया किये जातीहैं और देवगण पुष्पों की बर्षा करते जातेहैं इस प्रकार पर्वत बन और उनके खगमृगों को देखते सीता लक्ष्मण समेत रामचंद्र चलेजाते हैं ॥ १२ ॥

सीता लषण सहित रघुराई। ग्राम निकट निसरहिं जबजाई १
सुनि सब बाल बृद्ध नरनारी। धावहिं निजनिज काजबिसारी २
राम लषणसियरूप निहारी। पाइ नयन फल होहिं सुखारी ३
सजल नयनअति पुलक शरीरा। सब भये मग्नदेखि दोउबीरा ४
बरणिन जाइ दशा तिन केरी। लही रंक जनु सुर मणिढेरी ५
एकहिं एक बोलि सिख देहीं। लोचन लाहु लेहु क्षण येहीं ६

रामहिं देखि एक अनुरागे । चितवत चले जाहिं संग लागे ७
एक नयन मगछबिउरआनी । होहिं शिथिल तनमानस बानी ८
दो० एक देखि बटछांह भलि डासि मृदुल तृण पात ।
कहहिं गमाइय क्षणक श्रम गवनव अबहिं कि प्रात ॥ १३

सीता, लक्ष्मण समेत रामचंद्र जबकहीं चलतेचलते किसी गाउंके समीप जा निकसतेहैं १ तोउनकी अपार शोभा को सुनतेही बालसे लेकर बृद्ध पर्य्यन्त सबनर और नारी उसगाउंके अपने अपने आवश्यक कार्य्यों को छोड़िछोड़ कर उनके देखने को उठि दौरतेहैं २ राम लक्ष्मण सीता तीनोंके अलौकिक दिब्य मंगल रूपको देखिकर नेत्रों काफल पातेहैं और सुखीहोजाते हैं ३ अब उनमेंसे किसी एकगाउं के पुरषोंकी दशा कहते हैं किउनके सजल तो नेत्रऔर पुलकित गातहैं दोनों भाइयों को देखकर सब मग्न होगये हैं ४ उनके आनन्दकी दशा कही नहीं जाती है मानों दरिद्रयों ने देवमणि की ढेरीपाई है ५ कोई एकतो एकों को बुलाकर सिखवन देतेहैं कि नेत्रों का लाभ इसक्षणमें लेलो फिरि कहां मिलेगा ६ एक कोई रामरूपदृष्टचित्तापहारक को देखिकर ऐसेप्रेममें भरेहैं कि उसरूप को देखतेही चलेजाते हैं ७ एक कोई नेत्रों के मार्ग रामकी शोभाको हृदय में लाकर तन,मन, बचनसे शिथिल होजातेहैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ एककोई आगे बढ़िकर सुन्दर शीतल बटकी छाया देखि कोमल तृणपत्र बिछाकर कहते हैं किमहाराज क्षणमात्र यहां श्रम गमाइये फिरि मनमाने तो अभी चले जाइये नहींतो प्रातःकाल उठि जाइये ॥ १३ ॥

एक कलशभरि आनहिं पानी । अंचइयनाथकहहिं मृदुबानी १
सुनि प्रिय बचन प्रीति अतिदेखी । रामकृपालुसुशील बिशेखी २
जानी श्रमित सीय मन माहीं । घरिक बिलंब कीन्हबट छाहीं ३
मुदित नारि नर देखहिं शोभा । रूप अनूप देखि मन लोभा ४
इकटक सब सोहहिं चहु ओरा । रामचंद्र मुखचंद्र चकोरा ५
तरुण तमाल बरण तन सोहा । देखत कोटि मदन मन मोहा ६
दामिनि बरणलषण सुठिनीके । नखशिख सुभग भावतेजीके ७
मुनि पट कटिन कसे तूणीरा । सोहत कर कमलन धनु तीरा ८
दो० जटा मुकुट शीशन सुभग उर भुज नयन बिशाल ।
शरद पर्ब बिधु बदन बर लसत स्वेद कण जाल ॥ १४ ॥

एक कोई पावन कलश भरिकर जल ले आते हैं और कोमल बाणी से कहते हैं

हे नाथ इसको पान कीजिये १ ऐसे प्यारे उनके बचन सुने और अति प्रीति देखी रामतो सुभावही से बिशेष कृपालु और सुशीलही हैं तिस पर सीता को भी मन में कुछ भ्रमित जाना तबतो उस बट की छाया में कुछ काल बिश्राम किया २ । ३ अब तो प्रसन्न होकर सब नरनारी शोभा देखनेलगे अनूपरूपदेखिकरसबके मनलोभितहो गये ४ नेत्रोंकेपलकों कोरोकिकरएकटकसब के सब राम चंद्र के चारोंओरकैसे सोहते हैं मानों रामके मुखचंद्रमाके चकोरहीहैं ५ रामचंद्रकातो तरुण तमालके वर्णसुन्दर श्याम शरीरसोहताहैंजिसको देखिकर काम का भी मनमोहता है ६ और लक्ष्मण दामिनी केवर्ण अतिसुन्दर हैं नखते शिखा पर्य्यन्तजीके भावते हैं ७ मृगचर्म, बल्कलादिकों से कटि देश में तूणीर कसे हैं और करकमलों में सुन्दर धनुष बाण सोहते हैं ॥ ८ ॥ दोहा॥ मस्तकों पर जटाओं के सुन्दर मुकुट बने हैं हृदय और नेत्रभुजा बिशाल हैं शरद के परिपूर्ण चंद्रमा के समान सुन्दर मुखों पर पसीने के बुन्दजाल सोहतेहैं ॥ तरुणौ रूपसम्पन्नौसुकुमारौमहाबलौ पुंडरीकविशालाक्षौ चीरकृष्णाजिनांबरौफलमूलाशनौदांतौ तापसौब्रह्मचारिणौ पुत्रौदशरथस्य तौभ्रातरौरामलक्ष्मणौ ॥ १४ ॥

बरणि न जाइ मनोहर जोरी । शोभा बहुत मोरि मति थोरी १
राम लषण सिय सुन्दरताई । सबचितवहिंमनमतिचितलाई २
थके नारि नर प्रेम पियासे । मनहुं मृगीमृग देखि दिवासे ३
सीय समीप ग्राम तिय जाहीं । पूछत अति सनेह सकुचाहीं ४
बार बार सब लागहिं पांये । कहहिं बचन मृदु परम सुहाये ५
राजकुमारि बिनय हम करहीं । तियसुभाव कछुपूंछत डरहीं ६
स्वामिनिअबिनयछमिबहमारी । बिलगन मानवजानिगंवारी ७
राजकुंवर दोउ सहज सलोने । इनतेलहि द्युति मर्कतसोने ८
दो० श्यामल गौर किशोर बर सुन्दरसुखमा अयन ।
शरद शर्बरी नाथ मुख शरद सरोरुह नयन ॥ १५ ॥

ऐसे सुन्दर दोनो भाइयों का मनोहर जोड़ी बरणी नहीं जाती है शोभा तो अति अपार है और मेरी बुद्धिअल्प है १ राम, लक्ष्मण, सीता की सुन्दरता को सब लोग मन, बुद्धि, चित्त लगाकर देखते हैं २ सब नर, नारी प्रेमके प्यासेऐसे थकित हो रहे हैं जैसे मृगीमृग बनमें दिवासेमृग जल को देखि कर दौरते दौरते थकित हो जाते हैं ३ सीता के समीप ग्रामबधू जाती तो हैं परंतु स्नेह के बश पूछते सकुचती हैं ४ बारंबार सीता के पांय लागती हैं और कोमल परम सुहाये बचन कहती हैं ५ हे राजकुमारि हमआपसे कुछ बिनती कियाचाहती हैं सो स्त्री सुभावसे पूंछनेमें डरतीहैं ६ हेस्वामिनिहमारी अबिनय अर्थात् ढीठताको क्षमा कीजिये और

गवांरी जानिकर हमारे कहेका बुरा न मानिये ० ये जो सहज सलोने दोनों राजकुमार हैं जिन के श्याम गौर बर्ण से नीलमणि औरसुबर्ण ने कांति पाईहै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसे सांवरे गोरे किशोर परम सुन्दर सुखमा के सदन शरद के निशापति के समान जिन के सुन्दर मुख हैं और शरदही के प्रफुल्लित कमलपत्रोंके समान जिनकेबिशाल नेत्र हैं ॥ १५ ॥

कोटि मनोज लजावन हारे । सुमुखि कहहु कोअहहिं तुम्हारे १
सुनि सनेहमय मंजुल बानी । सकुचि सीय मनमहं मुसुकानी २
तिनहिंबिलोकिबिलोकतधरणी । दुहुंसकोचसकुचतिबरबरणी ३
सकुचि सप्रेम बाल मृग नयनी । बोलीमधुरबचनपिकबयनी ४
सहज सुभाव सुभग तन गोरे । नाम लषण लघु देवर मोरे ५
बहुरिबदन बिधुअंचल ढांकी । पियतनचितय भौंहकरिबांकी ६
खंजनमंजुतिरीछेनयनन । निजपतिकहेउतिनहिंसियसयनन ७
भईं मुदित सब ग्राम बधूटी । रंकन रतन राशि जनु लूटी ८
दो० अति सप्रेम सिय पांय परि बहु बिधि देहिं अशीश ।
सदा सुहागिनि रहहु तुम जबलगि महि अहिशीश ॥ १६

कोटि काम के भी लजावने जिनके अनूप रूप हैं ते हे सुमुखि यहतो कहो तुम्हारे कैसे होते हैं १ ऐसी उनकी सनेह भरी उज्ज्वलबाणी सुनि कर सीता सकुचीं और मनमें मुसुकाई २ तिन की ओरदेखि कर पृथ्वी को देखने लगती हैं उत्तर के देनेओर न देने दोनोंकी सकुच से सीता बरवर्णी सकुचती है ३ फिरितो सकुचि कर बड़े प्रेम समेत बालमृगनयनी सीता अति मधुर बचन कोकिला के समान बोली ४ ये जो सहज सुभावही अति सुन्दर और गौर वर्ण हैं लक्ष्मण इनका नाम है मेरे छोटे देवर होते हैं ५ फिरि तिस पीछे अपना चन्द्रबदन अंचल से छिपा कर पतिकी ओर देखा और भौंह बांकी करिके उज्ज्वल खंजन के समान नेत्रों के तिरछे कटाक्ष से सीता ने सैनही में अपने पतिको सब सखियों को जता दिया६ ॥ ७ सीताकी ऐसी चतुरई देखि सब ग्रामबधू ऐसी प्रमुदित होगईं मानों दरिद्रियों ने रत्नों की ढेरी लूटी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ अतिही प्रेम समेत सीताके चरण छूती हैं और अनेक भांति अशीश देतीहैं कितुमसदा सुहागिल रहो जब तक पृथ्वी बासुकके शिरपर है१६

पार्बती सम पति प्रिय होहू । देबिन हम पर छांड़ब छोहू १
पुनिपुनि बिनय करहिं करजोरी । जोयहि मारगफिरबबहोरी २
दर्शन देब जानि निज दासी । लखी सीय सब प्रेम पियासी ३

मधुर बचन कहि कहि परितोषी। जनुकुमुदिनी कौमुदीपोषी ४
तबहिं लषण रघुबर रुख जानी। पूछेउमग लोगनमृदु बानी ५
सुनत नारि नर भये दुखारी। पुलकित अंग बिलोचन बारी ६
मिटामोद मनभये मलीने। बिधि निधि दीन्ह लीन्हजनुछीने ७
समुझिकर्म्मगतिधीरजकीन्हा। शोधिसुगममगुतिन कहिदीन्हा ८
दो० लषण जानकी सहित बन गमन कीन्ह रघुनाथ।
फेरे सब प्रिय बचन कहि लिये लाइ मन साथ ॥ १७ ॥

प.र्वती के समान अपने पति की प्यारी होओ और हमारे ऊपर जो छोह है
सो न छोड़ना १ हम बारंबार यह बिनती हाथ जोरि कर करती हैं कि जो आप
इसी मार्ग से फिरि फिरो तो हम को अपनी दासी जानिकर दर्शन देती जाना ऐसे
बचन सुनि कर सीता ने उनको प्रेम बिवश जाना २। ३ तबतो सीता ने अति
मधुर बचन कहि कहि कर उनको परितोष किया मानों कुमुदिनी चांदनी ने पोषण
की ४ तबतो लक्ष्मण ने रामचंद्र का मुख देखि कर अति कोमल बाणी सहित लोगों
से मार्ग पूंछा ५ सो तो सुनतेही सब नर,नारी दुखी हो गये अंगो में पुलकावली
और नेत्रों में सब के जल छा गये ६ आनन्द तो जाता रहा मन मलीन हो गया
मानों बिधाता ने संपति दे कर छीन ली ७ फिरि कर्म की कठिन गति समुझि कर
धीरज किया और शोधि कर अति सुगम मार्ग उनको बतादिया ॥ ८ ॥ दोहा ॥
लक्ष्मण सीता समेत रामचंद्र ने बन को पयान किया और उन सब को मधुरवचन
कहिकर फेरा मन साथ ले लिया ॥ १० ॥

फिरत नारि नरअति पछिताहीं। दैवहिं दोष देहिं मनमाहीं १
सहित बिषाद परस्पर कहहीं। बिधिकरतब सब उलटे अहहीं २
निपट निरंकुश निठुर निशंकू। जेहिंशशिकीन्ह सरुज सकलंकू ३
रूख कल्प तरु सागर खारा। तेहिं पठये बन राजकुमारा ४
जो पै इनहिं दीन्ह बनबासू। कीन्ह बादि बिधि भोग बिलासू ५
ये बिचरहिं महि बिनु पदत्राना। रचे बादि बिधि बाहन नाना ६
ये महि परहिं डासि कुशपाता। सुभगसेज कत सृजी बिधाता ७
तरुतर बासइनहिं बिधि दीन्हा। धवलधामरचिरचिश्रमकीन्हा ८
दो० जोये मुनिपट धर जटिल सुन्दर सुठि सुकुमार।

बिबिधि भांति भूषण बसन बादि किये कर्तार ॥ १८ ॥

फिरती बार तो नर नारी सब अतिही पछिताते आतेहैं और बिधाता को मनहीं मन दोष देते जाते हैं १ बडे बिषाद समेत एकों से एक कहते हैं कि बिधाता के सब कर्तब उलटेही हैं २ निपट ही तो निरंकुशहै कोई उसके सिरपर शास्ता नहीं है बड़ाही निर्दयी और निडर है जिसने बिश्वसुखद चन्द्रमा को सरोग सकलंक करिदिया है ३ सर्ब कामदायक कल्पबृक्ष को जड़किया रत्नाकर समुद्र को खारी किया है उसी बिधाता ने ये राजकुमार बनको भेजे हैं ४ कोई एक कहते हैं कि जो बिधाता ने इन्हीं को बनबास दियाहै तो नाना प्रकार के भोग बिलास बादि बनाये हैं ५ जो ये पादत्राण बिनाहीं बनमें बिचरतेहैं तो बिधाता ने गज, रथ, तुरंग, वाहन बादिही बनाये हैं ६ जो ये इस बनमें कुशपत्रकी साथरीही परसोवते हैं तो सुन्दर शय्या बिधाता ने बादिही सृजीहै ७ जो इनको बिधाता ने इसबन में बृक्षोंही के नीचेबासदियाहै तो सुन्दर उज्ज्वल मंदिर रचि रचि कर क्यों श्रम किया है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जो ये मुनिपट अर्थात् बल्कल मृगचर्म पहरते हैं मस्तकों पर जटा धारण किये हैं तो नाना प्रकार के आभूषण बस्त्र कर्त्ता ने बादिही किये हैं ॥ १८ ॥

जो ये कन्द मूल फल खाहीं । बादि सुधादि अशन जगमाहीं १
एक कहहिं येसहज सुहाये । आप प्रगट भय बिधिन बनाये २
जहंलगिबेदकहहिं बिधिकरणी । श्रवण नयन मन गोचर बरणी ३
देखहु खोजि भुवन दशचारी । कहं अस पुरुष कहां असिनारी ४
इनहिं देखिबिधि मनअनुरागा । पटुतर योग बनावन लागा ५
कीन्ह बहुत श्रमएक न आये । तेहि ईर्षा बन आनि दुराये ६
एककहहिं हम बहुतन जानहिं । आपुहिं परम धन्य करिमानहिं ७
ते पुनि पुण्य पुंज हम लेखे । ये दिखि हैं देखत जिन देखे ८
दो० यहि बिधि कहि कहि बचन प्रिय लेहिंनयन भरि नीर ।
किमि चलिहैं मारग अगम सुठि सुकुमार शरीर ॥ १६ ॥

जो ये कन्द, मूल, फलही खायकर रहतेहैं तो बिधाताने सुधाकहियेघृत, दुग्ध शर्क्करादि भोजन बादिही बनाये हैं १ एक कोई बहुतश्रुत कहते हैं अरे भाईये जो सहज सुहाये हैं ते अपने आपही प्रगट हुयेहैं बिधाताकेबनायेहीनहींहैं २ वेदों ने जहां तक बिधाता की करतूति कही है और जो देखने, सुनने, मनमे आती है सो तुम चौदहूं भुवनोंमे बिचारि कर देखो कहां तो ऐसे पुरुषहैं कहां ऐसी नारीहैं ३ ।४ इनकी सुन्दरता देखिकर बिधाताको भी अभिलाषहुई तबइनकीपटुतरि

बनाने लगा ५ अपना सा बहुतेरा श्रमकिया एकभी न बना तब ईर्षा के मारे इनको बनमें छिपादिया ६ एक कोई कहते हैं अरे भाई हमतो बहुतसा नही जानते हैं इनके दर्शन के संबंध से अपने आपही को धन्य मानते हैं ७ और उनको भी पुण्य पुंजही जानते हैं जिन्होंने इनको देखाहै और जो देखतेहैंजो देखैंगे ॥ ८ ॥ दोहा इसप्रकार तो पुरुष जन सुन्दर प्रेममय वचन कहि कहि नेत्रोंमें जलभरिलेतेहैं और कहते हैं कैसे इस अगममार्ग मेंचलेगे ये तोअतिही सुकुमार शरीरहैं १९ ॥

नारि सनेह बिकल सबहोहीं । चकईसांझ समयजिमिसोहीं १
मृदुपदकमल कठिनमगुजानी। गद्गर हृदयकहहिं मृदु बानी २
परसत मृदुल चरण अरुणारे । सकुचहु महिजिमि हृदयहमारे ३
जो मांगै पाइय बिधिपाहीं । ये रखिये सखि आंखिन माहीं ४
जोजगदीश इनहिं बन दीन्हा ।कस न सुमनमयमारगकीन्हा ५
जे नर नारि न अवसर आये । ते सिय राम न देखन पाये ६
सुनि स्वरूप पूछहिं अकुलाई । अबलगिगये कहां लगि भाई ७
समरथ धाइ बिलोकहिं जाई । प्रमुदितफिरहिं जन्मफल पाई ८
दो० अबला बालकवृद्धजन करमींजहिं पछिताहिं ।
होहिं प्रेम बश लोग इमि राम जहां जहं जाहिं ॥ २० ॥

नारी सब प्रेममें कैसी व्याकुल होती हैं जैसी सांझ समय चकई होजाती हैं १ राम,लक्ष्मण, सीताके चरण तोकमल से कोमल औरमार्ग अतिकठोरजानिकर गदगद कंठ कोमलबाणीसे कहती हैं २ किइन अरुणारे कोमल चरणोंके छूतेही पृथ्वी ऐसी दृविजात्रै जैसे हमारे हृदय दृवतेहै ३ हे जगदीश जो तुमने इन्हे बन दिया तो मार्गभी फूलोंही का क्योंन किया ४ कोईकहती हैं हेसखी जो बिधाता पैमन मांगा मिलै तो इनको नेत्रों में रखना चाहिये ५ जो नर नारी समय परन आये वे सीताराम लक्ष्मणकोदेखनेनपाये ६ उनके सुन्दररूप को सुनिकर अकुलायकर पूंछतेहैं किअभी कहांतक गये होंगे ७ समर्थतो दौरिकर जादेखतेहैं और अपने जन्मका फल पाकर अति प्रसन्न फिरते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ अबला और बालवृद्ध सबहाथ मींजतेहैं और पछितातेहैं उनको दर्शनों काफल इसीमें मिलता है ऐसे जहांजहां राम जाते हैं तहांतहां ऐसेही प्रेम के बश लोग होतेहैं ॥ २० ॥

गाउं गाउं अस होइ अनंदू । देखि भानुकुल कैरवचंदू १
जेकछु समाचार सुनि पावहिं । ते नृप रानिहिं दोषलगावहिं २
एक कहहिं अतिभलनरनाहू । दीन्ह हमहिं जिन लोचनलाहू ३

कहहिं परस्पर लोग लुगाई । बातैं सरल सनेह सुहाई ४
तेपितु मातु धन्य जिन जाये । धन्य सो नगर जहांते आये ५
धन्य सोदेश शैलबन गाऊं । जहंजहं जांइ धन्य सोठाऊं ६
सुख पायउ बिरंचि रचितेही । ये जिहि के सबभांति सनेही ७
राम लषण सिय कथा सुहाई । रही सकल मग कानन छाई ८
दो० यहिबिधि रघुकुल कमल रवि मगलोगन सुखदेत ।
जाहिं चलेदेखत बिपिन सियसौमित्र समेत ॥ २१ ॥

गाउं गाउं प्रति ऐसाही आनन्द रामलक्ष्मण सीताको देखि देखि कर होता जाता है १ जो कोई उनके बन आनेके कुछ समाचार सुनि पातेहैं तेतो राजारानी दोनों को दूषण देतेहैं २ कोई कहतेहैं किराजा अति भले और परोपकारी हैं जिन्हों ने यह अपयश सहिकर हमसबको नेत्रोंका लाभ और हमारा जीवन जन्म सबसफल करदिया ३ परस्पर नरऔर नारी मिलिमिलि करअति सरलऔरसुहाईबातैंकरतेहैं और कहते हैं ४ तेमाता, पिता धन्यहैं जिननेइन्हेंजन्मेहैं सोनगर धन्य हैं जहां से ये आये हैं ५ सो देश, पर्वत, बन, गाउं धन्यहैं जहां जहांये जावैंगे सोसब स्थान धन्य हैं ॥ धन्यायोध्यादशरथनृपस्साचमाताचधन्या:धन्योबंशोरघुकुलभवोयत्ररामावतारो ॥ धन्या वाणीकबिबरमुखेरामनामप्रपन्नाधन्योलोक:प्रतिदिन मसौ राम नामशृणोति ६ और ब्रह्मा ने भी तो उसी मनुष्य को रचि कर सुखपाया है जिसके माता पिता स्वामी सखासब भावसे येही सीता राम सनेही हैं ७ ऐसी राम लक्ष्मण सीताकी सुन्दर सुहाई कथा मार्गके समस्त बनमेंछाइ रहीहै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इसप्रकार श्रीरामचंद्र मार्गके समीप बासियों को आनन्द देतेहुये सीता लक्ष्मण समेत बनकी शोभा देखते चले जाते हैं ॥ २१ ॥

अगे राम लषण पुनि पाछे । तापस बेष बिराजत काछे १
उभय मध्य सियसोहति कैसी । ब्रह्म जीव बिच माया जैसी २
बहुरि कहौंछबि जससमन बसई । जनुमधु मदनमध्यरति लसई ३
उपमा बहुरि कहौंजिय जोही । जानुबुधबिधु बिचरोहिणि सोही ४
प्रभु पदरेख बीच बिच सीता । धरति चरण मगचलति सभीता ५
सीय रामपद अंक बराये । लषण चलत मग दाहिन बाये ६
रामलषण सिय प्रीति सुहाई । बचन अगोचर किमि कहि जाई ७
खग मृग मगन देखि छबिहोहीं । लियेचोरि चित राम बटोहीं ८
दो० जिन जिन देखे पथिक प्रिय सियसमेत दोउ भाय ।

भव मग अगम अनन्दते बिनु श्रम रहे सिराइ ॥ २२ ॥

आगे तो अकार बाच्य ईश्वर राम चले जाते हैं और पीछे मकारबाच्य जीव लक्ष्मण तपस्वी का बेष काछे सोहते हैं १ दोनों के बीच में उकार वाच्य माया सीता चलीजाती हैं अर्थात ये तीनों अपने को प्रणववाच्य और तत्वचयबिशिष्टाद्वै तदर्शाते जातेहैं कि हम तीनों तत्वचय अज अबिनाशी हैं ॥ अजोऽपिसन्नव्ययात्मा भूताना मीश्वरोपिसन् तथाजीवःअजोनित्यंशाश्वतोऽयंपुराणं मायापि ॥ अजाअनादिशक्तिअबिनाशिनि ॥ २ फिरि राम, लक्ष्मण, सीता कैसे सोहते हैं मानों काम और मधुमास के बीच रतिही सोहती है ३ फिरि उपमा जो मनमें बसीहै कहता हूं मानों बुध और चंद्रमा के बीच रोहिणी सोहती है ४ रामचंद्र के चरणों के चिन्हों के बीच बीच सीता अपने चरण धरती जाती है ५ सीता और रामचंद्र दोनों के चरणों के चिन्ह बचा कर लक्ष्मण मार्ग में दाहिने बांये चलते हैं ६ राम लक्ष्मण सीता की सुन्दर सुहाई अलौकिक प्रीति बचन अगोचर है कही कैसे जाती है ७ खगमृगभी उनकी छबि देख कर मग्न हो जाते हैं ऐसे सबके चित्त रामबटोहीने चुरालियेहैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जिन जिन पुण्य शीलों ने सीता समेत प्राणप्रिय दोनो भाई पथिगत देखे हैं उनका महाअगम संसारमार्ग बिनाही श्रम सिरागया है ॥ २२ ॥

अजहुं जासु उर सपनेहु काऊ। बसहिं रामसियलषण बटाऊ १
राम धाम पथ पाइहि सोई। जो पथ पाव कबहुं मुनि कोई २
तबरघुबीरश्रमितसियजानी। देखि निकट बट शीतल पानी ३
तहं बसि कन्द मूल फल खाई। प्रात नहाय चले रघुराई ४
देखत बनसर शैल सुहाये। बालमीकि आश्रम प्रभु आये ५
रामदीखमुनि बास सुहावन। सुन्दर गिरि काननजलपावन ६
सरनि सरोज बिटप बन फूले। गुंजत मंजु मधुप रस भूले ७
खगमृगबिपुलकुलाहल करहीं। बिरहितबैरमुदितमन चरहीं ८
दो० शुचि सुन्दर आश्रम निरखि हर्षे राजिव नयन।
सुनि रघुबर आगमन मुनि आये आगे लयन ॥ २३ ॥

अब इस कलिकाल में भी जिसकिसीके हृदयमें स्वप्नमेंभी सीता राम लक्ष्मण बटोही निवास करैं उसको रामधाम का अतिसुगम सो मार्ग मिलता है जिस मार्गको कभी कोई बिरलाही मुनि पावता है १। २ फिरि तो राम ने सीता को श्रमित जाना और किसीबटके निकटही शीतलजल देखा ३ तहांहीं निवास करके कन्द, मूल, फल, भोजन किये और प्रात होतेही प्रातक्रिया करिके तहांते चलिदिये ४ सुन्दर बन, सरोवर

पर्बत देखते देखते वाल्मीकिमुनि के आश्रमके समीप आगये ५ रामचन्द्र ने मुनि का
निवास देखा कि अति सुहावन है जहां सुन्दर पर्वत, बन और पावन जल है ६
सरोवरों में तो कमल और बनमें वृक्ष फूलि रहे हैं तिन पर उज्ज्वल भ्रमर रसमाते
गुंजते हैं ७ खग, मृगोंके वृन्द कोलाहल करतेहैं और बैरबिगत प्रसन्न बिचरते हैं ८
॥ दोहा ॥ ऐसा शुचि सुन्दर आश्रम देखि कर राम हर्षित हुये और राम को आया
सुनि कर मुनि मिलने को आगे आये ॥ २३ ॥

मुनि कहं राम दंडवत कीन्हा। आशिर्बाद बिप्र बर दीन्हा १
देखि राम छबि नयन जुड़ाने। करि सनमान आश्रमहिं आने २
तब मुनि आसन दिये सुहाये। मुनिबर आय प्राणप्रियपाये ३
कन्द मूल फल मधुर मंगाये। सिय सौमित्र राम फल खाये ४
बालमीकि मन आनंद भारी। मंगल मूरति नयन निहारी ५
तब कर कमल जोरि रघुराई। बोले बचन श्रवण सुखदाई ६
तुम त्रिकालदरशी मुनिनाथा। बिस्वबदरि जिमितुम्हरेहाथा ७
असकहिप्रभु सबकथा बखानी। जेहिंजेहिंभांतिदीन्हबनरानी ८

दो० तात बचन पुनि मातु हित भाइ भरत अस राउ।
मोकहं दरश तुम्हार प्रभु सब मम पुण्यप्रभाउ ॥ २४ ॥

वाल्मीकि जी को आते देख कर रामचन्द्र ने लक्ष्मण समेत दण्डवत् प्रणामकिया
और द्विजदेवोत्तम वाल्मीकि जी ने उनको आशीर्व्वाददिया १ रामचंद्र की मनोहर
छबि देखतेही मुनिके नेत्र शीतल होगये और सन्मान करिके आश्रम को ले आये २
जब आश्रम में आगये तबतो सुन्दर सुहाये आसन दिये और मुनिबर ने प्राणप्रिय
अतिथि पाकर अतिमधुरकन्द, मूल, फल मंगाये तो सीता लक्ष्मण समेत रामने भोजन
किये ३ ॥ ४ फिरि तो रामचंद्र की मंगलमूर्त्ति अति प्रसन्न नेत्रों से देखि कर
वाल्मीकि के मनमें अतिही आनन्द हुआ ५ तबतो अपने कमलकर जोरि रामचंद्र
श्रवण सुखदायक बचन बोले ६ कि हे मुनिनायक स्वामी आप त्रिकालज्ञ हैं समस्त
विश्व का भूत भविष्य बर्त्तमान चरित्र बदरीफल के समान सब करतल गत है
अर्थात् आप सब जानते हो ७ ऐसे कहि कर रामचंद्र ने सब कथा उनको सुनाई
जिस भांतिसे कैकेयी ने बनबास दिया ॥ ८ ॥ दोहा एक बनके आने में मेरेको अनेक
लाभ हुये पिता के बचनोंका तो पालन और माता का हित हुआ भरत से प्रियतम
भाईको राज्य मिला और मेरेको आप सारिखे महात्माओं का समागम हुआ यहसब
मेरे पूर्ब कृत पुण्यों का प्रभाव है ॥ २४ ॥

देखि पांय मुनिराय तुम्हारे । भये सफल सब सुकृत हमारे १
अब जहं राउर आयसु होई । मुनि उद्वेग न पावहिं कोई २
मुनितापस जिनते दुख लहहीं । ते नरेश बिनु पावक दहहीं ३
मंगल मूल बिप्र परितोषा । दहै कोटि कुल भूसुर रोषा ४
असजियजानिकहियसोइठाऊं । सियसौमित्रसहितजहंजाऊं ५
तहंरचिरुचिर पर्णतृणशाला । बास करौं कछु काल कृपाला ६
सहज सरल सुनि रघुबर बानी । साधु साधु बोले मुनिज्ञानी ७
कस न कहहु अस रघुकुल केतू । तुम पालक संतत श्रुतिसेतू ८

छं० श्रुतिसेतुपालक राम तुम जगदीश माया जानकी ।
जोसृजतिजगपालतिहरति रुखपाइकृपानिधानकी ॥
जोसहसशीश अहीशमहिधर लषणसचराचरधनी ।
सुरकाजहोइनरराजचलेतुलसीदलननिशिचरअनी ॥

सो० राम स्वरूप तुम्हार बचन अगोचर बुद्धि पर ।
अबिगत अकथ अपार नेति नेतिनित निगमकह ॥ २५ ॥

१००

हे मुनिराय आपके चरण देखि कर मेरे समस्त सुकृत सफल होगये १ अब जहां
आपकी आयसु होय और कोई मुनि कष्ट न पावे क्योंकि तपस्वी मुनि जिन राजाओं
से दुख पाते हैं ते राजा बिना पावक भस्म होजाते हैं २ । ३ द्विज देवों का परि-
तोषण मंगलमूल होता है और उनका कोप कोटि कुल को नाश करता है ४ ऐसा
विचारि कर वह स्थान बताइये सीता लक्ष्मण समेत जहां जाऊं ५ और पर्णशाला
बना कर कुछ काल रहूं ६ ऐसे राम के बचन सुनि कर मुनिने सराहे और बोले ७
हे राम तुम तो श्रुतिसेतु के रक्षकही हो ऐसे क्यों न कहो ॥ ८ ॥ छन्द ॥ श्रुतिसेतु
के पालक जगदीश तो तुम हो और सीता तुम्हारी माया है जो तुम्हारी इच्छा को
पाकर संसार को सृजती, पालती और हरि लेती है और सहस्रशीश धरणी-
धर शेष चराचर स्वामी लक्ष्मणहैं ते आप सर्वेश्वर स्वामी देवकार्य्य के निमित्त नर-
राज होकर निशाचरों के दलके नाश करने को जाते हो ॥ सोरठा ॥ हे राम यह
आपका दिव्य मंगल बिग्रह स्वरूप बचन, मन, बुद्धि से परे है अब्यक्त अकथ
अपार है वेद भी जिसको नेति नेति सदा कहते हैं ॥ २५ ॥ यह अयोध्या कांड की
पांचवी चौपाइयों की पचीसी हुई ॥ ५ ॥

केशवायनमः

जग पेखन तुम देखनहारे । बिधि हरि शंभु नचावन हारे १
तेउ न जानहिं मर्म तुम्हारा । और तुमहिं को जाननहारा २
सोइजानहिजिहिं देहुजनाई । जानततुमहिं तुमहि होइजाई ३
तुम्हरी कृपा तुमहिं रघुनन्दन । जानहिं भक्त भक्त उरचन्दन ४
चिदानन्दमय देह तुम्हारी । बिगत बिकार ज्ञान अधिकारी ५
नर तन धरेहु संत सुरकाजा । कहहु करहु जस प्राकृतराजा ६
रामदेखि सुनिचरित तुम्हारे । जड़ मोहहिं बुधहोंहिं सुखारे ७
तुम जो कहहु करहु सबसाचा । जसकाछिय तस चाहियनाचा ८
दो० पूंछेहु मोहिंकिरहहुं कहं मैं पूंछत सकुचाउं ।
जहं न होहु तहं देहु कहि तुमहिं दिखाऊं ठाउं॥ १ ॥

देव, मनुष्य, तिर्य्यक्,स्थावर चारिप्रकार की सृष्टिरूप संसार तो एकप्रेक्षणा दिखावा है आप उस के दृष्टा हो ब्रह्मा, बिष्णु, शिव देवत्रय उस के नचाने हारे हैं १ सो भी तो आपके मर्म को नहीं जान सक्ते हैं फिरि और कौन जानसक्ता है २ आप को तो सोई जानता है जिस को आप अपनी अहेतुकीकृपा से जनाय देते हो फिरि आप को जानिकर आपही का होजाता है अर्थात् अपने को आपही के समर्पण कर देता है ३ तुम्हारी कृपा से हे भक्तउरचन्दन रघुनन्दन तुमको तुम्हारे अनन्यभक्त ही जानते हैं पश्यन्तिकेचिदनिशंत्वदनन्यभाव: ४ तुम्हारा यह दिव्य मंगल बिग्रह सच्चिदानन्दमय सर्वबिकारशून्य बिशुद्धबिज्ञानघन हैं ५ नर तन तो आपने अपने अंग भक्तगन और देवताओं के निमित्त धारण किया है ताते प्राकृत राजाओंही के समान कहते हो और करते भी हो ६ आपके चरित्रों को देखि सुनिकर जड़काहिये आसुरी प्रकृतिमोहिजाते हैं और ज्ञानी आनन्द पाते हैं ७ तुम्हारा कहना करना सब योग्यही है जैसा जब रूप बनाइये तबतैसाही नाचनाचिये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ आपने तो अपने काछ के अनुसार मेरे से पूंछा कि मैं कहां जारहूं और मैं आपको सर्बगत जानि पूंछने में सकुचता हूं कि आप जहां न होवें तहां कहि दीजिये सोई में आप के रहने को ठौर बताऊं ॥ १ ॥

सुनिमुनि बचन प्रेम रस साने । सकुचि राम मन महं मुसंकाने १
बालमीकि हंसिकहहिं बहोरी । बाणी मधुर अमियजनु बोरी २
सुनहु रामअब कहौं निकेता । बसहु जहां सियलषण समेता ३

जिनके श्रवण समुद्र समाना। कथा तुम्हारि सुभगसरिनाना ४
भरहिं निरंतर होंहिं न पूरे। तिनके उर तुम कहं गृहरूरे ५
लोचन चातक जिनकरि राखे। रहहिं दरश जलधर अभिलाषे६
निदरहिं सरित सिंधु सर बारी। रूपबिंदु जलहोंहिं सुखारी७
तिनके हृदय सदन सुखदायक। बसहुबंधु सिय सह रघुनायक८

दो० यशतुम्हार मानस बिमल हंसिनिजीहाजासु।
मुक्ताहल गुणगण चुगहिं रामबसहु उरतासु ॥ २ ॥

ऐसे प्रेमभरे बाल्मीकि मुनिके बचन सुनिकर रामसकुचे और मनमें मुसुकाये १ तब तो बाल्मीकि हंसिकर फिरि बोले २ सुनो हेराम अब मैं तुमसे सुन्दर सदन कहता हूं जहां आप सीता लक्ष्मण समेत बास करो ३ यहां बाल्मीकि जी अनन्य भगवत्प्रपन्नों के लक्षण दर्शाते हुये रामचंद्र को स्थान रहने के कहते हैं कि जिनभागवतों के कर्ण तो समुद्र के समान हैं और आप के अतिपावन जन्मकर्मादिकों की कथा सुन्दर सरिताहै तिनसे निरंतर भराही करते हैं और पूर्णनहीं होते हैं तिन के हृदय आप के निवास के योग्य सदन हैं ४।५ जिन भागवतों ने अपने नेत्रों को नेष्टाचातक के समान करि राखी है कि सदा आपही के दर्शनरूपीमेघ के अभिलाषी रहते हैं ६ ॥ श्लो० मद्भक्तास्सरितांपतिंचुलकवत् खद्योतवद्भास्करं मेरुं पश्यतिलोष्ट्रवत्खमणुवत् पृथ्वीपतिंभृत्यव च्चिन्तारत्नमयंशिलाशकलव त्कल्पद्रुमंकाष्ठवत्संसारंतृणराशिवत्किमपरंदेहंनिजंभारवत् अन्य आश्रयसरिता समुद्रसरोवरोंके जलको सदा निदरते हैं आपके रूप स्वातिबिंदुजलहीसे सुखीहोते ७ उन के हृदय आप के निवास के योग्य सुन्दर सुखदायक है तहां सीता लक्ष्मण समेत निवास कीजिये ८ ॥ दोहा ॥ यश तो आप का निर्मल मान सरोवर हैं और उनकी जिह्वा हंसिनी है सो तहां बसिकर आपही के गुणगण मुक्ताहलों को चुगाकरती हैं तिन के हृदय में बास कीजिये ॥ २ ॥

प्रभु प्रसाद शुचि सुभग सुबासा। सादर जासु लहै नितनाशा १
तुमहि निबेदित भोजन करहीं। प्रभु प्रसाद पट भूषण धरहीं २
शीश नवहिं सुरगुरु द्विजदेखी। प्रीतिसहितकरिबिनयबिशेषी ३
कर नित करहिं रामपद पूजा। राम भरोस हृदय नहिं दूजा ४
चरण राम तीरथ चलिजाहीं। राम बसहु तिनके मन माहीं ५
मंत्रराज नित जपहिं तुम्हारा। पूजहिं तुमहिं सहित परिवारा ६

तर्पण होम करहिं बिधिनाना । बिप्र जिवांइ देहिं बहुदाना ७
तुमते अधिक गुरुहिं जियजानी । सकलभांति सेवहिं सनमानी ८
दो० सबकर मांगहिं एकफल राम चरण रतिहोउ ।
तिनके मन मंदिर बसहु सिय रघुनन्दन दोउ ॥ ३ ॥

नाशिका जिनकी आपकी प्रसादी अतिपावन तुलसीकी सुगन्धि को सूंघती है सुख आपका निबेदितप्रसाद पाताहै आपही के प्रसादीभूषण बसन पहरतेहैं १। २ मस्तक जिनके सुर कहिये आपके अंगभूत मूर्त्तियों को और गुरु अपने आचार्य्यद्विजदेव महा-भागवतों को देखिकर बड़ी प्रीति और नम्रता के साथ नवते हैं ३ हाथ जिनके सदा आपही के चरणों की सेवा करते हैं और हृदयमें सदा आपही का भरोसा रखते हैं दूसरे किसी को नहीं समुझते हैं ॥ बनैतो रघुवर तेबनै कीबिगरैं भरिपूरि ॥ तुलसी बनै जो और तें ताबनिबे में धूरि ४ चरण जिनके आपके श्रीरंगादि धामोंही को जातेहैं तिन अनन्य भागवतोंहीं के हृदय में आप निवास कीजिये ५ सर्ब बेदमूल अष्टाक्षर आप के मंत्रराजही को सदा जपते हैं जैसा श्रीमद्भागवत में कहा है महापुरुष मभ्यर्च्य मूर्त्याभिमतयात्मनः अर्चादौहृदयेवापियथालब्धोपचारकैः सांगोपांगांसपार्षदां तांतंमूर्त्तिचमंत्रतः पाद्यार्घ्याचमनीयाद्यैरित्यादि और आपको आपके परिवार समेत अर्थात् लक्ष्मी, अनन्त, गरुड़, बिष्वक्शेन, सुनन्ददादिपार्षद, जय, बिजयादि द्वारपाल सुदर्शनादि पंचायुधों समेत सांगोपांग पूजते हैं ६ और आपकी अज्ञानुसार तर्पण होमादि, द्विजदेवों का निमंत्रण और दानादि करते हैं आचार्य्य को आप से भी अधिक उपकारी मानिकर पूजते हैं ७ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इन सब कर्मों का एकही फल याचते हैं कि आपके चरणोंही में प्रीति बढ़ै उनके मन मंदिरोंहीमें सीता समेत दोनों भाई सदा निवास कीजिये ॥ ३ ॥

काम क्रोध मदमान न मोहा । लोभ न क्षोभ न राग नद्रोहा १
जिनके कपट दंभ नहिंमाया । तिनके हृदय बसहु रघुराया २
सबकेप्रिय सबके हितकारी । दुख सुख सरिस प्रशंसागारी ३
कहहिं सत्य प्रियबचन बिचारी । जागत सोवत शरण तुम्हारी ४
तुमहि छांड़ि गति दूसरि नाहीं । राम बसहु तिनके मन माहीं ५
जननी सम जानहिं परनारी । धन पराय बिषते बिष भारी ६
जे हरषहिं पर संपति देखी । दुखितहोहिं पर बिपति बिशेखी ७
जिनहिं रामतुमप्राणपियारे । तिनके मन शुभ सदन तुम्हारे ८

दो० स्वामि सखा पितुमातु गुरु जिनके सब तुमतात ।
तिनके मनमंदिर बसहु सीय सहित दोउभ्रात ॥ ४ ॥

जिनकेकाम, क्रोध, मद, मान, मोह, लोभ, क्षोभ, राग, द्वेष, कपट, दंभ, माया नहीं है तिन के परम विशुद्ध हृदयमें आपनिवास कीजिये १ । २ अपने सौशील्यस्वभाव से सबहीकेतो प्यारे हैं और दयालचित्त से सबके हितकारी हैं दुःख सुख और निन्दा स्तुति उभयसमान जानतेहैं ३ सत्य और प्रिय बचन बिचारि कर कहतेहैं जागते सोवते सदा आपही के शरण रहते हैं ४ आपको छोंड़ि दूसरी अन्यगति जिनके नहीं है ऐसेजो अनन्यगति तिनकेहृदयमें आप निवास कीजिये५ माताके समान जो पर नारीको जानतेहैं और पराये बिषसेभी अधिक आत्मनाशक मानतेहैं पराईसंपतिको देखिकर हर्षित होते हैं और पराई बिपति से दुखी बिशेष होते हैं ६ । ७ जिनके हेराम आपही जीवन, धन प्राणहो तिनके मन आपकेअति सुन्दरशुभ सदनहैं ॥८॥ दोहा ॥ जिनके हेराम आपही तोस्वामी, सखा, पिता, माता, गुरू है तिन, सर्व संबंधी भक्तजनों के मनमंदिर में सीतासमेत दोनों भाई निवास कीजिये ॥ ४ ॥

अवगुण तजि सबके गुणगहहीं । बिप्रधेनु हितसंकट सहहीं १
नीतिनिपुण जिनकी जगलीका । घरतुम्हार तिनकरमननीका ३
गुणतुम्हार समुझहिं निजदोषा । जेहिंसबभांतितुम्हारभरोसा २
रामभक्त प्रिय लागहिं जेहीं । तेहिंउर बसहु सहितबैदेहीं ४
जाति पांति धन धर्म बड़ाई । प्रियपरिवार सदनसमुदाई ५
सब तजि तुमहिं रहैंलवलाई । तिनके हृदय बसहु रघुराई ६
स्वर्ग नर्क अपबर्ग समाना । जहंतहं दीखधरे धनु बाना ७
कर्म बचन मन राउर चेरा । राम करहु तेहिंके उरडेरा ८
दो० जाहिन चाहियकबहुं कछु तुमसन सहज सनेहु ।
बसहु निरन्तर तासुउर सोराउर निजगेहु ॥ ५ ॥

पराये अवगुणों को छोड़िकर सबके गुणोंही को गृहण करतेहैं और गऊ ब्राह्मणों के लिये अपने पर संकट सहते हैं १ नीति में निपुण जिनकी सदा मर्य्याद चलीआती है तिनके मन आपके घर बहुत सुन्दरहैं २ गुणतो आप कीही ओर से जानते हैं और दोष अपनेही मानते हैं जिनको सबप्रकारसे सदा आपही का भरोसा है ३ और आप के भक्तजन जिनको अति प्यारे लगते हैं तिनके हृदय में तो आप दोनो भाई सीता समेत निवास कीजिये ४ जाति पांति और धन, धर्म ऐश्वर्य्य, परिवार, हितकारी सबका अभिमान छोड़िकर जो आपही से लवलगाये

रहतेहैं तिनके हृदय में आप बास कीजिये ५ । ६ नर्कभोग, स्वर्ग भोग, कैवल्यमोक्ष सुख को जो समानही मानते हैं क्योंकि सर्बत्र आपही को धनुष बाण धारण किये देखते हैं ७ तन, मन, बचन से जो निष्कपट आपही के अनन्यदास होरहे हैं उनके हृदय में हे राम आप निवास कीजिये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जिनको कभी कुछ भी नहीं चाहिये केवल आपही से सहज स्नेह चाहते हैं तिनके हृदय में आप निरंतर बास कीजिये सो आप का निज निवास है ॥ ५ ॥

यहि बिधि मुनिबर ठाउं दिखाये । बचनसप्रेम राममन भाये १
कह मुनि सुनहु भानुकुलनायक । आश्रमकहौंसमयसुखदायक २
चित्रकूट गिरि करहु निवासू । तहंतुम्हार सबभांतिसुपासू ३
शैल सुहावन कानन चारू । करिकेहरि मृग बिहंग बिहारू ४
नदी पुनीत पुराण बखानी । अत्रिप्रिया निज तपबल आनी ५
सुरसरि धारनाम मंदाकिनि । जो सब पातकपोतक डाकिनि ६
अत्रिआदि मुनिवर तहंबसहीं । करहिं योगजपतप तनकसहीं ७
चलहु सफल श्रम सब कर करहू । राम देहु गौरव गिरिबरहू ८
दो० चित्रकूट महिमा अमित कहा महामुनिगाइ ।
आइनहाये सरितबर सियसमेत दोउभाइ ॥६ ॥

इसप्रकार बाल्मीकि जीने सप्रेम बचनों से रामचन्द्र को स्थान दिखाये सुनिकर रामचन्द्र को अतिही भाये १ फिरि बाल्मीकि जीने कहा सुनो हे राम अब मैं तुम को सर्बकाल सुखदायक आश्रम कहता हूं २ कि आप चित्रकूट नाम पर्बत पर निवास करो तहां आपका सबप्रकार से सुपास होगा ३ अति सुहाया तो पर्बत है और सुन्दर बन है हांथी सिंह मृग पक्षियों का जहां बिहार है ४ अति पावन नदी जो पुराणों में प्रसिद्ध है अत्रिमुनिकी भार्य्या अनसूया जिसको अपने तपके बल से स्वर्ग से लाई है ५ साक्षात् श्रीगङ्गाजीकी धारा है मंदाकिनी उसका नाम है जो समस्त पापरूपी बालकों को डाकिनीही है ६ अत्रि इत्यादि मुनीश्वर जहांबास करते हैं और जपयोग से अपने शरीरों को कसते हैं ७ तहां चलिकर उनके श्रम को सफल कीजिये और हेराम उस गिरिवर चित्रकूटको भी गौरवता दीजिये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसी जब बाल्मीकि ने चित्रकूट की बहुतसी महिमा कही तबतो रामचन्द्र लक्ष्मण सीता समेत सरितबरा श्रीमंदाकिनी गङ्गा में आ नहाये ॥ ६ ॥

रघुवर कहेउ लषण भलघाटू । करहु कतहुं अब ठाहरठाटू १
लषण दीखपयउतर करारा । चहुंदिशिफिरेउ धनुषइवनारा २

नदीपनच सर शमदम दाना । सकलकलुष कलि शावज नाना ३
चित्रकूट जनु अचल अहेरी । चूकन घात मार मुठभेरी ४
असकहिलषणठाउंदिखरावा । थल बिलोकिरघुवर सुखपावा ५
रमेउ राम मन देवन जाना । चले सहित सुरपति परधाना ६
कोलकिरातबेष सब आये । रचे पर्ण तृण सदन सुहाये ७
बरणिन जाहिं मंजुद्वय शाला । एक ललित लघुएक विशाला ८
दो० लषण जानकी सहित प्रभु राजत पर्ण निकेत ।
सोह मदन मुनि बेषजनु रति ऋतुराज समेत. ॥ ७ ॥

रामचन्द्र ने लक्ष्मण से कहा कि यह घाट तो अतिही सुन्दर है यहीं कहीं ठाहर का ठाट करो १ लक्ष्मण ने पय के उत्तर करारे को देखि कर कहा कि इसके सब ओर धनुषाकृति नारा जो फिरा है नदी तो उसकी पनच ज्या है मुनि जनों और तीर्थ बासियों के शम, दम, दान सब बाण हैं समस्त पाप मानों कलि पखेरू के पोतक हैं २ ॥ ३ चित्रकूट मानों अचल अहेरी हैं जो मुठभेरी मार मारता है तातें चूकताही नहीं है ४ ऐसे कहिकर लक्ष्मण ने सब ठौर दिखाया थल देखि कर राम ने बड़ा सुख पाया ५ देवताओं ने जाना कि रामचंद्र का मन चित्रकूट में रमा तअतो इन्द्र समेत सब चित्रकूट को चले ६ कोल किरात के बेषों में सब रामचंद्रके पास आये और तृण पर्ण के सुन्दर सदन बनाये ७ अति सुन्दर द्वय शाला बनाईं एकतो अति ललित छोटी और दूसरी बड़ी है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ लक्ष्मण सीता समेत रामचन्द्र उन पर्णशालाओं में कैसे बिराजते हैं मानों कामदेवही मुनिका बेष धारण किये रति और बसंत समेत बिराजता हैं ॥ ७ ॥

अमर नागकिन्नर दिग्पाला । चित्र कूटआये तेहि काला १
राम प्रणाम कीन्ह सब काहू । मुदित देव लहि लोचन लाहू २
बर्षि सुमन कह देवसमाजू । नाथ सनाथ भये हम आजू ३
करिबिनतीदुखदुसहसुनाये । हर्षितनिज निजसदन सिधाये ४
चित्रकूट रघुनंदन छाये । समाचार सुनि सुनि मुनि आये ५
आवतदेखि मुदित मुनि बृन्दा । कीन्ह दंडवतरघुकुल चन्दा ६
मुनि रघुबरहिं लाइ उर लेहीं । सफल होन हित आशिषदेहीं ७
सयसौमित्रिरामछबिदेखहिं । साधनसकलसफलकरिलेखहिं ८

दो० यथा योग सन्मानि प्रभु अभय किये मुनि वृंद।
करहिं योग जप यज्ञ तप निज आश्रमन स्वछंद॥ ८॥

देवता, नाग, किन्नर और सब दिग्पाल ता समय चित्रकूट को आये १ रामचंद्र ने सबको प्रणाम किया सब देवता नेत्रों का लाभ लेकर आनन्दित हो गये २फूलों की वर्षा करिके सब देवता कहने लगे कि हे नाथ आज हम सनाथ हुये ३ अनेक भांति बिनती करिके अपने दुसह दुःख सुनाये और प्रसन्न होकर अपने अपने लोकों गये ४ चित्रकूट में रामचंद्र को रहा सुनि सुनि कर चित्रकूट के समीपबासी सब मुनिजन उनके मिलने को आये ५ मुनिजनों को प्रसन्न मन आवते देखि कर राम लक्ष्मण ने दण्डवत प्रणाम सबको किया ६ मुनिजनों ने उनको हृदय से लगा लिया और सफल होने के लिये आशिष दिया ७ सब मुनीश्वर राम लक्ष्मण सीताकी छबि को देखतेहैं और अपने समस्तसाधनों को सफल मानते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ रामचंद्र ने यथायोग्य सन्मान करिके सबको बिदा किया ते सब अपने अपने आश्रमों में जप, योग, तप, यज्ञ, निर्भय स्वच्छन्द करने लगे ॥ ८ ॥

यह सुधि कोल किरातन पाई। हर्षे जनु नवनिधि घर आई १
कंद मूल फल भरि भरि दोना। चले रंक जनु लूटन सोना २
तिन महं जिन देखे दोउ भ्राता। और तिनहिं पूंछहिं मगुजाता ३
कहत सुनत रघुबीर निकाई। आइ सबहिं देखे दोउ भाई ४
करहिं जुहार भेट धरि आगे। प्रभुहिं बिलोकत अति अनुरागे ५
चित्र लिखे जनु जहं तहं ठाढ़े। पुलक शरीर नयन जल बाढ़े ६
राम सनेह मगन सब जाने। कहि प्रिय बचन सकल सनमाने ७
प्रभुहिं जुहारि बहोरि बहोरी। बचन बिनीत कहहिं करजोरी ८
दो० अब हम नाथ सनाथ सब भये देखि प्रभु पांय।
भाग हमारे आगमन राउर कोशलराय॥ ९॥

ये समाचार जब कोल किरातों ने पाये तब तो ऐसे हर्षित होगये मानो नवों निधि घरमें आगई ॥ १ ॥ कंद, मूल, फल दोने भरि भरि लिये और ऐसे शीघ्र चले जैसे महारंक कंचन के लूटने को जाते हैं ॥ २ ॥ उनमें जिन्होंने राम लक्ष्मण देखे रहें तिनसे और पूंछते जाते हैं ॥ ३ ॥ ऐसे दोनो भाइयों की सुन्दरता कहते सुनते सबों ने आदेखे ॥ ४ ॥ आइ आइ कर स्वामीको जुहार करतेहैं और भेट आगे धरते हैं और बड़े प्रेम से देखतेहैं ॥ ५ ॥ नेत्रों में प्रेमका जलहै पुलकित अंगहैं और जहां तहां चित्रलिखेसे खड़े हैं ६ ॥ रामचंद्र ने सबको प्रेमके बश जाना अति प्यारे बचन कहि

कहि कर सन्मान किया ॥ ७ ॥ तबतो रामचंद्र को बारंबार जुहार करि अति नम्र बचन हाथजोरि कर कहतेहैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ हेनाथ अब हम सबलोग आपके चरण देख कर सनाथ होगये हमारेही भाग्योंसे हे कोशलराज स्वामी आपका यहां आगमन हुआहे ॥ ९ ॥

धन्य भूमि बन पंथ पहारा । जहं जहं नाथ पांव तुम धारा १
धन्यबिहंग मृग काननचारी । सफल जन्मभये तुमहिं निहारी २
हमसब धन्य सहित परिवारा । देखि दरश भरि नयन तुम्हारा ३
कीन्ह बास भल ठाउं बिचारी । यहां सकल ऋतु रहब सुखारी ४
हम सब भांति करब सेवकाई । करि केहरि अहि बाघबराई ५
बन बेहड़गिरि कंदर खोहा । सब हमार प्रभु पग पग जोहा ६
तहंतहं तुमहिं अहेर खिलाउब । सर निर्झर सबठांउ दिखाउब ७
हम सेवक परिवार समेता । नाथ न सकुचब आयसु देता ८
दो० बेद बचन मुनि मन अगम ते प्रभु करुणा अयन ।
बचन किरातन के सुनत जिमि पितु बालक बयन ॥ १० ॥

वह भूमि, बन, पहार धन्य हे जहां जहां हे नाथ आपने चरण धारण कियेहैं ॥ १ ॥ समस्त बनचारी, खग, मृग भी धन्य हैं क्योंकि आप को देखि कर उन सबके जन्म सफल होगये ॥ २ ॥ हम सबभी आपको नेत्रों भरि देखिकर परिवार समेत धन्य होगये ॥ ३ ॥ यहतो आपने भला स्थान बिचारि कर निवास किया हे यहां आप सर्बकाल सुखी रहोगे ॥ ४ ॥ हम लोग सब भांति से आपकी सेवकाई किया करेंगे हाथी, सिंह, सर्प, बाघों को बराये रहेंगे ॥ ५ ॥ यहां के समस्त बन बेहड पर्बतों की कन्दरा खोहें हे नाथ हमारे पग पग देखे हैं तहां तहां आपको अहेर मृगया खिलावेंगे और पर्बतोंमें सुन्दर सरोवर झरना सब ठौर दिखावेंगे ॥ ६ ॥ ७ ॥ हमतो परिवार समेत सब आपके सेवक हैं आप ऊंच नीच कार्य्यको आज्ञा देते सकोच न किया करें ॥८॥ दोहा ॥ जोप्रभु बेदों केबचन और मुनीश्वरों के मनको भी अगमहैं सोई करुणानिधान किरातों के बचनों को ऐसे मन लगा कर सुनते हे जैसे पिता पुत्र के बचनों को ॥ १० ॥

रामहिं केवल प्रेम पियारा । जानि लेइजो जाननहारा १
राम सकल बनचर परितोषे । कहि प्रिय बचन प्रेम परिपोषे २
बिदा किये शिरनाइ सिधाये । प्रभु गुण कहत सुनत घरआये ३

यहिबिधिसीयसहितदोउभाई । बसहिं बिपिनसुरमुनिसुखदाई ४
जबते आय रहे रघुनायक । तबते भावन मंगल दायक ५
फूलहिं फलहिं बिटप बिधिनाना । मंजु ललित बरबेलिबिताना ६
सुर तरु सरिस सुभाय सुहाये । मनहुं बिबुध बन परिहरि आये ७
गुंज मंजुतर मधुकर श्रेनी । त्रिबिधि बयारि बहै सुखदेनी ८
दो० नील कंठ कलकंठ शुक चातक चक्र चकोर ।
भांति भांति बोलहिं बिहंग श्रवण सुखद चितचोर ॥ ११॥

राम कोतो केवल प्रेमही प्यारा है जो जाना चाहै सो यहां जानिलेवे ॥ तुलसीजिन्हें रामसनेहनहीं तेपशु बिनु पूंछ बिषाननहू तिनतेखरशूकरस्वानभलेजड़तापसतेनसकैंकछु कै बोझसुईजननीदशमासभईक्रिनिबांझगईकिनित्वै जरिजाहुसोजीवनजानकिनाथजिये जगमेतुम्हरोबिनुहै १ तबतो रामचन्द्रने मधुर बचनों से सबको परितोष किया २ फिरि सबको बिदा किया रामचन्द्र के गुण कहते सुनते अपने घरों को आये ३ इस प्रकार रामचन्द्र सुरमुनिसुखदायक सीता लक्ष्मण समेत बनमें बास करते हैं ४ जब से रघुनायक राम आयरहे हैं तबसे बन मंगलदायक होगया है ५ नाना भांतिके वृक्ष फूलते फरतेहैं तिनपर अति ललित बेलियों के बितान होरहेहैं ६ कल्पवृक्षहीके समान सहज सुहाये हैं मानों नन्दन बनही को छोड़िकर आयेहैं ७ जिनपर अति उज्ज्वल चंचरीकों कीश्रेणी गुंजतीहै और त्रिबिधि पवन बहती है ॥ ८॥ दोहा ॥ जहां नीलकंठ, कोकिला, शुक, पपीहा, चक्रवाक, चकोर आदि पक्षीकूजते हैं जो श्रवणों को सुख दायक और चित्तको चुरातेहैं ॥ ११ ॥

करि केहरि कपि कोल कुरंगा । बिगत बैर बिचरहिं सबसंगा १
फिरत अहेर राम छबि देखी । होहिं मुदित मृगवृन्द बिशेखी २
बिबुधबिपिनजहंलगिजगमाहीं । देखि रामबनसकलसिहाहीं ३
सुरसरि सरसइ दिनकर कन्या । मेकल सुता गोदावरि धन्या ४
सबसरि सिंधु नदी नद नाना । मंदाकिनि कर करत बखाना ५
उदय अस्त गिरिअरु कैलाशू । मंदर मेरु सकल सुरबासू ६
शैल हिमाचल आदिक जेते । चित्रकूट यश गावहिं तेते ७
बिंध्य मुदित मन सुख न समाई । बिनुश्रम बिपुल बड़ाई पाई ८
दो० चित्रकूट के बिहंग मृग बेलिबिटप तृणजाति ।

पुण्यपुंज सबधन्य अस कहहिं देव दिवराति ॥ १२॥

जहां हाथी, सिंह, बानर, बाराह, हिरण, अपने सहज बैर को छोड़िकर सब संगही बिहरने लगे १ तेसब मृगबृन्द अहेर फिरते रामचंद्र की छबिको देखकर बिशेष हर्षित हे तेहैं २ जगमें जहां तक देवताओं के बनहैं तेसब इस रामबनके भागको सराहते हैं ३ सुरसरी गंगा, सरसई सरस्वती, दिनकरकन्या, यमुना, मेकलसुता नर्मदा गोदावरी और धन्या ये सब नदी और नदीनाथ समुद्र और नाना नद सब मंदाकिनी का बखान करते हैं ४ । ५ उदयाचल, अस्ताचल, कैलाश मंदराचल और समस्तदेवताओं का निवास सुमेरु और हिमाचल आदि जितने पर्बत हैं सबचित्रकूटहीका यश काते हैं ६ । ७ बिन्ध्याचल अतिही हर्षित है उसके मनमें सुख समाताही नहींकि उसने बिनाही श्रमअति बड़ाई पाई है क्योंकि चित्रकूट उसीका एक शिखर है ८ ॥ दोहा ॥ चित्रकूट के जो पक्षी, मृग, बेलि, बिटप, तृणहैं उनको देवता राति दिन यही कहा करते हैं कि ये सब पुण्यपुंज और अति धन्य हैं ॥ १२ ॥

नयनवंत रघुपतिहिं बिलोकी । पाइनयन फलहोहिं बिशोकी १
परसि चरण रज अचर सुखारी । भये परमपद के अधिकारी २
सोबन शैल सुभाय सुहावन । मंगलमय अतिपावन पावन ३
महिमा कहौं कवन बिधितासू । सुखसागर जहं कीन्ह निवासू ४
पयपयोधि तजिअवध बिहाई । जहं सिय राम लषण रहेआई ५
कहिनसकहिं सुखमाजसकानन । जोशतसहसहोहिं सहसानन ६
सोमैं बरणि सकौं बिधि केहीं । डाबर कमठ कि मंदर लेहीं ७
सेवहिं लषण कर्ममन बानी । जाइ न शील सनेह बखानी ८
दो० क्षण क्षण लखि सियरामपद जानि आप पर नेह ।
करत नसपने लषण चित बंधुमातु पितुगेह ॥ १३ ॥

नेत्रधारी तो चित्रकूट के रामचन्द्र को देखिकर नेत्रों का फल पाते हैं और पुनरावर्त्ति से बिशोक होजाते हैं १ और अचरजीव रामचन्द्र के चरणोंकी रजही को छूकर परमपद सनातन अयोध्या के अधिकारी होचुके हैं २ सोतो बन और पर्वत सौभाविक सुहावना मंगलमूल अति पावन का भी पावन कर्ता है ३ उसकी महिमा मैं कौन बिधि से कहूं जहां सच्चिदानन्द निधान राम ने निवास किया है ४ क्षीरसागर को छोड़िकर अयोध्या में और अयोध्या कोभी छोड़िकर जिस चित्रकूट में राम लक्ष्मण जानकी आ रहे हैं ५ जैसी इस बनकी महिमा है तैसी तो यदि शत सहस्र शेष होवें तो भीनहीं कहि सक्ते हैं ६ उसको मैं भला कौन

भांति से कहि सकता हूं पोखरों के कछुये कभी मंदराचल को उठा सकते हैं ७ ताते अबमें सीता राम लक्ष्मण तीनों की रहनि कहताहूं राम जानकी दोनों को लक्ष्मण तन,मन, बचन से सेवते हैं जिनका शील सनेह कहानहीं जाता है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ क्षण क्षण प्रति राम जानकी के चरण देखि देखि और अपने पर उनका प्रेम जानिकर माता पिता भाई घरके सुखों पर लक्ष्मण सपने में भी चित्तनहींकरते हैं ॥ १३

राम संग सियरहति सुखारी। पुरपरिजन गृहसुरति बिसारी १
क्षणक्षण प्रभु बिधुबदननिहारी। प्रमुदितमनहुं चकोरकुमारी २
नाहनेह नित बढ़त बिलोकी। हर्षित रहति दिवस जिमि कोकी ३
सियमन रामचरण अनुरागा। अवधसहस सम बन प्रियलागा ४
पर्णकुटी प्रिय प्रीतम संगा। प्रिय परिवार कुरंग बिहंगा ५
सासुससुरसममुनितियमुनिबर। अशनअमियसमकन्दमूलफर ६
नाथ साथ साथरी सुहाई। मयन शयन शत सम सुखदाई ७
लोकप होंहिं बिलोकत जासू। तेहिकिमोहि सकबिषयबिलासू ८
दो० सुमिरत रामहिं तजहिंनर तृण सम बिषय बिलासु।
रामप्रियाजग जननिसिय नहिंकछु अचरज तासु ॥ १४

रामचन्द्र के साथ सीता ऐसीसुखी रहती है कि पुर,परिवार, घर सबकी सुधि भूलिगई १ क्षण क्षण प्रति पति के मुख चन्द्रमा को देखिकर चकोरकुमारी के समान प्रमुदित रहती है २ पति का प्रेम अपने पर बढ़तादेखि कर ऐसी हर्षित रहती है जैसी दिवसमें कोकी रहती है ३ सीता के मनमें जो राम के चरणों का अनुराग है ताते अयोध्या से सहस्र गुण वनप्यारा लगता है ४ पतिके साथ पर्णशालाही अति प्यारी है और बनके खग, मृगही परिवार के समान प्यारे हैं ५ बन के मुनि और मुनिपत्नीही सासु ससुर के समान हितकारी हैं और कन्द, मूल फलही घृत शर्करादि के समान भोजन हैं ६ पति के साथ में कुश,किशलय की साथरीही कामशय्या से भी सौगुणी सुखदायक है ७ जिस सीता की कृपा के कटाक्ष से जीव लोकपाल होजाते हैं उसको प्राकृत भोग,बिलास क्या मोहि सकते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ राम का तो जो नर स्मरण करते हैं तेसमस्त भोग बिलासों को तृण के समान त्याग देते हैं तो राम की प्रिया जगत्की माता सीता का कौन आश्चर्य्य है ॥ १४ ॥

सीयलषणजेहिं बिधिसुखलहहीं। सोइरघुनाथकरहिं सोइकहहीं १
कहहिं पुरातन कथाबखानी। सुनहिं लषणसिय अति सुखमानी २

जबजब रामअवध सुधिकरहीं। तबतब बारिबिलोचन भरहीं ३
सुमिरि मातु पितु परिजन भाई। भरत सनेह शील सेवकाई ४
कृपासिंधु प्रभु होहिं दुखारी। धीरज धरहिं कुसमयबिचारी ५
लखिसियलषणबिकलहोइजाहीं। जिमिपुरुषहिं अनुहरपरछाहीं
प्रिया बंधुगति लखि रघुनंदन। धीर कृपालु भक्तउर चंदन ७
लगेकहन कछुकथा पुनीता। सुनि सुख लहैंलषण अरुसीता ८
दो० राम लषण सीतासहित सोहत पर्ण निकेत
जिमि बासवबस अमरपुर शचीजयंत समेत॥ १५॥

जिसप्रकार सीता और लक्ष्मण सुखपावें सोईतो रामचन्द्र कहतेहैं और सोईकरते हैं १ सुन्दर पुरातन कथा बखानि बखानि कर कहतेहैं और सीतालक्ष्मण बड़ासुख मानिकर सुनतेहैं २ और रामचंद्र जबजब अयोध्याकी सुधि करतेहैं तबतब नेत्रों में जल भरिभरि लेतेहैं ३ माता,पिता, भाईऔर समस्त परिवार और भरतके शील स्नेह की जब सुधि करतेहैं तबतो कृपासिंधु स्वामी दुखी हो जातेहैं और कुसमय बिचारिकर धीरज धरते हैं ४।५ ऐसी रामकी दशा देखिकर सीता, लक्ष्मण भी व्याकुल होजाते हैं जैसे शरीरको छाया अनुसरती है ६ सीता, लक्ष्मणकी बिकलता कोदेखिकर भक्तोंके हृदय के शीतलकारी चंदन रघुनन्दन रामचंद्र कोई पावन कथा कहने लगते हैं जिसको सुनिकर लक्ष्मण सीता फिरि सुखी होजाते हैं ७ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ रामचंद्रसीता लक्ष्मण समेत पर्णशालामें कैसे सोहतेहैं जैसेइंद्र अपनी अमरावती में शची, इंद्राणी और अपने पुत्र जयंत समेत बसते हैं ॥ १५ ॥

जुगवहिं प्रभुसियलषणहिंकैसे। पलक बिलोचनगोलकजैसे १
सेवहिंलषण सीयरघुबीरहिं। जिमि अबिवेकीपुरुषशरीरहिं २
यहिबिधिप्रभुबनबसहिंसुखारी। खगमृगसुरतापसहितकारी ३
कहेउं रामबनगमनसुहावा। सुनहु सुमंत अवध जिमिआवा ४
फिरेउ निषाद प्रभुहिंपहुंचाई। सचिव सहित रथदेखेउ आई ५
मंत्रहिं बिकल बिलोकनिषादू। कहिन जाइ जसभयउबिषादू ६
रामराम सियलषण पुकारी। परेउ धरणितल ब्याकुलभारी ७
देखिदषिनदिशिहयहिंहंनाहीं। जिमिबिनुपंखबिहंगअकुलाहीं ८
दो० नहिंतृण चरहिं नपियहिंजल मोचत लोचन बारि।

ब्याकुल भये निषादगण रघुबर बाजि निहारि ॥ १६ ॥

सीता, लक्ष्मणके मनको रामचंद्र कैसे देखाही करते हैं जैसे नेत्रों के गोलकों को पलक देखा करतीहैं १ और लक्ष्मण,सीता भी रामचंद्रको कैसे सेवते हैं जैसे अज्ञानी पुरुष सदा अपने शरीरही को पोषण किया करतेहैं २ इस प्रकार रामचंद्र बनमें सुख पूर्वक बसतेहैं खग,मृग,देवता,मुनीश्वरों के हितकारी हैं ३ शृङ्गवेरपुरसे रामचन्द्र का बनजाना तो मैंनेकहा अब जैसे सुमंत अयोध्या को आये सो कथा सुनो ४ रामचन्द्र कोयमुना उतारिकर निषादराज गुह फिरि आया तोसुमंत समेत रथको तहीं देखा जहां छोड़ि गयाहै ५ सुमंतको महा बिकल पर देखिकर जैसा गुहको बिषाद हुआ सोकहा नहीं जाताहै ६ किसुमंत हाराम हाराम हासीता हालक्ष्मण तोपुकारतेहैं और प्रथ्वी पर महा ब्याकुल परेहैं निषादको देखिकर घोरेहिनहिनाते हैं जैसे पंख बिना पखेरू अकुलाते हैं ७ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ नतो तृण चरतेहैं नजल पीते हैं आंखोंसे आंसू ढारते हैं ऐसीदशा रामचन्द्र के घोरों की देखिकर निषादपति ब्याकुल होगया १६ ॥

धरि धीरज तब कहहिं निषादू । अब सुमंत परिहरहु बिषादू १
तुम पंडित परमारथ ज्ञाता । धरहु धीर लखि बाम बिधाता २
बिबिधिकथा कहि कहि मृदुबानी । रथबैठायसि बरबशआनी ३
शोक शिथिल रथ सकै न हांकी । रघुबर बिरह पीर उर बांकी ४
तरफराहिं मग चलहिं न घोरे । बनमृग मनहुं आनिरथ जोरे ५
अटकि परहिं फिरि हेरहिं पीछे । रामबियोग बिकलदुखतीछे ६
बाजिबिरहगतिकिमिकहिजातीमणिबिनुफणिकबिकलजेहिभांती
जो कह राम लषण बैदेहीं । हिकरि हिकरि हेरति तेहिं तेहीं ८
दो० भये निषाद बिषाद बश देखत सचिव तुरंग ।
बोलि सुसेवक चारि तब दिये सारथी संग ॥ १७ ॥

फिरि तो धीरज धरि कर निषाद ने कहा कि हे सुमंत अब आप बिषाद को त्याग करो १ तुमतो पंडित परमार्थ के ज्ञाता हो तातें बिधाता को बाम जानिकर धीरजधरो २ ऐसी अनेक भांति की कथा कहि कहि कर बरियाई रथ पर उठाया बैठारा ३ शोक से सब अंग शिथिल हैं रथ नहीं हांकि सकते हैं राम के बियोगकी अति दुस्सह पीर है ४ रथके घोड़े तरफराते हैं मार्ग पर नहीं चलते हैं मानों बन के मृग रथमें लाकर जोरे हैं बार बार अटकि परते हैं और पीछेही को देखते हैं अति तीक्ष्ण रामके बियोग के दुखसे ब्याकुल हैं ५ ॥ ६ जो कोई राम लक्ष्मण सीता का नाम लेता है उसी की ओर हिकरि हिकरि के देखने लगते हैं ७ घोड़े की

बियोग दशा कैसे कही जातीहै मणि बिना जैसे सर्प व्याकुल होता है ८ ॥ दोहा ॥ ऐसी मंत्री और घोड़ों की दशा देखतेही निषाद व्याकुल होगया तबतो निषादनाथ ने चारि सुसेवक बुला कर सारथी सुमंत के साथ करि दिये ॥ १० ॥

गुह सारथिहिं फिरेउ पहुंचाई । बिरहबिषादबरणिनहिं जाई १
चले अवध लैरथहिं निषादा । होहिंक्षणहिं क्षण मग्नबिषादा २
सोच सुमंत बिकल दुख दीना । धिक जीवन रघुबीर बिहीना ३
रहिहि न अंतहु अधम शरीरा । यश न लीन्ह बिछुरतरघुबीरा ४
भये अयश अघ भाजन प्राना । कवन हेतु नहिं करत पयाना ५
अहह मंद मति अवसर चूका । अजहुं न हृदय होइ द्वय टूका ६
मींजि हाथ शिर धुनि पछिताई । मनहुं कृपणधन राशिगंवाई ७
बिरद बांधि बर बीर कहाई । चलेउ समर जनु सुभट पराई ८
दो० बिप्र बिबेकी वेद बिद सम्मत साधु सुजाति ।
जिमि धोखे मद पान कृत सचिव सोच तेहिं भांति ॥ १८

गुह निषादपति सारथी को पहुंचाइ कर फिरि तो आया परंतु राम के बियोगका बिषाद कुछ कहा नहीं जाता है १ अब चारों निषाद अयोध्या को रथ ले चले तो सुमंत के बिषाद के दुःख में मग्न हो हो जाते हैं २ सुमंत दुःखमें महादीन सोचते हैं कि राम बिना जीवने को धिक्कार है ३ अरे अधम शरीर तू सदा नहीं रहैगा राम के बिछुरते यश न ले लिया ४ हाय ये मेरे प्राण अपयश ही के भाजन हुये जाने कौन कारण से पयान नहीं करते हैं ५ हाय मंदमति समय तो चूकि गया अब भी हृदय दो टूक नहीं होजाता है ६ बार बार हाथ मीजते हैं शिर धुनते हैं पछिताते हैं मानों महा कृपण ने धन राशि गमाइ दी ७ जैसे कोई बिरद बंधाइ और बीर कहाइ कर बड़ा योधा संग्राम से भागि कर पछिताता है ऐसेही सुमंत पछिताते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जैसे कोई बिबेकी ब्राह्मण वेदवेत्ता सर्व संमत और कूलवंत धोखेसे मद्यपान करिके पछिताता है सोई सुमंत की दशा है ॥ १८ ॥

जिमि कुलीन तियसाधु सयानी । पतिदेवता कर्म मन बानी १
रहै कर्म बश परिहरि नाहू । सचिव हृदय तिमि दारुण दाहू २
लोचन सजल दृष्टि भइथोरी । सुनैन श्रवण बिकल मति भोरी ३
सूखे अधर लागि मुख लाटी । जिय नजाइ उर अवधि कपाटी ४
बिबरण भयउन जाय निहारी । मारेसि मनहुं पिता महतारी ५

हानि गलानि बिपुल मनब्यापी । यमपुर पंथ सोच जनुपापी ६
बचन न आव हृदय पछिताई । अवध काह मैं देखब जाई ७
राम रहित रथदेखिहि जोई । सकुचिहि मोहिं बिलोकत सोई ८
दो० धाइ पूछिहैं मोहिंजब बिकल नगर नरनारि ।
उतर देब मैं तिनहिं तब हृदय बज्र बैठारि ॥ १६ ॥

जैसे कोई कुलवती नारी सती सयानी जिसके तन,मन, बचन से पतिही देवता है और कर्म बश परपति को भोगिकर सोचै ऐसा सुमंत के मन में दारुण दाहहोरहा है १। २ नेच तो सजल और दृष्टि मंद होगई है कानोंसे सुनते नहींहैं अति बिकल हैं बुद्धिभी भोरी है ३ ओठ सूखेहैं मुखमें लाटी लगी है तो भी प्राण नहीं निकसने पातेहैं हृदय में अवधि के किवारे लगेहैं ४ बिवर्ण होगये हैं देखे भी नहीं जातेहैं मानों माता पिताको मारि आयेहैं ५ अतिही हानिकी ग्लानि मनमें ब्याप्तहोरही है ऐसे सोचते जाते हैं जैसे यमपुरके मार्ग में पापी सोचता है ६ बचन तो मुखसे आता नहीं है मनही में पछिताते हैं कि अयोध्या में जाकर कौन सुखदेखूंगा ७ जो कोई राम रहित रथको देखैगा सो मेरेका सकोच देवैगा कितू राम को छोड़िकर जीवता कैसे आया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जब मुझसे नगरके नर नारी महा ब्याकुल दौरिकर पूंछैगे तबमैं इस हृदय में वजबैठारि कर उत्तर दे दूंगा कि राम लक्ष्मण सीता बनको गये ॥ १६ ॥

पूछिहिं दीनदुखित सबमाता । कहब काहमैं तिनहिं बिधाता १
पूछिहिं जबहिं लषण महतारी । कहिहौं कवन संदेश सुखारी २
राम जननि जब आइहि धाई । सुमिरि बच्छ जिमिधेनु लवाई ३
पूछत उतर देब मैं तेहीं । गे बन राम लषण बैदेहीं ४
जो पूछिहिं तेहिं उत्तर देवा । जाइ आवध अब यहसुख लेवा ५
पूछिहिं जबहि राउ दुखदीना । जीवन जासु राम आधीना ६
देहौं उतर कवन मुख लाई । आयउं कुशल कुंवर पहुंचाई ७
सुनत लषण सिय राम संदेशू । तृणसम तन परिहरिहि नरेशू ८
दो० हृदय न बिदरेउ पंक जिमि बिछुरत प्रीतम नीर ।
जानतहौं मोहिं दीन्ह बिधि यम यातना शरीर ॥ ॥ २० ॥

जब महादीन दुखी सब माता पूछैगीं तब हे बिधाता मैं उनसे क्या कहूंगा १ जब लक्ष्मण की माता सुमिचा मुझसे पूछैगी तब मैं उनसे कौन सुखका संदेशा कहूंगा २

फिरि जब रामकी माता कौशल्या दौरिकर आवैगी जैसे बालवत्स को सुमिरि कर लवाई गाइ आतीहै ३ तो पूछतेही मैं उसको उत्तर देदूंगा कि राम लक्ष्मण सीता बन को गये ४ जो पूछैगा उसको यही उत्तर देवेंगे अयोध्यामें जाकर अवयही सुख लेवेंगे ५ जब दीन दुखी रजा पूछैंगे जिनका जीवन केवल रामहीके आधीन है ६ तब मैं उनको उत्तर कौन मुखसे दूंगा कि रामलक्ष्मण को पहुंचा कर कुशल समेत जीतेजी आपके पासमें आगया ७ तबऐसा राम लक्ष्मण सीताका संदेशा सुनतेहीराजा तो तृणके समान शरीर को त्याग देवेंगे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ और मेरा हृदय जो रामसे प्रीतम जल के बिछुरते कीचकी नाईं नफटि गयातो मैं जानताहूं कि मेरेको बिधात ने यमयातनाही काशरीर दियाहै ॥ २० ॥

यहिबिधि करत पंथ पछितावा । तमसा तीर तुरत रथ आवा १
बिदाकिये करिबिनय निषादा । फिरेपांयपरि बिकल बिषादा २
पैठत नगर सचिव सकुचाई । जनु मारेसि गुरु ब्राह्मण गाई ३
बैठि बिटपतर दिवस गवांवा । सांझ समय तबअवसर पावा ४
अवध प्रबेश कीन्ह अंधियारे । पैठ भवन रथ राखि दुआरे ५
जिन जिन समाचार सुनि पाये । भूप द्वार रथ देखन आये ६
रथपहिचानिबिकललखिघोरे । गरहिं गात जिमि आतपओरे ७
नगर नारिनर व्याकुल कैसे । निघटत नीर मीन गण जैसे ८
दो० सचिव आगमन सुनतसब बिकल भईं रनिवास ।
भवन भयंकरलाग तिहिं मानहु प्रेत निबास ॥ २१ ॥

इसप्रकार मार्ग में पछितावा करते करते तमसा नदी के तटपर रथ आगया १ तबतो सुमंत ने बिनती करिके निषादों को बिदा किया ते सुमंतको प्रणाम करिके फिरि गये २ अबनगरमें प्रवेश करतेतो सुमंत ऐसे सकोच करतेहैं मानों गुरु,ब्राह्मण गायका बधकिया है ३ दिनतो एक बृक्षकी ओझिल बैठिकर गवां दिया जब संध्या हुई तब दांउपाया ४ अंधियारे समय अयोध्यामें प्रवेश किया औररथको द्वारहीपर छोड़िकर राज मंदिर को चलेगये ५ जिन लोगोंने समाचार पाये ते राजद्वार पर रथ के देखनेको आये ६ रथको पहिचाना और घोड़ोंको बिकल देखकर औरों के समान उनके अंग छीजनेलगे ७ नगरके नरनारी कैसे ब्याकुल होगये जैसे जलके सूखे मीन गण होतेहैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सुमंतके आगमनके सुनते ही सब रनिवास ब्याकुल हो गई और राज मंदिर स्मशानके समान सुमंत को भयंकरलगा ॥ २१ ॥

अति आरत सब पूछहिं रानी । उतरन आव बिकलभइबानी १

सुनैनश्रवण नयननहिंसूझा । कहहुकहांनृप जेहिं तेहिंबूझा २
दासी देखि सचिव बिकलाई । कौशल्या गृह गईं लिवाई ३
जाइ सुमंत दीख कसराजा । अमिय रहित जनु चंदबिराजा ४
आसन शयन बिभूषणहीना । परेउ भूमितल निपट मलीना ५
लेइ उसास सोच यहि भांती । सुरपुर ते जनु परेउ ययाती ६
लेत सोचभरि क्षणक्षण छाती । जनु जरि पंख परेउ संपाती ७
राम राम कहं राम सनेही । पुनि कहं लषण राम बैदेही ८
दो० देखि सचिव जयजीवकहि कीन्हेसि दंड प्रणाम ।
सुनत उठेउ ब्याकुल नृपति कहु सुमंत कहं राम ॥ २२ ॥

अतिही आरत सबरानी पूछती हैं सुमंतको उत्तरनहीं आता है बाणी बिकलहै १ कानोंसे तोःसुनते नहीं हैं और आंखोंसे सूझता नहीहै कहो राजा कहां है ऐसे सबसे बूझा २ दासियोंने सुमंतकी बिकलता देखी तब कौशल्याके मंदिर में लिवालेगईं ३ सुमंतने राजाको कैसाजा देखा मानों अमृत बिना चन्द्रमा है ४ आसन शय्यान भूषणरहित महामलीन पृथ्वीपर परेहैं ५ उसास लेकर इसप्रकार सोचते हैं मानों देवलोकसे चंद्रबंश के राजा ययातिही गिरेहैं ६ सोचसे बारबार छाती भरिभरि लेते हैं मानों पंखजरिकर जटायु गृद्धराज का बड़ाभाई संपाती ही परा सोचता है ७ हा राम हाराम हासनेही राम पुकारते हैं कभी कहतेहैं हा लक्ष्मण हा सीता हा राम ८ ऐसी दशा राजाकी देखिकर सुमंतने जयजीव कहिकर उनको प्रणाम जबकिया तब तो सुनतेही महा ब्याकुल राजा यहीकहते उठे हे सुमंत राम कहां हैं ॥ २२ ॥

भूप सुमंत लीन्ह उर लाई । बूड़त कछु अधार जनु पाई १
सहित सनेह निकट बैठारी । पूछत राउ नयन भरि बारी २
राम कुशल कहुसखा सनेही । कहं रघुनाथ लषण बैदेही ३
आनेहु फेरि किबनहिसिधाये । सुनत सचिव लोचनजलछाये ४
शोक बिकल पुनिपूछ नरेशू । कहहु राम सियलषण संदेशू ५
राम रूप गुणशील सुभाऊ । सुमिरिसुमिरि उर सोचत राऊ ६
राजसुनाइ दीन्ह बनबासू । सुनि न भयउ हिय हर्ष हरासू ७
सोसुत बिछुरत गये न प्राणा । कोपापी बड़ मोहिं समाना ८
दो० सखा राम सियलषण जहं तहांमोहिं पहुंचाव ।

नाहितो चाहत चलनअब प्राण कहौंसतिभाव ॥ २३ ॥

राजाने सुमंतको ऐसे हृदयसे लगा लिया मानों बूड़तेने किंचित् आधारपाया १
बड़े स्नेहसे बैठारि लिया और नेत्रोमें जलभरिकर राजा पूंछने लगे २ अरेहे सनेही
सखा रामकी कुशल तो कहो कौनसे बनमें सीता राम लक्ष्मण हैं ३ फेरिलायेहो कि
वनही को चलेगये यह सुनतेहीतो सुमंतके नेत्रजलसे भरि आये ४ जब सुमंत ने
कुछ उत्तर नदिया तबतो शोकमें व्याकुल राजा फिरि पूंछनेलगे किहे सखाराम लक्ष्मण
सीता का संदेशा तो कहो ५ जबसुमंत न बोले तबतो राजा रामचंद्रका रूप और गुण
शील सुभाव की सुधि करिकरि हृदयमें सोचते हैं ६ हायजिस पुत्रको मैंने राजदेने
कहाऔर कामके बशवनबास देदिया राज्य- सुनिकर तो कुछहर्ष और बनबास देनेसे
बिषाद न हुआ ७ ऐसे पुत्रके बिछुरनेसेभीजोमेरे प्राण न गये तो मेरे समानदूसरा
कौन बड़ा पापी है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ हेसखा जहां राम लक्ष्मण सीता हैं तहां मुझको
लेचलो नहींतो मैं सतिभाव से कहताहूं किमेरे प्राण चलाचाहते २३ ॥

पुनि पुनि पूंछत मंत्रिहिराऊ। प्रीतम सुवन संदेश सुनाऊ १
सखा बेगिसोइ करियउपाऊ। रामलषणसिय आनिदिखाऊ २
सचिव धीरधरि कहमृदु बानी। महाराज तुम पंडित ज्ञानी ३
बीर सुधीर धुरंधर देवा। साधु समाज सदा तुम सेवा ४
जन्ममरणजगदुखसुखभोगा। हानिलाभप्रियमिलनबियोगा ५
काल कर्म बशहोहिं गुसाईं। बरबश रैनि दिवस की नाईं ६
सुखहर्षहिं जड़दुखबिलखाहीं। दोउसमधीर धरहिंमनमाहीं ७
धीरज धरहु बिबेक बिचारी। छांड़िय सोच सकल हितकारी ८

दो० प्रथम बास तमसा भयो दूसर सुरसरि तीर।
न्हाइ रहेजलपान करि सिय समेत दोउबीर ॥ २४ ॥

सुमंतसे राजा फिरि फिरि पूछते हैं किहे सखा प्रीतमपुत्रकासंदेसातोसुनाओ १
हेसखा शीघ्रही सो उपाय करो कि राम लक्ष्मण सीता को ला दिखाओ २ तबतो
बड़ी धीर धरिकर सुमंतने कहा कि हे महाराज आप तो पंडितहैं ३ बड़े बीर और
धीर धुरंधर हो और सदा आपने साधु समाज सेवन कियाहै तातै सब जानते हो ४
बिचारि कर देखो कि जन्मना, मरना, दुख सुख भोगना हानिलाभ और प्रीतम का
संयोग बियोग होना येसब कालकर्मके बश बरियाई होते हैं जैसे दिनराति समय
समय पर होतेहैं ५। ६ अज्ञानी जड़ सुखमें तो हर्षित होतेहैं औरदुखमें बिलखते
हैं और धीरवन्त ज्ञानीदोनों को आगमापायी जानिकर समानहीं मानते हैं ७

तातें बिबेक बिचारिकर आपधीरज धरिये आपही सबकेहितहो शोककात्याग करौ और राम लक्ष्मण सीताके संदेश को सुनौ ॥ ८ दोहा ॥ पहला बास तौ तमसाके निकट और दूसरागंगाके तीरहुआ तहां स्नान करि के गंगा जल पान सीता समेत दोनों भाइयों ने किया २४

केवट कीन्हि बहुत सेवकाई । सो यामिनि श्रृंगबेर गवाई १
होत प्रात बट क्षीर मगावा । जटा मुकुट निजशीश बनावा २
राम सखा तब नाव मगाई । प्रिया चढाइ चढ़े रघुराई ३
लषण धरेधनु बाण बनाई । आप चढे प्रभु आयसु पाई ४
बिकल बिलोकि मोहिंरघुबीरा । बोले मधुर बचन धरिधीरा ५
तात प्रणाम तात सन कहेहू । बार बार पद पंकज गहेहू ६
करब पांय परि बिनयबहोरी । तात करिय जनि चिंता मोरी ७
बन मग मंगल कुशल हमारे । कृपा अनुग्रह पुण्य तुम्हारे ८
छं० तुम्हरे अनुग्रह तात कानन जात सब सुख पाइहौं ।
प्रतिपालि आयसु कुशल देखन पांयफिरि पुनि आइहौं ॥
जननी सकल परितोष करिपरि पांय करि बिनती घनी ।
तुलसीकरेहु सोइ यतनजेहिबिधि कुशलरह कौशलधनी ॥

सो० गुरुसन कहब संदेश बारबार पद पद्म गहि ।
125 करब सोई उपदेश जेहिनसोचमोहिं अवधपति ॥ २५ ॥

तहांगुह निषादने बड़ी सेवाकरी सोराचि शृंगवेरही में बिताई १ प्रात होतेही बटका दूध मंगाया और दोनों भाइयोंने जटाओं का जूट अपने शीशोंपर बनाया२ निषादराज ने नाव मंगाई उसपर सीता समेत राम चढ़े ३ लक्ष्मण ने धनुष बाण करसब रखदिये और आपभी रामकी आज्ञापाकर नावपर आबैठे ४ तासमय मुझे बिकल देखिकर मधुर बचनसे राम बोले ५ हेतात पितासे हमारा प्रणाम कहना और बार बार उनके चरण गहना ६ और बिनती करना किआप किसी बातकी मेरी चिन्ता न करैं ७ बनके मार्गमें हमको आपके पुण्य अनुग्रहसे मंगल कुशलहै ॥ ८ ॥ छन्द॥ आपकी कृपासे बनयात्रा में सबभांति सुख पाऊंगा और आपकी आज्ञाको पालि कर आपके चरण आदेखूंगा समस्त माताओं का परितोष करि बिनती करना किऐसाकरैं जिसमेंराजा कुशलरहें ॥ सोरठा गुरुके चरण छूकर कहना कि ऐसा उपदेश राजाको किया करैं किमेरा सोचनकरैं॥ २५ यह छठीपचीसी चौपाइयों कीहुई ॥ ६ ॥

श्रीरामायनमः ॥

पुरजन परिजनसकल निहोरी। तात सुनायहु बिनती मोरी १
सोइ सबभांति मोर हितकारी। जाते रह नरनाह सुखारी २
कहब संदेश भरत के आये। नीतिन तजब राजपद पाये ३
पालेहु प्रजहिं कर्म मनबानी। सेयहु मातु सकल सम जानी ४
और निबाहब भायप भाई। करि पितु मातु चरण सेवकाई ५
तात भांति तेहिं राखब राऊ। सोच मोर जेहिं करहिंन काऊ ६
लषण कहेउकछु बचनकठोरा। बरजि रामपुनिमोहिं निहोरा ७
बारबार निज शपथ दिवाई। कहब न तात लषण लरिकाई ८
दो० कहि प्रणाम कछु कहन लिय सिय भइशिथिल सनेह।
थकित बचन लोचनसजल पुलक पल्लवितदेह ॥ १ ॥

पुरजन परिवार सबसे निहोरि कर मेरी बिनती सुनाना कि मेरा हितकारी सोई होगा जिससे हमारे पिता सुखी रहैंगे १। २ और जब भरत आवें तब उनसे संदेशा कहना कि राजपद पाकर नीतिन छोंड़ना ३ प्रजाको तन, मन, बचनसे पालना और समस्त माताओं को समान जानिकर सेवाकरना ४ इस प्रकार माता, पिताके चरणों की सेवा करिके भायप भावको और निबाहना ५ और हेतात पिताको तो इसभांति सुखी राखना जिससे मेरा सोच कभी न करैं ६ तासमय लक्ष्मण ने कुछ कठोर बचन कहे रामचन्द्रने उनको बर्जिकर मेरे को हाथजोरि निहोरा औ बारबार अपनी शपथ दिवाइ कर कहा कि हे तात यह लक्ष्मण कीबालबुद्धि पितासे नकहना ७। ८ फिरि मेरे को प्रणाम करि कुछ सीता को समुझाने लगे सो सुनिकर सीता सनेह बिकल होगई गद्गदताकंठ हो गया नेत्र सजल होगये अंगसब पुलकित और शिथिलहोगये १

तेहिं अवसर रघुपति रुखपाई। केवट पारहिं नाव चलाई १
रघुकुल तिलकचले यहिभांती। देखेउं ठाढ़कुलिश करिछाती २
मैं आपन किमि कहहुं कलेशू। जियत फिरेउं लैराम संदेशू ३
असकहि सचिवबचन रहिगयऊ। हानिगलानि सोचसब भयऊ ४
सुनत सुमंत बचन नरनाहू। परेउ धरणि उरदारुण दाहू ५
तलफत बिषम मोह मनमापा। माजामनहुं मीनकहं ब्यापा ६
करिबिलाप सबरोवहिं रानी। महाबिपति किमि जाइबखानी ७

सुनिबिषाद दुखहूं दुख लागा। धीरजहूं कर धीरज भागा ८
दो० भयउकुलाहल अवधअति सुनिनृपराउर शोर।
बिपुलबिहंग बनपर परेउ मानहुं कुलिश कठोर ॥ २ ॥

ताही समय रामचन्द्र का हार्द जानि कर केवटने पार को नावचलादी १ इस प्रकार रामचंद्र लक्ष्मण सीता समेत बन को चले और मैं अपनी छाती को बज्र के समान कठोर करिके खड़ादेखाकिया २ मैं जो राम के संदेश को लेकर आपके पास जीताही फिरि आया तो जो क्लेश मेरेपरबीते उनको कौन मुंह से कहूं ३ ऐसे कहि कर सुमंतके बचन थकित होगये महा हानि की ग्लानि और शोक के बश होगये ४ राजा सुमंत के बचन सुनतेही पृथ्वीपर गिरिपरे और हृदय में दारुण दाह होगया ५ महाबिषम मोह के मारे ऐसे तलफते हैं जैसे मीन को नवीन बर्षा का मलब्यापि जाता है ६ बिलाप करि करि सब रानी भी रोती हैं ता समय की महा बिपत्ति कैसे कही जाती है ७ दीखदुखित दुख सों दुखदेखी भइ धीरता अधीर बिशेषी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इस प्रकार राजा के रनिवास का रुदन सुनिकर अयोध्या में कैसा बिषाद और कोलाहल हुआ मानों पक्षियों के बन पर महा कठोर बज्रपातही हुआहै ॥ २ ॥

प्राणकंठगत भयउ भुवालू। मणिबिहीन जिमि ब्याकुलब्यालू १
इंद्रियसकल बिकल भइ भारी। जिमिसरोज श्रेणी बिनुबारी २
कौशल्या नृपदीख मलाना। रबिकुल रबि अथवत जियजाना ३
उरधरि धीर राम महतारी। बोली बचन समय अनुहारी ४
नाथसमुझि मन करिय बिचारू। रामबियोग पयोधि अपारू ५
कर्णधार तुम अवधि जहाजू। चढ़ेउ सकल प्रियबणिक समाजू ६
धीरज धरिय तो पाइय पारू। नाहि त बूड़त सब परिवारू ७
जौ जियधरिय बिनय यहमोरी। रामलषण सियमिलहिं बहोरी ८
दो० प्रिया बचन मृदुसुनत नृप चितयउ आंखिउघारि।
तलफत मीन मलीन जनु सींचेउ शीतलबारि ॥ ३ ॥

अब तो राजा प्राण कंठगत होकर कैसेब्याकुल है जैसा मणिहीन सर्प होता है समस्त इन्द्री महाब्याकुल होरही हैं जैसी कमलों की पंक्ति जलबिना होती हैं १ । २ कौशल्याने जो राजाको म्लानमुखदेखा तो सूर्य्यबंशके सूर्य्यको अस्तजाना ३ तबतो हृदय में बड़ा धीरधरि कर राम की माता समय के अनुसार बचन बोली ४ हे नाथ आप समुझि कर मनमें विचारकरो कि राम का बियोग अपार समुद्र है ५ उस के पारजाने को समस्त परिवार प्रजाबणिक समाजचौदह बर्ष की अवधि के जहाज पर चढ़े हैं

उन सब के कर्णधार केवल आपही हो ६ आप धीरज धरोगे तो सबपार पावेंगे नहीं तो सब परिवार बूड़ाजाता है ७ जो आप मेरी इस बिनती को अंगीकार करोगे गे तो राममलक्ष्मण सीता सब को फेरि मिलेंगे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसे कौशल्या के कोमल बचनों को सुनिकर राजा ने आंखि उघारि कर कैसे देखा जैसे कोई तलफते मीन को शीतल जल से सींचता है ॥ ३ ॥

धरि धीरज उठिबैठ भुवालू । कहु सुमन्त कहं राम कृपालू १
कहां लषण कहंराम सनेही । कहं प्रियपुत्र बधू बैदेही २
बिलपत राउ बिकल बहुभांती । भइयुगसरिस सिरातिनराती ३
तापस अंध शाप सुधि आई । कौशल्यहि सबकथा सुनाई ४
भयउबिकल बरणतइतिहासा । रामरहित धिक्जीवन आसा ५
सोतनु राखि करब मैं काहा । जेहि नप्रेमप्रण मोर निबाहा ६
हा रघुनन्दन प्राण पिरीते । तुमबिनु जियत बहुतदिनबीते ७
हा जानकी लषण हारघुबर । हापितुहितचितचातक जलधर ८
दो० राम राम कहि राम कहि राम राम कहि राम ।
तनु परिहरि रघुपति बिरह राउ गयउ सुरधाम ॥ ४ ॥

बड़ी धीरज धरिकर राजा उठिबैठे और बोलेहेसुमंत कहो राम कहांहैं १ कहां लक्ष्मण हैं कहां प्यारे राम हैं कहां पुत्रबधू जानकी है २ ऐसे अनेक भांति के बिलाप राजा करते हैं राति युग के समान होगई है काटेही नहीं कटती है ३ इतने में अंधतापस श्रवणके पिताकेशापकी सुधिराजा कोआईसोसमस्त कथा कौशल्या को कहि सुनाई ४ उस इतिहास के कहतेही कहते राजा बिकल होगये और बोले कि राम बिना जीवने की आशा को धिक्कार है ५ ऐसे शरीर को राखिकर मैं क्याकरूंगा जिसने मेरा प्रेम प्रण नहीं निबाहा है ६ अबतो राजा प्राणांत समय में पुकारने लगे हा रघुनन्दन हा प्राणप्यारेराम तुम्हारे बिना मुझको जीवते हुये बहुत दिन बीतिगये ७ हा जानकी हा लक्ष्मण हा राम हा पिताकेहित और चित चातकके मेघ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसे बारम्बार राम हा राम हा राम कहिकर फिरि राम राम कहिकर पञ्चभौतिक शरीर को छोड़िकर राजा देवलोक को चलेगये ॥ ४

जियन मरण फल दशरथ पावा । अंडअनेक अमलयश छावा १
जियत रामबिधुबदन निहारा । रामबिरहमरि मरण सम्हारा २
शोक बिकल सब रोवहिं रानी । रूप शील बल तेज बखानी ३

करहिं बिलाप अनेक प्रकारा। परहिं भूमितल बारहिं बारा ४
बिलपहिं बिकल दासअरुदासी। घरघर रुदनकरहिं पुरबासी ५
अथयउ आजु भानुकुल भानू। धर्म अवधि गुण रूप निधानू ६
गारी सकल कैकयिहि देहीं। नयन बिहीन कीन्ह जग जेहीं ७
यहिबिधि बिलपत रैनिबिहानी। आयेसकल महामुनि ज्ञानी ८
दो० तब बशिष्ठमुनि समय सम कहि अनेक इतिहास।
शोक निवारेउ सबन कर निज बिज्ञान प्रकास॥ ५॥

जीवने और मरने दोनों का उत्तम फल तो राजा दशरथही ने पाया है जिन का अति निर्मल यश अनन्त अंडकटाहों में छाया है १ जीवते तो राम के मुख चंद्रमा को देखा और रामही के बियोग में मरिकर मरने को भी सफल किया २ अबतो बिलाप करिकरि सब रानी रोवती हैं राजा के रूप, शील, तेज, बल को बखानती हैं ३ अनेकप्रकार के बिलाप करती हैं और बार बार पृथ्वीपर गिरती हैं ४ महाब्याकुल दास और दासी बिलाप करते हैं और घर पुरबासी सब रोवते हैं और कहते हैं ५ कि आज सूर्य्यबंश का सूर्य्य अस्त होगया जो धर्मकी अवधि और गुण रूप का निधान रहे ६ घर घर सबलोग कैकेयी को गारी देते हैं जिसने एक जगको नेत्रहीन करिदिया है ७ इसप्रकार बिलाप करते सब रातिबीती प्रातहोतेही महाज्ञानी सब मुनीश्वर आये॥ ८॥ दोहा॥ तबतो बशिष्ठ मुनिने अनेक इतिहास कहिकर अपने बिज्ञान के प्रकाश से सबका शोक निवारण किये॥ ५॥

यहां तक अयोध्याकांड पूर्वार्द्ध हुआ॥

तेल नाव भरि नृप तनुराखा। दूत बुलाइ बहुरि अस भाखा १
धावहु बेगि भरत पहं जाहू। नृपसुधि कतहु कहेहु जनिकाहू २
इतना कहेहु भरत सन जाई। गुरु बुलाइ पठये दोउ भाई ३
सुनि मुनि आयसु धावनधाये। चले बेग बर बाजि लजाये ४
अनरथ अवध अरंभेउ जबते। कुसगुण होहिं भरथकहं तबते ५
देखहिंरयनि भयानकसपना। जागिकरहिं मन कोटिकलपना ६
बिप्रजिंवाय देहिं दिनदाना। शिवअभिषेक करहिं बिधिनाना ७
मागहिं हृदय महेश मनाई। कुशल मातुपितु परिजन भाई ८
दो० यहि बिधि सोचहिं भरत मन धावन पहुंचे जाइ।

गुरु अनुशासन श्रवण सुनि चले महेश मनाइ ॥ ६ ॥

तेलसेनाव भरिकर उसमें राजाका शरीररखवादिया और धावनों कोबुलाकर वशिष्ठ मुनिने यह कहा १ कि बेगिही बड़े धावेसे भरत के पास जाओ और राजाके मरने कीसुधिकहीं किसीसे न कहना २ भरतसे भी इतनाही जाकर कहनाकिआपको गुरूने बुलाया है ३ ऐसा मुनिका अनुशासन पाइ कर धावन कैसे बेगसे चले हैं कि बड़े २ घोड़ोंको लजाइ दिया ४ वहां जबसे अयोध्यामें अनर्थका प्रारंभहुआहै तभी से भरत को कुशकुन होते हैं ५ राति को महा भयङ्कर स्वप्नदेखते और जागिकर कोटि भांति की कल्पना किया करते हैं ६ ब्राह्मणों को भोजन करा कर भूरिदान देते हैं और अनेक भांतिसे शिवजी का पूजन करते हैं ७ और हृदय में महेशको मनाकर माता,पिता, पुर, परिवार, भाई सबकी कुशल मनाते हैं । ८ ॥ दोहा ॥ ऐसे सोच करतेही हैं कि धावन जापहुंचे गुरु देवका अनुशासन सुनतेही गणेश महेश को मनाकर चलिदिये ॥ ६ ॥

चले समीर बेगरथ हांके । लांघत शैल सरित बन बांके १
हृदय सोचबड़ कछुन बसाई । असआनहिं जिय जाउं उड़ाई २
एक निमेष बर्ष समजाई । यहि बिधि भरत अवध नियराई ३
कुसगुण होहिं नगर पैठारा । रटहिं कुभांति कुखेत करारा ४
खगशृगालबोलहिं प्रतिकूला । सुनिसुनि होहिं भरतउरशूला ५
श्रीहत सर सरिता बनबागा । नगर बिशेष भयानक लागा ६
खग मृग हयगज जाहिंन जोये । राम बियोग कुरोग बिगोये ७
नगर नारि नर निपट दुखारी । मनहु सबहिं सबसंपतिहारी ८

दो० पुरजन मिलहिं नकहहिं कछु गवहिं जुहारहिं जाहिं ।
भरत कुशल पूछि न सकहिं भय बिषाद मनमाहिं ॥ ७ ॥

ऐसे शीघ्र चलेकि पवनके बेगके समान घोड़े हांके बड़े बड़े बांके पर्वत सरिता बनोंको लांघते चलेआते हैं १ हृदयमें बड़ा सोच है कुछ बसाता नहींहै ऐसाजीमें लाते हैं कि अभी उड़ि जाऊं २ एक एक पलक बर्षके समान बीतते हैं इसप्रकार भरतने अयोध्या नगिचाई ३ नगर की सीमामें पैठते कुसगुणहोने लगे महा कुभांति कुखेतमें कराल जन्तु रटने लगे ४ खर शियार प्रतिकूल सब बोलते हैं सो सुनिकर भरतके हृदयमें शूलहोते हैं ५ अयोध्या के समस्त सरोवर, नदी, बन,बाग श्रीहत हो रहेहैं नगरको जो आदेखा तो महा भयानक लगा ६ खग,मृग,हाथी,घोड़े देखेही नहीं जातेहैं राम के बियोग कुरोग ने मृतकसे करि दियेहैं ७ नगरके नरनारी महा

दुखी हैं मानों सबके सब संपतिहारि बैठेहैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ पुरजन जो मिलतेहैं ते कुछ भी नहीं कहते हैं जुहारते हैं और चुपकेही चले जाते हैं भरत उनसे भय बिषाद के मारे कुशलभी नहीं पूंछि सकते हैं ॥ ७ ॥

हाट बाट नहिं जाइ निहारी । जनुपुरदश दिशि लागिदवारी १
आवत सुतसुनि कैकयनंदनि । हरषी रविकुल जलरुह चंदनि २
सजि आरती मुदित उठिधाई । द्वारहि भेंटि भवन लै आई ३
भरत दुखित परिवारनिहारा । मानहुं तुहिन बनजबन मारा ४
कैकेयी हरषित यहि भांती । मनहुं मुदित दव लाइ किराती ५
सुतहि ससोच देखि मन मारे । पूछति नैहर कुशल हमारे ६
सकल कुशल कहि भरत सुनाई । पूछीनिज कुल कुशलभलाई ७
कहुकहं तात कहां सब माता । कहंसियरामलषण प्रियभ्राता ८

दो० सुनि सुत बचन सनेह मय कपट नीर भरि नयन ।
भरत हृदय जनु शूल सम पापिनि बोली बयन ॥ ८

हाटशाला और राजमार्ग देखे नहीं जाते हैं मानों नगर में सब ओर से दवाग्नि लगी है १ कैकयी पुत्रको आया सुनि कर भानुकुल कमल की चांदनी बड़ी हर्षित हुई २ आरती सजि कर मुदित मन उठि दौरी द्वारही पर मिलकर भीतर ले आई ३ भरत ने परिवार तो सब ऐसा दुखित देखा जैसा तुषार का मारा कमलोंका बन होता है ४ अकेली कैकेयी ऐसी हर्षित है जैसी बन में आगि देकर किरातिनी प्रसन्न होती है ५ पुत्र को सोच से मन मारे देखि कर पूछने लगी कि हमारे मायके में तो कुशल हैं ६ भरत ने समस्त कुशल क्षेम सुनाइ कर अपने कुलकी कुशल भलाई पूछी ७ कहु तो हमारे पिता और सब माता सीता और रामलक्ष्मण दोनों भाई कहा हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसे स्नेह के भरे पुत्रके बचन सुनि कर कपट के जल से नेत्र भरिकर भरत के हृदयको शूलके समानपापिनी बचनबोली ॥ ८ ॥

तात बात मैं सकल सम्हारी । भइ मंथरा सहाय बिचारी १
कछुक काज बिधि बीच बिगारा । भूपतिसुरपति पुर पगुधारा २
सुनत भरत भयेबिकल बिषादा । जनुसहमेउकरिकेहरिनादा ३
तात तात हा तात पुकारी । परेउ भूमि तलब्याकुल भारी ४
चलत न देखन पायउं तोहीं । तात न रामहिं सौंपेहु मोहीं ५

बहुरि धीर धरि उठेउ सम्हारी । कहु पितु मरण हेतु महतारी ६
सुनि सुत बचन कहति कैकेई । मर्मपाछि जनु माहुर देई ७
आदिहिं ते सब आपनि करणी । कुटिलकठोर मुदितमनबरणी ८
दो० भरतहिं बिसरेउ पितु मरण सुनत राम बन गौन ।
हेतु आपनो जानि जिय थकित रहे गहि मौन ॥ ९ ॥

हे तात बात तो मैंने सब सम्हारि ली है केवल बिचारी मंथराही मेरी सहायक हुई है बीचमें कुछ कामतो बिधाता ने बिगारि दिया कि राजाने देवलोकको पयान किया १ ॥ २ पिता का मरण सुनतेही भरत बिषाद में ऐसे व्याकुल होगये जैसे सिंहके गर्जने को सुनि कर हाथी सहमि जाता है ३ हा पिता हा पिता हा तात पुकारि कर पृथ्वी पर महा व्याकुल गिरि परे ४ हा तात न तो मैं आप को चलती बार देखने पाया न आपने मेरे को राम के समर्पण किया ५ फिरि धीरज बांधि सम्हारि कर उठे और पूछने लगे हे माता पिताके मरने का कारण तो कहो ६ पुत्र के बचन सुनिकर कैकेयी ऐसे बचन बोली जैसे कोई घाउको पांछिकर बिष भरताहै ७ आदिही से अपनी समस्त दुष्ट करणी महा कठोर कुटिल ने प्रसन्न मन भरत को कहि सुनाई ॥ ८ ॥ दोहा ॥ भरत को रामचन्द्र का बन जाना सुनतेही पिता का मरना भूलि गया और बन जाने में कारण अपनेहीको जानि कर मौन होगये ॥ ९ ॥

बिकलबिलोकिसुतहिं समुझावति । मनहुंजरेपरलवणलगावति १
तातराउ नहिं सोचन योगू । बढ़े सुकृत तस कीन्हेउ भोगू २
जीवतसकलजन्म फल पाये । अन्त अमरपति सदन सिधाये ३
अस अनुमानि सोचपरिहरहू । सहित समाज राज पुर करहू ४
सुनि सहमेउ सुठि राजकुमारा । पाके क्षत जनु लागु अंगारा ५
धीरजधरिभरिलीन्हिउसासा । पापिनि सबहिं भांतिकुलनासा ६
जोपै कुरुचि रही असितोहीं । जन्मत कसनहिं मारेसि मोहीं ७
पेड़ काटि तें पल्लव सींचा । मीन जियन हित बारि उलीचा ८
दो० हंसबंश दशरथ जनक राम लषण से भाइ ।
जननी तू जननी भई बिधि ते काह बसाइ ॥ १० ॥

भरत को पिता के मरने के शोक में व्याकुल जानिकर कैकेयी कैसे समुझावतीहै जैसे कोई जरे अंग पर लवण लगावत है १ हे तात पिता का सोच मतिकरो पिता तुम्हारे सोच के योग्य नहीं रहें बड़े सुकृती रहे तैसेही भोग भोगे जीवते तो जन्म

के सब फल पाये और अंतमें देवलोक को सिधारे २।३ ऐसा बिचार कर सोच को त्याग करो और समस्त समाज समेत आनन्दित राज्य करो ४ ऐसे कैकयीके दुर्बचन सुनतेही राजकुमार भरत कैसे सहमि गये मानों पके फोड़े पर अंगार रख दिया ५ धीरज धरि करगहरी उसांस ली और बोले अरी पापनी तूने सब भांति से इस कुल का नाश किया ६ यदि तेरी मेरे पर ऐसीही कुरुचि रहे तो मुझको जन्मतेही क्यों न मारि गेरा ७ हे मंदबुद्धि पेड़ काटि कर तूने पल्लव को सींचा और मीन के जीवने के लिये जल को उलीचि दिया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ अति उत्तम सूर्य्यबंश में तो मेरा जन्म हुआ और धर्मधुरंधर दशरथ से मुझको पिता प्राप्त हुये अतिअनूपम राम लक्ष्मण से भाई मिले तहां हे जननी महाकलंकिनी तू मेरी माताहुई दैव से किसी का कुछ वश नहीं चलता है ॥ १० ॥

जबतें कुमति कुमत जियठयऊ। खंड खंड होइ हृदयनगयऊ १
बरमांगत मन भई न पीरा। जरि न जीह मुह परे न कीरा २
भूपप्रतीति तोरिकिमिकीन्ही। मरणकालबिधिमतिहरिलीन्ही ३
बिधिहुंननारिहृदयगतिजानी। सकल कपटअघअवगुणखानी ४
सरल सुशील धर्म रत राऊ। सोकिमि जानहिं तीय सुभाऊ ५
असको जीव अहै जगमाहीं। जे सियराम प्राणप्रिय नाहीं ६
भइ अति अहित राम ते तोही। को तू अहसि सत्यकहुमोही ७
जोहसि सोहसि मुह मसिलाई। आंखि ओट उठि बैठहुजाई ८

दो० राम बिरोधी हृदय तें प्रगट कीन्ह बिधिमोहिं।
मो समान को पातकी बादि कहौं कछु तोहिं ॥११॥

जो समय हे कुमति तूने यह कुमत जी में ठाना तो समय तेरा हृदय टूक टूक भी न हो गया १ बरमागती बेरा तेरे मन में कुछ पीर भी न हुई और यह जिह्वा भी न जरी मुहंमें कीरा भी न परे राजा ने तेरा बिश्वास कैसे किया मरते समय बिधाता ने उनकी बुद्धि को हरि लिया ३ सच्च है बिधाता ने भी तो नारियों के हृदय की गति को नहीं जाना कि समस्त कपट पाप और अवगुणों की खानिही होती हैं ४ राजा तो सरल शील और धर्मरत रहें ते स्त्रियों के सुभाव को क्या जानें ६ ऐसा कौन सा जीव संसार में है जिस को सीता राम प्राणों के समान प्यारे नहीं ७ तिन राम से तेरे को अति द्वेषता हो गई तो तू कौन है यह मेरे से सत्य हे ६ जो तू है सो हुआ कर अपने इस मुख में कारिख लगा कर मेरी आंखों की ८ ॥ दोहा॥ जो राम बिरोधी तेरे हृदय से बिधाता ने मुझको प्रगट

किया तो मेरेही समान पातकी दूसरा कौन है तेरे से वृथ क्या कहूं यह कहि कहि कर भरत ने कैकेयीका त्यागकर दिया ॥ कैकयी जौलोंजियति रही ॥ तौलों कबहुंन भरत भूलिहूं मुह भरि मातु कही ॥ ११ ॥

सुनि शत्रुहन मातु कुटिलाई । जरैं गात रिस कछुन बसाई १
तेहिं अवसर कुबरी तहं आई । बसन बिभूषण बिबिध बनाई २
लखि रिसभरेउलषणलघुभाई । जरतमहानल जिमिघृतपाई ३
हुमकि लाततकि कूबर मारा । परि मुहभरमहि करत पुकारा ४
कूबर टूटेउ फूट कपारू । दलित दशन मुख रुधिर प्रचारू ५
अहह दैव मैं काह नशावा । करत नीक फल अनइस पावा ६
सुनिरिपुहनलखिनखशिखखोटी । लगे घसीटन धरिधरिझोटी ७
भरत दयानिधि दीन्ह छोड़ाई । कौशल्या पहं गे दोउभाई ८
दो० मलिन बसन बिबरण बिकल कृश शरीर दुख भार ।
कनक कमल बरबेलि बन मानहुं हनी तुषार ॥ १२ ॥

शत्रुहन के अंग माताकी कुटिलई सुनिकर रिस के मारे जरेजाते हैं परंतु कुछ नहीं बसाता है १ उसी समय कूबरी मंथरा नवीनबस्त्र और भूषण पहरि करआई२ सोतो देखतेही लक्ष्मण के छोटे भाई शत्रुसूदन रिस में ऐसे भरि गये जरती हुई प्रचण्ड अग्नि जैसे घृतको पाइकर बढैहैं ३ हुमकि करलात सेतकि कर उसका कूबर ऐसा मारा कि पुकार करती हुई मुहके भर प्रथिवी पर गिरि परी ५ लात के मारे तौ उसका कूबर टूटि गया और मुह के भर गिरने से कपार फूटि गया दांत हलि गये मुहसे रुधिर बहने लगा ५ बोली हा दैव मैंने क्या बिगारा है कि जो भला करते बुराफल पाया६ ऐसे उसके बचन सुनि शत्रुघ्न उसको नखशिख खोटी जानि कर उसका झोटा पकड़ कर घसीटने लगे ७ भरत परमदयाल ने उसको यह कहि कर छुड़ादिया ॥ हन्यामप्यद्यमहापापां कैकेयींदुष्टचारिणीं यदिमांरामःसधर्मात्मा नासूयेन्माचघातकम् और कौशल्या के मंदिर को दोनों भाई चले गये ८ ॥ दोहा ॥ भरतने कौशल्या को कैसाजा देखा किमलीन तो बस्त्रहैं और बिबर्ण अतिकृशित है दुख से बिकल है मानों बनमें कनक बेलिको तुषारने मारा है ॥ १२ ॥

भरतहिं देखि मातु उठिधाईं । मूर्छित अवनि परी झहराईं १
देखत भरत बिकल भय भारी । परे चरण तन दशा बिसारी २
मातु तात कहं देहु दिखाई । कहं सिय राम लषण दोउभाई ३

केकयि कत जन्मी जग मांझा । जोजन्मी भइ काहेन बांझा ४
कुलकलंकजेहिं जन्मेउ मोही । अपयशभाजन प्रियजनद्रोही ५
कोत्रिभुवनमोहिं सरिसअभागी । गतिअसितोरिमातुजेहिलागी ६
पितुसुर पुर बन रघुकुल केतू । मैं केवल अनरथ कर हेतू ७
धिक् मोहिंभयउं बेणुबनआगी । दुसह दाह दुषदूषणभागी ८
दो० मातु भरत के बचन मृदु सुनि पुनि उठी सम्हारि ।
लिये उठाय लगाइ उर लोचन मोचति बारि ॥ १३ ॥

भरतको आवते देखतेही कौशल्या उठि दौड़ी और झहराइ कर मूर्छित प्रथिवी पर गिरपरी १ ऐसी दशा माताकी देखिकर भरत महाव्याकुल होगये और शरीरकी सम्हार छोड़िकर चरणों पर गिरपड़े और कहने लगे २ हेमाता पिता कहांहैं दिखादे औरसीता कहांहैं राम लक्ष्मण दोनों भाई कहांहैं ३ कैकेयी इस जगत में क्योंजन्मी और जो जन्मीतो बांझ क्योंनहुई ४ जिसने कुलको कलंक मो सारिखा पुत्र जन्मा अपयश का भाजन और परिवार का द्रोही तीनों भुवन में मेरे समान कौन मंदभागी है जिसके कारण हे माता तेरी ऐसीदशा हुई है ५।६ पिता देवलोक को गये और राम लक्ष्मण जानकी बनमें हैं इस समस्त अनर्थ का कारण मैंही अकेलाहूं ७ मैं इस वंशमें वंशाग्नि उत्पन्नहुवा और समस्त दुख दूषणों का भागीहुआ ऐसे मेरे जन्मको धिक्कार है ॥ ८ ॥ कौशल्या भरतके बचन सुनि कर फिरि सम्हारि कर उठी और भरत को उठाइ कर हृदय से लगालिया ॥ १३ ॥

सरल सुभाय मायहिय लाये । अतिहित मनहुंराम फिरिआये १
भेंटेउ बहुरि लषन लघु भाई । शोक सनेह न हृदय समाई २
देखि सुभाव कहत सब कोई । राम मातु अस काहेन होई ३
माता भरत गोद बैठारे । अश्रु पोंछि मृदु बचन उचारे ४
अजहुं बच्छबलि धीरज धरहू । कुसमय समुझि शोकपरिहरहू ५
जनिमानहु हियहानि गलानी । कालकर्म गति अघटित जानी ६
काहुहिं दोष देहु जनि ताता । भामोहिं सब बिधिबाम बिधाता ७
जोऐसेहु दुखमोहिं जियावा । अजहुं को जानकाहतेहिं भावा ८
दो० पितु आयसु भूषणबसन तात तजे रघुबीर ।
बिस्मय हर्ष न हृदय कछु पहिरे बल्कल चीर ॥ १४॥

सूधे सुभायसे माताने हृदयसे लगा लिये ऐसेहितसे मानों रामही फिरि आये १ फिरि लक्ष्मणके लघुभाई शत्रुहन को भेंटा उससमय का शोक और सनेह हृदय में नहीं समाताहै २ ऐसा सरल सुभाव कौशल्या को देखिकर सब कहतेहैं किराम की माता ऐसी क्यों न होवें ३ फिरितो कौशल्याने भरतकोगोद में बैठा लिया और अपने हाथोंसे उनके आंसू पोंछिकर बोली ४ हेवत्स अबभी तुम धीरज धरो और कुसमय जानिकर शोकको तजो ५ इसहानिकी ग्लानि जीमें मतमानों काल कर्मकी गति को सदा अघटितजानो ६ दोष हे तात तुम किसीको मत लगाओ मेरेको तोसब भांति से बिधाताही प्रतिकूलहै ७ जो बिधाता इतने दुखपर भीमेरे को जियावता है ॥ अब भी कौन जाने उस्को क्या भायहै ८ दोहा ॥ पिताकी आज्ञासे राज्यभूषण औरबस्त्रहे तात मेरे देखते रामनेसबतजिदिये और बिस्मय हर्ष रहित बल्कल बस्त्रपहरि लिये १४

मुख प्रसन्नमन हर्षन रोषू । सबकर सबबिधि करि परितोषू १
चले बिपिनसुनि सियसंगलागी । रही न रामचरण अनुरागी २
सुनतहि लषण चले उठिसाथा । रहेन यतन किये रघुनाथा ३
तब रघुपति सबही शिरनाई । चले संग सिय अरु लघु भाई ४
राम लषण सिय बनहि सिधाये । गईन संग न प्राण पठाये ५
यहसब भाइन आंखिन आगे । तहुं न तजा तनु जीव अभागे ६
मोहिं नलाज निजनेह निहारी । राम सरिस सुतमैं महतारी ७
जियन मरणभल भूपति जाना । मोर हृदय शत कुलिश समाना ८
दो० कौशल्याके बचन सुनि भरत सहित रनिवास ।
ब्याकुल बिलपति राजगृह मानहुं शोक निवास ॥ १५ ॥

मुखतो रामचन्द्रका प्रसन्न औरमनमें नहर्ष नकुछ रोष सबको सब भांतिसे परितोषकिया १ जबबनको चले तबसीताभी संगलगी बहुतेरा समुझाया रामके प्रेमबश न रहिसकी २ सुनतेही लक्ष्मणभी साथहो लिये रामने राखनेके यत्न भी किये तथापि नरहे ३ तबतो रामचन्द्र सबको शीश नवाइ सीता लक्ष्मण समेतचलि दिये ४ इस प्रकार हेतात राम लक्ष्मण सीता मेरे आगेसे बनको चलेगये नतोमैं साथगई न प्राणों को साथपठाया ५ यह सब अदर्शनीयचरित्र इन नेत्रोंके आगेहोहुआ तो भी अभागे जीवने इसअधम शरीरको न छोड़ा ६ मेरे को अपना सनेह देखिकर लाजभी तो नहीं आतीहैकि रामचन्द्र सातोपुत्र और मोसारीखी माता ७ जीवना और मरनायथोचित तो केवल राजही ने जाना मेरा हृदय तो बज्र से भी सौगुणा कठोर है ॥ ८ ॥

दोहा ॥ ऐसे करुणा भरे कौशल्या के बचनसुनिकर भरतसब रनिवास समेत ब्याकुल हो रोने लगे ॥ १५ ॥

बिलपहिं बिकल भरदोउ भाई । कौशल्या लिय हृदय लगाई १
भांति अनेक भरत समु झाये । कहिबिबेक मय बचन सुनाये २
भरतहु मातु सकल समुझाई । कहि पुराण श्रुति कथा सुनाई ३
छल बिहीन शुचि सरल सुबाणी । बोले भरत जोरि युग पाणी ४
जेअघ मात पिता गुरु मारें । गाइगोठ महिसुर पुर जरें ५
जेअघ तिय बालक बध कीन्हे । मीत महीपहि माहुर दीन्हे ६
जेपातक उपपातक अहहीं । कर्म बचन मन भवकबि कहहीं ७
ते पातक मोहिं होंय बिधाता । जो यह होय मोरमत माता ८
दो० जे परिहरि हरिहर चरण भजहिं भूतगण घोर ।
तिनकी गति मोहिंदेहु बिधि जोजननी मत मोर॥ १६ ॥

माहाब्याकुल भरत दोनों भाई बिलाप करते हैं ऐसा देखिकर कौशल्याने हृदय से लगालिया १ अनेक भांति के बिबेकमय बचन कहिकर भरत को समुझाया २ भरत ने भी बेद पुराणों की सुन्दर कथा कहिकहि कर सबमाताओं को समुझाया ३ फिरि तो भरत दोनोंहाथ जोरिकर छलरहित महापवित्र अति सरल मधुर वाणी कौशल्या से बोले ४ सुनु हे माताजो अतिपातक माता पिता गुरुके मारनेसेहोतेहैं और गायोंकी रहठानि ब्रह्मपुरीके जारनेसे होतेहैं ५ जो अति पातक स्त्री बालकोंके बध किये होते हैं और अपने मित्र और राजा को बिषदिये से होतेहैं ६ जो पातक औ उपपातक मन बचन कर्म जनित महात्मा कहते हैं ७ ते सबके सब अकेले मेरेहीको होवें जो यह मत मेराहोवे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जोकोई जगज्जन्मादि कारण हरि और उनकी भक्तिके दाता श्री शिव इनदोनों के चरणों को छोड़िकर महाघोर भूत गणोंका सेवन करते हैं उनकी दुर्गति बिधाता मेरेको देवे हेमाता जो यह मतमेरा होवे ॥ १६ ॥

बेंचहिं बेद धर्म दुहिलेहीं । पिशुन पराय पाप कहिदेहीं १
कपटी कुटिल कलह प्रियक्रोधी । बेद बिदूषक बिश्व बिरोधी २
लोभी लंपट लोल लबारा । जो ताकहिं परधन परदारा ३
पावहुं मैं तिनकी गति घोरा । जे जननी यह संमत मोरा ४
जेनहिं साधु संग अनुरागे । पर मारथ पथ बिमुख अभागे ५

जे नभजहिं हरि नरतनु पाई । जिनहिं न हरिहर सुयश सुहाई ६
तजि श्रुतिपंथ बाम पथ चलहीं । बंचक बिरचि बेष जग छलहीं ७
तिनकी गति मोहिं शंकर देऊ । जननी जो जानहुं यह भेऊ ८
दो० मातु भरत के बचन सुनि सांचे सरल सुभाय ।
कहति राम प्रिय तात तुम सदा बचन मन काय ॥ १७ ॥

धनके पलटे जो वेदोंको ऊंच नीच अनधिकारियों को पढ़ाते सुनाते हैं और धर्म को अपनेही मुख भखतेहैं और पराये पापोंको कहिकर आप पापभागी होतेहैं १ जो कपटीहैं कुटिलहैं कलही हैं क्रोधीहैं वेदों के निन्दकहैं बिश्वबिरोधी भगवद्विरोधी हैं लोभीहैं कामीहैं चंचलहैं मिथ्यावादीहैंपराये धन और दाराको ताकतेहैं इनसबकी जो महा घोरगतिहोतीहैसो मेरी बिधाताकरै हेमाता जो यह मत मेराहोवै २।३।४ जिनका प्रेम साधु संगति में नहींहै और परमार्थ पन्थ अर्थात् श्रुति संमत हरि भक्तिपथ से जो अभागे बिमुख हैं जो मनुष्य शरीर पाइकर हरिका सेवन नहीं करते हैं जिनको हरि और हरके सुन्दर सुयश नहीं सुहाते हैं ५। ६ श्रुति स्मृति पुराणोक्त मार्गको छोड़िकर जो पाशुपति बाम मार्ग पर चलते हैं और बंचक शैबी बैष्णबी बेष बनाकर जगको ठगाकरतेहैं श्लोक अंत:शाक्ताबहिश्शैवासभामध्येचबैष्णवा: नानारूपधरा:कौलाबिचरंतिमहीतले॥ उनकी घोरगति मेरेको शिवशंकर देवें हे माता जो मैं इसभेदको जानताभी होऊं ७ ॥ ८ ॥ ऐसे सरल सुभाव सांचे भरतके बचन सुनिकर मातबोली हेतात तुमतो तन मन बचनसे सदा रामके प्यारेहो १० ॥

राम प्राण ते प्राण तुम्हारे । तुम रघुपतिहि प्राण ते प्यारे १
बिधु बिष चुवै श्रवैहिम आगी । होइ बारिचर बारि बिरागी २
भये ज्ञान बरु मिटै न मोहू । तुम रामहि प्रतिकूल न होहू ३
मत तुम्हार यह जे जड़कहहीं । तेसपनेहु सुखसुयश नलहहीं ४
अस कहि मातुभरतसमुझाये । थनपय श्रवहिं नयनजलछाये ५
करत बिलाप बिपुल यहि भांती । बैठेहिं बीति गई सबराती ६
बामदेव बशिष्ठ मुनि आये । सचिव महाजन सकल बुलाये ७
मुनि बहु भांति भरत उपदेशे । कहि परमारथ बचन सुदेशे ८
दो० तात हृदय धीरज धरहु करहु जो अवसर आज ।
उठे भरत गुरु बचन सुनि करन कहे सब काज ॥ १८ ॥

राम तो तुम्हारे प्राणोंके भी प्राण हैं और तुम रामचंद्रको भी प्राणोंसे प्यारे हो १ चंद्रमा भलेही बिष बर्षावे और तुषार से अग्नि भलेही स्रवै जलचर जल से भलेही बिरागी हो जावैं ज्ञान के हो जाने पर भी मोह भलेही न मिटै परंतु तुम राम से प्रतिकूलकदापि नहीं होने के २ । ३ जो जड़ यह मत तुम्हारा कहैंगे ते सपनेमेंभी सुख और सुगति न पावैंगे ४ ऐसा कहि कर माताने भरत को समुझाया और पुत्र सनेह से स्तन स्रवने लगे नेत्रों में जल छागया ५ इस प्रकार बिलापही करते करते राति बीति गई ६ प्रात होतेही बामदेव और बशिष्ठ मुनि तहां आये और मंत्री महाजन सब को बुलाया ७ बशिष्ठ मुनि ने भरत को अनेक भांति समुझाया और परमार्थ के सुन्दर सुहाये बचन कहे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ कहा कि हे तात अब तुम धीरज धरो और जो कार्य्य आज करने का है सो करो यह सुनि कर भरत उठे और सब काम करने को कहे ॥ १८ ॥

नृपतन बेद बिहित अन्हवावा । परम बिचित्र बिमान बनावा १
गहि पद भरत मातुसबराखी । रहीं राम दरशन अभिलाखी २
चंदन अगर भार बहु आये । अमित अनेक सुगन्ध बसाये ३
सरयु तीर रचि चिता बनाई । जनु सुरपुर सोपान सुहाई ४
यहिबिधिदाहक्रियासबकीन्ही।बिधिवतन्हाइतिलांजुलिदीन्ही ५
शोधि स्मृति सब बेद पुराणा । कीन्ह भरतदशगात्र बिधाना ६
जहंजसमुनिबर आयसुदीन्हा । तहंतससहस भांतिसबकीन्हा ७
भये बिशुद्ध देइ सब दाना । धेनु बाजि गज बाहन नाना ८
दो० सिंहासन भूषण बसन अन्न धरणि धन धाम ।
देइभरत लहि भूमिसुर भे परि पूरण काम ॥ १९ ॥

राजा के तन को बेद बिधि सेस्नान करवाया और अति बिचित्र बिमान बनवाया १ पांय परि परि कर भरत ने सब माता सहगामिनी होने से राखी ते सब राम दरशनकी अभिलाषा रही २ चंदन और अगर इत्यादि अनेक सुगन्धों के बहुत भारआये ३ सरयू के तट पर चिता रचि कर बनाई मानों देवलोक की सोपान सुन्दर सुहोईहै ४ इस प्रकार सब दाह क्रियाकी और बिधिवत् स्नान करिके तिलांजलिदी ५ तिस पीछे समस्त धर्मशास्त्र औ बेद पुराण शोधि कर भरत ने राजा का दशगात्र बिधान किया ६ फिरि जहां जैसा बशिष्ठ ने आयसु दिया तहां तैसा सहस्र भांति से क्रिया ७ समस्त दान देकर बिशुद्ध हुये धेनु, हाथी, घोड़े और नाना प्रकार के सब

बाहन ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सिंहासन, आभूषण, बस्त्र, अन्न, धरणी और धाम देकर तो
भरत और लेकर द्विजदेव पूर्ण काम हो गये ॥ १६ ॥

पितुहितभरतकीन्हजसकरणी । सोमुखलाखजाइनहिंबरणी १
सुदिन शोधिमुनिबरतहंआये । सचिवमहाजन सकलबोलाये २
बैठेराज सभा सब जाई । पठये बोलि भरत दोउ भाई ३
भरत बशिष्ठ निकट बैठारे । नीति धर्म मय बचन उचारे ४
प्रथमकथा मुनिबरसबबरणी । केकयिकुटिलकीन्हिजसकरणी ५
भूपधर्म ब्रत सत्य सराहा । जेहि तन परिहरि प्रेम निबाहा ६
कहत राम गुण शील सुभाऊ । सजल नयन पुलके मुनिराऊ ७
बहुरिलषणसियप्रीतिबखानी । शोक सनेह मग्न मुनिज्ञानी ८
दो० सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनि नाथ ।
हानि लाभजीवन मरण यश अपयश बिधिहाथ ॥ २० ॥

पिता के कार्य्य के निमित्त भरतने जैसी करणी करी सोतो लाखमुख सेभीनहीं
कही जाती है १ फिरितौ शुभ दिन शोधि कर बशिष्ठ मुनि राजसभा में आये और
मंत्री महाजन सब बुलाये २ जब सबलोग राज सभा में जाबैठे तबतौ बशिष्ठ ने
भरत शत्रुहन दोनों भाइयों को बुलाइ भेजा ३ भरत को बशिष्ठ ने अपने निकट
बैठारि लिया और राजनीति धर्मके वचन बोले४ तहां प्रथमतौ जो करणी कुटिल
कैकेयी ने करी रहै सो कथा सब कही ५ फिरि राजा दशरथ के धर्म ब्रत सत्य
को सराहा जिसने शरीर त्याग करिके प्रेमको निबाहा ६ तापीछे रामचन्द्र के गुण
शील सुभाव को जब कहा तबतौ बशिष्ठ मुनि सजल नेत्र और पुलकित अंग होग-
ये ७ फिर जब लक्ष्मण और सीता की प्रीति कही तबतौ बशिष्ठ ज्ञान बैराग्य समेत
शोक और सनेह में बूड़ि गये ८ ॥ दोहा ॥ यहसब कथा कहिकर फिरि बोले सुनो
हे भरत भावी बड़ी प्रबल है किसी के मेटनेसे नहीं मिटती है हानि और लाभ
जीवना, मरना, यश और अपयश सब बिधाता के आधीन है ॥ २० ॥

असबिचारि केहि दीजिय दोषू । वृथा काहि पर कीजिय रोषू १
तात बिचार करहु मनमांहीं । शोच योग दशरथ नृप नाहीं २
शोचिय बिप्रजोवेदबिहीना । तजि निजधर्म विषय लवलीना ३
शोचिय नृपतिजोनीतिनजाना । जेहिन प्रजाप्रियप्राणसमाना ४

शोचिय बैश्य कृपण धनवानू । जोन अतिथि शिव भक्त सुजानू ५
शोचिय शूद्र बिप्र अपमानी । मुखर मान प्रिय ज्ञान गुमानी ६
शोचियपुनि पतिबंचकनारी । कुटिल कलह प्रिय इच्छाचारी ७
शोचिय बटु निज ब्रतपरिहरई । जोनहिंगुरु आयसु अनुसरई ८
दो० शोचिय गृहीजो मोहबश करै कामपथ त्याग ।
शोचिय यती प्रपंच रत बिगत बिबेक बिराग ॥ २१ ॥

ऐसा बिचारि कर किसको दोष दीजिये और बृथा किसपर रोष कीजिये १ और हे तात यह मनमें बिचार करि देखो कि राजा दशरथ शोचकरनेके योग्यनहींहैं २ ब्राह्मण तो जो वेद बिहीन होताहै सोशोच के योग्य होताहै जो निज ब्राह्मण धर्म छोड़ि कर बिषया शक्त रहताहै ३ सो क्षत्री शोचनीय होता है जो राजनीति को नहीं जानताहै और जिसको प्रजा प्राणसमान प्यारी नहीं ४ बैश्यसो शोच योग्य होताहै जो धनबान कृपण होताहै और अतिथ शिव भक्त नहीं होताहै ५ जो शूद्र बिप्र अपमानी और बाचाल बड़ा मानी और ज्ञान गुमानी होता है सो सर्बथा शोचनीयही होताहै ६ जो नारी पतिबंचक और कुटिलकलहकारिणी इच्छाचारिणी है सोशोचनीयही होतीहै ७ सो ब्रह्मचारी शोचिये जो अपबृत्त को त्यागे और आचार्य्य की आज्ञाको न अनुसरै ८ ॥दोहा॥ जो मोहके बश कर्म मार्ग को त्यागे सो गृहस्थ शोच्य और जो यती संसार में निरत ज्ञान बैराग रहित है सो शोचनीय है २१ ॥

बैषानस सोइ शोचन योगू । तप बिहाइ जेहिभावहि भोगू १
शोचिय पिशुन अकारण क्रोधी । जननि जनकगुरुबंधु बिरोधी२
शोचियलोभ निरतअतिकामी । सुरश्रुतिनिंदक परधनस्वामी ३
सब बिधिशोचिय परअपकारी । निजतन पोषक निर्दय भारी ४
शोच नीय सबही बिधि सोई । जोन छांडिछल हरिजन होई ५
शोचनीय नहिं कौशल राऊ । भुवन चारि दश प्रगट प्रभाऊ ६
भयउ न अहै नहोनेहु हारा । भूप भरत जस पिता तुम्हारा ७
बिधिहरिहरसुरपतिदिशिनाथा । बरणहिंसबदशरथगुणगाथा ८
दो० कहहु तातकेहि भांति कोउ करै बड़ाई तासु ।
राम लषणतुम शत्रुहन सरिस सुबन शुचिजासु ॥ २२ ॥

सो वाणप्रस्थशोचने के योग्य होता है जिस को तपछोड़ि कर भोग भावता है १

शोच्यते हेभरत चुगुल क्रोधी माता पिता गुरु भाइयों का विरोधी होता है २ लोभी कामी देवनिन्दक वेद निन्दक को शोचिये ३ पर अप कारी को सब भांति शोचना चाहिये जो अपनेही तनका पोषक और निर्दई होता है ४ और शोचनीय तो हेभरत सबही भांति से सोई होता है जो तनमन बचनसे छलछाड़ि कर भगवद्भक्त नहीं होताहै ५ महाराज दशरथ हेभरत शोचनीय नहींहैं जिनका सुन्दर यश चौदह भुवनोंमें बिख्यातहै ६ नतो कोई ऐसा हुआ नकोई है नकोई ऐसा वड़भागी राजा होगा जैसा बड़भागी राजाहेभरत तुम्हारा पिता हुआ ७ जो ब्रह्मा शिव बिष्णु के साथ गणनामें है सोभी तीनोंलोक पालों समेत सब उनके गुण गावते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ कहो हेतात कौनभांतिसे कोई उसराजा की बड़ाईकरि सके जिसके रामलक्ष्मण तुमऔर शत्रुहनसे पवित्र पुत्रहैं ॥ २२ ॥

सब प्रकार भूपति बड़भागी । बादि बिषाद करहु तेहिं लागी १
अससुनि समुझिशोच परिहरहू । शिरधरि राउरजायसु करहू २
राउराज पदतुमकहं दीन्हा । पिता बचन फुर चाहिय कीन्हा ३
तजेराम जेहि बचनन लागी । तनु परिहरेउ राम बिरहागी ४
नृपहिबचनप्रियनहिंप्रिय प्राणा । करहुतातपितुबचनप्रमाणा ५
करहु शीस धरि भूप रजाई । है तुमकहं सब भांति भलाई ६
परशुराम पितु आज्ञा राखी । मारी मातु लोक सब साखी ७
तनयययातिहि यौवन दयऊ । पितुआज्ञा अघअयशन भयऊ ८
दो० अनुचित उचित बिचार तजि जोपालहिं पितु बयन ।
तेभाजन सुखसुयशके बसहिंअमरपति अयन ॥ २३ ॥

सबप्रकार से राजातो बड़भागी रहे तिनके अर्थशोच करना बादिहै १ ऐसा सुनि समुझिकर शोचको त्यागो और राजकी आज्ञा को माथे मानिकर करो २ राजानेराज पद तुमको दियाहै पिताके बचन तुमको प्रमाण करना चाहिये ३ देखो राजाने राम से प्यारे पुत्रको बचनोंकेपीछे त्यागदिया जिनरामकी बिरहाग्निसे शरीरकोभी त्यागि दिया ४ राजाको बचन प्यारे हुये प्राणप्यारे नहुये तिन पिताके बचनों को हे तात प्रमाण करो ५ तातें माथे मानिकर हेतात राजाकी आज्ञाको करो इसीमें तुम्हरी सब भांति भलाई है ६ देखो परशुरामने पिताकी आज्ञा यहांतक पाली कि अपनी माता रेणुका कोमारि डारा ७ राजा पुरुषत्थीने अपने पितायय।ति कोअपना यौवन दिया पताकी आज्ञासे उनको कुछपापन हुआ नअपयश हुआ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तातें जोपुत्र

अनुचित उचितका बिचार छोड़िकर पिताकी आज्ञाको पालते हैं तेसुख सुयशके भाजन होते हैं और देव लोकमें निवास करते हैं ॥ २३ ॥

अवशि नरेश बचन फुरकरहू । पालहु प्रजा शोक परिहरहू १
सुरपुर नृपपैहैं परितोषू । तुम कहं सुयश सुकृत नहिं दोषू २
वेदबिहित संमत सबहीका । जिहिं पितु देइ सो पावहि टीका ३
करहु राज परिहरहु गलानी । मानहु मोरबचन हित जानी ४
सुनि सुख लहबराम बैदेही । अनुचित कहबनपंडित केही ५
कौशल्यादि सकल महतारी । तेउ प्रजासुख होहिं सुखारी ६
प्रेम तुम्हार रामकर जानहिं । सो सब बिधितुम सनभलमानहिं ७
सौंपेहु राज राम के आये । सेवा करेहु सनेह सुहाये ८
दो० कीजिय गुरुआयसुअवशि कहहिं सचिव करजोरि ।
रघुपतिआये उचित जस तसकरबबहोरि ॥ २४॥

तातें हे भरत तुम राजा के बचनों को अवश्य सत्यकरो प्रजा को पालोशोक को त्याग करो १ देवलोक मेंतो राजा संतोष पावेंगे और तुमको सुयश सुकृत का लाभ होगा दोष नहीं होगा २ क्योंकि यह बात वेदबिहित और सर्व संमत है कि जिस को पिता देता है सोइ पुत्रराज्याहिषेक पाता है ३ तातें हे भरत तुम यह राज्य करो कुछ ग्लानि मतिकरो मेरे बचनों को हित जानिकर मानो ४ तुम को राज्य करते सुनि कर रामचन्द्र सीता दोनों सुख मानेगे और कोई बिद्वान अनुचित नहीं कहैगा ५ कौशल्यादिक जो माता हैं तेभी प्रजा के सुख से सुखी होवेंगी ६ तुम्हारे और राम के परस्पर प्रेम को सब जानती हैं तातें सब माता सब भांति से तुम्हारा भला मानेगी ७ और जब अवधि बीते रामअयोध्या में आवें तबराज्य उन को सौंपि देना और सनेह समेत उनकी यथा पूर्बक सेवाकरना ॥ ८ ॥ दोहा ॥ यह सुनिकर सब मंत्री भी हाथ जोरिकर भरत से कहने लगे कि हे महाराज गुरु का कहना यथा नीति और अति उचित है अवश्य उसको कीजिये और राम के आये जैसा उचित होवे तैसा करना ॥ २४ ॥

कौशल्या धरिधीरज कहही । पूतपिता गुरु आयसु अहही १
सो आदरिय करिय हितमानी । तजिय बिषाद कालगति जानी २
बनरघुपति सुरपुर नर नाहू । तुम यहि भांति तात कदराहू ३
परिजन प्रजासचिव सबअंबा । तुमहीं सुत सब कहं अवलंबा ४

अनुचित उचितका बिचार छोड़िकर पिताकी आज्ञाको पालते हैं तेसुख सुयशके भाजन होते हैं और देव लोकमें निवास करते हैं ॥ २३ ॥

अवशि नरेश बचन फुरकरहू । पालहु प्रजा शोक परिहरहू १
सुरपुर नृपपैहैं परितोषू । तुम कहं सुयश सुकृत नहिं दोषू २
वेदबिहित संमत सबहीका । जिहिं पितु देइ सो पावहि टीका ३
करहु राज परिहरहु गलानी । मानहु मोरबचन हित जानी ४
सुनि सुख लहबराम बैदेही । अनुचित कहबनपंडित केही ५
कौशल्यादि सकल महतारी । तेउ प्रजासुख होहिं सुखारी ६
प्रेम तुम्हार रामकर जानहिं । सो सब बिधितुम सनभलमानहिं ७
सौंपेहु राज राम के आये । सेवा करेहु सनेह सुहाये ८
दो० कीजिय गुरुआयसुअवशि कहहिं सचिव करजोरि ।
रघुपतिआये उचित जस तसकरबबहोरि ॥ २४॥

तातें हे भरत तुम राजा के बचनों को अवश्य सत्यकरो प्रजा को पालोशोक को त्याग करो १ देवलोक मेंतो राजा संतोष पावेंगे और तुमको सुयश सुकृत का लाभ होगा दोष नहीं होगा २ क्योंकि यह बात वेदबिहित और सर्व संमत है कि जिस को पिता देता है सोइ पुत्रराज्याहि षेक पाता है ३ तातें हे भरत तुम यह राज्य करो कुछ ग्लानि मतिकरो मेरे बचनों को हित जानिकर मानो ४ तुम को राज्य करते सुनि कर रामचन्द्र सीता दोनो सुख मानेगे और कोई बिद्वान अनुचित नहीं कहेगा ५ कौशल्यादिक जो माता हैं तेभी प्रजा के सुख से सुखी होवेंगी ६ तुम्हारे और राम के परस्पर प्रेम को सब जानती हैं तातें सब माता सब भांति से तुम्हारा भला मानेगी ७ और जब अवधि बीते रामअयोध्या में आवें तबराज्य उन को सौंपि देना और सनेह समेत उनकी यथा पूर्बक सेवाकरना ॥ ८ ॥ दोहा ॥ यह सुनिकर सब मंत्री भी हाथ जोरिकर भरत से कहने लगे कि हे महाराज गुरु का कहना यथा नीति और अति उचित है अवश्य उसको कीजिये और राम के आये जैसा उचित होवे तैसा करना ॥ २४ ॥

कौशल्या धरिधीरज कहही । पूत पिता गुरु आयसु अहही १
सो आदरिय करिय हितमानी । तजिय बिषाद कालगति जानी २
बनरघुपति सुरपुर नर नाहू । तुम यहि भांति तात कदराहू ३
परिजन प्रजासचिव सबअंबा । तुमहीं सुत सब कहं अवलंबा ४

लखिबिधि बामकाल कठिनाई । धीरज धरहु मातु बलिजाई ५
शिरधरि गुरुआयसु अनुसरहू । प्रजापालि परि जनदुखहरहू ६
गुरु केबचनसचिवअभिनन्दन । सुनतभरत हियहित जनुचंदन ७
सुनी बहोरि मातु मृदुबानी । शीलसनेह सरल रससानी ८
छं० सानीसरल रस मातुबाणी सुनिभरत ब्याकुल भये ।
लोचनसरोरुहश्रवतसींचतबिरहउरअंकुरनये ॥
सो दशादेखतसमयतेहिबिसरीसबहिसुधिदेहकी ।
तुलसीसराहतसकलसादरसींवसहजसनेहकी ॥
सो० भरत कमलकरजोरि धर्मधुरंधर धीरधरि ।
बचन अमिय जनुबोरि देतउचित उत्तर सबहिं ॥ २५ ॥

१४०

पीछे से कौशल्या बड़ा धीरज धरिकर बोली हे पूत जो पिता और गुरु देवकी आज्ञा है उस को हित मानि कर आदरिये और माथे मानिकर कीजिये और काल की बिपरीत गति को जानिकर बिषाद को त्यागिये १ । २ बिचारो कि बनमें तो रामलक्ष्मण हैं और देवलोक में राजा हैं और तुम इस भांति सकाते हो ३ समस्त प्रजा परिवार और हम सब माता इन को तुमहीं अकेले अवलम्ब हो ४ तातें बिधाता की बामगति और काल की बिपरीतता को देखिकर हे तात धीरज धरो ५ माथे मानिकर पिता गुरु की आज्ञा को मानो और प्रजा को पालिकर परिवारके दुख को हरो ६ ऐसा गुरु का तो अनुशासन और मंत्रियों का उस को सराहना सुन ने में तो भरत के हृदय को शीतल कारी मानों चन्दनही है ७ सो भरत ने सुना और पीछे से कौशल्या की कोमल बाणी सुनी ॥ ८ ॥ छन्द ॥ शील सनेह और सरल रस की सनी कौशल्या की बाणी सुनतेही भरत ब्याकुल होगये नेत्र जलसे श्रवते हैं मानों बिरह के अंकुरों को सींचते हैं यह दशाभरत की देखिकर सब को देहदशा भूलिगई और सहज सनेह की सींवां को सराहने लगे ॥ सोरठा ॥ भरत धर्मधुरंधर दोनों हाथ जोरिकर सब को उचित उत्तर देनेलगे ॥ ॥ २५ ॥ यह सातवीं चौपाइयों की पचीसी अयोध्याकांड की हुई ॥ ७ ॥

केशवायनमः ॥

मोहिं उपदेश दीन्ह गुरुनीका । प्रजा सचिव संमत सबहीका १
मातु उचित पुनिआयसु दीन्हा । अवशि शीशधरि चाहियकीन्हा २
गुरुपितुमातुस्वामि हितबानी । सुनिमनमुदितकरियभलिजानी ३

उचितकि अनुचितकिये बिचारू । धर्मजाइ शिरपातक भारू ४
तुम तौ देहुसरल शिख सोई । जो आचरत मोर हित होई ५
यद्यपि यह जानत हौं नीके । तदपि होत परितोष नजीके ६
अबतुम मोरिबिनय सुनिलेहू । मोहिं अनुहरत सिखावन देहू ७
उत्तरदेउं क्षमब अपराधू । दुखित दोष गुण गणहिं न साधू ८
दो० पितुसुरपुर सियरामबन करन कहहुमोहिं राज ।
यहिते जानेहु मोरहित कै आपन बड़काज ॥ १ ॥

मेरे को उपदेशतो गुरुदेवने अतिही सुंदर दियाहै जो समस्त प्रजा और सबमंत्रियोंके भीसंमतहै १ और माता कौशल्यानेभी अतिउचितही आयसु दियाहै सो अवश्य मेरे को माथे मानि कर करनाही चाहिये २ क्योंकि गुरु, देव, माता, पिता, और स्वामीकी आज्ञासुनि कर प्रसन्न मन करनाही चाहिये ३ उचित क विचार करने से तो शिष्य पुत्र और सेवक का धर्म नाश होजाता है और पापों का भार उसके शिर पर बढ़ता है ४ तिसपर तुम सब तो मेरे को ऐसी सरल सीखदेते हो जिसके करनेमें मेरा हितही होता है ५ यद्यपि इस को मैं भली भांति जानता हूं तथापि मेरे मन को संतोष नहीं होता है ६ तातें प्रथम तुम सब मेरी बिनती सुनो तब आप सब मेरे योग्य जो आज्ञा करोगे सो ही मैं करूंगा ६ मैं तुम सब को उत्तर देता हूं इस मेरे अपराध को क्षमाकरना क्योंकि दुखित के गुण दोषको साधुजन नहीं गणते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जिसमेरे निमित्त पिता तो देवलोक को गये और राम, लक्ष्मण, सीता बन को गये उस को आप जो राज्य करना कहते हो तो इस राज्य से आपने कुछ मेरा हित बिचारा है अथवा कुछ अपना विशेष कार्य्य शोचा है ॥ १ ॥

हित हमार सियपति सेवकाई । सो हरिलीन्हि मातु कुटिलाई १
मैं अनुमानि दीखमन माहीं । आनउपाय मोरहित नाहीं २
शोक समाज राजकेहि लेखे । लषण रामसिय पद बिनु देखे ३
बादिबसन बिनु भूषण भारू । बादिबिरति बिनु ब्रह्मबिचारू ४
सहज शरीर बादि बहुभोगा । बिनु हरिभक्ति बादि जपयोगा ५
बादिजीव बिनु देहसुहाई । बादि मोर सब बिनु रघुराई ६
जाउं राम पहं आयसु देहू । एकहि आंक मोर हित येहू ७
मोहिं नृप करि आपन भलचाहहू । सो सनेहजड़ताबश कहहू ८

दो० कैकेयी सुतकुटिलमति रामबिमुख गतलाज।
तुमचाहहु सुखमोहबश मोहिं सेअधमके राज ॥ २ ॥

हमारा हित तो केवल सीतापति राम की सेवकाई रहै सो तो कैकेयीकी कुटिलताईने हरिलीन्ही १ मनहीमन में बिचारकरि देखा और उपायों में मेरा कुछ भी हित नहीं है २ जब बड़े बड़े साधनोंही में मेरा हित नहीं है बिना लक्ष्मण राम सीता के चरण देखे तो यह शोकसमाज राज्य बिचारा कौन लेखे में है ३ सब साधन राम प्रेमही के साध्यफल हैं नहीं तो सब बादि हैं जैसे बस्त्र बिना सब भूषण केवल भारही होते हैं और बैरागबिना ब्रह्म बिचार बादिहै ४ जैसे सरोगशरीर में भोग बादिहैं और भगवद्भक्ति बिना जप,योगादि सबबादिहै ५ जैसे जीव बिना सुन्दर देह भी बादिहै ऐसेही एक रामबिना मेरा सब बादिहै ६ तातें मेरे को राम के पास जाने की आज्ञाकरो इसी में मेरा हित है ७ और जो तुम मेरे को राजा करके अपन भला चाहते हो सो सब मेरे सनेह की जड़ता के बश कहतेहो ॥ ८॥ कैकेयी का तो मैं पुत्र कुटिल मेरी बुद्धि रामसे बिमुख निलर्ज्ज ऐसा अधममैं तिसके राज्यमें आप सब मोह के बश सुखचाहतेहो ॥ २ ॥

कहौं सत्य सुनि सब पतियाहू। चाहिय धर्म शील नरनाहू १
मोहिं राज हठि देइहौ जबहीं। रसा रसातल जाइहि तबहीं २
मोहिं समान को पापनिवासी। जेहिलगि सीयराम बनबासी ३
राउ राम कह कानन दीन्हा। बिछुरत गमन अमरपुर कीन्हा ४
मैं शठ सब अनरथ कर हेतू। बैठ बात सब सुनौं सचेतू ५
बिनु रघुबीर बिलोकि अवासू। रहे प्राण सहि जग उपहासू ६
राम पुनीत बिषय रस रूखे। लोलुप भूप भोग के भूखे ७
कहं लगिकहौं हृदयकठिनाई। निदरिकुलिशजेहिं लहीबड़ाई ८
दो० कारण तें कारज कठिन होइदोषनहिं मोर।
कुलिश अस्थि ते उपल ते लोह कराल कठोर ॥ ३ ॥

मैं सत्यही कहता हूं इस पर सब सभासद प्रतीति करो कि राजा तो धर्मशील को करना चाहिये १ मेरे को तो जिस समय आप हठ करिके राज्य देओगे उसी समय पृथ्वी रसातल को चली जावेगी २ मेरे समान पाप निवासी दूसरा कौन है जिसके निमित्त सीताराम बनबासी हुये ३ राजा ने जो राम को बनबास दिया तो उनके बिछुरतेही देवलोक को पयान किया ४ और मैं महा मूढ़ तो समस्त

अनर्थ का कारण बैठा हुआ सचेत सब बात सुनता हूं ५ रामबिहीन घरको देखि कर भी मेरे प्राण बनेही रहे जग का उपहास भी सब सहि लिया ६ रामतो बिशुद्ध हृदय हैं समस्त विषय रस से बर्जित हैं राज्य के लोभी तो प्राकृत लंपट राजा होते हैं ७ मैं अपने हृदय की कठोरता कहांतक कहूं जिस ने बज्र को भी लज्जित करिके बड़ाई पाई है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ कारण से तो कार्य्य कठिन होताही है इस में मेरा कौन दोष है देखो बज्र के कारण दधीच ऋषि के हाड़ हैं उन से महाकराल बज्र हुआ है और लोहे का कारण पाषाण है सो लोहा पाषाण से भी कठोर होता है ॥ ३ ॥

कैकेयी भव तन अनुरागे । पामर प्राण अघाइ अभागे १
जो प्रिय बिरह प्राण प्रिय लागे । देखब सुनबबहुतअबआगे २
लषण राम सियकहंबनदीन्हा । पठयअमरपुरपतिहितकीन्हा ३
लीन्ह बिधवपन अपयश आपू । दीन्हेउप्रजहिं शोकसंतापू ४
मोहिं दीन्ह सुख सुयश सुराजू । कीन्ह केकयी सबकरकाजू ५
यहिते मोर काह अब नीका । तेहिपर देन कहहु तुम टीका ६
केकयिजठर जन्मिजगमाही । यह मोहिं कहं कछुअनुचितनाही ७
मोरि बात सब बिधिहि बनाई । प्रजा पांचकत करहु सहाई ८
दो० ग्रह ग्रहीत पुनि बात बश तेहि पुनि बीछीमार ।
ताहि पियाइय बारुणी कहहु कवन उपचार ॥ ४ ॥

१५०
134

भगवद्विरोधी कैकेयी के जठर से उत्पन्न ऐसे शरीर पर अनुरागे महानीच मेरे प्राण अत्यन्त अभागे हैं १ जो मेरे को राम सारिखे प्रीतम के बियोग में भी प्राण प्यारे लगे तो आगे को मेरे दोष बहुत देखोगे और बहुत सुनोगे २ एक मेरी माताही ने राम लक्ष्मण सीता को तो सुन्दर बन दे दिया और पिता को देवलोक भेजिकर उनका हित किया ३ अपने को वैधव्य और अपयश लिया प्रजा को शोक और संताप दिया ४ मेरे को संसार में सुख और सुयश दायक यह राज्य दिया इस प्रकार सबका काम कैकेयीही ने बनादिया ५ इस से अधिक मेरा भला और क्या होगा तिस पर अब आप तिलक करना कहते हो ६ सो कैकेयीके जठर में जन्मि कर यह भी मेरे को अनुचित नहीं है ७ मेरी बात तो सब बिधाताही ने बनाइ राखी है तुम सब प्रजा और सभासद क्यों सहाय करते हो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जिस को नवग्रह ने तो घेरिही लिया है और सन्निपात त्रिदोष के बश है और ऊपर से बीछी ने मारा उसको जो बारुणी मदिरा और पियाई जावे तो कौन सा उपाय है ॥ ४ ॥

केकयि सुवन योग जग जोई। चतुर बिरंचि कीन्ह मैं सोई १
दशरथ तनय रामलघु भाई। दीन्ह मोहिं बिधि बादि बड़ाई २
तुम सब कहहु कढ़ावन टीका। राय राज सबही कहंनीका ३
उतर देउं केहि बिहि केहिकेहीं। कहहुसुखेन यथारुचि जेहीं ४
मोहि कुमातु समेत बिहाई। कहहु काहि केहिकीन्हि भलाई ५
मोहि बिनु कोसचराचरमाहीं। जेहिं सियरामप्राणप्रियनाही ६
परमहानि सब कहं बड़लाहू। अदिन मोर नहिं दूषण काहू ७
संशय शील प्रेम बश अहहू। सबहिंउचित सबजोकछुकहहू ८
दो० राम मातु सुठि सरल चित मोपर प्रेम बिशेषि।
कहहिं सुभाव सनेह बश मोरि दीनता देखि ॥ ५ ॥

कैकेयी के पुत्र होने के योग्य जो जग भरे के जीवों में से होना चाहिये सो तो परम चतुर बिधाता ने खोजि कर मेरेही को कर दिया १ परंतु दशरथ का पुत्र और राम का छोटा भाई हूं यह बड़ाई ब्रह्मा ने मेरे को वृथा दीन्ही है २ अब तुम सब तिलक चढ़ावना कहते हो राइराज पद तो सबही को सुहावता है ३ उत्तर किस किस को कौन कौन भांति से देऊं तातें सुख पूर्वक जैसी जिसकी रुचि होवे सो तैसी तैसी कहे जाओ ४ कुमाता समेत एक मेरे को छोड़िकर कहो किस के साथ किस ने भलाई की है ५ और मेरे बिना चराचर जीवों में ऐसा कौन है जिस को सीता राम प्राण के समान प्यारे न होवें ६ मेरी परम हानि तुम सबको बड़ीलाभ देखिपरती है यह सब मेरा अदिनहै किसी को कुछ दूषण नही है ७ तुम सब संशय शील और मेरे प्रेम बश हो तातें जो तुम कहते हो सो सब का सब उचितही है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ राम की माता भी अति सरल चित है और मेरे परउन का राम से भी बिशेष प्रेम है ताते स्वाभाविक सनेह के बश मेरी दीनता देखिकर सो भी सब के संमत कहती है ॥ ५ ॥

गुरुबिवेक सागर जग जाना। जिनहिं बिश्वकर बदरिसमाना १
मोकहं तिलकसाज सजु सोऊ। भाबिधिबिमुखबिमुखसबकोऊ २
परिहरि राम सीय जगमाहीं। कोउन कहिहि मोरमत नाहीं ३
सो मैं सुनब सहब सुखमानी। अन्तहु कीच तहां जहं पानी ४
डरन मोहिं जग कहिहिकी पोचू। पर लोकहु करनाहिनशोचू ५

एकहि बड़िउर दुसहदवारी । मोहि लगिभे सियराम दुखारी ६
जीवन लाहु लषण भलपावा । सबतजि रामचरण मनलावा ७
मोर जन्म रघुबर बन लागी । झूंठ काह पछिताउं अभागी ८
दो० आपनि दारुण दीनता सबहि कहौं समुझाइ ।
देखे बिनु रघुबीर पद जिय की जरनि न जाइ ॥ ६ ॥

संसार जानता है कि गुरु हमारे बिबेक के सागर हैं जिन को समस्त बिश्व का ज्ञान ऐसा प्रत्यक्ष है जैसा करतल गत बदरी फल होता है १ मेरे को तिलक ही का साज सा भी साजि रहे हैं तो मैं जानता हूं कि मेरे पर बिधाता प्रतिकूल है इसी से सब कोई प्रतिकूल है २ तो मैं जानिचुका कि एक सीतारामबिना कोई नहीं कहेगा कि मेरे को यह उचित नही है ३ सो मैं सबका सुख मानि कर सब सुनूगा और सब सहूंगा क्योंकि जहां जल होगा तहीं अंत को कीच होती है ४ इसका मेरे को डर नहीं है कि संसार पोच कहेगा और परलोक का भी मेरे को कुछ शोच नही है ५ मेरे हृदय में तो एकही बड़ी दवाग्नि जरती है कि मेरेनिमित्त सीता राम दुखी हुये जीवने का लाभ तो लक्ष्मण ने भला पाया कि लोक परलोक सब को छोड़ि कर राम के चरणों में मनलगाया ६ । ० मेरा जन्म तो केवल राम के बनही के निमित्त हुआ है फिरि मेरा पछिताना क्या झूंठ है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तातें अपनी महादारुण दीनता सब से समुझाइ कर कहताहूं कि राम के चरण देखे बिना मेरे जी की जरनि कदापि नहीं जावेगी ॥ ६ ॥

आन उपाय मोहिं नहिं सूझा । को जिय की रघुबरबिन बूझा१
एकहि आंक यही मन माहीं । प्रातकाल चलिहौं प्रभुपाहीं २
यद्यपि मैं अनभल अपराधी । भइ मोहिं कारण सकलउपाधी ६
तदपि शरण सन्मुख मोहिं देखी । सब क्षमिकरिहैंकृपाबिशेषी४
शील सकुच सुठि सरल सुभाऊ । कृपासनेह सदन रघुराऊ ५
अरिहुक अनहितकीन्ह न रामा । मैं शिशुसेवक यद्यपिबामा ६
तुम पै पांच मोर भल मानी । आयसु आशिष देहु सुबानी ७
जेहि सुनिबिनयमोहिंजनजानी । आवहिं बहुरि राम रजधानी८
दो० यद्यपि जन्म कुमातुतें मैं शठ सदा सदोष ।
आपन जानि न त्यागिहैं मोहिं रघुबीर भरोश ॥ ७ ॥

सीता राम के चरणों को छोड़ि और उपाय तो मुझको सूझताही नहीं है क्योंकि उन बिना मेरे हृदय के संताप को कौन जानता है १ तातें मेरे मन में तो एक आंक यही संकल्प है कि प्रात होतेही अपने स्वामी राम के पासही चलूंगा २ यद्यपि में निरा खोटा और अपराधों का पात्रही हूं कि यह सब उपाधि मेरेही निमित्त हुई है तथापि मेरे को शरण आया देखि कर परम कृपालु स्वामी उनसब अपराधों को क्षमा करिके मेरे ऊपर बिशेष कृपा करेहींगे ३ । ४ क्योंकि उनका सुशील सकोची अति सरल तो सुभाव है और कृपा और सनेह के तो निवासही हैं ५ बैरियों कोभीतो रामने कभी बुरानहीं किया है मैं तो उनका अज्ञ सेवकही हूं यद्यपि प्रतिकूल चला आया हूं ६ परंतु तुम सब सभासद मेरा भला मानि कर मेरे को राम के पास जाने की प्रसन्न मनसे आज्ञा और आशिष तो देओ ७ जिससे मेरी बिनती कोसुनि कर और मुझ को अपना जन जानिकर रामचन्द्र अपनी राजधानी अयोध्या को बहुरि आवैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ यद्यपि मेरा जन्म कुमाताही से है और मैं भी सदैव से सदोषही हूं तथापि मेरे को खरा खोटा अपनाही जानि कर नहीं त्यागेंगे यह तो रामचन्द्रका भरोसा निश्चित है ऐसे कहि कर भरत प्रेममें मग्न हो गये ॥ ७ ॥

भरत बचन सब कहं प्रिय लागे । रामसनेह सुधा जनु पागे १
लोग बियोग बिषम बिष दागे । मंत्र सबीज सुनत जनुजागे २
मातु सचिव गुरुपुर नरनारी । सकल सनेह बिकल भयभारी ३
भरतहि कहहिं सराहि सराही । राम प्रेम मूरति तनुआही ४
तात भरत अस काहेन कहहू । प्राण समान राम प्रिय अहहू ५
जो पामर आपनि जड़ताई । तुमहिं सुगाइ मातु कुटिलाई ६
सो शठ कोटिक पुरुष समेता । परै कल्पशत नर्क निकेता ७
अहि अघ अवगुण मणिनहिगहई । हरैगरलदुख दारिददहई ८
दो० अवशि चलिय बन राम जहं भरत मंत्र भल कीन्ह ।
शोकसिन्धु बूड़त सबहि तुम अवलंबन दीन्ह ॥ ८ ॥

रामचन्द्रके सनेह के सुधा से पगे भरत के मधुर बचन सबको अति प्यारेलगे १ सब लोग राम के बियोग के बिषम बिष से अचेत रहैं ते सब ऐसे सचेत हो उठे जैसे सबीजगारुड़ मंत्रों के सुनतेही बिष के भोये जगते हैं २ माता मंत्री बशिष्ठ और सब पुरवासी भरत के सनेह में बिकल हो गये ३ भरत को सराहि सराहि कर कहने लगे भरत तो राम का प्रेमही मूर्त्तिवन्त तनुधरे हैं ऐसे सराहि कर बोले ॥४॥ हेतात भरत तुम ऐसा कैसे न कहो तुम तो राम को प्राणोंके समान प्यारे

हो ५ जो अधम अपनी जड़ता से माता की कुटिलता तुम को लगावै सो मतिमंद अपनी कोटिन पीढ़ियों समेत अपना घर नर्कमें सौ कल्प तक करै ६ । ७ सर्पके पाप और उसके अवगुणों को सर्प की मणि ग्रहण नहीं करती है किन्तु सर्प के डसे के विष को और पाप के दुख दरिद्र को दहती है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तातें आप अवश्य बन को चलिये जहां राम हैं यह तो आपने भलाही मंत्र किया और शोक सागर में बूडे जाते हम सबको आपने बड़ाही अवलंबन दे दिया ॥ ८ ॥

भासबके मन मोद न थोरा । जनुघन धुनिसुनि चातक मोरा १
चलब प्रात लखि निर्णय नीके । भरतप्राण प्रियभे सबहीके २
मुनिहिं बंदि भरतहि शिरनाई । चले सकल घरबिदा कराई ३
धन्य भरत जीवन जगमाहीं । शील सनेह सराहत जाहीं ४
कहहिं परस्पर भाबड़ काजू । सकल चलनकर साजहिं साजू ५
जेहि राखहिं घरकी रखवारी । सो जानै जनु गरदन मारी ६
कोउकह रहन कहिय नहिंकाहू । को न चहै जगजीवन लाहू ७
केहिन भावसिय लक्ष्मणरामू । सबकहं प्रियहिय सदासकामू ८
दो० जरहु सो संपति सदनसुख सुहृद मातु पितु भाइ ।
सन्मुख होत जो रामपद करैं न सहजसहाइ ॥ ९ ॥

भरत के बचन सुनतेही सब के मनमें कैसा बड़ा आनन्द हुआ है जैसा मेघ की धुनि सुनिकर चातक और मयूरों को होता है १ प्रातःकाल रामके पास चलेहींगे यह निर्णय भली भांति लखिकर भरत सबके प्राणप्यारे होगये २ बशिष्ठ मुनि को अभिबंदन करि और भरत को शीशनवाइ बिदा मांगिकर अपने अपने घरोंको चले ३ भरत का जीवन जग में धन्य है ऐसे उन के शील सनेह को सराहते जाते हैं ४ परस्पर कहतेजाते हैं कि यह तो बड़ाही कार्य्य हुआ अपने अपने घर जाकर सब चलनेका साज साजनेलगे ५ जिसको घरकी रक्षाके लिये राखतेहैं सो जानताहै मानों शिर छेदन किया ६ कोई एक कहते हैं कि रहना किसी को मत कहो अपने अपने जीवन का लाभ कौन नहीं चाहता है ७ सीता राम लक्ष्मण किसको नहीं भावते हैं किसके प्यारे नहीं हैं किसका हृदय उनके मिलने को सकाम नहीं है अर्थात् सबके प्यारे और सबका हृदय उनके मिलनेको सकाम है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ वह संपति और घरके सब सुख जरो वे सुहृद,माता,पिता, भाई सब जरो जो भगवच्चरणारविंदों के सन्मुख होने में सहाय न करै किन्तु बिरोधी होवे ॥ ९ ॥

घरघर साजहिं बाहन नाना । हर्षहिं हृदय प्रभात पयाना १

भरत जाइघर कीन्ह बिचारू। नगर बाजिगज भवन भंडारू २
संपति सब रघुपति की आही। जो बिनुयतन चलौंतजिताही ३
तौ परिणाम न मोरि भलाई। पापि शिरोमणि साइं दोहाई ४
करहिं स्वामिहित सेवक सोई। दूषण कोटि देइ किनि कोई ५
असबिचारि शुचि सेवक बोले। जे सपनेहुं निजधर्म न डोले ६
कहि सब मर्मधर्म सब भाखा। जो जेहिंलायक सो तहंराखा ७
करिसब यतन राखि रखवारे। राममातु पहं भरत सिधारे ८
दो० आरत जननी जानिसब भरत सनेह सुजान।
कहेउ सजावन पालकी सुखद सुखासन यान॥ १०॥

अब तो अयोध्या में घरघर नानाप्रकार के बाहन साजे जाते हैं और सब हृदय में हर्षित होते हैं कि प्रातःकाल पयान होगा १ भरत ने घरजाकर बिचार किया कि यह जो नगर और हाथी घोड़े धन धाम है सो सब स्वामी रामचन्द्र की संपत्ति है जो मैं इस का यत्न किये बिनाचलाजाऊं तो परिणाम को मेरी भलाई न होगी किन्तु पापियों का शिरोमणिही होऊंगा २।३।४ क्योंकि सेवक तो सोईहोते हैं जो सदा स्वामीका हित करते हैं कोई उनको अनेक दूषण भलेही दिया करै ५ ऐसा बिचारि कर भरत ने अति पुनीत सेवक बुलाये जो स्वप्न में भी अपने धर्म से नहीं चलते हैं ६ उन से सब मर्म और सब धर्म कहि सुनाया और जो जिस योग्य रहे उस को तहां नियत किया ७ इस प्रकार सब यत्न करि और जहां तहां रखवारे राखिकर फिरि राम की माता के पास भरतगये॥ ८॥ दोहा॥ तहां सबमाताओं को आरत जानिकर भरत तो स्नेह में बड़ेही सुजान हैं बेगिहो पालकी और सुखपाल सजाने को कहा॥ १०॥

चकचकई जिमि पुरनरनारी। चहत प्रातउर आरत भारी १
जागत सब निशि भयउ बिहाना। भरतबुलाये सचिव सुजाना २
कहेउ लेहु सबतिलक समाजू। बनहिं देब मुनि रामहिं राजू ३
बेगिचलहु सुनि सचिव जुहारे। तुरत तुरंग रथनाग सम्हारे ४
अरुंधती अरु अग्नि समाजू। रथ चढ़ि चले प्रथम मुनिराजू ५
बिप्रवृंद चढ़ि बाहन नाना। चले सकल तप तेज निधाना ६
नगरलोग सजि निजनिज याना। चित्रकूट कहं कीन्हपयाना ७

शिविका शुभग न जाइं बखानी। चढ़िचढ़ि चलत भईं सबरानी ८
दो० सैांपि नगर शुचिसेवकन सादर सबहिं चलाइ।
सुमिरि राम सिय चरण तब चले भरत दोउभाइ ॥ ११ ॥

चक,चकई की नाईं नगर के सब नर,नारी अति आरत होकर प्रात होना चाहते हैं १ सबको सब रातिजागतेही प्रातहुआ तबतो भरतने सुजान मंत्रियोंको बुलाया और कहा २ कि तिलक का समाज सब साथ लेते चलो मुनि महाराज राम को बनही में राज्य देवेंगे ३ यह सुनिकर मंत्रियों ने जुहार किया और तुरंतही हाथी रथ घोड़े सब सजाये ४ अरुंधती और अग्नि अपनी दोनों भार्यायों के समाज समेत रथ परचढ़ि कर मुनिराज बशिष्ठ सब से पहिले चले ५ उन के पीछे द्विजदेवों के वृन्द बाहनों पर चढ़ि चढ़ि कर तप तेज के निधान चले ६ तिन के पीछे नगर के लोग अपने अपने बाहनों पर चढ़ि चढ़ि कर चित्रकूट को चले ७ फिरि सुन्दर पालकियों पर चढ़िचढ़िकर सब रानी चलीं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सब के पीछे समस्त नगर सेवकों को सैांपि और आदर समेत सब को चलाइकर और मंगलमूल सीता रामके चरणों का स्मरण करि तब भरत दोनों भाई चले ॥ ११ ॥

रामदरशहित नर अरुनारी। जनुकरि करिनि चले तकिबारी १
बनसियराम समुझि मनमाहीं। सानुज भरत पयादेहि जाहीं २
देखि सनेह लोग अनुरागे। उतरि चले रथहयगज त्यागे ३
जाइ समीप राखि निज डोली। राम मातु मृदुबाणी बोली ४
तातचढ़हु रथबलि महतारी। होइहि प्रिय परिवार दुखारी ५
तुमहि चलत चलिहैं सब लोगू। सकलशोककृशनहिं मगयोगू ६
शिरधरि बचन चरण शिरनाई। रथचढ़ि चलत भये दोउभाई ७
तमसा प्रथम दिवस करिबासू। दूसर गोमति तीर निवासू ८
दो० पयअहार फल अशन इक निशि भोजन इकलोग।
करत रामहित नेमब्रत परिहरि भूषण भोग ॥ १२

रामचन्द्र के दर्शन की लालसा से समस्त नर, नारी कैसे सबेग जाते हैं जैसे प्यासे हाथी, हथिनी जल को देख कर धावते हैं १ भरत, राम,जानकी को बन में जानि कर भाई शत्रुहन समेत पयादेही जाते हैं २ ऐसा भरत का प्रेम देख कर सब लोग प्रेममेंमग्न होकर सब उतरि चले हाथी, रथ, घोड़े सब छांड़िदिये ३ तब तो कौशल्या भरत के पास अपनी पटपालकी राखि यह बचन बोली ४ बलिजाऊं

हे तात रथपर चढ़िकर चलो देखो यह सब परिवार दुखी होजाइगा ५ तुम्हारे चलते तो सब पयादेही चलेंगे सब शोक से कृशहैं कोई मार्ग चलने के योग्य नहीं है ६ कौशल्या की आज्ञा माथे मानि उनके चरणों को शीश नवाइ रथ पर चढ़ि दोनों भाई चलते हुये ७ प्रथम बास तो तमसानदी के तीर और दूसरा गोमती के तट हुआ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ कोई तो पय का आहार करते हैं कोई फलाहार करते हैं कोई रात्ति को भोजन करते हैं इसी प्रकार सबपुरबासी रामके दर्शन के लिये सब भूषण भोजन छोड़ि छोड़िकर नेम ब्रत करते हैं ॥ १२ ॥

सईतीर बसिचले बिहाने । शृंगबेर पुर सब नियराने १
समाचार सब सुने निषादा । हृदय बिचार करै सबिषादा २
कारण कवन भरत बन जाहीं । है कछु कपट भाव मन माहीं ३
जौंपै जियन होति कुटिलाई । तौ कत लीन्हि संग कटकाई ४
जानहिं सानुज रामहिं मारी । करहु अकंटकराज सुखारी ५
भरत न राजनीति उरआनी । तब कलंक अब जीवन हानी ६
सकल सुरासुर जुरहिं जुझारा । रामहिं समर न जीतनहारा ७
का आश्चर्य्य भरत असकरहीं । नहिं बिष बेलिअमियफलकरहीं ८
दो० असबिचारि गुहज्ञाति सनकहेउ सजग सबहोहु ।
हथवासहु बोरहु तरणि कीजै घाटारोहु ॥ १३ ॥

सईनदी के तीर तीसरे दिन बसिकर चौथे दिन शृंगबेर पुर पहुंचे १ जबनिषाद राज गुह ने ये समाचार सुने तब तो हृदय में बिचार करने लगा २ भरत बन को किस कारण जाते हैं कुछ कपटभाव इन के मन में अवश्य हैं ३ जो कुछ जी में कुटिलाई न होती तो संग सेना क्यों ली है ४ भरत यह जानते हैं कि जब राम को भाई समेत मारिलूंगा तब अकंटक राज्य सुख से करूंगा ५ भरत ने राज नीति नही बिचारी तब तो केवल कलंकही रहे अब प्राण भी जावेंगे ६ क्योंकि जो समस्त सुर असुर बड़जुझार भी एकट्ठे होजावें तोभी राम को संग्राम में नहींजीति सक्ते हैं ७ कौन आश्चर्य्य है जो भरत ऐसा करें क्योंकि बिषकी बेलि अमृत के फल नहीं फलती है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ गुह ने ऐसा बिचारि कर अपनी ज्ञाति से कहा कि सब सजग हो जाओ हथ बासों समेत सबनाव बोरिदेव और घाटरोकिलेओ ॥१३॥

होहुसजग मिलिरोकहु घाटा । ठाटहु सकल मरण करठाटा १
सन्मुख लोहभरत सनलेहू । जियत न सुरसरि उतरन देहू २

समर मरण पुनि सुरसरि तीरा । रामकाज क्षणभंग शरीरा ३
भरत भाइ नृप मैं जननीचू । बड़भाग अस पाइय मीचू ४
स्वामिकाज करिहौं रणरारी । यशलहि धवल भुवन दशचारी ५
तजौं प्राण रघुनाथ निहोरे । दुहूं हाथ मुद मोदक मोरे ६
साधु समाज न जाकर लेखा । राम भक्त महं जा सुन रेखा ७
जाय जियत जग सो महिभारू । जननी यौवन बिटप कुठारू ८

दो० बिगत बिषाद निषादपति सबहिं बढ़ाइ उछाहु ।
सुमिरि राममांगेउ तुरत तरकस धनुष सनाहु ॥ १४ ॥

सजग हो जाओ पाठांतरमें ॥ होइ सजोइन रोकहु घाटा ॥ अर्थात् सावधान होकर घाट को सब मिलिकर रोको औ मरने का ठाट ठाटो १ भरत के साथ सम्मुख हथियार करो और जीते जी गंगा मतउतरने देओ २ बिचारि देखो कि बीरभूमि संग्राम में तो मरना है फिरि स्वर्ग सोपान सुरसरिता का तट है और राम से कृतज्ञ स्वामी का कार्य्य है शरीर यह क्षण भंग है एक दिन मरना सब को है ३ भरत तो राजा और राम के छोटे भाईहैं और मैं राम कानीच किंकरहूं बड़े भाग्यसे ऐसी मृत्यु मिलती है ४ तातें मै तो अपने स्वामी रामचंद्र के कार्य्य के निमित्तयुद्ध करूंगा और चौदह लोकों में उज्ज्वल यश पाऊंगा ५ राम के उपकार जो मारा जाऊंगा अथवारामके प्रताप से बिजय पाऊंगा तो मेरे इस हाथमेंभी आनन्द के लड्डू हैं औरउस हाथमेंभी आनन्दही के लड्डू हैं ६ क्योंकि साधुसमाज में जिसका लेखा नहीं है अर्थात् रामभक्तों में जिस की रेखा नहीं है ७ सो तो वृथाही जीवता है केवल पृथ्वी का भारही है किंवा अपनी माता के यौवन के बिटप का कुठारही है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इस प्रकार आनन्द समेत निषादराज सब को उत्साह कर और हृदय में रामका स्मरण करिके अपना निषंग चाप और कवच सेवकों से मांगा ॥ १४

बेगिहिं भाइ सजहु संजोऊ । सुनि रजाइ कदराहु न कोऊ १
भलेहिं नाथ सब कहहिं सहर्षा । एकहि एक बढ़ावहिं कर्षा २
चलेउ निषाद जुहारि जुहारी । शूर सकल रण रुचै सुरारी ३
सुमिरि रामपद पंकज पनहीं । भाथहिं बांधि चढ़ावहिं धनुहीं ४
अंगरीं पहिरि कूडि शिर धरहीं । फरसा बांस सेलसमकरहीं ५
एक कुशल अति ओड़नखांड़े । कूदहिं गगनमनहुंक्षितिछांड़े ६

निज निज साज समाज बनाई। गुहराउतहिं जुहारहिं जाई ७
देखि सुभट सब लायक जाने। लैलै नाम सकल सनमाने ८
दो० भाइहु लावहु धोख जनि आज काज बड़ मोहु।
सुनि सरोष बोले सुभट बीर अधीर न होहु ॥ १५ ॥

हे भाइयो तुम सब बेगिही युद्ध का साज सजो और यह मेरी आज्ञा सुनि कर काई मति शंका करो १ भला हे नाथ सब सुनि कर सहर्ष कहने लगे और परस्पर एकों को एक बेर बढ़ाने लगे २ सब निषाद निषादराज को जुहारि जुहारि कर अपने अपने घरों को चले बड़े शूर हैं जिन को रण में लड़ाईही रुचती है ३ हृदय में रामचन्द्र के चरणों की त्रिविड़ी अर्थात् चरण पीठ का स्मरण करिके अपने अपने भाथों को बांधि कर कमठों को चढ़ावते हैं ४ कवचों को पहिरि कर लोहे के टोप शिर पर रखते हैं फरसे बांस के सेलों को सम करते हैं ५ कोई एकजोपटेती में प्रबीणहै ते ऐसे कूदते हैं मानो प्रथिवी को छोडेहैं ६ इस प्रकार अपना अपना साज समाज बना कर गुह प्रधान को जाजा कर जुहारते हैं ७ निषादराज ने सब को देखि कर समर्थ जाने और एक एकका नाम लेले कर सबका सन्मान किया और कहा ॥ ८॥ दोहा ॥ हे भाइयो आज मेरे को यह बड़ा काम है कोई धाखा न देना यह सुनि कर बीर बडेसरोष बोले हे नाथ अधीर न हूजिये ॥ १५ ॥

राम प्रताप नाथ बल तोरे। करहिं कटकबिनु भट बिनु घोरे १
जियत पांउंनहि पाछे धरहीं। रुंड मुंड मय मेदिनि करहीं २
देखि निषादनाथ भल टोलू। कहेउ बजाउ जुझाऊ ढोलू ३
इतना कहत छींक भइ बाये। कहेउ शकुनि अनखेत सुहाये ४
बूढ़ एक कह शकुन बिचारी। भरतहि मिलिय न होइहि रारी ५
रामहिं भरत मनावन जाहीं। शकुन कहै अस बिग्रह नाहीं ६
सुनि गुह कहा नीक कह बूढ़ा। सहसा करि पछिताहिं बिमूढ़ा ७
भरत सुभाव शील बिनु बूझे। बड़िहित हानि जानि बिनुजूझे ८
दो० गहहु घाट भट समिटि सब लेउं मर्म मैं जाइ।
बूझि मित्र अरि मध्य गति तब तस करब उपाइ ॥ १६ ॥

रामचन्द्र के प्रताप से और हे नाथ आपके बल से हम सब भरत के कटकको बिना भट और बिनाबाहन का करि देवेंगे १ जीते जी तो पाउं पीछे घरेहोंगे नहीं

और रुंड मुंडों से मेदिनी को भरि देवेंगे २ निषादनाथ ने उनका बहुत भलायूथ देखि कर कहा कि हां जुझाऊ ढोल बजे ३ इतना कहतेही बाम दिशा में छींक हुई सो सुनि कर शकुनियों ने कहा यह छींक तो सुन्दर खेत में हुई है ४ एक बूढ़े ने शकुन बिचारि कर कहा कि भरत से मिलना उचित है लराई न होवेगी ५ जानि परता है कि भरत राम के मनावने को जाते हैं शकुन कहता है कि युद्ध नही होगा ६ यह सुनि कर गुहने कहा कि यह बूढ़ा अच्छा कहता है कि मूढ़ लोग सहसा करिके पाछे पछिताते हैं ७ भरत का सुभाव शील बिना समुझे लड़ मरना बड़ी हित की हानि है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तातें तुम सब तो घाट को जाकर रोको और मैं भरत का मर्म लेता हूं उनका शत्रु मित्र मध्य भाव समुझि कर तबतैसा उपाय करेंगे ॥ १६ ॥

लखब सनेह सुभाव सुहाये। बैर प्रीति नहिं दुरत दुराये १
अस कहि भेंट सजोवन लागे। कन्द मूल फल खग मृग मांगे २
मीन पीन पाठीन पुराने । भरि भरि भार कहारन आने ३
सकल साज सजि मिलन सिधाये। मंगलमूल शकुनशुभपाये ४
देखि दूरि ते कहि निज नामू। कीन्ह मुनीशहिं दंड प्रणामू ५
जानि राम प्रिय दीन्हि अशीशा। भरतहि कहेउबुझाइमुनीशा ६
राम सखा सुनि स्यंदन त्यागा। चले उतरि उमगत अनुरागा ७
गांव जाति गुह नाम सुनाई। कीन्हि जुहारि माथ महिलाई ८
दो० करत दंडवत देखि तेहि भरत लीन्ह उर लाइ ।
मनहुं लषण सन भेंट भइ प्रेम न हृदय समाइ ॥ १७ ॥

भरत के स्नेह को उनके सुन्दर सुभावही से लखि लेऊंगा क्योंकि बैर और प्रीति छिपाने से नहीं छिपती है १ ऐसे कहिकर भेंट की सामग्री जोरने लगे कन्द मूल और भांति भांति के फल और कोलि, मृग, पक्षी मंगाये २ अति मोटे मोटे मत्स्य और पुराने पाठीन भार भरि भरि कर धीमर लेआये ३ समस्त साज साजि कर जो मिलने को चले तो मंगल के मूल शुभ शकुन पाये ४ सब से आगे बशिष्ठ मुनि को देखि कर अपने नीचानुसंधान के अनुसार दूरही से अपना नाम लेकर उनको दंडवत् प्रणाम किया ५ बशिष्ठ मुनि ने उसको राम का प्यारा सखा जानि कर आशिष दिया और भरत से समुझाइ कर बृतान्त कहि दिया ६ भरतने उसको रामका सखा सुनतेही रथ त्यागि दिया और बड़ेप्रेम की उमंग से उतरि कर उसके मिलने को चले ७ तबतो निषादराज ने अपना गांव और जाति और गुह

ऐसा नाम सुनाकर भरत को जुहार की ॥ ८ ॥ दोहा ॥ भरत ने उसको प्रणामकरते देखि दौरि कर हृदय से लगा लिया और ऐसा प्रेम उस पर बढ़ा मानो लक्ष्मणहीं से भेंट हुई है ॥ १० ॥

भेंटत भरत ताहि अतिप्रीती । लोग सिहाहिं प्रेम की रीती १
धन्य धन्य धुनि मंगल मूला । सुर सराहि तेहिं बरषहिंफूला २
लोक वेद सब भांतिहिनीचा । जासु छांह छुइलेइय सींचा ३
तेहि भरि अंक रामलघुभ्राता । मिलत पुलक परि पूरितगाता ४
राम राम कहि जे जमुहांहीं । तिनहिं न पाप पुंजसमुहांहीं ५
यहितो राम लाइ उर लीन्हा । कुल समेतजगपावन कीन्हा ६
कर्मनाश जल सुरसरि परई । तेहिं को कहहु शीश नहिंधरई ७
उलटा नाम जपत जग जाना । बालमीकि भे ब्रह्म समाना ८
दो० स्वपच शवर खस यवन जड़पामर कोल्हकिरात ।
राम कहत पावन परम होत भुवन बिख्यात ॥ १८ ॥

भरत तो उसको बड़ी प्रीतिसे मिलतेहै और सब लोग प्रेम की रीति को सिहाते हैं १ देवता उसको सराहि कर पुष्प बरषाते हैं और मंगल मूल धन्य धन्य धुनि करते हैं और कहते हैं २ यह तो लोक और वेद में सब भांति से ऐसा अपावनहै जिसकी छाया को भी छूकर सींच लेना चाहिये ३ उसको राम के अनुज भरत ऐसे प्रेम से मिलते हैं कि पुलकावलीसे जिन का अंग परिपूरित हो रहाहै ४कोई देवता कहते हैं कि यह तो परम पावन हैं क्योंकि जो कोई राम राम कहि कर जमुहाते भी हैं उनको भी पातकों के पुंजनहीं समुहाते हैं इसको तो राम ने आप उठाकर अंग में लगाया हैं और कुल समेत जग पावन किया है ६ कर्मनाशा नदी का भी जल जब श्रीगंगा में पहुंचता है तो उसको कौन शिर पर नहीं धरता हैं ७ संसारजानता है कि बाल्मीकि ऋषि राम का नाम उलटाही जपकर ब्रह्मा के समानवेदवक्ता हो गये अर्थात् जैसे वेदवक्ता ब्रह्मा हैं तैसेही साक्षाद्वे दातार रामायणकेवक्ताबाल्मीकिजी हैं ॥ श्लोक ॥ वेदवेद्ये परेपुंसिजातेदशरथात्मजे वेदःप्राचेतसादासीत्साक्षाद्रामायणात्मकः ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जो महा अपावन स्वपच, शावर, खसिये, म्लेच्छ, कोल्ह, किरात हैं ते भी राम नाम भुवन बिख्यातसे पावन हो जाते हैं ॥ किरातहूणान्ध्रपुलन्दपुष्कशाआभीरकंकाटवनाखसादयः येन्येचपापायदुपाश्रयाश्रयाशुद्ध्यन्तितस्मै प्रभुविष्णवेनमः ॥

नहिं अचरज युगयुग चलिआई । केहि न दीन्ह रघुबीर बड़ाई १

रामनाम महिमासुरकहहीं । सुनिसुनि अवध लोगसुखलहहीं २
रामसखहिं मिलि भरत सप्रेमा । पूंछी सकुल सुमंगल क्षेमा ३
देखि भरत कर शील सनेहू । भा निषाद तेहि समय बिदेहू ४
सकुच सनेह मोद मनबाढ़ा । भरतहिं चितवत इक टक ठाढ़ा ५
धरि धीरज पद बंदि बहोरी । बिनय सप्रेम करत करजोरी ६
कुशल मूल पद पंकज देखी । मैं तिहु काल कुशल निजलेखी ७
अब प्रभु परम अनुग्रह तोरे । सहित कोटि कुल मंगल मोरे ८
दो० समुझि मोरि करतूति कुल प्रभुमहिमा जियजोइ ।
जो न भजैरघुबीरपद जग बिधि बंचित सोइ ॥ १६ ॥

कुछ आश्चर्य्य नहीं है ऐसा तो युगान्तर से चला आया है रामचन्द्र ने किस पतित को शरण आये पर पावन नहीं किया है १ इस प्रकार राम नाम की महिमा देवता कहते हैं उस को सुनिकर अवधबासी सुख पाते हैं २ इस प्रकार राम सखा गुह को मिलिकर उससे कुल समेत कुशल पूंछी ३ ऐसा भरत का शील सुभाव देखिकर निषादराज उस समय बिदेह होगया ४ अन जाने भरत पर दोषारोपण का सकोच और उनकी दशा देख कर सनेह और आनन्द मन में बढ़ा तातें भरत को एकटक खड़ा देखताही रहिगया ५ धीरज धरि भरत के चरणों को फिरि प्रणाम करि प्रेम समेत हाथ जोरिकर बिनती करनेलगा ६ कुशल के मूल आपके चरणकमल देखकर मैंने तो तीनों कालों में अपनी कुशल मानी है ७ और अब तो आप का परम अनुग्रह अपने ऊपर देखकर कोटि जन्म के कुल समेत मेरे कुशल है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ मेरे महामंद कुल और कर्मों को और अपकी आपार महिमा को भी देखकर जो श्रीरामचन्द्र के चरणों को न भजे उसकी बुद्धि बिधाताही ने ठगी है ॥ १६ ॥

कपटी कायर कुमति कुजाती । लोकबेद बाहिर सब भांती १
राम कीन्ह आपन जबहीं ते । भयउं भुवन भूषण तबहींते २
देखि प्रीतिसुनि बिनयसुहाई । मिलेउ बहोरि लषण लघुभाई ३
कहि निषाद निज नाम सुबानी । सादर सकल जुहारी रानी ४
जानि लषण समदीन्हि अशीशा । जियहु सुखीशतलाख बरीशा ५
निरखि निषादनगर नर नारी । भये सुखीजनु लषण निहारी ६
कहहिं लहेउ यहिं जीवन लाहू । भेंटेउ रामभरत भरिबाहू ७

सुनिनिषाद निजभाग्य बड़ाई । प्रमुदित मन लैचलेउ लिवाई ८
दो० सनकारे सेवक सकल चलेस्वामि रुखपाइ ।
घर तरु तर सर बाग बन बासदिवाये जाइ ॥ २० ॥

मैं निराकपटी और कादर कुबुद्धि कुजाति लोक वेद से सब भांति बाहर रहूं १ सो मुझ को जब से राम ने अपनाया है तब से मैं भुवन भूषण होगया हूं २ ऐसी उस की जब प्रीति देखी और सुहाई बिनती सुनी तबतो लक्ष्मण के अनुज शत्रुहन भी उस को मिले ३ फिरि निषाद ने अपना नाम अति बिनीतबाणी से कहि कर सब रानियों को जुहार की ४ रानियों ने उस को लक्ष्मण के समान जानिकर आशिष दिया ५ अयोध्या के नर नारी निषाद को देखि कर ऐसे सुखी हुये मानों लक्ष्मण को देखा ६ सब कहते हैं कि जीवन का लाभ तो इसने पाया है कि राम और भरत ने इस को भुजा पसारि कर भेंटा है ७ इस प्रकार निषादराज अपने भाग्य की बड़ाई सुनिकर महा प्रसन्न मन सब को लिवाइ लेचला ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सब सेवकों को जो सेनकारा अपने स्वामी की दृष्टिके देखतेही सब घाट छोड़ि २ कर आये और सब अयोध्या बासियों को यथायोग्य घर, वृक्ष, सरोवर, बाग, बनमें बास दिये ॥ २० ॥

शृंगबेर पुर भरत दीख जब । भे सनेह सब अंग शिथिल तब १
सोहत दिये निषादहिं लागू । जनुतनु धरे बिनय अनुरागू २
यहि बिधि भरतसेन सबसंगा । जाइ दीख जगपावनि गंगा ३
राम घाट कहं कीन्ह प्रणामा । भा मन मुदित मिले जनुरामा ४
करहिं प्रणाम नगर नर नारी । मुदित ब्रह्ममयबारिनिहारी ५
करि मज्जन मांगहि कर जोरी । रामचंद्र पद प्रीति न थोरी ६
भरत कहेउ सुरसरि तव रेनू । सकल सुखद सेवक सुरधेनू ७
जोरि पाणि मांगहुं वर येहू । सीय राम पद सहज सनेहू ८
दो० यहि बिधि मज्जन भरत करि गुरुअनुशासन पाइ ।
मातु नहानी जानि सब डेरा चले लिवाइ ॥ २१ ॥

शृंगबेर पुर को जब भरत ने देखा सनेह से सब अंग शिथिल होगये १ निषाद का सहारा दिये कैसे सोहते हैं मानों बिनय और अनुरागही मूर्तिवन्त है २ इस प्रकार भरत सब सेना को साथलिये जग पावनि श्री गंगा को जादेखा ३ रामघाट को भरत ने प्रणाम किया और मन उनका ऐसा प्रसन्न होगया मानों रामही मिले ४ नगर के सब नरनारी गंगा का ब्रह्म मयजल देखिकर प्रसन्न मन प्रणाम करते हैं ५

मज्जन करि हाथ जोरि कर रामके चरणों में अधिक प्रीति हो सब लोग बरमांगते हैं ६ भरत ने कहा हे गंगे यह तेरी रेणुका समस्त सुखदायक सेवकों को कामधेनु है ७ इसलिये मैं भी रामचन्द्र के चरणों में सहज स्नेह बरमांगताहूं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इस प्रकार भरत ने मज्जन किया और माताओं को भी नहानी जानि कर बशिष्ठ की आज्ञा से निवास को लिवाले चले ॥ २१ ॥

जहं तहं लोगन डेरा कीन्हा । भरत शोधि सबही कर लीन्हा १
गुरु सेवा करि आयसु पाई । राम मातु पहं गे दोउ भाई २
चरण चापि कहिकहि मृदुबानी । जननी सकलभरतसनमानी ३
भाइहिं सौंपि मातु सेवकाई । आप निषादहि लीन बुलाई ४
चले सखा करसों कर जोरे । शिथिल शरीर सनेह न थोरे ५
पूंछत सखहि सो ठाउं दिखाऊ । नेक नयन मनजरनि जुड़ाऊ ६
जहं सिय राम साथरी सोये । कहत भरे जल लोचन कोये ७
भरत बचन सुनि भयउ बिषादू । तुरत तहां लै गयउ निषादू ८
दो०. जहं शिंशिपा पुनीत तरु रघुबर किय बिश्राम ।
अति सप्रेम सादर भरत कीन्हेउ दण्ड प्रणाम ॥ २२ ॥

जहां तहां लोगों ने अपने अपने डेराकर दिये भरत ने सब का शोधि सम्हार किया १ गुरुदेव की सेवाकरके कौशल्या के पास दोनोंभाई गये २ तहां सबमाताओं का चरण चापन कोमलबाणी कहिकहि कर किया ३ फिरि तो माताओं की सेवकाई शत्रुहन को सौंपी और आपने निषाद को बुलालिया ४ सखा के हाथ से हाथ जोरे चले जाते हैं क्योंकि सनेह की अधिकाईसे भरत के सब अंग शिथिल हैं ५ सखासे कहते हैं कि सोठिकाना दिखाकर नेक तो मेरे नेत्र और मनकी जरनि को शीतल करो ६ जहां सीताराम कुश की साथरी पैरमेरे मारे सोये हैं इतना कहतेही भरत के नेत्रों के कोये जल से भरि आये ७ भरत के बचन सुनतेही निषाद को बड़ादुख हुआ और तुरंतही उनको तहां लिवालेगया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जहां शिंशिपा बृक्ष की छाया में रामचन्द्र ने बिश्राम किया रहे उस वृक्ष को बड़े प्रेम से भरत ने दडवत् प्रणाम किया ॥ २२ ॥

कुश साथरी निहारि सुहाई । कीन्ह प्रणाम प्रदक्षिण लाई १
चरण रेख रज आंखिन लाई । बनै न कहत प्रीति अधिकाई २
कणक बिंदुद्वय चारिक देखे । राखे शीश सीय सम लेखे ३

सजल बिलोचन हृदय गलानी । कहत सखा सन बचन सुबानी ४
श्रीहत सीय बिरह दुतिहीना । यथा अवध नर नारि मलीना ५
पिता जनक नहिं पटुतर केहीं । करतल भोगयोग जगजेहीं ६
ससुर भानुकुल भानु भुवालू । जेहिं सिहात अमरावति पालू ७
प्राणनाथ रघुनाथ गुसाईं । जो बड़ होत सो राम बड़ाईं ८
दो० पति देवता सुतीय मणि सीय साथरी देखि ।
बिहरत हृदय न हहरिमम पवितें कठिन बिशेखि ॥ २३ ॥

कुशकी सुन्दर सुहाई साथरी देखिकर भरत ने चारि प्रदक्षिणा करिके दण्डवत् प्रणामकिया ॥ १ चरणों की अंकुशादि रेखाओं की रजको नेत्रों से लगाया ऐसी अतिप्रीति कही नहींजाती है २ सीताके बस्त्रों के दोचारि बिंदु सुबर्ण के पाकर माथे पर रक्खे सीताही के समान माने ३ सजल नेत्रहोकर सखा से बोले ४ देखोयेभी सीताके बियोग से अयोध्याबासियों के समान मलीन हो रहे हैं ५ पितातो जिसके जनक हैं किसी को जिनकी पटुतर नहीं सोहतीहै ६ श्री महाराज दशरथ जिसकेस्वसुर हैं जिनको इन्द्र भी सिहातेहैं ७ रामचन्द्र सर्बेश्वर जिसके पतिहैं कि जोकोई बड़ा होताहैं सो उन्हीं के करने से होताहै ब्रह्मादयोसुरास्सर्बे बिष्णु माराधितापुरा स्वंस्वपदमनुप्राताकेशवस्य प्रसादतः ॥ ८ ॥ दोहा ॥ पतिदेवता अर्थात् पतिब्रता स्त्रियों की शिरोमणि ऐसी सर्बेश्वरी सीता की साथरी को भी देखि कर मेराहृदय बिदीर्ण नहीं होता है तो मैं जानता हूं कि कुछ कुलिश से भी अधिक कठोरहै ॥ २३ ॥

लालन योग लषण लघुलोने । भे न भाइ अस अहहिंन होने १
पुरजन प्रिय पितुमातु दुलारे । सिय रघुबीरहिं प्राणपियारे २
मृदु मूरति सुकुमार सुभाऊ । ताति बायु तन लागिन काऊ ३
ते बन सहहिं बिपति सबभांती । निदरे कोटि कुलिश यहिं छाती ४
राम जन्मि जगकीन्ह उजागर । रूपशील सुख सब गुण सागर ५
पुरजन परिजन गुरुपितु माता । रामसुभाव सबहिं सुखदाता ६
बैरिहु राम बड़ाई करहीं । बोलनि मिलनि बिनय मनहरहीं ७
शारद कोटि कोटि शतशेषा । करिन सकैं प्रभु गुणगण लेखा ८
दो० सुख स्वरूप रघुबंशमणि मंगल मोद निधान ॥

तेसोवत कुश डासिमहि बिधि गति अति बलवान । २४ ॥

लाड़ लड़ाने के योग्य हमारे छोटे भाई लक्ष्मण अति सलोने ऐसे किसी के भाई न हुये नहैं नहोंगे १ पुरजनों के अति प्यारे सब मातात्र्यों के लड़ायते सीताराम के प्राणों के प्यारे २ अति कोमलमूर्त्ति सुकुमार सुभाव तप्रपवन जिनके अंगमें कभी नहीं लगी ३ हायते अब बनबास में सब भांतिकी बिपत्ति सहतेहैं तो मेरी इसपरम कठोर छातीने कोटि कुलिशभी निदरि डारेहैं ४ रामने जन्मलेकर जगको उजागर करिदिया क्योंकिरूप, शील,सुख औ समस्त सद्गुणोंके सागरहैं ५ पुरबासी, परिवार, गुरु,माता, पिता रामका सुभाव सबही को आनन्द दाता है ६ बैरीभी तो रामकी बड़ाईही करते हैं बोलनि मिलनि नम्रता से उनके मनको भी हरते हैं ७ कोटि शारदा कोटि सहसानन शेषमिलि कर जिन के अनन्त गुणोंका लेखा नहीं करि हक्ते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सुखके स्वरूप रघुवंश केमणि आनन्द मंगल के निधान राम पृथ्वी पर कुशबिछा कर सोवते हैं बिधाताकी गति बड़ी बलवान है ॥ २४ ॥

राम सुनादुख कान नकाऊ । जीवन तरु जिमि जुगवत राऊ १
पलकनयनफणिमणिजेहिभांती । जुगवहिंजननिसकलदिनराती
तेअब फिरत बिपिन पदचारी । कंद मूल फल फूल अहारी ३
धिक् केकयी अमंगल मूला । भयसि प्राणप्रीतम प्रतिकूला ४
मैंधिक्धिक् अघउदधि अभागी । सबउतपात भये जेहिलागी ५
कुलकलंककरिसृजेउबिधाता । स्वामिद्रोहिमोहिकीन्हकुमाता ६
सुनि सप्रेम समुझाव निषादू । नाथकरिय कत बादि बिषादू ७
रामतुमहिं प्रियतुमप्रियरामहिं । यहनिर्योषदोष बिधिबामहिं ८
छं० बिधिबामकी करणी कठिन जेहिमातु कीन्ही बावरी
तेहिराति पुनिपुनि करहिं प्रभु सादर सरहनि रावरी
तुलसी नतुमसो रामप्रीतम कहतहौं सोहैं किये
परिणाम मंगल जानिअपने आनिये धीरज हिये
सो० अंतरयामीराम सकुच सप्रेम कृपायतन ।
चलिय करिय विश्राम यह बिचार दृढ़ आनि मन ॥२५॥

रामने तोदुख कभी कानोंसे भीनहीं सुना जीवनमूरिके समान राजा देखते रहे १ जैसे पलक नेत्रोंको औरसर्पमणि को देखेरहता है ऐसे सबमाता देखती रहीं २ तेराम

अबबनमें पयादे फिरतेहैं कंद,मूल,फल खातेहैं ३ इसअमंगल मूला केकयीको धिक्कार है जोप्राण प्रियतम रामसे प्रतिकूला हुई ४ औरजिसके निमित्त येसब उत्पात हुये हैं ऐसःमैं उसकोभी धिक्कारहै ५ बिधाता ने तोमेरेको कुलका कलंक करिके सृजा और इस कुमाता ने स्वामीको द्रोही करदिया ६ ऐसेभरतके बचन सुनिकर निषाद बोला हेनाथ वृथाविषादक्यों करतेहो ७ रामतो तुमको प्यारेहैं तुमरामको प्यारेहो यहसब दोष बिधाताको नियोग्रहे अर्थात्निःसंदेहहै ८॥ छन्द ॥ उसबामबिधाताकीकरणीमहा कठिनहै जिसने माताकी बुद्धिहरिली औररामतो उसराति तुम्हारीही सराहना करते रहे मैंशपथ किये कहता हूं रामको तुम्हारे समान कोई प्यारा नहीं है परिणाम को मंगल जानिकर धीरज धरिये ॥ सोरठा ॥ रामतो अंतर्यामी सप्रेम सकोची कृपायतन हैं ऐसा दृढ बिश्वास हृदयमें लाओ और चलिकर बिश्राम करो ॥२५॥ अयोध्याकांडमें यह चौपाइयों की आठवीं पचीसीहुई ८॥

रामनायनमः ॥

सखा बचन सुनि उरधरि धीरा । बासचले सुमिरत रघुबीरा १
यह सुधि पाइ नगर नर नारी । चले बिलोकन आरत भारी २
पर दक्षिणाकरि करहिंप्रणामा । देहिंकैकयिहिं खोरि निकामा ३
भरिभरि बारि बिलोचन लेहीं । बाम बिधातहिं दूषण देहीं ४
एक सराहहिं भरत सनेहू । कोउ कह नृपति निबाहेउ नेहू ५
यहिं बिधि रातिलोग सब जागा । भा भिनसार गुदारा लागा ६
गुरुहिं सुनाव चढ़ाइ सुहाई । नई नाव सब मातु चढ़ाई ७
दंडचारि महं भे सब पारा । उतरि भरत पुनिसबहिं सम्हारा८
दो० प्रात क्रिया करि मातुपद बंदि गुरुहिं शिरनाइ ।
आगे कियेनिषादगण दीन्हेउ कटक चलाइ ॥१॥

सखाके बचन सुनिहृदयमें धीरजधरा और रामका स्मरण करते बासको चले १ यहसुधि पाइकर नगरके नरनारी बडेआरत देखनेको चले २ प्रदक्षिणा करिके प्रणाम करतेहैं और केकयीको बड़ादोष देतेहैं ३ नेत्रोंमें जल भरिभरिलेतेहैं बाम विधाताको दूषणदेते हैं ४ एकतो भरत केसनेह को सराहतेहैं एक राजा के प्रेमके निवाहको प्रशंसतेहैं ५ इस प्रकार राति भर सबलोग जागे प्रात होतेही उतारा होने लगा ६ प्रथम सुन्दर सुहाई नावपर बशिष्ठको चढाया और नईनाव परसब माता चढ़ाईं ७ चारिघटिका में सब पारहोगये तब उतरिकरभरतने सबको सम्हारा ॥ ८ ॥ दोहा ॥

प्रातक्रिया करिके माताओर गुरुको बंदन किया फिर निषादों को आगे करि सब कटक चला दिया ॥ १ ॥

कियेउनिषाद राम अगवाई । मातु पालकी सकल चलाई १
साथ बुलाइ भाइ लघु दीन्हा । बिप्रन सहित गवन गुरुकीन्हा २
आपु सुरसरिहि कीन्ह प्रणामू । सुमिरे लषण सहित सियरामू ३
गवने भरत पयादेहि पायें । कोतल संग जाहिं डोरि यायें ४
कहहिं सुसेवक बारहिं बारा । होइय नाथ अश्व असवारा ५
राम पयादेहि पायं सिधाये । हमकहं रथ गज बाजि बनाये ६
शिरभर जाउं उचित असमोरा । सबते सेवक धर्म कठोरा ७
देखि भरत गति सुनिमृदु बानी । सब सेवक गण गरहिं गलानी ८
दो० भरत तीसरे प्रहर कहं कीन्ह प्रवेश प्रयाग ।
कहत रामसिय रामसिय उमगि उमगि अनुराग ॥ २ ॥

कटकके पीछे निषादनाथ गुहको अगमानी करके माताओं की पालकी भी चलादीं १ उनके पीछे शत्रुहन को बुलाकर बशिष्ठ कीसेवा में साथ करदिया तब द्विजदेवों समेत गुरुने भी गमन किया २ पीछेसे आपने उठिकर श्रीगंगा को प्रणाम और लक्ष्मण समेत सीताराम का स्मरण किया और पाय पयादेही चले सेवक लोग घोड़ोंको बाग पकरे कोतलही लिये जाते हैं ३।४ बारंबार सुसेवक कहते हैं हेनाथ अब बहुत दूरि आये अश्वारूढ़ हूजिये ५ भरत बोले राम तो यहां से पयादेही गये हैं हमारे लिये हाथी, रथ, घोड़े बनाये हैं ६ उचित तो मेरे को यह हैं कि यहां से शिरके भरजाऊं परंतु अशक्य हैं क्योंकि सबधर्मों से सेवक का धर्म अति कठिन है ७ ऐसी भरत की गति देखि और उनके बचन सुनि समस्त सेवकोंके गण ग्लानि से गरेजाते हैं ॥ ८ ॥ इस प्रकार भरत ने पयादेही तीसरे प्रहर को प्रयागराज में प्रवेश किया सीताराम सीताराम उच्चारण करते जाते हैं और बारंबार प्रेम उमगता आता है ॥ २ ॥

झलका झलकत पायन कैसे । पंकज कोश ओशकण जैसे १
भरत पयादेहि आये आजू । भयउ दुखित सब सकल समाजू २
खबरि लीन्ह सबलोग नहाये । कीन्ह प्रणाम त्रिबेणिहिं आये ३
सबिधि सितासित नीर नहाने । देइ दान महिसुर सनमाने ४
देखत श्यामल धवल हिलोरे । पुलक शरीर भरत करजोरे ५

सकल काम प्रद तीरथराऊ । बेद बिदित जग प्रगट प्रभाऊ ६
मांगहु भीख त्यागि निज धर्मू । आरत काह न करहिं कुकर्मू ७
असजियजानि सुजान सुदानी । सफल करहु जग याचक बानी ८
दो० अर्थ न धर्म न काम रुचि गति न चहौं निर्बान ।
जन्म जन्म रति राम पद यह बरदान न आन ॥ ३ ॥

चरणोंमें भरत के झलका कैसे झलकते हैं मानों कमल कोशोंपर ओसकणसोहतेहैं १ सबोंने जोयह सुधि पाई कि आज भरत पयादेही आयेहैं सुनतेही सब दुखी होगये २ प्रथम सब ने भरत की सम्हार करी तब नहाये फिरि आकर त्रिवेणी को प्रणाम किया ३ और बिधिवत् सित कहिये शुक्ल असित कहिये श्याम गंगा यमुना के जलमें स्नान किये और दान देकर तीर्थवासी द्विजदेव सन्माने ४ सीताराम के बर्णके समान गौर श्याम गंगायमुना के हिलोरे देखतही भरत का शरीर पुलका और हाथ जोरि करबोले ५ हे तीर्थराज आप समस्तकाम के दाताहैं लोक बेद दोनोंमें आपका प्रभावप्रगटहै ६ तातेमैं भी अपना उत्तम निज धर्म छोड़िकर मध्यमधर्मानुसार आपसे भीख मांगताहूं आरतजन कौनसा कुकर्म नहीं करते हैं ॥ बिष्णूपायोबिष्णुफलं सोत्तमोधर्म कीर्त्तित: अन्योपायोबिष्णु फलंमध्यम:परिकीर्त्तित: बिष्णू पायोऽन्यफलंसोऽधमोधर्म कीर्त्तित: ७ ॥ ऐसी जीमें जानिकर हे सुजान, दाता इस याचक की बाणी कोभी सुफल कीजिये ८ ॥ दोहा ॥ नतोमैं धन, धर्म, चाहता हूं न काम की रुचिहै न कैवल्यमोक्ष चाहताहूं जन्मान जन्म केवल रामके चरणोंमें अचल प्रीति रहै यही बरदान दीजिये ॥ ३

जानहिं राम कुटिल करि मोही । लोगकहौ गुरु साहेब द्रोही १
सीता राम चरण रति मोरे । अनुदिन बढ़हु अनुग्रह तोरे २
जलद जन्मभरि सुरति बिसारे । याचत जलपवि पाहन डारे ३
चातक रटनि धटत घटिजाई । बढ़े प्रेम सब भांति भलाई ४
कनकहि बाण बढ़ैजिमि दाहे । तिमि प्रीतम पद नेम निबाहे ५
भरत बचन सुनिमांझ त्रिबेनी । भइमृदु बाणि सुमंगल देनी ६
तात भरत तुम सब बिधि साधू । राम चरण अनुराग अगाधू ७
बादिगलानि करहुमन माहीं । तुम समरामहिं कोउप्रिय नाहीं ८
दो० तन पुलके हिय हर्ष सुनि बेणि बचन अनुकूल ।
भरत धन्य कहि धन्यसुर हर्षित बर्षहिं फूल ॥ ४ ॥

रामभेरेको कुटिल करिके भलेही जानो औरलोग सब गुरुद्रोही स्वामी द्रोहीभले होंकहो १ परंतु मेरेहृदयमें सीतारामके चरणोंकी प्रीति प्रतिदिन आपके अनुग्रहसे बढ़ाही करै २ मेघचाहो चातककी सुधिजन्म भरि भूलि जावै अथवा पानी मांगते गाज औरओलेही मारै ३ परंतु चातक अपनी रटनि नघटावै क्योंकि चातककी रटनि घटने से उसकी अनन्यता घटिजाती है उसकी भलाई तो दिनदिन प्रेम के बढ़ने होमें है ४ सुबर्ण कावर्ण जैसे दाहनेसेही बढ़ता है तैसेही भगवदा शक्त चित्तों को प्रशंसा स्वामी कीरुखाई परभीप्रेम बढ़ानेसेही है ५ ऐसे भरतके बचन सुनतेही मध्य त्रिबेणीसे सुमंगल दायक बाणीहुई ६ हेतात तुमतो सबप्रकारसे साधुहो और रामके चरणोमें तुम्हारा अगाधप्रेमहै ७ बृथा मनमें ग्लानि करतेहो तुम्हारे समान तोरामको कोई प्यारा नहींहै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसे अनुकूल बेणीके बचन सुनिकर भरतके हृदय में हर्ष और शरीर पुलकित होगया और आकाश से देवता धन्य भरत धन्य भरत ऐसे कहिकर हर्षित पुष्पबर्षाने लगे ॥ ४ ॥

प्रमुदित तीरथ राज निवासी। बैषानस बटु गृही उदासी १
कहहिं परस्पर मिलिदश पांचा। भरतसनेह शील शुचिसांचा २
सुनत राम गुणग्राम सुहाये। भरद्वाज मुनिबर पहं आये ३
दंड प्रणाम करत मुनि देखे। मूरतिवंत भाग्य निज लेखे ४
धाइ उठाइ लाइ उर लीन्हे। दीन्हि अशीश कृतारथ कीन्हे ५
आसन दीन्ह नाइ शिर बैठे। चहत सकुच गृहजनु भजिपैठे ६
मुनिपूछब कछुयह बड़ सोचू। बोले ऋषि लखि शील सकोचू ७
सुनहु भरत हमसब सुधि पाई। बिधि करतब परकछुन बसाई ८
दो० तुम गलानि जिय जनिकरहु समुझि मातु करतूति।
तात केकयिहिं दोषनहिं गई गिरामति धूति ॥ ५ ॥

भरतको देखिकर प्रयागराज के ब्रह्मचारी, गृहस्थ, बाणप्रस्थ, संन्यासी सबआनन्दित हैं १ जहां तहां दश पांच मिलि मिलिकर कहते हैं किभरत का शील सनेह सब पवित्र और यथार्थहै २ इसप्रकार अपने और रामके गुणग्राम सुनते भरद्वाज के पास आये ३ भरद्वाजने भरतको जोदंडवत् प्रणाम करते देखा तो मूर्त्तिवन्त अपने भाग्य हो जाने ४ दौरिकर उठाइ हृदयसे लगालिये और आशिष देकर कृतार्थ किये ५ बैठनेको आसनदिया तबतो भरत अति लज्जित नीचेको मुखकर ऐसेबैठे मानोंसकुच के घरमें भजि पैठा चाहतेहैं ६ यहभरतको बड़ासोचहै किमुनि कुछ पूछैंगे तोमैं कौन मुहंसे उत्तर देऊंगा ऐसा भरतका शील सकोच देखिकर भरद्वाजबोले ७ सुनो हेभरत

हमने सबसमाचार पायेहैं बिधाताके करतबपर हेतात किसीका कुछ नहीं बसाता है ८ ॥ दोहा ॥ तातें हे तात इस को माताकी करतूति समुझि कर मनमें ग्लानि मति करो क्योंकि कैकेयी को कुछदोष नहीहै सरस्वती उसकी बुद्धिको ठगि लेगई ॥ ५

यहू कहत भल कहै न कोऊ । लोक बेद बुध सम्मत दोऊ १
तात तुम्हार बिमल यश गाई । पाइहि लोकहु बेद बड़ाई २
लोक बेद सम्मत सबही का । जेहि पितु देइ सोपावहि टीका ३
राउ सत्यब्रत तुमहिं बुलाई । देत राज सुख धर्म बड़ाई ४
राम गवन बनअनरथ मूला । जो सुनि सकल बिश्वभय शूला ५
सो भावी बशरानि अयानी । करि कुचालि अंतहु पछितानी ६
तहां तुम्हार अल्प अपराधू । कहैसो अधम अयान असाधू ७
करतेहु राज तुमहिं नहिं दोषू । रामहिं होत सुनत संतोषू ८
दो० अबअति कीन्हेहु भरतभल तुमहिं उचित मतयेहु ।
सकल सुमंगल मूल जग रघुबर चरण सनेहु ॥ ६ ॥

ऐसा कहने परभी तो लोकमें कोई भला न कहेगा क्योंकि लोकमत और वेदमत बुधसम्मत दोनोंहैं भला उसी को बुधजन कहतेहैं जोलोक और वेद दोनोंके सम्मत होताहै १ सो तुम्हारा तो हेतात निर्मल यशगाइकर जीवलोकवेद दोनों में बड़ाई पावैंगे २ क्योंकि यहतो लोकवेद सबहीका सम्मतहै किजिस पुत्रको पिता राज्यदेता है सोई पाताहै ३ राजातो सत्यब्रतराज्य तुम्हीको बुलाकर देता रामका बनजाना अनर्थ कामूलहै जोसुनिकर बिश्वको शूलहोगया ५ सो भावीके बशहोकर अजान रानी यह कुचालि करिके अंतको पछितानी ६ तहां तुम्हारा थोरा भी अपराध जो कहैगा सो निरा अधम अज्ञानी असाधुही होगा ७ क्योंकि तुमको तो राज्य करनेमें भी कुछ दोष नहीं रहै किंतु रामको सुनतेही बड़ासंतोष होता ८ ॥ दोहा ॥ और अब तो हे भरत तुमने यहअतिही भला किया कि रामके मनानेको जातेहो तुमको यही मत उचित रहै क्योंकि रघुनायक रामचन्द्रके चरणोंका प्रेम संसारमें सकल सुमंगलमूलहै ॥ ६ ॥

सो तुम्हार धन जीवन प्राणा । भूरि भाग्य को तुमहिं समाना १
यह तुम्हार आश्चर्य न ताता । दशरथ तनय राम प्रिय भ्राता २
सुनहु भरत रघुपति मनमाहीं । प्रेम पात्र तुम समकोउ नाहीं ३
राम लषण सीतहिं अतिप्रीती । निशिसब तुमहिं सराहतबीती ४
जाना मर्म नहात प्रयागा । मग्न होत तुम्हरे अनुरागा ५

तुमपर असससनेह रघुबर को । सुखजीवन जगजसजड़ नरको ६
यह न अधिक रघुबीर बड़ाई । प्रणत कुटुम्बपाल रघुराई ७
तुमतो भरत मोर मत येहू । धरे देह जनु राम सनेहू ८
दो० तुमकहं भरत कलंक यह हमसब कहं उपदेश ।
राम भक्ति रस सिद्धिहित भायह समय गणेश ॥ ७ ॥

सो राम प्रेमही तुम्हारा जीवन धन और प्राणहै तो बड़भागी दूसरा कौन तुम्हारे समानहै १ सो हे तात यह तुम्हारा कुछ आश्चर्य्य नहीं है क्योंकि रामके परम प्रेमी महाराज दशरथके तो तुम पुत्रहो औररामके अनुजहीहो २ सुनो हे भरत रामके जान मैं तो उनके प्रेमका पात्रऔर कोई तुम्हारे समान नहीं है ३ रामलक्ष्मण सीता को सोराति बड़ी प्रीतिसे तुमको सराहते बीती ४ औरहमने तो मर्म प्रयागनहाते समय जाना कि संकल्पमें तुम्हारानाम लेतेही तुम्हारेही प्रेम में मग्नहोगये ५ तुमपर तो राम काऐसा अतिप्रेमहै जैसा सुखजीवने परजगमें जड़जीवोंका होताहै ६ यह कुछ रामकी अधिक बड़ाईनहीं है क्योंकिरामतो प्रणत परिवारके सदापालक चलेआयेहैं ७ तुमतोहेभरत मेरे मतसे मानो रामसनेहही मूर्त्ति धारेहैं ८ ॥ दोहा ॥ सुनो हे भरत तुमकोयह कलंक हमसबको उपदेशके निमित्तहै रामकी भक्ति रसरूपी सिद्धिकेलिये यह समय मानों गणेशही हुआ है ७ ॥

नवबिधुतात बिमलयश तोरा । रघुबर किंकर कुमुद चकोरा १
घटैनजग नभ दिनदिन दूना । उदित सदा अथवत कबहूना २
कोकत्रिलोक प्रीतिनितकरही । प्रभुप्रताप रबिछबिहिनहरही ३
निशिदिन सुखद सदा सबकाहू । ग्रसै न कैकयि करतब राहू ४
पूरण राम सुप्रेम पियूषा । गुरु अपमान दोष नहिं दूषा ५
राम भक्तिरस अमिय अगाहू । कीन्हेउ सुलभ सुधा बसुधाहू ६
भूप भगीरथ सुरसरि आनी । सुमिरत सकल सुमंगल खानी ७
दशरथ गुणगणबरणिनजाहीं । अधिककहाजेहि समकोउनाहीं ८
दो० जासु सनेह सकोच बश राम प्रगट भय आइ ।
जेहरहिय नयनन कबहुं निरखेनहीं अघाइ ॥ ८ ॥

तुम्हारा निर्मल यश तो हे भरत एक अद्भुतचन्द्रमाहै जिसके समस्त हरिदास कुमुद और चकोर होरहे हैं १ घटता नहींहै संसार रूपी आकाश में दिनप्रति बढ़ताहीहै सदा उदितही रहता है कभी अस्तनहीं होता है २ त्रिलोकबासी जीव इस

परप्रीतिही करते हैं रामचन्द्र के प्रताप का सूर्य्य भी इसकी छवि को नहीं हरता है ३ रात्रिदिन सदा सबको सुखदायकहीहै कैकेयीका क्रूर करतब राहुभी इसको नहीं ग्रसताहै ४ रामप्रेम सुधासे परिपूर्णहैं गुरुके अपमान का दोषभी इसको दूषित नहीं करता है ५ फिरि राम की भक्तिरस का अथाह अमृतोदधि का सुधा इसने पृथ्वी पर भीसबको सुलभकरि दिया ६ राजा भगीरथ तुम्हारे पूर्वपितर गंगालेआये सो त्रैलोक्य पावनी मंगल दायनी है ७ महाराज दशरथ के गुणतो कहेही नहीं जातेहैं अधिक तो कोई कहां होगा समानभी नहींहै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जिसके सनेह की सकोच से जगज्जन्मादि कारण रामही प्रगट होगये जिनको शिवने भी हृदय के नेत्रोंसे अघाय कर नहीं देखा ॥ ८ ॥

कीरति बिधुतुम कीन्ह अनूपा । जहं बस राम प्रेम मृगरूपा १
तात गलानि करहु जिय जाये । डरहु दरिद्रहिं पारस पाये २
सुनहु भरत हम झूंठ न कहहीं । उदासीन तापस बन रहहीं ३
सबसाधन करसुफल सुहावा । लषण रामसिय दरशन पावा ४
तेहिफलकरफल दरशतुम्हारा । सहित प्रयाग सुभाग हमारा ५
भरतधन्य तुमजगयशलयऊ । कहिअस प्रेम मगनमुनि भयऊ ६
सुनिमुनिबचन सभासद हरषे । साधु सराहिं सुमन सुर बरषे ७
धन्यधन्यधुनिगगन प्रयागा । सुनिसुनि भरत मगन अनुरागा ८
दो० पुलक गात हियराम सिय सजल सरोरुह नैन ।
करि प्रणाम मुनि मंडलिहिं बोले गद्गद बैन ॥ ९ ॥

तुमनेभी यहकीर्त्ति रूपीचन्द्रमा अनूपही कियाहै जिसमें राम प्रेम मृगरूप होकर निवास करताहै १ सोहेतात यह ग्लानि तोतुम वृथाही करतेहो कि पारसपाकर भी दरिद्रसे डरतेहो २ सुनो हेभरत हम झूंठ नहीं कहते हैं क्योंकिहम चतुर्थाश्रमी हैं और तपस्वी बनवासी हैं ३ सब साधनोंका तो सुंदर सुहाया फल हमने लक्ष्मण रामसीता का दर्शन पाया ४ और उसफलका फल हमको तुम्हारा दर्शन हुआ है समस्त प्रयागबासियों समेत आज हमारा धन्यभाग्य है ५ हेभरत तुमने जगमें यशले लिया तातें तुम धन्यहो ऐसेकहिकर भरद्वाज प्रेममें मग्न होगये ६ ऐसेभरद्वाज मुनि के बचन सुनिकर सभासदतो सब हर्षित होगये और देवता साधु सराहिकर पुष्प बर्षानेलगे ७ प्रयागमें और आकाशमें धन्यधन्य धुनि होने लगी सो सुनि कर भरत भी प्रेममें मग्न होगये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ पुलकित तो अंगहै हृदयमें सीताराम हैं सजल नेत्र हैं ऐसे भरत मुनि मंडली को प्रणाम करिके गदगद बचन बोले ॥ ९ ॥

मुनि समाज अरु तीरथ राजू । सांचेहु शपथ अघाइ अकाजू १
यहिथल जोकछुकहिय बनाई । तेहितें अधिक न अघ अधमाई २
तुम सर्वज्ञ कहौंसति भाऊ । उर अंतरयामी रघुराऊ ३
मोहिन मातु करतब करशोचू । नहिंदुखजियजग जानिहिपोचू ४
नाहिन डर बिगरहि परलोकू । पितहु मरणकर नाहिनशोकू ५
सुकृतसुयश भरिभुवन सुहाये । लक्ष्मण राम सरिससुतपाये ६
राम बिरह तजितन क्षणभंगू । भूप शोच कर कवन प्रसंगू ७
राम लषण सिय बिनुपगपनहीं । करिमुनिबेषफिरहिं बनबनहीं ८
दो० अजिन बसनफल अशन महिशयन डासि कुशपात ।
बसितरु तर नित सहत हिम आतप बरषा बात ॥ १० ॥

मुनि अनोंकातो यहां समाजहै और प्रयागराज थलहै इस थलमें बातकहना सांच हूं शपथही है और अति अकाज है १ तहां बनाइ कर कहने के समान न तो कोई पापहै न अधमता है २ तिसपर आप सर्वज्ञहैं और राम अन्तरयामी हैं मैं सतिभाव ही कहता हूं ३ कि मेरेको नतो माताके करतबको सोचहै न संसार में अपयश का शोच है न परलोक बिगरने का डरहै न पिताके मरने का शोचहै ५ पिता के तो सुहायेसुकृत और सुयश संसार में भरि रहेहैं जिनने राम लक्ष्मण सारिखे पुत्रपाये और राम के बियोग से क्षणभंग शरीर का त्याग किया तो राजा के शोचका कौन प्रसंगहै ६ । ७ ये जो राम लक्ष्मण सीता पादत्राण बिना पयादे बन बन में मुनि बेष बनाये मेरे निमित्त फिरते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ मृगचर्म ओढ़ते बिछातेहैं फलमूल खाकर रहते हैं कुशपात की साथरी पर सोवते हैं बृक्षोंके नीचे बसिकर नित्तही हिम और आतप बर्षा और पवन सहते हैं ॥ १०

यहदुख दाह दहै दिन छाती । भूख न बासर नींद न राती १
यह कुरोग का औषधि नाहीं । शोधेउं सकलबिश्वमन माहीं २
मातु कुमत बढ़ई अघ मूला । तेहि हमार हित कीन्ह बसूला ३
कलि कुकाठ कर कीन्ह कुयंत्रू । गाड़अवधिपढ़िकठिन कुमंत्रू ४
मोहिं लगियहकुठाट तेहिठाटा । घालेसि सब जगबारहबाटा ५
मिटै कुरोग राम फिरि आये । बसै अवध नहिं आन उपाये ६
भरतबचन सुनिसुनि सुखपाई । सबहि कीन्हिबहुभांति बड़ाई ७

तात करहु जनिशोच बिशेषी । सबदुख मिटहिं रामपद देखी ८
दो० करि प्रबोध मुनिवर कहेउ अतिथि प्राणप्रिय होहु ।
कंद मूलफल फूल हम देहिं लेहुकरि छोहु ॥ ११ ॥

इसदुख के दाह से दिनप्रति मेरी छाती दहती है दिनको तो भूख नहीं लगती और रातिको नीदनहींआतीहै १ इसकुरोगकी रामके बिना और कोई औषध नहींहै मैंने मनमें समस्त बिश्व शोधि देखीहै २ माताकी कुमत तो इस पापका मूल बढ़ई हुआहै उसने हमारे हितको बसूला किया ३ कलह रूपी कुकाठका यंत्र बनाया और चौदह बर्षकी अवधिका कुमंत्र पढ़िकर गाड़ि दिया ४ ऐसा मेरेलिये उसने यह सबकुठाट ठाटिकर सब बिश्वको बारहबाट करदिया ५ यह कुरोग रामके फिरिआनेहीसे मिटैगा और उपाय से अयोध्या सुबसनहीं बसैगी ६ भरतके बचन जो सबनेसुने अनेक भांतिसे सब बड़ाई करने लगे ७ भरद्वाज ने कहा हे तात तुम बिशेष शोच मत करो रामके चरण देखिकर सब दुख दूरि होजावेंगे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इसप्रकार भरत को प्रबोधकरि के फिरि भरद्वाज बोले हे भरत आज हमारे अतिथि हूजिये और जो कन्दमूल फल हमदेवें उसीको बहुत मानि लीजिये ॥ ११ ॥

सुनिमुनिबचन भरतहियशोचू । भयउकुअवसर कठिनसकोचू १
जानि गरुइ गुरु गिरा बहोरी । चरण बन्दि बोले कर जोरी २
शिरधरि आयसु करिय तुम्हारा । परम धर्म यह नाथ हमारा ३
भरत बचनमुनिबर मन भाये । शुचिसेवक सब निकटबुलाये ४
चाहिय कीन्ह भरत पहुनाई । कन्द मूल फल आनहु जाई ५
भलेनाथ कहितिन शिरनाये । हर्षित निजनिजकाज सिधाये ६
मुनिहिं शोचपाहुनबड़ नेवता । तसिपूजा चाहिय जस देवता ७
सुनिऋधिसिधिअणिमादिकआईं । आयसु होइ सोकरैं गुसाईं ८
दो० राम बिरह व्याकुल भरत सानुज सहित समाज ।
पहुनाई करि हरहुश्रम कहा मुदित मुनि राज ॥ १२ ॥

ऐसेभरद्वाजमुनि के बचन सुनतेही भरत के हृदय में बड़ा शोचहुआ कि यह तो इस कुसमय में कठिन संकोच हुआ १ फिरि बड़ोंकी आज्ञा को गरुई जानि उनके चरणों को प्रणाम करके बोले २ आप की आज्ञा को माथे मानि कर कीजिये यही हमारा परम धर्म हैं ३ भरतके बचन सुनिकर भरद्वाज ने सेवकों को बुलाया और कहा ४ भरत की आज पहुनाई किया चाहते हैं कन्द,मूल,फल जाकर ले आओ ५

भला नाथ कहिकर परम प्रसन्न अपने अपने काम को गये ६ मुनिने सोचाकि हमने बड़े पाहुने का निमंत्रण कियाहै जैसा देवता तैसी पूजा चाहिये भगवत नहीं यह तो भागवतहै हमारी योग सिद्धि कौन दिनकाम आवेगी ७ यह बिचारतेही ऋद्धि सिद्धिसब आईं और बोलीं जो आज्ञा होसो करैं ८ ॥ दोहा ॥ तबतो भरद्वाज बोले कि राम के बियोग से भरत भाई और सब समाज समेत व्याकुल हैं उनकी पहुनाई करिके सबका श्रम हरो ॥ १२ ॥

ऋधिसिधिशिरधरिमुनिबरबानी। बड़भागिनि आपुहिं अनुमानी १
कहहिंपरस्परसिधि समुदाई । अतुलितअतिथि राम लघुभाई २
मुनिपदबन्दिकरिय सोइआजू । होइ सुखीजेहि राजसमाजू ३
अस कहिरचेरुचिर गृहनाना । जोबिलोकि बिलखाहिंबिमाना ४
भोग बिभूति भूरि भरिराखे । देखत जिनहिं अमर अभिलाखे ५
दासीदास साज सबलीन्हे । जुगवत रहहिं मनहिं मन दीन्हे ६
सबसमाजसजिसिधिपलमांहीं । जो सुखसपनेहुंसुर पुरनांहीं ७
प्रथमहिं बास दिये सबकेहीं । सुन्दर सुखद यथा रुचि जेहीं ८
दो० बहुरि सपरिजन भरत कहं ऋषि आयसु अस दीन्हि ।
बिधिबिस्मयदायकबिभवमुनिबर तपबलकीन्हि ॥ १३ ॥

ऋद्धिसिद्धि ने भरद्वाज की आज्ञा को शिर पर धारण किया और आप को बड़ भागिनी माना १ समस्त सिद्धि परस्पर कहती हैं कि रामके भाई भरत अतोल अतिथि हैं २ ताते मुनिके चरणोंका आश्रय लेकर ऐसा समाज कीजिये जिससे समस्त राजसमाज सुखी होजावै ३ ऐसे कहिकर अति सुन्दर मंदिर बनाये जिनको देख कर बिमान भी बिलखाते हैं ४ भांति भांति के भोग बिभूति से भरदिये हैं जिन को देखकर देवता भी अभिलाषा करतेहैं ५ अनेक दासी और दास सब साज को लिये सब का मन लिये रहतेहैं ६ ऐसा समाज पल भरेमें साजि दिया जो सुख अमरावती में सपने में भी नहींहै ७ प्रथमहीते उनमें पुरवासियों को बास दे दिये सुन्दर सुखदायक जैसी जिसकी रुचि रहै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ फिरि परिवार समेत भरद्वाजने भरत को ऐसाही निवास करने की आज्ञादी परंतु उनके निवास के लिये बिधि बिस्मय दायक बिभव भरद्वाज ने अपने तपके बलसे रचे ॥ १३ ॥

मुनिप्रभावजब भरतबिलोका । सबलघु लगे लोकपति लोका १
सुख समाजनहिंजाइबखानी । देखत बिरतिबिसारहिं ज्ञानी २

आसन शयन सुबसन बिताना । बन बाटिकाबिहंगमृगनाना ३
सुरभिफूलफलअमियसमाना । बिमलजलाशयबिबिधिबिधाना ४
असन पान शुचिअमी अमीसे । देखि लोग सकुचात यमीसे ५
सुर सुरभी सुरतरु सबहीके । लखि अभिलाष सुरेश शचीके ६
ऋतु बसंत बहत्रिबिधि बयारी । सबकहं सुलभ पदारथचारी ७
स्रगचंदन बनितादिक भोगा । देखि हर्षबिस्मय वश लोगा ८
दो० संपति चकई भरत चक मुनि आयसु खिलवार ।
तेहि निशि आश्रम पींजरा राखेभा भिनसार ॥ १४ ॥

मुनिका प्रभाव जब भरतने देखा तो सबलोकपालों के लोक फीकेलगे १ जिनका सुख समाज कुछ कहाही नहीं जाताहै देखते ही ज्ञानी भी अपने वैराग को बिसारते हैं २ जिनमें बिचित्र आसन शय्या वस्त्र बितान सोहते हैं बन बाटिका और नाना प्रकारके बिहंग मृग बिचरते हैं ३ सुगंधित पुष्प फल अमृतके समान फरे हैं निर्मल जलाशय मधुर जलसे भरे हैं ४ भोजन पान पवित्र अमृतके समान बिद्यमानहैं जिनको देखिकर लोग संयमियों के समान सकुचते हैं ,५ कामधेनु और कल्पबृक्ष सबके मंदिरोंमेंहै जिनको देखिकर इन्द्र और इन्द्राणीको अभिलाषा होतीहै ६ बसन्तऋतु बिद्यमानहै शीतल मंद सुगन्ध पवन बहतीहै सबको चारों पदार्थ सुलभहैं ७ मालाचन्दन बनितादिक भोग बिद्यमान हैं देखिकर लोगोंको बड़ा बिस्मय होरहाहै ॥ ८ ॥ दोहा यहसब संपति तो चकई है भरत चक हैं मुनिकी आज्ञा खिलारी है उसने उस राति को आश्रम रूपी पिंजरेमें बरियाई राखा और प्रातःकाल हुआ ॥ १४ ॥

कीन्हनिमज्जन तीरथ राजा । नाइ मुनिहि शिरसहित समाजा १
ऋषि आयसु अशीश शिरराखी । करिदंडवत बिनय बहुभाषी २
पथिगति कुशलसाथ सबलीन्हे । चले चित्रकूटहि चित दीन्हे ३
रामसखा करि दीन्हेउ लागू । चलत देह धरिजनु अनुरागू ४
नहिं पदत्राण शीश नहिं छाया । प्रेमनेम ब्रत धर्म अमाया ५
रामलषण सियपंथ कहानी । पूछत सखहि कहत मृदुबाणी ६
राम बास थल बिटप बिलोके । उर अनुराग रहत नहिं रोके ७
देखि दशा सुरबरषहिं फूला । भईमृदु महिमग मंगल मूला ८
दो० कियेजाहि छाया जलद सुखद बहै बरबात ।

तसमग भयेउ न रामकहं जसभा भरतहि जात ॥ १५ ॥

शौच क्रियाके पीछे समाज समेत प्रयागराज में स्नान क्रिया और भरद्वाज मुनि को आकर प्रणाम किया १ ऋषिसे आज्ञा मांगी और अशीश पाई फिरि दंडवत्प्रणाम करिके बिनती करी २ बनके मार्ग के भेदी साथलिये और चित्रकूटके चलने को चित्तदिया ३ निषाद राज रामसखा के हाथकी लाग लगाये कैसे चलेजाते हैं मानों शरीर धरेराम प्रेमहीहैं ४ नतो चरणोंमें पादत्राण हैं न शीशपर छायाहै जिनकाप्रेम नेम धर्म ब्रतसब अमायक है ५ लक्ष्मण राम सीता के पंथकी कथा सबोंसे पूछते जातेहैं सो मधुरकोमल बाणीसे कहता जाताहै ६ तहां रामके बासको थलऔर वृक्षोंको देखिकर तो हृदयमें प्रेमरोकने से रुकताही नहींहै ७ ऐसी प्रेमदशा भरत की देखिकर देवतातो मार्गमें पुष्प बिछाते जातेहैं और पृथिवी आप अति कोमल मार्ग मंगलमूला होगईहै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ मेघ ऊपरसे छाया किये जाते हैं और सुन्दर सुखदायक शीतल मंद सुगंध पवन बहती जाती है ऐसा सुखदायक मार्ग रामको भी न हुआ रहै जैसा भरत को जाते में हुआ ॥ १५ ॥

जड चेतन जग जीव घनेरे । जे चितये प्रभु जिन्ह प्रभु हेरे १
तेसब भये परम पद योगू । भरत दरश मेटा भव रोगू २
यहबड़ि बातभरतकी नाहीं । सुमिरत जिनहिं राममनमाहीं ३
बारेक राम कहत जग जेऊ । होत तरण तारण नर तेऊ ४
भरत रामप्रिय पुनि लघु भ्राता । कसन होइ मगमंगलदाता ५
सिद्ध साधुमुनि वरअसकहहीं । भरतहि निरखि हर्षहियभरहीं ६
देखि प्रभाव सुरेशहि शोचू । जगभल भलेहि पोच कहं पोचू ७
गुरुसन कहेउ करिये प्रभुसोई । रामहिं भरतहि भेट नहोई ८
दो० राम सकोची प्रेमबश भरत सुप्रेम पयोधि ।
बनीबात बिगरन चहति करेहु यतन छल शोधि ॥ १६ ॥

मार्गकेजड़ और चेतन जो जीवहैं जिनको रामने देखा और जिनने रामको देखा रहे ते सब परम पदके अधिकारी होगये रहैं अब भरतके दर्शनने उनको संसार में आवा गमन का रोगही मेटि दिया १ भरतकीयह कुछबड़ी बड़ाई नहींहै जिनको मन में राम स्मरण किया करतेहैं ३ जे कोई एकबारराम कहतेहैं ते तारण तरणहोजाते हैं ४ भरत तोरामके प्यारे औरछोटे भाईहैं उनको मार्ग मंगलदाता क्यों न होवै ५ इसभांति बनके सिद्धऔर साधु भरतकी बड़ाई करतेहैं और भरतको देखिकर जन्म सफल पातेहैं ऐसा प्रभाव भरतको देखिकर इन्द्रको शोच हुआ संसार भलेको तो

भला और बुरेको बुराही सूझिपरताहै ७ अपने गुरुबृहस्पति से कहा हेनाथ सो उपाय कीजिये जिससे रामऔर भरतसे भेट न होवै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ राम तो सकोची और प्रेमके बशहैं और भरत प्रेमके समुद्रहैं बनीहुई बात बिगरा चाहती है तातें छल शोधिकर कोई उपाय कीजिये ॥ १६ ॥

बचन सुनत सुरगुरु मुसुकाने । सहस नयन बिनुलोचन जाने १
कहगुरुबादि क्षोभछल छांडू । यहां कपट करि होइहि भांडू २
मायापति सेवक सन माया । करिये तो उलटि परे सुरराया ३
तबकछु कीन्ह राम रुखजानी । अब कुचालिकरि होइहिहानी ४
सुनु सुरेश रघुनाथ सुभाऊ । निज अपराध रिसाहिं न काऊ ५
जो अपराध भक्त कर करई । राम रोष पावक सो जरई ६
लोकहु बेद बिदित इतिहासा । यह महिमा जानहिं दुर्बासा ७
भरत सरिस को राम सनेही । जग जपु रामराम जपु जेही ८
दो० मनहु न आनिय अमरपति रघुपति भक्त अकाज ।
अयश लोक परलोक दुख दिनदिन शोक समाज ॥ १७ ॥

बचन सुनतेही देवगुरु बृहस्पति मुसुकाने और सहस्राक्षइंद्र अंधेही जाने १ तब तो बृहस्पतिने कहा हे इंद्र यह तुम्हारा छलक्षोभ बृथाहै इसको छोड़ो यहां कपट करने से तुम्हारा बिगारही होगा २ मायापति भगवान के सेवकके साथ जो माया करे तो उसीपर उलटि परती है ३ सपनेहुं सुख न संत द्रोही कहं सुरतरु सो बिष फरनि फरै। तबजो कुछ किया सो रामका हार्द जानिकर किया रहै अब कुचालि करनेसे हानिही होगी ४ सुनो हे इंद्र रामचन्द्र के सुभावको कि अपने अपराधसे तो कभी किसीपर कोप नहीं करते हैं ५ परंतुजो कोई उनके भक्तका अपराध करता है सो रामके रोष की प्रचंड अग्निमेंनि:संदेह जरताहै ६ लोक और वेद में इतिहास बिख्यात है कि इस महिमाको राजा अम्बरीष भगवद् भक्त का अपचार करिके साक्षात् रुद्रावतार दुर्बासा मुनि जानते हैं ७ सो भरतके समान भला रामसनेही दूसरा कौन है कि जग तो राम को जपताहै और राम भरतको जपते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तातें हे अमरपति इंद्र तुम रामभक्त का अकाज कभी मनमेंभी न लाना क्योंकि लोक में तो अपयश और परलोक में दुख और सदा शोकही होता है ॥ १७ ॥

सुनु सुरेश उपदेश हमारा । रामहि सेवक परम पियारा १
मानत सुख सेवक सेवकाई । सेवक बैर बैर अधिकाई २
यद्यपि सम नहिं राग न रोषू । गहहि न पाप पुण्य गुण दोषू ३

कर्म प्रधान बिश्व करि राखा । जो जस करै सो तस फलचाखा ४
तदपि करहिं सम बिषम बिहारा । भक्त अभक्त हृदय अनुसारा ५
अगुण अमान अलेख एकरस । राम सगुण भये भक्त प्रेमबस ६
राम सदा सेवक रुचि राखी । बेद पुराण साधु सब साखी ७
असजिय जानि तजेहु कुटिलाई । करेउ भरत परप्रीति सुहाई ८
दो० राम भक्त परहित निरत परदुख दुखी दयाल ।
भक्त शिरोमणि भरततें जनि डरपेहु सुरपाल ॥ १८ ॥

हे देवराज हमारे उपदेशको सुनो कि रामको सेवकही परम प्याराहै १ सेवकही की सेवकाई से तो सुख मानते हैं और सेवकही के वैरसे वैर बढ़ाते हैं २ यद्यपि राम समानहैं न किसी पर उनका अनुराग है न किसीसेद्वेषहै न किसीका पुण्य पापग्रहण करते न गुणदोष लेतेहैं ३ बिश्वका कर्म बिश्वही केलिये प्रधान करि रक्खाहै जो जैसा करताहै सो तैसाही फल भोगताहै ४ तोभी सम बिषम विहार भक्त अभक्तों के अनुसार करतेहैं अर्थात् अभक्तोंके पुण्यपाप गुण दोष उन्हीं को भोगनेपड़ते हैं और भक्तों के कर्म ईश्वर आपहरलेता है ॥ अनन्याश्चिन्तयंतोमांयेजनाः पर्य्युपासतेतेषांनित्याभियुक्तानां योगक्षेमवहाम्यहं ॥ अहंत्वांसर्वपापेभ्योमोक्षयिष्यामिमाशुच ५ जो राम अगुण अलख और एक रसहैं सो भक्तोंही के प्रेमके बश सगुणहुयेहैं ६ रामने सदा सेवकोंहीं की रुचिराखीहै इसके वेदपुराण संतसब साक्षीहैं ७ यह विचारि कुटिलता छोड़िकर भरत पर प्रीति करो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ रामभक्त सदापर उपकारीहीहोतेहैं तातेभक्तशिरोमणि भरतसे हे इन्द्र तुम भय मतिकरो ॥ १८ ॥

सत्य संध प्रभु सुरहित कारी । भरत राम आयसु अनुसारी १
स्वारथ बिबश बिकल तुम होहू । भरतदोष नहिं राउर मोहू २
सुनि सुरपति सुरगुरु बरबानी । भाप्रबोध मनमिटी गलानी ३
बर्षि प्रसून हर्षि सुर राऊ । लगे सराहन भरत सुभाऊ ४
यहिबिधि भरत चलेमग जाहीं । दशा देखिमुनि सिद्ध सिहाहीं ५
जबहि रामकहि लेत उसासा । उमगत प्रेम मनहु चहुं पासा ६
द्रवहिं बचनसुनि कुलिश पषाणा । पुरजनप्रेम न जाय बखाना ७
बीचबास करि यमुनहि आये । निरखि नीर लोचन जलछाये ८
दो० रघुबर बरण बिलोकि वर बारिसमेत समाज ।

होत मगन बारिधि बिरह चढ़े विवेक जहाज ॥ १९ ॥

रामतो सत्य संकल्प और सदा हमारे हितकारी हैं और भरत रामके आज्ञाकारी हैं १ स्वार्थके मारे तुम वृथा बिकल होतेहो भरत का कुछदोष नहींहै यहसब तुम्हारा ही अज्ञान है २ इन्द्रने जो यह अपने गुरुकी वाणी सुनी तो प्रबोध होगया और ग्लानि दूरिहुई ३ हर्षित होकर पुष्प बरसाने लगे और भरतके स्वभाव को सराहने लगे ४ इस प्रकार भरत मार्ग में चलेजाते हैं जिनकी दशा देखिकर सिद्धमुनि सिहाते हैं ५ जबराम कहिकर उसास लेतेहैं तो चारों ओर को प्रेम उमगता है ६ प्रेमभरे वचनों को सुनिके कुलिश पाषाणभी द्रवते हैं तो पुरजनों का प्रेम कैसे कहा जाताहै ७ मार्गमें बीच बास करिके यमुना पर आये उसके जलके देखतेही भरत के नेत्रजलसे छागये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ रामचन्द्रके बर्ण के समान यमुनाका श्यामजल देखिकर भरत सब समाज समेत बिरहकेसमुद्र में आपको बूड़ते जानिकर ज्ञानके जहाज परबैठे ॥१९॥

यमुन तीरतेहि दिनकरि बासू । भयउ समय सम सबहि सुपासू १
रातिहि घाट घाट की तरणी । आईं अगणित जाहिं न बरणी २
प्रात पार भे एकहि खेवा । तोषे राम सखा की सेवा ३
चले नहाइ नदिहि शिर नाई । साथ निषाद नाथ लघु भाई ४
आगे मुनिवर बाहन आछे । राज समाज जाइ सब पाछे ५
तेहि पाछे दोउ बंधु पयादे । भूषण बसन बेष सुठिसादे ६
सेवक सुहृद सचिव सब साथा । सुमिरत लषण सीय रघुनाथा ७
जहं जहं राम बास बिश्रामा । तहं तहं करहिं सप्रेम प्रणामा ८
दो० मग बासी नरनारि सब धाम काम तजि धाइ ।
देखि स्वरूप सनेह बश मुदित जन्म फलपाइ ॥ २० ॥

उसदिन यमुनाके इसीपार बसे तहां समयके समान सबको सुपासहुआ १ निषाद राजकी आज्ञासे रातिही में घाटघाट की नाव अनेक आगईं २ प्रात होतेही एकही खेवामें सबपार होगये ऐसी रामसखा की सेवासे भरतबड़े संतुष्ट हुये ३ फिरितो उतरिके समाज समेत नहाये और यमुनाको प्रणाम करिके शत्रुहन और निषाद नाथगुह समेतचले ४ आगेतो मुनिवर वशिष्ठ सुन्दर बिमान पर द्विज देवों समेत चलेजातेहैं और उनके पाछे सब राज समाज है ५ सबके पाछे दोनोंभाई साधारण भूषण वस्त्र धारण किये जातेहैं ६ सेवक मंत्री मित्रसब साथहैं राम राम स्मरण करते चलेजाते हैं ७ जहां जहां रामके बास बिश्राम देखते हैं तहां तहां बड़े प्रेमसे प्रणाम करतेहैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ मगवासी नरनारी सुधि पाकर अपने अपने घरोंके सब कामों को छोड़ि

छोड़ि कर देखने को सबदौरते हैं और दोनों भाइयोंके सुन्दर रूपको देखिकर बड़े हर्षित होतेहैं और जन्मका फलपाते हैं ॥ २० ॥

कहहिं सप्रेम एकएक पाहीं । राम लषण सखिहोहिं किनाहीं १
वयबपु बरण रूपसोइ आली । शील सनेह सरिस समचाली २
बेषन सो सखि सीयन संगा । आगे अनी चलै चतुरंगा ३
नहिं प्रसन्न मुखमानस खेदा । सखि संदेह होइ यहि भेदा ४
तासु तर्कतिय गणमन मानी । कहहिं सकल तेहिसमन सयानी ५
तेहि सराहि बाणी फुर पूजी । बोली मधुर बचन तिय दूजी ६
कहि सप्रेम सबकथा प्रसंगू । जेहि बिधि राम राज रस भंगू ७
भरतहि बहुरि सराहन लागीं । शील सनेह सुभाय सभागीं ८

दो० चलत पयादे खातफल पिता दीन्ह तजि राज ।
जात मनावन रघुबरहि भरत सरिस को आज ॥ २१ ॥

बड़े प्रेमसमेत स्त्री जन एकों से एक कहतीहैं देखोतो हेसखियो ये दोनों रामलक्ष्मणहैं वानहीं हैं १ वयतो इनकी उतनीही है शरीर भी उन्हींकेसे हैं रूप भी तैसेही हैं वर्ण भी श्याम गौर उन्हीं कैसे हैं शील सनेह चाल भी समानही है २ परंतु वेषतैसा नहीं है और सीता साथ नहीं हैं और आगे इनके चतुरंगिणी सेना चली जाती है ३ मुख इनके प्रसन्न नहीं हैं मनमें बड़ा खेद है इनभेदों से संदेह होता है ४ उसकी यह तर्क सबसखियों के मनमें समागई कहने लगीं कि हेसखी तेरे समान कोई चतुर नहींहै ५ इस प्रकार उसकी प्रशंसा करी और उसकी तर्कको सत्यकहिकर दूसरी सखीबोली ६ प्रेमसमेत कथाका सब प्रसंग कहा जिस भांति रामके राज रसका भंगहुआ ७ फिरि भरत के सनेह शीलको सभागी सराहने लगी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ देखो रामके सनेहसे रामही के समान पयादे चलते हैं फल भोजन करतेहैं पिता के दिये हुये राजको छोड़ि कर रामके मनावने को जातेहैं इनके समान दूसरा कौनधन्यहै॥ २१

भायप भक्ति भरत आचरणू । कहत सुनत दुखदूषण हरणू १
जो कछु कहिये थोर सखि सोई । राम बंधु अस काहेन होई २
हम सब सानुज भरतहि देखे । भईं धन्य युवती जन लेखे ३
सुनिगुणदेखि दशापछिताहीं । कैकयि जननि योग सुतनाहीं ४
कोउकह दूषणरानिहिनाहिन । बिधिसबकीन्हहमहिजोदाहिन ५

कहांहमलोक वेदबिधि हीनी । लघुकुलतिय करतूति मलीनी ६
बसहिं कुदेश कुगांउ कुठामा । कहं यह दरशपुण्य परिणामा ७
असआनन्दअचरजप्रतिग्रामा । जनु मरु भूमि कलपतरु जामा ८
दो० भरत दरश देखत खुलेउ मग लोगन के भाग ।
जनु सिंह लवासिन्ह भयेउ बिधिबश सुलभ प्रयाग ॥ २२

भरत के भायप भक्ति का आचरण कहते सुनते सबके दुःख दूषण का हरता है १ यह सुनिकर और बोलीं हे सखी जो कुछ कहिये इनका सो थोड़ाही है राम के भाई हैं ऐसे क्यों नहोवें २ हम सब भाई समेत भरत को देखिकर युवती जनों के लेखे में धन्य हूं ३ कोई एक भरत के गुणों को सुनि और उनकी दशाको देखिकर पछिताती हैं और कहती हैं कि कैकेयी माता के योग्य यह पुत्र नहीं हैं ४ कोई एक कहती हैं रानी को कुछभी दूषण नहीं है यह संयोग सब बिधाताहीने किया है जो आज हमको दाहिना है ५ देखो कहां तौ हम लोक वेद बिधि में हीन नीच कुलकी नारी महा मलीन करतूति ६ कुदेश कुगाउं कुठौर में बसेहैं और कहां इनका दर्शन उत्तम पुण्यों का फल ७ इसप्रकार के आनन्द और आश्चर्य गाउं गाउं प्रति होते जाते हैं मानों मरु देश की रेतिल भूमि में कल्प वृक्ष उपना है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ भरत के दर्शन करतेही मगवासी लोगों के भाग ऐसे खुलि गये हैं मानों सिंहल द्वीप निवासियों को दैवयोग से तीर्थराज प्रयागही सुलभ होगया है ॥ २२

निजगुणसहित रामगुणगाथा । सुनतजाहिं सुमिरतरघुनाथा १
तीरथमुनि आश्रम सुरधामा । निरखिनिमज्जहिंकरहिंप्रणामा २
मनहीं मन मांगहिं बर येहू । सीय राम पद पद्म सनेहू ३
मिलहिं किरात कोलह बनबासी । बैषानस बटुयती उदासी ४
करि प्रणाम पूछहिं जेहितेही । केहि बन राम लषण बैदेही ५
तेप्रभु समाचार सब कहहीं । भरतहिंदेखि जन्म फललहहीं ६
जेजन कहहिं कुशल हमदेखे । तेप्रिय राम लषण समलेखे ७
यहिबिधि बूझत सबहिसुबानी । सुनत राम बनबास कहानी ८
दो० तेहिबासर बसिप्रातहीं चलेसुमिरि रघुनाथ ।
राम दरश की लालसा भरत सरिस सब साथ ॥ २३ ॥

अपने गुणों समेत राम के गुणों की कथा सुनते २ और राम राम कहते चले जाते हैं १ जहां तीर्थ आते हैं तहां बिधिवत् स्नान करते हैं जहां मुनि आश्रम

और हरि मन्दिर देखते हैं तहां जाकर प्रणाम करते हैं २ और मनही मन में सीता राम के चरण कमलों में प्रेम वर मांगते हैं ३ जो मार्ग में कोल्ह किरात बणबासी और बानप्रस्थ, ब्रह्मचारी, संन्यासी मिलते हैं उन सब को प्रणाम करि के पूछते हैं कि राम लक्ष्मण सीता कौन बनमें रहते हैं ४। ५ तेसब राम के समाचार कहते हैं और भरत को देखिकर जन्म का फल पाते हैं ६ जो कोई कहते हैं कि हमने कुशल देखे हैं तिनको तो भरत राम लक्ष्मणही के समान प्यारा मानते हैं ७ इसप्रकार सब को पूछते और राम की बनबास कथा सुनते चले जाते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ उसदिन बनमें बास करि प्रातही राम राम कहते चले अब आज राम के दर्शन की लालसा भरतही के समान सब साथियों को होरही है ॥ २३ ॥

मंगल शकुन होहिं सब काहू । फरकहिं सुखद बिलोचन बाहू १
भरतहि सहितसमाज उछाहू । मिलिहहिं राम मिटिहि दुखदाहू २
करत मनोरथ जसजिय जाके । जाहिं सनेह सुधा जनु छाके ३
शिथिल अंगपग डगमग डोलहिं । बिह्वल बचनप्रेमबशबोलहिं ४
रामसखा तेहि समय दिखावा । शैल शिरोमणि सहजसुहावा ५
जासु समीप सरित पयतीरा । सीय समीप बसहिं दोउबीरा ६
देखि करहिं सबदंड प्रणामा । कहिजय जानकिजीवन रामा ७
प्रेम मगन अस राज समाजू । जनुफिरि अवध चले रघुराजू ८
दो० भरत प्रेम तेहिसमय जस तसकहि सकहिनशेषु ॥
कबिहि अगम जिमि ब्रह्मसुख अह मम मलिन जनेषु २४॥

अबतो सबको मंगल शकुन होने लगे और सबके सुखदायक नेत्र और भुजा फरकने लगे १ भरत को सब समाज समेत ऐसा उत्साहहै कि राम मिलेंगे और दुख दाह सबदूरि होंगे २ जैसा जिसके जीमेंहै सो तैसा मनोर्थ करते हैं और सनेहके सुधामें मानों छकेचले जाते हैं ३ शिथिल तो सबके अंगहैं पांव डगमग डोलते हैं और गद् गद् बचन प्रेमके बशबोलते हैं कि उसी समय रामसखा निषादराजने भुजा उठाकर परम सुन्दर शैल शिरोमणि चित्रकूट पर्बत सबको दिखाया ४ ५ जिसके निकट पयस्विनी नदीकेतट सीता समेत राम लक्ष्मण दोनों वीर बास करतेहैं ६ उसको देखिकर सबदण्डवत् प्रणामकरते हैं और जानकी जीवन रामकी जय उच्चारण करतेहैं ७ प्रेममें ऐसामग्न सबराज समाजहै मानों राम अयोध्याही को फिरिचले ॥ ८ ॥ दोहा ॥ भरतके हृदय में उस समय जैसाप्रेम है उसको तो शेषभी नहीं कहि सकतेहैं कबिजनों में अहंकार ममता से मलिन चित्तोंको जैसाब्रह्म सुखअगम है ॥

सकल सनेह शिथिल रघुबरके। गये कोसद्वय दिनकर ढरके १
जल थल देखि बसे निशिबीते। कीन्ह गमन रघुनाथ पिरीते २
उहां राम रजनी अवशेखा। जागे सीय स्वप्न असदेखा ३
सहित समाज भरत जनु आये। नाथबियोग ताप तनताये ४
सकल मलिन मनदीन दुखारी। देखी सासु आन अनुहारी ५
सुनि सिय स्वप्न भरेजल लोचन। भयेशोच बशशोच बिमोचन ६
लषण स्वप्न यहनीक न होई। कठिन कुचालि सुनाइहि कोई ७
असकहि बंधु समेत नहाने। पूजि पुरारि साधु सनमाने ८

छंद सनमानि सुरमुनिवंदिबैठे उतरदिशि देखतभये ॥
नभधूरिखगमृग भूरिभागे बिकलप्रभु आश्रमगये ॥
तुलसीउठेअवलोकि कारणकाह चित सचकितरहे ॥
सबसमाचार किरातकोलहन आइतेहि अवसरकहे ॥

सोरठा सुनतसुमंगल बैन मनप्रमोद तनपुलक भर ॥
शरद सरोरुह नैन तुलसीभरे सनेहजल॥ २५ ॥

रामके सनेहसे सब शिथिल हैं दोही कोसगये पर सूर्य्य अस्त होगये १ जलथल सुन्दर देखिकर बसिरहे प्रात होतेही फिरि पयान किया २ उहां कुछ रातिरहे राम जागे तबसीता ने अपना देखा सपना कहा ३ हे नाथ समाज समेत मानों भरत आयेहैं और आपके बियोगसे संतप्तहैं ४ और सबसासु दीनदुखी औरही भांतिकी देखी हैं ५ सीताका सपना सुनतेही सजल नेत्र और शोचवश राम होगये ६ बोले हे लक्ष्मण यह सपना भला न होगा कोई महा कुचाली सुनावैगा ७ ऐसेकहिकर भाईसमेत नहाये और शिवपूजन करिकरिके द्विजदेवों को सन्माना ॥ ८ ॥ उत्तर दिशा को जो देखा आकाश में धूरि पूरितहै और खग मृग भयभीत चले आतेहैं चकित होउठे कौन कारणहै कोल्ह किरातोंने सब आकर कहा सुमंगल बचन सुनतेही मन हर्षित और पुलकित होगये कमल से नेत्र सनेह के जलसे भरिआये ॥ २५ ॥

यह चौपाईयों कीनवीं पचीसी अयोध्या कांड कीहुई॥ ९ ॥

बहुरि शोच बस भे सियरमनू। कारण कवन भरत आगमनू १
एक आइ अस कहा बहोरी। सेन संग चतुरंग न थोरी २
सो सुनि रामहिं भा अति शोचू। पिता बचन उत बंधु सकोचू ३

भरत सुभाव समुझि मनमाहां । प्रभुचितहितथितिपावतनाहीं ४
सावधान तब भे यह जाने । भरत कहे महं साधु सयाने ५
लषणलखा प्रभुहृदय खभारू । कहतसमयसम नीतिबिचारू ६
बिनु पूछे कछु कहौं गुसाईं । सेवक समय न ढीठ ढिठाई ७
प्रभु सर्बज्ञ शिरोमणि स्वामी । आपनि समुझ कहौं अनुगामी ८
दो० नाथ सुहृद सुठि सरल चित शील सनेह निधान ॥
सब पर प्रीति प्रतीति जिय जानिय आप समान ॥ १ ॥

फिरि तो सर्बज्ञ शिरोमणि सर्वान्तरयामी सीता रमण राम अपना नर नाट्य करते हुये शोचके वश होगये कि यहां भरत के आनेका कौन कारण है १ इतने में एकने आकर कहा कि उनके तो साथ में चतुरंगिणी सेना अपार है २ सो सुनिकर रामको औरभी शोच हुआ इतमें तो पिताके बचन और उतमें भाईके मनाने का संकोचहै ३ भरतके अति प्रेम सुभावको मनमें समुझि कर रामचन्द्र अपने चित्तको अवलंब नहीं पाते हैं ४ फिरि जानि कर सावधान होगये कि भरत साधु सयाने और हमारे कहे में हैं ५ लक्ष्मणने जो स्वामीके चित्तको क्षोभ देखा समयके समान नीति कहने लगे ६ हे स्वामी आपतो सर्बज्ञ शिरोमणि हैं दास अपनी समुझ बिना पूछे कहता है सो क्षमा करना क्योंकि सेवक समय पर ढिठाई से ढीठ नहीं होता है ७ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ आपतो सुहृद और अति सरल चित्त शील सनेह के निधान हो और सब में प्रीति और प्रतीति अपने जीमें अपनेही समान जानते हो ॥ १ ॥

बिषयी जीव पाइ प्रभुताई । मूढ मोह बस होहिं जनाईं १
भरत नीतिरत साधु सुजाना । प्रभुपद प्रेम सकल जगजाना २
तेऊ आज राज पद पाई । चले धर्म मर्य्याद मिटाई ३
कुटिल कुबंधु कुअवसर ताकी । जानि राम बनबास एकाकी ४
करि कुमंत्र मन साजि समाजू । आये करन अकंटक राजू ५
कोटि प्रकार कल्पि कुटिलाई । लाये दल बटोरि दोउ भाई ६
जोजिय होति नकपटकुचाली । केहिसुहाति रथबाजिगजाली ७
भरतहि दोष देइको जाये । जग बौराइ राज पद पाये ८
दो० शशि गुरु तिय गामी नहुष चढ़ेउ भूमि सुर यान ।
लोक वेदतें बिमुख भा अधम को बेणु समान ॥ २ ॥

विषयी जीव प्रभुताको पाकर मूढ़ मोह के बश हो जाते हैं और अपनेको सब पर जनाते हैं १ देखो भरततो बड़े नीति रत साधु और सुजान रहैं और आप के चरणों में उनका प्रेम संसार जानता है २ सो भी आज राज्यपद को पाकर धर्मकी मर्य्यादा को तोरि कर चले ३ बड़े कुटिल कुबंधु कुसमय ताकि कर और आप को बनमें अकेला जानि कर मनमें कुमंत्र करिके समाज लेकर अकंटक राज्य करने को आये हैं ४ ॥ ५ कोटि प्रकार से इनके कपट और कुटिलता है तबतो दोनों भाई दल बटोरि लाये हैं ६ जो इनके जीमें कपट कुचाल न होता तो ये रथ, गज, बाजि किसको सुहाते ७ भरत को मिथ्या दोष कौन देवे राज्यको पाइ करतो सबही बौराइ जाते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ देखो चन्द्रमा गुरु तिय गामी होगया राजा नहुष महा मुनीश्वरों को पालकी में लगा कर चला लोक वेदसे बिमुख राजा बेणु जिसने ईश्वर होनेका अभिमान किया ॥ २ ॥

सहस बाहु सुरनाथ त्रिशंकू। केहि न राज्य मददीन्ह कलंकू १
भरतकीन्ह यहउचित उपाऊ। रिपुऋण रंचक रखिये नकाऊ २
एककीन्ह नहिं भरत भलाई। निदरे राम जानि असहाई ३
समुझि परिहि सोआजु बिशेषी। समर सरोष राममुख देखी ४
इतना कहत नीति रसभूला। रणरस बिटपपुलकिजनु फूला ५
प्रभुपद बंदि शीश रज राखी। बोलेसत्य सहज बल भाषी ६
अनुचित नाथ नमानब मोरा। भरतहमहिं उपचार नथोरा ७
कहं लगि सहि रहिये रिसमारे। नाथ साथ धनु हाथ हमारे ८
दो० क्षत्रिजाति रघुकुल जनमरामानुज जगजान।
लातन मारेचढ़ति शिरनीचको धूरिसमान॥ ३॥

सहस्रार्जुन ने अपने सढ़वाई परशुराम के पिता यमदग्नि ऋषिको मारा राजा त्रिशंकु ने इसी पञ्चभौतिक शरीर से स्वर्गमें रहना चाहा १ भरत ने यह तो उपाय उचितही किया कि शत्रु और ऋणरंचक कभी न रखना चाहिये २ परंतु एक काम भला न किया कि राम को बनमें असहाय जानि कर निदरा ३ सो आज रणमें सरोष राम का मुख देखिकर सबसमुझि परैगा ४ इतना कहतेही लक्ष्मण नीति रस को तो भूलिगये बीर रस का वृक्ष मानों पुलकावली से फूलिगया ५ रामचन्द्र के चरणों को प्रणाम करि माथेपर रज धारण की और अपना सच्चा सहज बल बोले ६ हे नाथ मेरो कुछ अनुचित आपन मानिये भरतने हमारे तुम्हारे मारने का थोड़ा उपाय नहीं कियाहै ७ कहां तक सहैं और रिसमारे रहैं हमभी तो आपके साथ हैं और धनुष बाण बांधते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ क्षत्रीजाति हैं रघुकुल में जन्म है रामा-

नुज कहाते हैं लोक बिख्यात हैं लातों के मारनेसे तो महानीच धूरिभी शिरको चढ़ती है ॥ ३ ॥

उठि कर जोरि रजायसु मांगा। मनहु बीर रस सोवत जागा १
बांधि जटाशिर कटिकसि भाथा। साजिशरासन शायक हाथा २
आजुराम सेवक यश लेऊं। भरतहि समरसिखावन देऊं ३
आइबना भल सकल समाजू। प्रकटकरौं रिस पाछिल आजू ४
जिमिकरि निकरदलै मृगराजू। लेइलपेटि लवा जिमि बाजू ५
तैसेहिं भरतहिसेन समेता। सानुज निदरि निपातौं खेता ६
राम निरादर करफल पाई। सोवहु समर सेज दोउ भाई ७
जौ सहाय कर शंकर आई। तदपि हतौं रण राम दुहाई ८
दो० अतिसरोष माखेलषण लखि सुनिशपथ प्रणाम।
सभय लोक सबलोक पति चाहतभभरि भगान ॥ ४ ॥

उठे और हाथ जोरिकर भरत से युद्ध करने को आयसुमांगा मानों सोवते से वीर रसही जागि उठा १ शिरपर जटाजूट बांधि कटि देश में भाथाकसि धनुष बाण हाथ में लेकर बोले २ आजमैं रामसेवक का यश लेऊंगा कि भरत को संग्राम भूमि में सिखावन देऊंगा ३ कि राम के निरादर का यही फल होता है सो पाइकर समर शय्या पर दोनोंभाई चैन से शयन करौ ४ सब समाज भला आइ बना है पाछिल सब रिस आज प्रकट करूंगा ५ जैसे हाथियों के यूथों को मृगराज सिंह दलता है और लवा पक्षियों को सचान लपेटि लेता है ६ इसीभांति भरत को सेना और भाई समेत निदरि कर खेत में निपातन करूंगा ७ आजजो उनकी सहाय त्रिपुरांतक पिनाकधर शिवशंकर भी आकर करैंगे तौभीमैं उनको संग्राममेंमारिही डारूंगा मैं आपकी शपथ करता हूं ॥ ८ ॥ जब ऐसे सरोष लक्ष्मण क्रोधित हुये औ राम की शपथ का प्रमाण सुना तब तो भयभीत होकर सब लोक बासी और लोक पाल भरभराइ कर भागने लगे ॥ ४ ॥

जग भयमगनगगनभई बानी। लषण बाहु बल बिपुलबखानी १
तात प्रताप प्रभाव तुम्हारा। कोकहि सकै को जान नहारा २
अनुचितउचित काजकछुहोई। समुझिकरिय भलकहसब कोई ३
सहसा करि पाछे पछिताहीं। कहहिं बेद बुधते बुध नाहीं ४
सुनिसुर बचन लषण सकुचाने। राम सीय सादर सनमाने ५

कही तात तुम नीति सुहाई । सबतें कठिन राज्य मद भाई ६
सो अचवत मातहि नृप तेई । जिन्हगुरु साधु सभानहिं सेई ७
सुनहु लषणभलभरत सरीखा । बिधि प्रपंचमहं सुना नदीखा ८
दो० भरतहि होइ नराज्यमद बिधिहरिहर पदपाइ ।
कबहु किकांजी शीकरन्हि क्षीरसिंधु बिनशाइ ॥ ५ ॥

जगसब भयभीत होगया और लक्ष्मणके बिपुलबाहु बलका बखान करती हुई
आकाशबाणीहुई १ हेतात तुम्हारे प्रतापकेप्रभावको कौनकहि सकताहै औरकौन जान-
ताहै २ परंतु अनुचित वाउचित कुछकाम होवै उसकोजो समुझिकर करैतो सबकोई
भला कहतेहैं ३ औरजो सहसा करिके पीछेसे पछिताते हैं उनको वेद और बुधजन
कहतेहैं किते बुद्धिमान नहींहैंकिंतु मूर्खहैं ४ ऐसी देवबाणी सुनिकर लक्ष्मण सकोचि
गये औरराम जानकीने आदरसे बैठारे ५ रामचन्द्र बोले हेतात तुमने नीतितो सुन्दर
सुहाई कही किराज्यमद सबसे कठिनहो होताहै परंतु उसको पानकरिके अर्थ सपाइ
करतेई राजा उन्मत्त होजाते हैं जिन्होने महात्माओं की सभा नहींसेई है ६।७ सुनो
हेलक्ष्मण भरतकेसमान भलाभाई इसीबिधि प्रपंचमेंनतो कहीं किसीनेदेखाहै नसुना है
८ ॥ दोहा ॥ भरतको तोराज्य कामदजो ब्रह्मा और शिवबिष्णुके साथगने जातेहैं उन
काभीपद पाकर नहीं होनेका है जैसे खटाईकी बूंदोंसे क्षीरसागर नहीं फटता है ५

तिमिरतरुणतरणिहिंमकुगिलई । गगनमगनमकुमेघहिमिलई १
गोपद जलबूड़हिं घटयोनी । सहज क्षमा बरु छांड़हिं क्षोनी २
मशक फूंक बरु मेरु उड़ाई । होइ न नृप मद भरतहिं भाई ३
लषणतुम्हारि शपथपितु आना । शुचिसुबंधुनहिं भरतसमाना ४
सगुण क्षीर अवगुण जलताता । बिरचे मिले प्रपंच बिधाता ५
भरत हंस रबिबंश तडागा । जन्मि कीन्ह गुण दोष बिभागा ६
गहिगुणपयतजिअवगुणबारी । निजयशजगतकीन्हउजियारी ७
कहत भरतगुण शील सुभाऊ । प्रेम पयोधि मग्न रघुराऊ ८
दो० सुनि रघुबर बाणी बिबुध देखि भरतपर हेतु ।
सकल सराहत रामसों को प्रभु कृपा निकेतु ॥ ६ ॥

अंधकार मध्यान्हके सूर्यको मतिकहीं गिलि जावै अर्थात् ग्रासकरि लेवै औरमति
ही आकाशमें मार्गमेघों को नमिले माक्कापि भवतुका लघुमत मकुपद देशभाषा है
१ समुद्रके आचमन करता अगस्त्यमुनि मतिकहीं गोपद जलमें बूड़िजावें और पृथिवी

अपनी सहज क्षमा भलेही छोड़ि देवै २ मशककी फूंकसे सुमेरु भलेही उड़िजावैपरंतु राज्यमद भरतको तो कदापि नहीं होगा ३ हेलक्ष्मण तुम्हारी शपथ औरपिता कीदोहाई तनमन वचनसे बिशुद्ध भरतके समान भाई कहींनहीं है ४ शुभगुणतो क्षीर और अवगुण जल दोनो बिधाता ने मिलेही अपने प्रपंचमें रचेहैं ५ तहां हमारे सूर्य्यबंश तड़ागमें भरतहंसने जन्म लेकर दोनोंका बिभाग करि दिया ६ किसद्गुणोंके क्षीर को ग्रहण और अवगुणोंके जलको त्याग करिके अपने यशकी जगतमें उजियारी करिदीन्ही ७ इसप्रकार भरतके गुणशील सुभावको कहते भरतहीके स्नेह सागरमें राममग्न होगये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ देवता रामकीऐसी बाणी सुनिऔर भरतपरबड़ा प्रेमदेखिकरसब सराहने लगे किऐसा कृपानिकेत स्वामी दूसरा इससंसार में कौन है ॥ ६ ॥

जौन होत जग जन्म भरतको । सकल धर्मधुरधरणि धरतको १
कबिकुल अगम भरत गुणगाथा । को जानै तुमबिन रघुनाथा २
लषणरामसिय सुनिसुरबानी । अतिसुख लहेउनजाइबखानी ३
इहां भरत सब सहित सहाई । मंदाकिनी पुनीत नहाई ४
सरित समीपराखिसबलोगा । मांगि मातु गुरु सचिव नियोगा ५
चले भरत जहं सिय रघुराई । साथ निषाद नाथ लघु भाई ६
समुझि मातु करतब सकुचाहीं । करत कुतर्क कोटि मनमाहीं ७
रामलषणसियसुनिममनाऊं ।उठिजनिअनतजाहिंतजिठाऊं ८
दो० मातु मते महं जानि मोहिं जो कछु कहहिं सो थोर ।
अघ अवगुणक्षमि आदरहिं समुझि आपनी ओर ॥ ७ ॥

जो इस जगत में भरत का जन्म न होता तो समस्त धर्म की धुरा को पृथ्वी पर कौन धरता १ भरत के गुणों की गाथा वर्णन करना कबि जनों को तो अगमहै एक आपके बिनां दूसरा कौन जान सकता है २ लक्ष्मण राम सीताने यह देवताओं की बाणी सुनिकर बड़ा सुख पाया ३ यहां भरत ने सब समाज समेत आकर महा पावन देवगंगा मंदाकिनी में स्नान किये ४ नदी के समीप सब लोगों को ठहराया आप मंत्री माता गुरुदेव से आज्ञा मांगिकर राम के पास चले साथ में निषाद नाथ औरशत्रुहन को ले लिया ५ । ६ माता का करतब समुझि कर तो सकुचाते हैं और अनेक कुतर्क करते चले जाते हैं ७ राम लक्ष्मण सीता कहीं मेरा नाम सुनिकर और ठौर को तो न उठि जावें ॥ ८ । दोहा ॥ माताके मते में तो मेरे को जानिकर जो कुछ कहेंगे सो थोड़ाही है अथवा अपनी ओर समुझि कर मेरे अघ अवगुणों को क्षमा करिके मेरे को शरण आय जानिकर आदरेंगे ॥ ७ ॥

जो परिहरहिं मलिन मनजानी। जो सनमानहिं सेवक मानी १
मोरे शरण राम की पनहीं। राम सुस्वामि दोष सब जनहीं २
जग यश भाजन चातकमीना। नेम प्रेम निज निपुण नवीना ३
अस मनगुणतचले मगजाता। सकुच सनेह शिथिलसबगाता ४
फेरति मनहिं मातु कृत खोरी। चलत भक्ति बलधीरज धोरी ५
जब समुझत रघुनाथ सुभाऊ। तब पथ परत उतायल पाऊ ६
भरत दशातेहि अवसरकैसी। जल प्रबाह जलअलिगतिजैसी ७
देखि भरत कर शोच सनेहू। भा निषाद तेहि समय बिदेहू ८
दो० लगे होन मंगल शकुन सुनि गुणि कहत निषाद।
मिटिहिसोच होइहि हरष पुनि परिणाम बिषाद ॥ ८ ॥

राम स्वामी चाहें तो मेरे को मलिन मन जानिकर त्यागकरैं चाहें सेवक मानिकर सन्मान करें मैंतो अनन्य गति हूं उनकी पादत्राणही मेरे तो शरण हैं दूसरा ठिकाना नहीं है राम तो सुस्वामीही हैं दोष सब दासही का है १ । २ जगमेंयश के पात्र तो चातक और मीन हैं जोएक अपने नेम और एक अपने प्रेममें निपुणहैं ३ इस प्रकार मनहीं मनमें गुणते जाते हैं और सकुच सनेह से सब अंग शिथिल हैं ४ माता की करी खोरि तो भरत के मनकों राम के पास जाने से फेरतीहै और भक्ति के बल से चलते हैं ५ और जब रामके सुभाव का स्मरण करते हैं तब तो मार्ग में अति उतायल पांव परते हैं ६ तो भरत की दशा ता समय कैसी होरही है जैसी गम्भीर जलके प्रबाह में जल भ्रमर की होती है ७ ऐसा भरत का शोच और सनेह देखिकर निषादराज उससमय बिदेह होगया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ उसीसमय तहां मंगल और शकुन होने लगे तब तो मंगलों को सुनि अशकुनों को गुणि कर निषादबोला कि शोच सब मिटि जावेंगे और हर्ष आनन्द होवेंगे परंतु परिणाम को फिरि बिषादही होवेगा ॥ ८ ॥

सेवक बचन सत्यसब जाने। आश्रम निकट जाइ नियराने १
भरत दीखबन शैल समाजू। मुदित क्षुधित जनुपाइ सुराजू २
ईति भीतिजनु प्रजा दुखारी।त्रिबिधि ताप पीड़ित ग्रहभारी ३
जाइ सुराज सुदेश सुखारी। होइभरत गति तेहि अनुहारी ४
राम बास बन संपति भ्राजा। सुखीप्रजा जनु पाय सुराजा ५

सचिव बिराग बिबेक नरेशू। बिपिनि सुहावन पावन देशू ६
भट यम नियम शैल रजधानी। शांति सुमति शुचि सुन्दरि रानी ७
सकल अंग सम्पन्न सुराऊ। राम चरण आश्रित चितचाऊ ८
दो० जीति मोह महिपाल दल सहित बिवेक भुवाल।
करत अकंटक राज्यपुर सुख संपदा सुकाल ॥ ९ ॥

सेवक निषादके बचन भरत ने सब सत्य जाने इतने में आश्रमके निकट ही जा पहुंचे १ भरतने उसबन और पर्वत का समाज जो देखा तो ऐसे प्रसन्न होगये जैसे अति क्षुधित सुन्दर अन्नको पाकर प्रसन्न होताहै १ जैसे कोई प्रजा छहू ईति की मारी महा दुखी और तीनों तापों से पीड़ित और महा भारी ग्रहोंकी दशा से ग्रसित सुंदर राज सुदेश में जाकर सुखी होजाती है तैसीही भरतकी गति होगई ३ ४ रामके बासका बन अपनी संपति से कैसा सोहता है जैसी सुन्दर राजा को पाइ कर प्रजा सुखारी सोहतीहै ५ जहां बिवेक तो राजाहै वैराग उसका मंत्री है और परम सुहावन सुन्दर पावन देशहै ६ यम नियम महा प्रबल योधाहैं पर्वत राजधानीहै शांति और सुमति सुन्दर पतिब्रता रानी है ७ समस्त राज अंगोंसे संपन्नहै और रामके चरणों के आश्रयसे सदा चित्तमें चाउ रहता है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ दलसमेत मोह अपनेशत्रु को जीतिकर बिवेक राजा अकंटक राज्यकर्ताहै और आनन्द संपदा सुकाल होरहा है ॥ ९ ॥

बन प्रदेश मुनि बास घनेरे। जनु पुर नगर गांउं गण खेरे १
बिपुल बिचित्र बिहंग मृगनाना। प्रजा समाज न जाइ बखाना २
खगहा करि हरि बाघ बराहा। वृषभ महिष वृकसाज सराहा ३
बैर बिहाइ चरहिं एक संगा। जहं तहं मनहु सेन चतुरंगा ४
झरना झरहिं मत्तगज गाजहिं। मनहु निशान बिबिध बिधि बाजहिं ५
चक चकोर चातक शुक पिक गण। कूजहिं मंजु मराल मुदितमन ६
अलिगण गावत नाचत मोरा। जनु सुराज मंगल चहुं ओरा ७
बेलि बिटप तृण सफल सफूला। सब समाज मुद मंगल मूला ८
दो० रामशैल शोभा निरखि भरत हृदय अतिप्रेम।
तापस तप फल पाइ जिमि सुखी सिराने नेम ॥ १० ॥

बनप्रदेश में जो अनेक मुनिजनों के बास हैं सोई मानो पुर नगर गाउंगण खेरेहैं १ बड़ी बहुताई से जो चित्र बिचित्र बिहंग मृगहैं सोई सबप्रजा समाज है २ खगहा, हाथी, सिंह, बाघ, बाराह हैं वृषभ भैंसा हैं भिड़हा हैं सब सहज बैर

को छोड़िकर जो एकही साथ बिचरतेहैं सोईमानो बिबेक राजाकी चतुरंगिणी सेना है ३। ४ अष्टप्रहर जो झरना झरतेहैं और मत्त मतंग गाजते हैं सोईमानों भांतिभांति के बाजे बाजते हैं ५ चक्रवाक चकोर पपीहा कीर कोकिला और हंसगण येसब कूजते हैं अलिगण गान करतेहैं मयूर नाचतेहैं सो मानों बिबेक राजा के सुराज्य में चारों ओर मंगल होरहे हैं ६ ७ बनके बिटप बेलि तृणसब सफल और सफूलहैं इस प्रकार तहांका सबसमाज आनन्दमंगलकी मूलहीहै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ रामचन्द्र के पर्वत चित्रकूट की शोभाको देखि कर भरतके हृदयमें अतिही प्रेमहुआ जैसे तपस्वी तपका फल पायकर सुखीहो जाताहै और उसके सबनेम सिराइ जातेहैं ॥ १० ॥

तब केवट ऊंचे चढ़ि जाई। कहा भरत सन भुजा उठाई १
नाथ देखियत बिटप बिशाला। पाकरि जम्बु रसाल तमाला २
तिन्ह तरु बरन्ह मध्य बटुसोहा। मंजु बिशालदेखि मनमोहा ३
नील सघनपल्लव फललाला। अविचलछाह सुखदसबकाला ४
मानहुं तिमिरअरुण मयरासी। बिरचीबिधि सकेलिसुखमासी ५
तेहितरु सरितसमीप गुसाईं। रघुवर परणकुटी जहं छाईं ६
तुलसी तरुवर बिबिध सुहाये। कहुं कहुं सियकहु लषणलगाये ७
बटु छाया वेदिका बनाई। सिय निज पाणि सरोज सुहाई ८
दो० जहां बैठि मुनि गण सहित नित सियराम सुजान।
सुनहिं कथाइतिहास सब आगमनिगम पुरान ॥ ११ ॥

तबतो केवट निषाद ने ऊंचे पर चढ़ि जाकर भरत से भुजा उठाकर कहा १ हे नाथ ये जो बड़ेबड़े बिटप देखि परतेहैं पाकरिका जामुनिका आम्रका तमालका २ तिन्हवृक्षों के मध्य में बटका वृक्ष सोहता है जो उज्ज्वल और बिशाल है देखने से मन को मोहता है ३ मानों जिसके नील सघन तौ पत्र हैं और लाल फलहैं औ अचल छाया है सर्बकाल में सुखदायक है ४ मानों अंधकार और अरुण की राशिही बिधाता ने मिलाकर रची है ५ तिस वृक्ष के नीचे सरिता के समीप रामचन्द्र ने पर्णशाला छाई हैं ६ तुलसी के वृक्ष सुन्दर सुहाये कहीं कहीं तो सीताने और कहीं लक्ष्मण ने लगाये हैं ७ बटकी छाया में सुन्दर वेदिका सीता ने अपने कर कमलों से बनाई है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जहां बैठिकर मुनिगण समेत सीता राम परम सुजान नित कथा निगम पुराण सुनते हैं ॥ ११ ॥

सखावचन सुनि बिटप निहारी। उमगेउ भरत बिलोचन बारी १
करत प्रणाम चले दोउ भाई। कहत प्रीति शारद सकुचाई २

हरषहिं निरखि राम पदअंका। मानहुं पारस पायेउ रंका ३
रजशिरधरिहियनयननिलावहिं।रघुवरमिलनसरिससुखपावहिं
देखि भरत गति अकथ अतीवा। प्रेममग्न खग मृगजड़जीवा ५
सखहि सनेह बिवशमग भूला। कहिसुपंथ सुर बरषहिं फूला ६
निरखि सिद्ध साधक अनुरागे। सहज सनेह सराहन लागे ७
होत न भूतल भाव भरत को। अचर सचर चर अचरकरतको ८
दो० प्रेम अमिय मंदिर बिरह भरत पयोधि गंभीर।
मथि प्रगटेउ सुरसाधुहित कृपासिंधु रघुबीर ॥ १२ ॥

सखा के बचन सुनि बृक्षोंके देखतेही भरत के नेत्रों में जल भरि आया १ तहां से प्रणाम करते दोनों भाई चले जाते हैं जिनकी प्रीति कहते में सरस्वती भी सकुचाती है २ रामचन्द्र के चरणों के कुलिशादिक रेखाओं को देखिकर हर्षित होतेहैं मानों परम रंक ने पारसही पाया है ३ चरणों की रज को शिरपर धरते हैं नेत्रोंसे लगाते हैं और रामचन्द्रके मिलनेही के समान सुख पाते हैं ऐसी भरतकी अत्यन्त अकथ गति को देखिकर खग, मृग, जड़, जीव सब प्रेम मग्न होगये ५ सखा को भी सनेह के बश मार्ग भूलि गया तबतो देवता सुपंथबता कर पुष्प बरषाने लगे सिद्ध और साधक भी देखकर प्रेम मग्न होगये और भरत के सहज सनेह को सरहने लगे ७ कि जो भूतल में भरत का ऐसा भावन होता तो समस्त धर्म की धुरा को पृथिवी पर कौन धरता ॥ ८ ॥ दोहा ॥ कृपा सिंधु रामचद्र ने अपने भक्त जन देवताओं के निमित्त भरत क्षीर सागरमें अपने बिरह का मंदराचल डारि कर प्रेमरूपी अमृत मथिकर प्रकट कियाहै ॥ १२ ॥

सखा समेत मनोहर जोटा। लखेउन लषण सघन बन ओटा १
भरतदीख प्रभुआश्रमपावन। सकल सुमंगल सदनसुहावन २
करत प्रवेश मिटे दुख दावा। जनु योगी परमारथ पावा ३
देखे भरत लषण प्रभु आगे। पूंछत बचन कहत अनुरागे ४
शीश जटा कटि मुनि पट बांधे। तूणि कसे करशर धनु कांधे ५
बेदी पर मुनि साधु समाजू। सीय सहित राजत रघुराजू ६
बलकलबसन जटिलतनुश्यामा। जनमुनि वेषकीन्हरतिकामा ७
करकमलन्ह धनुशायक फेरत। जियकी जरनिहरतहंसिहेरत ८

दो० लसत मंजु मुनि मंडली मध्य सीय रघुचंद ।
ज्ञान सभा जनु तनु धरे भक्ति सच्चिदानंद ॥ १३ ॥

निषादराज समेत चले आवत भरत शत्रुहन दोनों भाइयों का मनोहर सुन्दर जोटा सो लक्ष्मण ने सघन बनके ओट न देखि पाया १ भरतने अपने स्वामी रामचन्द्र का परम पावन आश्रम देखा जो समस्त सुमंगलों का सुन्दर सदनही है २ उसमें प्रवेश करतेही सब दुख मिटि गये मानों योगीको परम तत्व हरि ईश्वरही का लाभ हुआ ॥ तत्वमेकोमहायोगीहरिर्नारायणःपरः ॥ ३ भरत ने लक्ष्मण रामचंद्रकी सेवा में देखे कि जो रामचंद्र पूछते हैं उसका प्रेम समेत उत्तर दे रहे हैं ४ शीश परतो जटा जूट कसे हैं और कटिमें मुनिपट से भाथा बांधे हैं हाथमें बाण लियेहैं कांधे पर धनुष धरे हैं ५ बेदिका पर मुनिजनों के समाज समेत सीता राम बिराजतेहैं ६ वल्कल बस्त्र पहिरेहैं जटा धारण कियेहैं स्याम सुन्दर अंगहैं मानों रति, कामही मुनि बेष धरेहैं ७ कर कमलोंसे धनुष बाण फेरि रहे हैं और अपनी हंसी हेरनि से भक्तजनों के जीकी जरनिको हरते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ मुनिमंडली के मध्यमें सीता समेत रामचन्द्रकैसे सोहतेहैं मानों ज्ञानकी सभा में शरीर धरे भक्ति और सच्चिदानन्द ब्रह्मही बिराजे हैं ॥ १३ ॥

सानुज सखा समेत मगनमन । बिसरे हर्षशोक सुख दुखगन १
पाहि नाथ कहि पाहि गुसाईं । भूतल परे लकुट की नाईं २
बचन सप्रेम लषण पहिचाने । करत प्रणाम भरत जिय जाने ३
बंधु सनेह सरिस इहिं ओरा । उत साहिब सेवा बरजोरा ४
मिलिनजाइनहिंगुदरतबनही।सुकबिलषणमनकी गतिभनहीं ५
रहे राखि सेवा पर भारू । चढ़ी चंग जनु खैंचि खिलारू ६
बोले नाय रामपद माथा । भरत प्रणाम करत रघुनाथा ७
उठे राम सुनि प्रेम अधीरा । कहुं पटकहुं निषंग धनु तीरा ८

दो० बरबश लिये उठाय उर लाये कृपानिधान ।
भरत रामकी मिलनि लखि बिसरा सबहि अपान ॥ १४

भाई और सखा समेत भरत ऐसे मग्न मनहैं जिनको हर्ष, शोक, सुख, दुख शरीर सब बिसरि गये हैं १ पाहि नाथ पाहि स्वामी ऐसे बारंबार कहि कर दण्डके समान भूमिपर गिरि परे २ ऐसे प्रेमभरे बचन लक्ष्मणने पहिचाने और भरतको प्रणाम करते जीमें जाना ३ बहुत दिनों के बिछुरे भरतसे भाई के मिलनेके प्रेमके समान प्रबनता एक ओर और स्वामी की सेवा अति बल एक ओर ४ ताते न तो मिलते

बनता है न छोड़ते बनता है तहां सुकबि लक्ष्मणके मनकीगतिको ऐसा कहतेहैं ५ कि मिलने का भार सेवाही पर राखिकर रहि गये जैसे चढ़ी चंगको खिलवार खैंचिकर रहि जाता है ६ रामके चरणों को प्रणाम करिके बोले कि हे स्वामी आपको भरत प्रणाम करते हैं ७ यह सुनतेही राम प्रेममें ऐसे अधीर होकर उठे कि कहीं वस्त्र रहिगये कहीं धनुष बाण निषंग रहि गये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ वरियाईं भरत को पृथ्वी परसे उठाइ कर हृदय से लगा लिया उस समय भरत और रामकी मिलनि देखि कर सबको आपेकी सम्हार बिसरि गई ॥ १४ ॥

मिलन प्रीतिकिमि जाइबखानी। कबिकुलअगम कर्म मनबानी १
परम प्रेम पूरण दोउ भाई। मन बुधि चित अहमित बिसराई २
कहहुसो प्रेम प्रकट कोकरई। केहि छाया कबिमति अनुसरई ३
कबिहि अर्थअक्षर बलसाचा। अनुहरि ताल गतिहि नटनाचा ४
अगमसनेह भरतरघुबर को। जहं नजाय मनबिधि हरिहरको ५
सोमैं बरणि कहौं केहि भांती। बाजु सुराग किगाडरि तांती ६
मिलनिबिलोकिभरत रघुबरकी। सुरगणसभयधुकधुकीधरकी ७
समुझाये सुरगुरु जड जागे। बरषि प्रसून प्रशंसन लागे ८
दो० मिलि सप्रेम रिपु सूदनहिं केवट भेटेउ राम।
भूरि भाय भेटे भरत लक्ष्मण करत प्रणाम ॥ १५ ॥

मिलनेकी प्रीति कैसेकही जावै कबिकुलको तो कर्म, मन, बाणीसे अगमहै १ परम प्रेमसे दोनों भाई परि पूर्णहैं मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार सबबिसरि गये २ उसप्रेम को कहो कोई प्रकट कैसेकरै और कौनछायापर कबिकी बुद्धि अनुसरै ३ कबिको तो अर्थ और अक्षरोंहीका बल होताहै जैसे तालगतिही को अनुहारि कर नट नाचताहै ४ भरत और रामका प्रेमतो ऐसा अगमहै जहां बिधि, हरि, हरका भी मन नहीं जा सकताहै ५ सोभलामैं कौन भांति बर्णन करूं सुरागपर कहीं गाडरी तांति अर्थात् तृणके मूलकी तांति बाजती ६ है ऐसी भरत रामकी मिलनिको देखिकर देवगण सभय होगये और सबकी धुकधुकी धरकने लगी ७ जबदेवगुरु बृहस्पतिने समुझाये तबजड़तासे चैतन्य हुये और पुष्पबर्षाइ कर भरतकी प्रशंसा करने लगे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ फिरि रामचन्द्र ने शत्रुहनको प्रेम समेत मिलिकर केवटको भेटा तब बड़ेप्रेमसे भरतने लक्ष्मणको प्रणाम करते देखिकर भेटा ॥ १५ ॥

भेटेउ लषण ललकि लघुभाई। बहुरि निषादलीन्ह उरलाई १
पुनि मुनिगणदोउ भाइनबंदे। अभिमत आशिष पाइ अनंदे २

सानुज भरतउमगि अनुरागा । धरि शिर सिय पदपद्म परागा ३
पुनि पुनि करत प्रणाम उठाये । शिर कर कमल परसि बैठाये ४
सीय असीष दीन्हि मन माहीं । मग्न सनेह देह सुधि नाहीं ५
सबबिधि सानुकूल लखिसीता । भे असोच उर अपडर बीता ६
कोउकछुकहैनकोउकछु पूंछा । प्रेमभरा मन निज गति छूंछा ७
तेहि अवसरकेवटधीरज धरि । जोरिपाणिबिनवत प्रणामकरि ८
दो० नाथ साथ मुनिनाथके मातु सकल पुरलोग ।
सेवक सेनप सचिवसब आये बिकल बियोग ॥ १६ ॥

फिरितो लक्ष्मणने बड़ीललकसे अपने छोटेभाई शत्रुहनको भेटा और निषादके हृदयसे लगा लिया १ फिरि भरतशत्रुहनने सबमुनिजनों को अभिवंदन किया औ अभिमत आशिषपाकर आनन्दित हुये २ तिस पीछेसीताने भरत शत्रुहनको बड़ेप्रे उमंग सेअपने चरणोंकी रज,बार बार शिर पर धारते और प्रणाम करते देखिकर उठाया और उनके शिरोंपर अपना करकमल धरि कर बैठाया ३। ४ सीताने असीष मनहीमें दी स्नेहमें मग्नहै देहकी सुधि सम्हार नहींहै ५ जब सबप्रकारसे अपनेपरसीताको सानुकूल देखा तबतो भरत असोच होगये और हृदयका अपडर जाता रहा किजो माता प्रसन्नहै तोपितासे सबअपराध क्षमा करायलेवैगी ६ अब मिलिकर नतो कोई किसीसे कुछ पूछताहै नकहताहै मनसबका प्रेमसेही भराहै ऐसे छूंछाहै ७ तासमय केवट धीरज धरि कर कहनेलगा ८ हेनाथ मुनिनाथ बशिष्ठके साथ सबतो माता औरमंत्री पुरवासी, सेवक, सेनापति सबआपके बियोगसे बिकल आये हैं ॥ १६ ॥

शीलसिंधु सुनि गुरु आगमनू । सीय समीप राखि रिपुदमनू १
धर्म धुरंधर दीनदयाला । चले सबेग राम तेहि काला २
गुरुहि देखि सानुज अनुरागे । दंड प्रणाम करन प्रभु लागे ३
मुनिबर धाइ लिये उर लाई । प्रेम उमगि भेटे दोउ भाई ४
प्रेम पुलकि केवट कहि नामू । कीन्ह दूरिते दंडप्रणामू ५
राम सखा मुनि बरबश भेटा । जनु महि लुटत सनेह समेटा ६
रघुपति भक्ति सुमंगल मूला । नभ सराहिसुर बर्षहिं फूला ७
यहिसमनिपट नीचकोउनाहीं । बड़ बशिष्ठ सम कोजगमाहीं ८
दो० जेहि लखि लषणहु ते अधिक मिले महा मुनिराउ ।

सो सीतापति भजन कर प्रकट प्रताप प्रभाउ ॥ १७ ॥

शीलसिंधु ने जो गुरुदेव का आगमन सुना सीताके पास तो शत्रुहन को छोड़ा और भरत, लक्ष्मण, निषाद समेत धर्मधुरंधर दीनदयाल राम बड़े बेगसे उसी काल चल दिये १ । २ गुरुको देखतेही भाई लक्ष्मण समेत बड़े प्रेम से दंडवत् प्रणाम करने लगे ३ बशिष्ठ ने दौरि कर हृदय से लगाये और प्रेमकी उमंग से दोनों भाइयोंको भेटा ४ तिस पीछेप्रेम में पुलकितहो औरअपना नामलेकर निषादने बशिष्ठ मुनिको दूरिहीसे दंडवत् प्रणाम किया ५ उसको रामका सखा जानिकर बशिष्ठने बरियाईं उठाय कर हृदयसे लगाया मानों पृथ्वीपर परे मूर्त्तिवंत प्रेमहीको समेटलिया ६ देवता आकाश में सुमंगलमूला रामभक्ति को सराहि कर पुष्प बर्षाते हैं और कहते हैं ७ देखो इसके समान तो अति नीच कोई नहींहै और बशिष्ठके समान बड़ा कौन है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जिसको देखिकर लक्ष्मण से भी अधिक प्रेम से मुनिराज बशिष्ठ मिले यह सब सीतापति राम के भजनका प्रत्यक्ष प्रताप है ॥ १० ॥

आरत लोग राम सब जाना । करुणाकर सुजान भगवाना १
जोजेहिं भांतिरहा अभिलाषी । तेहि तेहिकी तैसी रुचिराखी २
सानुज मिलि पलमहं सबकाहू । कीन्ह दूरि दुख दारुणदाहू ३
यह बड़िबात रामकी नाहीं । जिमि घट कोटि एक रविछाहीं ४
मिलि केवटहिउमंगि अनुरागा । पुरजनसकलसराहहिंभागा ५
देखी राम दुखित महतारी । जनु सुबेलि अबली हिम मारी ६
प्रथम राम भेटी कैकेई । शरल सुभाव भक्ति मति भेई ७
पग परि कीन्हप्रबोध बहोरी । कालधर्म बिधि शिर धरिखोरी ८
दो० भेटीं रघुबर मातु सब करि प्रबोध परितोष ।
अब ईश आधीन जग काहुन दीजिय दोष ॥ १८ ॥

लोगजो मिलनेको आरतहोरहे हैं सो रामने सब जाना बड़े करुणाकर और सुजान भगवान हैं जो जिस भांतिसे रामके मिलनेका अभिलाषी रहा उसकी उसी भांतिकी रुचि पूर्ण करी १ ॥ २ भाई समेत एक पलमें सबको एकही साथ मिल कर सबके हृदयके दारुण दाह दूरि किये ३ यह बात सर्बान्तर्यामी रामकी कुछ बड़ी नहीं है जैसे कोटिघट में एकहीसाथ एकहां सूर्य्यकीछांहीं परतीहै ४ फिरितो सब केवट को प्रेम समेत मिलि मिलिकर उसके भाग्यको सराहतेहैं ५ फिरि रामने सब माता दुखी देखीं मानों बनकी बेली तुषार की मारी हैं ६ प्रथम तो राम कैकेयी को बड़ी भक्ति और सूधे सुभाव समेत मिले ७ पैरों परिकर उनका प्रबोध किया और काल, कर्म

बिधाताके शिर दोष दिया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ फिरि सब माताओं को रामचन्द्र मिले और सबको प्रबोध किया कि माता जगत सब ईश्वरके आधीन है किसी को दोष देना न चाहिये ॥ १८ ॥

गुरुतिय पद बंदे दोउ भाई। सहित बिप्रतिय जे संग आई १
गंग गौरि सम सब सनमानी। देहिं अशीष मुदित मृदुबानी २
गहि पद लगे सुमित्रा अंका। जनु भेंटी संपति अति रंका ३
पुनि जननी चरणनि दोउ भ्राता। परे प्रेम ब्याकुलसबगाता ४
अति अनुराग अंब उरलाये। नयन सनेह सलिल अन्हवाये ५
तेहि अवसर करहर्ष बिषादू। किमिकबि कहै मूकजिमिस्वादू ६
मिलि जननिहिसानुजरघुराऊ। गुरुसन कहेउ कियारियपाऊ ७
पुरजन पाय मुनीश नियोगू। जल थल तकि तकि उतरेलोगू ८
दो० महिसुर मंत्री मातुगुरु गनेलोग लिय साथ।
पावन आश्रम गमनकिय भरतलषण रघुनाथ ॥ १९ ॥

फिर गुरुपत्नी के चरणों को दोनों भाइयों ने बंदन किया सब द्विजपत्नियों समेत जो साथ आईं हैं १ गंगा गौरी के समान सबका सन्मान किया और अशीष पाकर दोनों भाई प्रसन्न हुये २ चरण पकरि कर सुमित्रा को ऐसे प्रेमसे मिले मानों रंकने पारस पाया ३ फिरि कौशल्या के चरणों पर दोनों भाई परे प्रेम से सब अंग परिपूर्ण हैं ४ माता ने बड़े प्रेम से हृदय में लगालिये नेत्रों के प्रेमजनित जलसे दोनों भाइयोंको अन्हवाइ दिये ५ उससमय के हर्ष बिषाद को कोई कबि कैसे कहिसके जैसे गूंगा स्वाद को ६ इस प्रकार भाई समेत माता को मिलकर गुरुसे कहा कि आश्रम को पधारिये ७ तबतो सब पुरजन बशिष्ठ की आज्ञा पाकर जल थल देखिदेखिजहां तहां जा उतरे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ महिदेव, मंत्री, माता बशिष्ठ को साथ लेकर भरत लक्ष्मण राम ने आश्रम में गमन किया ॥ १९ ॥

सीयआइ मुनिबर पगलागी। उचित अशीष लही मन मांगी १
गुरु पत्निहिं मुनितियनसमेता। मिली प्रेम कहिजाइन जेता २
बंदि बंदि पद सिय सबहीके। आशिर्बचन लहे प्रियजीके ३
सासु सकल जब सीय निहारी। मूंदे नयन सहमि सुकुमारी ४
परीं बधिक बश मनहुं मराली। काह कीन्ह करतार कुचाली ५

तिन सियनिरखि निपटदुखपावा । सोसबसहियजोदैवसहावा ६
धरणिसुता तबउर धरिधीरा । नील नलिन लोचन भरिनीरा ७
मिलीसकल सासुन सियजाई । तेहि अवसर करुणामहिछाई ८
दो० लागि लागि पग सबनि सिय भेटत अति अनुराग ।
हृदय अशीषत प्रेम बश रहिहौ भरी सुहाग ॥ २० ॥

सीता ने आइकर वशिष्ट के चरण छुये औ मन भावती अशीष पाई १ फिरि सब मुनिपत्नियों समेत गुरुपत्नी को बड़े प्रेम से मिली २ सबके चरण बंदि बन्दिकर सबसे मनभावते आशीर्ब्बाद पाये ३ फिरि सब सासुजब सीता ने देखीं तब देखतेही सहमिकरनेत्र मूंदि लिये ४ ऐसी बिकल होगई मानों बधिक के बशहंसिनी परी है किहे कुचाली बिधाता तूने यह क्याकियाहै ५ उन्होंने भी सीता को देखि कर अतिही दुख पाया जो दैव सहावता है सो सब सहना परता हैं ६ फिरि तो धरणिसुता सीता धीर धरि कर सब सासुन को जाय मिली उस समय पृथ्वी करुणा से छाय गई ७। ८ ॥ दोहा ॥ सब सासुनके पांय लागिलागि कर बडे प्रेमसे मिलती है ते सब प्रेम के वश मनहीं में अशीषती हैं कि सदा सुहाग भरी रहो ॥ २० ॥

बिकल सनेह सीय सबरानी । बैठन सबहि कहा मुनि ज्ञानी १
प्रथम कहा जगगति मुनि नाथा । कहे कछुक परमारथ गाथा २
नृपकर सुरपुर गमन सुनावा । सुनि रघुनाथ दुसहदुख पावा ३
मरण हेतु निज नेह बिचारी । भेअति बिकल धीर धुर धारी ४
कुलिश कठोरसुनत कटुबानी । बिलपहिं लषणसीय सबरानी ५
शोकबिकल अतिसकल समाजू । मानहु राज अकाजेउ आजू ६
मुनिबर बहुरिराम समुझाये । सहित समाज सुसरित नहाये ७
ब्रतनिरंबु तेहिं दिनप्रभु कीन्हा । मुनिहु कहेजलकाहुन लीन्हा ८
दो० भोर भये रघुनंदहिं जोमुनि आयसु दीन्ह ।
शृद्धा भक्ति समेत प्रभु सोसब सादर कीन्ह ॥ २१ ॥

स्नेहमें ब्याकुल सीता और सब रानियों को देखिकर वशिष्टने सबको बैठने की आज्ञादी १ सबको बैठारिकर प्रथमतो वशिष्टने जगकी अनित्य और मोहमूल असार होनेकी गतिकही फिरि कुछ परमार्थ सन्मार्गकी कथा कहिकर महाराज दशरथ का रामबियोगसे देवलोकको गमन करना सुनाया उसको सुनिकर रामचन्द्रने महादुस्सह दुख पाया २।३ मरनेका कारण अपना प्रेमही बिचारिकर धर्म धुरंधरराम अतिब्याकुल

होगये ४ बज्रसेभी कठोर अतिकटुबाणी सुनतेही लक्ष्मण सीता और सब रानी बिलापकरनेलगे ५ शोकमें व्याकुल सब समाज ऐसाहो गया मानों राजा आजही अकाजे हैं ६ जब बशिष्ठने रामको बहुतसा समुझाया तब सबसमाज समेत मंदाकिनी में नहाये ७ उसदिन रामचन्द्रने जब निर्जल ब्रतकिया तबतो मुनि के कहनेसेभी किसी ने जल ग्रहणनहीं किया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ प्रातहोनेपर बशिष्ठने जो रामचंद्रको आयसु दिया सो सब श्रद्धाभक्ति समेत रामचंद्रने किया ॥२१ ॥

करि पितु क्रिया वेद जसबरणी । भे पुनीत पातक तमतरणी १
जासु नाम पावक अघ तूला । सुमिरत सकल सुमंगलमूला २
शुद्धसोभयउसाधु संमतअस । तीरथ आवाहन सुरसरि जस ३
शुद्ध भयेद्वय बासर बीते । बोले गुरुसन राम पिरीते ४
नाथ लोग सब निपटदुखारी । कन्दमूल फल अंबु अहारी ५
सब समेत पुर धारिय पाऊ । आप यहां अमरावति राऊ ६
बहुतकहेउं अतिकियेउं ढिठाई । उचित होइसो करिय गुसाईं ७
सानुज भरत सचिवसब माता । देखिमोहिंपल जिमियुगजाता ८
दो० धर्मसेतु करुणायतन कसन कहहु अस राम ।
लोग दुखित दिनद्वय दरश देखि लहेउ बिश्राम ॥ २२ ॥

वेद बिहित पिताकी क्रिया करिके पातकतम के नाशक सूर्य्य राम पावन हुये १ जिन स्वामी का नामही समस्त पातक रूपी तूलको प्रचंड पावक है, और स्मरण करते हीसकल सुमंगलों का मूलहै २ सो स्वामी शुद्ध हुये यह संत सम्मत है जैसे सर्बतीर्थमयी गंगा में तीर्थों का आवाहन करना ३ जब शुद्ध हुये पर दोदिन और बीते तबतो बशिष्ठसे रामचंद्र प्रीति समेतबोले ४ हेनाथसब अयोध्यावासी यहां बन में बडे दुखीहैं कन्द मूल,फल खाइखाइ रहतेहैं ५ शत्रुहन समेत भरत सबमंत्री और माताओं को दुखी देखिकर मेरेको एकएक पल युगके समान बीतता है ६ तातें सबे को साथ लेकर आप नगरको पधारिये अपतो यहांहैं और राजा अमरावती में हैं ७ यहमैंने बहुत कहा और बडी ढीठतादी आप जो उचित जानें सोकरें ॥ ८ ॥ दोहा यह सुनिकर वशिष्टने कहा हे राम तुमतो धर्मके सेतु करुणा निधान हो ऐसा क्यों नकहो परंतु लोग तोसब आपके बियोगसे दुखीरहे दोदिन से आपका दर्शन पाकर बिश्राम पाया है ॥ २२ ॥

रामबचनसुनिसभयसमाजू । जनुजलनिधिमहं बिकलजहाजू १
सुनि गुरुगिरा सुमंगल मूला । भयहु मनहु मारुत अनुकूला २

पावन पय तिहुं कालनहाहीं। जेहिं बिलोकिअघओघ नशाहीं ३
मंगलमूरति लोचनभरिभरि। निरखहिंसकलदंडवतकरिकरि ४
राम शैलबन देखन जाहीं। जहं सुखसकल सकलदुखनाहीं ५
झरना झरहिं सुधासमबारी। त्रिबिध ताप हरत्रिबिधबयारी ६
बिटपबेलितृणअगणितजाती। फल प्रसून पल्लव बहुभांती ७
सुन्दर शिला सुखद तरुछाहीं। जाइबरणिबनछबि केहिंपाहीं ८
दो० सरनि सरोरुह जलबिहंग कूजत गुंजतभृंग।
बैर बिगत बिहरत बिपिन मृग बिहंग बहुरंग ॥ २३ ॥

रामचन्द्र के बचन सुनिकर तो सब समाज ऐसा भयभीत होगया मानों समुद्र में जहाज बूडाजाता है१ फिरि सुमंगलमूला गुरुबाणी सुनिकर ऐसे प्रसन्न होगये मानो अनुकूल पवन वहने लगी २ अबतो तीनों कालसब मंदाकिनी के स्नान करतेहैं जिसके देखनेही समस्त पाप नाशहोतेहैं ३ और सीता रामकी मंगल मूर्त्ति को दण्डवत्‌करि के नेत्रोंभर देखते हैं ४ रामचन्द्र के पर्बत बनों को देखने जाते हैं जहां समस्त सुखहैं दुखकोई भी नहीहै ५ झरनासुन्दर अमृतसे जल झरते हैं और त्रैतापहरणी तोनों प्रकार की पवन वहतीहै ६ वृच,बेली,तृण अनेक जातिकेहैंफल,पुष्प, पल्लव से संपन्न हैं ७ सुन्दर शिला बिश्रामदायनी और सुखदायक वृक्षोंकी छायाहै बनकीछबि कौन कहि सकता है । ८ ॥ सरोवरोंमे कमल फूलेहैं तिनपर जलपक्षी कूजतेहैं और भ्रमर गुंजते हैं अपने अपने सहज बैर को छोड़िकर बनमे भांति भांति के मृग और बिहंग बिहार करते हैं ॥ २३ ॥

कोल्ह किरात भीलबनबासी। मधुशुचिसुन्दरस्वाद सुधासी १
भरि भरि पर्णकुटीरुचि रूरी। कंद मूल फल अंकुर जूरी २
सबहि देहिंकरि बिनयप्रणामा। कहिकहिस्वादभेदगुणनामा ३
देहिं लोग बहुमोल न लेहीं। फेरत राम दोहाई देहीं ४
कहहिं सनेह मगन मृदुबानी। मानत साधु प्रेम पहिचानी ५
तुम सुकृती हमनीच निषादा। पावा दरशन राम प्रसादा ६
हमहि अगम अति दरश तुम्हारा। जसमरुधरणिदेवसरि धारा ७
राम कृपाल निषाद निवाजा। परिजन प्रजा चहिय जसराजा ८
दो० यहजिय जानि सकोच तजि करिय छोहलखि नेहु।

हमहि कृतारथ करन लगि फल तृण अंकुर लेहु ॥ २४ ॥

बनबासी जो कोल्ह भील किरात है तेसब सुन्दर स्वादित मधुसुधा के समान और कन्द मूलफल अंकुरोंसे अपनी अपनी पर्णशाल भरिभरिकर सबअयोध्या बासियों को बिनती और प्रणाम करिकरि देतेहैं और उनके स्वाद गुण नामबताते हैं १ । २ ३ जब लोग उनको बहुत मोल देतेहैं तबनहीं लेतेहैं और फेरतो बेर रामकी शपथ देते हैं ४ स्नेह मे मग्न कोमल बाणीसे कहतेहैं कि साधुजनतोप्रेमको पहिचानतेहैं ५ आपतो बडे सुकृती हैं और हमनीच निषाद हैं रामकी कृपासे आपका दर्शन पायाहै ६ हमको आपका दर्शन ऐसा अगमहै जैसे मरुभूमि गंगाकी धारअगमहै ७ राम कृपालने अपनाया तो परिजन प्रजाभी राजा के समान होना चाहिये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसा जीमें जानिकर हमपर कृपा करनी चाहिये और हमको कृतार्थ करने के लिये फल तृण अंकुर लीजिये ॥ २४ ॥

तुमप्रिय पाहुन बन पग धारे । सेवा योग न भाग्य हमारे १
देब कहाहम तुमहिं गुसाईं । ईंधन पात किरात मिताई २
यह हमारि अति बड़ि सेवकाई । लेहिं न बासन बसन चुराई ३
हम जड़जीव जीवगण घाती । कुटिल कुचाली कुमति कुजाती ४
पाप करत निशिबासर जाहीं । नहिं पटकटि नहिंपेट अघाहीं ५
सपनेहु धर्म बुद्धि कसिकाऊ । यह रघुनन्दन दरश प्रभाऊ ६
जबते प्रभु पद पद्म निहारे । मिटे दुसह दुख दोष हमारे ७
बचन सुनत पुरजन अनुरागे । तिनके भाग्य सराहन लागे ८

छंद० लागेसरानहभाग्यसब अनुराग बचनसुनावहीं ॥
बोलनिमिलनि सियरामचरण सनेहलखिसुखपावहीं ॥
नरनारिनिदरहिंनेहनिजसुनि कोल्हभिल्लनकीगिरा ।
तुलसीकृपारघुबंशमणिकी लोहलै नौकातरा ॥

सोरठा० बिहरहिं बनचहुं ओर प्रतिदिन प्रमुदित लोगसब ।
जलज्यों दादुर मोर भये पीन पावस प्रथम ॥ २५ ॥

आपसे प्रियतम पाहुने इसबनको सिधारे परंतु आपकी सेवाके योग्य हमारे भाग्यकहां हैं १ आपके देनेके योग्य हमारे क्याहै किरातों की मित्रतामें तो ईंधन और पत्तोंही का लाभ बिशेषहै २ बड़ी सेवकाई तो हमारी आप यही जानो कि जो आपके बासन बसन नहीं चुराइ लेतेहैं हमतो जड़जीव जीवों के घातक बड़े कुटिल कुचालीकुमति

नीचजाति हैं ४ पाप करतेही रातदिन बीततेहैं नतो पहिरनेको वस्त्र न भरिपेट भोजन मिलता है ५ धर्म बुद्धि तो स्वप्नमें भी नहींहोती है यह सब रामचन्द्र के दर्शन का प्रभावहै ६ जबसे रामके चरण देखेहैं तभीसेसबदोष हमारे मिटगयेहैं ७ उनके बचनसुनतेही पुरजन प्रेममेंमग्न होगये और उनके भाग्य सराहने लगे ॥ ८ ॥ छन्द ॥ उनकी बोलनि मिलनि और रामका प्रेम देखिकर सुखपाते हैं अयोध्याबासी नरनारी उनकी बाणी सुनिकर अपने प्रेमको निन्दते हैं यह सब रामकी कृपा का प्रभावहै जैसे लोहेको लेकर नाव तरतीहै ॥ सोरठा ॥ अबतो दिनदिन प्रति आनन्दित अयोध्याबासी बनमें चारों ओर बिहार करते फिरते हैं जैसे प्रथम बर्षा के जलको पाकर दादुर मयूर पीन होजातेहैं ॥ २५ ॥ यह अयोध्या कांड में चौपइयों की दसवीं पचीसी हुई १० ॥

केशवायनमः ॥

पुरनर नारि मगन अतिप्रीती । बासर जाहिं पलक समबीती १
सीय सासु प्रतिवेष बनाई । सादर करै सरिस सेवकाई २
लखान मर्म राम बिनकाहू । माया सब सिय मायानाहू ३
सीय सासु सेवा बशकीन्ही । तिनलहिसुखशिषआशिषदीन्ही ४
लखिसिय सहित सरल दोउभाई । कुटिल रानि पछिताइ अघाई ५
अब जियमहं याचति कैकेई । मोहि मीच महि बीचन देई ६
लोकहु बेद बिदित कबिकहहीं । राम बिमुखकह नर्कन लहहीं ७
यह संशय सबके मन माहीं । रामगमन बिधि अवध किनाहीं ८

दो० निशिन नींद नहि भूखदिन भरत बिकल सुठिसोच ।
नीचकीच बिच मग्नजस मीनहि सलिल सकोच ॥ १ ॥

पुरबासी,सबनर,नारी रामकी प्रीतिमें मग्नहैं पलक के समान दिनबीत जाते हैं १ सीता सासु प्रतिबेष बनाइ कर सबकी समान सेवाकरती है २ यह मर्म रामबिना किसीने नहींजाना क्योंकि समस्त माया सीताहीकी मायाहै उसके नाह पतिरामहीहैं ३ सीता ने सबसासु सेवा के बशकरलीं उन्होंने सुख पाकर शिक्षा और आशिष दिया ४ सीता समेत दोनोभाइयों को अति सरल देखिकर कुटिल रानी अघाइकर पछिताई ५ अबतो कैकेयी मनमें यह याचती है कि मेरेको बिधाता मृत्यु और पृथिवी बीच देदेवे सो कोईनहीं देताहै ६ यहतो लोक, बेदमें बिदितहैं और कबिजन भी कहते हैं किराम बिमुख महापातकी जीवको नर्कभी नहीं सोहतेहैं ७ यहसंशय तो सबही के मनमें है कि रामका जाना अयोध्या को होगावा नहीं भरत को रातिमें

तो नींद और दिनमें भूखनहीं है अति सोचमे ऐसे ब्याकुल रहतेहैं जैसे जलके सूखे कीचमें बूड़ी मीनको संकोच होताहै ॥ १ ॥

कीन्ह मातु मिसुकाल कुचाली। ईतिभीति जसपाकत शाली १
केहिं बिधि होइ रामअभिषेकू। मोहि अब बनत उपाय नएकू २
अवशिफिरहिंगुरु आयसुमानी। मुनिपुनि कहबरामरुखजानी ३
मातु कहें बहुरें रघुराऊ। राम जननि हठ करिहि न काऊ ४
मोहिअनुचर करिकेतिक बाता। तापर कुसमय बाम बिधाता ५
जोहठ करौं तो निपट कुकर्मू। हर गिरितें गुरु सेवक धर्म ६
एकहु युक्ति न मन ठहरानी। सोचत भरतहि रैन बिहानी ७
प्रात नहाइप्रभुहिं शिरनाई। बैठत पठये ऋषय बुलाई ८
दो० गुरुपद कमल प्रणाम करि बैठे आयसु पाइ।
बिप्र महाजन सचिवसब जुरे सभासद आइ ॥ २ ॥

माताके मिस करिके कालने कैसी कुचाल कीन्हीहै जैसी पाके शाली पर ईति भय होताहै १ रामको राज्यतिलक कौनभांति होवै मेरेसे तो एकभी उपाय बन नहीं पड़ताहै २ गुरु बशिष्ठकी आज्ञासे अवश्य फिरि चलें परंतु गुरुतो रामहीका मन पायकर कहेंगे ३ माता कौशल्याके कहनेसे भी राम फिरि चलेंगे परंतु रामकी माता कभी हठन करैगी ४ रहा मैंअनुचर मेरी कितनी बात है तापर भी कुसमय और बिधाता बामहै यदिमैंफिरि चलनेका हठकरूं तो बड़ाही कुकर्महै क्योंकि सेवकाई काधर्म कैलाशसे भीभारीहै ५ । ६ एकभी युक्ति मनमें नसमाई सोचतेही सोचते भरतको राति बीति गई ७ प्रात:काल मंदाकिनी नहाये और रामके पास प्रणाम करिके बैठतेही जातेहैं किबशिष्ठ मुनि ने बुलाइ भेजे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ गुरुके चरण कमल को प्रणाम करि आज्ञा पाकर बैठे इतने में सब द्विज, देव,मंत्री, महाजन सभासद आय गये ॥ २ ॥

बोले मुनिबर समय समाना। सुनहु सभासद भरत सुजाना १
धर्म धुरीण भानुकुल भानू। राजा राम स्वबश भगवानू २
सत्यसंध पालक श्रुतिसेतू। राम जन्म जग मंगलहेतू ३
गुरुपितु मातु बचन अनुसारी। खलदल दलनदेव हितकारी ४
नीतिप्रीति परमारथ स्वारथ। कोउन राम समजान यथारथ ५
बिधिहरिहररविशशिदिशिपाला। मायाजीवकर्म कलिकाला ६

अहिपमहिप जहंलगि प्रभुताई। योगसिद्धि निगमागम गाई ७
करि बिचार जिय देखहु नीके। राम रजाय शीश सबहीके ८
दो० राखेराम रजाय रुख हमसब करहित होइ।
समुझि सयाने करहु अब सबमिलि संमत सोइ ॥ ३ ॥

तबतो बशिष्ठ महाराज समयके समान बचन सबसे बोले सुनो हेसभासद और हेपरमसुजान भरततुमभी सुनो १ किभानुकुलभानु राम प्रथम तो धर्मधुरीण हैं उनके धर्मको छुड़ाना उचित नहींहै फिरि राजा हैं और परमसुतंत्र सर्वेश्वर भगवान हैं २ सत्यसंधान हैं कि इस अवतार में जो उनका संकल्पहै सोपूरा करेंगे श्रुतिसेतु के रक्षक हैं औरउनका जन्म जगन्मंगल कारणहै ३ गुरु,पिता,माताके बचनोंके पालक हैं खलोंके दलके नाशकहैं देवताओंके हितकारी हैं ४ नीतिऔर प्रीति परमार्थ और स्वार्थ इनको रामके समान यथार्थ कोईभी नहीं जानताहै ५ बिधि, हरि, हर, सूर्य्य चन्द्रमा,दिग्पाल,जगन्मूलामाया,जीवऔर काल,कर्म,६समस्त अहिलोकपति महीपतिकी जो प्रभुताईहै अष्टांगयोगकी सिद्धिजो कहीहै७भलीभांति बिचार करिदेखो किराम की आज्ञा सबके शिरपर है ८ मद्भयाद्वातिवातोयं सूर्य्यस्तपति मद्भयात् बर्षतीन्द्रोदहत्यग्निर्मृत्युर्धावतिपंचमः ॥ दोहा ॥ तातें रामकी रुचि राखिकर जिसमेंहम सबका हित होवै सो तुमसब सयाने समुझिकर कहो वही संमत किया जावै ॥ ३ ॥

सब कहं सुखद राम अभिषेकू। मंगल मोद मूल मगु एकू १
केहिंबिधि अवधचलैं रघुराऊ। कहहुसमुझि सोइकरियउपाऊ २
सब सादर सुनि मुनिबर बानी। नय परमारथ स्वारथसानी ३
उतर न आव लोग भय भोरे। तब शिर नाइ भरत कर जोरे ४
भानुबंश भे भूप घनेरे। अधिक एकते एक बडेरे ५
जन्म हेतु सब कहं पितु माता। कर्म शुभाशुभ देइ बिधाता ६
दलि दुख सृजैसकल कल्याना। असि अशीष राउरिजगजाना ७
सो गुसाइं बिधिगति जेहि छेकी। सकैको टारि टेक जोटेकी ८
दो० पूछेहु मोहि उपाय अब सो सब मोर अभाग।
सुनि सनेह मय बचन गुरु उर उमगेउ अनुराग ॥ ४ ॥

सुखदायक तो सबको रामका तिलक है और आनन्द मंगलका मूल एकही मार्ग है १ सो राम अयोध्याको कैसे लौटि चलें समुझि कर कहो वह उपाय किया जावे २ सबने मन लगाय कर स्वार्थ परमार्थ नीतिकी भरीजो बशिष्ठकी बाणीथीसो सुनी ३ किसी

को कुछ उत्तर न आया सब भोरसे होगये तबतो प्रणाम करिके भरत ने हाथ जोरे
और बोले ४ सुनिये हे महाराज हमारे इस सूर्य्यवंश में बहुत राजा आपके आगे
हुये हैं ते सब आपुही की आशिष के प्रभाव से एक से एक अधिकही होते आये ५
क्योंकि माता पिता तो केवल जन्महीं के कारण होतेहैं और बिधाता उनके शुभा
शुभ कर्मोंके फलको देताहै ६ हमारे सब पुरुषोंके अशुभ दूरिकरिके सबको कल्याण
ही सृजे सो केवल आपहीकी आशिष जग जानताहै ७ सोई आप हैं जिनने बिधाता
की गतिको छेकि दिया फिरि दूसरा कौन है जो आपकी टेक को टारि देवे ८ ॥
दोहा ॥ ऐसे समर्थ होकर आप मेरेसे उपाय पूछते हैं सो सब मेरा अभाग्यही है ऐसे
सनेह साने भरतके बचनसुनिकरि बशिष्ठके हृदय में बड़ाही अनुराग उत्पन्नहुआ ॥४॥

तात बात फुर राम कृपाहीं । राम बिमुख सुख सपनेहुं नाहीं १
सकुचौं तात कहत एक बाता । अर्द्ध तजहिं बुध सर्बस जाता २
तुम कानन गवनहु दोउ भाई । बहुरहिं लषण सीय रघुराई ३
सुनि सो बचन हर्ष दोउ भ्राता । भे प्रमोद परिपूरण गाता ४
मन प्रसन्न तन तेज बिराजा । जनु जिय राउ राम भय राजा ५
बहुत लाभ लोगनलघु हानी । सम दुख सुख सबरोवहिं रानी ६
कहहिं भरत मुनिकहासोकीजे । फलजगजीवन अभिमतदीजै ७
कानन करहुं जन्म भरि बासू । यहिते अधिक न मोर सुपासू ८

दो० अंतर्यामी राम सिय तुम सर्बज्ञ सुजान ।
जो फुर कहहु तो नाथ निज कीजै बचन प्रमान ॥ ५ ॥

हे तात तुम्हारा कहना सब सत्य है परंतु यह सामर्थ्य मेरे में सब रामही की
कृपा से है रामसे प्रतिकूल हुये फिरि यह बात स्वप्न में भी नहींहै १ एकबात कहते
में हे तात मैं सकुचता हूं कि बुद्धिमान सर्बस जाता जानि कर आधेका त्याग करते
हैं २ जो उनके पलटे तुम दोनों भाई बनको जाओ तो राम लक्ष्मण सीता बहुरि
सकते हैं ३ यह बचन सुनतेही दोनों भाई हर्षित होगये ४ मन तो प्रसन्न होगये
और तनमें तेज आगया मानों राजा जी गये और राम राजा होगये ५ लोगों को
लाभतो बहुत हुआ पर थोरी हानिभी हुई समान दुख सुख जानिकर रानी सब रोवने
लगीं ६ भरत ने कहा हे नाथ आपने जोकहा सोई कीजिये जगमें जीवनेका अभिमत
फल मेरेको यही है सो दीजिये ७ जो मैं स्वामी के पलटे बनमें जन्म भरि बास
करूं इससे अधिकतो मेरा और सुपास नहीं है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ अंतर्यामी तो सीता
राम हैं और आपभी सर्बज्ञ हैं यदि मैं सत्य कहता हूं तो आप अपने बचन को
प्रमाण कीजिये ॥ ५ ॥

भरत बचन सुनि देखि सनेहू । सभा सहित मुनि भये बिदेहू १
भरत महा महिमा जलराशी । मुनिमति तीरठाढ़ि अबलासी २
गा चह पार यतन बहु हेरा । पावति नाव न बोहित बेरा ३
और करै को भरत बड़ाई । सरसि सीप किमि सिंधु समाई ४
भरत मुनिहि मन भीतर भाये । सहित समाज राम पहं आये ५
प्रभुप्रणाम करि दीन्हसुआसन । बैठ सबसुनि मुनिअनुशासन ६
बोले मुनिबर बचन बिचारी । देश काल अवसर अनुसारी ७
सुनहु राम सर्बज्ञ सुजाना । धर्म नीति गुण ज्ञान निधाना ८
दो० सबके उर अंतर बसहु जानहु भाउ कुभाउ ।
पुर जन जननी भरत हित होइ सो करहु उपाउ ॥ ६ ॥

भरत के बचन सुनि और उनके सनेहको देखिकर बशिष्ठमुनि सभा समेत बिदेह होगये १ भरत की महिमा तो महासागर है तहां मुनिकी बुद्धि अबलासी तीर ठाढ़ी है २ पारतो गया चाहती है और उसके उपाय भी देखती है परंतु नतो नाव मिलती है न बोहित बेरा पावती है ३ जब बशिष्ठही की बुद्धिकी यह दशा है तो और कौन उनकी बड़ाई कर सकता है पोखरों की सीपोंमें समुद्र कैसे समाता है ४ बशिष्ठको भरत मनेहीं मनमें भाये और सब समाज समेत रामके पास आये ५ रामचन्द्रने प्रणामकरिके उच्चासन दिया और मुनिकी आज्ञा पाकर सब बैठे ६ तबतो बशिष्ठमुनि देश काल समय के समान बिचारि कर बचन बोले ७ सुनो हे राम आप सर्बज्ञ शिरोमणि समस्त धर्मनीति और गुण ज्ञानके निधान हो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सबके हृदयमें बसते हो सबके भाव कुभावको जानते हो जिसमें सब पुरबासी और सब माता और भरतका हित हो सो उपाय कीजिये ॥ ६ ॥

आरत कहहिं बिचारि न काऊ । सूझ जुआरिहि आपन दाऊ १
सुनि मुनि बचन कहत रघुराऊ । नाथ तुम्हारेहि हाथ उपाऊ २
सब कर हित रुख राउर राखे । आयसु किये मुदित फुर भाखे ३
प्रथम जोआयसु मोकहं होई । माथे मानि करौं शिख सोई ४
पुनि जेहि कहजस होइ रजाई । सोसबभांति करिहि सेवकाई ५
कह मुनि राम सत्य तुम भाखा । भरत सनेह बिचार न राखा ६
तातें कहहु बहोरि बहोरी । भरत भक्तिबश भइ मति भोरी ७

मोरे जान भरत रुचि राखी। जोकीजै सो शुभ शिव शाखी ८
दो० भरत बिनय सादर सुनिय करिय बिचार बहोरि।
करब साधुमत लोकमत नृपनय निगम निचोरि ॥ ७ ॥

आरत लोगतो कभी बिचारि कर नहीं कहतेहैं क्योंकि जुआरीको तो अपनाही दाउं सूझता है १ ऐसे बशिष्ठके वचन सुनिकर रामचन्द्रने कहा हे नाथ सबका निर्बाह आपहीके हाथ है २ सबका भला आपहीके मान राखने मेंहै और आपही की आज्ञाका प्रसन्न मन सत्य करिकर करनेमेंहै ३ तहां प्रथमजो आज्ञा मेरेको होवे माथे मानिकर सोई मैं करूं ४ फिरि जिसको जैसी आज्ञा होगीसो सब भांतिसे आप सेवकाई करेगा ५ यह सुनिकर बशिष्ठने कहा हे राम यहतो तुमने सत्य कहा परंतु भरत के सनेह ने हमारेतो कुछ बिचार नहीं राखा इतातें मैंतो बार बार यही कहताहूं कि मेरी बुद्धि तो भरतकी भक्तिके बशहोगई है ७ मेरे जानतो भरतकी रुचि राखिकर जोआप करोगे सोई शुभ होगा शंकर साखी हैं ॥ ८ ॥ दोहा प्रथमतो आप भरत की बिनती सुनिये तब बिचारिकर जो संतमत लोकमत राजनीतिवेदोंका सारहोवे सो कीजिये ॥ ७ ॥

गुरु अनुराग भरत पर देखी। राम हृदय आनन्द बिशेषी १
भरतहिं धर्म धुरंधर जानी। निज सेवक तन मानस बानी २
बोले गुरु आयसु अनुकूला। बचन मंजु मृदु मंगल मूला ३
नाथ शपथ पितुचरण दोहाई। भयउ न भुवन भरत सम भाई ४
जे गुरुपद अंबुज अनुरागी। ते लोकहु बेदहुं बड़ भागी ५
राउर जापर अस अनुरागू। कोकहि सकै भरत कर भागू ६
लखि लघु बंधु बुद्धि सकुचाई। करत बदन पर भरत बड़ाई ७
भरत कहैं सोइ किये भलाई। अस कहि राम रहे अरगाई ८
दो० तब मुनि बोले भरत सन सब सकोच तजि तात।
कृपासिंधु प्रियबंधु सन कहहु हृदयकी बात ॥ ८ ॥

जब बशिष्ठ गुरुका ऐसा प्रेम भरत शिष्य पर देखा तब तो रामचन्द्रके हृदय में बड़ाही आनन्द हुआ १ फिरि भरतको धर्म धुरंधर और तन मन बचनसे अपना सेवक जानि कर गुरुकी आज्ञाके अनुकूल अति उज्वल और कोमल मंगलमूल बचनबोले २। ३ हे नाथ मैं आपके और पिताके चरणोंकी शपथ करिके कहता हूं कि संसार में भरतके समान कोई भाई नहीं हुआ ४ जो शिष्य गुरुके चरणकमलों के अनुरागी होते हैं ते लोक और वेदमें बड़भागी होते हैं ५ और जिन भरत पर आपका ऐसा प्रेम है तिनके भाग्यको कौन कहि सकता है ६ छोटा भाई देखकर भरतके मुख पर बड़ाई करने में

बुद्धि संकोचती है ७ तातें जोभरत कहेंगे उसीकेकरनेमें मेरी भलाईहै ऐसे कहिकर राम चुपाय रहे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तबतो बशिष्ठमुनिने भरतसेकहा किसब संकोच छोड़िकर कृपासिंधु अपने भाईसेहृदयकीबात कहो ॥ ८ ॥

सुनि मुनि बचन रामरुख पाई । गुरु साहिबअनुकूल अघाई १
लखिअपनेशिरसब क्षरभारू । कहिनसकतकछुकरहिं बिचारू २
पुलकि शरीर सभा भये ठाढ़े । नीरज नयन नेहजल बाढ़े ३
कहब मोर मुनिनाथ निबाहा । यहिते अधिक कहब मैं काहा ४
मैं जानहु निजनाथ सुभाऊ । अपराधिहु पर कोह न काऊ ५
मोपर कृपा सनेह बिशेषी । खेलत खुनस न सपनेहु देखी ६
शिशुपन ते परि हरेउ न संगू । कबहुं न कीन्ह मोर मन भंगू ७
मैंप्रभु कृपा रीति जिय जोही । हारत खेल जितायउ मोही ८
दो० महूं सनेह सकोच बश सुख पर कहे न बयन ।
दर्शन तृप्त न आज लगि प्रेम पियासे नयन ॥ ९ ॥

गुरु बशिष्ठके बचनसुनि और रामका भी अभिमत जानाकि गुरु और स्वामी दोनों अघाइकर अनुकूल हैं १ अपनेही शिर पर सब अचल भार जानिकर कुछ कहि नही सकते हैं बिचार करतेहैं २ फिरतो पुलकित शरीर होकर सभामें ठाढ़ेहुये औरकमल से नेत्र प्रेमके जलसेबढ़े और बोले ३ मेरा कहनातो हे मुनिनाथ आपहीने सबनिबाहि दिया इससे अधिक मैं और क्या कहूंगा ४ मैंतो अपने स्वामीके सुभावको जानता हूं कि अपराधी पर भी वे कोप नहीं करते हैं ५ मेरे परतो बिशेष प्रेम करते हैं खेलने में भी कभी खुनस नहीं देखी ६ बालपनसे कभी मेरासाथ नहीं छोड़ा और कभी मेरा मन भंग नहीं किया ७ मैंनेतो अपने स्वामीकी कृपारीति अपने हृदयमें देख ली कि हारखेल में भी मेरेहीको जिता दिया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ मैंनेभी सकुच और सनेहके बश स्वामीके संमुख बचन कभी नहीं कहे और प्रेमके पियासे मेरे नेत्र आज तक दर्शन से तृप्त नहीं हुये ॥ ९ ॥

बिधि न सकेउ सहि मोर दुलारा । नीचबीचजननीमिसुपारा १
यहुकहत मोहिंआज न शोभा । आपनसमुझिसाधु शुचिकोभा २
मातु मंद मैं साधु सुचाली । उर अस आनत कोटि कुचाली ३
फरै कि कोदव बालि सुशाली । मुक्ता प्रसव कि शंबुक ताली ४
सपनेहु दोष कलेश न काहू । मोर अभाग्यउदधि अवगाहू ५

बिनुसमुझे निज अघ परिपाकू । जारेउजाय जननि कहिकाकू ६
हृदयहेरि हारेउं सब ओरा । एकहि भांति भलेहिं भल मोरा ७
गुरु गुसाइं साहिब सियरामू । लागत मोहिं नीक परिणामू ८
दो० साधु सभा गुरु प्रभु निकट कहौं सुथल सतिभाउ ।
प्रेम प्रपंच कि झूठ फुर जानहिं मुनि रघुराउ ॥ १० ॥

उस मेरे दुलारको मेरा खोटा कर्म न सहिसका तबउस नीच कर्म ने माताके मिसु मेरे और स्वामी मे बीच पारि दिया १ यह कहना भी मेरेको आज नहीं सोहता है कि अपनीही समुझसे सुसाधु कौन हुआ है २ माताता मेरी मंद और मैं सुचाली साधु यह तो हृदय में बिचार करनेसे बड़ी कुचाल देख पड़ती है ३ कि कोदव लघुअन्न की बाली कहीं उत्तम शालीसे फरतीहै और पोखरोंकी सीपी कहीं मुक्ता मणि जनती है ४ तातें दोषका लेश किसीको स्वप्नमें भी नहींहै यहतो मेरेही अभाग्यका अथाह समुद्र है ॥ नमंथरायानचमातुरस्य दोषोनराज्ञोनचराघवस्य मत्पापमेवात्रनिदानभूतं वनप्रवेशेरघुनन्दनस्य ५ सो अपने पापके परिपाक फलके बिना समुझे माताको मैंने वृथा काक बचन कहि कर जराया ६ मैंतो अपने पापोंके भयसे सब ओर उपाय देखि कर हिये हार होगया अबतो एकही भांतिसे मेरा भला भली भांति होवेगा ७ परम कृपाल आप तो मेरे गुरु हैं और शरणागत वत्सल सीता राम मेरे स्वामी हैं तातें परिणाम मेरेको भलाही जानि परत्ता है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ संतनकी तो सभाहै और गुरु और अपने स्वामी के समीप सत्यभाव कहता हूं प्रेम वा छल सत्य वा झूठ जोकहूंगा उसको मुनिराज और रघुराज सब जानि लेवेंगे ॥ १० ॥

भूपति मरण प्रेम पन राखी । जननी कुमति जगत सब साखी १
देखि न जाहिं दुखित महतारी । जरहिं दुसह ज्वर पुरनरनारी २
मही सकल अनरथ कर मूला । सोसुनि समुझि सहौंसबशूला ३
सुनि बन गमन कीन रघुनाथा । करिमुनिबेष लषण सियसाथा ४
बिनु पानहीं पयादे पाये । शंकर साखि रहेउं यहि घाये ५
बहुरि निहारि निषाद सनेहू । कुलिश कठिन उर भयउ नबेहू ६
अब आंखिन सब देखेउं आई । जियत जीव जड़ सबहिसहाई ७
जिनहिंनिरखिमगसांपिनिबीछी।तजहिंबिषमबिषतामसतीछी ८
दो० ते रघुनन्दन लषण सिय अनहित लागे जाहि ।
तासु तनय तजि दुसह दुख दैव सहावहि काहि ॥ ११ ॥

राजाका ता प्रेमपन राखिकर मरण हुआ माताकी कुमतिको सबकोई जानताहै १ अब महादुखित माता देखी नहीं जाती हैं और दुसह ज्वरसे सबनरनारी जरतेहैं २ इस सब अनर्थ का मूल मैंहीं हूं तातें सुनि और समुझि कर सबशूल सहता हूं ३ प्रथम ता घर आकर सुना कि रामने बनमें गमन किया मुनिबेष बनाय सीता लक्ष्मणको साथ लिया ४ बिना पानहीं पयादेही गये शंकर शाखीहैं जो दुखसहिकर इस घायसे भी जीता रहा ५ फिरि निषादकाभी प्रेम देखिकर बज्रसे भी कठिन मेरे हृदयमें बंधन हुआ ६ अब आकर सबनेचोंहीसे देखा मेरे इसजड़ जीव ने जीतेही सब दुख सहाये ७ जिनको देखिकर मार्ग मेंसर्प बीछियोंनेभी अति तीक्ष्णअपना सहज बिषम बिष त्याग दिया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तेई राम लक्ष्मणसीता जिस कैकयीको अनहित जानिपरे उसके पुत्रको छोड़िकर ऐसादुसह दुखबिधाता और कौनको सहावै११

सुनि अतिबिकल भरतबरबानी । आरत प्रीतिबिनयनयसानी १
शोक मगन सबसभा खंभारू । मनहु कमल बन परेउ तुषारू२
कहि अनेक बिधिकथा पुरानी । भरत प्रबोध कीन्हमुनिज्ञानी ३
बोले उचित बचन रघुनंदू । दिनकर कुल कैरवबन चन्दू४
तात जीय जनिकरहु गलानी । ईशअधीन जीव गति जानी ५
तीनिकाल त्रिभुवन मत मोरे । पुण्य श्लोक तात कर तोरे ६
उर आनत तुम पर कुटिलाई । जाइ लोक परलोक नशाई ७
दोष देहिं जननिहिं जड़तेई । जिन गुरु साधु सभानहिं सेई८
दो० मिटिहैं पाप प्रपंच सब अखिल अमंगल भार ।
लोक सुयश परलोक सुख सुमिरत नाम तुम्हार ॥ १२ ॥

ऐसी आरत, प्रीति, नम्रता, और नीति की भरी जब भरत की अति बिकलबाणी सुनी १ शोक में व्याकुल सब सभा में ऐसा क्षोभ हुआ मानों कमल के बन पर तुषार परि गया २ तबतो अनेक भांतिकी पौराणिक कथा कहिकर बशिष्ठने भरतका प्रबोध किया ३ तब दिनकरकुलकुमुदबन के चन्द्रमा रघुनन्दन राम उचितबचन बोले ४ हेतात भरत तुम अपनेजीमें कुछ ग्लानि मत करो जीवकी गति सदा ईश्वरके आधीन जानो ५ तीनों काल और तीनों लोक में पुण्यका समाज सब मेरे मतसे तो तेरेही हाथ में हैं ६ तुम्हारे ऊपर तो कुटिलता मनमें बिचारतेही लोक परलोक दोनों नशाय जांयगे ७ और जो महा जड़ होंगे तेई माता को भी दोष देवेंगे जो बडों की सभा में नहीं बैठे है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तुम्हारे तो नाम के सुमिरतेही पाप प्रपंच अमंगल सब मिटि जावेंगे और लोक में सुयश परलोक में सुख पावेंगे ॥ १२ ॥

कहहुं सुभाव सत्य शिवसाखी । भरत भूमि रह राउर राखी १
तात कुतर्क करहु जनि जाये । बैर प्रीति नहिं दुरत दुराये २
मुनिगणनिकटबिहंगमृगजाहीं । बाधक बधिकबिलोकिपराहीं ३
हित अनहित पशु पक्षिहु जाना । मानुषतनगुण ज्ञाननिधाना ४
तात तुमहिं मैं जानहुं नीके । करहु काह असमंजस जीके ५
राखेउ राउ सत्यमोहिं त्यागी । तनु परिहरेउ प्रेम पनलागी ६
तासु बचन मेटत मन सोचू । तेहिंतें अधिक तुम्हार सकोचू ७
तापरगुरु मोहिं आयसुदीन्हा । अवशि जोकहहु चहौंसोइकीन्हा ८
दो० मन प्रसन्न करि सकुच तजि कहहु करौं सोई आज ।
सत्यसंध रघुबर बचन सुनिभासा सुखी समाज ॥ १३ ॥

सुनो हे भरत मैं भी शंकर को साखी देकर सौभाविक सत्य; कहता हूं कि यह भूमि तुम्हारीही राखी रहती है १ हेतात तुम वृथा कुतर्क मतिकरो बैर और प्रेम कहीं छिपाने से नहीं छिपते हैं २ देखो मुनिगणों के समीप तो विहंग मृग सब चले जाते और सचान सिंह अहेरियों को देखिकर दूरि भागि जाते हैं ३ अपने शत्रु मित्र को तो पशुपक्षी भी जानते हैं मनुष्य शरीर तो गुण ज्ञान को निधानही होता है ४ सो हे तात तुमको मैं भली भांति जानता हूं परंतु क्या करूं मेरे जीको बड़ा असमंजस होरहा है ५ कि पिता ने मेरा भी त्याग करिके सत्य को राखा और मेरे प्रेम के पन से शरीर कोभी त्यागा उनके बचन मेटते मनको सोच होताहै कि निजकर खाल खैंचि यातनतें जो पितु पग पानही कराऊं ५ होउन अनृण पितादशरथ तें कैसे बचन मेटि पतिआऊं॥ परंतु उससे भी अधिक मेरे को तुम्हारा संकोच है ७० तिस पर गुरु ने भी मेरे को आयसु दिया है अबतो अवश्य मैं सोई करूंगा जो तुम कहोगे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तातें मनको प्रसन्न करो और सकुच को छोड़िकर जो तुम चाहते हो सो कहो मैं सोई करूंगा सत्यसंध रामके ऐसे बचन सुनतेही सब समाज सुखी होगया ॥ १३ ॥

सुरगण सहित सभय सुरराजू । सोचत चाहत होन अकाजू १
करत बिचार बनत कछु नाहीं । राम शरण सब गे मन माहीं २
बहुरिबिचारि परस्पर कहहीं । रघुपति भक्त भक्ति बश अहहीं ३
सुधि करि अंबरीष दुर्बासा । भे सुर सुरपति निपट निरासा ४
सहे सुरन बहु काल बिषादा । नरहरि किये प्रगट प्रहलादा ५

लगि लगिकान कहैं धुनिमाथा । अब सुरकाज भरत के हाथा ६
आन उपाय न देखत देवा । मानत राम स्वसेवक सेवा ७
हियसप्रेम सेवहु सबभरतहि । निजगुरु शीलरामबश करतहि ८
दो० सुनि सुरमत सुरगुरु कहेउ धनि तुम्हार बड़ भाग ।
सकल सुमंगल मूलजग भरत चरण अनुराग ॥ १४ ॥

सब देवताओं समेत देवराज इन्द्रभयभीत होगये सोचते हैं कि अकाज हुआ चाहता है १ उपाय करते तो कुछ बनता नहीं है तबतो सबके सब मन में राम के शरण गये २ राम के शरण जाने से यह सुबुद्धिहुई कि परस्पर बिचारिकर यहकहने लगे कि राम तो अपने भक्तों की भक्ति के बश हैं ३ तातें प्रथम तो राजा अंबरीष और दुर्बासा मुनि की सुधि करिके सब निराश होगये ४ फिरि सोचे कि पूर्व हमने हिरण्यकश्यप के राज्यमें बहुत काल बिपत्ति सही रहे तब नृसिंह देव स्वामी राम भक्त प्रह्लादही ने प्रगट किये रहैं ५ कान लगिलगिकर एक से एक कहतेहैं कि तैसेही अब हमारा काम भरत के हाथ है ६ और कोई दूसरा उपाय देवता नहीं देखते हैं तब यही ठीक सबने दिया कि राम अपने सेवकहोंकी सेवाको मानते हैं ७ तातें मत्रि समेत सब भरतही का सेवन करो जिसने अपने गुणशील से रामको वशकिया है ८ ॥ दोहा ॥ ऐसा देवताओं का संमत सुनिकर वृहस्पति ने कहा कि तुम्हारा भाग्य अति धन्य है क्योंकि समस्त सुमंगल की मूल जगमें रामभक्त भरतही के चरणों का प्रेम है ॥ १४ ॥

सीतापति सेवक सेवकाई । कामधेनु शत सरिस सुहाई १
भरत भक्ति तुम्हरे मन आई । तजहु शोक बिधि बात बनाई २
देखु देवपति भरत प्रभाऊ । सहज सनेह बिबश रघुराऊ ३
मन थिर करहु देव डरनाहीं । भरतहिं जानि राम परछाहीं ४
सुनि सुर गुरु सुर सम्मत सोचू । अंतर्यामी प्रभुहि सकोचू ५
निज शिरभार भरतजियजाना । करत कोटि बिधिमनअनुमाना ६
करि बिचार मन दीन्हेउ ठीका । राम रजायसु आपन नीका ७
निज पन तजिराखेउ मनमोरा । छोह सनेह कीन्ह नहिं थोरा ८
दो० कीन्ह अनुग्रह अमित अति सब बिधि सीतानाथ ।
करि प्रणाम बोले भरत जोरिजलज युग हाथ ॥ १५ ॥

सीतापति रामके सेवकों की सेवकाई सौ कामधेनु के समान कामदायनी होती

है ॥ मत्पूजनाच्छतगुणंमद्भक्तस्यतुपूजनं । मद्वंदनाच्छतगुणंमद्भक्तस्यतुवंदनं १ सो जो भरतकी भक्ति तुम्हारे मनमें आई है तो अब सोच दूरि करौ बिधाता ने सब बात सम्हारी है २ देखो हे इन्द्र भरत के प्रभावको जिनके सहज स्नेह के बश राम हो रहे हैं ३ अब तुम सबदेव मनको सावधान करो अबकुछ डरनहीं है भरतको राम की परछाहीं जानो ४ ऐसा देवता औ बृहस्पति का सम्मत और सोच देखि अंतर्यामी रामको बड़ा सकोच है ५ जब भरत ने सबका भार अपनेही शिर जाना तब तो कोटि भांति के अनुमान मनमें करने लगे ६ बिचार करिके मनमें यही ठीक दिया कि जो राम के अभिमत है उसी में अपना भला है ७ देखो स्वामी ने अपना प्रण छोड़िकर मेरा दुलार रक्खा तो अनुग्रह औ सनेह थोरा नहीं किया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सब भांति से सीता पति राम ने मेरे पर अति अमित अनुग्रह किया है यह बिचारि कर भरत दोनों हाथ जोरि कर यह वचन बोले॥ १५ ॥

कहहु कहावहु का अब स्वामी । कृपा अंबुनिधि अंतरयामी १
गुरु प्रसन्न साहिब अनुकूला । मिटे मलिनमन कलपित शूला २
अपडर डरेउं न सोच समूलें । रबिहि न दोष देव दिशि भूलें ३
मोर अभाग मातु कुटिलाई । बिधि गति बाम काल कठिनाई ४
पाउं रोपि सबमिलि मोहिघाला । प्रणतपालपन आपनपाला ५
यह नइरीति न राउरि होई । लोकहु वेद बिदित नहिं गोई ६
जग अनभल भल एक गुसाईं । कहहु होइ भल कासु भलाईं ७
देव देवतरु सरिस सुभाऊ । सम्मुख बिमुख न काहुहिकाऊ ८
दो० जाइ निकट पहिचानि तरु छांह शमन सब सोच ।
मांगत अभिमत पावजग राउ रंक भल पोच॥ १६ ॥

हेकृपासागर हे हृदय के प्रेरक स्वामी यह तो कहिये कि आप मेरे मुखसे क्या कहाआगे अब तो मेरे पर गुरु भी प्रसन्न हैं और आप भी सानुकूल हैं तातें मलीन मनके कल्पित मेरे सब शूल मिटि गये २ झूठेही डरसेमें डरपा रहूं कुछ समूल सोच नहीं रहे कोई दिशा भूलि जावे तोसूर्य्यका कौन दोषहै ३ मेरा तो अभाग्य और माता की कुटिलता बिधाताकी बामगति कालकी बिपरीतता इन चारोंने पैजरोपिकर मेरेको ाश करना चाहा रहैसो हेप्रणतपाल स्वामी आपने अपना प्रणपालिकर मेरेको राखिलिया ४ । ५ यह आपकी सुन्दर रीति नई नहीं है लोक और वेदमें विदितहै छिपी हींहैं ६ जग तो सब अनभला है एक आपही भले हो तो कहो उसभाई से अनभले ा भलाकैसे होवे ७ आपका तो कल्पवृक्ष कासा सुभावहै जैसे कल्पवृक्ष न किसी को म्मुख है न बिमुख है किन्तु उदासीन है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जो कोई उसको महिमा

को जानिकर उसकी शोक शमन छाया में जावे तो राजा होइ वा रंक भला होइ वा पोच मांगतेही सब मनकामना पाते हैं तैसेही आपके शरण गये पर भला जगकाहोता है ॥ १६ ॥

लखि सब बिधिगुरुस्वामि सनेहू । मिटेउक्षोभ नहिं मनसंदेहू १
अब करुणानिधि कीजिय सोई । जनहित प्रभुचितक्षोभनहोई २
जो सेवक साहेबहि सकोची । निज हित चहै तासु मतिपोची ३
सेवक हित साहेब सेवकाई । करै सकल सुख लोभ बिहाई ४
स्वारथ नाथ फिरै सबहीका । किये रजाय कोटि बिधि नीका ५
यह स्वारथपरमारथ सारू । सकल सुकृत फल सुगतिशृंगारू ६
देव एक बिनती सुनि मोरी । उचित होय तस करब बहोरी ७
तिलक समाजसाजिसबआना । करिय सफलप्रभुजो मनमाना ८
दो० सानुज पठइय मोहिं बन कीजिय सबहिं सनाथ ।
नतरुफेरिये बंधु दोउ नाथचलौं मैं साथ ॥ १७ ॥

अबतो स्वामी सब भांति से गुरुदेव औ आपका छोह अपने पर देखिकर मेरेमन का क्षोभ और संदेह सब दूरि हुआ १ ताते हे करुणाकर स्वामी अबतो आप सोई कीजिये जिसमें दास के निमित्त आपके चित्तको क्षोभ न होवे २ क्योंकि जो सेवक स्वामी को संकोचि कर अपना हित चाहता है उसकी बुद्धि महामंद है ३ सेवकका हित तो इसीमें है कि स्वामीकी सेवकाई अपने सुखका लोभ छोड़िकर करै ४ स्वार्थ तो हे नाथ आपके फिरनेही में सबकाहै और आपकी इच्छा प्रमाण करने में उससे कोटि भांति भला है ५ यह स्वार्थ और परमार्थ दोनोंका सारहै और सबके समस्त सुकृत का फल और सबकी सुगति का शृंगार है ६ अबतो हेदेव एक मेरी बिनती सुनिये फिरि जो उचित होइ सो कीजिये ७ कि तिलकका समाज सब साथ लायाहूं जोमन माने तो उसको सफल कीजिये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ शत्रुहन समेत मुझको बनक पठाइये आप सीता लक्ष्मण समेत सबको सनाथ कीजिये नहीं तो दोनों भाई लक्ष्मण शत्रुहन को फेरि दीजिये मैं आपके साथ चलूंगा ॥ १७ ॥

नतरु जाहिं बन तीनिहु भाई । बहुरिय सीय सहित रघुराई १
जेहि बिधि प्रभुप्रसन्न मनहोई । करुणासागर कीजिय सोई २
देव दीन्ह सब मोपर भारू । मोरे नीति न धर्म बिचारू ३
कहौं बचन सब स्वारथ हेतू । रहत न आरत के चित चेतू ४

उतर देइ सुनि स्वामि रजाई। सोसेवक लखि लाज लजाई ५
अस मैं अवगुण उदधि अगाधू। स्वामि सनेह सराहत साधू ६
अब कृपाल मोहिंसोमतभावा। सकुच स्वामि मन जाहिन पावा ७
प्रभु पद शपथ कहौं सतिभाऊ। जग मंगल हित एक उपाऊ ८
दो० प्रभुप्रसन्न मन सकुच तजि जोजेहि आयसु देव।
सो शिर धरिधरि करहिं सबमिटहि अनट अवरेव॥ १८॥

नहींतो एकआपके पलटे हम तीनोंभाई वनकोजावें आपसीता समेत अयोध्याको पधारिये १ जिस भांति स्वामीका मनप्रसन्न हो हे करुणा सागर सोई आप कीजिये २ आपने तो सबभार मेरे शिरपर रखदिया मेरेन कुछनीति है न धर्महै नबिचार है जो वचन कहताहूं सबस्वार्थही के निमित्त कहताहूं आरतों के चित्तमें विचार नहीं रहताहै ३।४ जो स्वामीकी आज्ञा कोसुनिकर उत्तर देताहै उस सेवकको देखिकर लाजभी लजाती है सोहमस्मि अर्थत् ऐसा अवगुणोंका अथाह समुद्र मैंहीहूं॥ ननिंदितंकर्मतदस्ति लोकेसहस्रसोयन्नमयाविधायी सोहंविपाकावसरेमुकुंदक्रंदामिसंप्रत्यगतिस्तवाग्रे ॥ अर्थात् ऐसानिन्दित कर्म संसारमें कोईभी नहींहै जोमैंने सहस्रों बार न कियाहो सोमैं निर्लज्ज उनके फलके समय आपसे विनती करताहूं ऐसे अधम कोआपसनेह के वश साधुसराहतेहैं ५।६ तातेअबतो हे कृपाल स्वामी मेरेको सोईमत भावता है जिसमें स्वामीके मनको सकोच न होवे ७ आपके चरणों की शपथ मैं सति भावही कहता हूं जगके मंगल का कारण एकही उपाय है॥ ८॥ दोहा आपप्रसन्न मन सकुच छोड़िकर जो आज्ञाजिसको देवें सो अपने अपने माथे मानिकर करे तोसब अनुचित अवरेव मिटिजावें॥ १८॥

भरत बचन शुचिसुनि हियहरषे। साधुसराहि सुमन सुर बरषे १
अस मंजस बश अवध निवासी। प्रमुदितमुनि तापसबनबासी २
चुपै रहे रघु नाथ सकोची। प्रभु गति देखि सभा सब शोची ३
जनक दूत तेहि अवसर आये। मुनि बशिष्ट सुनि बेगिबुलाये ४
करि प्रणाम तिन्ह राम निहारे। बेषदेखि भय निपट दुखारे ५
दूतन मुनिबर पूछी बाता। कहहु बिदेह भूप कुशलाता ६
सुनि सकुचाइ नाइ महिमाथा। बोले चरबर जोरे हाथा ७
बूझब राउर सादर साईं। कुशल हेतु सोइ भये गुसाईं ८
दो० नाहिंतो कोशल नाथ के साथ कुशल गइ नाथ।
मिथिला अवध बिशेष तेजग सब भयउ अनाथ॥ १९

भरत के अतिपावन बचन सुनि कर देवता सब हृदयमें हर्षित होगये और बड़ी बड़ाई करिके पुष्पबर्षाने लगे १ अयोध्याबासी सब असमंजस द्विबिधा के बश होगये मुनि तापस कोल किरात बनबासी आनन्दित होगये २ राम सकोची सुनिकर चुपाइ रहे यह रामकी दशा देखि सभा सब सोचने लगी ३ इतने में उसी समय जनक के भेजे दूतआगये बशिष्ट मुनिने सुनतेही सभामें बुलालिये ४ दूतों ने प्रणाम करिके जो राम को देखा तो बेष देखतेही अति दुखी होगये ५ दूतों से बशिष्टमुनि ने पूछा कि बिदेह राज की कुशल कहो ६ अति चतुर दूत सुनतेही सकुचाइ गये और नम्रमुख हाथजोरि कर बोले ७ कि आपकी कृपासे जो पूछनाहै सोई कुशलका कारण हुआ है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ नहींतो हमारे यहां की कुशल तो महाराज कोशलनाथ के साथही गई मिथिला पुरी और अवध पुरी मुख्य करिके सबजग अनाथ होगया ॥ १९ ॥

कोशल पतिगति सुनि जनकौरा। भेसब लोग सोच बशबौरा १
जेहिदेखे तेहि समय बिदेहू। नाम सत्य अस लागु न केहू २
रानिकुचालिसुनतमहिपालहि।सूझनकछुजसमणिबिनुब्यालहि ३
भरत राज रामहि बनबासू। भा मिथिलेशहि हृदय हरासू ४
नृपबूझे बुध सचिव समाजू। कहहु बिचारि उचित का आजू ५
समुझि अवधि असमंजस दोऊ। चलिय किरहियनकह कछुकोऊ ६
नृपहिं धीर धरि हृदय बिचारी। पठये अवध चतुर चरचारी ७
बूझि भरत गति भाउ कुभाऊ। आवहुबेगि न होइ लखाऊ ८
दो० गये अवध चर भरत गति बूझि देखि करतूति।
चले चित्रकूटहि भरत चार चले तिरहूति ॥ २० ॥

महाराज कोशल पतिकी गति सुनतेही जनक के परिवार सबलोग शोक के बश बावरे से होगये १ जिसकिसी ने उससमय राजा बिदेह को देखा तो उनको यहनाम उसको सत्य सा न लगा २ रानीकी कुचालि सुनतेही राज्य मणिबिना ब्यालके समान कुछ नसूझा ३ भरतको राज्य और रामको बनबास सुनिकर राजाके हृदयमें बड़ा सकोचहुआ ४ तबतो राजाने अपने मंत्री और बुधजनों से पूछा कि बिचारिकर कहो किहमको जाना चाहिये वा नहीं ५ रामके बनबासकी चौदह बर्षकी अवधि समझिकर उनको दोनों प्रकार असमंजसही देखि परा तातें चलिये कि न चलिये कोईभी नकहिसका ६ तबतो राजाहीने समय बिचारिकर धीरजधरा और अयोध्या को बड़े चतुर चारि दूतभेजे और उनसे यह कहि दिया ७ किभरतकी गति और भाव कुभाव समुझि कर बेगिही आओ और ऐसे वेषसे आओ कि तुमको कोई अयोध्यामें पहिचानि न लेवे ॥ ८ ॥ दोहा ॥

सोअयोध्या में हमारे राजा के दूतगये और भरतकीगति औरसब करतूति छिपकर देखी जिस दिन भरत अयोध्या से चित्रकूट को चले उसी दिन हमारे दूतभी चले ॥ २०

दूतन आइ भरत की करणी । जनक समाज यथा मतिबरणी १
सुणिगुरुपुरजनसचिवमहीपति । भेसबसोच सनेह बिकलमति २
धरि धीरज करि भरत बड़ाई । लिये सुभट साहनी बुलाई ३
घर पुर देश राखि रखवारे । हयगय रथहु यान सम्हारे ४
दुघरी साधि चले ततकाला । किय बिश्राम न मगु महिपाला ५
भोरहिं आज नहाइ प्रयागा । चले यमुन उतरन सब लागा ६
खबरि लेन हम पठये नाथा । असकहितिनमहिनायउमाथा ७
साथ किरात छसातक दीन्हे । मुनिवर तुरत बिदा चरकीन्हे ८
दो० जनक आगमन सुनत सब हरषेउ अवध समाज ।
रघुनन्दनहि सकोच बड़ि सोचबिबश सुरराज ॥ २१ ॥

दूतोंने जनकपुरमें आकर भरतकी उज्ज्वल करणी राजाके समाजमें यथामति कही१ सो सुनिकर गुरु सतानन्द, राजाजनक औरमंत्री पुरवासी सोच सनेह में सब बिकल होगये २ फिरि धीरज धरि और भरतकी बड़ाई करिके सुभटसेनापति बुलाये ३ घर पुर देशमें रखवारे राखिकर हाथी, घोड़ा, रथ सब सजाये ४ द्विघटिका साधिकर उसीकाल चलिदिये सो मार्ग में कहींभी बिश्राम नहीं किया ५ आज प्रातःकाल प्रयाग राज नहाइ कर चलेहैं यमुना को उतरते जाते हैं ६ तहांसे हमको समाचार लेनेको भेजाहै यहकहि कर दूतोंने प्रणाम किया ७ वशिष्ठने छसात किरात साथदिये और दूतों को बिदाकिया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ महाराज जनकजी का आगमन सुनतेही अयोध्या का सब समाज हर्षित होगया रामचन्द्रको बड़ीसकोचहुई और इन्द्रसोचके बशहोगये२१

गरै गलानि कुटिल कैकेई । काहिकहा कहि दूषण देई १
असमन आनि मुदित नरनारी । भयउ बहोरि रहब दिनचारी २
यहि प्रकार गत बासर सोऊ । प्रात नहान लाग सबकोऊ ३
करिमज्जन पूजहिं नरनारी । गणपति गौरि पुरारि तमारी ४
रमारमण पदबंदि बहोरी । बिनवहि अंचल अंजलि जोरी ५
राजा राम जानकी रानी । आनंद अवधि अवध रजधानी ६
सुबसबसैफिरिसहित समाजा । भरतहि राम करहिं युवराजा ७

यहि सुखसुधा सींचि सबकाहू। दैव देहु जग जीवन लाहू ८
दो० गुरुसमाज भाइन सहित रामराज पुरहोउ।
अछत राम राजा अवध मरिय मांग सबकोउ ॥ २२ ॥

कैकेयी ग्लानिकी मारी गरी जातीहै किसीको दोष क्याकहिकर लगावै १ अयोध्याबासी यह मनमें बिचारि कर हर्षितहैं कि अबतो कुछदिन फेरि रहना हुआ २ इस प्रकार सो दिनभी बीता प्रातहोतेही सब लोग नहाने लगे ३ मज्जन करिके अपने अपने बर्णके अनुसार देवपूजन करनेलगे अर्थात् अंत्यज गणपतिको शूद्र गौरीको वैश्य शिव को क्षत्री सूर्य्यको पूजनेलगे ४ फिरि द्विजदेव रमारमण ब्रह्मण्य देवको पूजनेलगे और सब नरनारी अंजलि और अंचल जोरि करयह बिनती करती हैं ५ कि राम तो राजा होवैं और सीतारानीहोय आनन्दकी अवधि अयोध्या राजधानीहोय६ और फिर सबसमाज समेत सुबस बसै भरत को राम युवराज करैं ७ इससुखके सुधासे सबको सींचिकर बिधाता जगमें जीवनका लाभ देवै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ गुरुजनों का समाज और भाइयों समेत रामका राज्य अयोध्यामेंहोवै और राम राजा अछत अयोध्यामें मरिये यहसब मांगते हैं ॥ २२ ॥

सुनि सनेह मय पुरजन बानी। निंदहिं योगबिरति मुनिज्ञानी १
यहिबिधिनित्यकर्मकरिपुरजन। रामहिं करहिं प्रणामपुलकितन २
ऊचनीच मध्यम नर नारी। लहहिं दरश निजनिज अनुहारी ३
सावधानसबही सनमानहिं। सकल सराहहिं कृपा निधानहिं ४
लरिकाईते रघुबर बानी। पालत नीति प्रीति पहिचानी ५
शील सकोच सिंधु रघु राऊ। सुमुख सुलोचन सरल सुभाऊ ६
कहत राम गुण गण अनुरागे। सबनिज भाग्य सराहन लागे ७
हम सम पुण्य पुंजजग थोरे। जिनहिं राम जानय करिमोरे ८
दो० प्रेम मग्न तेहिंसमय सब सुनिआवत मिथिलेश।
सहित सभा संभ्रम उठे रबिकुल कमल दिनेश ॥ २३ ॥

ऐसी रामसनेह की भरी पुरजनोंकी बाणी को सुनिकर बड़ेबड़े ज्ञानीमुनि अपने अपने योग और बैरागको निंदरते हैं १ इसप्रकार पुरजन अपने अपने नित्य कर्मको करिके रामको पुलकित तन प्रणाम करतेहैं २ ऊंच नीच मध्यम बर्णों के नरनारि सब अपने अपने उचित रामका दर्शन पाते हैं ३ रामचन्द्र बड़े सावधान सबको यथा योग्य सन्मानते हैं ते सब कृपानिधान रामको सराहतेहैं ४ कि रामकी तो लरिकाईही से यह बानि है कि नीति और प्रीति दोनों को पहिचानते हैं ५ शीलसकोच

कैते राम समुद्रही हैं सुमुख सुलोचन सरल सुभाव हैं ६ इस प्रकार राम के गुण बखानते सब प्रेममेंमग्न होगये औरअपनेही भाग्य को सराहने लगे ७ किहमारे समान भीबड़भागी संसारमें थोड़ेहीहोंगे जिनको राम अपनाकरिके जानतेहैं ॥ ८ ॥ दोहा इस प्रकार सब प्रेमसे मग्नहोरहेहैं किमहाराज जनकको आवते जो सुना सोई रविकुल कमल दिनेश श्रीरामचन्द्र सभा समेत तत्काल बडे उत्साहसे उठेऔर मिलनेको चले ॥ २३

भाइ सचिव गुरु पुरजन साथा । आगे गमन कीन्ह रघुनाथा १
गिरिवरदीख जनकनृपजबहीं । करि प्रणाम रथत्यागेउतबहीं २
राम दरश लालसा उछाहू। पथ श्रम लेश कलेश न काहू ३
मन तहंजहं रघुबर बैदेहीं । बिनु मन तनदुख सुख सुधिकेहीं ४
आवत जनक चले यहिभांती । सहित समाज प्रेम मतिमाती ५
आये निकट देखि अनुरागे । सादर मिलन परस्पर लागे ६
लगे जनकमुनिगण पदबंदन । ऋषिन प्रणामकीन्हरघुनंदन ७
भाइन सहितराम मिलिराजहिं । चले लिवाय समेतसमाजहिं ८
दो० आश्रम सागर शांति रस पूरण पावन पाथ।
सेन मनहु करुणा सरित लिये जात रघुनाथ ॥ २४ ॥

भाई, मंत्री, गुरु पुरबासियों को साथ लेकर आगे रामचन्द्र ने गमन किया १ राजा जनक ने जहांसे चित्रकूट को देखा तहांसे प्रणाम करिके रथको त्यागिदिया २ रामचन्द्रके दर्शन की लालसा के उत्साह से मार्ग के श्रमके क्लेश का लेशभी किसीको नहीं है ३ मन तो सबके सीताराम के पासहैं मनके बिना तनके दुख सुखकी संभार किसको होती है ४ इस भांति राजा जनक चले आते हैं समाज समेत प्रेम में सब की मति छकी है ५ जब समीप आये तब प्रेम समेत परस्पर मिलने लगे ६ प्रथम तो राजा जनक अयोध्या के मुनिगणों के चरणों को बंदन करने लगे और जनकपुर के ऋषियों को रामचन्द्र ने भाइयों समेत प्रणामकिया ७ फिर भाइयों समेत राम राजा को मिलिकर समाज समेत लिवाइ ले चले ॥ ८ ॥ दोहा ॥ आश्रम तो मानों समुद्र है सो शांतरस पावन जलसे परिपूर्ण है तहां को सेना की करुणानदी को भागीरथ की नाईं रामचन्द्र लिये जाते हैं ॥ २४ ॥

बोरत ज्ञान बिराग करारे । बचन सशोक मिलत नद नारे १
सोच उसास समीर तरंगा । धीरज तट तरुबर कर भंगा २
बिषम बिषाद तुरावति धारा । भय भ्रम भ्रमरावर्त्त अपारा ३

केवट बुध बिद्या बड़ि नावा । सकहि को खेइ एक नहिं आवा ४
बनचर कोल्ह किरात बिचारे । थके बिलोकि पथिक हियहारे ५
आश्रम उदधिमिली जबजाई । मनहुं उठेउ अंबुधि अकुलाई ६
शोक बिकल दोउ राजसमाजा । रहा न ज्ञान न धीरज लाजा ७
भूप रूप गुण शील सराही । रोवहिं शोक सिंधु अवगाही ८
छं० अवगाहि शोक समुद्र सोचहि नारि नर व्याकुल महा ।
दै दोष सकल सरोष बोलहिं बाम बिधि कीन्हो कहा ॥
सुर सिद्ध तापस योगिजन मुनि देखि दशा बिदेहकी ।
तुलसीन कोउ समरथ जोतरिसक सरित सहजसनेहकी ॥
सो० किये अमित उपदेश जहं तहं लोगन मुनि बरन ।
धीरज धरहु नरेश कहेउ बशिष्ठ बिदेह सन ॥ २५ ॥

करुणा की नदी ज्ञान बैराग के करारों को बोरती जाती है और शोकके बचनों के नद नारोंकेमिलने से अधिक होती जाती है १ सोच भरी उसासों की पवन से तरंग उठती हैं धीरज तट के वृक्षटूटते जाते हैं २ महा बिषमबिषाद धार तुरावती है भय और भ्रम के भंवर परते जाते हैं ३ बुधजन केवट हैं बिद्या बड़ी नावभी है तोभी खेइ नहीं सकते हैं न कुछ उपाय बनि परता है ४ बनबासी, कोल्ह, किरात पथिक से थके खरे हैं ५ आश्रम समुद्र में जब जा मिली तो मानों समुद्र भी अकुलाइ उठा ६ शोकबिकल दोनों राज समाज होगये न धीर रहा न लाज रही ७ राजाके रूप गुण को सराहि कर रोवते हैं ८ छन्द ॥ शोक समुद्र को अवगाहि कर सोचते हैं हे बाम बिधाता तूने क्या किया देवता, सिद्ध, तपस्वी, योगीजन और मुनि राजा बिदेह की दशा को देखिकर कहतेहैं कि सहज सनेह की सरिताको कोई भी नहीं तरिसकता है ॥ सोरठा फिरि तो जहां तहां मुनिबरों ने लोगों को अनेक उपदेश किये और बशिष्ठ ने राजा जनक से कहा कि आप भी धीरज धरिये ॥ २५ ॥ अयोध्याकांड में चौपाइयों की ग्यारहवीं पच्चीसी हुई ॥

केशवायनमः

जासुज्ञानरबिभवनिशिनाशा । बचनकिरणमनकमलबिकाशा १
तेहिकि मोह ममता नियराई । यह सियराम सनेह बड़ाई २
बिषयी साधक सिद्ध सयाने । त्रिबिध जीव जग वेद बखाने ३
राम सनेह सरिस मन जास । साधु सभा बड़ आदर तासू ४

सोह न राम प्रेम बिनु ज्ञाना। कर्णधार बिनु जिमि जलयाना ५
मुनि बहु बिधि बिदेहसमुझाये। रामघाट सब लोग नहाये ६
सकल शोक संकुल नर नारी। सोबासर बीतेउ बिनु बारी ७
पशुखगमृगन न कीन्हअहारा। प्रिय परिजन करकवनबिचारा ८
दो० दोउ समाज मिलि राजरघु राज नहाने प्रात।
बैठे सब बट बिटप तर मन मलीन कृशगात॥ १॥

जिन राजा जनक के ज्ञान के सूर्य्य के सामुहे संसार निशा का नाश है और उनके बचनों की किरणियों से मन कमल प्रफुल्लित हो जाता है १ उनको क्या मोह माया नियराइ सकती है यह सब सीता राम के प्रेमकी महिमाहै २ किसंसार से बैराग्य होने का फल भगवत् प्रेमही है बिषयी मुमुक्षु और जीवन्मुक्त संसार में तीनि प्रकार के जीव बेदों ने कहे हैं ३ उन तीनों में से जिसके मनमें रामका प्रेम है संत सभा में उसी का बड़ा आदर है ४ राम के प्रेम बिना कर्मोपासन ज्ञान कोई भी नहीं सोहते हैं जैसे कर्णधार बिना जहाज पार नहीं कर सकता है॥ नैष्कर्म्यमप्यच्युतभावबर्जितं नशोभतेज्ञानमलंनिरंजनं कुत: पुन:सश्वदभद्रमीश्वरेनचार्पितं कर्मयदप्यकारणं ५ फिरि तो बशिष्ठ ने जब राजा को बहुत समुझाया तबतो राम घाटपर जाकर सब नहाये ६ सब नर नारी शोक में भरे हैं इससे सो दिन बिनाही जल सब को बीता ७ खग, मृग, पशु इन्हों ने भी जब आहार न किया तो मनुष्यों का कौन कहना है॥ ८॥ दोहा॥ प्रातहोतेही दोनों समाज और निमिराज जनक रघुराज रामचन्द्र नहाये और बटके बिटपके तरे मन मलीन कृशगात सबबैठे॥१॥

जे महिसुर दशरथ पुर बासी। जे मिथिलापतिनगर निवासी१
हंस बंश गुरुजनक पुरोधा। जिन जग मग परमारथ शोधा २
लगे कहन उपदेश अनेका। सहित धर्म नय बिरति बिबेका ३
कौशिक कहि कहि कथा पुराणी। समुझाई सब सभासुबाणी ४
तब रघुनाथ कौशिकहिकहेऊ। नाथकाल्हि जलबिनुसबरहेऊ५
मुनि कह उचित कहत रघुराई। गयउ बीति दिनप्रहरअढ़ाई६
ऋषिरुष लखिकहतिरहुतराजू। यहांउचितनहिं अशन अनाजू ७
कहा भूप भल सबहिं सो माना। पाइ रजायसु चले नहाना ८
दो० तेहि अवसर फल फूल दल मूल अनेक प्रकार।
लै आये बनचर बिपुल भरिभरि कामरि भार॥ २॥

जो भूमिदेव अयोध्या बासी हैं और जो जनक पुर निवासी हैं सूर्य्यबंश के पुरोहित बशिष्ट राजा जनकके पुरोहित सतानन्द गोतमी जिन्होंने इसजग में परमार्थ का मार्ग खोजा है १ । २ ते सब अनेक भांतिके उपदेश धर्म, नीति, बैराग, बिवेक सहित कहने लगे ३ बिश्वामित्रने पौराणिक कथा कहिकहि कर सबसभा को कोमल बाणी से समुझाया ४ तबतो रामचन्द्र ने बिश्वामित्र से कहा हे नाथ कालिह सब लोग निर्जल रहे हैं ५ बिश्वामित्र ने कहा हे रामचन्द्र आपने उचितही कहा है आज भी अढ़ाई प्रहर दिन बीति चुका है ६ बिश्वामित्र का अभिमत देखिकरराजा जनक ने कहा यहां अन्न भोजन तो उचित नहीं ७ जो राजा ने कहा सोई सबने भला माना और आज्ञा पाय पाय कर नहाने को चले ॥ ८ ॥ दोहा ॥ उसी समय फल, फूल, कन्द, मूल, दल अनेक प्रकार के कोल्ह किरात भारके भार कामरि भरि भरि कर बहुत से ले आये ॥ २ ॥

कामद भा गिरि रामप्रसादा । अवलोकत अपहरत बिषादा १
सर सरिता बनभूमि बिभागा । जनु उमगत अंबुधि अनुरागा २
बेलि बिटप सबसफल सफूला । बोलत खगमृगअलि अनुकूला ३
तेहिअवसर बनअधिक उछाहू । त्रिबिध समीरसुखद सबकाहू ४
जाय न बरणि मनोहरताई । जनु महि करति जनक पहुनाई ५
तब सब लोग नहाइ नहाई । राम जनक मुनि आयसु पाई ६
देखि देखि तरुबर अनुरागे । जहं तहं पुरजन उतरन लागे ७
दलफल फूल कंद बिधि नाना । पावन सुन्दर सुधा समाना ८
दो० सादर सबकहं रामगुरु पठये भरिभरि भार ।
पूजि बिप्र सुर अतिथि गुरु लगे करन फलहार ॥ ३ ॥

श्रीरामचन्द्र के अनुग्रहसे समस्त पर्बत कामदायक होगया है कि देखतेही बिषाद को हरलेता है १ सरोवर, नदी, बन, समस्त भूमिके बिभागों में मानों आनन्द और प्रेमही उमगता है २ बिटप बेली सबसफल हैं वा सफूलहैं उसमें खग, मृग, मधुकर सुहाये बचनबोलतेहैं ३ उससमय बनमें अति अधिक उत्साहहै तीनों प्रकारकी पवन सबकी सुखदायक बहतीहै ४ बनकी मनोहरता कुछ कही नहीं जातीहै मानों पृथ्वी आपराजा जनककी पहुनाई करती है ५ तबतो सबलोग नहाइ नहाइ कर राम और राजाओर बशिष्टकी आज्ञासे तरुवरों को देखिदेखि जहांतहां उतरने लगे६। ७ बशिष्ट ने बड़े प्रेम से कन्द, मूल, फल अतिपावन और सुन्दर सुहाये ८ सबको भारके भार भरि भरिकर भेजे तेसब ब्राह्मण देवता अतिथि गुरु सब का पूजन करिके फलाहार करनेलगे ३ ॥

यहि बिधि बासर बीते चारी। राम निरखि नरनारि सुखारी १
दुहुंसमाज असिरुचिमनमाहीं। बिनुसियराम फिरबभलनाहीं२
सीता राम संग बनबासू। कोटि अमरपुर सरिस सुपासू ३
परिहरि राम लषण बैदेही। जेहि घर भाव बाम बिधि तेही ४
दाहिन दैव होइ जब सबहीं। राम समीप बसहिं बन तबहीं ५
मंदाकिनि मज्जन तिहुं काला। राम दरश मुद मंगल माला ६
सुखसंयुत संबत द्वय साता। पल समजाहिं नजानिय जाता ७
अटनरामगिरिवनतापस थल। अशन अमियसमकंद मूलफल ८
दो० यहिसुख योग नलोग सब कहहिं कहा असभाग।
सहित सनेह समाज दूहुं रामचरण अनुराग ॥ ४ ॥

इसी प्रकार सबको आनन्द में चारिदिन बीते रामको देखिकर सब नर नारी सुखी रहती हैं १ दोनों समाजों के मनमें ऐसी रुचिहै कि सीताराम के फिरे बिना घरको जाना भला नहींहै २ सीताराम के साथ बनहीमें बासकरना अमरावती से भी कोटि भांति सुपासहै ३ और रामलक्ष्मण जानकीको छोड़िकर जिसको घरसुहावै उसकोबिधाता वाम जानिये ४ परंतु जब सबको बिधाता दहिना होवै तबतो रामके पास बनहीमें बसना होगा ५ देखो यहां मंदाकिनी गंगाके तो तीनोंकाल में स्नानहैं और आनन्द मंगल की माल सीताराम के दर्शनहैं ६ रामका पर्बत बन मुनिन के आश्रम देखने फिरनेको हैं अमृतके समान कन्द,मूल, फल भोजनहैं ७ सुन्दरसुख समेतही द्वयसात कहिये चौदह संबत पलके समान बीति जावेंगे जातेभी नजानि परैंगे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ फिरि कहते हैं इस आनन्द के योग्य हम सब लोग नहींहैं हमारे ऐसे बड़े भाग्य कहां है इस प्रकार स्नेह समेत दोनों राज समाजों का राम के चरणोंमें अनुराग होगया है ॥ ४ ॥

यहिबिधि सकल मनोरथ करहीं। आनंद उमगि उमगिउरभरहीं१
सीयमातु तेहि समय पठाईं। दासी देखि सुअवसर आईं २
सावकाश सुनिसब सियसासू। आयउ जनकराय रनिवासू ३
कौशल्या सादर सनमानी। आसन दीन्हसमयसम आनी ४
शीलसनेह सरस दुहु ओरा। द्रवहिं देखि सुनिकुलिश कठोरा ५
पुलकशिथिलतनसजलबिलोचन।महिनखलिखनलगींसबसोचन
सबसियराम प्रेम की मूरति। जनुकरुणाबहुबेष बिसूरति ७

सीय मातु कह बिधि बुधि बांकी। जो पयफेनु फोरपबिटांकी ८
दो० सुनिय सुधादेखिय गरल सबकरतूतिकराल।
जहंतहं काकउलूकबक मानस चक्रमराल ॥ ५ ॥

इस प्रकार सब मनमें मनोऽर्थ करते हैं और आनन्द उमगि उमगि कर हृदय में भरती हैं १ उसी समय सीता की माता सुनैना ने एक दासी राजा दशरथ के रनिवास में भेजी सो सब रानियों का सुन्दर सावकाश समय देखि आई २ सीता की सासुन को सावकाश सुनिकर राजा जनकका सब रनिवास तहां आया ३ कौशल्या ने उठिकर सब का सन्मान किया और समयके समान सब को आसनदिये ४ शील और सनेह दोनों और अधिक है तातें उन के करुणा के बचन सुनते कुलिशपाषाण भी द्रवते हैं ५ पुलकावली से शिथिल शरीर और सजलनेत्र हैं और नखों से पृथ्वी को लिखिकर सब सोचकरती हैं ६ सबकी सब सीता राम के प्रेम की मानों मूर्तिही हैं और मानों करुणाही बहुत रूप धरिकर सोचती है ७ सीता की माता सुनैना ने कहा कि बिधाता की बुद्धि बड़ी बांकी है जो महा कोमल दूध के फेन को बज्र की टांकी से फोरती है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ शुभ तो सुननेहीको है अशुभ बिद्यमान है देखो अमृत तो सुनतेही हैं बिषदेखि पड़ता है काकउलूक बकतो जहां तहां देखिपरते हैं चक्रवाक और हंस मानसर में सुने जाते हैं ॥ ५ ॥

सुनि ससोचकहदेविसुमित्रा। बिधिगतिअतिबिपरीतबिचित्रा १
जो सृजिपालै हरै बहोरी। बालकेलि समबिधि मतिभोरी २
कौशल्या कह दोष न काहू। कर्मबिबश दुखसुख क्षतिलाहू ३
कठिन कर्मगति जानबिधाता। जो शुभ अशुभ कर्मफल दाता ४
ईश रजाय शीश सबहीके। उतपति थितिलय बिषहु अमीके ५
देखिमोह बश सोचिय बादी। बिधिप्रपंच असअचल अनादी ६
भूपतिजियबमरबउरआनी। सोचिय सखिलखिनिजहितहानी ७
सीयमातु कहसत्य सुबानी। सुकृती अवधि अवधपति रानी ८
दो० लषण रामसिय जाहुबन भलपरिणाम नपोच।
गहबरहिय कह कौशला मोहिंभरत कर सोच ॥ ६ ॥

ऐसे सुनयना के बचन सुनिकर सोच समेत सुमित्रा ने कहा सत्य है हे सखी बिधाता की गति बड़ीबिपरीत और बिचित्रही है १ जो प्रथम तो सृजिकर पालता है औ फिरि हरिलेता है ऐसी बाल केलि के समान बिधाता की भोरी बुद्धि है २ कौशल्या ने कहा दोष किसी को नहीं है कर्मके बश दुख सुख हानि लाभ सबहोता

है ३ उस कर्मकीगति बड़ी कठिन है गहनाकर्मणोगतिः उस को विधाताही जानता है सोई शुभ और अशुभ कर्मोंके फल का दाता है ४ सोईश्वरकी आज्ञा जैसे उत्पत्ति पालन, प्रलय, विष, अमृत सब के शिरपर है तैसे बिधाता के शिरपर भी है इस में बिधाता का भी कौन दोष है ५ हे देवी अज्ञान के बश सोचना वृथाही है यह विधि प्रपंच अनादि काल से ऐसाही चला आता है ॥ जातस्यहिध्रुवोमृत्युर्ध्रुवं जन्ममृतस्यच तस्मादपरिहार्येर्थेनत्वं शोचितुमर्हसि ६ राजा के जीने मरने को बिचारना सब अपनेहित की हानि के लिये सोचना है ७ सुनयना ने कहा साव सत्य है ॥ ८ ॥ दोहा लक्ष्मण राम सीता भलेहीं बन को जाय इस में तो परिणाम को भलाई ही है बिगार नहीं है गद्‌गद कंठ होकर कौशल्या ने कहा मेरे को तो भरत का सोच है ॥ ९ ॥

ईश प्रसाद अशीष तुम्हारी। सुत सुतबधू देव सरिबारी १
राम शपथ मैंकीन्हि न काऊ। सो करि कहौं सखी सतिभाऊ २
भरत शीलगुण बिनय बड़ाई। भाइप भक्ति भरोस भलाई ३
कहत शारदा कीमतिहीची। सागर सीपि कि जाइ उलीची ४
जानेहु सदा भरत कुल दीपा। बारबार मोहि कहेउ महीपा ५
कसें कनक मणि पारिख पायें। पुरुष परखिये समय सुभाये ६
अनुचित आजु कहब असमोरा। शोक सनेह सयानप थोरा ७
सुनि सुरसरि समपावन बानी। भईं सनेह बिकल सब रानी ८
दो० कौशल्या कहधीर धरि सुनहु देवि मिथिलेशि।
को विवेकनिधि वल्लभहि तुमहिसकै उप देशि ॥७॥

महादेवके प्रसाद और तुम्हारी आशिष से सबपुत्र और पुत्रबधू मेरे गंगा जलहीके समान है १ रामकी शपथ तो मैंनेकभी नहीं कीन्हीहै सो करिके हेसखी मैं सतिभावसे कहतीहूं २ कि भरत के शील,गुण, नम्रता, भाइप भक्ति, भरोसा, भलाई इन सबकी बड़ाईके करने में सरस्वती की भी बुद्धिहिचती है समुद्रकहीं सीपी सेउलीचे जातेहैं ३ । ४ आगे राजा मेरेसे बार बार कहते रहैं कि भरतको इस कुलका दीपक जानना ५ सो हे सखी कसने से तो सुबर्ण और पारिखी के परखने से जैसे मणिजानी जाती है तैसेही मनुष्य समय परे जानाजाता है ६ ऐसाभी मेरा कहना आज भरत की प्रशन्साके उचित नहीहै क्योंकिशोक और सनेहसे मेरेको सयानप कहांहैं ७ ऐसी गंगा जलके समान कौशल्या की परमपावन बाणी सुनिकर सबरानी व्याकुल होगईं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तबतो कोशल्या ने धीरधरि कर कहाकि हे देबी मिथिलेशी तुमतो बिवेक निधि राजा जनककी बल्लभाहो तुमको कोई क्या उपदेश करेगा ॥ १ ॥

रानि रायसन अवसर पाई। आपनि भांति कहब समुझाई १
बहुरहिं लषण भरत गवनहिं बन। जोयहमतमानहिं महीपमन २
तौ भल यतन करब सु बिचारी। मोरे सोच भरत कर भारी ३
गूढ़ सनेह भरत मन माहीं। रहैं नीक मोहिं लागत नाहीं ४
लखिसुभावसुनिसरलसुबानी। सबभइंमगनकरुणरससानी ५
नभप्रसूनझर धन्य धन्य धुनि। शिथिल सनेह सिद्धयोगीमुनि ६
सब रनिवासथकित लखिरहेऊ। तबधरिधीर सुमित्रा कहेऊ ७
देविदंड युग जामिनि बीती। राम मातु सुनि उठी सप्रीती ८
दो० बेगिपाइं धारिय थलहि कह सनेह सति भाय।
हमरेतो अबईश गति की मिथलेश सहाय ॥ ८ ॥

परंतु हेरानी राजासे समय पाइकर अपनीही ओरसे समुझाइ कर कहना १ कि लक्ष्मण तो अयोध्या को फिरिआवें और भरत रामके साथ बनको जावें जो इसमत को राजाका मन माने २ तो यहयत्न भला है बड़े बिचारसे करें मेरे तो भरत का सोच बड़ाभारीहै ३ भरत के मनमें रामका प्रेम अतिगूढ़ है ताते भरत के रहने में मेरेको भलानहीं देखि परता है ४ ऐसा कौशल्याका सुभाव देखि और सरलबाणी सुनि सब मग्न होगईं ५ आकाश से फूलोंकी झर और धन्य धन्य धुनिहोने लगी सिद्ध योगीजन सब सनेह से शिथिल होगये ६ समस्त रनिवास थकित होरहा तब तो धीरधरि कर सुमित्रा ने कहा ७ हेदेवी द्वय दंड राति बीतिगई यहसुनि कर रामकी माता प्रीति समेत उठीं और सीताकी मातासे बोलीं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ हेदेवी बेगिही निवास को चरण धारिये हमारेतो अब महादेवहीकी गति है अथवा मिथिलेश राजा जनक सहायक हैं ॥ ८ ॥

लखि सनेहसुनिबचन बिनीता। जनकप्रियागहि पांयपुनीता १
देविउचितअसि बिनयतुम्हारी। दशरथ घर निराम महतारी २
प्रभु अपने नीचहु आदरहीं। अग्निधूम गिरि शिर तृण धरहीं ३
सेवक राउ कर्म मन बानी। सदा सहाय महेश भवानी ४
रौरे अंग योग जग कोहै। दीप सहाय कि दिनकर सोहै ५
राम जाइ बन करि सुरकाजू। अचलअवध पुर करिहैं राजू ६
अमर नाग नर राम बाहुबल। सुख बसिहैं अपने अपने थल ७

यहसब याग्यबल्क्य कहिराखा । देबिन होइमृषा मुनिभाखा ८
दो० असकहि पगपरि प्रेमअति सिय हितबिनय सुनाइ ।
सिय समेत सिय मातु तब चली सुअवसर पाइ ॥ ९ ॥

ऐसा कौशल्या का स्नेह देखि और अति बिनीत वचन सुनतेही जनकप्रिया सुनयना ने चरण पकरि लिये और बोली १ हे देवी आपकी यह बिनती उचितही है दशरथ की रानी और रामकी मातासब प्रकार बड़ीहो २ स्वामी अपने सेवकोंको आदरतेही हैं देखो अग्निनिज संभूत धूम और पर्बत तृणादिकों को शिरपर धारण करतेहैं ३ राजा तो कर्म,मन, बाणीसे आपके सेवकहीहैं सहायतो आपके सदा गौरि गिरीशहीहैं ४ आपकी पटुतरि सहायक जगमें कौनहै दीपक की सहायता से कहीं दिनकर सोहता है ५ सुनो हेरानी राम बनमें जायकर देवताओं का काज करैंगे और फिर अयोध्या में आकर अचल राज्य करेंगे ६ स्वर्ग में देवता नाचे नाग प्रथिवी पर मनुष्य राम की भुजाओं के बलसे सब सुखी बसैगे यह सब कथा पूर्व याग्यबल्क्य कहि गयेहैं सो हे देवी मुनीश्वरों की बाणी झूंठनहीं होती हैं ७।८ ॥ दोहा ॥ ऐसेकहि पांय लागे और ताकेलिये बिनतीकरी फिर सीताको सायलेकर सीता की माता कौशल्याकी आज्ञा पाकर बिदा हुईं ॥ ९ ॥

प्रिय परिजनहि मिलीबैदेहीं । जोजेहि योग्य भांति तेहितेहीं १
तापस बेष जानकिहि देखी । भे सब बिकल बिषाद बिशेषी २
जनक राम गुरु आयसु पाई । चले थलहि सिय देखी आई ३
लीन्हि लाइउर जनक जानकी । पाहुनि पावनि प्रेम प्राणकी ४
उर उमगेउ अंबुधि अनुरागू । भयउ भूप मन मनहुं प्रयागू ५
सिय सनेह बट बाढ़त जोहा । तापर राम प्रेम शिशु सोहा ६
चिरंजीवमुनि ज्ञान बिकल मन । बूड़त लहेउ बाल अवलंबन ७
मोह मगन मति नहि बिदेहकी । महिमा सिय रघुबर सनेहकी ८
दो० सियपितु मातु सनेह बश बिकल न सकै सम्हारि ।
धरणिसुता धीरज धरेउ समय सुधर्म बिचारि ॥ १० ॥

अपने प्यारे परिवार को सीताजाकर जोजिस योग्यरहे उसको उसी भांति से मिली १ सीताको तापस वेष देखकर सबको बड़ा बिषाद हुआ २ राजा जनक बशिष्ठ की आज्ञा पाकर सीताको आदेखा३ प्रेम और प्राणों की पावन पाहुनी सीता को हृदय से लगालिया ४ उस समय राजा के हृदय में अनुराग का समुद्र उमगा तो राजा का मन प्रलयप्रयागके समान होगया सीताके स्नेह का तो अक्षयबट बढ़ता दिखाई

दिया उसपर रामका प्रेम बालकरूप मानोसोहताहै ।६ चिरंजीव मार्कंडेय मुनिराजका ज्ञान महा ब्याकुल जो बूड़ा जाता रहै उसने राम प्रेम बालकका अबलम्बन पाया ७ मोहमें तो राजा जनक की बुद्धि कभी मग्न नहीं होती है यह सब सीताराम के प्रेम की महिमा रहै ॥ तुलसीअसबालकसोनहिनेहकहाजपयोगसमाधिकिये नरतेखर शूकरश्वानसमानकहोजगमेंफलकोनजिये ८ ॥ दोहा ॥ सीता के माता पितातो सनेहमें बिकलआपे कौन सम्हारि सकै धरणिसुता सीताहीने धर्मबिचारिकर धीरजधरा ॥ १० ॥

तापस बेष जनक सिय देखी। भयउ प्रेम परितोष बिशेषी १
पुत्रि पवित्र किये कुल दोऊ। सुयश धवलजग कह सबकोऊ २
जसिसुरसरि कीरतितसि तोरी। गमनकीन्ह बिधिअंडकरोरी ३
गंग अवनि थल तीनि बड़ेरे। यहिके साधु समाज घनेरे ४
पितुकह सत्यसनेह सुबानी। सीय सकुचि महिमनहुसमानी ५
पुनिपितु मातु लीन्हउरलाई। शिखआशिष हितदीन्हसुहाई ६
कहति नसीय सकुच मनमाहीं। यहांबसब रजनी भलनाहीं ७
लखि रुख रानि जनायउ राऊ। हृदय सराहत शीलसुभाऊ ८
दो० बार बार मिलि भेटिसिय बिदा कीन्ह सनमानि।
कही समय सिर भरत गति रानि सयानि सुबानि ॥ ११

तापस बेष सीताको जनकने जब देखा तो बड़ाही प्रेम और संतोष हुआ पुनि बोले १ हे पुत्री तूने दोनो कुल पवित्र करि दिये तेरे उज्ज्वल सुयशको संसारमें सब बखानते हैं २ जैसी गंगाकी निर्मल कीर्त्ति है तैसीही तेरी कीर्त्ति ने कोटिन अंड कटाहोंमें गमन किया है ३ गंगाके तो पृथ्वीपर तीनिही बड़े स्थान हैं गंगाहरिद्वारे गंगाप्रयागे गंगासागरसंगमे और इसके अनेक साधु समाजहैं ४ पितातो सनेहसे सत्य कहते हैं और सीता संकोचसे मानो पृथ्वी में समाई जाती है ५ फिरि माता पिता ने सीताको हृदयसे लगा लिया शीक्षा और आशिष दी ६ सीता संकोचसे कुछ कहि नहीं सकतीहैं कि यहां रातिको रहना उचित नहीं है ७ सीताकी मनसा देखि कर रानीने राजाको लखाया राजा हृदयही में सीताके शील सुभाव को सराहते हैं ८ दोहा ॥ फिरितो बारंबार मिलि भेटिकर सीता को बड़े सन्मानसे बिदाकिया और सावकाश समय पाकर रानीने भरत की गति कही ॥ ११ ॥

सुनि भूपाल भरत ब्यवहारू। सोन सुगंध सुधा शशि सारू १
मूंदे सजल नयन पुलके तन। सुयश सराहनलगे मुदितमन २
सावधानसुनु सुमुखिसुलोचनि। भरतकथा भवबंध बिमोचनि ३

धर्मराज नय ब्रह्म बिचारू । यहां यथामति मोर प्रचारू ४
सोमति मोरिभरत महि माहीं । कहैकाह छलि छुवतिनछाहीं ५
बिधिगणपतिअहिपतिशिवशारद । कबिकोबिदबुधबुद्धिबिशारद६
भरत चरित कीरति करतूती । धर्मशील गुण बिमल बिभूती ७
समुझतसुनतसुखद सबकाहू । शुचिसुरसरिरुचिनिदरिसुधाहू ८
दो० निरवधि गुण निरुपम पुरुष भरत भरत सम जानि ।
कहिय सुमेरुकि सेर सम कबिकुल मति सकुचानि ॥ १२

भरत का व्यवहार राजाने सुना मानों सोना और सुगन्ध और चन्द्रसारके समान अमृत सा सुनि कर सजल नेत्र मूंदि लिये और पुलकित अंग होगये १ और भरत का सुयश प्रसन्न मन सराहने लगे और बोले २ हे सुमुखि हे सुलोचनि सावधान होकर सुनो भरतकी कथा भव बंध बिमोचनी है ३ धर्मशास्त्र राजनीति और ब्रह्म बिचार इन सबमें मेरी बुद्धिका प्रचार है ४ सो मेरी बुद्धि भरतकी महिमा को कहै तो क्या छलि कर उसकी छायाको भी तौ नहींछू सकतीहै ५ मैं क्या ब्रह्मा, गणेश शेष, शिव, शारदा इत्यादि कोबिद कबि भरतकेचरित्र कीर्त्ति करतूति धर्मशील गुणों की बिभूति इन सब को समझने सुनने में तो सुखदायक है गंगा के समानतो पावन और सुधाके समान रुचिवन्त है ६ । ७ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जिसके गुणोंकी अवधि नहीं और जिसकी उपमाका कोई नहीं ऐसा भरतके समान उत्तम पुरुष भरतहीको जानि कर कि सुमेरुको शेरके समान कैसे कहिये यह समुझि कर कबिजनों की बुद्धि सकुचाय गई ॥ १२ ॥

अगम सबहि बरणत बरबरणी । जिमिजलहीनमीनमरुधरणी १
भरत अमितमहिमा सुनुरानी । जानहिं रामन सकहिं बखानी २
बरणि सप्रेमभरत अनुभाऊ । तियजियकी रुचिलखिकहराऊ ३
बहुरहिं लषण भरतबनजाहीं । सबकर भल सबके मनमाहीं ४
देव परंतु भरत रघुबर की । प्रीति प्रतीति जाइ नहिं तरकी ५
भरत सनेह अवधि ममता के । यद्यपि राम सीय समताके ६
परमारथ स्वारथ सुखसारे । भरत न सपनेहु मनहिं निहारे ७
साधन सिद्ध राम पद नेहू । मोहि लखि परत भरत मत येहू ८
दो० भोरेहु भरत न पेलि हैं मन सों राम रजाइ ।

करिय न सोच सनेह बश कहेउ भूप बिलखाइ ॥ १३ ॥

भरत की महिमा कहने को सबको ऐसे अगम है जैसे जल हीन मरुदेश में मीन अगम है १ भरत की महिमा हे रानी अति अमित है उसको रामही जानते हैं परंतु कहि नहीं सकते हैं २ इस प्रकार प्रेम समेत भरतका सुभाव राजाने कहा फिर रानी के मनकी रुचि जानिकर बोले ३ सबके मनमें यहहै कि लक्ष्मण तो फिरि जावें और भरत रामके साथ बनको जावें इसमें सबका भला है ४ परंतु हे रानी भरत और रामकी परस्पर प्रीति और प्रतीति कुछ तर्की नहीं जाती है ५ जो राम यद्यपि समता की अवधि है सोई राम भरत के सनेह बश ममता की अवधि हो रहे हैं ६ भरत ने भी स्वार्थ और परमार्थ और लौकिक पारलौकिक समस्त सुख स्वप्न में भी कभी मनमें भी नहीं देखे हैं ७ भरत ने तो सिद्धु साधन रामके चरणों का प्रेमही जाना है यही मेरे को भरत का मत लखि परता है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ भूलिकर भी तो भरत राम की आज्ञा को मनसे भी नहीं पेलैंगे तातें तुम सनेह के बश कुछ सोच मत करो ॥ १३ ॥

राम भरत गुण गणत सप्रीती । निशिदंपतिहिंपलकसमबीती १
राज समाज प्रात युग जागे । न्हाइ न्हाइ सुर पूजन लागे २
गे नहाइ गुरु पहं रघुराई । बंदि चरण बोले रुख पाई ३
नाथ भरत पुरजन महतारी । सोच बिकल बनबास दुखारी ४
सहित समाज राउ मिथिलेशू । बहुत दिवस भय सहतकलेशू ५
उचित होइ सो कीजियनाथा । हित सबहीं कर राउर हाथा ६
असकहि अतिसकुचे रघुराऊ । मुनि पुलके लखि शीलसुभाऊ ७
तुम बिनु रामसकलसुख साजा । नर्क सरिसदुहुं राजसमाजा ८
दो० प्राण प्राण के जीवके जिय सुख के सुख राम ।
तुम तजितात सुहाइ गृह जिनहिं तिनहिं बिधिबाम ॥१४

इस प्रकार राम और भरत के गुण प्रीति समेत कहते कहते राजा रानीको पलक के समान राति बीति गई १ प्रात होतेही दोनों राजसमाज जगे और स्नान करि करि अपने अपने इष्टदेवों को पूजने लगे २ नहायकर रामचन्द्र बशिष्ठमुनि के पास गये और प्रणाम करि आज्ञा पाकर बोले ३ हे नाथ भरत पुरजन और सब माता सोच में बिकल बन में दुखी होरहे हैं ४ और सब समाज समेत महाराज जनक को भी क्लेश सहते बहुत दिन हुये ५ जो आप उचित जाने सो करें सबका हित आपही के हाथ में है ६ ऐसे कहिकर रामतो सकुचिगये और बशिष्ठ राम का शील

सुभाव देखिकर पुलकित होगये और बोले ० तुम्हारे बिना तो हे राम समस्त सुख का साज दोनों राज समाजों को नर्कही के समान है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ प्राणों के भी तो आप प्राण हैं और जी के भी जीव और सुखके भी सुख हैं तिन तुमको छोड़िकर जिसको घर सुहावै उसको बिधाता बाम जानिये ॥ १४ ॥

सोसुख धर्म कर्म जरिजाऊ। जहं न रामपद पंकज भाऊ १
योग कुयोग ज्ञान अज्ञानू। जहं नहिंराम प्रेम परधानू २
तुम बिनु दुखी सुखी तुमतेही। तुम जानहु जियकी जोजेही ३
राउरिआयसु सिर सबही के। बिदित कृपालहि गतिसबनीके ४
आप आश्रमहि धारिय पांऊ। भये सनेह शिथिल मुनिराऊ ५
करि प्रणाम तब राम सिधाये। ऋषिधरि धीरजनक पहंआये ६
राम बचन गुरु नृपहि सुनाये। शील सनेह सुभाय सुहाये ७
महाराज अब कीजिय सोई। सबकर धर्म सहित हितहोई ८
दो० ज्ञाननिधान सुजान शुचि धर्म धीर नरपाल।
तुमबिनु असमंजस शमन को समर्थ यहिकाल ॥ १५ ॥

वह सुख धर्म कर्म जरि जावें जो भगवत्पद पंकज के प्रेम के उपयोगी न होवे १ उसयोग को कुयोगही जानो और उस ज्ञानकोभीअज्ञानही मानो जिस योग और ज्ञानमेंभगवत् प्रेम प्रधान न होवे २ राजसमाजतो हेराम सब तुम्हारेबिना दुखीहै और तुमारेही पास सुखी है तुम सबजानते हो जो जिसके जीमेहै ३ आप की आज्ञा सबके सिरपर है और आपको सबकी गति भली भांति बिदित है ४ अब आप आश्रम को पधारिये ऐसे कहिकर मुनिराज बशिष्ट सनेहसे शिथिल होगये ५ प्रणाम करिके राम तो आश्रम को सिधारे और बशिष्ट धीर धरि कर राजा जनक के पासआये ६ और रामचन्द्रकेबचन बशिष्ट राजा को सुनाय बोले० हे महा राज अब आपसो कीजिये जिसमें धर्म समेत सबका हित होवे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ज्ञान के तो आपनिधान बड़े सुजान धर्मधीर धारीहो सो आपके बिना इस असमंजसका निवारक इससमय में कौन बड़ासमर्थ है ॥ १५ ॥

सुनिमुनिबचन जनकअनुरागे। लखिगति ज्ञानबिरागबिरागे १
शिथिल सनेह गुणतमन माहीं। आयउंयहां कीन्ह भलनाहीं २
रामहिं राय कहेउ बन जाना। कीन्ह आप प्रियप्रेमप्रमाणा ३
हमअब बनते बनहिं पठाई। प्रमुदित फिरब बिबेक बढ़ाई ४

तापस मुनिमहिसुर गति देखी । भये प्रेम बश बिकल बिशेषी ५
समय समुझिधरि धीरज राजा । चले भरत पहंसहित समाजा ६
भरत आइआगे होइलीन्हे । अवसर सरिस सुआसन दीन्हे ७
तात भरत कह तिरहुतिराऊ । तुमहि बिदित रघुबीर सुभाऊ ८
दो० रामसत्य ब्रतधर्मरत सब कर शील सनेहु ।
संकट सहत सकोच बश कहिजो आयसु देहु ॥ १६ ॥

बशिष्ट के बचन सुनिके जनकप्रेम में मग्न होगये कि उनकी गतिको देखिकर उन
के ज्ञानवैराग दोनो उनसे बिरागी होगये १ सनेह में शिथिल मनमें सोचतेहैं कि
यहां जोहम आयेसो भलानही किया २ राजादशरथने जो रामको बनजानाकहासो
तो उनने प्रेमका प्रमाण कर दिखाया ३ और हम यहांराम को बनसे बनहीं में
भेजिकर आनन्द समेत ज्ञान बढ़ाइ कर फिरेगे धिक्कार ऐसेज्ञान कोहै ४ ऐसीराजा
जनक की प्रेमदशा देखिकर चित्रकूटके मुनि तपस्वी द्विजदेव सबप्रेम के बश विशेष
व्याकुल होगये ५ फिरितो राजाने समय समुझिकरधीरजधरी और सबसमाज समेत
भरतके पास को चले ६ भरतने उठिकर आगेसे लिया और समय के समान आसन
दिया ७ राजा जनकने कहाकि हेतात भरत तुमकोतो रामकासुभाव बिदित है॥ ८
॥ दोहा ॥ रामतो सत्यब्रत और धर्म निरत हैं सो हमारे सबके शील सनेह
के बश संकट सहतेहैं ताते जो तुमकहो सो उनसे कहा सुनाजावै ॥ १६ ॥

सुनितन पुलकि नयन भरिबारी । बोले भरत धीर धरि भारी १
प्रभु प्रियपूज्यपिता समआपू । कुलगुरु समहित मायन बापू २
कौशिकादिमुनि सचिव समाजू । ज्ञान अंबुनिधि आपन आजू ३
शिशु सेवक आयसु अनुगामी । जानि मोहि शिषदेइय स्वामी ४
यहि समाज थल बूझब राउर । मन मलीन मैं बोलब बाउर ५
छोटे बदन कहौं बड़ि बाता । क्षमेहु तात लखि बाम बिधाता ६
आगम निगम प्रसिद्ध पुराणा । सेवा धर्म कठिन जग जाना ७
स्वामि धर्म स्वारथहि बिरोधू । बैर अंध प्रेमहिं न प्रबोधू ८
दो० राखि राम रुख धर्मरुचि पराधीन मोहिं जानि ।
सबके संमत सर्ब हित करिय प्रेम पहिचानि ॥ १७ ॥

राजाके बचन सुनतेही भरत का तन तो पुलकित और नेत्रोंमें जल भरि
आया बड़ी धीर धरि कर बोले १ प्रभु और प्रियपूज्य पिताके समान तो आप हैं

और कुलगुरु के समान हितकारी माय बापभी नहीं होतेहैं २ कौशिक मुनि बामदेव याबालि और सब मंत्रियों का समाज है और ईश्वर की कृपासे आजआप ज्ञानके निधानहैं ३ मेरेको तोबालक सेवक और अपना आज्ञाकारी जानिकर सिखावन देना आपको उचितहै नकि ऐसे समाज थलमें आप मेरेसे पूछौ औरमैं मलिन मन बाउरा उत्तर देऊं ४।५ छोटे मुखसे बड़ीबातकहताहूं मुझको बामबिधाता जानिकर हे तात क्षमा करना ६ निगम आगम पुराण सबमें प्रसिद्ध है और संसार जानता है किसेबा काधर्म महा कठिनहै ७ स्वामिधर्म और स्वार्थसे बिरोधहै जैसे बैरांध और प्रेमांध दोनोंको प्रबोधसे बिरोध होताहै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तातें रामका प्रण और धर्म ब्रतराखिये और मेरेको पराधीन जानिये जो आप सबके सम्मत और सर्बहित होवै सो सबका प्रेम पहिचानि कर कीजिये ॥ १७ ॥

भरत बचन सुनिदेखि सुभाऊ । सहित समाज सराहत राऊ १
सुगम अगम मृदु मंजु कठोरे । अर्थ अमित अति आखर थोरे २
जिमिमुखमुकुर मुकुरनिजपाणी । गहिनजाइअसिअद्भुतबाणी ३
भूप भरत मुनिसाधु समाजू । गे जहं बिबुधकुमुद द्विजराजू ४
सुनिसुधिसोच बिकलसबलोगा । मनहुंमीनगण नवजलयोगा ५
देव प्रथम कुलगुरु गति देखी । निरखि बिदेह सनेह बिशेषी ६
राम भक्ति मय भरत निहारे । सुर स्वारथी हहरि हिय हारे ७
सब कहं राम प्रेम मय पेखा । भये अलेख सोच बश लेखा ८
दो० राम सनेह सकोच बश कह ससोच सुरराज ।
रचहु प्रपंचहि पंच मिलि नाहिंतो भयउ अकाज ॥ १८ ॥

भरतके बचन सुनिऔर सुभाव देखिकर समाज समेत राजा सराहने लगे १ कैसे बचनहैं कि सुननेमें तो अति सुगम और अर्थ समुझने में महा अगम हैं अति कोमल उज्ज्वल और कठोर द्वय टूक दूधका दूध पानीका पानी अर्थतो अथाह और अक्षर प्रणव के समान थोरे २ जैसे मुखतो दर्पण में और दर्पण हाथही में होता है तोभी रहा नहीं जाताहै ऐसी अद्भुत बाणीहै ३ ऐसा भरतका उत्तर सुनिकर फिरितो राजा और भरतबशिष्ट सब साधु समाज समेत देवकुल कुमुदके चन्द्रमा रामके पासगये ४ यह सुधि पाइकर सोचमें बिकल सबलोग होगये जैसे नवीन बर्षाके जलके योगसे मीन गण होतेहैं ५ देवताओंने प्रथमतो बशिष्ठकी गतिदेखी और फिरि बिदेहराजका भी बिशेष सनेह देखा ६ औरभरत को रामभक्तिमय देखि कर स्वार्थी देवता हिये हार होगये ७ और फिरिजब सबको रामप्रेममयही देखा तबतो अलेखसोच के बश लेखा देवता होगये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इंद्रने सोच में बिकल होकर देवताओंसे कहा कि राम

तो सदा सनेह की सकोच केबशहैं तातें सब पंच मिलिकर कुछ प्रपंच रचो नहीं तो अकाज हुआ जानों ॥ १८ ॥

सुरन सुमिरि सारदा सराही । देवि देव शरणागत पाही १
फेरिभरतमतिकरि निजमाया । पालि बिबुधकुलकरिछलछाया २
बिबुध बिनय सुनि देवि सयानी । बोली सुरस्वारथजड़जानी ३
मो सन कहहु भरत मति फेरू । लोचन सहस न सूझ सुमेरू ४
बिधि हरिहर माया बड़ि भारी । सोउ न भरत मतिसकैनिहारी ५
सो मति मोहि कह तकरुभोरी । चन्दनिकरुकि चन्दकरिचोरी ६
भरत हृदयसियरामनिवासू । तहंकि तिमिर जहं तरणिप्रकासू ७
असकहिसारदगइबिधिलोका । बिबुधबिकलनिशिमानहुकोका ८
दो० सुर स्वारथी मलीन मन कीन्ह कुमंत्र कुठाट ।
रचि प्रपंच माया प्रबल भय भ्रम अरति उचाट ॥ १९ ॥

देवताओं ने सुमिरि कर सारदा को सराहा और कहा हे देवी हम सब देवता तेरे शरण आये हैं हमारी रक्षा करो १ कि अपनी माया से भरत की मति को फेरि दे अपने छल की छाया में हमारे कुल को पालन करो २ ऐसी देवताओंकी बिनती सुनि कर परम सयानी देवी सारदा उनको स्वार्थ परायण जानि कर बोली ३ सुनो हे इन्द्र मेरे से कहते हो कि भरत की मति को फेरि दे नेत्र तो तुम्हारे सहस्रहैं परंतु सूझता सुमेरु भी नहीं है ४ औ ब्रह्मा और शिव विष्णु के साथ विधिहरि हर गने जाते हैं उनकी महा भारी माया भी तो भरत की मति की ओर देखि नहीं सकती है ५ उसभरत की ऐसीबुद्धिको मेरे से कहते हो कि तू भोरी करि दे चांदनी भी कहीं चन्द्रमा को चुरा सकती है ६ भरत के हृदय में सीताराम का निवास है तहां भी कहीं अंधेरा हो सकता है जहां सूर्य्य का प्रकाश है ७ ऐसे कहि कर सारदा तो ब्रह्मधाम को चली गई देवता ऐसे व्याकुल हो गये जैसे रात्रि को कोक होते हैं ॥८॥ दोहा॥ स्वार्थीमलीन मन देवताओंने कुमंत्र औ कुठाट करिके प्रपंच रचा कि अपनी प्रबल माया से भय और भ्रम आरति और उचाट रचि दिये अर्थीदोषेनपश्यति ॥ १९ ॥

करि कुचालि सोचत सुरराजू । भरत हाथ सब काज अकाजू १
गये जनक रघुनाथ समीपा । सनमाने सब रघुकुल दीपा २
समय समाज धर्म अविरोधा । बोले तब रघुबंश पुरोधा ३

जनक भरत संबाद सुनाई । भरत कहावति कही सुहाई ४
तात राम जस आयसु देहू । सो सब करहिं मोर मत येहू ५
सुनि रघुनाथ जोरि युग पाणी । बोले सत्य सरल मृदु बाणी ६
बिद्यमान आपुन मिथि लेशू । मोर कहा सब भांति भदेशू ७
राउर राय रजायसु होई । राउर शपथ सही शिर सोई ८
दो० राम शपथ सुनि मुनि जनक सकुचेउ सभा समेत ।
सकल बिलोकत भरत मुख बनै न उत्तर देत ॥ २० ॥

ऐसी कुचालि करिके फिरि इन्द्र सोचते हैं कि काज और अकाज तो सब भरतही के हाथ है १ राजा जनक सब समाज समेत रामचन्द्र के पास गये और राम ने सब का सन्मान किया २ समय समाजके अनुसार और धर्म के अबिरोध तब रघुबंश के पुरोहित बशिष्ठ मुनि बोले ३ जनक और भरत का संबाद कहि कर भरत की सुन्दर सुहाई कहावति कही ४ ताते हे राम अब तुम जैसी आज्ञा करो सोई सब करैं मेरा तो यह मत है ५ ऐसे गुरु के बचन सुनि कर रामचंद्र ने हाथ जोरे और सत्य सरल बाणी बोले ६ जहां आप और महाराज मिथिलाधिप बिद्यमान हैं तहां मेरा कहना सब भांति से कुशोभित है ७ ताते जो आप का और महाराज का रजायसु होय आप की शपथ करताहूं सोई मेरे माथे पर सहीहै ८ ॥ ॥ दोहा ॥ ऐसी रामचंद्र की शपथ सुनतेही बशिष्ठ और राजा सब सभा समेत सकोचि गये और सब के सब भरत का मुख देखने लगे किसी को कुछ उत्तर देते नहीं बना ॥ २० ॥

सभा सकुच बश भरत निहारी । राम बंधु धरि धीरज भारी १
कुसमय देखि सनेह सम्हारा । बढ़त बिंध्य जिमि घटज निवारा २
शोककनक लोचनमति क्षोनी । हरी बिमल गुणगण जगयोनी ३
भरत बिबेक बराह बिशाला । अनायास उधरेउ तेहिं काला ४
करि प्रणाम सबकहं कर जोरी । राम राउ गुरु साधु निहोरी ५
क्षमब आजुअति अनुचित मोरा । कहहुंबदन मृदु बचन कठोरा ६
हृदय सुमिरि सारदा सुहाई । मानस ते मुख पंकज आई ७
बिमल बिबेक धर्म नय शाली । भरत भारती मंजु मराली ८
दो० निरखि बिबेक बिलोचननि शिथिल सनेह समाज ।

करि प्रणाम बोले भरत सुमिरि सीय रघुराज ॥ २१

जब समस्त सभाको भरतने सकुचके बश देखा तबतो रामबंधु भरतने बड़ा धीरज किया १ और कुसमय जानिकर सनेहको सकोचा जैसे बढ़ते हुये बिंध्याचल को अगस्तमुनि ने निवारण किया २ शोक रूपी हिरण्याक्षने समस्त गुणगण जगकी जननी मतिरूपी प्रथ्वी को जो हरिलिया रहे सोभरतके बिबेक महाबिशाल बाराहने उसको बिना प्रयास उद्धार करिलिया ३। ४ उठे और हाथ जोरि कर सबको प्रणाम किया फिरि राम औरराजा गुरुऔर साधु सबको निहोरा और बोले ५ आज मेरे अनु-चितको क्षमा करना मैं कोमलमुखसे कठोरबचन कहताहूं ६ हृदयमें अपनी सुहाई सारदा का स्मरण किया सो मनमानस सेमुख कमल परआ बैठी ७ निर्मल बिबेक और धर्मराज नीतितो मानों सुन्दर शालीहै औरभरत की सरस्वती उज्ज्वल हंसिनीहै ॥ ८ दोहा ॥ भरतने अपने ज्ञानके नेत्रोंसेसब समाजको जब शिथिल देखा तबतो सीता-रामको स्मरण और प्रणाम करिके बोले ॥ २१ ॥

प्रभुपितुमातु सुहृद गुरु स्वामी। पूज्य परमहित अंतर्यामी १
सरल सुसाहिब शील निधानू। प्रणतपाल सर्बज्ञ सुजानू २
समरथ शरणागत हितकारी। गुण गाहकअवगुण अघहारी ३
स्वामि गुसाईं सरिसगोसाईं। मोहि समान मैंस्वामि दोहाईं ४
प्रभुपितु बचन मोहि बशपेली। आयउं यहां समाज सकेली ५
जग भलपोच ऊंच अरु नीचू। अमिय सजीवन माहुर मीचू ६
राम रजाय मेटि मन माहीं। देखा सुना कतहुं कोउ नाहीं ७
सोमैं सब बिधि कीन्हि ढिठाई। प्रभु मानी सनेह सेवकाई ८
दो० कृपा भलाई आपनी नाथ कीन्ह भल मोर।
दूषणभे भूषण सरिस सुयश चारु चहुं ओर ॥ २२ ॥

हेप्रभु जोस्वामी इसजीवका पिता,माता,गुरु,पूज्य,परम हितकारी,अंतर्यामीभीहो १ और जो सुसाहिब,सरल,शीलनिधान,प्रणतपाल,सर्बज्ञ, सुजानहो २ सर्बसामर्थी शरणागतों का हितकारी और उनके गुणोंका ग्राहक अघ अवगुणोंका हर्ता हो ३ ऐसास्वामीतो आपके समान आपहीहै(बशीवदान्योगुणवानृजुश्शुचिर्मृदुर्दयालुर्मधुरस्थिर:सम:कृतकृतज्ञस्त्वमसिस्वभावत:समस्तकल्याणगुणामृतोदधि:) और मेरे समान भी कुसेवक मैंही हूं मैं आपकी शपथ करता हूं ४ हे प्रभु मैं पिताके बचनों को मेटि समाज को जोरि यहां आया ५ जगमें भले हैं पोचभी हैं ऊंचहैं नीचभी हैं अमृत और अमर पदहै बिषहै मृत्युभी है ६ इनमें से जो आपकी अपेल आज्ञाको मनसे भी मेटता होवै ऐसा तो कहीं कोई नदेखा नसुना है ७ सो मैंने सब भांति से ढीठता करी और आपने

उसको सनेह और सेवकाई करिकेमाना ॥ ८ ॥ दोहा ॥ अपनी कृपाऔरभलाईसे हेनाथ
आपने मेराऐसा भला किया कि मेरेदूषणभीभूषणहोगये और सुयशभी होगया ॥ २२ ॥

राउरि रीति सुबानि बड़ाई । जगत बिदित निगमागम गाई १
क्रूर कुटिलखल कुमति कलंकी । नीच निशीलनिरीश निशंकी २
तेउ सुनि शरण सामुहे आये । सकृत प्रणाम किये अपनाये ३
देखि दोष कबहुन उर आने ।सुनि गुण साधु समाज बखाने ४
जो साहिब सेवकहि निवाजी । आप समान साज सब साजी ५
निज करतूति न समुझै सपने । सेवक सकुच सोच उर अपने ६
सो गुसाइं नहिं दूसर कोपी । भुजा उठाइ कहौं प्रण रोपी ७
पशु नाचत शुक पाठ प्रवीना । गुण गति नट पाठक आधीना ८
दो० त्यों सुधारि सनमानि जन किये साधु शिरमोर ।
कोकृपाल बिनु पालिहै बिरदावलि बरजोर ॥ २३ ॥

आपकी ऐसी सुन्दर रीति और सुन्दरबानिकी बड़ाई जगतमें बिदितहै और निगमागम में कहीहै १ किजो सब भांतिसे क्रूर सुभावसे कुटिल निरेखल मंदमति महा
कलंकी नीचजाति दुश्शील निरंकुश निडर तेभी जबअपने शरण सन्मुख आयेसुने
तोएक बारही तवास्मि कहि कर प्रणाम करनसे ही आपने अपनाइ लिये ॥ कोश केवट
अपर भालु निशिचर शवर गृद्ध सम दमदया दानहीने । नाम लिये रामकिये परम
पावन सकल तरत न तिनके गुणगान कीन्हें २। ३ फिरि अपनायेके पीछे उनके दोषतो
देखिकर भी नमानेऔर उनके गुण श्रवण मात्रहीसे संतसमाज में बखाने ४ जोस्वामी
सेवकको ऐसा निवाजै कि अपने समान सब साज सजिदेवै ५ और अपनी इस करतूति
को तो सपनेमें भी नसमुझै और सेवककी सकुचका सदा सोच करै तत्वमसिद्वितीय
कोऽपिनास्ति सोतो आपही हो दूसराकोईभी तोनहींहै यहांतोमैंभुजा उठाइ औरप्रण
रोपिकर कहताहूं सत्यंसत्यंपुन:सत्यं भुजमुत्थायचोच्यते नवेदाच्चपरंशास्त्र नदेव:
केशवात्पर: ६। ७ पशुतो नाचते हैं और शुक पाठप्रबीण होते हैं यह उनके गुणकी
गति सब नट और पाठकके आधीनजैसे होतीहै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तैसेही आपने अपनी
अहेतुकी कृपा से जीवोंको सुधारि और सन्मानि कर संतशिरोमणि करि दियासो
आपके बिना दूसराकौन ऐसी बरजोर बिरदावली को पालैगा ॥ २३ ॥

शोक सनेह कि बालसुभाये । आयउं राय रजायसु पाये १
तबहुं कृपालहेरि निज ओरा । सबहिं भांति भलमानहु मोरा २
देखेउं पांय सूमंगल मूला । जानेउं स्वामि सहज अनूकूला ३

बडे समाज बिलोकेउ भागू । बड़ी चूक साहिब अनरागू ४
कृपा अनुग्रह अंग अघाई । कीन्हि कृपानिधि सब अधिकाई ५
राखा मोर दुलार गुसाईं । अपने शील सुभाव भलाई ६
नाथ निपट मैं कीन्ह ढिठाई । स्वामि समाज सकोच बिहाई ७
अबिनय बिनय यथारुचिबानी । क्षमिय देव अतिआरत जानी ८
दो० सुहृद सुजान सुसाहिबहिं बहुत कहत बड़ि खोरि ।
आयसु देइय देव अब सबहिं सुधारिय मोरि ॥ २४ ॥

शोक वा सनेह अथवा बालसुभाय से पिता की आज्ञा के भी प्रतिकूल हो मैं यहां आया तोभी आपने अपनी ओर देखिकर सब भांतिसे मेरा भलाही माना १। २ यहां आइकर सुमंगलमूल आपके चरण देखे ओर अपने स्वामी को सहज अनुकूल जाना ३ बडोंके समाजमें अपने भाग्यका उदयदेखा किबड़ी चूकपरभी स्वामीका अनुरागहीहै ४ कृपाऔर अनुग्रह अघाइकर सब आपने बढ़िकारहो किया ५ मेरेयहां आनेका दुलार आपने सब भांतिसे राखा केवल अपने शील सुभाव और अपनी भलाईहीसे ६ हेनाथ मैंने अतिही ढिठाई करी किस्वामीके समाजमें सकुचका त्याग किया ७ अबिनय वा बिनय यथा रुचिको अति आरत जानि क्षमा करना ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सुहृद और सुजान स्वामीसे बहुत कहना बड़ा दोष होताहै तातें अब आप मेरेको आज्ञादीजिये और मेरी बिगरी सब सम्हारिये ॥ २४ ॥

प्रभु पद पद्म पराग दोहाई । सत्य सुकृत सुख सीम सोहाई १
सो करिकहौं हिये अपने की । रुचि जागत सोवत सपने की २
सहज सनेह स्वामि सेवकाई । स्वारथ फल छल चारि बिहाई ३
आज्ञा शमने सुसाहिब सेवा । सो प्रसाद जन पावहिं देवा ४
असकहिभरत बिकलभय भारी । पुलक शरीर बिलोचनबारी ५
प्रभुपद पद्म गहे अकुलाई । समय सनेह न सो कहि जाई ६
कृपासिंधु सनमानि सुबानी । बैठाये समीप गहि पाणी ७
भरत बिनय सुनिदेखि सुभाऊ । शिथिल सनेह सभारघुराऊ ८
छं० रघुराउ शिथिल सनेह साधुसमाज मुनि मिथिलाधनी ।
मन महं सराहत भरत भायप भक्ति की महिमा घनी ॥
भरतहिं प्रशंसत बिबुध बरषत सुमन मानस मलिन से ।

तुलसी बिकल सबलोग सुनिसकुचे निशागम नलिनसे ॥
सो० देखि दुखारी दीन दुहुंसमाज नरनारि सब ।
मघवा महा मलीन मुयेमारि मंगल चहत ॥ २५ ॥

हे स्वामी आप के चरणकमलों की शपथ सत्य और सुकृत और सुख सब की सुन्दर सीमा है १ सो शपथ करिके मैं अपने हृदय की कहता हूं जिस बात पर मेरी रुचि जागते सोवते और सपने में भीहै २ कि स्वार्थ और छल चारों फलों को छोड़ि कर सहज सनेह से स्वामी की सेवा करना ३ सो सुसाहिब की सेवा आज्ञा कारी के समान दूसरी नहीं है सो आज्ञादास पावै ४ ऐसे कहिकर भरत महा व्याकुलहोगये ५ अकुलाइकर रामचन्द्र केचरण पकरि लियेसो सनेह उससमयका कहा नहीं जाता है ६ रामचन्द्र ने सन्मानि कर पास बैठारि लिया ७ भरत की बिनती सुनिकर राजा और रामचंद्र सभासमेत शिथिल होगये ॥ ८ ॥ छन्द ॥ और भरतकी भायपभक्ति की महिमा मनहो में कहने लगे भरत को मलीन मन देवता भी सराहते और पुष्प बर्षातेहैं लोग सब संध्याकेसे कमल मुरझाइ गये ॥ सोरठा ॥ उसी समय दोनों समाज के नर नारियों को दीन दुखी देखिकर महामलीन इन्द्र मरों को मारि कर मंगल चाहता है ॥ २५ ॥

श्रीरामायनमः ॥

कपट कुचालि सीम सुरराजू । पर अकाज प्रिय आपन काजू १
काकसमान पाकरिपु रीती । छली मलीन कतहुं न प्रतीती २
प्रथम कुमत करि कपट सकेला । सो उचाट सबके शिरमेला ३
सुर माया सब लोग बिमोहे । राम प्रेम अतिशयन बिछोहे ४
भय उचाटबशमनथिरनाहीं । क्षणबन रुचिक्षण सदनसुहाहीं ५
द्विविधिमनोगतिप्रजादुखारी । सरितसिंधु संगम जिमिबारी ६
द्विचित कतहुं परितोष न लहहीं । एक एकसन मर्म न कहहीं ७
लखि हियहंसिकहकृपा निधानू । सरिसस्वानमघवानिजबानू ८
दो० भरत जनक मुनिगण सचिव साधु सचेत बिहाइ ।
लागि देवमाया सबहिं यथा योग जन पाइ ॥ १ ॥

कपट और कुचालि की तो देवराज इन्द्र सीमाही है पराया जिसको अकाज और अपना काज प्यारा है १ काक के समान इंद्र की भी रीति है बड़ा छली और मैला है कहीं किसी की प्रतीति नहीं करता है प्रथम जो कुमत करि कपट

सकेला रहै सो उच्चाटी सबके शिर डारिदी ३ देवताओं की मायाने लोगों को मोहि लिया परंतु राम के प्रेम से अतिशय नहीं बिरागे ४ भय और उच्चाट के बश किसी के मन को स्थिरता नहीं रही क्षण तो बनवास पर रुचि होती है और क्षण ही में घर सुहाने लगते हैं ५ द्विविधा मनोगति से प्रजा ऐसी दुखी हैं नदी और समुद्र के संगम में जैसी ज्वारिभाटा के मारे जलकी दशाहोती है ६ दो प्रकार की मनोगति के मारे कहीं संतोष नहीं पाते हैं और लाज के मारे कोई किसी से मर्म नहीं कहते हैं ७ ऐसी इंद्र की कुचालि देखि कर कृपानिधान राम ने मनमें कहा कि स्वान के समान मघवा इंद्रकी निज बानि है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ भरत और राजा जनक, बशिष्ठ मुनि और सचेत साधु इन सब को छोड़िकर देवताओं की माया यथा योग्य सब लोगोंको लगि गई ॥ १ ॥

कृपासिंधु लखि लोग दुखारे। निजसनेह सुरपति छलभारे १
सभा राउ गुरु महिसुरमंत्री। भरत भक्ति सबकी मति यंत्री २
रामहिं चितवत चित्र लिखेसे। सकुचत बोलत बचन सिखेसे ३
भरत प्रीति गति बिमलबड़ाई। सुनत सुखद बरणत कठिनाई ४
जासु बिलोकि भक्तिलवलेशू। प्रेममगन मुनिगण मिथिलेशू ५
महिमातासुकहैकिमितुलसी। भक्तिसुभावसुमतिहियहुलसी ६
आप छोटिमहिमाबड़िजानी। कविकुलकानि मानिसकुचानी ७
कहिनसकतिगुणरुचिअधिकाई। मतिगतिबालबचन कीनाई ८
दो० भरत बिमलयश बिमल बिधु सुमति चकोर कुमारि।
उदित बिमल जन हृदय नभ एकटक रही निहारि २॥

कृपा सिंधु रामने सब लोगों को अपने सनेह और इंद्र के छल से दुखी देखे १ सभा और राजा गुरु और मंत्री इन सब की मतिको भरत की भक्ति शृंखला हो गई २ ते सब रामको चित्र लिखे से देखते हैं और सीखे से बचन बोलने में सकुचतेहैं ३ भरत की प्रीति गति की निर्मल बड़ाई सुननेही में तो सुखदायक है कहने में कठिन है ४ जिन भरत की भक्ति के लवलेश को देखिकर प्रेम में मग्न सब मुनि गण और राजा जनक होरहे हैं ५ तिनकी महिमा को मैं तुलसी कैसे कहि सकूं यहतो भक्तिके प्रभाव से सुमति हृदय में हुलसी है ६ मति तो मेरी छोटीऔर महिमा बड़ी इससे कविकुल की कानि करिके सकुचाती है ७ कहि तो सक्ती नहीं है और गुण कहने पर रुचि बहुत है तातें मतिकी गतिबाल बचन की सी हो रही है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ भरत का निर्मल यश तो उज्ज्वल चंद्रमा है और सुमति

चकोरकुमारी है सो सुयश चंद्रमा को कविके हृदय आकाश में उदित देखि कर एकटक मानो देखती ही रहिगई है २ ॥

भरतसुभाव न सुगमनिगमहूं । लघुमति चापलताकविक्षमहूं १
कहतसुनत सतिभाव भरतको । सीय रामपद होइ न रतको २
सुमिरत भरतहिं प्रेमरामको । जेहिनसुलभ तेहिसरसबामको ३
देखि दयाल दशा सबही की । राम सुजान जान जनजी की ४
धर्म धूरीण धीर नयनागर । सत्य सनेह शील सुख सागर ५
देश काल लखि समय समाजू । नीति प्रीति पालक रघुराजू ६
बोले बचन बाणि सर्बससे । हित परिणाम सुनत शशि रससे ७
तात भरत तुम धर्म धुरीणा । लोक बेद पथ परम प्रवीणा ८
दो० कर्म बचन मानस बिमल तुम समान तुम तात ।
गुरु समाज लघुवंधुगुण कुसमय किमि कहिजात ॥३ ॥

भरत का स्वभाव तो कहने में वेदों को भी सुगम नहीं है मेरी तो अतिलघु बुद्धिहै तातें चपलता को हे कविजनो क्षमा करो १ भरत के सतिभाव के कहते सुनते सीता रामके चरणों में कौनरत नहीं हुआ है २ और भरत के प्रेमको स्मरण करने से भी जिसको रामका प्रेम सुलभ न होवै उसके समान बाम बुद्धि कौन है ३ अबराम ने सब की दशा देखी तो स्वामी बड़े सुजान जनकेजी की जानतेहैं४ और धर्म धुरीण धीर नयनागर सत्य और शील सनेह के सागर हैं ५ देश काल समय समाज देखिकर नीति और प्रीति दोनों के पालक श्रीरामचंद्र वाणी के सर्वस बचन बोले जो परिणाम में हित और सुनने में अमृत से मधुर हैं ६। ७ हे तात भरत तुम तो धर्म धुरीण हो लोक और वेद पन्थ में परम प्रवीण हो ॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥ कर्म बचन मन से बिशुद्ध तुम्हारे समान तुमहीहो बड़ों के समाज में छोटे भाई के गुण इस कुसमय में कैसे कहे जाते हैं ॥ ३ ॥

जानहु तात तरणि कुल रीती । सत्य संधपितु कीरति प्रीती १
समय समाजलाजगुरुजनकी । उदासीनहित अनहितमनकी २
तुमहिं बिदित सबही करममूं । आपन मोर परमहित धर्मू ३
मोहिं सब भांतिभरोस तुम्हारा । तदपि कहौं अवसरअनुसारा ४
तात तात बिनु बात हमारी । केवल कुल गुरु कृपा सम्हारी ५
नतरु प्रजा पुरजनपरिवारू । हमहिं सहित सब होत दुखारू ६

जो बिनु अवसर अथव दिनेशू । जगकेहि कहहु न होइकलेशू ७
तसउतपाततातबिधिकीन्हा । मुनिमिथिलेश राखिसबलीन्हा ८
दो० राज काज सब लाज पति धर्म धरणि धन धाम ।
गुरु प्रभाव पालिहि सबहि भल होइहि परिणाम ॥ ४ ॥

सुनो हे भाई इस सूर्य्यबंश की सनातन रीति और सत्य संकल्प पिताकी जैसी कीर्ति पर प्रीति रहे सोतुम सब भले प्रकार जानतेहो १ समय समाज़ और बड़ों की लाज और शत्रु मित्र उदासीनोंके मनकीबात तुमको सबका मर्म बिदित है और मेरा तुम्हारा परम हित और परम धर्म है सोभी तुम सब जानते हो २ ॥ ३ मेरेको सब बातका सब भांति से तुम्हारा भरोसा है तौ भी समयके अनुसार कुछ कहता हूं ४ हे तात पिताके बिना हमारी सबबात केवल कुलगुरु की कृपाने सम्हारी है ५ नहीं तो प्रजा और पुरजन परिवार हम समेत सब दुखी होजाते ६ जो बिन अवसर सूर्य्य अस्त हो जावे तो जगमें कहो किस को क्लेश न होवै ७ तैसाही उत्पात हे तात बिधाता ने किया परंतु मुनि और मिथिलेश ने सब राखि लिया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सब राज काज और लाज, पनि और धर्म, धरणी, धाम इन सबको तो हे भाई गुरु का प्रभावही पालैगा और परिणाम को सब भलाही होगा ॥ ४ ॥

सहित समाज तुम्हार हमारा । घर बन गुरु प्रसाद रखवारा १
मातु पिता गुरु स्वामि निदेशू । सकल धर्म धरणीधर शेषू २
सो तुम करहु करावहु मोहू । तात तरणिकुल पालक होहू ३
साधन एक सकल सिधि देनी । कीरति सुगति भूतिमयबेनी ४
सो बिचारि सहि संकट भारी । करहु प्रजा परिवार सुखारी ५
बांटिय बिपतिमोरि सब भाई । तुमहिं अवधि भरिबड़िकठिनाई ६
जानि तुमहिं मृदु कहौं कठोरा । कुसमय तातन अनुचितमोरा ७
होहिं कुठाउं सुबंधु सहाये । ओड़हिं हाथ असिन के घाये ८
दो० सेवक करपद नयन से मुखसे साहिब होइ ।
तुलसी प्रीति कि रीति लखि सुकबि सराहैं सोइ ॥ ५ ॥

सब समाज समेत तुम्हारा और मेरा घरमें और बनमें गुरुका अनुग्रहही रक्षक है १ हम तुमकेतो माता पिता गुरुदेव और स्वामीका निदेशही समस्त धर्म धरणी का धारक शेष है २ सोईतो हे भाई तुम करो और मैं तुम्हारे आधीनहूं मुझसेभी करवाओ और अवधि भरि कर हे तात इस सूर्य्यबंश के पालक होओ ३ यही एक

साधना सकल सिद्धि की दाता है और संसार में कीर्त्ति और बिभूति और परलोक में सुगति इन तीनों की सुन्दर बेणी है ४ सोई बिचारि संकट सहि कर हे भाई सब प्रजा और परिवार को सुखी करो ५ मेरी इस बिपत्तिको हे भाई बंटाइये मैं जानता हूं कि तुमको अवधि भरि कर बड़ी कठिनाई है ६ तुमको अति सुकुमार जानि कर भी जो मैं कठोर कहता हूं यह कुसमय मेरेसे कहावत है कुछ मेराभी दोष नहीं है ७ कि कुठाउं संकट में सुबंधुहीकी सहायता लीजातीहै देखो शिर पर जब खड्गप्रहार होता है तो हाथही ओड़े जातेहैं ॥८॥ दोहा ॥ सेवकतोहाथ पाउं नेत्रोंसे और मुख से जहां स्वामी होताहै ऐसी परस्पर प्रीतिकी रीतिको देखि सुकबिसराहते हैं ॥ ५ ॥

सभा सकल सुनिरघुबर बानी। प्रेम पयोधिअमिय जनुसानी १
सकल समाज सनेह समाधी। देखि दशा चुप सारद साधी २
भरतहि भयउ परम संतोषू। सन्मुख स्वामि बिमुखदुखदोषू ३
मुख प्रसन्न मन मिटा बिषादू। भाजनु गंगहि गिराप्रसादू ४
कीन्ह सप्रेम प्रणाम बहोरी। बोले पाणि पंकरुह जोरी ५
नाथ लहेउं सुख साथ लयेका। लहेउंलाभ जगजन्म भयेका ६
अब कृपाल जस आयसु होई। करौं शीष धरि सादर सोई ७
सो अवलंब देव मोहिं देई। अवधि पार पावहुं जेहि सेई ८
दो० देव देव अभिषेक हित गुरु अनुशासन पाइ।
आने सब तीरथ सलिल तेहि कहं काह रजाइ ॥ ६ ॥

समस्त सभा रामचन्द्रकी बाणी प्रेमके समुद्रके अमृतकी सनी सुनिकर सनेह में समाधि होगई और यह दशा देखि कर सारदाने भी चुप साधी १ ॥ २ भरत को तो परम संतोष होगया अपने स्वामीको सन्मुख और दुख दोषों को बिमुख देखा ३ मुखतो भरतका अति प्रसन्न होगया और सब बिषाद दूरि हुआ मानों गूंगेको बाणी का लाभ हुआ ४ फिरि उठिकर प्रेम समेत रामचन्द्रको प्रणाम किया और करकमल जोरि कर बोले ५ हे नाथ मैंने साथ ले चलनेका सुख पाया और जगमें जन्म होने का लाभ हुआ ६ अबतो हे कृपाल स्वामी जैसी आज्ञा हो सोई माथे मानिकर करूं० और ऐसा कुछ प्राणावलम्ब मेरेको आप देवें किजिसका सेवन करिके अवधिका पार पाऊं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ हे देव आपके अभिषेक केलिये गुरुकी आज्ञा से सब तीर्थों का जल लेता आया हूं उसको क्या आज्ञा होती हैं ॥ ६ ॥

एक मनोरथ बड़ मन माहीं। समय सकोच जात कहि नाहीं १
कहहु तात प्रभु आयसु पाई। बोले बानि सनेह सुहाई २

चित्रकूटमुनि थलतीरथबन । खगमृगसरसरि निर्झरगिरिगन ३
प्रभु पद अंकित अवनि बिशेषी । आयसु होइ तोआवहुं देखी ४
अवशि अत्रि आयसु अनुसरहू । तातबिगत भयकानन चरहू ५
मुनि प्रसाद बन मंगल दाता । पावन परम सुहावन भ्राता ६
ऋषि नायक जहं आयसु देहीं । राखेहु तीरथ जल थल तेहीं ७
सुनिप्रभुबचनभरतसुखपावा । मुनिपदकमल मुदितशिरनावा ८
दो० भरत राम संबाद सुनि सकल सुमंगल मूल ।
सुर स्वारथी सराहि कुल हर्षित बर्षहिं फूल ॥ ७ ॥

एक मनोऽर्थ और मेरे मनमें बड़ाहै सो समयके संकोचसे कहा नहीं जाताहै १ रामचन्द्रने कहा कहो हे तात संकोच मति करो ऐसी रामचन्द्र की आज्ञा पाइ कर बड़े सनेहसे बोले २ चित्रकूट वासी मुनि जनोंके आश्रम, और तीर्थ, और वन पक्षी मृग, सरोवर, नदी, झरना, पर्वत. और आपके चरण रेखाओंसे अंकितभूमिहै जोआज्ञा होवेतो इन सबको देखि आऊं ३ ॥ ४ रामचंद्रने कहा अवश्य देखो परंतु अत्रिमुनि से आज्ञा मांगो और निर्भय वनमें फिरो ५ अत्रिमुनिही के प्रसादसे यह बन मंगल दाता है पावन और परम सुहावन है ६ और जहां ऋषिनायक, आज्ञा देवें तहीं इन तीर्थों के जलको भी राखो ७ ऐसे रामचंद्रके बचन सुनिकर बड़ा सुख भरत ने पाया और अत्रिमुनिके चरणोंको प्रसन्न मन शीप नवाया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ऐसा मंगल मूल भरत और रामका संबाद सुनि कर परम स्वार्थी देवता सूर्य्यबंश की प्रशंसा करिके पुष्प बर्षाने लगे ॥ ७ ॥

धन्य भरत जय राम गुसाईं । कहत देव हर्षित बरियाईं १
मुनि मिथिलेशसभा सबकाहू । भरत बचन सुनि भयउ उछाहू २
भरत राम गुण ग्राम सनेहू । पुलकि प्रशंसत राउ बिदेहू ३
सेवक स्वामि सुभाय सुहावन । नेम प्रेम अति पावन पावन ४
मति अनुहारि सराहन लागे । सचिव सभासद सब अनुरागे ५
सुनि सुनि राम भरत संबादू । दुहुं समाज हिय हर्ष बिषादू ६
राम मातु दुख सुख समजानी । कहि गुण दोष प्रबोधी रानी ७
एक करहिं रघुबीर बड़ाई । एक सराहत भरत भलाई ८
दो० अत्रि कहेउ तब भरत सन शैल समीप सुकूप ।

राखेउ तीरथ तोय तहं पावन अमल अनू। ८ ॥

धन्य भरत औ जयराम ऐसे देवता हर्ष की उमंग से शार वरयाई कहते हैं ॥ १ ॥ वशिष्ट राजा जनक और सब सभाको भरत के बचन सुनिड़ा उत्साह हुआ ॥ २ ॥ भरत और राम के गुणग्राम और सनेह को पुलकित जा बिदेह सराहते हैं ॥ ३ ॥ कि सेवक और स्वामी दोनों सुभाय सुहाये हैं इनके नेम और परस्पर प्रेम अति पावन सेभी पावन है ॥ ४ ॥ इसी भांति में महाजन भी प्रेम भरे अपनी अपनी मति के अनुहार सब सराहने लगे ॥ प्रार दोनों राजसमाजों में राम भरत का संबाद सुनि सुनि कर हर्ष और बिषगया ॥ ६ राम की माता कौशल्या ने दुख सुख समान जानि कर इस संबाद गुण दोष कहि कहि कर सब रानियों को समझाया ॥ ७ ॥ एक तो राम की बड़ाई हैं एक भरत की भलाई को सराहते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तबतो अत्रि मुनिने से कहा इस पर्बत के समीप एक कूप है उसमें तीर्थों के जलको राखिये ॥ ९ ॥

भरत अत्रि अनुशासन पाई । जल भाजन सब दिये ई १
सानुज आप अत्रि मुनि साधू । सहित गये जहं कूप पू २
पावन पाथ पुण्य थल राखा । प्रमुदित हृदय अत्रि अस ३
तात अनादि सिद्ध थल येहू । लोपेउ काल बिदित नहि ४
तब सेवकन सरस थलदेखा । कीन्हेसि जल हित कूप बि ५
बिधिबश भयउबिश्व उपकारू । सुगम अगम अतिधर्म बि ६
भरत कूप अब कहिहैं लोगा । अति पावन तीरथ जल ये ७
प्रेम सनेम निमज्जत प्राणी । होइहि बिमल कर्म मन बा ८
दो० कहत कूप महिमा सकल गये जहां रघुराउ ।
　　अत्रि सुनायउ रघुबरहिं तीरथ पुण्य प्रभाउ ॥ ९ ॥

भरतने अत्रिमुनिका अनुशासन पकर समस्त जल भाजन आगे पठाइ दिये । पीछे से शत्रुहन समेत अत्रि मुनि के साथ साधु समाज सहित जहां अगाध कूप है तहां गये ॥ २ ॥ उस पावन जलको अत्रिमुनि ने पुण्य थल कूप में राखा और प्रसन्न मन यह बोले ॥ ३ हेतात भरत यह थल अनादि सिद्ध है दीर्घकाल से लोप होगया रहे कोई जानता नहो है ४ ॥ तबतो हमारे शिष्यों ने सुन्दरथल देखि कर जलके लिये कूप करि लिया रहे ॥ ५ ॥ दैवयोग से अब विश्व का उपकार होगया धर्म का बिचार बड़ा सुगम और अगम है ॥ ६ ॥ अब आज से इसको सब लोग भरतकूप कहेंगे तीर्थों के जलके संयोग से अति पावन होगया ॥ ७ ॥ प्रेम नेम

समेत प्राणी इसदर्शन करतेहो कर्म बचन मनसेब अभ्यन्तर निर्मल होजावेंगे ॥ ८
दोहा ॥ इस प्रब कूपकी महिमा कहते सुनते रामके पास आये तबतो अत्रि
मुनिने उस ती पुण्य का प्रभाव रामचन्द को सुनाया ॥ ६ ॥

कहत धर्म हास सप्रीती। भयउभोर निशिसो सुखबीती १
नित्य निबभरत दोउ भाई। राम अत्रि गुरु आयसु पाई २
सहित स साज सब सादे। चले राम बन अटन पयादे ३
कोमल चरलतबिनु पनहीं। भइ मृदुभूमि सकुचि मन मनहीं ४
कुश कंटकांकरी कुराई। कटुक कठोर कुबस्तु दुराई ५
महिं मंजुदु मारग कीन्हे। बहति बयारित्रिबिधिसुखलीन्हे ६
सुमन लुर घन करिछाहीं। बिटप फूलियलि तृण मृदुलाहीं ७
मृग बि खग बोलि सुबानी। सेवहिं सकल रामप्रियजानी ८
दो० र्ग सिद्ध सब प्राकृतहु राम कहत जमुहात।
प्राण प्रिय भरत कहं यह न होइ बड़ि बात ॥ १०

प्रीतित धर्मशास्त्र और इतिहास कहते सुनते प्रात होगया रात्री आनन्द
में बीती ॥ तबतो भरत दोनो भाई नित्य कर्म करिके राम अत्रि और
वशिष्ठ आज्ञा पाकर सब समाज समेत सादे साज राम बनके पर्य्यटन को पयादे
हो च २ ॥ ३ ॥ कोमल तो चरण हैं और बिना प्रादत्राण चलते हैं ऐसा देख
कर मनही मनमें सकुचि कर कोमल होगई ॥ ४ ॥ कुश कांटे कांकर बिल
कटु र कुबस्तु सब छिपालीं ॥ ५ ॥ पृथिवी ने उज्ज्वल और कोमल मार्ग करि
दिशार पवन तीनों प्रकार की सुख लिये बहती है ॥ ६ ॥ फूलों की बर्षा करि
केदेवता और छाया करिके मेघ फूलि फूलि कर वृक्ष कोमलता करिके तृण ॥ ७
मृर्खिकर पक्षी बोलिकर सब भरतकी सेवा रामका प्यारा जानकर करते हैं ॥ ८
दे ॥ जो प्राकृतपुरुष राम राम जमुहाते में भी करते हैं उनको भी सब सिद्धि
भ होजाती है सोराम के प्यारे भाई भरत को यह कौनसी बड़ी बात है ॥ १०

हि बिधि भरतफिरत बनमाहीं। नेमप्रेम लखि मुनिसकुचाहीं १
ुण्य जलाशय भूमि बिभागा। खगमृग तरुतृण गिरि बनबागा २
चारु बिचित्र पवित्र बिशेषी। पूंछत भरत दिव्य सब देखी ३
सुनि मनमुदित कहत ऋषिराऊ। हेतु नामगुण पुण्य प्रभाऊ ४
कतहुं निमज्जन कतहुं प्रणामा। कतहुं बिलोकत मन अभिरामा ५

कतहुं बैठि मुनि आयसु पाई । सुमिरत सीयहित द्वौभाई ६
देखि सुभाव सनेह सुसेवा । देहिं अशीमुदित बनदेवा ७
फिरिहि गये दिनप्रहर अढ़ाई । प्रभुपद कमलबिलोकहिं आई ८
दो० देखे थल तीरथ सकल भरत पांच दिमांझ ।
कहत सुनत हरि हर सुयश गयउ दिन भइ सांझ ॥ ११

इस प्रकार भरत बनमें सब ओर फिरते हैं जिनके ओर प्रेम को देखिकर मुनीश्वर भी सकुचाते हैं ॥ १ ॥ चित्रकूट के पवित्र जल्य और भूमि, पक्षी, मृग वृक्ष, तृण, पर्बत, बाग, बन सबों को बिशेष सुन्दर बिचित्र और पबित्र देखिकर भरत अत्रिमुनिसे पूंछतेहैं ॥ २ । ३ ॥ सुनिकर प्रसन्न मन मुनि उनका कारण नाम गुण औ पुण्य का प्रभाव कहते हैं ॥ ४ ॥ जो स्नान के योग्यहैं तहां स्नान करते हैं प्रणाम के योग्यहैं तहां प्रणाम करते हैं दर्शनीयों के दर्शन करते हैं ॥ ५ ॥ कहीं मुनि की आज्ञा के अनुसार बैठकर सीता समेत रामचंद्रका स्मरण करते हैं ॥ ६ इस प्रकार भरत का सुभाव और सनेह सेवा देखकर सबनदेव प्रसन्न मन अशीष देतेहैं ॥ ७ ॥ दिनके अढ़ाई प्रहर बीते प्रति दिन फिरतेहैं और रामचन्द्र के चरण कमलों को आकर प्रणाम करते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ इसप्रकार चित्रकूट के समस्त तीर्थ, थल भरत ने पांच दिन में देखे हरि और हर नों का सुयशकहते कहते दिन ब्यतीत हुआ और रात्रि हुई ॥ ११ ॥

भोर न्हाय सबजुरा समाजा । भरत भूमिसुर तिरहुति राजा १
भल दिन आजु जानिमनमाहीं । रामकृपालु कहत सकुचाहीं २
गुरुनृप भरतसभाअवलोकी । सकुचिराम फिरिअवनिबिलोकी ३
शील सराहि सभासब सोची । कहुंन राम सम स्वामिसकोची ४
भरत सुजान राम रुख देखी । उठि सप्रेम धरि धीर बिशेषी ५
करि दंडवत कहत कर जोरी । राखी नाथ सकल रुचि मोरी ६
मोहि लगि सबहिंसहेउसंतापू । बहुत भांतिदुखपायउआपू ७
अब गुसाइ मोहि देउ रजाई । सेवैं अवध अवधि लगिजाई ८
दो० जेहि उपाय पुनि पांय जन देखिय दीनदयाल ।
सो शिख देइय अवधिलगि कोशलपाल कृपाल ॥ १२ ॥

प्रातःकाल स्नान करके सब समाज एकट्ठा हुआ भरत बशिष्ठादि भूमिसुर तिरहुतिराज जनक १ आज अति शुभ यात्रा का दिन है यह मन में जानि कर भी

परम कृपालु रामचं कहते हुये तो सकुचते हैं २ वशिष्ठ और राजा जनक भरत और सब सभा देख कर फिरि सकुचि कर पृथ्वी को देखने लगे ३ ऐसा सुन्दर शील रामचं का सराहि कर समस्तसभा ने बिचारा कि राम के समान स्वामी कोई भी त्यागी नहीं है ४ परम सुजानभरत ने जब राम का अभिप्राय देखा तबतो प्रेमसेत बड़ी धीर धर कर उठे और दण्डवत करके बोले हे नाथ आप ने मेरे जीकी समस्त रुचि निबाही ५ । ६ मेरे निमित्त सबने बड़े संताप सहे और आपभी सब भांति से दुख पाये ७ अब हे कृपालु स्वामी मुझको आज्ञा दीजिये कि अयोध्या को अवधि भरि सेवन करूं तुलसीबातेअवधिप्रथमदिन जोरघुनाथनअइहोतोप्रगासरोजशपथजीवतफिरिजनहिंनपैहो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ और जिस उपाय करिके स हे दीनदयाल आप के चरणों को फिरि देखे ऐसा कुछ अवधि पर्य्यन्त को आज्ञा दीजिये ॥ १२ ॥

पुरजन परिजन प्रजा गुसाईं । सब शुचि सरस सनेह सगाई १
राउर बदि भल भवदुख दाहू । प्रभुबिन बादि परमपदलाहू २
स्वामि सुजानजासबही की । रुचि लालसारहनिजनजीकी ३
प्रणतपाल पालहिंसब काहू । देव दुहूंदिशि ओर निबाहू ४
असमोहिं सबबिधिभूरि भरोसो । किये बिचारन सोचखरोसो ५
आरति मोरि नाथकर छोहू । दुहु मिलि कीन्ह ढीठ हठिमोहू ६
यह बड़ दोष दूरि करिस्वामी । तजिसकोचसिखइयअनुगामी ७
भरत बिनयसुनि सबहिंप्रशंसी । क्षीर नीर बिबरन गतिहंसी ८
दो० दीन बन्धु सुनि बन्धु के बचन दीन छल हीन ।
देश काल अवसर सरिस बोले राम प्रबीन ॥ १३ ॥

पुरजन परिजन औ प्रजा हे स्वामी यद्यपि ये सब सनेह सगाई में शुचि और सरस हैं १ परंतु मेरे वे तो आप का कहाई करनेमें संसारका दुख दाह भी भला है और आपको बिना परम पद का लाभ भी वृथा है २ आप तो परम सुजान हैं सबही के हृदय की जानते हैं तो दास के हृदय की रुचिऔर लालसा औररहनि जानने में कौन संदेह है ३ तातें प्रणतपाल सब का पालन करेंगे और दोनो दिशाओं की ओर निबाह देवों ४ ऐसा मेरे को सब भांति से बड़ा भरोसा है और बिचार करने से विशेष सोचनहीं है ५ मेरी आर्त्ति और आप का छोह इन दोनोंने हठि करि मेरे को भी ढीठ कर दिया ६ यह बड़ा अपराध क्षमा करिके और सकोचछोड़ कर हे स्वामी दास को शिक्षा दीजिये ७ ऐसी भरत की बिनती सुनि कर सब ने सराही जिस की क्षीर नीर बिबरण गति हंस के समान है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ दीनबंधु

रामचंद्र भाई भरत के छलहीन और अति दीन बचन सुनिकर देश काल समय समाजके अनुसार वचन बोले ॥ १३ ॥

तात तुम्हारि मोरि परिजनकी । चिन्तागुरुहिं नृपहि घरबनकी १
माथे पर गुरुमुनिमिथिलेशू । हमहि तुमहिं सपने न कलेशू २
मोर तुम्हार परम पुरुषारथ । स्वारथ सुयश धर्म्म परमारथ ३
पितु आयसु पालहिं दुहुभाई । लोक बेद भल भूप भलाई ४
गुरु पितुमातुस्वामिशिख पालैं । चलत सुमगुपगुपरैं न खालैं ५
असबिचारि सब सोचबिहाई । पालहु अवध अवधि भरिजाई ६
देश कोष पुरजन परिवारू । गुरु पद रजहिं लाग छरभारू ७
तुममुनि मातु सचिव शिषमानी । पालहु पुहुमि प्रजारजधानी ८
दो० मुखिया मुख सो चाहिये खान पान को एक ।
पालै पोषै सकल अंग तुलसी सहित बिवेक ॥ १४ ॥

हे तात तुम्हारी और मेरी और सब परिजन की चिन्ता हमारे गुरुबशिष्ट और श्रीमहाराज मिथिलापति को घर और बनकी है १ हमारे तुम्हारे शिरपर तो गुरु और महाराज मिथिलेश बिद्यमान हैं ताते हमको और तुमको तो स्वप्नमें भी किसी बातका क्लेश नहीं हैं २ मेरा तुम्हारा परम पुरुषार्थ और स्वार्थ और सुयश धर्म्म और परमार्थ इतनाही है कि दोनों भाई मिलिकर पिताकी आज्ञाका पालन करें लोक और बेद में इसीसे भले प्रकार राज बड़ाई है ३। ४ क्योंकि गुरू और पिता माता और स्वामी की आज्ञापालन करना सीधा समतल सुमार्ग है, इसमें चलनेसे कभी पांवखाले में नहीं पड़ता है ५ ऐसा बिचारि कर के हेभाई समस्त सोच का त्याग करो और अवधि पर्य्यन्त अयोध्याको पालो ६ औरदेशकोषपुरजन और परिवार इनसबका भार गुरूके चरणकमलकी रजके आश्रित होगा ७ और तुम गुरु माता मंत्री इनसबकी शिक्षा के अनुसार पृथ्वी प्रजा और राजधानी अयोध्या का पालन करो ॥ ८ मुखिया तो मुखसा होना चाहिये कि खाने पीनेको एक होता है और समस्त अंगों को यथायोग्य पालन पोषण करता है ॥ १४ ॥

राज धर्म्म सरबस इतनोई । जिमि मन मांह मनोरथ गोई १
बंधु प्रबोध कीन्ह बहु भांती । बिनु अधार मनतोष न शांती २
भरत शीलगुरु सचिव समाजू । सकुच सनेह बिबश रघुराजू ३
प्रभुकरि कृपा पांवरी दीन्ही । सादर भरत शीश धरिलीन्ही ४

चरण पीठ करुणानिधान के । जन युगयामक प्रजा प्राणके ५
संपुट भरत सनेह रतनके । आखर युग जन जीव यतनके ६
कुलकपाट करकुशल करमके । बिमल नयन सेवा सुधर्म्म के ७
भरत मुदित अवलंब लहेते । अस सुख जस सिय राम रहेते ८
दो० मांगेउ बिदा प्रणाम करि राम लिये उरलाइ ।
लोग उचाटे अमरपति कुटिल कुअवसर पाइ ॥ १५ ॥

समस्त राजधर्म्म इतनाही है जैसेएकही मनमें अनेक मनोऽर्थ छिपे होते हैं १ इस प्रकार रामचन्द्र ने अपने भाई भरत का प्रबोध किया परंतु प्राणावलम्ब पाये बिना उनके मनको न तो संतोषहुआ और न शांतिहुई २ भरत केतोशील और सनेह और गुरुजनों के समाजकी सकोच के बश रामचन्द्र होगये ३ फिरितो रामचन्द्र ने कृपा करिके अपने पदपीठि भरत को देदिये तो भरत ने बड़े आदर और प्रेम समेत उठाकर शीश पर रखलिये ४ करुणानिधान रामचन्द्रके दोनों चरणपीठि मानों समस्त प्रजःप्राण के दोपाहरू हैं ५ फेर भरत के सनेहरूपी रत्नके संपुटहीं हैं और जीवके मोक्ष सिद्धोपाय मानों रामनाम के रकार मकारही दोनो अक्षर हैं ६ समस्त रघुकुल के रक्षक मानों दोनों कपाटही हैं और समस्त सुकर्मोंके कुशल दोनों करही हैं और सेवा सुधर्म केतो मानो दोनो निर्मल नेत्रही हैं ७ भरत तो अवलम्ब पाने से अति प्रसन्न होगये ऐसा सुख हुआ जैसा सीता रामचन्द्र के रहने से होता ॥ ८ उठिकर भरत ने रामचंद्र को प्रणाम किया और विदा मांगी उसी समय महाकुटिल इन्द्र ने कुसमय पाकर लोगोंको उचाट दिया ॥ १५ ॥

सोकुचालि सब कहं भइनीकी । अवधि आशसम जीवन जीकी १
नतरु लषणसियरामबियोगा । हहरि मरत सब लोगकुरोगा २
राम कृपा अवरेव सुधारी । बिबुध धार भइ गुणद गोहारी ३
भेटत भुज भरि भाइ भरतसो । राम प्रेमरस कहिन परतसो ४
तन मन बचन उमंगि अनुरागा । धीर धुरंधर धीरज त्यागा ५
वारिज लोचन मोचत वारी । देखि दशा सुर सभा दुखारी ६
मुनिगण गुरुजनधीर जनकसे । ज्ञानअनल मन कसे कनकसे ७
जे बिरंचि निरलेप उपाये । पद्मपत्र जिमि जग जल जाये ८
दो० तेउबिलोकि रघुबर भरत प्रीति अनूप अपार ।

भये मगन तनमन बचन सहित बिराग बिचार ॥ १६ ॥

सो इन्द्रकी कुचालि सबलोगों को सुखदायकहो हुई अवधि की आशाके समान सबके प्राणों की जीवनकारी हुई १ नहींतो राम लक्ष्मण सीता के महादुस्सह वियोग कुरोग से घबरा कर मरजाते २ देखो राम की कृपाने यह अबरेव कैसी सुधारी है कि देवताओं की घार जो प्रजा के प्राणों की हर्त्ता रहै सो गुणदायक गोहारि कहें सहायक होगई ३ अब श्रीरामचन्द्र भरत से परम प्रीतम भाई को जिस प्रेमसे भेटते हैं सो कैसे कहा जाता है ४ तन मन वचन से ऐसा अनुराग उमगा कि रामसे धीर धुरंधर का भी धीरज छूटगया ५ कमल से सुन्दरनेत्रों से जलका प्रवाह छूटरहाहै ऐसी दशा को देखकर आकाश में देवता और पृथ्वी पर सब सभासद दुखीहोरहेहैं ६ मुनिगण और गुरुजन और बड़े धीर राजाजनक सारिखे जिनने ज्ञान की अग्नि में अपने मन सुवर्ण के समान कसि राखे हैं ७ जे ब्रह्मा ने निर्लेप कहैं अविद्या लेश बर्जित रचे हैं और कमलके पत्रके समान संसार रूपी जलमें उपजाये हैं ८ ॥ दोहा ॥ तेभी भरत और रामकी अनूप अपार प्रीतिको देखकर अपने ज्ञान बैराग्य समेत तन मन बचन से मग्न होगये ॥ १६ ॥

जहांजनक गुरुगति मतिभोरी। प्राकृतप्रीतिकहत बड़िखोरी १
बरणत रघुबर भरत बियोगू। सुनि कठोरकबिजानहिं लोगू २
सोसकोचबश अकथ सुबानी। समय सनेह सुमिरि सकुचानी ३
भेंटि भरत रघुबर समुझाये। पुनि रिपुदमन हर्षिहिय लाये ४
सेवक सचिव भरत रुखपाई। निजनिज काज लगे सबजाई ५
मुनिदारुण दुख दुहूं समाजा। लगे चलन के साजन साजा ६
प्रभु पद पद्म बन्दि दोउ भाई। चले शीश धरि राम रजाई ७
मुनि तापस बन देव निहोरी। सब सन्मानि बहोरि बहोरी ८
दो० लषणहिं भेंटिप्रणाम करि शिरधरि सियपद धूरि।
चलेसप्रेम अशीष सुनि सकल सुमंगल मूरि ॥ १७ ॥

रामऔर भरत की जिस अलौकिक प्रीतिमें बशिष्ठ और राजा जनक की गतिऔर मति भोरी होरहीहै उस प्रीति को प्राकृत प्रीति कहना बड़ा दोषहै १ रामचन्द्र और भरतका बियोग वर्णनकर्त्ता सुनिकर सब लोगमेरे को बड़ा कठोर कविजानेंगे २ एकतो यह संकोच दूसरे अकथ प्रीति तातें सनेह समय बिचारि कर मेरी वाणी सकुचती है ३ इस प्रकार रामचंद्रने भरत को मिल कर समझाया फिर शत्रुहन को हृदय से लगा लिया ४ सेवक और मंत्री भरत का अभिप्राय जानकर अपने अपने

कानों में जा लगे ५ यह सुनिकर दोनों राज समाजों में महा दारुण दुख होगया और सब चलने का साजसाजने लगे ६ रामचंद्र के चरण कमलों को दोनों भाइयों ने प्रणाम किया और उनकी आज्ञा माथे मानिकर अयोध्या को प्रयाण किया ७ चित्रकूट के मुनि और तापस और बनदेव सबको दोनों भाइयों ने निहोरा और बार बार सबका सन्मान किया ८ फिर लक्ष्मण को भरत मिलि कर और शत्रुहन प्रणाम करकेदोनों भाई सीताके चरणों की रजको मस्तकपर धारण करके मंगल मूलआशिष पाकर चल दिये ॥ १७ ॥

सानुज राम नृपहिं शिरनाई । कीन्ह बहुत बिधि बिनय बड़ाई १
देव दयाबश बड़दुख पायउ । सहित समाज काननहिं आयउ २
पुर पगु धारिय देइ अशीशा । कीन्ह धीर धरि गमन महीशा ३
मुनि महिदेव साधु सनमाने । बिदा किये हरि हर सम जाने ४
सासु समीप गये दोउ भाई । फिरे बंदि पद आशिष पाई ५
कौशिक बामदेव जाबाली । परिजन पुरजन सचिव सुचाली ६
यथायोग करि बिनय प्रणामा । बिदा किये सब सानुज रामा ७
नारि पुरुष लघु मध्य बड़ेरे । सब सन्मानि कृपानिधि फेरे ८
दो० भरत मातु पद बंदि प्रभु शुचि सनेह मिलि भेंटि ।
बिदा कीन्ह सजि पालकी सकुचि सोच सब मेटि ॥ १८॥

लक्ष्मण समेत रामचन्द्र ने राजा जनक को समुझाय कर बहुत भांति बिनती और बड़ाई कर कहा १ हे देव आप ने दया के बश बड़ा दुख पाया कि अपने समाज समेत इस घनमें आये २ अब आप मेरेको आशिष देकर पुरको पग धारिये तबतो राजा जनक ने बड़ी धीर धरिके पुरको प्रस्थान किया ३ तिस पीछे मुनिजन और द्विज देवोंको सन्मान कर बिदा किया और उनको विष्णु शिवही के समान माना ४ फिरि तो दोनों भाई सासुन के पास गये उनके पद बंदन किये और आशिष पाकर बिदाहुये ५ फिर बिश्वामित्र और बामदेव और याबालि मुनि और समस्त परिवार पुरबासी मंत्री सबको यथायोग्य बिनय प्रणाम करिके राम लक्ष्मण ने बिदा किये ६ ॥ ७ फिरि स्त्री पुरुष छोटे बड़े बूढ़े सबको सन्मानि कर बिदा किया ॥ ८ ॥ दोहा ॥ भरत की माताके चरण बंदन करिके और शुद्ध स्नेह से मिलि कर उसका सब सोच संकोच दूर किया और पालकी सजवा कर बिदा किया ॥ १८ ॥

परिजन मातु पितहिं मिलि सीता । फिरी प्राणप्रिय प्रेमपुनीता १
करि प्रणाम भेटीं सब सासू । प्रीति कहत कवि हियन हुलासू २

सुनि शिख अभिमत आशिष पाई । रही सीय दुहुं प्रीति समाई ३
रघुपति पट पालकी मंगाई । करि प्रबोध सब मातु चढ़ाई ४
बार बार हिल मिलि दोउ भाई । सम सनेह जननी पहुंचाई ५
साजि बाजि गज बाहन नाना । भूप भरत दल कीन्ह पयाना ६
हृदय राम सिय लषण समेता । चले जाहिं सब लोग अचेता ७
बसह बाजि गज पशु हिय हारे । चले जाहिं परबश मन मारे ८
दो० गुरु गुरुतियपद बंदि प्रभु सीता लषण समेत ।
फिरे हर्ष बिस्मय सहित आये पर्ण निकेत ॥ १६ ॥

परिजन और माता पिताको मिलि कर सीता उन सबसे बिदा हुई अपने प्राण वल्लभ रामकाहे पुनीत प्रेम जिसको १ फिरि पांय परिके सब सासु भेटीं इसबियोग समयमें कविके हृदयमें उत्साह नहीं रहा तातें उस समय की प्रीतिको नहींकहा२ मिलिकर उनसे आशिष पाया और मायके सासुरे दोनों ओरकी प्रीतिमें समा गई ३ उसी समय रामचन्द्रने पट पालकी मंगाई और प्रबोध करि करिके सब माताओं को चढ़ाया ४ बारंबार दोनों भाइयोंने उनसे हिलि मिलि कर समान स्नेह से सबको दूरि तक पहुंचाया ५ तबतो हाथी घोड़े रथ सब वाहनों को साजिकर राजा जनकओर भरत दोनोंके दलने प्रयान किया ६ सबके हृदयमें तो सीता लक्ष्मण समेत राम हैं इससेसब लोग अचेत चले जाते हैं ७ बैल घोडे हाथी और सब पशु हिये हार मन मारे परबश चले जाते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ फिरि गुरु और गुरुपत्नीके चरण सीता ने लक्ष्मण समेत वंदि कर बिदा किये और आश्रम को बहुरे ॥ १६ ॥

बिदाकीन्ह सन्मानि निषादू । चलेउ हृदय बड़ बिरह बिषादू १
कोल्ह किरात भिल्ल बन चारी । फेरे फिरे जोहारि जुहारी २
प्रभुसिय लषण बैठिबटछांहीं । प्रियपरिजन बियोग बिलखाहीं ३
भरत सनेह सुभाव सुबानी । प्रिया अनुजसन कहत बखानी ४
प्रीतिप्रतीति बचन मनकरनी । श्रीमुख राम प्रेम बश बरनी ५
तेहि अवसर खगमृग जलमीना । चित्रकूट चर अचर मलीना ६
बिबुध बिलोकि दशारघुबरकी । बर्षि सुमन कहि गतिघरघरकी ७
प्रभुप्रणाम करि दीन्ह भरोसो । चले मुदित मनडर न खरोसो ८
दो० सानुजसीय समेतप्रभु राजत पर्ण कुटीर ।

भक्तिज्ञान बैराग्यजनु सोहत धरेशरीर ॥ २० ॥

फिरि बड़े सन्मान समेत निषादराज गुह को भी बिदा किया सो राम बियोग के बिषाद समेत घर को फिरा १ सब से पीछे कोल्ह, किरात, भिल्ल बनबासियों को बिदा किया ते सब रामको जुहारि २ कर अपने २ घरों को फिरे २ तब तो राम, लक्ष्मण, सीता समेत प्यारे परिवार के बियोग से बटकी छाया में बैठिकर बिलखाने लगे ३ और भरत का स्नेह स्वभाव सीता और लक्ष्मण से कहनेलगे ४ भरत की तन मन बचन से प्रीति और प्रतीति जो है सो रामचंद्र ने श्रीमुख से प्रेम के वशबखानी ५ उस समय चित्रकूट के खग, मृग, मीन, चर, अचर सब मलीन होगये ६ देवताओं ने ऐसी दशा रामचंद्र की देखिकर पुष्प वर्षाये और अपनी २ गति निवेदन की ७ रामचंद्र ने सबको प्रणाम किया और भरोसा दिया तबतो प्रसन्नहोकर अपने अपने घरकोगये और निडर होगये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ लक्ष्मण सीता समेत रामचंद्र पर्णशाला में कैसे सोहते हैं मानो भक्ति और ज्ञान बैराग्यही शरीर धारण किये बिराजते हैं ॥ २० ॥

मुनि महिसुर गुरु भरत भुआलू। रामबिरह सबसाज बेहालू १
प्रभुगुण ग्राम गुणत मनमाहीं। सब चुप चाप चले मगुजाहीं २
यमुना उतरि पार सब भयऊ। सो बासर बिनुभोजन गयऊ ३
उतरि देवसरि दूसर बासू। राम सखा सब कीन्ह सुपासू ४
सई उतरि गोमती नहाये। चौथे दिवस अवध पुर आये ५
जनक रहे पुर बासर चारी। राजकाज सब साज संभारी ६
सौंपिसचिव गुरुभरतहि राजू। तिरहुति चले साजिसबसाजू ७
नगर नारि नर गुरु शिखमानी। बसे सुखेन राम रजधानी ८
दो० राम दरश लखिलोग सब करत नेम उपबास।
तजितजि भूषण भोगसुख जिअत अवधि की आश ॥ २१

यहां मार्ग में अयोध्या और जनकपुर के समस्त मुनि और द्विजदेव और गुरु वशिष्ठ और भरत और राजा जनक राम के बियोग से सब साज समेत बिकल हैं १ रामचंद्र के गुणग्रामही अपने अपने मन में गुणते हुये चुपचाप सब चले जाते हैं २ उसी दिन यमुना उतरि कर सब पार होगये और सो दिन सब को निरशनही ब्यतीत हुआ ३ दूसरे दिन गंगा उतरिकर शृंगवेरपुर में बास किया तहां रामकेसखा निषाद राज ने सब को सुपास किया ४ तीसरे दिन सई नदी उतरि कर गोमती पर बास किया और चौथे दिन अयोध्या में आगये ५ तहां राजा जनक चारदिन रहे समस्त राज्य काज और सब साज सम्हारा फिरि बशिष्ठ और भरत और मंत्रियों को राज्य

सोंपिकर अपने साज समेत तिरहुति को गये ६ । ७ यहां अयोध्या में समस्त राज्य नर बशिष्ट की आज्ञा मानिकर सुख पूर्व्वक रामकी राजधानी अयोध्या में यथा पूर्व्व बसे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ अब तो राम के दर्शन के निमित्त सब नारि नर नेम व्रत करने लगे और समस्त भूषण भोग सुखों को छोड़िकर केवल अवधि की आशा परजीते हैं ॥२१॥

सचिव सुसेवकभरतप्रबोधे । निज निज काज पाइ सब ओधे १
पुनि शिख दीन्ह बोलि लघुभाई । सौंपीसकल मातु सेवकाई २
भूसुर बोलि भरत कर जोरे । करि प्रणाम बर बिनय निहोरे ३
ऊच नीच कारज भल पोचू । आयसु देत न करब सकोचू ४
परिजन पुरजन प्रजा बुलाये । समा धान करि सुबश बसाये ५
सानुज गे गुरु गेह बहोरी । करि दंडवत कहत कर जोरी ६
आयसु होइ तो रहौं सनेमा । बोले मुनि तनु पुलकि सप्रेमा ७
समुझब कहब करबतुम सोई । धर्म्म सार जग होइहि जोई ८
दो० मुनि शिख पाइ अशीष बड़ गणक बोलि दिनसाधि ।
सिंहासन प्रभु पादुका बैठारी निरुपाधि ॥ २२ ॥

मंत्री और सब सेवक भरत ने समुझाये अपना अपना अधिकार पाकर अपना अपना काम करने लगे १ फिरि शत्रुहन को बुलाकर उनको सब माताओं की सेवकाई सौंपी २ तिसपीछे सब द्विजदेवों को बुलाकर प्रणाम किया और हाथ जोरिकर बड़ी बिनती से निहोरे और कहा ३ किजो आपका ऊंच नीच भला बुरा कैसाहो कार्य्य हो उसकी आज्ञा देनेमें किसी बातका संकोच न करना ४ फिरि परिजन और पुरजन और प्रजाके सबलोग बुलाये और उनको आशस्वास करिके यथा पूर्व सुबस बसा दिये ५ फिरि भाई समेत गुरुके घरगये और दंडवत करि के बोले ६ आपकी आज्ञा हो तो मैं भी सनेम रहूं यह सुनि कर मुनिराज बशिष्ट पुलकित तन होकर प्रेम समेत बोले ७ तुमतो हे तात सोई समझोगे और सोई कहोगे और सोई करोगे जो इस संसार में धर्म्मका सिद्धांत सार होगा ८ ॥ दोहा ॥ ऐसी गुरु की शिक्षा और आशिष उत्तम पाकर गणकों को बुलाया और शुभ दिन नक्षत्र लग्न मुहूर्त शोधि कर रामचंद्र की पादुकाओं को राजसिंहासन पर निरुपादि बिराजमान किया ॥ २२ ॥

राम मातु गुरु पद सिर नाई । प्रभु पद पीठ रजायसु पाई १
नन्दिग्राम करि पर्ण कुटीरा । कीन्ह निवास धर्म्म धुरधीरा २
जटा जूट शिर मुनि पट धारी । महि खनि कुश साथरीसवारी ३

अशन बसन आसन ब्रतनेमा । करतकठिनऋषि धर्म्मसप्रेमा ४
भूषण बसन भोग सुख भूरी । मन तन बचन तजे तृण तूरी ५
अवधराज सुरराज सिहाहीं । दशरथ धन लखि धनदलजाहीं ६
तेहि पुर बसत भरत बिनुरागा । चंचरीक जिमि चंपक बागा ७
रमा बिलास राम अनुरागी । तजतबमनजिमिनर बड़भागी ८
दो० राम प्रेम भाजन भरत बड़ी न यह करतूति ।
चातक हंस सराहियत टेक बिबेक बिभूति ॥ २३ ॥

फिरि तो राम की माता कौशल्या और गुरु वशिष्टके चरणों को प्रणाम किया फिर रामचन्द्र के पदपीठों की आज्ञा लेकर नंदिग्राम में पर्णशाला बनाय निवास किया १ । २ सिरपर तो जटा जूट बनाया मुनिके बस्त्र धारणकिये और पृथ्वी खोदि कर कुशों कीसाथरी बनाई ३ मुनिजनों हीके तो भोजन और बस्त्र आसन ब्रत और नेमहैं और महाकठिन ऋषिधर्मों को प्रेम समेत करते हैं ४ और राज भूषण और बस्त्र और भोग सुख सब तन मन बचन से तृण के समान त्याग दिये ५ जिस अयोध्याके राज्य को देखि कर सुर राज इन्द्र भी सिहाते हैं और महाराज दशरथके अपार धन को सुनिकर कुबेर भी लजाते हैं ६ उस पुर में भरत रागरहित बसतेहैं जैसे चंपा के बागमें भ्रमर रहताहै ७ रमाबिलास कहैं लौकिक और पारलौकिक सुखको राम अनुरागी भगवज्जन बड़भागी बमन केसमान त्यागते हैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सो राम के प्रेमपात्र भरत की यह करतूति कुछ बड़ी नहीं है टेक की बिभूति में चातक और बिवेक की बिभूति में हंस पखेरू सराहे जाते हैं ॥ २३ ॥

देह दिनहिं दिन दूबरि होई । घटन तेज बल मुख छबिसोई १
नित नव राम प्रेम प्रणपीना । बढ़त धर्म्म दल मननमलीना २
जिमि जल निघटत शरदप्रकाशे । बिलसतवेंत सुबनजबिकाशे ३
शम दम संयम नेम उपासा । नखत भरत हिय बिमलअकासा ४
ध्रुव बिश्वास अवधि राकासी । स्वामि सुरति सुर बीथि बिकासी ५
राम प्रेम बिधु अचल अदोषा । सहित समाज सोहनितचोषा ६
भरतरहनि समुझनि करतूती । भक्ति बिरति गुणबिरतिबिभूती ७
बर्णत सकल सुकबि सकुचाहीं । शेष गणेश गिरा गम नाहीं ८

दो० नित पूजत प्रभु पांवरी प्रीति न हृदय समाति ।
मांगि मांगि आयसु करत राज काज बहुभांति ॥ २४ ॥

देह तो भरत की दिन २ प्रति दूबरी होती जाती है परंतु तेज और बल नहीं घटता है और मुख की छबि भी यथापूर्वही है १ नित्य नवीन राम के प्रेम का प्रण पुष्टही होता जाता है और भगवत् के कार्य्य धर्म्म के वृक्षमें शाखापत्र बढ़ते ही जाते हैं तातें मन सदा प्रसन्नही रहता है कभी मलीन नहीं होता है २ जैसे शरद ऋतु के आगम में जलके घटने से बिकसे कमलों समेत सुन्दर बेंत सरोवरों में सोहते हैं ३ भरत का हृदय तो मानों निर्मल आकाशहै उसमें शमदमादिक सुन्दर नक्षत्र हैं ४ रामका अवधि के अवसान पर अवश्य आवने का दृढ़विश्वासही अविचल ध्रुव है और अवधिही पूर्णिमा राति है भगवत् चरणों में सुन्दरप्रीति सोई सुरवीथी है ५ रामके प्रेमका अचलअदोष चन्द्रमा अपनेसब समाजसमेत सोहता है ६ भरतकी रहनि और समुझनि और करतूति और उनके भक्ति वैराग गुणकी बिभूति के वर्णन करने में समस्त सुकवि सकुचते हैं शेष गणेश सरस्वती की भीतो गम्य नहीं है ७। ८ दोहा ॥ नित्य उठिकर तो स्वामी की चरणपीठों को बड़ी प्रीति से पूजते हैं और उनसे आज्ञा मांगि मांगि कर सब राजकाज करते हैं ॥ २४ ॥

पुलकगात हिय सिय रघुबीरू । जीहनाम जपु लोचन नीरू १
लषणरामसियकाननबसहीं । भरत भवन बसि तपतनुकसहीं २
दुहुं दिशि समुझिकहतसबलोगू । सबबिधिभरतसराहन योगू ३
सुनिब्रत नेम साधु सकुचाहीं । देखि दशा मुनिराज लजाहीं ४
परम पुनीत भरत आचरनू । मधुर मंजु मुद मंगल करनू ५
हरणकठिन कलिकलुषकलेषू । महामोह निशि दलनदिनेसू ६
पाप पुंज कुंजर मृगराजू । शमन सकल संताप समाजू ७
जन रंजन भंजन भव भारू । राम सनेह सुधाकर सारू ८

रामके प्रेम में सदा पुलकित तो भरतका शरीर रहता है और जिह्वासे सदा राम रामही जपते हैं और हृदय में सदा सीतारामही का ध्यान रहता है और नेत्रों से सदा प्रेमहीका जल बहा करता है १ देखो राम लक्ष्मण सीता तो बनमें बसकरते हैं और भरत राज भवन में भी बसिकर तपसे तनको कसतेहैं २ ऐसी दोनों दिशा की दशाओं को समुझिकर सब लोगकहते हैं कि सब भांति से भरतही सराहने के योग्य हैं ३ जिनके ब्रत और नेम सुनिकर साधु भी सकुचते हैं और उनकी दशा को देखिकर बशिष्ठादिक महा मुनिराज भी लजाते हैं ४ ऐसा परमपवित्र भरत का

आचरण है कि कहने में तो जिह्वा को और श्रवण में कर्णोंको अमृत की समान मधुर है और अतिउज्ज्वल और मंगलकारी है ५ महा कठिन कलिकाल के पापरूपी क्लेशों का हर्त्ताहै और महा अज्ञान रूपरात्रि का नाश कर्त्ता सूर्य्य है ६ समस्तपाप महा मत्तकुंजरों को मृगराज सिंहही है और समस्त संतापों के समाज का नाश कर्त्ता है ७ जन रंजन और जन्ममरण के महा दारुण भार का निवारकहै और राम प्रेमरूपी चन्द्रमा का सार अमृतही है ॥ ८ ॥

छं० सियराम प्रेमपियूष पूरण होतजन्म न भरतको ।
मुनिमन अगम यम नियम शम दम बिषम व्रत आचरतको ॥
दुख दाह दारिद दंभ दूषण सुयश मिस अपहरत को ।
कलिकाल तुलसी से शठहि हठि राम सन्मुख करतको ॥

सो० भरत चरित करि नेम तुलसी जे सादर सुनहिं ।
सीयराम पद प्रेम अवशि होइ भवरस बिरति ॥ २५ ॥

सीता और रामचंद्र के प्रेमसे परिपूर्ण जो इस संसार में भरत का जन्म न होता तो मुनीश्वरों के मनको भी जो अगम वृत्ति और नियम संयम कहे हैं उनका आचरण कौन करता ॥ और समसारिखे अधम जीवों के दुःखादि दारिद्र और दंभादि दूषण अपने सुयशके ओखे से हरिकर इस कठिन कलिकाल में हठिकर राम के अभिमुख कौन करिदेता ॥ भरतके चरित्र को जोकोई आदरसमेत कहते और नेम करिके सुनते हैं उनको सीताराम के चरणों में अवश्य प्रेम और संसारके विषयों से वैराग होताहै ॥ दोहा ॥ कहतसुनतसमुझतसुचित भरतप्रेमपनपीन कोनहोइतनमनबचन रामचरण लयलीन २५ श्रीरामायनमोनमः ॥ यह अयोध्या कांड में चौपाइयों की तेरहवीं पच्चीसी हुई ॥ १३ ॥ और कांड भी संपूर्ण हुआ ॥

इतिश्रीरामचरित्रमानसेअयोध्याकांडेद्वितीयस्सोपानस्सम्पूर्णं ॥

नाम किताब

प्रेम रत्न
युगल विलास
चित्र चन्द्रिका
बारह मासा बलदेव
मनोहर लहरी
गंगा लहरी
यमुना लहरी
जगद् विनोद
शृंगार बत्तीसी

राग

राग प्रकाश
लावनी

किस्सा वगैरह

नानार्थनोसंग्रहावली
ब्रह्मसार
शिव सिंह सरोज
भक्त माल
इन्द्र सभा
विक्रम विलास
बैताल पच्चीसी
सिंहासन बत्तीसी
पद्मावती खंड
शुक बहत्तरी
बकावली सुमन
चहार दर वेश
किस्सा हातम ताई
पूर्व्व कथा
किस्सा गुल सनोवर
हस्र रजनी चरित्र
चिन्सन् का इतिहास
ता हरण
ती विलास

नाम किताब

मुतफ़र्रक़ात

ज्ञानेश्वर की कथा
ध्यान माला
गोपी चंद भरतरी
कथा श्री गंगा जी
अवध यात्रा
भरतरी गीत
दानलीला वनगालीला
दोहावली रत्नावली
गोकर्ण माहात्म्य
श्री गोपाल सहस्रना·
कथा सत्यनारायण रास·
हनुमान बाहुक
जनक पच्चीसी
हरिहर सगुण निर्गुण पदावली
वनयात्रा
कायस्थ वर्ण निर्णय
विहार विंद्रावन
समर विहार विंद्रावन
कल्प भाष्य

दरसी

अक्षरावली
स्वयम्बोध
ज्ञान चालीसी
दोहावली
बाल बोध
विद्यार्थी की प्रथम पु·
किताब जंत्री
गणित कामधेनु
लीलावती
पटवारियों की पु· ४ भा·

नाम किताब

वैद्यक भाषा

निघण्ट
अमर विनोद
वैद्य जीवन
औषधि संग्रह कल्प
वज्री
अमृत सागर बड़ा व छो·
वैद्य मनोत्सव

ज्योतिष भाषा

जातक चंद्रिका
जातकालंकार
दैवज्ञाभरण
ज्ञान स्वरोदय
रमल सार
इंद्रजाल

संस्कृत की पुस्तकें

लघु कौमुदी
सिद्धान्त चन्द्रिका
अमरकोष तीनों का· स·
पञ्च महायज्ञ
निर्णय सिन्धु
संग्रह शिरोमणि
भगवद्गीता सटीक
दुर्गा पाठ सटीक
विष्णु भागवत
भविष्योत्तर पुराण
अपराध भञ्जन स्तोत्र
दुर्गा स्तोत्र
कायस्थ कुल भास्कर
कायस्थ धर्म निरूपण
तथा छोटा
मथुरा सभा

नाम किताब

भाषा तत्व प्रकाश

ज्योतिष

मुहूर्त्त गणपति
मुहूर्त्त चक्र दीपिका
मुहूर्त्त चिन्तामणि स·
मुहूर्त्त मार्त्तण्ड स·
मुहूर्त्त दीपक
वृहज्जातक सटीक
जातकालङ्कार
जातकाभरण
होरा मकरन्द
संस्कृत उर्दू टी· स·
मनुस्मृति
विष्णु हारीत
महिम्न स्तोत्र
व्रतार्क
याज्ञवल्क्य स्मृति
संस्कृत भाषा टी·
अमर कोश
याज्ञवल्क्य स्मृति
सन्ध्या पद्धति
व्रतार्क
भगवद्गीता टी· ह· वं·
भगवद्गीता टी· शा· वि·
गीत गोविंद
कथा सत्यनारायण
परमार्थ सार
प्रणाङ्ग संहिता
पाराशरी सटीक
शीघ्रबोध सटीक
लघु जातक
षट्पञ्चाशिका

नाम किताब

सामुद्रिक
गरुड़ पुराण
राम विवाहोत्सव

सरिश्ते तालीम की पुस्तकें

संस्कृत

ऋजुपाठ १ भा. २ व ३
धात्त्वर्णव

नागरी कैथी

वर्णमाला कैथी १ भा·
व २ भाग

तथा कैथी फ़ारसी नागरी

हुरूफ़ मुफ़र्दात
अक्षरारम्भ
वर्णप्रकाशिका १ भा·
तथा २ भाग
सूरज पुर की कहानी
धर्म्म सिंह का वृत्तांत
शिक्षावली
शिशु बोध
पत्रहितैषिणी
पत्रदीपिका
विद्याचक्र
विद्यांकुर
पदार्थ विद्यासार
पदार्थज्ञान विटप
भोज प्रबन्ध सार
राजनीति
भाषा लघुव्याकरण
१ भाग तथा २
भाषा तत्त्व दीपिका

नाम किताब

भाषा चंद्रोदय
भूगोल तत्त्व
भूगोल दर्पण
इतिहासतिमिरनाशक १ भाग २ व ३ भा·
अवध देशीय भूगोल
इंगलिस्तान का इतिहा·
हितोपत्रिका
बाला भूषण
पद्य संग्रह
भाषा काव्य संग्रह
कवित्त रत्नाकर १ भा·
तथा २ भाग
मंगल कोश
अंक प्रकाश
गणित प्रकाश १ भा·
तथा २ भा· ३ व ४
गणित क्रिया
क्षेत्र प्रकाश
क्षेत्र चन्द्रिका २ भा·
सकील दायरा
रेखागणित १ भाग
तथा २ भाग
बीजगणित १ भाग
रामायण तुलसी कृ·
बाल काण्ड
अयोध्या काण्ड
आरण्य काण्ड
किष्किन्धा काण्ड
सुन्दर काण्ड
लंका काण्ड
उत्तर काण्ड

नाम किताब

गुटका १ भा. २ व ३
हिदायतनामा मुररिसान
पशु चिकित्सा
पट्टा बरवत कैथी
तथा क़बूलियत
रजिस्टर दाख़िल
ख़ारिजतुलवामस्सी
राजिस्टर हाज़िरीपाठशाला

क़ानून कैथी

पटवारियों के क़ायदे
उर्दू कैथी महाजनी
टिकट के लाइसन्स
का ऐक्ट २ सन्
१८७८ ई०

नागरी

ऐक्ट लगान मग़रबी
व शिमाली १० सन
१८५९ ई०
इंडियन पिनलकोर्ट मजमूआ ज़ाबिता फ़ौजदारी ऐक्ट २५ सन् १८६१
ईसवी
ऐक्ट रजिस्टरी २०
सन् १८६६ ई०
ऐक्ट स्टाम्प १ सन
१८६२ ई०
ऐक्ट स्टाम्प अदालत
२६ सन् १८६७ ई०
मजमूआ ऐक्ट अवध

नाम किताब

लगान १९ सन्
१८६८ ईसवी
मुरह्नादारी २६
सन् १८६६ ईसवी
वग़ैरह
ऐक्ट स्टाम्प दस्तावेज़ात सन् १८६९
ई०
ऐक्ट ताल्लुक़ेदारान
मक़रूज़ अवध ३४
सन् १८७० ई०
ऐक्ट चौपायों का
मदाखलत बेजा
१ सन् १८७१ ई०
ऐक्ट मजमूआ ज़ाबिता फ़ौजदारी १०
सन् १८७२ ई०
ऐक्ट मालगुज़ारी
मग़रबी व शिमाली
१९ सन् १८७३ ई०
तरमीम मजमूआ
ज़ाबिता फ़ौजदारी
११ सन् १८७४ ईसवी
तक़ावी के क़ायदे
सवाल व जवाब
पुलिस
अवध रुहेल खंड
रेलवे का दस्तूरुलअमल

इति

Archer
Jl